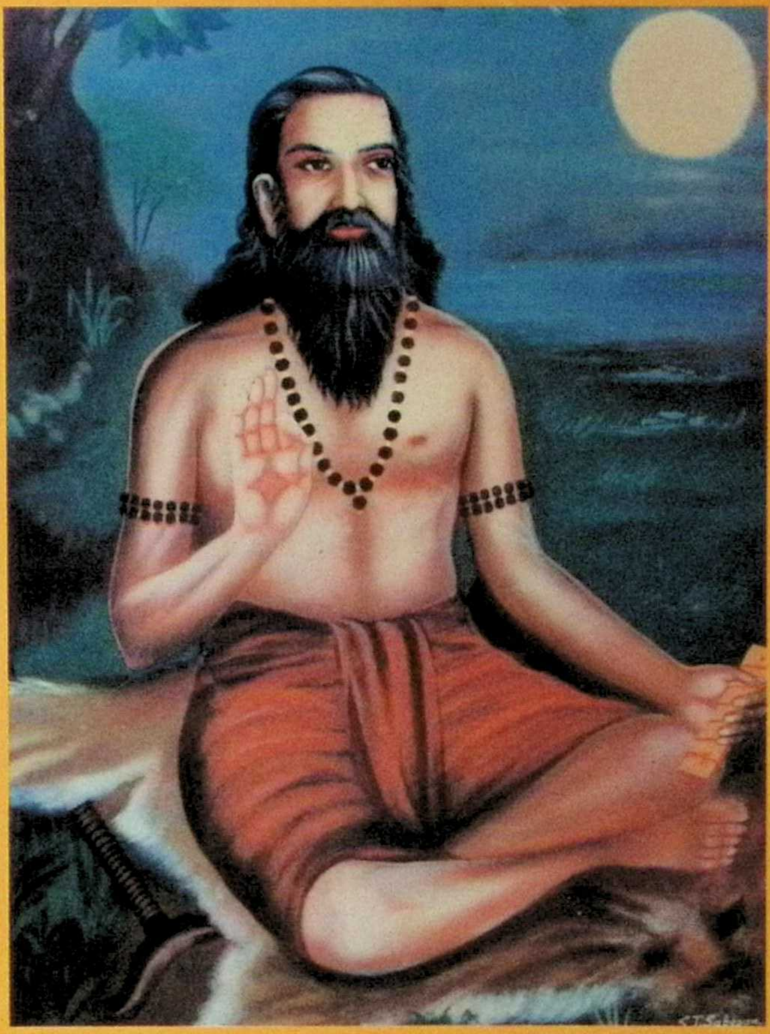
தமிழ் ஆகம சாத்திரம்

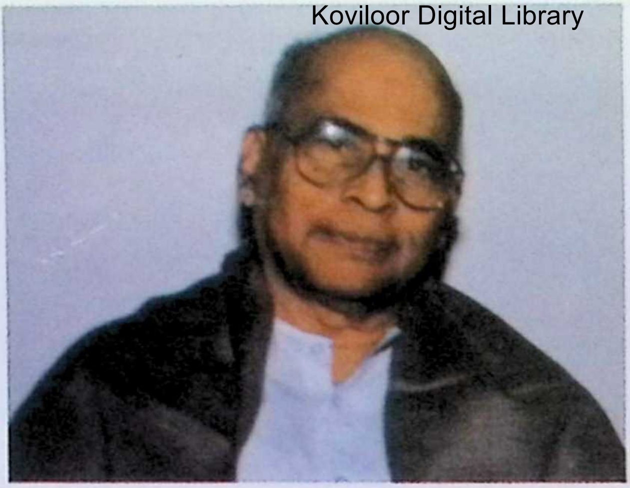
திருமந்திரம்

तमिल आगमशास्त्र - तिरुमूलर कृत

तिरुमंतिरम्



प्रधान सम्पादक : डॉ. ना. महालिंगम्
लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ



डॉ. एन. महालिंगम्

तमिलनाडु के विख्यात उद्योगपति, भारतीय धर्म और संस्कृति के प्रसार और राष्ट्रीय भावात्मक ऐक्य के लिए सतत प्रयत्नशील 'अरुट् चॅलवर'—'कृपा सम्पन्न' डॉ. एन. महालिंगम् जन्म से कृषक हैं। अपने नवीन चिंतन और मौलिक विचारों के लिए प्रसिद्ध डॉ. महालिंगम् प्रदेश, भाषा, जाति, धर्म आदि की सीमाओं से ऊपर उठकर जीव-कारुण्य और गांधीवादी विचारों के संवाहक हैं। 'शक्ति-समूह' कम्पनियों के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत डॉ. महालिंगम् ने ऐनक कम्पनियों की स्थापना और कुशल संचालन द्वारा एक विशाल औद्योगिक ढांचे का निर्माण किया है। दर्जनों शिक्षण-संस्थाओं की स्थापना द्वारा तकनीकी उच्च-शिक्षा को जन-सुलभ बनाने के साथ-साथ उनके सफल संचालन द्वारा आपने एक शैक्षिक क्रांति को साकार किया है। आपने प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति विषयक शोध के लिए 1978 में स्थापित एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था (ISIAC) द्वारा अद्यतन 28 महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन करवाया है।

कृषि एवं जल-संसाधन विषयक अपने मौलिक चिंतन एवं अभियांत्रिकी के ज्ञान के समन्वय से आपने गरीबी दूर करने की कई योजनाओं को साकार किया है। सिंचाई व्यवस्था के आधुनिकीकरण और नगर-जीवन विषयक मूल समस्याओं के समाधान के अनेक व्यावहारिक मार्ग सुझाए हैं। तमिल एवं अंग्रेजी में विविध विषयों पर तीस से अधिक पुस्तकों के लेखक के रूप में आपने वैचारिक धरातल पर अपना अमिट प्रभाव डाला है। आप 'किसान वर्ल्ड'; 'ओम्‌शक्ति' आदि पत्रिकाओं के मानद सम्पादक हैं।

'अरुट् चॅलवर' नामक आपका जीवन-चरित राजनीति, धर्म, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, पुरातत्त्व आदि के क्षेत्र में किए गए अद्वितीय योगदान का एक प्रामाणिक रूप प्रस्तुत करता है। खगोल-विज्ञान, इतिहास, दर्शन, साहित्य एवम् संस्कृति विषयक चालीस से अधिक पुस्तकों के प्रमुख सम्पादक के रूप में आपका सराहनीय योगदान है। विश्व के विविध देशों में अनेक बार भ्रमण कर ज्ञान के क्षेत्र को विस्तृत करने वाले डॉ. एन. महालिंगम् भारत में 1989 से मॉरिशस के मानद परामर्शदाता हैं। रामलिंगर मिशन द्वारा आप विश्वजनीन प्रेम और भ्रातृभावना का संदेश-प्रेषण करने के लिए सतत प्रयत्नशील हैं। आप संगीत-विषयक शोध तथा विविध संगीत-कार्यक्रमों के आयोजन द्वारा संगीत की प्राचीन परम्परा का संरक्षण कर रहे हैं तथा मंदिरों की स्थापत्य-कला के संरक्षण हेतु उनके नवीकरण एवं प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा के लिए योगदान कर रहे हैं तथा नवीन मंदिरों के निर्माण की योजना भी कार्यरूप ले रही है। 1989 में 'इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार' से भी आपको सम्मानित किया गया। डॉ. एन. महालिंगम् को भारतीयार विश्वविद्यालय ने 'डॉक्टर ऑफ लॉ' (1984) तथा अन्ना विश्वविद्यालय ने 'डॉक्टर ऑफ साइंस' (1988) की मानद उपाधियों से विभूषित किया है। मद्रास विश्वविद्यालय की सीनेट के आजीवन सदस्य और अन्ना विश्वविद्यालय सिण्डिकेट के सदस्य के रूप में शिक्षा क्षेत्र में आप निरंतर विशिष्ट योगदान कर रहे हैं। तमिल-हिन्दी सम्बन्धों को मधुर बनाने के लिए आप सतत कार्यरत हैं।

தமிழ் ஆகம சாத்திரம்

திருமந்திரம்

तमिल आगम-शास्त्र–

तिरुमूलर कृत तिरुमंतिरम्

SAHITYA SHODH SANSTHAN
साहित्य शोध संस्थान
8 ए / 141, पश्चिमी विस्तार क्षेत्र
करोलबाग, नई दिल्ली – 110 005
दूरभाष: 5726216

8-A/141. W.E.A. KAROL BAGH
NEW DELHI - 110005.
PHONE: 5726216

एवं

रामलिंग् पणिमनरम्

102, अन्नासालै, गिण्डी,
चेन्नै–600032

தமிழ் ஆகம சாத்திரம்

திருமந்திரம்

तमिल आगम-शास्त्र — तिरुमूलर कृत

तिरुमंतिरम्

(तिरुमंतिरम् के 800 से अधिक मंत्रों का मूल तमिऴ्, देवनागरी लिप्यंतरण, भावानुवाद, तिरुमूलर की साधना-परम्परा, दार्शनिक चिंतन आदि का विश्लेषण)



प्रधान सम्पादक : डॉ. ना. महालिंगम्

लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

ISBN 81-85073-11-2

CC 0 31, A, 1 [Δ]

DDC 894.811 11

संस्करण:
प्रथम, 1998

मूल्य
चार सौ पचास रुपये (रु 450/-)
पृष्ठ *xxxii* + 656

प्रकाशक
साहित्य शोध संस्थान
8ए/141 पश्चिमी विस्तार क्षेत्र, करोलबाग,
नई दिल्ली-110005

आवरण, रगीन चित्र मुद्रण
के.डी. एसोसिएट्स, चण्डीगढ़
विकास एण्टरप्राइज़िज, नई दिल्ली

कला एवं आवरण
श्री नरेन्द्रनाथ सेठी
एफ-10, निज़ामुद्दीन पश्चिमी, नई दिल्ली

लेज़र एवं स्कैनिंग
डिजीग्राफिक्स, डी-69 गुलमोहर पार्क
नई दिल्ली-110049
कैपिटल क्रिएशन्ज़ 24-सी यूसुफ सराय
नई दिल्ली-110016

पुस्तबंध
गोयल एण्टरप्राइज़िज
जैन मंदिर गली, शाहदरा, दिल्ली-110032

मुद्रक
शकुन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

TAMIL AGAM - SASTRA
TIRUMULAR KRIT TIRUMANTIRAM

(IN THREE PARTS)

(MORE THAN 800 POEMS OF TIRUMULAR'S TIRUMANTIRAM)

1ST PART : BASIC INFORMATION ABOUT THE POET AND HIS WORK. DETAILED ANALYSIS OF THE CONTENTS OF ALL THE NINE TANTRAS (DIVISIONS) OF TIRUMANTIRAM.

2ND PART : TAMIL TEXT, TRANSLITERATION INTO DEVANAGRI, TRANSLATION INTO HINDI.

3RD PART : DETAILED CRITICAL NOTES ON PHILOSOPHICAL, MYSTIC, SPIRITUAL, TANTRIC AND OTHER ASPECTS OF SADHANA. NOTES ABOUT VARIOUS YANTRAS (CHAKRAS) DESCRIBED BY TIRUMULAR.

CHIEF EDITOR: **DR. N. MAHALINGAM**

AUTHOR, TRANSLATOR: **DR. RAVINDER KUMAR SETH**

PUBLISHERS : SAHITYA SHODH SANSTHAN
8A/141, W. E. A. KORAL BAGH
NEW DELHI - 110005 (TEL 5726216)

for RAMALINGAR PANIMANARAM
102, ANNASAALAI, GUINDY,
CHENNAI - 600032

PRICE : RS. 450/- *(RUPEES FOUR HUNDRED FIFTY ONLY)*

ISBN : 81-85073-11-2

लिप्यंतर संकेत चिह्न

स्वर

அ	-	अ	எ	-	ए
ஆ	-	आ	ஏ	-	ए
இ	-	इ	ஐ	-	ऐ
ஈ	-	ई	ஒ	-	ओ
உ	-	उ	ஓ	-	ओ
ஊ	-	ऊ	ஔ	-	औ

व्यंजन

க	-	क, ग, ह	ம	-	म
ங	-	ङ	ய	-	य
ச	-	च, ज, श, स	ர	-	र.
ஞ	-	ञ	ல	-	ल
ட	-	ट, ड	வ	-	व
ண	-	ण	ழ	-	ऴ
த	-	त़, द	ள	-	ळ
ந	-	न	ற	-	र
ப	-	प, ब	ன	-	न

ग्रंथाक्षर

ஜ	-	ज	ஹ	-	ह
ஷ	-	ष	க்ஷ	-	क्ष
ஸ	-	स			

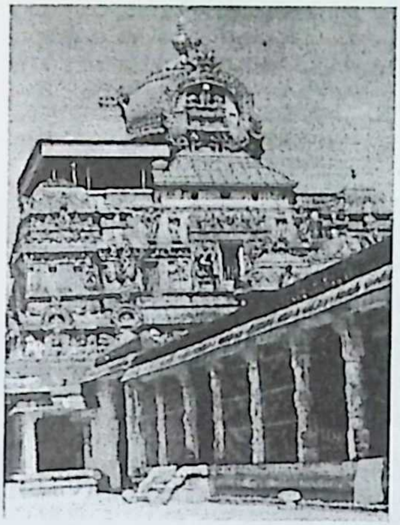
अनुक्रम

* * *

ग्रंथ में प्रयुक्त चित्रों का संक्षिप्त परिचय

आवरण चित्र :

मुख-पृष्ठ : संत तिरुमूलर एवं कपालीश्वर मंदिर, चेन्नै



சீர்காழி
सीरकाळि मंदिर
Seerkazhi Temple



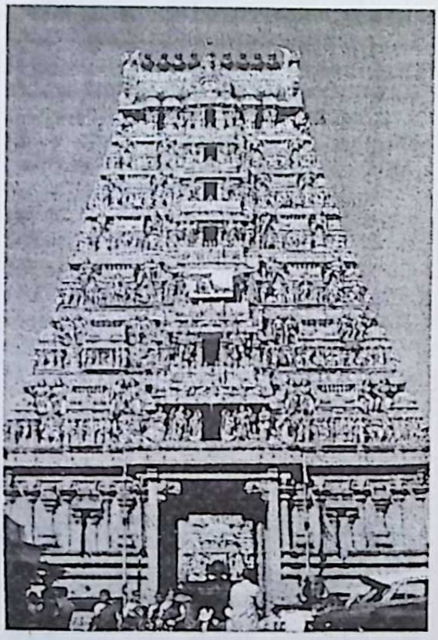
கும்பகோணம்
कुंभकोणम्, श्री कुंभेश्वर मंदिर
Kumbakonam Sri. Kumbeswarar Temple



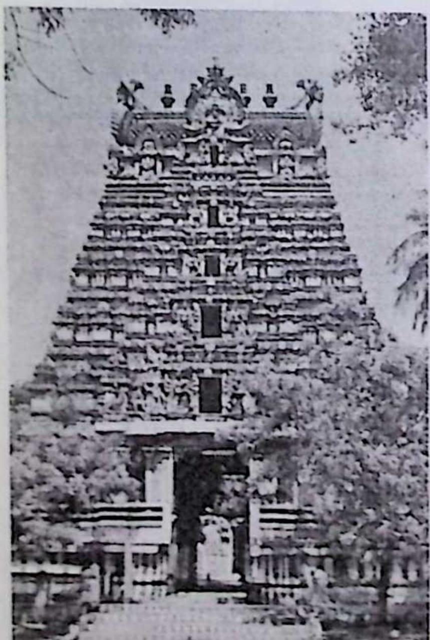
தஞ்சைப் பெரிய கோவில்
तंजावूर का बृहदीश्वर मंदिर
The Great Temple of Thanjavoor



திருநாகேசுவரம்
तिरुनागेश्वरम् मंदिर
Thirunageswaram Temple



மயிலாப்பூர் அருள்மிகு கபாலீசுவரர் திருக்கோவில், சென்னை
श्री कपालीश्वर मंदिर, मयिलापुर, मद्रास
Sri. Kapaleeswarar Temple, Mylapore Madras-600004

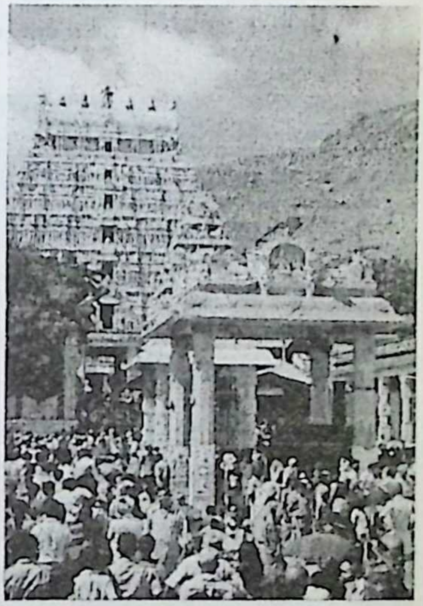


திருவாதவூர்
तिरुवादवूर मंदिर माणिक्कवाचकर की जन्मस्थली
Thiruvathavoor Temple
Birth Place of Sri. Manickavasagan



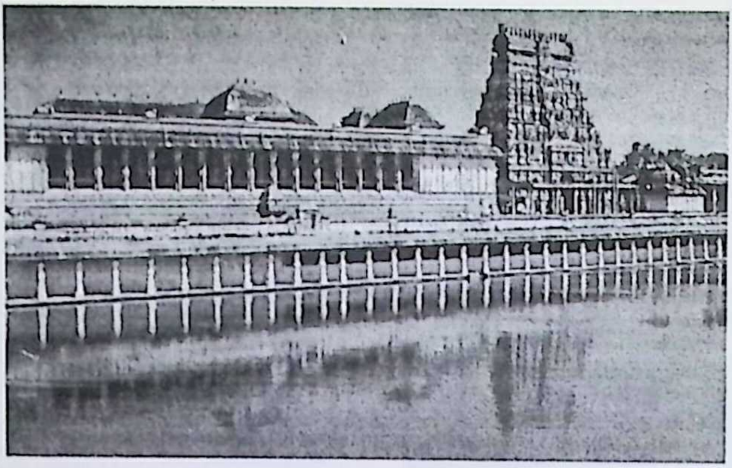
சிதம்பரம் (கனகசபை)
चिदम्बरम् (कनकसभा)
Chithambaram (The Golden Hall)

திருவண்ணாமலை
तिरुवण्णामलै मंदिर
Thiruvannamalai Temple





திருவானைக்கா
तिरुवानैका (जम्बुकेश्वरम्) मंदिर
Thiruvanaikka Temple



சிதம்பரம் (சிவகங்கைத் தீர்த்தம்)
चिदम्बरम्, श्री नटराज मंदिर (शिवगंगा सरोवर)
Chithambaram Temple (Sivagangai Tank)



சீர்காழி
सीरकाळि मंदिर
Seerkazhi Temple

அர்த்த நாரீசுவரர்
श्री अर्धनारीश्वर
Sri. Arthanareeswarar



Chief Editor's Preface

Tirumantiram is the seminal text of 'Shaiva Sidhanta' which has produced a galaxy of saints and has powerfully influenced the day-to-day life of millions in South India, generation after generation. Nambi Andar Nambi has put Tirumantiram as the 10th book in the compilation of Tirumurais. As per the evidence available Tirumular was earlier than Sambandhar, who is said to have discovered his work in the temple of Tiruvavaduturai. His work is the foundation upon which the later structure of Shaiva Sidhanta philosophy was built. Alongwith the intense Bhakti of Appar, Sambandhar and Sundarar, the deep philosophical scholarship continuously developed in Tamilnadu. Tirumantiram is a treasury of philosophical ideas, yogic and mystical experiences. The verses - mantram - of Tirumantiram are known for their 'epigramatic simplicity' but are poignant with deep allegorical meanings. Tirumantiram consists of 3000 poems in nine sections. It has been published by Sri Ramakrishna Math, Chennai. The English translation with notes has been rendered by Dr. B. Natarajan, famous economist and Saivite scholar.

Tirumular sings the praise of the Omniscient Lord 'Shiva'. Next to Him is His gracious Sakthi which is one with Him and not different from Him. He resides in the human body and proceeds from the *Muladhara* to *Sahasrar* moving through *Swadhistana*, *Manipuraka*, *Anahata*, *Visudhi* and *Agna*. He can be attained with the help of his Grace. He is like the unsatiable Ambrosia. All should worship Him according to their religious beliefs in whatever form, name, language, place, method and time as desired. Shiva is love and love is Shiva. Only by worship to Lord by melting love, He will come out and reveal Himself.

Some of the famous concepts of Shaivism have been provided by Tirumantiram. The unequivocal, complete

devotion of the later Nayanmars Sambandhar, Appar, Sundarmurti and Mannickavachakkar has its roots in Tirumantiram. Although the body is transient, Tirumular treats it as the Temple of the Lord, so it is not to be despised. "The great Lord Shiva of South India, is also the Lord for everybody, by whatever name He may be called." is the subject of Tirumantiram. *'Anbe Sivam'*—Siva is Love; *Ontre Kulamum Oruvane Devanum* — 'Mankind is one family and the Lord we worship is only one' indicate the deep insight of the poet. The underlying inspiration of his work is explicit from his statement, *'Yan petra Inbam Perukka Ivvaiyakam'* 'I wish this world to share the bliss that I have had'. The whole universe is one, the Grace of Siva must reach all, hence the *Atmagnani* wants to share his bliss with one and all as shared bliss multiplies manyfold.

Tirumantiram, in its nine Tantras has dealt with various philosophical aspects. Siva's activities — Creation, Sustenance, Destruction, Obstruction and Salvation; *Asthanga yoga*, the rising of *Kundalini* to convert the body into the Temple of Shiva; *Chariya, Kiriya, Yoga* and *Jnana;* various stages of attainment *Saloka, Samipa, Sarupa* and *Sayujya* etc. have been depicted by him. Tirumular has included the subject of metaphysics, epistemology and theology in his work. His mantras depict Sakthi as the kinetic and Siva the potential aspect of God. Shiva is immanent and transcendent, worship to Him and the path of rousing *Kundalini* are the means to achieve Him. Tirumantiram elucidates the various states of awareness — waking, dream, *Sushupti, Turiya* and *Turiyatit*. The mantras define the concept of *Tat Tvam Asi* and *Pranava* (Omkara). Tirumular's description of the Cosmic dance of Shiva is unique in Tamil literary heritage.

Dr. Ravinder Kumar Seth has specialised in bringing Tamil literature and culture in Hindi. A Punjabi working in Hindi on Tamil Literature, he is fully equipped in Tamil and other languages. His works on Tirukkural, Subrahmania Bharati, Vaishnav Poets : Alwars, Sangam Literature and Tamil Shaiva Bhakti Literature and Periapuranam have helped in creating a bridge beetween

Tamil and Hindi. His work on 'Ramalinga Swami - Vallalar Ki Jyoti Sadhana' has been highly appreciated. His efforts have provided better appreciation of Tamil Classical and Bhakti Literature, by Hindi knowing scholars and masses alike. His contribution has been acclaimed as unique 'Pioneering work'. He has received various State and other awards. In collaboration with Ramalingar Panimanram a series of books on 'Tamil Literature and Culture' authored by him are in the process of publication.

This volume is the rendering in Hindi of more than eight hundred of the mantirams of Tirumular's Tirumantiram. The selection has been made by us in consultation with various scholars of the subject. An indepth study of the various concepts has been provided in the third part of the book. *Nada, Bindu, Bijaksharas, Shiva, Sakthi, Guru, Linga, Shivalinga, Kundalini, Shad Chakra, Charya, Kiriya, Yoga, Gnana; Sadhana, Tattvamasi, Om Namasivaya* etc. are some of the subjects dealt with. Effort has been made to explain selected Yantras (Chakras) like Tiruambala Chakra, Navakkari Chakra etc. A study of the saint-poet's philosophy and the basic aspects has been provided in the first part of the book. Dr. R. K. Seth has many a time discussed with me this multi-dimensional work. Ours is a sincere effort to introduce Tirumantiram in Hindi. This shall pave way for better understanding of Tamil cultural heritage. By providing an insight into this rich legacy of spiritual literature and message of 'Shiva is Love', *Anbe Shivam*, Dr R. K. Seth has qualified for the grace of Shiva. This work shall be another source for the better appreciation of Tamil cultural, literary and spiritual heritage.

(N. MAHALINGAM)

CHENNAI

प्रधान-सम्पादक की लेखनी से–

तिरुमंतिरम् शैव-सिद्धान्त का मूल बीजग्रंथ है। इस परम्परा में संतों की गौरवशाली परम्परा है जिसने दक्षिण भारत के लाखों लोगों के दैनन्दिन के जीवन को पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रभावित किया है। तिरुमुरै ग्रंथों का सम्पादन करते हुए नम्बि आण्डार नम्बि ने इसे दशम् तिरुमुरै के रूप में स्थान दिया है। उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर तिरुमूलर ज्ञानसम्बन्धर से पूर्व हुए। माना जाता है कि उन्होंने तिरुवावडुतुरै के मंदिर में इस कृति को खोज निकाला था। तिरुमूलर की कृति पश्चात् के शैव-सिद्धान्त-दर्शन के ढांचे का आधार है। अप्पर, ज्ञान सम्बन्धर और सुन्दरर् की प्रबल भावनामय भक्ति के साथ-साथ गहन दार्शनिक चिंतन का तमिलनाडु में निरंतर विकास हुआ। तिरुमंतिरम् दार्शनिक विचारों, योग और अलौकिक अनुभवों का भण्डार है। तिरुमंतिरम् की कविताएँ – मंत्र – अपनी सूक्तिपूर्ण सहजता के लिए प्रसिद्ध हैं परन्तु इनमें गम्भीर प्रतीकात्मक अर्थ संयोजित हैं। तिरुमंतिरम् के नौ खण्डों में तीन सहस्त्र गीतियां हैं। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री और शैव-विद्वान् डॉ. बी. नटराजन द्वारा टिप्पणी सहित इसका अंग्रेजी अनुवाद चेन्नै के श्री रामकृष्णमठ द्वारा प्रकाशित किया गया है।

तिरुमूलर ने सर्वव्यापी प्रभु 'शिव' का प्रशस्ति-गायन किया है। उनके संग उनकी कृपाशक्ति हैं जो उनसे एकीकृत हैं, अभिन्न हैं। वह मानव-शरीर में निवास करता है और मूलाधार से स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्धि और आज्ञा चक्र से होता हुआ सहस्त्रार की ओर गमन करता है। उसके अनुग्रह से ही उसे प्राप्त करना सम्भव है। वह एक ऐसा अमृत है जिससे मन नहीं अघाता। अपने धार्मिक विश्वासों के अनुसार चाहे जिस रूप, नाम, भाषा, स्थान, विधि, समय के अनुसार सबको उसकी आराधना करनी चाहिए। शिव प्रेम है, प्रेम शिव है। केवल द्रवित हृदय से, प्रेमभाव से उसकी आराधना करने पर वह स्वयं को अभिव्यक्त करता है। शैवमत की कतिपय प्रसिद्ध अवधारणाओं का स्रोत तिरुमंतिरम् है। बाद के नायनारों– सम्बन्धर, अप्पर, सुन्दरमूर्ति और माणिक्कवाचकर की एकनिष्ठ, पूर्णरूपेण

भक्ति का मूल आधार तिरुमंतिरम् में है। यद्यपि शरीर नश्वर है परन्तु तिरुमूलर इसे प्रभु का मंदिर मानते हैं, अतः इसकी अवमानना नहीं की जानी है। 'दक्षिण भारत के महान् प्रभु शिव सर्वमात्र के प्रभु हैं, उन्हें चाहे किसी भी नाम से पुकारो' तिरुमंतिरम् की मूल चेतना है। *'अन्बे शिवम्'* – शिव प्रेम है; *ओन्रे कुलमुम् ओरुवने देवनुम्* – मानव-समुदाय एक परिवार है और हमारा आराध्य प्रभु एक है – कवि की गहन अंतर्दृष्टि का सूचक है। इस ग्रंथ-रचना की मूलप्रेरणा उनके प्रस्तुत कथन में अभिव्यक्त होती है– *'यान् पेट्र इनबम् पेरुक्का इवैयक्कम्'* – जो आनन्द प्राप्त हुआ मुझे वह प्राप्त हो सबको। समग्र विश्व एक है, शिव-अनुग्रह सबको प्राप्त हो अतः 'आत्मज्ञानी' अपने आनन्द को बांटना चाहता है क्योंकि आनन्द का बांटना उसे विस्तृत कर देता है।

अपने नौ तंत्रों में तिरुमूलर ने अनेक दार्शनिक पक्षों पर विचार किया है। शिवकृत्य – सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोभाव और अनुग्रह; अष्टांग योग; कुण्डलिनी का ऊर्ध्वगमन जिससे शरीर शिवालय बने; चर्या, क्रिया, योग और ज्ञान; सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य और सायुज्य प्राप्ति की विविध अवस्थाएँ आदि का उन्होंने विवेचन किया है। तिरुमूलर ने अध्यात्मविद्या, ज्ञानशास्त्र और धर्मतत्त्व को अपने ग्रंथ में समाहित किया है। उनके मंत्रों में शक्ति क्रियारूप और शिव नित्यस्थायी हैं। शिव सर्वान्तर्यामी और इन्द्रियातीत हैं। उनकी पूजा, आराधना और कुण्डलिनी-जागरण उन्हें प्राप्त करने के साधन हैं। तिरुमंतिरम् में चेतना के विविध स्तरों पर प्रकाश डाला है – जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय और तुरीयातीत। मंत्रों में तत् त्वम असि और प्रणव (ॐकार) की व्याख्या की गई है। अनंत ब्रह्माण्ड में हो रहे शिव के नृत्य का तिरुमूलर कृत वर्णन तमिल साहित्य परम्परा में अद्वितीय है।

डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ ने तमिल साहित्य एवं संस्कृति को हिन्दी में प्रस्तुत करने की विशेषज्ञता प्राप्त की है। हिंदी में तमिल साहित्य विषयक कार्य करने वाले पंजाबी भाषी डॉ. सेठ तमिल तथा अन्य भाषाओं में पूर्ण सक्षम हैं। तिरुक्कुरल, सुब्रह्मण्य भारती, वैष्णव कवि : आळ्वार, संगम साहित्य, तमिल शैवभक्ति साहित्य और पेरिय पुराणम् पर उनके ग्रंथों से तमिल और हिन्दी के मध्य एक सेतु का निर्माण हुआ है। 'रामलिंग स्वामी : वल्ललार की ज्योति-साधना' की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई है। उनके प्रयासों से

हिन्दी-भाषी विद्वानों और जनमानस में तमिल के प्राचीन और भक्ति-साहित्य विषयक गुण-विवेचन में स्पष्टता आई है। उनका साहित्यिक अवदान 'पथ-प्रदर्शक' कार्य के रूप में प्रशंसित हुआ है। कई राजकीय तथा अन्य पुरस्कारों से उन्हें सम्मानित किया गया है। रामलिंग पणिमनरम् के सहयोग से उनके द्वारा लिखी गई एक पुस्तकमाला प्रकाशनाधीन है।

प्रस्तुत ग्रंथ में तिरुमूलर कृत तिरुमंतिरम् के 800 से अधिक मंत्रों का हिन्दी भावानुवाद है। हमने अनेक विषय-विद्वानों से परामर्श करके इनका चयन किया है। पुस्तक के तृतीय खण्ड में विविध अवधारणाओं की गम्भीर विवेचना दी गई है। नाद, बिन्दु, बीजाक्षर, शिव, शक्ति, गुरु, लिंग, शिवलिंग, कुंडलिनी, षड्चक्र, चर्या, क्रिया, योग, ज्ञान, साधक, तत्त्वमसि, ॐ नमशिवाय आदि कतिपय विवेचित विषय हैं। कुछ चयनित मंत्रों यथा तिरुअम्बल चक्र, नवाक्षरी चक्र आदि की व्याख्या देने का प्रयास किया गया है। संत-साधक कवि के दर्शन एवं मूल अवधारणाओं को प्रथम खण्ड में दिया गया है। इस बहुआयामी कार्य के लिए डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ कई बार मेरे साथ विचार-विमर्श करते रहे हैं। तिरुमंतिरम् को हिन्दी में प्रस्तुत करने का हमारा यह शुद्धहृदय प्रयास है। इससे तमिल सांस्कृतिक परम्परा को अधिक अच्छे ढंग से समझने का मार्ग प्रशस्त होगा। इस आध्यात्मिक साहित्य और *'अन्बे शिवम्'* – 'शिव ही प्रेम है' की विशद परम्परा के विषय में एक 'अंतर्दृष्टि' उपलब्ध करके डॉ. आर. के. सेठ ने शिव-अनुग्रह की योग्यता प्राप्त कर ली है। निःसन्देह यह ग्रंथ तमिल की सांस्कृतिक, साहित्यिक और आध्यात्मिक विरासत के गुण-विवेचन को अधिक सम्यक् रूप से करने का साधन बनेगा।

ना. महालिङ्ग

ना. महालिंगम्

चेन्नै

तिरुमूलर विषयक पौराणिक सामग्री

आठवीं शती के सुन्दरमूर्ति नायनार् ने 'तिरुतोण्डतोकै' नाम से विख्यात पदों में तिरुमूलर को स्मरण किया—'मैं प्रभु मूलन के दास का दास हूँ।' दसवीं शती में नम्बि आण्डार नम्बि ने 'तिरुतोण्डर तिरुवन्दादि' नाम से अभिहित 89 छंदों में एक स्थल पर तिरुमूलर का परिचय इन शब्दों में दिया— 'सात्तनूर नामक ग्राम में, जहां सज्जन लोग निवास करते हैं, गायों के चरवाहे की मृत देह में प्रविष्ट होकर पुनर्जीवित योगी के चरणों को, मैं अपने शीश पर श्रद्धापूर्वक रखता हूँ। उस योगी ने चतुर्विध पुरुषार्थों के बोधक गुणों से युक्त मधुर तमिऴ् भाषा में, द्वितीया के चन्द्र को शीश पर धारण करनेवाले शिव की वेदसम्मत स्तुति की। यह मूलक-संज्ञक प्रभु शिव ही है।' 'पेरियपुराण', जिसे 'तिरुतोण्डर पुराण' भी कहते हैं; के रचयिता चेक्किऴार ने तिरुमूलर विषयक गाथा विस्तार से दी है। यहां मूल पेरियपुराणम् से अनूदित तिरुमूलर-गाथा के दो पद प्रस्तुत हैं। प्रथम पद में तिरुवावडुतुरै में बोधिवृक्ष के नीचे ध्यानावस्थित मूलर और दूसरे पद में तिरुमूलर की रचना तिरुमंतिरम् का उल्लेख है :

अहा चेहरे पर है कैसी दिव्य शांति, नहीं है उन्माद की भ्रांति,
नहीं किसी पर आसक्ति, छूट गए संकल्प और विकल्प
चित्त के, स्थिर है आत्म-ध्यान में, शिव-ध्यान में,
योग-वैराग्य में, आनन्द की मनोदशा यह
तुलती नहीं किसी तुला पर।

पिरोई गई एक अद्भुत अनूठी माला, तिरुमंत्र की मणिमाला,
तिरुमूलर की वाणी से, तिरुमंत्र वास्तव में ही महामंत्र है,
जो हरण करता है जन्म-मरण की भव-बाधा,
भा गई महादेव को यह तिरुमंतिरम् की माला, प्रारम्भ किया
तिरुमूलर ने जिसे इस पदबंध से—ऑन्रवन् ताने ....
'एक वह है, वही एक है।'

□ □ □

लेखक की ओर से ....

श्वेताश्वर उपनिषद् तक अविनाशी, प्रकाशस्वरूप प्रभु की अवधारणा स्पष्ट हो चुकी थी; 'अंगुष्ठमात्रः' मानवों के हृदय में सम्यक् प्रकार से स्थित हैं (3/13); 'नवद्वारे पुरे देही' – नवद्वारवाले शरीररूपी नगर में स्थित देही (3/18); अणोरणीयान्महतो महीयानात्मा गुहायां निहितोऽस्य जन्तो – सूक्ष्म से भी अतिसूक्ष्म और बड़े से भी बहुत बड़ा परमात्मा इस जीव की हृदयरूपी गुफा में छिपा हुआ है (3/20); आदि कथन इसका प्रमाण हैं कि 'स्व' के भीतर स्थित परमतत्त्व को जानने के प्रयास निरंतर हो रहे थे। बौद्ध धर्म में वैयक्तिक निर्वाण, महत्करुणा और लोककल्याण की भावनाओं का समावेश और योगाचार सम्प्रदाय से तांत्रिक साधनाओं का विकास हुआ। वज्रयान में चिंतना, साधना, मंत्र, देवता, तंत्र, योग, षट्कर्म आदि का विस्तृत विधान है। बाद में हुए वज्रयान के चार तन्त्रों – क्रियातंत्र, चर्यातंत्र, योगतन्त्र और अनुत्तर तन्त्र – में आधार रूप में संहिताओं और विविध तंत्र ग्रंथों में वर्णित ज्ञान, क्रिया और योग को ग्रहण किया। 'बौद्ध धर्म में तांत्रिक प्रवृत्तियों का सर्वप्रथम प्रयोग मंत्रों के रूप में हुआ।'

'शब्द शाश्वत है, सदैव अक्षररूप में विद्यमान रहता है' – मीमांसकों के इस सिद्धान्त को आधार मानकर रेखात्मक अभिव्यक्तियों के रूप में मंत्र तथा शक्ति अथवा देवता के प्रतीक के रूप में बीज अक्षरों की कल्पना साकार हो गई। बंगला के चर्यापदों की संधाभाषा के ही समान तिरुमूलर ने कतिपय स्थलों पर जिस भाषा का प्रयोग किया है उनका लक्ष्य बाह्य अर्थ के स्थान पर किसी अन्य निहित अभिप्राय की अभिव्यक्ति करना है। इसे कुछ विद्वानों ने 'रहस्यमयी भाषा' भी कहा है। तिरुमूलर के समक्ष एक विशद ज्ञान-परम्परा थी जिसका उन्होंने एकाधिक स्थलों पर उल्लेख किया है। उत्तर से उनके दक्षिण में आने की कथा को कश्मीर के प्रत्यभिज्ञा दर्शन से जोड़ने का प्रयास कई रूपों में हुआ है जिसके मूल में पर्याप्त आधार दृष्टिगत होता है। तिरुमूलर-चिंतन में प्रतीकात्मकता का विशिष्ट स्थान है। उनके ग्रंथ में चेतना का विस्तार – चिदाकाश, चिदम्बरम् 'शिव' के नृत्य की स्थली है। सर्प के रूप में चित्रित 'काल' वह शक्ति है जो आदि, मध्य और अंत में सृष्टि का प्रवर्तन और समावर्तन करती है। 'विश्व'

अथवा 'ब्रह्माण्ड' 'शक्ति' और 'शिव' की लीलाभूमि है, शक्ति ही शिव है, शिव ही शक्ति है। यहां शिव-शक्ति से इतर कुछ नहीं, शिव 'साक्षी' है, शक्ति चराचर प्रपंच में क्रियाशील होकर प्रकाशमान है। चिदम्बरम् में नृत्य कर रही 'ज्योति' ही चिट्रम्बलम् -- चित्तरूपी आकाश में व्याप्त है। मानवदेह शिवशक्ति का आलय है। जीवन रूपी यज्ञ अथवा सागर के मंथन से उत्पन्न मोह और कष्ट ही हलाहल है, शिव उसे धारण कर नीलकण्ठ होकर अपने भक्तवत्सल और कल्याणकारी अनुग्रह-कारक रूप में अनुभूत होते हैं। 'पशु' को 'पाश' से मुक्त करने के लिए आत्मा में विशुद्ध ज्ञानस्वरूप शिवशक्ति का नृत्य होता है, त्रिमल को विनष्ट कर वे अनन्त करुणा की वृष्टि करते हैं, मानवात्मा उनके प्रेम में विभोर होकर प्रेममय, आनन्दमय हो जाती है।

तिरुवावडुतुरै चोऴ् प्रदेश का सुप्रसिद्ध और प्राचीन शैव-धर्म-स्थल है। इस स्थल पर सम्बन्धर, अप्पर और सुन्दरर् तीन महान् शिवभक्त कवियों ने अपने कुछ पदों का गायन किया। देवी पार्वती द्वारा गाय (अ) रूप में शिवपूजा करने के संदर्भ से इस स्थल का नाम आवडुतुरै हुआ जिसके साथ आदर सूचक 'तिरु' जोड़कर तिरुवावडुतुरै बना। जब तिरुज्ञानसम्बन्धर यहां तीर्थ-यात्रा के लक्ष्य से पहुँचे तो भद्रलिंग के निकट उन्हें विचित्र अनुभूति हुई। उनके आग्रह पर पूजा-स्थल से शिवलिंग को हटाने पर नीचे तिरुमूलर द्वारा ताड़पत्रों पर लिखी गई पाण्डुलिपि उन्हें प्राप्त हुई। इसे सादर ग्रहण कर उन्होंने तिरुमंतिरम् के सम्यक् प्रचार की व्यवस्था की। ओरियण्टल मैन्युस्क्रिप्ट लायब्रेरी, चेन्नै, में उपलब्ध 'आराधारम्' (षडाधारम्) शीर्षक पाण्डुलिपि (R-1420) में तिरुमूलर को उद्धृत करते हुए मूलाधार, स्वाधिष्ठान, अनाहत तथा विशुद्धि आदि का विवेचन किया गया है। इसी पुस्तकालय में इसी नाम की एक अन्य पाण्डुलिपि में पंचाक्षर मंत्र तथा विविध चक्र आदि का सचित्र वर्णन है (पाण्डुलिपि संख्या R-1486)। इसी प्रसंग में एक ताड़पर पर रचित पाण्डुलिपि (p. 2331) में सिद्धों की परम्परा तथा उनके मूल निवास स्थान आदि का विवरण है। इसमें तिरुमूलर का वर्णन भी उपलब्ध है। स्पष्ट है कि तिरुमूलर का चिंतन अनेक रूपों में साहित्य, साधना और धार्मिक चिंतन – समग्रतः तमिलनाडु की सम्पूर्ण सांस्कृतिक चेतना – को प्रभावित करता रहा। तमिल सिद्ध साहित्य के अग्रणी के रूप में उनका स्मरण किया जाता है।

शैव-सिद्धान्त अनुयायी मानते हैं कि तिरुमंतिरम् अनुभूतिमूलक साधना और आध्यात्मिक अनुभवों का विश्वकोश है। 'तिरुमूलर की कविताओं में वेण्बा छन्द की सूक्तिपूर्ण मार्मिकता और विरुत्तम् छंद की संगीतात्मकता है'। आत्मा और शरीर का एक दूसरे से अन्योन्याश्रित सम्बन्ध मानते हुए तिरुमूलर ने मानव-शरीर की सम्भावनाओं को स्वीकारा है, जीवन और जगत् की सत्ता को वास्तविक माना है। हृदय रूपी मंदिर को परमात्म का आवास-स्थान मानते हुए उन्होंने शरीर-संरक्षण को विशेष महत्त्व दिया है।

मानवीय प्रेम ईश्वरीय प्रेम का प्रतीक है। प्रेम और शिव पर्याय हैं, अंतः साधना द्वारा उसे अंतस् में ही प्राप्त किया जा सकता है। भक्ति, ज्ञान और सत्य के जिज्ञासुओं को सांसारिक बंधनों से ऊपर उठकर सत्य-ज्ञान साधना के मार्ग पर अग्रसर होना होता है। साम्प्रदायिक धर्म आदि की संकुचित सीमाओं को त्यागकर तिरुमूलर ने प्रतिपादित किया कि परमतत्त्व मानव-निर्मित सभी धार्मिक सीमाओं से ऊपर है और 'सत्य' के जिज्ञासु साधकों को सहज रूप में प्राप्य है।

प्रतीक-विधान और विषय के सूक्ष्म विवेचन की दृष्टि से तमिल साहित्य में तिरुमूलर का अद्वितीय स्थान है। एक चिंतक, मनीषी, योगी के रूप में तिरुमूलर ने ज्ञान-साधना और रहस्यवादी अध्यात्म मार्ग की जो आधारशिला स्थापित की, बाद के अनेकानेक शैवभक्त कवियों, सिद्धों तथा धर्म-साधना में अग्रसर होने वालों के लिए वह मार्गदर्शक सिद्ध हुई। ईश्वर के सर्वज्ञत्व, सर्वव्यापकत्व और सर्वशक्तिमान् रूप; शिव के अव्यक्त, नित्य, निर्विकार विषयों को विचार-गाम्भीर्य तथा अद्भुत शब्दविन्यास से तिरुमूलर ने जो सशक्त अभिव्यक्ति दी है उसका अनुवाद कर पाना प्रभु-अनुग्रह के बिना सम्भव नहीं। मूल तमिल से अनुवाद, अंग्रेजी से किए गए अनुवाद की तुलना में, अधिक प्रामाणिक तो है ही, अपेक्षाकृत सहज भी है। अंग्रेजी अथवा अन्य भाषाओं में किसी ग्रंथ के उपलब्ध अनुवाद मार्गदर्शक तो हो सकते हैं, पर उन्हें ही आधार बना लेना चिंतनीय है। प्रस्तुत ग्रंथ में अनुवादक के रूप में मेरा यह प्रयास निरंतर बना रहा है कि मूल की भावना, मूल का संदर्भ यथावत् अनुवाद में अभिव्यक्त हो। अनेकानेक शब्दों का अनुवाद न तो सम्भव है न ही उपयोगी अतः उन्हें मूल के अनुसार ही ग्रहण किया गया है यथा ईशत्व, लघिमा, महिमा, गरिमा, शक्ति, शिव, नाद, बिन्दु, तुरीयावस्था, तुरीयातीत, स्वरूप, ॐ, तत् त्वम असि, त्वम् तत् असि, सिद्धान्त, वेदान्त, आदि। बीजाक्षरों को भी यथावत् ग्रहण किया गया है तथा उनके विषय में परिचयात्मक टिप्पणियां तृतीय खण्ड में दे दी गई हैं।

तिरुमूलर-चिंतन में साधना, तत्त्वदर्शन, शिव, शक्ति आदि प्रमुख हैं परन्तु मिथुनपरक व्याख्या अथवा गुह्य आचारों की स्वीकृति नहीं है। पर्यंक-योग, वज्रोली, खेचरी आदि के वर्णन सम्भवतः परम्परागत सामग्री को व्याख्यायित करने के लिए हुए हैं। ब्रह्माण्ड में शिव तथा शक्ति रूप को ही शरीर में कुण्डलिनी और सहस्रार रूप में विद्यमान मानते हुए, योग-साधना का विधान करते हुए, देह के महत्त्व की स्वीकृति है। तांत्रिक एवं योगसाधना की स्वीकृत पद्धति की भाँति तिरुमूलर समस्त सृष्टि-तत्त्व और उसके मूल में व्याप्त सिद्धान्तों का साक्षात्कार अपनी देह में करने का उपदेश देते हैं। अष्टसिद्धियों – महिमा, गरिमा, लघिमा आदि – से भी उच्चतर स्तर पर अध्यात्मपरक चित्तगत सिद्धि – शिवज्योतिदर्शन – को माना है। समाधिलीन साधक द्वारा अपनी ही देह में इसे प्राप्त करने की सम्भावनाओं के साथ-साथ स्वानुभव का वर्णन पुनः पुनः हुआ है। इस स्थिति को अनुभूतिपरक मानते हुए भी वर्णन का प्रयास हुआ है पर

अनुभूति की अगम्यता के कारण उसे वर्णनातीत, व्याख्या से परे माना गया है। तिरुमंतिरम् में परम्परागत पांडित्यपूर्ण ज्ञान, केवल शास्त्र-आधृत ज्ञान आदि की अपेक्षा जीवन की भावात्मक अनुभूतियों को अधिक महत्त्व दिया गया है। अन्धविश्वास, चमत्कार प्रदर्शन, लौकिक अर्थ में पंचमकार (मांस, मैथुन, मुद्रा आदि) के लिए तिरुमंतिरम् में कोई स्थान नहीं है।

1995 ई. के दिसम्बर मास का अंतिम चरण; चेन्नै में एक बैठक में डॉ. ना. महालिंगम् के साथ रामलिंग स्वामी के तिरुअरुट्पा के अनुवाद पर विचार-विमर्श हो रहा था। श्री भगीरथन् तथा प्रो. एम्. वैद्यलिंगम् भी उपस्थित थे। 'नादान्त शिखर में नृत्यरत', 'अनुग्रह का आनन्द है वह', 'धर्ममार्गों से कहीं ऊपर ज्योति है सुन्नमंडल में', 'देदीप्यमान परमंडल' तथा 'शरीर के स्वर्णिम रूप, पारदर्शी रूप' आदि का विस्तृत विवेचन-विश्लेषण चल रहा था। इस संदर्भ में डॉ. ना. महालिंगम् ने कई बार तिरुमूलर के तत्सम्बन्धी कथनों का उल्लेख किया। डॉ. बी. नटराजन द्वारा अंग्रेजी में अनूदित एवं डॉ. ना. महालिंगम् द्वारा सम्पादित तिरुमूलर के तिरुमंतिरम् का मैं पारायण कर चुका था परन्तु सूक्ष्म रूप से उसे समझने का प्रयास नहीं हुआ था। इस अवसर पर डॉ. महालिंगम् ने विचार व्यक्त किया कि तिरुमंतिरम् के हिन्दी अनुवाद के द्वारा साधनामूलक तमिल साहित्य-रूप का हिन्दी भाषियों के लिए उपलब्ध होना एक उपलब्धि होगी। अबोध बालक की भाँति मैंने इस कार्य को स्वीकार कर लिया। प्रारम्भ में 400 पदों के अनुवाद की योजना बनी। 1997 के प्रारम्भ तक आते-आते यह संख्या 600 हो गई और 1997 के जून मास में चेन्नै में ही कपालीश्वर मंदिर में शिव-सन्निधि में विचार कौंधा कि यह संख्या 800 होनी चाहिए। डॉ. महालिंगम् के साथ निरंतर विचार-विमर्श हो रहा था अतः विषय के महत्त्व को देखते हुए उनकी सहमति सहज ही मिल गई।

जटिल विषयों पर जब लेखनी अवरुद्ध होती तो ईश-अनुग्रह से कोई न कोई मार्ग मिल ही जाता। जून 1997 में डॉ. ना. महालिंगम् ने परामर्श दिया कि यदि जटिल, साधना-विषयक सामग्री पर टिप्पणियां दी जायें तो सहृदय और जिज्ञासु पाठकों के लिए ग्रंथ और भी अधिक आनन्द का स्रोत बन पाएगा। फलतः पुस्तक के तृतीय खण्ड में विविध विषयों यथा चित्सभा, चिदम्बरम्, ज्योति-संधान, कुंडलिनी-षट्चक्र, इक्यावन वर्ण, बीजमंत्र, ॐ, प्रणव, तत्त्वमसि, तिरुवावडुतुरै, विविध आसन, प्राणायाम, शिव-शक्ति, परमशिव, लिंग, आत्मलिंग, ज्ञानलिंग, सकल, प्रलयकल, विज्ञानकल, शिवगुरु, शक्ति द्वारा सृष्टि-सृजन आदि अनेक विषयों पर विविध शास्त्रों, ग्रंथों और तिरुमूलर के विचारों को आधार बनाकर तद्विषयक सामग्री उपलब्ध करवा दी गई है। पदों के चयन से लेकर पुस्तक के प्रकाशन तक जिस धैर्य से, शांतचित्त से, आनन्दविभोर होकर विविध प्रश्नों और समस्याओं का समाधान डॉ. ना. महालिंगम् ने किया वह उनके तमिल, अध्यात्म और भक्ति के प्रति पूर्ण समर्पण का मेरे लिए प्रत्यक्ष प्रमाण है। दिसम्बर 1997 ई. में डॉ. ना. महालिंगम् के

परामर्श से चेन्नै में श्री एस. त्यागराज से की गई भेंट मूलतः तिरुमंतिरम् के यंत्रों के रहस्य खोलने का प्रयास था। श्री एस. त्यागराज ने मेरी जिज्ञासा का समाधान करने का सद्-प्रयास किया जिसके लिए मैं उनका आभार मानता हूँ।

रामलिंग स्वामी विषयक ग्रंथ की रचना-प्रक्रिया में मुझे अद्भुत आनन्द और ईश्वरीय प्रेरणा का अनुभव हुआ था। 20 दिसम्बर 1996 को राष्ट्रपति भवन में तत्कालीन राष्ट्रपति परम आदरणीय डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने 'रामलिंग स्वामीः वल्ललार की ज्योति-साधना' ग्रंथ की प्रथम प्रति की भेंट स्वीकार करते हुए राष्ट्र की अखण्डता और भावात्मक एकता के लिए इस प्रकार के कार्यों की मुक्तहृदय से प्रशंसा की। डॉ. शंकरदयाल शर्मा संस्कृत, तमिल, हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को भारतीय संस्कृति की संवाहिका-शक्ति मानते हैं। वे प्रायः अपने भाषणों में तिरुवल्लुवर, आण्डाळ, सुब्रह्मण्य भारती आदि के काव्य से उद्धरण देते हैं। समग्र, सम्पूर्ण शैवभक्ति साहित्य के अनुवाद का जो परामर्श डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने इससे पूर्व डॉ. ना. महालिंगम् को दिया था वह धीरे-धीरे क्रियान्वित होता देख महामहिम राष्ट्रपति अत्यन्त हर्षित थे। मेरे लिए यह अतीव आनन्ददायी और प्रेरणादायक अवसर सिद्ध हुआ। डॉ. ना. महालिंगम् ने डॉ. शंकरदयाल शर्मा को 'इन्स्टीच्यूट ऑफ एशियन स्टडीज़' के तत्त्वावधान में एक विशेष योजना के अंतर्गत प्रारम्भ होने वाले 'तिरुमुरै' ग्रंथों के अंग्रेजी और हिन्दी अनुवाद की सूचना दी। प्रभुकृपा से इस योजना के साथ परामर्शदाता के रूप में मेरा नाम भी जुड़ गया है। इस संस्थान के सचिव डॉ. हिकोसाका और शोध-कार्यों के निदेशक डॉ. जॉन सैम्युअल तमिल साहित्य और संस्कृति को विश्व-स्तर पर प्रचारित करने का महद् अनुष्ठान कर रहे हैं। इस कार्यक्रम का तात्कालिक प्रभाव हुआ और 'तिरुमंतिरम्' ग्रंथ के अनुवाद को यथाशीघ्र पूर्ण करने का संकल्प दृढ़तर हुआ।

किसी भी कार्य की समाज द्वारा स्वीकृति सदैव उत्साहवृद्धि का आधार बनता है यद्यपि इसके मूल में भी प्रभु-अनुग्रह ही होता है। यदि यह स्वीकृति संस्थाओं द्वारा सम्मान के रूप में मिलती है तो आत्मविश्वास में दृढ़ता आती है और कार्य के समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी होने की भावना दृढ़तर होती है। दिल्ली राज्य राजधानी क्षेत्र की हिन्दी अकादमी द्वारा प्रदत्त 'साहित्यकार सम्मान' इसी कोटि की स्वीकृति है। मैं हिन्दी अकादमी एवं डॉ. विद्या निवास मिश्र, डॉ. वेद प्रताप वैदिक, डॉ. रामशरण गौड़ तथा उन सभी विद्वानों का हृदय से आभार मानता हूँ जिन्होंने तमिल-हिन्दी सम्बन्धों को स्नेह और प्रेम के धरातल पर लाने के तीन दशक के प्रयासों को मान्यता दी।

'रामलिंग स्वामी : वल्ललार की ज्योति साधना' का लोकार्पण समारोह दिल्ली के कांस्टीट्यूशन क्लब में एक गोष्ठी के रूप में सम्पन्न हुआ था। डॉ. ना. महालिंगम् उस कार्यक्रम में विशेष रूप से पोल्लाची से दिल्ली पधारे थे। गुरुवर डॉ. विजयेन्द्र स्नातक ने ग्रंथ का लोकार्पण किया तथा डॉ. नरेन्द्र कोहली, डॉ. राजेन्द्र अवस्थी, श्रीयुत बालचंद्रन तथा डॉ. वेदवती वैदिक ने ग्रंथ

और रामलिंग स्वामी पर विस्तृत वक्तव्य दिए। इसका कुशल संचालन डॉ. शशि कुमार ने किया। श्रीमती सुभद्रा देसाई ने अपने मधुर गायन से और सुश्री साई भवानी ने अरुट्पा के गीतों द्वारा अपना योगदान दिया। दिल्ली तमिल संगम के अध्यक्ष श्री वी. राजारामन्, श्रीमती श्यामला कृष्णमूर्ति, श्री एस. कृष्णमूर्ति एवं श्री एम. एन. एस. मनियन् तथा अन्य अनेक विद्वानों और मित्रों के सहयोग से सम्पन्न इस कार्यक्रम का राष्ट्रव्यापी प्रभाव हुआ। अनेक समाचार पत्रों ने रामलिंग स्वामी की कविताओं के मूल तमिल से किए गए अनुवाद का स्वागत किया। इस दिशा में यू. एन. आई के श्री वी. गणपति, पी. टी. आई के श्री गुरुमूर्ति, हिन्दू के उपसम्पादक श्री यशपाल नरूला द्वारा दिए गए सहयोग का मैं सम्मान करता हूँ।

'हिन्दुस्तान टाइम्स' के सम्पादक श्री वी. एन. नारायणन् एक गम्भीर विचारक और मानव-कल्याण की भावनाओं से ओत-प्रोत विद्वान् हैं। उन्होंने अपने एक सम्पादकीय में मेरे कार्य की प्रशंसा द्वारा मुझे सम्मानित किया है। मैं उनका हृदय से कृतज्ञ हूँ। हिन्दी के सुप्रसिद्ध, समर्पित साहित्यकार डॉ. नामवर सिंह ने मेरी तमिल हिन्दी साहित्य-सेवा की मुक्तकंठ से प्रशंसा करके हर सम्भव रूप में सहयोग और मार्गदर्शन का जो आश्वासन दिया उससे अपने कार्य की सार्थकता का पुनर्विश्वास हुआ। डॉ. नित्यानंद तिवारी अपने स्नेहपूर्ण परामर्श से मुझे प्रेरणा देने के तनिक भी संकोच नहीं करते। भक्ति और ज्ञान के साहित्यसागर में निमज्जित डॉ. विजयेन्द्र स्नातक की कृपा निरंतर अबाधगति से बनी हुई है।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का राष्ट्रीय भावात्मक एकता और हिन्दी साहित्य के संदर्भ में अपना विशिष्ट योगदान है। संस्थान के वर्तमान अध्यक्ष डॉ. शरणबिहारी गोस्वामी और निदेशक श्री मधुकर द्विवेदी इस दिशा में नवीन योजनाओं को साकार रूप देने में सतत प्रयत्नशील हैं। लखनऊ में 12 दिसम्बर 1997 को सुब्रह्मण्य भारती विषयक कार्यक्रम का संयोजन इसी दिशा में एक कदम है। डॉ. विद्याविन्दु सिंह 'साहित्य भारती' के सम्पादन द्वारा भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में पिरोने का कार्य कर रही हैं। श्री हरीश नारायण सिंह 'अतएव' के सम्पादक के रूप में हिन्दी भाषा के विकास और विस्तार में कर्मरत हैं।

डॉ. एच. बालसुब्रह्मण्यम् सुप्रसिद्ध तमिलभाषी हिन्दी विद्वान् हैं। भाषाविद् होने के कारण भाषा के सूक्ष्म अर्थों पर उनकी गहरी पकड़ है। अनुवाद की सम्पूर्ण प्रक्रिया में उनका सहयोग मुझे लगातार मिलता रहा जिसके परिणामस्वरूप अनेक जटिल, संश्लिष्ट शब्दों, छंदों के अर्थ स्पष्ट हो पाए। भक्ति-भावना और साहित्यिक अभिरुचि उनके विशिष्ट गुण हैं। वे निष्काम भाव से तमिल-हिन्दी सेवा में रत हैं और स्वतंत्र रूप से अनुवाद-कार्य में जुटे हैं। डॉ. सेनतामरै ने इस कृति में तिरुमंतिरम् के सभी अनूदित पदों के लिप्यंतर की मूल तमिल से तुलना करवाने में उत्साहपूर्ण योगदान किया, वे धन्यवाद की पात्र हैं।

'कादम्बिनी' के सम्पादक तथा 'आथर्स गिल्ड आफ इंडिया' के महासचिव डॉ. राजेन्द्र अवस्थी का परामर्श जीवन के व्यावहारिक पक्ष के लिए सदैव उपयुक्त और मार्गदर्शक होता है। उनके साथ लेखकों के बीच कार्य करना आनन्द का स्रोत है। तमिलनाडु के अनेक तमिल विद्वान् अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार अपनी सद्भावना, सद्परामर्श और स्नेह द्वारा प्रोत्साहित करते रहते हैं। डॉ. एम. शेषन्, डॉ. पि. के. बालसुब्रह्मण्यम्, डॉ. बालशौरि रेड्डी, श्री र. शौरिराजन्, डॉ. ना. सुन्दरम्, श्री त. शि. कण्णन्, श्रीमती मणिमेखलै आदि का स्नेह कर्ममार्ग पर आस्था को दृढ़ करता है।

आकाशवाणी राष्ट्रीय प्रसारण के डॉ. रवीन्द्र त्यागी और आकाशवाणी, दिल्ली के सहायक केन्द्र निदेशक श्री लक्ष्मीशंकर वाजपेयी तथा उनके सहयोगी श्री हरिपाल सिंह का आभार मानता हूँ कि तमिल साहित्य विषयक वार्त्ताओं और पुस्तक-समीक्षा आदि द्वारा वे तमिल-हिन्दी सम्बन्धों में सुधार का निरन्तर प्रयास कर रहे हैं। हिन्दुस्तान हिन्दी के श्री बृजनारायण अग्रवाल तथा प्रैस सूचना केन्द्र में कार्यरत हिन्दी सेवी और भाषा-मर्मज्ञ डॉ. विजय अग्रवाल का स्नेह निरंतर मेरे साथ बना हुआ है।

चेन्नै के प्रो. एम. वैद्यलिंगम् ने इस पुस्तक में दिया गया लगभग पूरा अनुवाद सुना और अनेक महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए। इस ग्रंथ में प्रकाशित मंदिरों तथा देव-प्रतिमाओं के रंगीन चित्र भी प्रो. एम. वैद्यलिंगम् और श्री सी. रवीन्द्रन् के संयुक्त प्रयासों का परिणाम है। श्री सी. रवीन्द्रन् की जीवनदृष्टि सेवा-भावना और आस्था से जुड़ी है। विविध रूपों में उनके सहयोग से मैं अभिभूत हूँ। उनकी सत्यनिष्ठा, गुरुभक्ति और निःस्वार्थ भावना का प्रभाव उनके निकट रहने पर स्नेहाभिभूत करता है। 'किसान वर्ल्ड' पत्रिका के सहयोगी सम्पादक श्री एस. कुंचितपादम् विविध कार्यक्रमों के प्रचार-प्रसार के लिए विशेष प्रयास करते हैं, फलतः ग्रंथों के प्रकाशन की सूचना दूर-दूर तक पहुँच जाती है। 'ओम् शक्ति' के सहसम्पादक श्री पे. चिदम्बरनाथन् डॉ. ना. महालिंगम् के निर्देशन में भारतीय सांस्कृतिक दृष्टि को व्यापक स्तर पर प्रचारित कर रहे हैं। हिन्दी में किए जा रहे तमिल साहित्य और संस्कृति विषयक कार्यों को महत्त्व देकर 'ओम् शक्ति' राष्ट्रीय भावात्मक ऐक्य में अपना योगदान कर रही है।

डॉ. देवकन्या, डॉ. वेदवती वैदिक, डॉ. शशिप्रभा कुमार आदि का सर्वविध सहयोग प्रभुकृपा का ही एक रूप है। डॉ. जगन्नाथ विद्यालंकार अब इस साहित्यिक परिवार के नए सदस्य हो गए हैं। वैदिक परम्परा में शिव-विषयक कई संदर्भों को स्पष्ट करने में डॉ. शशि तिवारी ने योगदान किया है मैं उनका धन्यवाद करता हूँ। डॉ. सुषमा कुलश्रेष्ठ, सुश्री आभा और श्री जगदीशसहाय कुलश्रेष्ठ सहजभाव से सहयोग देकर, अपने सारस्वत अनुष्ठानों के साथ जोड़कर, जो कृपा करते हैं उसके लिए शाब्दिक 'धन्यवाद' पर्याप्त नहीं।

भारतीय भाषाओं की अंतर्निहित वैचारिक एकता को प्रस्तुत करने और तमिल-हिंदी विषयक मेरे साहित्यिक प्रयासों को तमिल समाचार-पत्रों

'दिनमलर', 'दिनतन्दि' तथा 'आनन्द विकटन', 'रानी', 'पानर' आदि पत्रिकाओं द्वारा किए गए प्रचार और प्रशंसा से आत्मविश्वास दृढ़ होता है। तमिल में प्रकाशित दिनमलर में श्री पेररुलालन् द्वारा 'रामलिंगस्वामी' विषयक पुस्तक की एक विस्तृत समीक्षा से हिन्दी में हुए इस कार्य को पूरे तमिलभाषी समाज तक सूचना देकर अनुग्रह किया है। इसी भाँति 'हिन्दू' ने एक विशेष परिचयात्मक लेख प्रकाशित किया। दैनिक भास्कर-भोपाल के श्री ओम् नागपाल ने पेरियपुराणम् पुस्तक की 'तमिल शिव पुराण' शीर्षक से डॉ. सुमन कुमार की समीक्षा प्रकाशित की और 'समस्त भारतीय भाषाओं के साहित्य में एक ही भावधारा अविरल रूप से प्रवाहित है, यही भावधारा राष्ट्रीय एकता और अखंडता की गारंटी है.......' द्वारा इस कृति के योगदान को मान्यता प्रदान की। राष्ट्रीय भावनाओं के प्रति समर्पित 'पाञ्चजन्य' के सम्पादक श्रीयुत तरुण विजय ने भी इस ग्रंथ-विषयक कार्यक्रम को महत्त्पूर्ण ढंग से प्रकाशित किया। श्री ए. आर. राजामणि दिल्ली के तमिल-हिंन्दी विषयक कार्यक्रमों को समाचार रूप में तमिल समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में भेजकर संचार माध्यमों के द्वारा प्रचार कर दायित्व निभाते हैं। उनके सहयोग के लिए मैं तमिल हिंदी संगम् की ओर से आभार मानता हूँ। हृदय और पूरी चेतना से कलाकार श्री नरेन्द्रनाथ सेठी ने आवरण तथा रंगीन चित्रों को वर्तमान रूप में तैयार करके ग्रंथ-प्रकाशन में सहयोग देकर अनुग्रह किया है।

जीवन गतिशील है पर शिवालय के रूप में शरीर को स्वीकार करने के उपरान्त भी इसकी सीमाएँ मानवीय क्षमता की सीमाओं के रेखांकित कर देती हैं। जीवन संगिनी का स्नेहपूर्ण, सक्रिय सहयोग अनेक प्रकार से जीवन के प्रत्येक कर्म को उल्लास और आनन्द का स्त्रोत बना देता है। धर्मपत्नी डॉ. रमेश सेठ का योगदान इसी स्तर का है। इस पुस्तक की पाण्डुलिपि और प्रूफ़ों के सुधार का दायित्व उन्होंने ही निभाया है। इसी भाँति प्रिय स्मिता और अशोक तथा उनकी कृति 'संचिता' जीवन के उल्लास और विषाद के सहभागी हैं।

पुस्तक के तमिल अंश की लेज़र-कम्पोजिंग करने के लिए मैं श्री आर. शाहजहाँ और श्रीमती मैथिली का आभारी हूँ। अत्यन्त मनोयोग से तिरुमंतिरम् की मूल तमिल सामग्री को व्यवस्थित करके उन्होंने वर्तमान रूप में कृति के प्रकाशन की आधार-भूमि तैयार की। मित्रवर श्री अमित और उनके सहयोगी श्री खगेन्द्र अवस्थी का लेज़र कार्य के लिए मैं आभार मानता हूँ। बन्धुवर श्री चन्द्रमोहन और उनके उत्साही पुत्र श्री अनमोल गोयल ने प्रकाशन व्यवस्था में व्यक्तिगत रुचि लेकर मेरा कार्य सरल कर दिया। मैं इन्हें हृदय से धन्यवाद देता हूँ। ग्रंथ की रचनाप्रक्रिया और अनुवाद आदि के लिए जिन विद्वानों के ग्रंथों का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से उपयोग किया गया है उनके प्रति मैं सादर कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

नई दिल्ली

रवीन्द्रकुमार सेठ

प्रथम खण्ड

1

தமிழ் ஆகம சாத்திரம்

திருமந்திரம்

तमिल आगम-शास्त्र — तिरुमूलर कृत
तिरुमंतिरम्

तिरुमूलर कृत तिरुमंतिरम् का विस्तृत विश्लेषण; समग्र नौ तन्त्रों का विवेचन; ज्ञान, साधना, अवस्थाएँ, कुण्डलिनी, शिवशक्ति, समाधि, लिंग शिवलिंग, ज्ञानलिंग, गुरु, ज्ञातृ ज्ञान ज्ञेय, ॐ तत्त्वमसि इत्यादि विषयों का तिरुमूलर-चिन्तन के आधार पर परिचय

तिरुमूलर कृत तिरुमंतिरम् : एक विश्लेषण

साधक-संत तिरुमूलर : परिचय

तमिलनाडु में ज्ञान और साधना-प्रधान चिंतन के मूल प्रवर्तक तिरुमूलर माने जाते हैं। तिरुमंतिरम् तंत्र, मंत्र, यंत्र, योग, साधना, शिव-ज्ञान आदि का तमिल का प्राचीन आगम-ग्रंथ है। अलौकिक, आध्यात्मिक ज्ञान का यह ग्रंथ ईश्वरीय अनुग्रह, ज्योति, षडाधार, लिंग, अध्वा, नवाक्षर आदि के चिंतन का स्रोतग्रंथ है। तिरुमूलर का स्मरण एक साधक, चिंतक ज्ञानी, महायोगी के रूप में किया जाता है। दशम तिरुमुरै के रूप में शैव-तिरुमुरै में तिरुमंतिरम् का विशेष महत्त्व है। तमिल साहित्य में इस ग्रंथ का उल्लेख पर्याप्त मात्रा में हुआ है पर गहन और विश्लेषणपरक अध्ययन अपेक्षाकृत कम है।

तिरुमूलर के जीवन की गाथा जनश्रुतियों और काल्पनिक कथाओं के बीच प्रायः लुप्त हो गई है। प्रसिद्ध भक्त सुन्दरमूर्ति नायनार् कृत तिरुतोण्डतोकै (नवीं शती) में तिरुमूलर का सादर स्मरण किया गया है — 'मैं प्रभु मूलन के दास का दास हूँ।' तिरुतोण्डर पुराण (पेरियपुराण) के रचयिता नम्बि आण्डार नम्बि ने तिरुमूलर विषयक वर्णन इस प्रकार किया है— "सात्तनूर नामक ग्राम में, जहां सज्जन लोग निवास करते हैं, गायों के चरवाहे की मृत देह में प्रविष्ट होकर पुनर्जीवित हुए योगी के चरणों को मैं अपने शीश पर श्रद्धापूर्वक धारण करता हूँ। उस योगी ने चतुर्विध पुरुषार्थों के बोधक गुणों से युक्त मधुर तमिल भाषा में, द्वितीया के चन्द्र को सिर पर धारण करने वाले, शिव की वेदसम्मत स्तुति की। यह मूलन संज्ञक प्रभु शिव ही हैं।" अनेक ग्रंथों विशेषतः उमापति शिवाचार्यकृत 'तिरुतोण्डर पुराणसारम्', सात्तनार सामिनाथ मुनिवरकृत 'तुरैसै पुराणम्', उपमन्युमुनिकृत 'उपमन्यु-भक्त-विलासम्', अगस्त्यकृत 'अगस्त्य-भक्त-विलासम्' आदि में उपलब्ध सामग्री से भी तिरुमूलर के जीवन-वृत्त पर पर्याप्त प्रकाश नहीं पड़ता। विविध

ऐतिहासिक स्रोत, शास्त्र-ग्रंथ, टीकाग्रंथ तथा अंतःसाक्ष्य के आधार पर मात्र इतना निष्कर्ष निकाला गया है कि तिरुमूलर उत्तर से, हिमालय दिशा की ओर से, तमिलनाडु आए थे। वे वेद, आगम, योग-शास्त्र, तंत्र-शास्त्र आदि के महान् विद्वान्, उत्तम योगी और साधक थे। वे नाथसिद्ध योगी थे। एक मत के अनुसार वे नाथ-सिद्ध सम्प्रदाय के पूर्वाचार्यों में से एक थे।

तिरुमूलर तमिलनाडु में विभिन्न स्थलों पर रहे, विशेषतः तिरुवावडुतुरै में शिवबोधि के निकट वे पर्याप्त समय तक समाधि में लीन रहे। योग, तंत्र, वेद, आगम आदि का समन्वय करके उन्होंने जो ज्ञान दिया वह तिरु-श्री, मंतिरम्-मंत्र नामक ग्रंथ के रूप में उपलब्ध है।

तिरुमूलर का काल-निर्णय भी एक जटिल समस्या है। श्री पालूर कण्णप मुदलियार उन्हें ई. पू. 8020 का मानते हैं। श्री अ. चिदम्बरम् उन्हें ई. पू. 6000 और श्री चेंगल्वराय पिल्लै ईसा पूर्व 2100 में हुआ मानते हैं। श्री रमण शास्त्री ने उन्हें ईस्वी सन् 600, तथा श्री नारायण अय्यर और श्री राजमाणिक्कम् ने तिरुमूलर को ई. 400-600 में हुआ माना है। श्री वेल्लैवारणर ने तिरुमूलर का रचनाकाल ई. सन् 300 से 600 के मध्य माना है। श्री के. वी. ज़्वेलेबिल तिरुमंतिरम् को ई. सन् 600 और ई. सन् 700 के बीच की रचना मानते हैं। विविध स्रोतों से उपलब्ध सूचनाओं, विषय-विवेचन, ग्रंथ के अंतःसाक्ष्य आदि के आधार पर इस कृति को ईसा की चौथी शताब्दी के कुछ बाद की रचना मानना समीचीन प्रतीत होता है। काल-निर्णय की समस्या विद्वानों के पूर्वाग्रहों के कारण सुलझ पाना सहज नहीं है।

तिरुमूलर के तिरुमंतिरम् का एक प्रामाणिक संरकरण, तमिलनाडु के सुप्रसिद्ध विद्वान्, प्राचीन शोध के कर्म में रत, चिंतक डॉ. एन. महालिंगम् द्वारा सम्पादित है। रामकृष्ण मिशन, चेन्नै द्वारा प्रकाशित एवं तमिलनाडु के शैव-भक्त डॉ. बी. नटराजन द्वारा अनूदित वर्तमान संस्करण 1991 ई. में प्रकाशित हुआ। अनुवाद एवं विषय-विश्लेषण के लिए इस संस्करण के मूल तमिल मंत्रों के क्रम को प्रस्तुत कृति में आधार रूप में स्वीकार किया गया है। ऋग्वैदिक 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' की चिंतनधारा को समाविष्ट करनेवाली इस कृति के रचयिता तिरुमूलर विषयक एक परम्परागत कथा का उल्लेख मिलता है। एक मृत चरवाहे की गायों पर दया करके कैलाश पर्वत से आए योगी ने परकाय प्रवेश किया। मृत गड़रिये का नाम मूलन था जो सात्तनार गांव का निवासी था। गांव पहुँचकर, गायों को सुरक्षित पहुंचाकर 'मूलन' के शरीर में प्रविष्ट योगी जब लौटकर आए तो उनका अपना 'शरीर' लुप्त हो गया था। 'सम्भवतः शिव की कृपा इसके मूल में है' – ऐसा विचारकर योगी 'मूलन' के शरीर में रहते हुए समाधिस्थ हो गए। पेरिय पुराणम् के एक पद में इसका



சிதம்பரம் (சிவகங்கைத் தீர்த்தம்)

चिदम्बरम्, श्री नटराज मंदिर (शिवगंगा सरोवर)

Chithambaram Temple (Sivagangai Tank)

वर्णन हुआ है–

(पुरानी देह नहीं मिली, तब ज्ञान हुआ तिरुमूलर को)
चन्द्रमौली जटाधर ने निश्चय ही
निमित्त बनाया है मुझको तमिऴ् में देने के लिए
पवित्र आगम-शास्त्र को, सम्भवतः इसी शिव-संकल्प के कारण
छिप गई है मेरी देह (जिसे छोड़ा था मैंने इस स्थल पर)
यदि यही तुम्हारी लीला है तो ईश !
मान्य है मुझे सर्वथा।

तिरुवावडुतुरै स्थित शैव-स्थल पर उन्होंने साधना द्वारा प्राप्त ज्ञान को इस ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत किया। 'शिव' के अनुयायियों, भक्तों द्वारा तिरुमूलर को परकाय प्रवेश में सिद्ध योगी मानना उनके प्रति अपार श्रद्धा और उनके कार्य को महत्त्व देने का प्रयास भी माना जा सकता है। यह भी सम्भव है श्रेष्ठ योगी होने के कारण परकाय प्रवेश की कथा मूलर के समय में ही उनके साथ सम्बद्ध हो गई हो।

तिरुमंतिरम् ग्रंथ की उपलब्ध प्रकाशित प्रतियों में 3047 से लेकर 3108 पद मिलते हैं। डॉ. ना. महालिंगम् द्वारा सम्पादित 'तिरुमंतिरम्' में 3047 मंत्र हैं। विद्वानों का एक वर्ग इसे संस्कृत में लिखित तंत्र, मंत्र, शैवागम, यामल ग्रंथ, नीतिशास्त्र इत्यादि के श्रेष्ठ विचारों के चयन के साथ स्वानुभव को मिलाकर रचित कृति मानते हैं। संस्कृत के तद्विषयक विशाल साहित्य का परिचय तिरुमूलर को था, इसमें कोई सन्देह नहीं पर तमिल में रचित तिरुमंतिरम् एक मौलिक कृति है जो गम्भीर, गहन अनुभूति से उद्भूत काव्य-सृष्टि है। तीन हज़ार पदों की रचना में यत्र-तत्र कुछ अंश प्रक्षिप्त आ जाना असम्भव नहीं है। डॉ. रमण शास्त्री ने समग्र ग्रंथ में से 47 पदों को प्रक्षिप्त मानकर इसकी कुल मंत्र संख्या 3000 निश्चित् की थी पर इस बात का क्या प्रमाण है कि जो मंत्र मूल ग्रंथ से अलग किए गए वे ही प्रक्षिप्त हैं ? चिंतन की प्रक्रिया और विविध विषयों पर तिरुमूलर द्वारा दिये गए क्रमबद्ध विवेचन को आधार बनाएँ तो केवल 47 मंत्रों के अधिक हो जाने से मूल चिंतन, सैद्धान्तिक विवेचन, विषय-प्रतिपाद . अथवा कवि-चिंतक द्वारा सम्प्रेषित किया जा रहा 'सत्य' अप्रभावित रहता है।

प्राक्कथन

तिरुमंतिरम् का गहन, विश्लेषणपरक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि तिरुमूलर एक शिवयोगी थे। योग के प्रथम चरण में उन्होंने मूलाधार की अग्नि को जगाया और अपने चारों ओर के जीवों (पशुओं) के बंधनों को शनैः

शनैः काट दिया। दीर्घकाल तक तप-साधना से प्राप्त ज्ञान द्वारा जीव और शिव के बीच बाधारूप में विद्यमान पाश-बंधन को दूर किया फलतः शिव का पूर्ण अनुग्रह प्राप्त किया। ईश्वरीय चिंतन द्वारा सत्य को आत्मसात् कर जो 'अनुभव' उन्हें मिला वह अवर्णनीय आनंद मानवमात्र को भी मिले इसलिए उसका वर्णन तिरुमंतिरम् के रूप में किया। 'अनुभव' की यह उपलब्धि शिव के अनुग्रह का परिणाम थी। शिवकृपा से ही गहन गम्भीर चिंतन-सागर से प्राप्त आध्यात्मिक मुक्तामणियों को शब्दबद्ध करने में तिरुमूलर को सफलता मिली।

साधना मार्ग में 'शरीर' का महत्त्व

'शरीर' नश्वर है, माटी का पुतला है, पानी का बुलबुला है, अगले क्षण का भी हमें ज्ञान नहीं—यह एक प्रकार का चिंतन है। सिद्ध योगी शरीर की नश्वरता को जानकर भी इसे साधना के आधार-रूप में स्वीकार कर इसका सम्यक् संवर्धन करने का संदेश देते हैं। इस शरीर रूपी शिवालय से ही योग के चरम शिखर पर पहुंचा जा सकता है; निर्मल ज्ञान का साक्षात्कार कर अध्यात्म-चेतना का यह अनुभव दूसरों के साथ बांटा जा सकता है अतः आत्मा के संवर्धन और उन्नयन के लिए शरीर का सम्यक् संरक्षण आवश्यक है। तिरुमंतिरम्—724 में कवि-कथन है—

उडम्बर् अऴियिल् उयिरार् अऴिवर्
तिडम्बड मॅय्ज्ञानम् चेरवुमाट्टार्
उडम्बै वळर्क्कुम् उपायम् अऱिन्दे
उडम्बै वळर्त्तेन् उयिर् वळर्त्तेने।

देह नष्ट होने पर 'देही' भी नष्ट होता है— शरीर दुर्बल, जर्जर हो तो उसमें निवास करने वाला जीव कैसे स्वस्थ रहेगा ? ऐसी स्थिति में वह सत्यज्ञान-ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता अतः मैंने काया-पोषण का उपाय जानकर काया का परिष्कार किया और अपने जीव का भी पोषण-संवर्धन किया। तदुपरान्त तिरुमूलर का कथन है—

शरीर को मलमय माना था
मैंने पूर्व में भ्रमवश
फिर देखा सत्य वस्तु
निवसित है इसी देह में
सत्य का साक्षात्कार हुआ
जीवालय मम देह के भीतर
स्वर्ग और पृथ्वी की जननी

प्रदान करती है मुझे अमृत
जीवालय तब बन जाता है शिवालय। (719)

'पायिरम्' अथवा प्राक्कथन में 112 मंत्र हैं जिनमें विनायक-स्तुति, ईश स्तुति, शिव-अनुग्रह का महत्त्व, वेद-माहात्म्य, आगम-ग्रंथों का महत्त्व, गुरु परम्परा, तिरुमूलर का इतिहास, त्रिदेव आदि विषयों का वर्णन है। उनका कथन है—'वेद से विशिष्ट कोई धर्म नहीं', 'वेद धर्म-सार है' (51); 'ज्ञानगुरु शिव ही सत्य है, चित् अचित् से परे परमतत्त्व ज्ञान के आधार हैं'; (54)। तिरुमूलर के अनुसार परात्पर परमेश्वर से नवागम का उद्‌गम हुआ। गुरुनाथ 'नंदी' से दीक्षा प्राप्त कर आठ सिद्ध हुए — सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार, शिवयोगी, पतञ्जलि, व्याघ्रपाद और तिरुमूलर स्वयं (67)। साधना की प्रक्रिया में जब 'सर्व परित्यागी' होकर अंतःलीन हुआ तो मुझे साक्षात्कार हुआ (76)। तिरुवावडुतुरै धाम में शिव-बोधि के नीचे बैठकर अनवरत् शिव-साधना करने के उपरान्त जो ज्ञान प्राप्त हुआ उसे तिरुमूलर ने इस ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत किया।

शास्त्र-रचना का उद्देश्य

तिरुमूलर ने जो आनन्द प्राप्त किया उसे लिपिबद्ध करने का कारण लोक-मंगल, लोककल्याण है—

मैंने जो सुख पाया प्राप्त करे यह जग सारा
मार्ग की जिज्ञासा है यदि दिव्य सुख सम्प्राप्ति के,
सुनो उसका यही तंत्र, गुनो मन में महामंत्र
हृदयतल की चेतना में गुनते रहो महामंत्र
गहरे उतरो, गहरे उतरो स्वयं सिद्ध होगा आनन्द। (85)

पद संख्या 99 में स्पष्ट किया गया है — 'मूलन् उरै चॅयद् मूवायिरम् तमिऴ्' — '(तिरु) मूल-विरचित त्रिसहस्र तमिऴ् मंत्र' जगत् के ज्ञान हेतु, उद्धार हेतु स्वयं नन्दीदेव द्वारा प्रकट किए गए हैं। वे सर्वशक्तिमान् ईश विश्व का बीज हैं, जो अंतः बाह्य विशुद्ध हैं, वे सत् को यथावत् देखते हैं। वह एकमेव है, परात्पर है, भीतर-बाहर सर्वत्र व्याप्त परमेश्वर सृजन, पालन आदि विविध कर्म में स्वयं अज, विष्णु आदि रूपों में अभिव्यक्त होता है; प्रलय में, तिरोधान में वह सर्वेश जीवों को कर्मबंधन से मुक्त करता है।

प्रथम तन्त्र

अनित्यता, अहिंसा, धर्म, विद्या, मध्यमार्ग आदि

प्रथमतंत्र में 24 अध्यायों में 224 मंत्र हैं। इसके अंतर्गत उपदेश, शरीर और जगत् की अनित्यता, अहिंसा, ब्राह्मण-धर्म, राज-धर्म, परस्त्रीगमन निषेध,

वर्षा और दान की महिमा, प्रेम की शक्ति, विद्या, श्रवण से मनन, मध्य-मार्ग और मदिरा-निषेध आदि विषयों को वर्णन का आधार बनाया गया है। शैव-सिद्धांत के मूल विषय पति, पशु और पाश के विषय में स्पष्ट कथन है कि पति के समान पशु और पाश भी पुरातन हैं; जब पति अनुग्रह करता है तो पशु के पाश टिक नहीं पाते (115)। वह ममतामयी मां के सदृश वात्सल्य की वर्षा करता है; काया के मंदिर में आनन्दकंद नंदी उसी भांति निवास करता है जैसे वंशीवृक्ष के कोमल तने में समुत्थित अग्नि स्थित रहती है (116)। उसके प्रेम का अद्‌भुत प्रभाव है – हृदय चित्सभा बन जाता है, वृत्तियां अंतर्मुखी हो जाती हैं, सकल मल नष्ट होकर इहलोक शिवलोक बन जाता है (118)। यह बुद्धि और इंद्रियों का मार्ग नहीं, सद्‌गुरु जब सूक्ष्म तत्त्व स्पष्ट करता है, चिति के महाचिति में लय का सादृश्य दिखाता है तो चित् अचित् हो जाता है, योग की परमदशा प्राप्त होकर आत्मज्योति परमज्योति में लीन होती है और शिवयोग सिद्ध होता है (119, 122)। *'तूङ्गिक्कण्डार् शिवलोकमुम् तम्मुळ्ळे'* – ज्ञान निद्रा में सुप्त सिद्ध पुरुष निज अंतर् में शिवलोक के दर्शन करते हैं (129)। इस विषय का स्पष्ट, निर्णायक पद 'ज्योति' की अवधारणा से सम्बद्ध है–

शब्दादि पंचेन्द्रिय एवं छत्तीस तत्त्व
लीन हो जाएँ तन्मात्राओं सहित स्वयं में
चिति का होगा विलय महाचिति में स्वतः
सुन्नमंडल में होगा मिलन
ज्योति का ज्योति से शिव-महानुग्रह से
समझ लो इसके अर्थ को स्पष्ट ही ! (135)

मानव-जीवन की क्षणभंगुरता का जो चित्र तिरुमूलर ने अंकित किया है वह हृदयग्राही और प्रभावोत्पादक है–

उच्च स्वर में रोया-चिल्लाया
सारा गांव मिल के
उसका अच्छा भला नाम हटाया
बुलाया 'शव' कहके
उठाकर ले गये श्मशान-घाट
जलाया सबने मिलके
फिर भुला दी उसकी याद तक
जल में डुबकी लगाकर। (145)

एक अन्य मंत्र में कथन है–

उसने अपना भोजन तैयार करवाया; भोजन खाया, अपनी कोमलांगी

पत्नी के साथ सुख भोगा। कहा—मेरे बाएँ पार्श्व में कुछ पीड़ा हो रही है। फिर जो धरती पर लेटा तो सदा के लिए सो गया (148)। जब देह का मंडप ढह जाता है तो मठाधीश जीव का मंडल से नाता टूट जाता है। नवद्वार एकसाथ बंद हो जाते हैं। बंधुबांधव रोते, कलपते हैं और फिर विलग हो जाते हैं (152)। जब काया का चर्मखोल तजकर आत्मतत्त्व पक्षी उड़ जाता है तो चाहे इसे दुग्ध-स्नान करवाओ, सम्मानपूर्वक संस्कार करो अथवा अपशब्द कहो, किसी निर्जन वनप्रांतर में चील-कौओं का भोजन बनने के लिए फेंक दो, कोई अंतर नहीं पड़ता (167)। जीवन की असारता, नश्वरता का चित्रण करने के मूल में मानवमात्र को सद्कर्म में प्रवृत्त होने के लिए संदेश देना है। तिरुक्कुरल के रचयिता तिरुवल्लुवर के अनुसार नश्वरता (निलैयामै) का ज्ञान हो जाने पर मनुष्य परमसत्य (मेय्युणर्त्तल्) की प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर होता है। उनके अनुसार पंख निकलने पर पक्षी अण्डे के खोल को त्याग देता है, इसी प्रकार आत्मा शरीर का बंधन त्याग देता है (कुरल–338)। तिरुमूलर भी विश्व की अस्थिरता, यौवन और शरीर की नश्वरता का परिचय देकर चिरस्थायी, अनश्वर ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रेरणा देते हैं।

परस्त्रीगमन वर्जन

शिव-आराधना और सत्य के मार्ग में बाधक तत्त्वों में से जीव-हिंसा, चोरी, मद्यपान, कामवासना, असत्यवचन आदि से दूर रहने का संदेश (200) देकर तिरुमूलर वैभव-विलास के मोहपाश में फंसकर परस्त्रीगमन की वर्जना करते हैं। गृहस्थ जीवन की पूर्ण स्वीकृति है पर—

प्रेम से संवर्धित गार्हस्थ्य
है सुमधुर पक्व आम्रफल,
मूढ़मति इसे कच्चा मान
गाड़ देते भूमि में और
टेढ़ी-मेढ़ी 'इमली' परनारी को
समझ कर रस-गागर
चढ़ते हैं गांठदार डालों पर
तुड़वाने को निज अंग। (202)

सुमंगली पत्नी के घर में रहते हुए भी जो कामुक दूसरों की गृहीत पत्नी से कामेच्छा प्रकट करते हैं वे मूर्ख हैं, पके हुए स्वादिष्ट कटहल के स्थान पर नीरस ताड़ के फल की कामना करते हैं (201)। काम के वशीभूत होकर मात्र प्रेम का ढोंग रचने वाली विलासी स्त्री की भी वे निंदा करते हैं। ऐसी स्त्री का आलिंगन क्षण भर के लिए गन्ने के रस की भाँति मीठा होता है पर बाद में नीम के समान कटु प्रभाव ही मिलता है (207)। इसी भाँति नल्कुरवु (संग्रह-

वर्जन) में धन-संग्रह, स्वर्ण-संग्रह आदि की भी अस्वीकृति है।

ब्राह्मण-धर्म, शासक-धर्म

द्विज का अभिलक्षण स्पष्ट करते हुए तिरुमूलर ने कहा कि वे षट्कर्म में संलग्न हैं, तीनों संध्याकाल में अग्नि की उपासना करते हैं, निज चर्या में स्थिर रहकर संध्या, वंदन आदि अनुष्ठान करते हैं (224)। सावित्री-विद्या गायत्रीमंत्र की उपासना काग्र होकर, प्रेमरथ पर आरूढ़ हो जो प्रेममय हो जाते हैं वही सच्चे मायामुक्त वेदज्ञ हैं (226)। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है आसक्ति का परित्याग; आद्योपांत वेद-अध्ययन करने पर भी यदि आसक्ति का अंत नहीं हुआ तो सब वृथा है क्योंकि 'वेदान्त है पर्याय अनासक्ति का' (229)। अन्यायी शासक से यमराज श्रेष्ठ है क्योंकि यमराज तो कर्म-विधान के अनुसार मृत्यु देता है पर अधर्मराज, अन्यायी राजा न्याय-विचार नहीं करता (238)। अतिथि-सत्कार और मुक्तहस्त से दान करने का परामर्श दिया गया है (250)। दान और ईश-सेवा विषयक तिरुमूलर का एक व्यावहारिक दृष्टिकोण है—ईश को एक बिल्वफल अर्पित करना, गाय को मुँह भर घास खिलाना, भोजन पूर्व मुट्ठी भर दान और मधुर सम्भाषण सबके लिए सम्भव है (252)।

प्रेम का महत्त्व

तपस्या की तुलना में स्नेह-द्रवित हृदय से प्रभु के प्रति प्रार्थना का अधिक महत्त्व है—

अस्थियों की बनाकर समिधा
मज्जा को बनाएँ हविष्य
यज्ञवेदी पर होमाग्नि में
कनकरंग में भूनें तब भी
प्रकट न होगा परमेश्वर;
वह महामणि तो करगत होगा उनको
स्नेह की आँच में पिघल जाएँ
प्रेम-विगलित हृदय से। (272)

प्रेम-विगलित हृदय से, अनन्य भक्ति से, श्रद्धा से प्रभु की शरण में जाने पर वह स्वयं आगे बढ़कर अनुग्रह करता है (274); प्रेम स्वरूप परमेश्वर प्रेम में निवसित है; वह भीतर भी है, बाहर भी, प्रेमाधार शरीर भी वही है 'प्रेम स्वरूप वह प्रेम से ही है प्राप्य' (279)।

'अनबुम् सिवमुम् इरण्डेन्बर् अऱिविलार्' पद (270) में प्रेम और शिव की एकता का प्रतिपादन है—

अज्ञानी कहते हैं 'प्रेम' और 'शिव' भिन्न हैं !
कोई नहीं जानता कि प्रेम ही शिव है !
यह जानकर कि प्रेम ही शिव है,
वे प्रेमी होकर 'शिवमय' हो रहेंगे।

शिवानुभव-वर्णनातीत

ज्ञान को आत्मानुभव रूप में ग्रहण करते हुए तिरुमूलर का मत है कि जब ज्ञानी अंतर्मुखी होता है तो ध्यान में, समाधि में उसको ज्ञान प्राप्त होता है जिसकी वह व्याख्या करता है। इस आत्मानुभूति को सुनकर अन्य के भी अंतःचक्षु खुल जाते हैं (291)। लौकिक प्रपंच के प्रेम से मानव चकित और भ्रमित होता है, स्थिरता से वैराग्य-आश्रय लेने पर इच्छा रूपी पक्षी उड़ जाते हैं (295)। श्रवण, मनन, निदिध्यासन से अपने अंतस् में अनुभव करने का मार्ग ही देवाधिदेव को प्राप्त करने की विधि है (301)। शिवानुभव को पंचेन्द्रिय के माध्यम से सिद्ध करने का प्रयास रेत के घरौंदे बनाने वाले अबोध शिशु की क्रीड़ा मात्र है (306)। साधक के हृदय में स्फुरित होने वाले शिव अथवा ज्ञानज्योति को परस्पर विरोधी सिद्धान्तों, अध्ययन-विश्लेषण आदि से प्राप्त करना सम्भव नहीं (315)। मध्यम मार्ग अर्थात् इडा और पिंगला के मध्य शोभित सुषुम्ना के माध्यम से साधना को नीलमेघ श्यामल विष्णु, चतुर्वेदविद् चतुरानन, सिद्ध ज्ञानियों और प्रभु-परमेश्वर शिव का स्थान माना गया है (321)।

मद्यपान वर्जन

लौकिक-मद्यपान का स्पष्ट वर्जन है, मद्यपान का वास्तविक अर्थ ग्रहण करते हुए तिरुमूलर ने 'आनन्द सुधारस' की चर्चा की है। ध्यान की अवस्था में जब कोई द्वन्द्व नहीं रहता, समयबोध नहीं रहता तो ईश के चरणकमलों के अमृतरस (ब्रह्मरन्ध्र से प्रवहमान अमृत-स्रोत रूपी मद्य) का पान करें (331)। सुरापान से इन्द्रियां चेतनाशून्य हो जाती हैं फलतः 'शक्ति' नष्ट होती है; शिवज्ञान प्राप्त कर उसमें रमण करना ही शक्ति है और शक्ति ही शिवज्ञान है, आनंदमय सत्यज्ञान है (332)। शिवानुग्रह से शक्ति का अनुग्रह स्वतः प्राप्त होता है, शक्ति के अनुग्रह से शिव का अनुग्रह स्वतः होता है। हृदय में शक्ति-शिव की धारणा से अष्टसिद्धियाँ फलीभूत होती हैं (333)। योगीजन तो श्वासगति को नियंत्रित कर प्राणशक्ति को चन्द्रमंडल में पहुँचाते हैं जहां अष्टसिद्धि प्रदान करनेवाला आनंद का अमृत झर रहा है। लगभग एक सहस्र वर्ष बाद कबीरदास भी इसी का पान करते हैं—

इला प्यंगुला भाठी कीन्हीं, ब्रह्म अगनि परजारी
ससि हर सूर द्वार दस मूँदे, लागी जोग जुग तारी। (क. ग्रं. पृ. 86)

तिरुमूलर ने ऐसे मधुरमधु का पान करने का मार्ग दिखाया जिससे श्वास सुषुम्ना से ऊपर की ओर चढ़ता जाये और प्रभुचरणों से वरेण्य समाधि में मिलन सम्भव हो जाए (336)।

द्वितीय तन्त्र

द्वितीय तंत्र के पच्चीस अध्यायों में 212 मंत्र हैं। इस तंत्र के अंतर्गत अगस्त्य-कथा, शिव के अष्टवीर कृत्य, लिंग पुराण, दक्ष-यज्ञ, शिखा-चरण का संधान, सृष्टि, स्थिति, संहार, प्रच्छादन, अनुग्रह; सूक्ष्म जगत् का प्रजनन, त्रिविध जीव-वर्ग, सुपात्र-अपात्र, तीर्थ, पावन मंदिर, अधोमुख दर्शन, शिव, गुरु और महेश्वर (शिवज्ञानी) की निंदा का वर्जन, धृति और महापुरुषों का सत्संग आदि विषयों पर चिंतन हुआ है।

अगस्त्य-कथा-प्रतीक अर्थ

अगस्त्य मुनि की कथा पुराणों में प्रसिद्ध है। उमा-महेश्वर के विवाह के अवसर पर सभी देवता, ऋषि आदि हिमवान् के यहां एकत्र हुए फलतः उत्तर की दिशा झुकने लगी और लोक का संतुलन बिगड़ गया। तब महेश्वर ने अगस्त्य को दक्षिण दिशा में भेजा जिससे उत्तर-दक्षिण का संतुलन सम हो जाए। तिरुमूलर ने इस पौराणिक गाथा का रहस्य उद्घाटित किया और प्रतीक अर्थ स्पष्ट किया—

बिगड़ा तारतम्य सूर्य-चन्द्र का
डाँवाडोल हुआ आन्तरिक ब्रह्माण्ड
त्राहि-त्राहि मच गई भूत संघ में
सुनकर गुहार देवगण की, देवदेव ने
दिया आदेश कुम्भ मुनि को
संकेत से जताया – हे अगस्त्य !
मध्य में है अग्निपथ सुषुम्ना
साध लो साधना की धुरी
सधेगा संतुलन बिगड़ा ब्रह्माण्ड का। (337)

जब प्राण-अपान में असंतुलन आता है तब योगी अगस्त्य रूपी मध्या या ब्रह्मनाड़ी के जागरण द्वारा काया को स्थिर करता है। इसी भाँति त्रिपुरदहन का मर्म स्पष्ट करते हुए मूलर कहते हैं कि गंगाधर ने तीन पुरों का नाश किया ऐसा मूढ़ लोगों का कथन है। वास्तव में शिव आत्मा (पशु) को बांधने वाले आणवमल, कर्ममल और मायामल रूपी त्रिपुर का विनाश करते हैं (343)। 'संहार मूर्ति' का अर्थ है – उस योगीराज ने कडवूर नामक पवित्र स्थल में मार्ग दिखाया कि जो मूलाधार में स्थित कुण्डलिनी शक्ति को जागृत कर

ब्रह्मरन्ध्र में पहुँचा देता है वह काल पर विजय प्राप्त करता है (343)।

सृष्टि : शिव शक्ति लीला

परमेश्वर आद्यंतविहीन हैं, महाचिति में जब परात्पर और पराशक्ति का मिलन हुआ तो उस ज्योति से तुरीयातीत परशिव उत्पन्न हुआ। जब पर का पुनः परा से संयोग हुआ तो 'नाद' विद्यमान हुआ; शब्दनाद से ज्योति-बिन्दु प्रकट हुई। नाद-बिंदु के योग से शिव-शक्ति प्रकट हुए; शिव से ज्ञान, शक्ति से क्रिया और बिन्दु से इच्छा का आविर्भाव हुआ (381, 382)। सृष्टि का मूलकारण एक वही परमेश्वर है; विष्णु, कमलासन, वेद, ब्रह्माण्ड वही एक है (391)। सकल भुवन का सृजन शक्ति और शिव की लीला है, क्रीड़ामात्र है; स्वयं की अभिव्यक्ति है। ऋतुओं का परिवर्तन, फल-फूल, धन-धान्य, समृद्धि दिव्य युगम के संगम से होनेवाला सृष्टि-कर्म है। तैत्तिरीय उपनिषद् के *'सोऽकामयत्। बहु स्यां प्रजायेयेति'* (2/6) तथा छान्दोग्य के *'तदैक्षत बहु स्यां प्रजायेयेति तत्तेजोऽसृत* (6/2/3) के समान तिरुमंतिरम् में प्रतिपादित किया गया है कि ईश्वर एक है, वह अपनी अनुग्रहशक्ति को कई रूपों में प्रकट करता है। परज्ञान की स्थिति में जीव-उद्धार सम्भव नहीं अतः ईश्वर-संकल्प द्वारा परतत्त्व से 'शक्ति' प्रकट होती है। ज्ञानस्वरूपा शक्ति सृष्टि-सृजन के लिए अपने एक अंश को स्फुरित करती है तब परमात्म-तत्त्व 'नाद' कहलाता है। नाद से जब एक अंश स्फुरित होता है तो 'बिन्दु' कहलाता है। नाद-बिन्दु; शिव और शक्ति अभी तक निर्गुण रूप में हैं। जगत्-संचालन के लिए जब माया प्रकट की जाती है तो वह शुद्धमाया कहलाती है। 'अहंकार' का संयोग होने पर यह 'अशुद्ध माया' कही जाती है। इस भाँति के विविध प्रकार्यों से सृष्टि-प्रपंच का प्रवर्तन प्रारम्भ होता है। ईश्वर जीव भी है, जीव से भिन्न भी है और जीव के नायक के रूप में नियंता भी है। ईश्वर इस भाँति पति, पशु, पाश तीनों में स्थित है। सर्वकारण पति सत्, चित्, आनन्द रूप है।

महामाया

महामाया की अपार महिमा है; चिति से परे महाचिति वह पूर्णा है (402)। शिवशक्ति समुच्चय से सप्तलोक का सृजन, संरक्षण, पालन, संहार का दायित्व शिव परिवार का है (407)। जड़ और चेतन सृष्टि, शरीर, शरीर में स्पन्दित प्राण, आलोड़ित सागर, नीरयुक्त जलद, आकाश उसी का रूप है (413)। एक माटी से भिन्न-भिन्न रूपों के, आकारों के बरतन निर्मित होते हैं, इसी भांति अगणित जीवसृष्टि एक स्रष्टा का ही रूप है (440)—

माटी चढ़ाकर चाक पर
मनचाहा रूप देता कुम्हार
विश्व सृष्टि का तत्त्व भी यही

इधर कुम्हार की भाँति
अंतर्यामी गुरु नन्दिदेव भी
ढालता है मनचाहे ढंग से विश्व को। (443)

पूर्व जन्म के विलग हुए पच्चीस तत्त्वों का पुनः संयोग कर आदिदेव पुनः मानव-शरीर का निर्माण करता है और उसमें प्राणों का संचार कर स्वयं गर्भ में प्रवेश करता है (451)। गार्हस्थ्य में जब दो शरीरों का संगम होता है, शुक्र-शोणित रूप में प्रवहित होकर इनके संयोग से भ्रूण का निर्माण होता है। तदुपरान्त पूर्व जन्मों की कर्मवासना से युक्त एक जीव इस भ्रूण में प्रवेश लेता है (459)। अपूर्व कौशलपूर्वक वह स्रष्टा काया का पंजर निर्मित करता है; अस्थि, नाड़ियां, रुधिर, मांस, मज्जा का काया-महल बनाता है; इस अद्‌भुत कृतिकार के चरणों को उद्धार हेतु (461) खोजने वाले तिरुमूलर ने आगे के मंत्रों में मानव-जन्म-विषयक विविध विषयों का परिचय दिया है।

विज्ञानकल, प्रलयकल, सकल जीव

एक अध्याय में विज्ञानकल, प्रलयकल और सकल जीवों का परिचय दिया गया है। मलों के संयोग-वियोग को आधार बनाकर पुनः उपविभाजन दिया गया है। विज्ञानकल वे हैं जिन्हें ईश्वर द्वारा विशेष ज्ञान प्रदत्त हुआ है; तप-योग से ईशकृपा प्राप्त कर सत्यज्ञान प्राप्त करने वाले भी विज्ञानकल जीव हैं। ये कर्म और माया के दो पाशों से मुक्त हैं पर अहंकार-दोष से युक्त हैं। प्रलयकल अहंकार और कर्म रूपी दो दोषों से युक्त हैं। जब प्रलयकाल में सकल जीवराशि ईश्वर में विलीन होती है तो प्रपंच का संचालन करनेवाले तत्त्व और कलाएँ तिरोहित हो जाते हैं। जो पाशबंधन से मुक्त नहीं है, जिन्हें तीनों दोष ईश्वरीय सत्ता से, उसके ज्ञान की भावना से अलग रखते हैं वे 'सकल' हैं। मायाबद्ध होकर अज्ञान की स्थिति में ये कर्मफल भोगते हैं।

दान

अपने युग के सामाजिक परिवेश को समक्ष रखकर तिरुमूलर दान देने के लिए आधार स्पष्ट करते हुए कहते हैं— जो योगमार्ग पर स्थित रहें, यम-नियम का पालन करें, प्रभु का स्नेहपूर्वक अर्चन-आराधन करें ऐसे लोगों को दान दिया जाना चाहिए। स्नेह, करुणा का लेश भी जिनमें नहीं है उन्हें दान देना निन्दनीय कार्य है (506)।

नीलकंठ; षण्मुख

श्वेत मुण्ड-माला धारण किए, जटायुक्त, विश्वाधार अष्टदिशा-व्यापी हैं। उन्होंने विष धारण किया है, अज्ञजन ऐसा कहते हैं (521)। मूलाधार स्थित मूलाग्नि में शिव निवास करते हैं, मध्य-सुषुम्ना में वही प्रकाशमान है। उसकी

ज्योति का प्रकाश सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त है (521)।

'एम्मरु मान्इऱै वामुऱै' ....(520) पद में पद्मासुर की अपार विनाशक शक्ति का उल्लेख हुआ है। विद्वानों का विचार है कि यहां शिव के पुत्र रूप में सुब्रह्मण्य-षण्मुखम् (मुरुगन) का उल्लेख है। संस्कृत में कुमार के रूप में प्रसिद्ध सुब्रह्मण्य के विषय में देवताओं की रक्षा हेतु असुरों के साथ युद्धों का वर्णन पुराणों में प्रचुर मात्रा में है। देव सेनापति 'मुरुगन' मूलतः तमिल देवता के रूप में विख्यात हैं। 'शिव' की अवधारणा को तमिल प्रदेश के षण्मुख के साथ एकीकृत करने के प्रयास के रूप में भी इस मंत्र का महत्त्व है। यह शिव का करुणामय रूप है और महायान बौद्ध परम्परा के अवलोकितेश्वर के साथ इसका साम्य एक विचारणीय विषय है। एक विचार यह भी है कि प्रणव-स्वरूप ही अधोमुख होकर मायामय जगत् की सृष्टि करता है। सृष्टि अपने दोनों रूपों (उदात्त एवं मायामय) में ईश्वरीय संकल्प है। कमल-नयनी शक्ति का स्वामी, समग्र सृष्टि का स्रष्टा है, समग्र जीवन का नियामक है।

शिवालय-पूजा, अर्चना

शिवालयों की पूजा-अर्चना विधिपूर्वक सम्पन्न होनी चाहिए। आराधना के विविध सोपान प्रतिष्ठित विग्रह में ईश्वरीय शक्ति को केंद्रित करने के उपक्रम हैं अतः इनकी उपेक्षा की वर्जना की गई है (517)। देवालयों में पूजा-अर्चना में त्रुटि का अर्थ है—देश के लिए अमंगल। पूजा के बंद होने के परिणामों में अतिवृष्टि, अनावृष्टि, चोर-डाकुओं के उत्पात आदि का उल्लेख है (518)।

ईशनिंदा, गुरुनिंदा

इस नश्वर जगत् में संशयरहित ज्ञान प्राप्त कर प्रेमभक्ति द्वारा तपोधन सहजरूप में देवपुरी पहुँच जाते हैं। प्रभु की विभुता न जानने वाले ईश-अवहेलना करते हैं, उनकी गति बिल्ली के पंजे में फंसे शुक के समान होती है (526)। वेद, शास्त्रों के ज्ञाता ने अपने अंतस् में स्थित ईश्वर का ज्ञान प्राप्त किया। यह ज्ञान प्राप्त कर उन्होंने भ्रम में स्वयं को ही ईश्वर मान लिया; (दारुकवन के इन) ऋषियों ने सांसारिक सुख-भोग का मार्ग अपनाया फलतः वे ईश्वर-विमुख हो गए (529)। स्पष्ट है कि ईश-अवहेलना, उपेक्षा, उपहास शिव-साधना के मार्ग में बाधक तत्त्व है। इसी भांति गुरु निंदक के विषय में तिरुमंतिरम् में संदेश है—

एकाक्षर ॐकार का अर्थ
समझाया जिन गुरु ने
महापराध है उनकी निंदा
बुरा फल पाएगा गुरु-निंदक
श्वान जन्म पाएगा

भटकेगा श्वानरूप में युग-युगों तक
फिर कृमि-कीट जन्म पाएगा
मिल जाएगा मिट्टी में ! (531)

आत्म-साधना

सृष्टि के कण-कण में एक अखण्ड सुर, लय एवं ताल विद्यमान है। साधना का लक्ष्य सृष्टि में व्याप्त इस लय, ताल के साथ सामंजस्य स्थापित करना है। आत्म-साधना जीवन की अनवरत विकास-साधना है। साधना जीवन की सम-विषम परिस्थितियों में मानव को शिवत्व की ओर अग्रसर करती है। यह क्षमाशीलता, धैर्य का मूल आधार है। इसके परिणाम स्वरूप–

मन लयीभूत होगा
नटराजराज के चरणों में
जो नर्तित हैं रुद्रभूमि में निरंतर। (542)

शिवज्ञानी के सान्निध्य से तत्त्वबोध होता है। प्रभु के दासानुदासों का संग पुण्यपुरी पहुँचा देता है जहां त्रिशूलधर अग्निवर्ण महादेव शोभायमान हैं। यहां प्रभु स्वयं वात्सल्य से कहते हैं–'चले आओ अंदर' और प्रभुकृपा से आप्लावित प्रभु भक्तों का संग प्राप्त कर 'आनन्द' की प्राप्ति हो जाती है (547-548)।

तृतीय तंत्र

तृतीय तन्त्र का प्रारम्भ अष्टांग योग से होता है। इस तन्त्र में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, अष्टांग योग की उपलब्धि, अष्ट महासिद्धियां, अचंचल कला, कार्यसिद्धि के उपाय, कालचक्र, दीर्घायु परीक्षा, प्राण का वार-संचार, वारशूल, खेचरी योग, पर्यङ्क योग, अमुरी धारणा और चन्द्रयोग आदि विविध विषयों पर इक्कीस अध्यायों में 335 मंत्र हैं।

अष्टांग योग

तिरुमूलर ने अपने ग्रंथ के प्रारम्भ में पतञ्जलि का उल्लेख किया है। महर्षि पतञ्जलि के अनुसार यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि को अष्टांग योग कहते हैं। अनेक ग्रंथों में यम, नियम का उल्लेख नहीं यथा 'रुद्रयामल उत्तर तंत्र' में गोरक्ष संहितां और गोरक्ष पद्धति के अनुसार आसन से समाधि तक के छह अंगों का ही वर्णन है। साधनामार्ग पर अग्रसर होने वाले साधक के लिए सुविधा की दृष्टि से अष्टांगयोग दो भागों में विभक्त किया जाता है। यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार बहिरंग योग और धारणा, ध्यान तथा समाधि को अंतरंग योग में स्वीकार किया जाता है। पतंजलि के अनुसार *'योगश्चित्तवृत्ति निरोधः'* (2) चित्त की वृत्तियों का निरोध योग है पर तिरुमूलर ने शिवशक्ति सामरस्य को योग माना है। इस तंत्र

का लक्ष्य प्रारम्भ में ही स्पष्ट किया गया है— यम-नियम का महाउद्यम भव्य समाधि में परिणत हो, कुंडलिनी पराशक्ति सहस्रार तक पहुंचे, ऐसा सम्भव करने के लिए कवच, न्यास और मुद्रा का विधान क्रमपूर्वक स्पष्ट किया गया है (550)। यम का अर्थ है— हिंसा न करना, अनृत वचन न बोलना, न्याय पूर्ण कर्म, बाँट कर खाना, विनयशीलता, सज्जनता, मद्यपान और कामवासना से दूर रहना (554)। बाह्य और आंतरिक शुद्धि, करुणा, मिताहार, क्षमाशीलता, स्पष्टवादिता, सत्य पर दृढ़ता, हिंसा और चोरी न करना और काम वासना से दूर रहना नियम के अंतर्गत है (556)। पद्मासन (559), भद्रासन (560), कुक्कुटासन (561) सिंहासन (562) आदि आसनों की विधि स्पष्ट करने के उपरान्त पूरक, कुम्भक, रेचक की विधि का वर्णन है। इनके अभ्यास से मानव-काया अजर-अमर होती है तथा शंख-भेरी का अनहद नाद होता है। *(देखें अमुरी धारणा—पृ. 574; परियङ्क योग—पृ. 572-574; योग के आठ अंग—पृ. 555; पद्मासन—पृ. 557; कुक्कुटासन—पृ. 558; सिंहासन—पृ. 558 आदि)*

कुंडलिनी-साधना

मूलाधार से दो अंगुल उपरितल पर गुह्य प्रदेश के तनिक नीचे, नाभि से चार अंगुल अधोभाग में गोलाकार कुंडलिनी स्थित है; वह अरुणिम ज्योति सी उत्थित है (580)। इष्टमूर्ति मूलाधार में स्थित है; वेद स्वरूपिणी पराशक्ति का निवास सहस्रार में है; मूलाधार में उसे जागृत कर धीरे-धीरे सहस्रार में ले जाकर जब दोनों का मिलन होता है तो चमत्कार होता है। मानव को चिर युवा बनने का मार्ग प्रशस्त होता है (590)। प्राणायाम साधना का अर्थ है—

काल-मात्रा और अनुपात में
श्वास का सम्यक् नियमन
प्राणायाम साधना है। (592)

मौन साधना द्वारा जब साधक कुंडलिनी को भ्रूमध्य में ले जाते हैं तो ज्ञाननेत्र खुल जाता है (593)। मात्र जागरण और प्रार्थना से प्रयोजन सिद्ध नहीं होता, प्राणायाम साधना से मनमर्कट को देहदुर्ग में बांधने में सफलता प्राप्त होती है (595)। इस मानव देह में, जीव में विलसता हुआ शिव विद्यमान है; सुन्नमंडल में एक चन्द्र-पुष्प है, शिव के प्रति श्रद्धा और आस्था अनिवार्य है (601)। आठ सहस्र वर्ष की योग साधना के बाद भी अमृत रूप ईश्वर-प्राप्ति सम्भव नहीं, उसे तो ज्ञान की ज्योति जगाकर अंतस् में ढूंढो, वह प्राणेश्वर सहज ही दर्शन देगा (603)। शिवत्व की अनुभूति योग-साधना की अंतिम परिणति है। साधना की इस विलक्षण स्थिति में साधक जीवन-मुक्त हो जाता है, ध्यानावस्था में निमग्न साधक स्वयं साध्य बन जाता है—

चेतना स्वयं की होगी विलुप्त
जीव स्वयं बनेगा शिव
अहम् नहीं रहेगा, शिव ही रहेगा। (604)

जिनका चित्त ईश में लय हो जाता है उन्हें सागर और गज के स्वर, मेघ का गर्जन, शंख और भेरी का घोष, भ्रमर का गुंजार, घंटा, वंशी का नाद तथा तंत्री निनाद श्रुतिगोचर होता है (606)। ज्योति-जगत् में सदैव प्रकाश है, प्रकाशमय ज्ञान प्राप्त होने पर शिव-ध्यान बना रहता है (611)। समाधि का परिचय देते हुए तिरुमूलर-कथन है–

विन्दुवुम् नादमुम् मेरुविल् ओङ्गिडिर् ....

सहस्रार रूपी मेरु शिखर पर
होता जब संयोग नाद बिंदु का
तब सिद्ध होती है समाधि
इस संयोग से
साक्षात्कार होता है
दिव्य, मंगल ज्योति का
जोकि पुंजीभूत रूप है अनन्त का।(619)

समाधि के मार्ग तथा उससे प्राप्त आनन्द का वर्णन भी अत्यंत हृदय-ग्राही है–

रोक दें चित्तवृत्तियां संकल्प-विकल्प
बढ़ते चलें कुंडलिनी के अग्निपथ पर
लेकर ललक प्रिय मिलन की
महाज्योति वह सृष्टि-रचना का बीज
पाकर अमृत चन्द्रकला से सुन्नमहल में
स्वयं बन गए शिव-स्वरूप
क्या कहिए समाधि-सुख का, सांत बने अनंत। (628)

समाधि से अष्ट सिद्धियों की प्राप्ति होती है। जब ईश संयोग हो जाता है तो समाधि का प्रयोजन समाप्त हो जाता है : "स्वयं 'वह' बन जाए तो वहां नहीं रहती समाधि" (631)। नववायु और दशम धनञ्जय का वर्णन करने के उपरान्त मध्यमार्ग की प्राप्ति का उपाय स्पष्ट किया गया है (659)। इंद्रियों को अंतर्मुखी करके, विचारों का चित्त में विलयन करने से प्राण मंथरगति से आत्मतत्त्व में लीन होता है और तब चित्सभा में नटराजराज का नृत्य प्रारम्भ होता है (666)। अष्ट महासिद्धियों की प्राप्ति के उपरान्त सिद्ध उस महादृश्य का साक्षी बनता है जब सकल ब्रह्माण्ड अणुरूप में शिव के भीतर विलय होता है। पंचाक्षर का

ॐकार ध्वनिरूप एक मंत्र में अभिव्यक्त हुआ है (697)।

सदाशिव-शक्ति दस आयुधों के संग, पंचाक्षर का संबल लेकर आज्ञाचक्र में विराज रही है :

आरोहण करें द्विदल (आज्ञा) से सहस्त्रदल (सहस्त्रार) में,
प्राण चलने लगता है
एक तार में सुषुम्ना से
संवत्सर पांच हजार
समाहित हो गए पांच अक्षर
एक ॐ कार ध्वनि में।

मानव का अमृतमय होना

इसी संदर्भ में इक्यावन वर्ण, पांचवर्ण, चित्कला शक्ति, आनंदकलिका महाशक्ति इत्यादि का उल्लेख हुआ है *(विस्तृत परिचय तृतीय खण्ड में देखें)*। परकाय प्रवेश की समर्थता का संकेत भी इसी क्रम में आया है (706)। चार आंतरिक करण और सोलह अमृत कलाओं के नियंत्रण से जब प्राणशक्ति नियंत्रित हो जाती है तो सत्यरूप परमेश्वर पर स्वयं ध्यान लग जाता है (713)। कुंडलिनी शक्ति, तत्त्वों की अधीश्वरी जब स्वयं जागृत होकर ऊर्ध्वमुखी होती है तो मानव-शरीर अमृतमय हो जाता है तब 'जीवालय बन जाता है शिवालय' (719)। जब योगी मेरुदंड से होकर षडाधार पार कर सहस्त्रार में पहुंचता है तो उसके दृष्टिपथ में सूर्य, चन्द्र और अग्नि मंडल आते हैं। इस अभूतपूर्व दृश्य के दर्शन से वह जीवनमुक्त हो जाता है (752)। दिव्य आगमशास्त्र उसकी जीवनचर्या बन जाते हैं; दिव्य नर्तित-नटराज के दर्शन होते हैं, अंतर्मुखी होकर वह अलौकिक आनन्द की अनुभूति करता है; शिव के साथ एकाकार होकर अगजग में व्याप्त होता है (755)। जो इस सत्य को जान लेता है कि प्रभु जीव में ही अवस्थित हैं वह साधना से, प्रभु-अनुग्रह से अपने अंतस्तल में ही प्रभु के दर्शन प्राप्त कर प्रभुमय हो जाता है (766)। इस विषय में उनका एक प्रसिद्ध मंत्र है–

कोई नहीं जानता रहस्य यह
इसका उसमें तादात्म्य होता कैसे है ?
'यह' किस प्रकार बनता 'वह'
सुन लो मर्म यह
वह नाद-बिंदु में एक बनता है
इस के साथ
नादबिन्दु के योग से उभरता प्रणव है

प्रणव - ॐ कार के मंडल में
'यह' 'यह' नहीं रहता बन जाता 'वह' है। (767)

कुंडलिनी के ऊर्ध्वमुखी होने की प्रक्रिया में कुंडलिनी और प्राणवायु का रहस्य उद्‌घाटित करते हुए तिरुमंतिरम् का रचयिता स्पष्ट कहता है कि योगी प्राणवायु को जगाकर कुंडलिनी ऊपर की ओर अग्रसर करता है। सहस्रार में ज्योति से मिलन करवाना ही उसका साध्य है (795)। खेचरी योग, पर्यङ्क योग और अमुरी धारणा इस तंत्र के अन्य मुख्य विषय हैं।

चतुर्थ तन्त्र

तिरुमंतिरम् के चतुर्थ तंत्र का विषय मंत्र और यंत्र है। 13 अध्यायों में 535 मंत्रों के अंतर्गत अजपा (ॐ), तिरुअम्बल चक्र के विविध रूप, अर्चना, नवकुण्ड, शक्ति-भेद, त्रिपुरा चक्र, भैरवी मंत्र, पूर्ण शक्ति, आधार-आधेय, महाज्योति (एरांळि) चक्र, भैरव चक्र, शाम्भवीमंडल चक्र, भुवनपति चक्र और नवाक्षरी चक्र का सांगोपांग विशद विवेचन है। इस तंत्र के अंतर्गत दश महाविद्याओं का उल्लेख तथा त्रिपुरा, भुवनेश्वरी, भैरवी और दुर्गा की उपासना-विधि, क्रम, विधान, यंत्र, मंत्र आदि का पूर्ण विवरण है।

ॐकार

'अजपा' शीर्षक से ॐकार की व्याख्या करते हुए तिरुमूलर का कथन है–

अद्वितीय प्रणव मंत्र ओंकार के
प्रथम अक्षर 'ओ' कार से
विस्तृत हुई है सकल सृष्टि
'ओ' कार के दो घटक – 'अ' कार, 'उ' कार
प्रतीक हैं शिव और शिवा का
परमात्मा और जीवात्मा का
'अ' कार 'उ' कार के साथ 'म' कार के योग से
भासमान होती है ज्योति
'म' कार है माया का प्रतीक
जो भ्रम में डालती है जीव को। (885)

स्थूल, सूक्ष्म मंत्र; नटराज का चिदाकाश में नृत्य

कनकसभा में चल रहा नटराज का अनवरत नृत्य, आनन्दनृत्य, अद्‌भुत नृत्य, प्रलय नृत्य और संहार नृत्य भी है (887)। यह ताण्डवनृत्य ॐकार से उद्‌भूत है। परात्पर प्रभु 'नव शिवाय' के रूप में मूलाधार में, 'नमवाशिय' रूप में अग्नि मंडल में, 'वाशिय' बनकर सूर्यमंडल में और 'वाशि' बनकर चन्द्रमंडल में शोभित हैं (890)। 'अ'कार, उ''कार स्वरूप शिवशक्ति का चिदाकाश में हो

रहा नृत्य मानवमन के लिए अग्राह्य है (891)। शिवशक्ति नृत्य का लक्ष्य है जीवमात्र का उद्धार; मृत्युंजय के संहारनृत्य में सकल तत्त्व, सचराचर सृष्टि विलय होती है (902); रासायनिक प्रक्रिया से जिस भाँति ताम्र स्वर्ण बन जाता है, उसी प्रकार 'नमः शिवाय' मंत्र के जाप से जीव शिव बन जाता है। शक्ति के बीजमंत्र 'श्रीं' और 'क्रीं' हैं जिनका जाप हृदय को नटराजराज की कनकसभा रूपी रंगमंच बना देता है (903)। समग्र सृष्टि में शिवनृत्य की परिकल्पना को तिरुमूलर ने अत्यंत भावविभोर होकर अभिव्यक्त किया है—

नाचे नटराज एंकात में
फिर हुआ द्वय का नृत्य,
जल थल नाच उठे ईश के संग
नाचे शिव शिवा के संग
फिर नृत्य हुआ ज्योतित्रय का
सूर्य, चंद्र और अग्नि के संग
नाचे सप्त लोक, नाचे ईश एक पाद पर
नवशक्तियों के साथ नाचे आकाशमंच पर
यह है नटराजराज का विशिष्ट माणिक्य-नृत्य। (913)

'नमशिवाय' मंत्र स्थूल है उसके द्वारा लोकलीला प्रकट होती है; 'शिवायनम' सूक्ष्म मंत्र है उसके द्वारा मुक्तिलीला व्यक्त होती है (919)। पंचाक्षर द्वारा बनाए गए अक्षर चक्र (यंत्र) ईश का आवास बनते हैं (934)। प्रभु के चरण 'न' कार हैं, उनका नाभि स्थल 'म' कार है, स्कंध द्वय 'शि' कार, मुखमंडल 'व' कार, कपाल प्रदेश 'य' कार — इस भाँति नमशिवाय ही स्वयं परमेश्वर है (941)। तिरुमूलर का मत है कि नमशिवाय मंत्र हृदयकमल में उद्भूत होता है, पूजा-अर्चना द्वारा कुंडलिनी की अग्नि नाभिकमल के तले उदित होती है। मंदिर में एकत्र होकर, शोर मचाकर पूजा की इतिश्री मान लेना भूल है (985)। चतुर्थ तंत्र में और अन्यत्र कई स्थलों पर पंचाक्षर महिमा का पुनः पुनः वर्णन हुआ है। ब्रह्माण्ड पंचाक्षर में समाहित है, सकल तीर्थ, ईश्वर का अनुग्रह, सदैव युवा रहने का रहस्य पंचाक्षर में निहित है (969)। सकल कर्म-सिद्धि हेतु तथा संचित कर्मनाश हेतु 'न' से प्रारम्भ नमशिवाय मंत्र को हृदय में धारण करना चाहिए। 'शि' से प्रारम्भ शिवायनम मंत्र सदाशिव से मिलन कराता है (983)। तिरुमूलर के विचार में षडाक्षर से षण्मत हुए, यही षडाक्षर महासावित्री मंत्र बनता है जो स्वयं गायत्री मंत्र है। साधक यदि इन अक्षरों की पृथक् पृथक् साधना करता है तो भी ये जन्म-मृत्यु के बंधन काटने में सफल हैं (994)।

यंत्र-निर्माण, पूजन विधि

इसके उपरान्त तिरुमंतिरम् का यंत्र-निर्माण विधि और पूजा-विधान आदि

का अंश है। तद्युगीन चिंतन के अनुसार जगत् के सब सुख-साधन, देवलोक की सम्पदा, अष्ट महासिद्धियां, यहां तक कि मोक्ष-साम्राज्य भी यंत्रसाधना द्वारा प्राप्त होने का आश्वासन दिया गया है (1006)। देह के त्रिकोणाकार यज्ञकुंड को मूलाधार कहते हैं जहां कुण्डलिनी ज्योति प्रज्वलित होती है; जब इस ज्योति का परमज्योति से मिलन होता है तो सकल सिद्धियां हस्तगत हो जाती हैं। यहां एक महत्त्वपूर्ण संदर्भ है कि 'प्राचीन वेदागमों में विस्तार से वर्णित तथ्य को इस एक ही ग्रंथ में व्यक्त करता हूँ।' स्पष्ट है कि पूर्व परम्परा का एक विस्तृत ज्ञानकोश तिरुमूलर के समक्ष था।

शिव और स्कन्द

'स्कन्द' का संदर्भ भी 'नवकुंड' अध्याय के अंतर्गत आया है। प्रथम बार *'चण्मुगम्'*–'षण्मुख' को शिव का रूप बताते हुए कहा गया है कि–

पिता परमेश्वर के
अग्निमय नेत्र से
निर्गत हुए छह स्फुलिंग
जन्म हुआ षण्मुख का
स्कन्द-स्वामी का,
पिता-पुत्र शिव और स्कन्द
अभिन्न रूप में स्थित हैं,
पिता-पुत्र को एकाकार
समझ लो। (1026)

आंतरिक यज्ञकुंड षडाधार से षट्कोण सदृश निर्मित है (1029), विविधाकृति षडाधार के उपरितल में कहीं दशदल, कहीं अष्टदल, कहीं षट्कोण, कहीं चतुस्राकार है (1032)। शिवशक्ति युगल के 'दशमुख और एक देहयष्टि', तीस नेत्र, बीस कर्ण, बीस हाथ हैं पर नृत्यरत होने के कारण धरती पर केवल दो ही चरण पड़ते हैं। इस प्रकार के वर्णन शिव के विश्व रूप विषयक कवि-कल्पना का अद्भुत रूप हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं (1033)।

त्रिपुरेश्वरी

महाशक्ति त्रिपुरेश्वरी को रूपायित करते हुए तिरुमूलर भावना-मय हो जाते हैं। सिंदूरारुण-विग्रहा वह अंतरी व्योमरूपिणी, विश्व का पालन करने वाली नारायणी, श्यामलवर्ण में ईश की शक्ति, सदाशिव-शक्ति मनोन्मनी नाना वर्ण, आकार और प्रकृति के साथ महाशक्ति का चिद्विलास है (1046)। त्रिपुरा-सुंदरी महेश्वरी का रूपलावण्य मोहक है। चरण में चारु नूपुर, अरुणिम वसनधारी, सुनिबद्ध सुगठित उरोज, ललित कर में इक्षुधनुष के संग सुमनों की शोभा, शक्तियुक्त पाश-अंकुश और केशराशि पर रत्नजटित किरीट, कर्ण में

डोल रहे माणिक्य कुंडल हमारे समक्ष शंकरी सर्वकारणी का एक साकार बिम्ब प्रस्तुत करते हैं (1049)। इस प्रकार के अनेक वर्णनों से चतुर्थ तन्त्र के महत्त्व में अभिवृद्धि हुई है। चारों दिशाओं की रक्षा करनेवाली चण्डिका का रूप वर्णन करने के अनन्तर कमलासना त्रिपुरा की शोभा का आकलन है–

खड़ी है त्रिपुरा चिरंतना, पुरातनी
अक्षय लावण्यमयी चिरयौवना मोहिनी
केशराशि पर शोभित गंगा
कंठ देश पर शिवमणि माला,
निकट खड़ी मत्त हस्तिनी
मां का है प्रिय वाहन
कमलासना है कमल सी पावनी (1051)

माता के उन्नत स्तनभार पर सुंदर कंचुक और सुवासित हार शोभायमान है, वह सुखों की मूल आनन्ददात्री है, वह महाशक्ति, पराशक्ति *(अणोरणिनानुमाय्)* अणु से अणु है, ज्ञान स्वरूपिणी है (1052) देवी पराशक्ति के महत्त्व का प्रतिपादन करने में स्वयं को मानो असमर्थ पाते हुए तिरुमूलर एक अन्य मार्ग अपनाते हैं : ज्ञानी कहते हैं कि पराशक्ति आनन्दरूपिणी है, फिर कहते हैं निराकार-रूपा है, उनका कथन है कि संसृति की सम्पूर्ण क्रियाएँ उसकी इच्छा हैं और परात्पर भी पराशक्ति के वश में हैं (1053)। अनेक मंत्रों में देवी की कृपा से सम्भव मनोकामना-पूर्ति, पुण्यफल भोग की प्राप्ति और सद्गति मिलने का वर्णन हुआ है। वह ज्ञानरूपिणी हाथों में ज्ञान-ग्रंथ लिए है, वह महाचिति शिव का मन, प्राण, देह है और मानव चिति में ज्योतिरूप में प्रवेश करती है (1066)।

विविध विषय

इस तंत्र में भैरवी वर्णन भी पर्याप्त विस्तार से हुआ है। आदिशक्ति की निवासभूमि आज्ञाचक्र में मानी गई है। विशुद्धि, अनाहत आदि सभी चक्रों का वर्णन विविध रूपों में हुआ है। कवि का संदेश है कि ज्योतिस्वरूपिणी मां पराशक्ति की शरण ग्रहण करने पर समस्त दुःख और दुरित नष्ट होकर साधक निष्पाप, निष्कलंक और निर्मल हो जाता है (1157)। यह नित्यकन्या परमेश्वरी सकल दिशाओं में ब्रह्माण्ड का पालन करती है, संसृति के पूर्व से ही मां पराशक्ति का अस्तित्व है। वह जगज्जननी सर्वकारणी है (1167)। शिवज्ञान सिद्धियार के रचयिता अरुळ्नन्दी शिवाचार्य के अनुसार शिव का शक्ति को जन्म देना – शक्ति द्वारा शिव को जन्म देना; दोनों का प्रेम पूर्वक मिलकर विश्व के चराचर को जन्म देना – इस रहस्य को ज्ञानी ही जानते हैं क्योंकि इस समस्त क्रिया के बाद भी भव (शिव) ब्रह्मचारी, योगी हैं और परात्परा देवी नित्यकन्या

ही है–

शिवम् शक्ति तनै इन्रुम्
शक्ति तान् शिवत्तैयीन्रुम्
उवन्दु इरुवरुम् पुणर्न्दु
इंगु उलगु उयिर् एलाम् ईन्रुम्
पवन् ब्रह्मचारियागुम्
पान्मॊऴि कन्नियागुम्
तवम् तरुम् ज्ञानत्तोक्कु
इतन्मैतान् तेरियुमन्ऱे।

चन्द्रमण्डल में ज्योतिरूप 'कन्या परमेश्वरी' (1158) के मूल में देवी के 'नित्य-कन्या' होने को वर्णित करते हुए सातों भुवनों को उसकी सृष्टि माना है। वह योगिनी शक्ति जीवराशि का आश्रय है। प्राणों का आधार बनकर वह सृजनकाल में परमेश्वर के साथ भोगशक्ति रूप में संयुक्त हुई और फिर शिव से अभिन्न पराशक्ति हो गई।

परमात्म तत्त्व की पूर्णता

इससे पूर्व तिरुमंतिरम् में उल्लेख आ चुका है कि जब महत् शक्ति का प्रवर्तन होता है तो परमात्मतत्त्व पूर्ण ही रहता है (1055)। सृष्टि प्रक्रिया के विषय में तिरुमूलर का चिंतन वृहदारण्यक के अनुसार है–

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।

माणिक्कवाचकर ने इसे सृष्टि, पालन, संहार की लीला *('कात्तुम् पडैत्तुम् करन्दुम् विळैयाडि')* माना है। पराशक्ति से आठ अन्य शक्तियों का प्रादुर्भाव और स्वयं शक्ति का बिन्दुरूप में बना रहना, नादरूप में अग-जग में व्याप्त होना 'पूर्णत्व' का ही व्यंजक है (1174)। इनका देवी पराशक्ति (1179) आदि रूपों में वर्णित किया गया है। ॐ प्रणव मंत्र के उच्चारण द्वारा अंतर् में ज्योति जगाओ; अपनी इन्द्रिय को कच्छप के समान संकुचित कर लो और उन्हें परम अनुग्रह के समक्ष समर्पित करो तो हृदय के भीतर सुरभित सुमनों से सज्जित नीलकुंतला मां के दर्शन होंगे। प्रथम अक्षर 'अ' कार स्वयं वही है *(ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म – गीता, 8/13; एवं अक्षराणामकारोऽस्मि – गीता, 10/33)*। ब्रह्माण्ड के अस्तित्व में आने के साथ ही इक्यावन कलाओं के समान शक्ति इक्यावन अक्षरों में आत्मा और प्राण बनकर निवसित होती है; प्रथम अक्षर 'अ' कार रूप प्रभु स्वयं निज प्रिया के संग प्रकट हो जाते हैं (1219)। श्रीमद्भगवद्गीता में कृष्ण-वचन है–जो मुझे जैसे भजते हैं मैं उन्हें वैसे ही प्राप्त होता हूँ – *ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् (4/11)*। तिरुमूलर

प्रतिपादित करते हैं– इच्छारूपिणी मां भक्तों को वांछित रूप में दर्शन देती है, उन्हें विज्ञान, कलाएँ प्रदान कर शुद्धमार्ग दिखाती है (1238)। वह अणु से अणुरूपिणी है उसे बुद्धि और तर्क से नहीं, केवल प्रेमाभक्ति से प्राप्त किया जा सकता है (1239)। गंगा को तिरोधान शक्ति, पार्वती को संचालिका शक्ति कहा गया है और दोनों को अभिन्न, एक दूसरे की पूरक माना है (1247)। आकाश अक्षर 'ह'कार का महत्त्व स्पष्ट करने के उपरान्त मंत्र और चक्र (यंत्र) की उपासना का आधार वर्णित हुआ है।

मंत्र और चक्र की उपासना का
यही सार है
भीतर दर्शित है एक ज्योति मंडल
मंत्र चक्र यही है
तंत्र-आगम इसी की महिमा गाते हैं
भ्रूमध्य में ध्यान लगाओ 'प्रणव' का
स्थिर रहो आंतरिक साधना में
कर्म-बंधन नष्ट होगा निःसन्देह। (1281)

नवाक्षरी साधना

इसके उपरान्त अनुग्रहमूर्ति आदिभैरव का रूपवर्णन, भैरवपूजन, विविध यंत्र-पूजन, शांभवी, शांभवी-उपासना, भुवनपति यंत्र आदि की पूजन-विधि का परिचय दिया गया है। नवाक्षरी मंत्र – 'श्रीं' से लेकर 'क्लीं' तक; 'ह्रीं' से लेकर 'श्रीं' तक; 'ऐं' से लेकर 'ह्रीं' तक; 'गौं' से लेकर 'ऐं' तक; 'क्रीं' से लेकर 'गौं' तक; 'हौं' से लेकर 'क्रीं' तक; 'औं' से लेकर 'हौं' तक; 'सौं' से लेकर 'औं' तक आदि विविध रूपों में उपासना-विधि का, उससे सम्भव उपलब्धियों आदि का वर्णन विस्तार से किया गया है। वागीश्वरी का निवास-स्थान जिह्वा तथा जीवों की अधीश्वरी मनोन्मनी का स्थान नाभिदेश के मूलाधार में माना गया है। इस तंत्र के अंतिम पदों में तिरुमूलर अपने हृदय में विराजमान मां पराशक्ति के प्रति भावांजलि अर्पित करते हैं–

धन्य हो रहे थे साधक
नटेश्वर की ज्योति में
माँ पराशक्ति के दिव्य दर्शन से
यही शिव-शक्ति ऐक्या
आदिकारण है जगत् और सृष्टि का
आदिवेद और आगमशास्त्र
खोज रहे हैं सर्वत्र मां के चरण
वही मां पराशक्ति

विराज रही है मेरे हृदय में। (1416)

जो इस पराशक्ति मां की शरण में है उसके लिए कोई अभाव नहीं, उसे किसी से कुछ कामना नहीं, वह देवताओं के समान है; उसके लिए प्रभु स्वयं सुलभ हैं।

पंचम तंत्र

तिरुमंतिरम् का पांचवां तंत्र अपेक्षाकृत लघु आकार का है। इसमें समग्रतः 154 मंत्र हैं जो बीस अध्यायों में विभक्त हैं। इसमें वर्णित विषयों में शैव-मत के शुद्ध, अशुद्ध, मार्ग और तीव्रशुद्ध शैव; चर्या, क्रिया, योग और ज्ञान; सन्मार्ग (ज्ञान मार्ग), सहमार्ग (योग मार्ग), सत्पुत्र मार्ग (क्रिया मार्ग) और दास मार्ग (भक्ति मार्ग) आदि हैं। इनके अतिरिक्त सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य और सायुज्य का परिचयात्मक विवेचन हुआ है। शक्ति निपात, नानामत विमर्श, मतभेदों का निराकरण और आंतरिक आस्था का विवरण देते हुए साधना के महत्त्व का प्रतिपादन किया गया है।

सृष्टि-सृजन करने वाले प्रभु तीनों लोकों के नियंत्रक हैं, वे मेरु के समान महान् हैं। सूक्ष्मतः विवेचन करने पर मानव शरीर के मध्य स्थित मेरुदण्ड के मध्य स्थित सुषुम्ना का संकेत मिलता है – मेरुदण्ड ब्रह्माण्ड है, इसके मध्य सुषुम्ना है। शैव परम्परा के चार मार्गों का आधार शिव ही हैं।

शुद्ध शैव, अशुद्ध शैव, मार्ग शैव तथा कट्टर शुद्ध शैव

शुद्ध और अशुद्ध माया से परे सनातन पराशक्ति से सम्बद्ध शुद्धशैव के मार्ग के अनुगामी सत्-असत् का भेद जानते हैं। तिरुमूलर ने शुद्ध शैव और वेदान्त को पर्याय माना है। सम्पूर्ण ज्ञान अर्जित कर, योगाभ्यास द्वारा सच्चे सिद्धान्ती नाद के लोक से परे स्वयंभू प्रभु के दर्शन प्राप्त करते हैं। सिद्धान्त वेदान्त से विकसित होता है; साधना द्वारा भूतांत बोधान्त में परिणत होता है। नादांत में पूर्णरूप से रमनेवाले प्रेम-मार्ग के पथिक होते हैं (1422)। अशुद्ध शैव कर्ण-कुण्डल धारण करते हैं, पवित्र विभूत लगाते हैं, गले में दोहरी रुद्राक्षमाला धारण करते हैं, चर्या और क्रिया के नियमों का पालन करते हैं, शिव-प्राप्ति के सोपान के उच्च शिखर पर पहुँचते हैं (1424)। शुद्ध शैव नौ आध्यात्मिक चक्रों को पारकर ईश-दर्शन प्राप्त करते हैं। शुद्ध-शैव साधक सद्शास्त्र का आद्योपांत अध्ययन, मनन और चिंतन करके योग द्वारा ज्ञान अर्जित करता है। वह निरंतर परम प्रभु में लीन रहता है।

ज्ञानी पुरुष को विश्व के सकल शास्त्र सहज सिद्ध हो जाते हैं; चौंसठ कलाएँ, उनसे प्राप्त सिद्धियां, मौन लोक और अन्यान्य क्षितिज उसके अधीन हो जाते हैं। अपने अंतर्लोक में वह वेद-वेदान्त का सारतत्त्व देख पाता है। स्वयं

को ईश्वर के साथ एकीकृत करने वाला ऐसा ज्ञानी वरेण्य है (1426)। शुद्ध-शैव के लिए सन्मार्ग को साधन माना गया है। विविध रूपों – मंत्र, तंत्र, उपदेश – में होने पर भी आगमों का सारतत्त्व वेदान्त के सिद्धान्त सत्य में परिणत हुआ (1429)। बाह्य वेश, परिधान और आडम्बर वृथा हैं; आशा-पाश काटकर जो नित्यशुद्ध, निर्मल, निरामय परमेश्वर में दत्तचित्त है उसका कर्मपाश, वासना, अहंकार स्वतः कट जाता है, वह शुद्ध शिवज्ञानी शिव को पाकर शिव बन जाता है (1438)। शुद्ध शैव शुद्धमाया में साधनारत रहकर शिव सायुज्य प्राप्त करते हैं (1440)। जब तक साधक उसे 'मैं' और 'तुम' भाव से खोजता है तो उसे प्राप्त करने में असमर्थ रहता है। प्रभु स्वयं स्नेह से साधक को उपदेश देता है—

'मैं' तुझ में और 'तुम' मुझ में
नहीं भेद है 'मैं' और 'तुम' में
तत्त्वमसि का रहस्य जानकर
मौन हो गया मैं
बोलता नहीं 'मैं' और 'तुम'। (1441)

शब्दातीत तत्त्वबोध की अनुभूति होने के साथ ही शिवज्ञान का मणिमय दीप प्रकाशमान होता है और प्रभु-तादात्म्य का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। तिरुमंतिरम् में अंतःसाधना के साथ-साथ भक्तिभाव से मंदिर, तीर्थधाम आदि में प्रभु-प्राप्ति के प्रयास की स्वीकृति है। द्रवित हृदय से प्रभु को स्मरण करना, उसके चरण-युगल में उल्लासपूर्वक नृत्य और गायन हृदय को पवित्र करके प्रभु को हृदय-मंदिर में व्याप्त कर देता है (1445)। शिवयोगी के लिए यम-नियम, योग, समाधि के मार्ग में चलते हुए 'चर्या' का दृढ़तापूर्वक पालन आवश्यक है (1446)।

क्रिया, योग, चर्या आदि

क्रिया, योग आदि का परिचय इन शब्दों में दिया गया है—

क्रिया होती है साकार की पूजा
षोडशोपचार सहित
भोग होता है ध्यानमग्न होना
निर्गुण निराकार में
ज्ञानलब्ध होता है साधक को
साधना की पक्वदशा में,
स्निग्ध हृदय से प्रभु-आराधन
चर्या का वरेण्य शील है। (1448)

भक्ति की साधना का प्रारम्भ क्रिया और चर्या के अभ्यास से होता है। जब

प्रभु-अनुग्रह होता है तो योग का विशुद्धमार्ग स्पष्ट होता है। तब साधक-भक्त षडाधार का अनुभव पाकर ज्ञान-मार्ग में अग्रसर होता है और परमगुरु की असीम कृपा से ज्योतिर्मय शिव बन जाता है (1455)। तिरुमूलर ने कई स्थलों पर कहा है कि वह परमतत्त्व, सत्यवस्तु मानव के भीतर ही स्थित है; पुष्प में सुगंध के समान व्याप्त उस सत्यज्ञान को शुद्धचित्त से खोजना होगा; अंधकार, अज्ञान के मिट जाने पर परमेश्वर अंतस् में ही मिलेगा (1460)। योगी के लिए योग सहित क्रिया और चर्या के मार्ग का विधान है (1465)। ज्ञानमार्ग को सर्वोत्तम मानते हुए कहा गया है 'मुक्ति दायक है एकमेव ज्ञानमार्ग'। विशुद्धज्ञानी के समस्त चराचर बंधुबांधव हो जाते हैं, शील और सदाचार स्वतः सिद्ध होते हैं और उनका निज आवास-स्थान ही ब्रह्म-स्थान हो जाता है (1470)। दर्शन, पूजन, मनन, देवमूर्ति का स्पर्श, कीर्तन और पादसेवन षड्धाभक्ति है, इसको श्रद्धा भाव के साथ करने से सन्मार्ग प्रशस्त होता है (1479)। सन्मार्ग में प्राप्त सिद्धि — जहां 'अहं' का 'तत्' में विलय हो जाता है — अनिर्वचनीय है। मुक्तज्ञानी की भाषा मौन हो जाती है, अंतर् में आनन्द व्याप जाता है, यह परज्ञान का अनुभव है, जीव का शिव होना सन्मार्ग सिद्धि है। (1481)

सहमार्ग — योग समाधि — का अनुभव-आधृत वर्णन करते हुए तिरुमूलर-कथन है—

दृश्यमान हैं भीतर अनन्त विस्तार
विलसती है अंतर्ज्योति में परमज्योति
योग समाधि में लीन होने पर
क्रीड़ा करती है महाशक्ति अंतर् में। (1490)

सुन्नमंडल में ज्ञानज्योति की झांकी मिलती है, नाड़ियाँ विशुद्ध हो जाती हैं, षोडश कलाएँ प्रकट होती हैं; करण, बुद्धि और इंद्रिय सबका परज्ञान में विलय हो जाता है (1492)। सत्पुत्र मार्ग, दास मार्ग प्राणायाम-विधि आदि का मार्ग-निर्देश देकर एक सत्य का पुनः स्मरण कराया गया है कि वेदागम के पठनपाठन, शास्त्रचर्चा, पुष्प चयन कर पूजा-अर्चना आदि का तब तक कोई लाभ नहीं जब तक मन अज्ञान में डूबा है। काई से आवृत सरोवर में डूबी शिला की भांति मन यदि अज्ञान से ढका है तो अंतर् में विराजमान नीलकंठ के दर्शन कैसे होंगे (1506) ?

सालोक्य, सामीप्य, सायुज्य, सारूप्य का विस्तृत परिचय देकर कवि 'शिव' के विविध कृत्यों का रहस्य स्पष्ट करता है। सृजन में वह अरुणिम है, पालन में श्यामल वर्ण, संहार में गौरवर्ण और तिरोधान में हरितवर्ण है। वर्ण अलग हैं, कर्म अलग हैं पर मूल में वही 'एक' है। अहंकार के, तमस् से भी काले, हाथी

को चीरकर प्रभु उसे परिधान रूप में धारण कर लेते हैं, उनके हाथ में अग्नि ज्वाला शोभायमान है।

छह 'समय' - धर्ममार्ग का प्रश्न

तिरुमूलर द्वारा अपने युग के विविध धर्म, सम्प्रदायों के संघर्ष का संकेत मंत्र संख्या 1545 में किया गया है। तत्त्वातीत, दोषरहित, संशय से परे, आनन्दस्वरूप 'शिव' के मार्ग का अनुसरण करने का संदेश देते हुए कवि ने छल-प्रवंचना के मोहक वचनों से जनमानस को सावधान किया है। मतवाद को लेकर संघर्षरत व्यक्ति उस श्वान के समान है जो पहाड़ी के निकट अपने ही स्वर की प्रतिध्वनि सुनकर वृथा भौंकता है। वास्तव में ईश्वर का स्थान एक महानगरी है जहाँ पहुँचने के लिए छह मार्ग बने हैं। तिरुमूलर ने इन छह मार्गों के नामों का संकेत नहीं दिया पर सन् 1912 में प्रकाशित (अब अनुपलब्ध) श्री एम. वी. विश्वनाथ पिल्लै द्वारा सम्पादित 'तिरुमंतिरम्' में भैरव, जैन, पांचरात्र, भट्टाचार्य, लोकायत और शून्यवाद को छह मार्ग माना है। 'ईश्वर की खोज में संलग्न' *(अण्णलै नाडिय आरुसमयमुम्)* कथन के आधार पर लोकायत, जैन आदि को इसमें समाविष्ट नहीं किया जा सकता। *समयम्* – 'धर्ममार्ग' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। सम्भव है कि न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त अथवा भैरव, वाम, कालमुख, महाव्रत, पाशुपत और शैवमत की ओर संकेत हो। मार्ग कोई भी हो तिरुमूलर के विचारानुसार अंतःशुद्धि द्वारा सत्य की साधना की जाये तो 'अंतर् में भासित ज्योति दर्शाएगी लक्ष्य तक पहुँचने का सही मार्ग' क्योंकि 'जो तुम्हारे भीतर है अग्नीश्वर महादेव' वही जन्म-मरण के बंधन काटने वाले हैं (1547)। जीवन-नैया को दिव्यज्ञान का मार्ग-दर्शन मिलता है; कर्म से मुक्ति, सकल मल और अहंकार का नाश होकर साधक का शरीर स्वर्ण सदृश कमनीय हो जाता है (1554)।

शक्ति-निपात

साधना की भावना का हृदय में जाग्रत् होना, गुरु-दर्शन, दीक्षा और किसी विशिष्ट साधना-मार्ग पर अग्रसर होकर सिद्धियों की प्राप्ति के मूल में शिव का अनुग्रह है। तिरुमंतिरम् में 'शक्ति निपात' अध्याय के प्रथम मंत्र (1514) में चिरकुमारी कृपा द्वारा अंधकारपूर्ण कक्ष में बैठे अंधे, वृद्ध आत्मा के अंधकार (अज्ञान) के पर्दे को हटाकर शिवगुणों से उसे मुग्ध कर, चित्त शुद्धि करके विवाह-मंडप में ले जाने का वर्णन पराशक्ति के अनुग्रह का प्रतीक है। वह पराशक्ति विभ्रम में पड़े आत्मा के लिए अमृतरूपा है और साकार होकर शिव-स्नेह में मनोलय कर देती है (1515)। 'शक्तिपात से सद्गुरु विषयक पिपासा होती है; असद्गुरु विषयक तिरोभाव होकर असद्गुरु से सद्गुरु की ओर जाने का मार्ग प्रशस्त होता है' – तन्त्रसार (पृ. 22) का यह सिद्धान्त तिरुमूलर-काव्य

पर पूरी तरह घटित होता है। नवचक्रतन्त्र के अनुसार पिण्ड, पद, रूप और रूपातीत को सम्यक् रूप से जानने वाला ही 'गुरु' है। कबीर ने इसी गुरु को 'सांचा सूरिवां' *(सच्चा शूरवीर)* कहा था। सद्गुरु 'अनन्त' के दर्शन करवाने में समर्थ है–

सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावन हार।।

शक्तिपात के रहस्य को स्पष्ट करते हुए उसे 'अपने स्वरूप में स्थिति-लाभ' कहा गया है। इसके परिणामस्वरूप मनुष्य शीघ्र या विलम्ब से, संसार से मुक्त होकर अपने 'पूर्ण स्वरूप में प्रतिष्ठित हो सकता है।' जब कोई मनुष्य तमस-आवृत कक्ष में भटकता है और सहसा दीप प्रकाशित हो जाए और कक्ष की सभी वस्तुएँ दिखने लगें, इसी भांति अज्ञान-तम से आवृत मानस में अनुग्रह-नंदी पराशक्ति के संग प्रकट होते हैं (1517)—यही शक्तिपात है। जब शक्तिरूपिणी मां कृपापूर्वक साधक के लिए जन्म-मृत्यु का मर्म उद्घाटित कर देती है; कर्म-कारण बीज नष्ट हो जाता है, तब शिवरूपी फल स्वतः ही ज्ञानचक्षुओं के समक्ष आ जाता है (1523)। तिरुमूलर ने शक्तिपात के मंद, मंदतर, तीव्र और तीव्रतर भेद किए हैं। साधना-मार्ग पर प्राप्त विकास की स्थिति के अनुसार शिव (शक्ति) की कृपा की मात्रा के अनुसार यह विभाजन हुआ है। शक्ति निपात के 'तीव्रतर' अध्याय में 'शक्ति' की कृपा का वर्णन इस भाँति हुआ है–

गहनमंडल में नृत्यरत है माँ
जहां निशिदिन का नहीं बोध
उस नीलवेणी महामाया का
करो ध्यान शांतिमय मौन में
नीरव निःशब्दता सहित पा लो उसे
फिर साथ लेती है सुत के समान
पूर्ण करती है सकल मनोरथ
हाँ, पराशक्ति है कृपामयी।

भानु, चंद्र, सांध्यदीप, पंथदीप रूपी नाथ स्वयं ज्योतिदीप बनकर सकल शरीर को ज्योतित कर देता है, तत्त्व का दर्शन हो जाता है, वही शक्तिपात की स्थिति है, तदुपरान्त प्रभु अंतस् में ही बस जाता है (1529)।

षष्ठ तंत्र

चौदह अध्यायों और 139 मंत्रों के छठे तंत्र में शिवगुरु दर्शन, गुरुचरण कृपा का वर्णन करने के उपरान्त ज्ञातृ, ज्ञान, ज्ञेय नामक अध्याय में गहन

दार्शनिक चिंतन है। त्याग, तपस्या के विवेचन के बाद तप-निंदा शीर्षक है। 'निंदा' शब्द भ्रामक हो सकता है। ईश-अनुकम्पा से ज्ञान-प्रवाह, मिथ्या वेषधारण, तपस्या-वेष, विभूति, ज्ञानवेष, शिववेष, अपक्व शिष्य और पक्व शिष्य शीर्षकों के अंतर्गत विषय-प्रतिपादन हुआ है।

गुरुमहिमा, गुरु और शिव की अभिन्नता, गुरुकृपा से कायाकल्प होना, भव-बंधन कटना आदि का उल्लेख करके के बाद 'शिवज्ञान' को स्पष्ट किया गया है। शिवज्ञान से प्रज्ञा का मुक्त होना, अपूर्व सिद्धियों की प्राप्ति, मुक्तिमार्ग का प्रशस्त होना, शिव का सामीप्य प्राप्त होकर अवर्णनीय शिवानन्द के मिलने का उल्लेख है (1587)।

ज्ञातृ, ज्ञान, ज्ञेय

अनन्त अमृतमय आनन्द की प्राप्ति के लिए अहंकार का त्याग कर शिवानन्द की खोज से पाश मुक्ति होती है (1605)। जो साधक ज्ञान के 'लक्ष्य' की खोज करते हैं उन्हें ज्ञान और तत्सम्बद्ध सत्य प्राप्त होगा। जो 'ज्ञेय' तक पहुंचेंगे उन्हें 'ज्ञान' होगा, ज्ञेय का ज्ञातृ ज्ञेय का मोक्ष है, जो ज्ञेय में ज्ञेय प्राप्त करते हैं वे दोनों के चरमसत्य को प्राप्त करते हैं (1606)।

'जीव' और 'शिव' के एक होने के मार्ग का एक अनुभूतिमूलक वर्णन इन शब्दों में हुआ है—

'अहं' और 'तत्' दो पृथक् तत्त्व
फिर देख लिया अपने अंदर दोनों को
'मैं' को और 'उस' को
फिर 'मैं' का 'अहं' का सुमन उठाकर
उसके चरणों में किया समर्पित
जीव ने स्वयं को किया समर्पित शिव को
तब 'मैं' और 'वह' नहीं रहे
जीव और शिव एक हुए। (1607)

वह नंदी मुझे आत्मज्ञान (त्वम् पद) देकर 'पर' (तत्पद) में रूपान्तरित कर शिव के साथ मिला देता है (असि पद)। नन्दी जब कृपा करते हैं तो आंखों से न देखे गए दृश्य दिखाई देते हैं; वह संदेश मिलता है जो कानों ने नहीं सुना, ऐसा आनन्द मिलता है कि मन अघाता नहीं है, वे ऐसे योग में मिलाते हैं जो 'योग' ही नहीं। बोध ऐसा मिलता है कि जो नादान्त है (1610)।

अपने 'ईश' को भलीभाँति जानने वाले तिरुमूलर एक पद में उस 'पित्तन्' — 'पगले' का वर्णन करते हुए लोकजीवन में प्रख्यात शिव के रूप का परिचय देते हैं—

धर्म स्वरूप परमेश्वर अजन्मा है
एकाकी वह, उसका कोई नहीं है
निवास अरण्य में, अशन है भिक्षान्न
परिव्राजक वेश में है, शिक्षा देता है
सर्वसंग परित्यागी है
जो परिव्राजक बनते हैं
कर्मबंधन उनका काटता है
ऐसा पगला है हमारा प्रभु ! (1616)

मौन साधना और त्याग

साधना-मार्ग के पथिक जब मौन साधना को प्राप्त कर लेते हैं तो मुक्ति-मार्ग उनके समक्ष प्रस्तुत हो जाता है; अष्ट सिद्धियां उनकी चेरी बन जाती हैं; अजपाजाप में पूर्णता प्राप्त कर वे पंचकृत्य के निर्वाह में समर्थ हो जाते हैं (1611)। त्याग द्वारा धर्ममार्ग का रूप दृष्टिपथ पर आता है। उनकी प्रार्थना और प्रशस्ति-गान से जन्म-मृत्यु से परे प्रकाशमान् यशरूप शिव प्राप्त होते है (1614)। जब शिव की अव्यक्त कृपावर्षा होती है तो मल-अंधकार समाप्त होकर आत्म-त्याग की भावना विकसित होती है और ज्योतिर्मय प्रकाश के रूप में अभिव्यक्त होती है (1615)। प्रभु ने सत्यमार्ग बनाया; जो मार्ग-भ्रष्ट होते हैं उन्हें किनारे पर लगे कांटे (मोहाकर्षण) कष्ट देते हैं; मार्ग पर सीधे अग्रसर होनेवाले इन कांटों से सुरक्षित रहते हैं (1617)। जीवरूपी सर्प के पांच इंद्रियफण हैं; वह भोगरूपी कंटकाकीर्ण बिल में मग्न रहना है; कारण-सूक्ष्म दोनों शरीरों से वह फण उठाकर भरपूर नृत्य करता है; बोध हो जाने पर नृत्य बंद होता है, एक फणरूपा कुंडलिनी के साथ वह शरीर में समा जाता है, निश्चेष्ट समाधि में लीन होता है (1621)। जब त्याग फलीभूत होता है तो रहस्यमय बाह्य द्वार खुलता है, कुमुदिनी पुष्पों से सुसज्जित केशपाश वाली 'शक्ति' के कवच में नवद्वार बन्द हो जाते हैं, प्राण रूपी नायक ब्रह्मरंध्र से शक्तिकृपा रूपी एक अपूर्व सौंदर्यमयी लता को शरीर-मंदिर में विकसित होते देखता है (1623)।

तप, अंतर्मुखी वृत्ति

त्याग से मन शांत होता है; प्रबल मनोकामनाओं का आकर्षण, दिवस अथवा रात्रि में अच्छे अथवा बुरे कर्मों के परिणाम की आशंका का भय समाप्त हो जाता है। वासना अर्थात् भावनामय संस्कार और प्राण-प्रवाह दोनों पर साधक का नियंत्रण हो जाता है। तप के द्वारा क्लेशसमूह क्षीण होकर 'प्रज्ञा' का उदय होता है। ऐसे तपस्वी सृष्टि के सृजन का ज्ञान प्राप्त कर आध्यात्मिक संपत्ति प्राप्त करते हैं। मन सधा हुआ, विविध कामनाओं से मुक्त; दृढ़, निश्चयी साधक की सम्पूर्ण शक्तियां शिव पर केंद्रित हो जाती हैं। ऐसे संयमी तपस्वी

का वर्णन तिरुमूलर ने किया है–

नहीं कांपता, न ही होता विचलित
संयमी तपोधनों का हृदय
यमभय का वहां नाम नहीं
वे तो हैं अनासक्त, कर्मबंधन-मुक्त
उनके मार्ग में न विघ्न है न संकट
कोई कर्म नहीं, कर्म का फल भी नहीं
वे तो ऐसी अवस्था में हैं
जहां न दिन का बोध है न रात का। (1624)

तिरुमंतिरम् में वर्णित त्यागी-तपस्वी का रूप-गुण गीता के *अनपेक्षः* (आकांक्षा से रहित) *उदासीन, सर्वारम्भ परित्यागी* (सम्पूर्ण स्वाभाविक कर्मों में कर्तापन से मुक्त) भक्त के समान है जो हर्ष, शोक आदि विकारों से रहित होकर *शुभाशभ परित्यागी* (शुभ और अशुभ सम्पूर्ण कर्मों के फल का त्याग करने वाला) है (गीता-12/16-17)।

ज्ञान प्राप्ति के लिए तप-अनुष्ठान आवश्यक है। जब ज्ञानसमाधि लग जाये तो तप का कोई काम नहीं। जो सहमार्ग के पथिक हैं, जिन्होंने 'स्व' को जान लिया है उनके लिए 'स्व' का परम में रूपान्तर करने के लिए तप-अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं (1632)। अनासक्त हो जाने पर, कर्मविहीन समाधि के उपरान्त ध्यान की आवश्यकता नहीं रहती (1634)। मन की शुचिता सहित, अन्तर्मुखी होकर, पूर्णतः द्रवित होकर साधना ही वास्तविक मार्ग है। 'तप-निंदा' शीर्षक के अंतर्गत ज्ञान की कृपाण द्वारा चेतना के मलों को नष्ट कर पाश-बंधन से मुक्ति का प्रयास करने का संदेश है। तप से ही भक्ति, मुक्ति और आत्मज्ञान की सिद्धि होती है (1638)। पत्र-पुष्प संचय कर इष्टदेव के लिए माला पिरोना, शास्त्र और धर्म-ग्रंथों का अध्ययन करना तब तक वृथा है जब तक हृदय द्रवित न हो और नेत्रों में प्रभु दर्शन हेतु अश्रुकण न आयें। साधक तपस्या में साधना द्वारा सहस्त्रार में अपने प्रभु के दर्शन प्राप्त करता है (1640)।

शिव-अरुळ् (कृपा) से सच्ची सम्पदा, सत्यज्ञान, उत्तम पद प्राप्त होते हैं; उसका अनुग्रह हो तो 'पशु', 'पति' बन जाता है (1645)। ज्ञान द्वारा पाप और पुण्य दोनों का परिचय मिल जाता है, ज्ञानी इन दोनों को समूल उखाड़ फेंकते हैं फलतः काल और देश से परे स्थित प्रभुलोक का उन्हें 'अनुभव' होता है। ईश्वरीय-अनुकम्पा का एक भव्य चित्र प्रस्तुत मंत्र में है–

आरूढ़ हैं काया-रथ पर
वल्गा साधे है मन-सारथी
फल – मायामय लोक में संचार

भ्रमित होना मिथ्या-जगत् में
वह समझ लेते हैं इसे;
हो जाएँ प्रेम-भक्ति के रथ पर आरूढ़
पाएँ प्रभु की कृपा और अनुग्रह
समाधि-योग का रथ मिलेगा
स्वयं शिव बन जाएँगे। (1651)

मिथ्या वेश

तिरुवल्लुवर ने अपने युग के तापस-वेश धारण कर, कुकर्मों में लिप्त रहने वाले ढोंगियों की निंदा की है। मानव की पहचान उसके कर्मों से होनी चाहिए; बाह्य वेश-भूषा, रूप आदि से नहीं। तीर सीधा होता है पर घाव करता है, याऴ् (वीणा) टेढ़ी होने पर भी मधुर ध्वनि देती है। तिरुक्कुरल में 'पाखण्ड' शीर्षक से (271-280) यह वर्णन 'तवम्' (तप) के तुरन्त बाद हुआ है। तिरुमूलर ने भी अपने युग के मिथ्या वेशधारी तपस्वियों के प्रति समाज को सचेत किया है—

ये मिथ्या वेशधारी
आडम्बर से धरते तपस्वी वेश
लोगों को बहकाते, ठगते हैं
इनका उद्देश्य पेट भरना
रुचिकर अन्न और नाना व्यंजनों से,
मूढ़ हैं ये लोग
सच्ची भक्ति का नाट्य करते हैं
नाचते, गाते, रोते प्रलाप करते हैं
कभी नहीं पाएँगे शिव के चरण कमल। (1655)

देश के सुख और दुःख वहां के निवासियों के पाप-पुण्य पर निर्भर हैं; राष्ट्रनायक यदि प्रजा को सत्य-आचरण के मार्ग पर ले जाता है तो देश की सम्पत्ति में निरंतर अभिवृद्धि होती है (1658)। निम्न कुल के लोग 'उच्च' बनने के लिए और 'उच्चकुल' में जन्मे लोग देवता बनने की कामना से पवित्र तपस्वी-वेश धारण कर लेते हैं (1658)। मिथ्या-तप करने वाले नरक भोगेंगे, कभी भी तपस्वी नहीं बन सकते, तप का मिथ्या आडम्बर सांसारिक सुख भोगने का प्रयास है; ज्ञान के सत्य से ही तप सम्भव है (1659)।

तपस्वी वेश; विभूति

सच्चे तपस्वी ही तपस्वी वेश के अधिकारी हैं; पाप-लिप्त तो हत्यारे शिकारी हैं (1661)। शिवयोगी की वेशभूषा का परिचय देते हुए तिरुमूलर ने अपने युग में प्रचलित चिह्नों का वर्णन किया है—

शिवयोगी के लिए
सर्वप्रथम साधन है विभूत-धारण
यहीं से प्रारम्भ होता है उसका तप
तपस्वी के अन्य साधन हैं
कानों में ताम्रनिर्मित कुंडल
गले में शोभित रुद्राक्ष
मुख पर पंचाक्षर का पवित्र मंत्र। (1662)

इसके अतिरिक्त फूंकने के लिए शंख, कौपीन, जटा, कपाल के आकार का भिक्षापात्र, कमंडल, खप्पर, आसन, पादुका, योग पट्ट के साथ योग दण्ड आदि का उल्लेख है (1663, 1664)। विभूति का शिव-भक्तों के लिए अपार महत्त्व है। तिरुमूलर के बाद के शिवभक्त कवियों ने विभूति का पर्याप्त गुणगान किया है। ज्ञानसम्बन्धर ने पाण्ड्य नरेश को पवित्र विभूति-भस्म लगाकर शरीर-कष्ट से मुक्त किया था। एक पद में सम्बन्धर-कथन है— *'मुत्ति तरुवदुनीरु मुनिवर अणिवदुनीरु......'* "विभूति मुक्ति-प्रदायिनी है; मुनिगण भस्म का ही लेप करते हैं; विभूति ही सत्य है, ज्ञानी भस्म की प्रशंसा करते हैं, यह भक्ति-प्रदायिनी है...... ।" तिरुमूलर ने तीन मंत्रों में 'तिरुनीरु' — विभूति के विषय में अपनी धारणा व्यक्त की है। एक उदाहरण प्रस्तुत है—

मुंडमालाधारी शिव द्वारा लेपित
पवित्र विभूत को लगा लें
अपने शरीर में
आनन्द से, आमोद से;
निश्चय जानो भाग जाएँगे कर्मबंधन
प्राप्त होगी शिवगति
मिलेंगे आनन्दमय चरण-युग्म
प्रभु परमेश्वर के। (1666)

ज्ञानी

मात्र वस्त्रों के परिवर्तन से भला क्या होता है? ज्ञानी तो ज्ञान की कामना करते हैं, जब उन्हें ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो वे ज्ञानरूपी वस्त्र धारण कर हृदय के अंतस्तल में प्रभु-आराधना में मग्न रहते हैं। ईश्वरीय अनुग्रह प्राप्त ज्ञानी प्रायः मौन रहते हैं। ज्ञान द्वारा मुक्ति-मार्ग का पथिक शिवज्ञानी स्वयं पवित्र देवालय है; वह मुक्त, सिद्ध है; अहं को विनष्ट कर वह शिवरूप हो गया है—

नन्दी चरणों में जो पाते हैं

मुक्ति का वरदान
कैसा होता उन शिवभक्तों का
स्वभाव और उनके अभिलक्षण ?
अहं का त्याग,
स्वयं शिव से तादात्म्य
आचार-व्यवहार में, मुद्रा धारण में,
हाथ में होता है भिक्षापात्र। (1675)

शिव-मार्ग पर अग्रसर ज्ञानी के लिए क्रोध, चिंता, कर्म-आसक्ति सबका अंत हो जाता है। स्वाद लेकर भोजन करना, परपीड़न, उत्थान, पतन, स्वप्रशंसा इन सबसे ज्ञानी दूर रहता है (1686)। इसी संदर्भ में एक अज्ञानी द्वारा दूसरे अज्ञानी को मार्ग बताकर दोनों का गहरे गह्वर में गिरने का भी उपनिषद् शैली में वर्णन है (1680)।

श्रेष्ठ शिष्य; ज्ञान-प्राप्ति का मार्ग

श्रेष्ठ शिष्य विषयक तिरुमूलर-कथन आज के युग में भी सत्य-जिज्ञासुओं का मार्ग-दर्शन करने में समर्थ हैं। शास्त्र-अध्ययन द्वारा, निष्पाप गुरु द्वारा प्रदत्त मार्ग पर अग्रसर होकर सत्य-साधना करे (1690)। ईश की खोज में भयमुक्त शिष्य कर्म-बंधन से मुक्ति की कामना करता है (1691) शिष्य उस मूल बीजरूप 'पर' के अनुग्रह की कामना करता हुआ पवित्र भावना से चित्त को एकाग्र करता है तो वह उसे कृपा प्रदान करता है (1692)। जब गुरु धारण किया जाये तो शरीर, जीवन, धन-सम्पदा सब कुछ अर्पित करने में संशय नहीं रहना चाहिए (1694)। सत्य-मार्ग का अन्वेषी शिष्य सात्विक होता है, धर्म-मार्ग का अनुसरण करता है, चरम सत्य पर उसकी स्पष्ट दृष्टि केन्द्रित होती है (1696)। सत्य और असत्य के अंतर का सूक्ष्म विश्लेषण करता है; ऐसा शिष्य द्रवित मन से आत्मा को शिव-अनुकम्पा के लिए प्रस्तुत करता है, पूर्ण सत्य-निष्ठा से ज्ञान ग्रहण करता है, प्रभु के प्रति समर्पित होता है और उसकी 'शक्ति' से आनन्द की प्रार्थना करता है। गुरु के लिए निर्देश है कि केवल ज्ञान प्राप्ति के लिए परिपक्व शिष्य को ही अलौकिक ज्ञान दे, उसे शनैः शनैः अनन्त की ओर अग्रसर करे। ज्ञान-प्रदान करते समय गुरु का मुख पूर्व अथवा दक्षिण की ओर तथा शिष्य का मुख पश्चिम अथवा उत्तर की ओर होना चाहिए। श्रेष्ठ ज्ञानी गुरु शक्ति को चित्त में केंद्रित कर ज्ञान प्रदान करे (1700)। वेदान्त कामना-त्याग का मार्ग है, अतः जीवनधारा को मोड़कर सिद्धान्त-वेदान्त मार्ग की ओर ले जाओ। वेदान्त मार्ग के लिए सर्वत्यागी गुरु के चरणों पर शीश नवाओ, सच्चे शिष्य के रूप में प्रतिष्ठित हो जाओ। जो शिष्य दया, प्रेम और

विश्लेषण-भाव से गुरु से निरंतर ज्ञान अर्जित करता है उसे परम सत्य का शुद्ध, पारदर्शी अमृत और विचित्र अनुभव प्राप्त होगा (1702, 1703)।

सप्तम् तन्त्र

सातवें तन्त्र में 38 अध्याय हैं। कुल 417 मंत्रों में अनेक विषयों का प्रतिपादन और विवेचन हुआ है। श्री सी. वी. नारायण अय्यर ने इसे तिरुमंतिरम् की 'मुख्य शिक्षा' (Central Teaching) कहा है। प्रत्यक्षतः इसके विविध विषयों में तारतम्य का अभाव सा प्रतीत होता है पर सूक्ष्म विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि यह पांचवें तंत्र में आए सखा-मार्ग के योगी की सम्भावित उपलब्धि का प्रारूप है। इस तंत्र में वर्णित मुख्य विषयों का आकलन करें तो षडाधार, अण्डलिंग, पिण्डलिंग, सदाशिव लिंग, आत्मलिंग, ज्ञानलिंग, शिवलिंग आदि प्रारम्भिक विषय हैं। अनुग्रह-ज्योति, शिव पूजा, गुरु पूजा, महेश्वर पूजा, ज्ञानियों की महिमा करने के उपरान्त भोजन और भिक्षा विषयक निर्देश हैं। इसके बाद मुद्राभेद, पूर्ण गुहा मार्ग-समाधि, समाधि-क्रिया, बिंदु-उत्पत्ति, बिंदुजय का विवेचन हुआ है। अण्डादित्य, पिण्डादित्य, मन-आदित्य, ज्ञान-आदित्य, शिवादित्य, पुरुष, जीव, पशु, बोध-प्रदाता, इंद्रिय-निग्रह, वर्जित आचरण आदि पर कवि-साधक ने अपने विचार प्रकट किये हैं।

मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्धि और आज्ञा चक्रों का वर्णन सातवें तन्त्र के प्रथम अध्याय का विषय है। इसके उपरान्त नाद, नादान्त, बोधान्त, कलान्त एवं विविध अध्वाओं का परिचय है *(विस्तृत सामग्री पुस्तक के तृतीय खण्ड में उपलब्ध है)*। सोलहदल कमल के विशुद्धि चक्र को उत्कृष्ट मानते हुए इस स्थल पर विशुद्ध ज्ञान का शिवज्ञान में परिणत होना माना है (1711)।

लिंग, आत्मलिंग, शिवलिंग आदि

लिंग की परिभाषा देते हुए आठ दिशाएँ, चौंसठ कलाएँ, दृश्यमान सकल लोक को 'लिंग' कहा गया है (1712) 'लिंग' विषय पर पर्याप्त विवेचन हुआ है—

मंदिर के ऊपर बना
विमान स्थूल लिंग है,
गर्भगृह में प्रतिष्ठित
सदाशिव सूक्ष्म लिंग है
बलिपीठ भद्रलिंग है। (1718)

मानव काया स्वयं शिवलिंग है, यह काया पवित्र चिदम्बर है जहां रंगमंच पर नटराजराज का नृत्य होता है। यह काया सदाशिव-मंदिर है जो अनुग्रहमूर्ति सदाशिव का वासस्थान है (1726)। जीव-प्रार्थना से, पूजा से प्रसन्न प्रभु इंद्रियों

को अनुचर बनाकर देहरूपी मंदिर में पधारते हैं (1729)। 'अ' नाद आदि और पूर्ण है, 'उ' प्रथमतः जीवरूप में अभिव्यक्त होता है, यदि 'अ' और 'उ' (ॐ) को जानना चाहो तो दोनों आत्मलिंग हैं (1753)। साधनापथ पर दीक्षित योगी के लिए इस रहस्य को जान लेना कठिन नहीं हैं; इसी भाँति शैव अथवा ब्रह्म के 'स्वभाव' (प्रकृति) का ज्ञान भगवद्‌गीता के 'अध्यात्म ज्ञान' का प्रतिरूप है। शुद्ध ज्योति *(तूवॉळि)* शक्ति से परे है; पराशक्ति के हृदय में शुद्ध शैव प्रभु का आवास है, उससे भी परे प्रभु के चरण हैं, यही परमतत्त्व का रहस्य है (1768)। इसे सद्, चित् और आनन्द की शैली में समझें तो शुद्ध शिव सत् है; ईश्वरीय अनुग्रह से साधक 'आनन्द' प्राप्त करता है। तिरुमूलर का मंतव्य है कि शुद्ध शिवपद-सत्, चित् से परे कृपा रूपी आनन्द से भी परे है। ज्ञान ही वह शुद्ध शिवपद है। *(लिंग-साकार रूप; आनन्दताण्डव; लिंग, पिंडलिंग, सदाशिव, आत्मलिंग, ज्ञानलिंग विषयक टिप्पणियां तृतीय खण्ड में देखें)*।

प्रभु *'उरुवुम् अरुवुम् उरुवोडरुवम्'* है अर्थात् वह साकार, निराकार और उभयरूप है, वह परमदयालु है, जीव-उद्धार हेतु जीवकल्याण ही उसका प्रण है; वह सदाशिव कल्पवृक्ष के समान है (1763)। यह समग्र ब्रह्माण्ड शक्ति और शिव की क्रीड़ा है; शिव ही शक्ति है, शक्ति ही शिव; शिव-शक्ति के बिना सृजन सम्भव नहीं, शक्ति ही नए-नए रूपों में अभिव्यक्त होती है (1722) एक पद में तिरुमूलर कहते हैं—

'वह और वह उसे नहीं जानते' *(अवनुम् अवनुम् अवनैयरि़यार्);* यहां अभिप्राय है कि वह (कर्मकाण्डी), वह (भक्तिमार्गी) उसे (परमात्मा को) नहीं जानते। उसका कृपासंकेत मिलते ही सकल भुवन हृदय में द्योतित होता है, अज्ञान-तम के हटते ही प्रभु अन्तर् में दर्शन देता है। चिंतन, मनन, स्मरण में 'परिपूर्ण' के रूप को धारण करने से ज्ञान के प्रकाश से प्रज्ञा भासित होती है (1794)। प्रभु-कृपा की प्रक्रिया का वर्णन करते हुए तिरुमूलर कहते हैं कि स्वयं ईश ही जीव के चित्त और इंद्रिय में 'ऐक्य' प्राप्त करने की इच्छा और तड़पन प्रदान करता है, साथ में साक्षी बनकर रहता है; ईश्वरीय ज्ञान से प्रज्ञा ज्योतित होती है, चित्त प्रभु-चरणों में लीन रहता है। इस भाँति साधना के अंत में जीव स्वयं शिव ही हो जाता है (1799)। अज्ञानरूपी अंधकार और ज्ञानरूपी प्रकाश दो स्थितियां हैं, जीवन और शरीर भी दो रूप हैं; धर्म और तप दो कृपारूप हैं, सत्य का आवास तो हृदय में ही है (1792)। इस भाव को स्पष्ट रूप देते हुए कवि-कथन है कि वह दृष्टिपथ से परे है, चिंतन-प्रक्रिया से परे है। उसे स्पर्श क़र पाना, अनुभव कर पाना सम्भव नहीं पर हृदय के अंतरतम से प्रार्थना द्वारा अज्ञान-अंधकार को दूर करते ही वह सहज ही प्राप्य हो जाता है (1793)। वह अनुग्रह-वारिधि मानव को सतत सुरति का; ध्यान का वरदान देकर उसे जनन-

मरण के बंधन से मुक्त करता है, आदिदेव परात्पर परमेश्वर साधक के हृदय में साधिकार पधार जाता है (1803)। ईश्वरीय अनुग्रह का परिणाम यह सचराचर प्रकृति, सकल भुवन रूप है। अत्यंत रमणीय बनकर वही संसृति रूप में व्यक्त होता है (1806)। अंधा व्यक्ति सूर्य के प्रकाश को भी नहीं देख पाता, नेत्र में ज्योति हो तो सकल पदार्थ स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं, प्रभुकृपा से वंचित नयन सत्यरूप परमेश्वर को देख पाने में असमर्थ हैं, अनुग्रह होते ही शिव नयनों के समक्ष प्रकट होता है (1808)।

उस सर्वव्यापी का निराकार रूप है—शिव, शक्ति, नाद और बिन्दु; सदाशिव रूपारूप हैं; ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और महेश उसके साकार रूप हैं (1810)। ईश्वरीय ज्योति का वर्णन तिरुमूलर ने अनेक रूपों में किया है; प्रायः ज्योति, चिदम्बर, शिव का नटराज रूप में नृत्य, अनुग्रहज्योति आदि पर्याय रूप में प्रयुक्त हुए हैं—

प्रदीप्त करो ज्योति
ज्योतित होगा चिदम्बर
टिकते नहीं दुःख-संताप
ज्योति के सान्निध्य में
जिनके पास रहता है
ज्योति जगाने का दीप
वे रमते हैं ज्योति में
स्वयं परम ज्योति हैं। (1818)

जीव ही शिवलिंग है, रुधिर-मांस का शरीर उस दयामय का पावन मंदिर है, मुख गोपुरद्वार है, मायामय पांचों इंद्रिय प्रभु के लिए जाज्वल्यमान दीप हैं (1823)। पावन जल और सुमन से प्रभु पूजन, उदात्त स्वर से कीर्तन, प्रभुचरण पर प्रणत होना, नयनों से भक्ति के अश्रु बहना, स्तुतिगीत गाना, इच्छाओं का परित्याग कर मनोमालिन्य से मुक्त होना आदि का वर्णन 'शिवपूजा' शीर्षक से हुआ है। वह प्रभु 'आज्ञा' और 'सहस्त्रार' के मध्य जटित माणिक्य है, उसकी सतत आराधना से वह माणिक्य-माला के समान प्रकाशित होता है (1843)। इस संदर्भ में भी पुनः एक बार पूजा, अर्चा के साथ 'देहबोध तजकर' भावना में परमेश्वर के अनुभव की अनिवार्य आवश्यकता बताई गयी है। नभतक सुमनों के अम्बार लगाना, मलय पर्वत का समग्र चंदन लाकर लेप करना भी इसके बिना वृथा है (1848)।

महेश्वर पूजा

महेश्वर पूजा की अवधारणा के मूल में ईश्वर की भक्ति में पूर्णतः निमज्जित ज्ञानी की सेवा-भावना है। जब हम भव्य मंदिर में प्रतिष्ठित प्रभु को बहुमूल्य भेंट

आदि अर्पित करते हैं तो समाज में 'चलते फिरते मंदिर' साधुओं तक वह नहीं पहुँचता। यदि साधुओं, भक्तों को स्वयं खिलाओगे, उन्हें भोजन अर्पित करोगे तो वह स्वयमेव मंदिर में विराजमान देवता को पहुँच जाता है (1857)। ब्राह्मण और देवता की तुलना में शिवज्ञानी को श्रेष्ठ सिद्ध करने का एक उपक्रम 'महेश्वर पूजा' अध्याय में हुआ है :

सहस्त्र ग्राम किए निर्मित
दे दिए दान में द्विजश्रेष्ठों को
सहस्त्र मंदिर का किया निर्माण
समर्पित किया देवाधिदेव को
इनसे जितना पुण्य मिलेगा
उससे कहीं अधिक मिलेगा पुण्य
एक ज्ञानी को भरपेट खिलाओ
केवल एक मध्याह्न में। (1860)

शिवभक्त की सेवा

तिरुमूलर के अनुसार शिवभक्त संसार में गंगाधर, जटाधारी शिव के ही प्रतिरूप हैं; शिवभक्तों को साक्षात् शिव मानकर उनकी सेवा-आराधना करनेवालों के समस्त कर्मफल विनष्ट हो जाते हैं (1862)। अज्ञान का अंधकार सदा के लिए समाप्त करने का उपाय है सच्चे, शुद्ध भाव से समर्पित शिवभक्तों को खोजकर उनके प्रति श्रद्धाभाव से नत होना (1865)। जिनके मन में निष्ठावान् सच्चे शिवभक्तों के प्रति आदर-भाव नहीं, जो अहंकारपूर्ण हृदय से पूजा करते हैं, ऐसे मानव विनाश को ही प्राप्त होते हैं (1865)।

शिवयोगी

योगी जब सहस्त्रार में शिव-ऐक्य को प्राप्त करता है तो अष्टदिशाओं से श्रेष्ठ मानव, स्वर्गलोक के देवता और स्वयं अनादि तत्त्व शिव भी उसके निकट आ जाते हैं (1870); उसका शरीर ब्रह्माण्ड हो जाता है—सातों भुवन, चराचर जगत् के समग्र जीव, तीनों गुण, वेद, आगम, सर्जक ब्रह्मा, पालन करनेवाले विष्णु और मूल देवता महादेव सब उसके अंतर् में बस जाते हैं (1871)। योगी निंदा, प्रशंसा, परिग्रह आदि की भावना से मुक्त हो जाता है (1875)। ऐसे निष्काम, अलौकिक चिंतन में पूर्णतः निमज्जित शिवयोगी जहां निवास करते हैं वह स्थल पुण्यभूमि हो जाता है और ज्ञान व्याप्त जाता है; वहां समृद्धि और लोककल्याण का विकास होता है। उस देश के निवासी स्वर्गिक आनन्द प्राप्त करते हैं (1882)। 'पोषण-विधि' शीर्षक से केवल दो पदों में शिवयोगी को भोजन देने का आग्रह है। शीर्षक के अनुसार 'विधि' का कोई वर्णन इन दोनों मंत्रों में नहीं है। जिस भांति धरती का स्वामी उसकी सम्यक् देखभाल न होने

पर दुःखी होता है उसी भांति शिवयोगी की उपेक्षा होने पर हमें दुःख होना चाहिए (1884)। ज्ञानी तपस्वी के हृदय में परमेश्वर का आवास है, वे मध्याह्न में केवल एक बार भिक्षान्न ग्रहण करते हैं। एकांत-निवास करने वाले ये योगी देहरूपी शिवालय की रक्षा हेतु भोजन करते हैं (1885)।

मुद्राएँ : शाम्भवी, खेचरी आदि

'मुद्राभेद' शीर्षक के अंतर्गत विविध मुद्राओं का परिचयात्मक वर्णन है। 'मौन' की शुद्धावस्था का अर्थ है वचन और विचार दोनों का मौन (1896)। शाम्भवी, खेचरी का परिचय देते हुए कवि-कथन है–

शाम्भवी मुद्रा नन्दी अनुग्रह है
जिससे कटता है भव-बंधन, वर्धित होता अनुग्रह
खेचरी मुद्रा में साधना होगी ओंकार की
मौन ज्ञानप्रद साधना। (1894)

मुद्राओं द्वारा श्वास वशीभूत होता है, सिद्धांतज्ञानी धेनु-मुद्रा का अभ्यास करते हैं, मोक्षार्थी मौन खेचरी मुद्रा का और नाथ, ज्ञानी ज्ञानमुद्रा का अभ्यास करते हैं। परम्परागत चिंतन के आधार पर 'पूर्ण गुहा समाधि' शीर्षक से तिरुमूलर ने माना है कि जब योगी अपने नश्वर शरीर का त्याग करता है तो उसकी आत्मा देवलोक पहुँचती है; तत्पश्चात् सूर्यलोक से होकर वह अपने पूर्वजों की आत्माओं के लोक में पहुँचकर अंततः चन्द्रलोक में निवास करती है। यह वर्णन उस योगी के लिए है जो समाधि में शरीर-त्याग करता है। समाधि से इतर स्थिति में शरीर से प्राण निकल जाने पर शिवानुग्रह से ऐसा साधक पुनः इस संसार में आकर अपने अपूर्ण साधना-क्रम को पूर्ण करता है (1903)। इसी विश्वास के आधार पर 'ज्ञानी' के शरीर को चिरसमाधि के उपरान्त विधिवत् गाड़ने की प्रक्रिया आदि का नियम बना (1912)। *(विस्तार के लिए खण्ड तीन; पृ. संख्या–598, 599)*

सृष्टि : क्रम-विकास

सृष्टि के प्रारम्भ में परबिंदु से कुंडलिनी का उदय हुआ, कुंडलिनी से पराकाश में नववैंदव (कुंडलिनी, कुटिला, तत्परा, वागेश्वरी, पंचदेव–सदाशिव, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, महेश्वर) और पंचदेवों की शक्तियां प्रकट हुईं। तत्पश्चात् चार करण (मनस, बुद्धि, चित्त, अहंकार), पांच कला-तत्त्व और बैखरी नाद की अभिव्यक्ति हुई (1923)। शक्ति, शिव, नाद और बिंदु निराकार रूप में हैं। विकास-क्रम में नाद के दस भेद और बिंदु के पच्चीस भेद हुए; शक्ति और शिव अपरिवर्तित रहते हैं और नाद-बिंदु को सक्रिय करते हैं (1924)। ये समग्र पच्चीस भेद महामाया के कार्य हैं। वह स्वयं परबिंदु में प्रकट होती है; बिंदु से वागेशी, तत्परा, कुटिला और कुण्डलिनी नामक चार शक्तियां प्रकट होती हैं

(1925)। अंकुर बीज में समाया हुआ है, उसका अस्तित्व बीज से ही है; बीज से निकलने के बाद भी अंकुर बीज से अभिन्न है, यही शिव और बिंदु के विषय में सत्य है (1932)। *(देख पृ. 593, 611-613)*

बिन्दु

शरीर में बिन्दु-संवर्धन प्रक्रिया, बिन्दुरक्षण का महत्त्व, शिवयोगी द्वारा मूलाधार की अग्नि द्वारा बिंदु को सुखा लेना, सुषुम्ना मार्ग से भ्रूमध्य तक लेजाकर अमृत पान करना, फलस्वरूप शरीर को अमरत्व की ओर अग्रसर करना आदि विषयों का वर्णन करते हुए साधक तिरुमूलर प्रतिपादित करते हैं–

कालजयी होता है वह
जो बिंदुजयी होता है
बिन्दु यदि हो वृथा तो
मृत्यु निश्चित् है कालपूर्व ही। (1954)

कुंडलिनी-योग से बिंदुसाधना प्राप्त कर कायिक बिंदु को दिव्य बिंदु में परिणत करने के लिए चंद्रमंडल में बिंदु और नाद का योग करना होता है (1962)। कबीर के 'रस गगन गुफा में अजर झरै' और 'नीझर झरै अमीरस निकलै' आदि का पूर्वरूप अनुभव के धरातल पर मूलर के *'बिन्दुवुम् नादमुम् मेवियुडन् कूडिच्.......'* पद में है–

हो जाए संयोग
बिन्दु और नाद का
चंद्रमंडल में
वर्षित होता है तब
सहस्रार से अमृत
अजस्रधार सा
उस पावन वेला में
आहुति बनता है
प्रणव का महामंत्र। (1971)

आदित्य

आदित्य विष्णु है, वह आदिनाथ शिवस्वरूप भी है, वह समस्त लोकों में समस्त जीवों का आदिदेव है (1976) शिवस्वरूप सूर्य जगत् के सकल तत्त्व, जगत् की शक्ति और शीतकिरण आदि के रूप में स्थित रहता है (1978)। सूर्य जब मूलाधार पृथ्वी के नीचे संचार करता है तो वह अदृश्य रहता है और मणिपूरक अग्नि और स्वाधिष्ठान जलमंडल के मध्य में अवस्थित होता है

(1982)। पिंडादित्य – जीवसूर्य – सुषुम्ना मार्ग से ऊपर चढ़ता है और सहस्त्रार में विशाल ज्योतिर्मय सूर्य से मिल जाता है (1985)। तीव्रगति प्राणशक्ति सुषुम्ना में चलकर जहां ज्योति से मिलन करती है उस स्थल को जो देख पाता है, उसे आत्मबोध होता है,वह कालजयी हो जाता है (1986)। जब चंद्रमंडल में अमृतवर्षा होती है तो प्राणशक्ति का सूर्य निःस्पन्द रहता है; उसके भीतर से किरण उगती है, यही योगी के जीवन की पूर्णिमा है (1988)। सूर्य, चन्द्र, अग्नि तथा समस्त भुवनों का पति, सत्यस्वरूप परमेश्वर अज्ञान और कर्मबंधन दूर करने वाला है (1996)। आकाश में जब सूर्य का आगमन होता है तो सर्वत्र प्रकाश व्याप्त हो जाता है। इसी भांति मूलाधार से उठकर प्राणशक्ति का सूर्य जब विशुद्धि में पहुंचकर भासित होता है तो ईश-अनुग्रह से सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता है (1999)। प्रभु के ज्योतिरूप का परिचय इन शब्दों में दिया गया है–

नाभि, नयन, नासाग्र
भ्रूमध्य और शिरोमध्य में
विराजे हैं प्रभु ज्योतिरूप में
देवगण इन्हें देखते हैं
त्रिदेव के रूप में
ब्रह्मा, विष्णु और ईश के रूप में।(2000)

नीलकंठ महादेव अंतर्यामी हैं; सूर्य के समान वह घट-घट में प्रतिबिंबित हैं; बाहर, भीतर, सर्वव्याप्त हैं (2002)। शिवादित्य पंचदेव और चतुर्वेद में प्रेम से रमता है, त्रिज्योति – अग्नि, इन्दु, भानु ; पंचतत्त्व और अगणित जीवराशि में वही व्याप्त है (2004)। सृष्टि का सारा विधान जीव की शुद्धि और मुक्ति के लिए किया गया है (2007)। *(देखें बिन्दु–पृ. 607-609)*

इन्द्रिय-दमन

तिरुमूलर ने कुछ पदों में इंद्रियों को वश में करने की कठिनाईयों का उल्लेख करते हुए विचारों के उदात्तीकरण का मार्ग स्पष्ट किया है। सकल शास्त्र का ज्ञान, यौगिक प्राणायाम का अभ्यास होने पर भी इन्द्रिय-अश्व जीव रूपी सवार के वश में नहीं आता *(2024)*। इन्द्रियों की पांच आधार-भूमि हैं; शब्द, रस, गंध आदि पांच क्षेत्र हैं; ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय आदि पर अंकुश रखनेवाला जीव एक है जो नवद्वार में भटकता हुआ दुःख पाता है (2025)। शरीर-सरोवर में मीन तुल्य इन्द्रिय कष्ट देते थे, कृपापूर्वक बिछाए गए जाल में जब मीन-इंद्रिय फंस गए तो योगमुद्रा में शरीर का स्वामी 'जीव' पीड़ामुक्त होकर सो गया (2021)। 'इन्द्रियों का दमन करो' कथन बोधरहित जन का है, यह असम्भव है; इन्हें यदि ईशचरण पर समर्पित कर दिया जाये तो ज्ञान-मार्ग प्रशस्त हो जाता

है (2033) अतः इनका उदात्तीकरण करो, सकल भुवन का स्वामित्व मिलेगा, ईश के दिव्य चरणों और ईश-अनुग्रह की प्राप्ति होगी (2035):

माया के सकल पदार्थ का बीज
मन है और मन का विचार है
विस्तार दो इसे होगा विस्तृत
समेट लो तो सिमट जाएगा
यह प्रयोग कर देखो अनुभव से। (2036)

पंचेन्द्रिय सदैव बाहर की ओर झपटती हैं, इन्हें अंतर्मुखी करो; ज्ञान के दीप-स्तम्भ से इन्हें भली-भाँति बांध दो; ये मौन हो जाएँगी तब आप आनन्द में मग्न रहोगे (2039)। इसी प्रसंग में असद्‌गुरु का वर्णन हुआ है *(देखें असद्‌गुरु, ढोंगी गुरु पृ. 610-611)*। सद्‌गुरु के महत्त्व का प्रतिपादन करते हुए तिरुमूलर कथन है—सद्‌गुरु ईशचरण प्रदान करता है, ईशचरण के माध्यम से जीव को स्वस्वरूप का बोध होता है। शिष्य को तत्त्वातीत स्थिति में लेजाकर गुरु बंधपाश से मुक्त करता है; गुरु, शिव और परशिव अभिन्न हैं (2049)। लोहा स्वर्ण बन जाए तो पुनः लोहा नहीं बनता इसी भांति यदि एक बार गुरुकृपा मिल जाए तो पुनर्जन्म के चक्र से सदैव के लिए मुक्ति हो जाती है (2051)। सद्‌गुरु वही है जो एकाग्रचित्त से शिवयोग का अभ्यास करके मनोजयी हो गया है तथा जो वेद और आगम के ज्ञान से परिपूर्ण है (2057)। शिवगुरु साधक को सत्, असत् और सदसत् का अंतर स्पष्ट करके अद्‌भुत मंत्रदीक्षा से परशिव के निकट ले जाता है; साधक को शुद्ध और अशुद्ध से परे आनन्दमय दशा में पहुंचा देता है (2058)। *(गुरु, शिवगुरु-दर्शन, गुरुचरण कृपा; देखें पृ. 600-601)*

युगबोध - लोक में व्याप्त अज्ञान

इस तंत्र में तद्‌युगीन सामाजिक परिवेश के कुछ वर्णन समाज की वस्तुस्थिति के परिचायक हैं। लोग दुष्कर्म करते हैं, मान लेते हैं कि कोई निरीक्षक नहीं, कोई दर्शक नहीं। वे यदि विचार करें तो ईश को सर्वसाक्षी, सर्वव्याप्त पाएँगे और बुराई से, दुष्कर्म से दूर रहेंगे (2067)। भूमण्डल सागर-मेखला वलयित है, उसी 'परम' की रचना है पर जगत् के लोग मिथ्या-भाषण और कदाचरण में लिप्त हैं (2068)। भक्ति को बेचने वाले भी हैं, ये प्रमत्त जन्म-मरण के चक्र से मुक्त न होंगे (2069)। इधर उधर, अग-जग में भटकने वाले अज्ञानी हैं; वे यह नहीं जानते कि मानव काया ईश्वर की अद्‌भुत रचना है, वह प्रेम से इस देहालय में निवास करता है; बाहर भटकने वाले मनमंदिर में निवसित प्रभु को नहीं देखते (2071) कुछ लोग जग में अन्न और परिधान के लिए दुःख में डूबे हैं, अज्ञान में सोते हैं, आनन्द से वंचित हैं। सत्यमार्ग क्या

है? उत्तर है–

बोध आना चाहिए–प्राण को
चेतना से भिन्न समझने का,
प्राण-बोध से चेतना-बोध होगा,
चेतना ही ज्ञान है
व्याप्त है देह भर में चेतना
और परतत्त्व छिपा है चेतना में
अज्ञात रूप से। (2079)

एक कुल, एक देवता

ईश्वर एक है–'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' (ऋग्वेद-1/64/46) के भाव को अभिव्यक्ति देने वाला तिरुमूलर का अत्यन्त प्रसिद्ध पद है–

ओन्ऱे कुलमुम् ओरुवने देवनुम् ....
एक है समग्र कुल एक सबका देव है
शिवमय भाव हो मृत्यु नहीं ध्रुव ही
इसके सिवा नहीं कोई निस्तार है,
निजहृदय में स्थापित करो यही आस्था
उद्धार का यही मार्ग है। (2104)

ईश-वंदना का संदेश

जब मृत्युसम विपत्ति आए तो विमल हृदय से निर्मल मणि सम शोभित ईश की वंदना करो (2117)। अंतर् में अनुराग हो, आनन्द में मग्न हो, प्रभु की एकांत में, समूह में वंदना करो, हृदय में ईशचरण का ध्यान करो, उसके गुणों का गान करो, क्रम-क्रम से सत्यज्ञान प्रशस्त होगा। वह सर्वेश मुक्तिदायक है, ज्ञानस्वरूप है, ॐकार स्वरूप नाद है; दुग्ध में नवनीत के समान छिपा हुआ है, अहंकार-विष त्याग कर उस तत्त्वातीत की स्मृति से तुम्हारा स्वानुभव से शिव होना सुनिश्चित है (2106-2120 तक)। सप्तम तंत्र के अंतिम पद में पुनः घोषित किया गया है कि शिवगुरु शिष्यरूप में अपनाकर कृपावृष्टि करता है; उसके अनुग्रह से कर्मबंधन कट जाते हैं–

दर्शन देता है फिर
अरुणिम जटाभार
शोभित जिस पर गंगा
थम जाती हैं दुख तरंगें
मिलती मुक्ति भव-सागर से। (2121)

अष्टम् तन्त्र

अष्टम् तन्त्र की विषयवस्तु मूलतः सैद्धान्तिक और दार्शनिक है। इसमें तैंतालीस शीर्षकों के अंतर्गत 527 छन्द हैं। शरीर के पांच विभाग, शरीर-त्याग, अवस्था भेद—निम्नावस्था, मध्य जाग्रतावस्था, शुद्ध जाग्रतावस्था, केवल, सकल, शुद्ध आदि का वर्णन हुआ है। इसी क्रम में परा-अवस्था, त्रिगुण और निर्गुण, निर्मल अवस्था, ज्ञानोदय, षडांत, पति-पशु-पाश का अभेद, शिखा-चरण परिज्ञान, त्रिदोष, आत्म-साक्षात्कर के परत्रय, मुक्तित्रय, स्वरूपत्रय, करणत्रय, शून्यत्रय आदि दार्शनिक विषयों का विवेचन हुआ है। अन्य महत्त्वपूर्ण विषयों में त्वम्-तत्-असि, कार्यकारण उपाधि, अष्टदल कमल में अनुभव, नौ अवस्थाएँ और नौ प्रकार के साधक; शुद्धाशुद्ध, तत्त्वमसि महावाक्य, ज्ञानी का मार्ग, इच्छा-परित्याग, भक्ति में रमना और मुक्ति में रमना हैं। अंतिम अंश में 'शोधनै'— 'शोध' शीर्षक से मूलर द्वारा आत्म साधना-के कतिपय प्रयोगों का उल्लेख है। तिरुमूलर पर शोध करने वाले अथवा शैवसिद्धान्त और शैवमत की परम्परा का अध्ययन करनेवाले विद्वानों ने प्रायः इस तंत्र को 'अत्यन्त तकनीकी और पूर्णतः दार्शनिक' मानकर इसका विवेचन नहीं किया है। श्री सी. वी. नारायण अय्यर ने यही भाव व्यक्त किया है— 'We may leave off the teaching contained in the 8th *Tantra* as being highly technical and purely philosophical in character (Saivism in South India p. 282)। सच तो यह है कि जटिल होते हुए भी यह अंश साधना, चिंतन, दर्शन तथा अनेक अन्य दृष्टियों से विशेष महत्त्व का है।

सूक्ष्म, स्थूल काया

प्रारम्भ में शरीर रूपी 'काया' की थैली का वर्णन है जिसमें मांस, मज्जा आदि अनेक पदार्थ हैं; इसके साथ ही 'माया' नाम की थैली है; जब जीव काया की थैली को छोड़ देता है तो माया की थैली मिट्टी में मिल जाती है (2122)। शरीर के सूक्ष्म और स्थूल रूप हैं; सूक्ष्म-शुद्ध देह शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, मन, बुद्धि और अहंकार से निर्मित है (2123)। काया के रंगमंच पर शिव का अनवरत नृत्य हो रहा है, यह मानव-काया चलता फिरता मंदिर है (2126)।

जीव (पशु)

जीव शरीर में भोक्ता बनकर रहता है, उसे चार अन्य (जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय) का अनुभव होता है। परतत्त्व सर्वव्यापी है, आकाश के समान घट-घट में प्राण के अंदर प्राण बनकर समाया है और जग-प्राण बनकर पृथक् भी है (2128)। कारण शरीर यदि षडाधार से होकर मध्यमार्ग में स्थित सुषुम्ना से मिल जाए तो शरीर के नव-रंध्र नियंत्रण में आ जाते हैं (2129)। इस 'जीव'

की यात्रा अनवरत चल रही है; पक्षी अंडे का खोल छोड़कर उड़ जाता है, उसी प्रकार जीव (पशु) भी स्वप्न के अनुभव की भाँति सब भूलकर नए शरीर में प्रवेश पाता है। तत्पर अवस्था में परिपक्व जीव 'मैं' और 'तुम' की अभिन्नता का बोध आने पर परतत्त्व में सायुज्य पाता है (2124)। मन, वचन और कर्म से पवित्र जीव के अंतर् में विमल ईश क्रीड़ा करता है (2138)।

इन्द्रिय - ईश्वर-उन्मुख करना

कोमलांगी की तन्वी कटि पर कामासक्त मन अस्थिर रहता है। अपनी इंद्रियों की शक्ति को—श्रवणेन्द्रिय, वागेन्द्रिय, चित्त आदि को—जो योगक्रिया से ईश्वर-उन्मुख कर देते हैं, जिनका चित्त शिव पर आसक्त रहता है; उनकी देह विद्युत्लता के समान भारहीन, ज्योतिर्मय हो जाती है, मन शिव-सान्निध्य में शिला-सम स्थिर रहता है (2140-2141)।

विविध अवस्थाएँ

जाग्रत् अवस्था में पुरुष भ्रूमध्य में पच्चीस तत्त्वों के संग रहता है; स्वप्न में आत्मतत्त्व चौदह तत्त्वों के साथ कंठ में स्थित होता है; सुषुप्ति में अजर आत्मतत्त्व हृदय देश में और तुरीय अवस्था में नित्य, शाश्वत आत्मा नाभिदेश में निवास करता है (2142)। पांच शिवतत्त्व — शुद्धविद्या, महेश्वर, सादाख्य, शक्ति और शिव — जाग्रत् अवस्था में कलाओं को प्रवर्तित करते हैं; स्वप्नावस्था में महेश्वर, सादाख्य, शक्ति और शिव से कलादि का प्रवर्तन होता है; सुषुप्ति में तीन सादाख्य, शक्ति और शिव तथा तुरीय में शक्ति-शिव कलाओं का संचालन करते हैं। तुरीयातीत में केवल शिव यह कार्य सम्पादन करते हैं (2143)।

तत्त्व एवं अवस्थाएं

ॐकार और योग के सम्बन्धों का विवेचन करते हुए मूलर बताते हैं कि जब अंतर् में ॐकार-ज्योति प्रसरित होती है तो जीवबोध मिट जाता है और शिव-ज्ञान प्राप्त होता है (2158)। इडा (सूर्य), पिंगला (चंद्र), सुषुम्ना (अग्नि) तीन नाड़ीमंडल हैं (2185); तेजयुक्त शिवतत्त्व हैं पांच — शिव, शक्ति, सदाशिव, महेश्वर और रुद्र — ये शुद्धविद्या है; विद्यातत्त्व सात हैं—राग, कला, काल, बोध, नियति, अशुद्ध माया और पुरुष — ये कार्यमाया से जनित हैं (2191)। साधना की प्रक्रिया द्वारा जाग्रत् में जाग्रत् स्थिति में अवस्था-पंचक का अनुभव पूरा होने पर श्वास काया में सध जाते हैं; वे तुरीयातीत अवस्था में पहुंचते हैं जहां नटराजराज का आनंदतांडव होता है, उसका दर्शन कर साधक आनन्दमय, शिवमय हो जाता है (2186)। इसी भांति तुरीयातीत जाग्रत् अवस्था में सूक्ष्म शरीर स्वप्न नहीं देखता परन्तु माया का लेशमात्र सम्बन्ध बना रहता

है; तुरीयातीत सुषुप्ति में 'आत्म' आत्म की अनुभूति करता है (2197)। तुरीयातीत में पहुँचकर आत्मा ज्ञाता होता है, तुरीयातीत से भी आगे ज्ञानयुक्त जीव का ज्योतितुरीय *(शिवाग्नि)* में विलय होता है (2199)।

तिरुमंतिरम् में यत्रतत्र कूट भाषा का प्रयोग हुआ है। एक मंत्र में कवि का कथन है—चकित-भ्रमित विचार में तीन सिंह हैं, उछलते कूदते विचारों में चार श्रृगाल-शावक; संवेदी हृदय में पांच हस्ती-शावक हैं, ये सब बाह्य और आंतरिक शत्रु हैं। सूक्ष्म विवेचन करने पर स्पष्ट होता है कि तीन सिंह काम, क्रोध, मोह हैं; चार श्रृगाल-शावक मन, बुद्धि, इच्छा और अहंकार हैं तथा शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध पांच हस्तीशावक हैं। यम, नियम से प्रारम्भ कर अष्टांगयोग से जीव गुरुकृपा द्वारा तुरीय में प्रविष्ट होता है। वहां से विकास प्राप्त कर तुरीयातीत में पहुँचकर वह कुछ समय स्थित रहने पर निर्मल, निरामय, नित्यशुद्ध हो जाता है (2217)। तुरीयातीत अवस्था में जीव ईश हो जाता है, फिर सदाशिव, महेश्वर आदि शिवरूपों में स्थित होता है, इसके बाद वह 'शिव' होकर नादातीत मौन स्थिति में पहुंचकर शिव-ज्योति में लीन हो जाता है (2218)। शुद्ध, सकल, प्रलयकल, विज्ञानकल का विस्तृत परिचय देने के लिए विविध पदों की रचना हुई है *(देखें पृ. 613)*। जब सकल जीव शक्ति-निपात पाकर ऐसी स्थिति में पहुंचते हैं जहां पाप-पुण्य का संतुलन हो जाता है, वे सद्गुरु-उपदेश से ज्ञान-आसन पर बैठते हैं, शक्ति का सान्निध्य पाकर आणव आदि मलों से मुक्त होकर जन्म-मृत्यु से परे 'शुद्ध' स्थिति में पहुँचते हैं।

शक्ति

'शक्ति' विषयक एक मंत्र इसके गूढ़ रहस्य को सहज रूप में अभिव्यक्त कर देता है—

परापर स्थिति में शक्ति
कहलाती है पराशक्ति
शांति में वह चित् शक्ति है
परानंद में है इच्छा शक्ति
ज्योतिर्मय बिंदु में है वह ज्ञानशक्ति
और मायामय स्थिति में क्रियाशक्ति
पाकर इस शक्ति का अनुग्रह
जीव का लय होता है शिव में। (2270)

इस विषय में 'पर के अभिलक्षण' शीर्षक से पुनः कहा गया है कि शक्ति शिवसत् से प्रकट होकर तत्परा बनकर रहती है, यही पराशक्ति ईश की देह बनती है, वह इच्छाशक्ति से जीव-उद्धार के लिए विश्व-रचना करती है,

तत्पश्चात् जगत् के संचालन के लिए नित्य नवीन रूप धारण करती है (2459)।

गुण-प्राबल्य की दृष्टि से जागृति में सत्त्वगुण, स्वप्न में रजोगुण, गहन सुषुप्ति में तमोगुण की प्रबलता होती है किन्तु निर्गुण की स्थिति में तीनों नष्ट होते हैं, उन पर निर्गुण हावी होता है यही शुद्ध तुरीयावस्था की विशेषता है (2296)। *(देखें पृ. 553-554)*

चराचर और परात्पर

लकड़ी का बना हाथी हमारे समक्ष है। इसे देखने पर मन में विचार उठता है कि हाथी है अथवा लकड़ी :

मदमत्त हाथी छिपाये महावृक्ष को
जिससे रचित है वह
महावृक्ष संकल्प से हाथी को देखो
छिप जाता है हाथी
इसी विध परात्पर को छिपावे पंचभूत
जिनसे निर्मित है चराचर जगत्
परात्पर के ध्यान से देखा जाए
छिप जाते हैं पंचभूत और सकल चराचर। (2290)

जीव का स्वयं में रहना केवलावस्था है, इंद्रियों से मिश्रित स्थिति सकलावस्था है, जहां वह स्वयं को जान लेता है; इन तीनों से परे वह जाग्रतातीत अर्थात् शुद्धावस्था में पहुँचता है (2302)। ज्ञान प्रदान करने की कसौटी क्या हो? जो अज्ञान में पूर्णतः निमग्न हैं, उन्हें ज्ञान देने का कोई लाभ नहीं और जो ज्ञान से परिपूर्ण हैं उनके लिए आवश्यकता ही नहीं। जिन्हें ज्ञात है कि वे अज्ञान में हैं, जो तमस् से ज्योति की ओर आने के मार्ग की खोज कर रहे हैं उन्हें ज्ञान दो, वे निज को जान लेंगे (2327)।

षडांत

षडांत का वर्णन करने से पूर्व वेदान्त और सिद्धान्त के अंतर की व्याख्या करते हुए तिरुमूलर कहते हैं–

वेदान्त कहे, 'मैं ब्रह्म हूँ'
सिद्धान्त कहे, 'मैं बनूंगा ब्रह्म'। (2372)

कलांत, नादांत, योगांत के साथ बोधांत और सिद्धांत से होकर आत्मा का परमात्म में लीन होना समाधि की महादशा है (2381)। इस स्थिति में ज्ञान, ज्ञातृ और ज्ञेय एक हो जाते हैं।

वेद और आगम दोनों को ईश द्वारा प्रकटित सद्ग्रंथ बताते हुए दोनों के लक्ष्य भिन्न माने गए हैं। वेद सामान्य हैं, आगम विशिष्ट हैं; परन्तु सच्चे ज्ञानियों के लिए दोनों ही अभिन्न हैं (2397)। प्रभु स्वयं गुरुरूप धारण कर पशु और पाश का मर्म उद्घाटित करते हैं, प्रभु पाश से सम्बद्ध होकर भी उससे मुक्त हैं (2412)। सृजन, पालन, संहार, तिरोधान और अनुग्रह जीव को जड़ से चेतन बनाकर उसका उद्धार करने के लिए शिव द्वारा अनुष्ठित पंचकृत्य हैं (2418)। 'पर' के सत्यज्ञान का मार्ग आसक्ति और सघन भक्ति से प्राप्त होगा; माया-बंधन और कामनाओं का त्यागकर जो घनीभूत प्रेम-पूर्वक उपासना करते हैं वे स्वयं परशिव बन जाते हैं (2448)।

ॐ और तत्त्वमसि

चेतना के लिए अतीतावस्था जीवमुक्ति है, परमुक्ति उपशांति दशा है, आनंद की स्थिति शिव-मुक्ति है; ये तीनों स्वरूप-मुक्ति हैं। यहां से नादांत मार्ग मिलता है जहां 'अ' 'उ' और 'म' के त्रितय में प्रणवमंत्र है (2474)।

तत्त्वमसि मंत्र के प्रथम पद 'तत्' में शिव को न्यस्त करें; स्वरूपानंद का ध्यान करके हृदय में प्रणव मंत्र लाएँ, योगसाधना की इस विधि से सत्य का साक्षात्कार होता है (2491)। 'तत्त्वमसि' प्रशस्त महावाक्य है; नंदी के अनुग्रह से मैं वही बना और शिवानंद में मग्न हो गया। *(देखें तत्त्वमसि पृ. 615-617)*।

अपने इष्ट के साथ साधक का गहन, गम्भीर सम्बन्ध होने के लिए वंदना चाहे खड़े होकर, बैठकर, अथवा लेटकर की जाए; चाहे वेदज्ञ हो अथवा शास्त्र-मर्मज्ञ हो, पंचेन्द्रिय का नियमन करना अनिवार्य है। पाश विमोचन के लिए एकाग्र होकर उसे अपने अंतर् में जान लेना (2517) अनिवार्य आवश्यकता है। उसे बाहर खोजना व्यर्थ है, नित्य ब्रह्म-वेला में उसे अपने भीतर खोजो, तीनों कालों में मनन, अनवरत पूजन, आराधन करो; तुम स्वयं परात्पर बन सकते हो (2519)। धनुष को साधकर लक्ष्य का शर से संधान करो, पांच (इंद्रिय रूपी) हाथी एक साथ धराशायी होंगे; हृदय में महामणि-सम शिवज्योति के, ज्ञानज्योति के दर्शन होंगे (2567)। इस मार्ग में शिवशक्ति की कृपा की अनिवार्यता पर पुनः पुनः बल दिया गया है—

योग साधना से
देह और जीव में बनता है संतुलन
दोनों का योग होता है अभिन्न
बरसती है उस पर शिव शक्ति की कृपा
फिर जब निर्गत होता जीव निज देह से
विलय होता है आद्यंतविहीन

शिव ज्योति में। (2558)।

साधना के मार्ग पर अग्रसर यह साधक अपने शीर्ष की घाटी 'सहस्रार' में प्रभु का दर्शन प्राप्त करता है; शक्ति संग परमेश्वर के दिव्यदर्शन से इसी अस्थि चर्ममय देह से भवसागर पार कर लेता है, 'कैलाश' में छिपे 'चोर' से अभिन्न हो जाता है (2597)। इस स्थिति तक पहुंच पाने के लिए तत्त्वज्ञानी 'स्व' के वास्तविक रूप को जानकर पूर्व के संचित कर्मों की गांठ खोल देते हैं, आगाम्य कर्मों को मसल डालते हैं, अपने शीश पर विलसित परमेश्वर की कृपा से ऐसा कर पाना सम्भव होता है। एक अन्य पद में *'आशै विड विड आनन्दमामे'* – 'कामनाओं से छूटना आनन्द ही आनन्द है' द्वारा आशा-कामना से मुक्त होने को सत्य का मार्ग माना गया है (2615)। 'मैंने भावविह्वल होकर उसे उसी भाँति पुकारा जैसे गाय की तलाश में व्याकुल गोवत्स पुकारता है; द्युलोक से भी पार स्थित वेद-वेदांत का सार, दयालु प्रभु मेरे पास आया और मेरी मांसल देह में प्रविष्ट हो गया' (2627)।

स्वानुभव

तिरुमूलर कहते हैं – मैंने स्वयं को ज्ञानातीत ज्ञान में एकाग्र किया, लक्ष्यातीत लक्ष्य के साथ जोड़ा, एकाग्रचित्त निमग्न हुआ फलतः परानंदी ने असीम कृपा की और व्याप्ति के अतीत व्याप्ति में वह परमेश्वर मुझे मिल गया (2638)। वह रक्षक वायु में स्पर्श सम, गन्ने में मिठास की तरह, दूध में घृत की तरह, फल में रस के समान, पुष्प में गंध की तरह जगत् में सर्वत्र व्याप्त है (2639)। तिरुमूलर ने स्व-अनुभव के आधार पर 'शोधनै' शीर्षक से जो चौदह मंत्र दिए है उनमें से अंतिम मंत्र इस प्रकार है–

उपदेश दिया मुझे करुणामय ने
जो ज्ञान शब्दातीत है
कर्तन किया मेरी लालसा को
अधिकाधिक शास्त्र-कलाएँ सीखने की,
स्थिर किया मेरे शरीर को ध्यान में,
जो चंचल था लहरों की भाँति
यों निर्मल कर मेरे हृदय को
प्रवेश किया प्रभु ने मेरे अंतस् में। (2648)

निष्कर्षतः अष्टम् तंत्र में शास्त्रीय विवेचन और दार्शनिक चिंतन अपनी पूर्ण गरिमा और गम्भीरता के साथ हैं। आगमशास्त्र की शैली सहज और सरल होना सम्भव भी नहीं है। विषयानुकूल भाषा-संरचना, शब्द-विन्यास, अर्थगाम्भीर्य और सूक्ष्म से सूक्ष्म विवेचन करने में तिरुमूलर की सफलता

असंदिग्ध है। साधना के चरम शिखर पर पहुंचे ज्ञानी, साधक के भाव को पूर्णरूपेण ग्रहण कर पाना सहज नहीं पर जो भी, जितना भी हम इस कृति के माध्यम से प्राप्त कर पाते हैं वह अमूल्य निधि है।

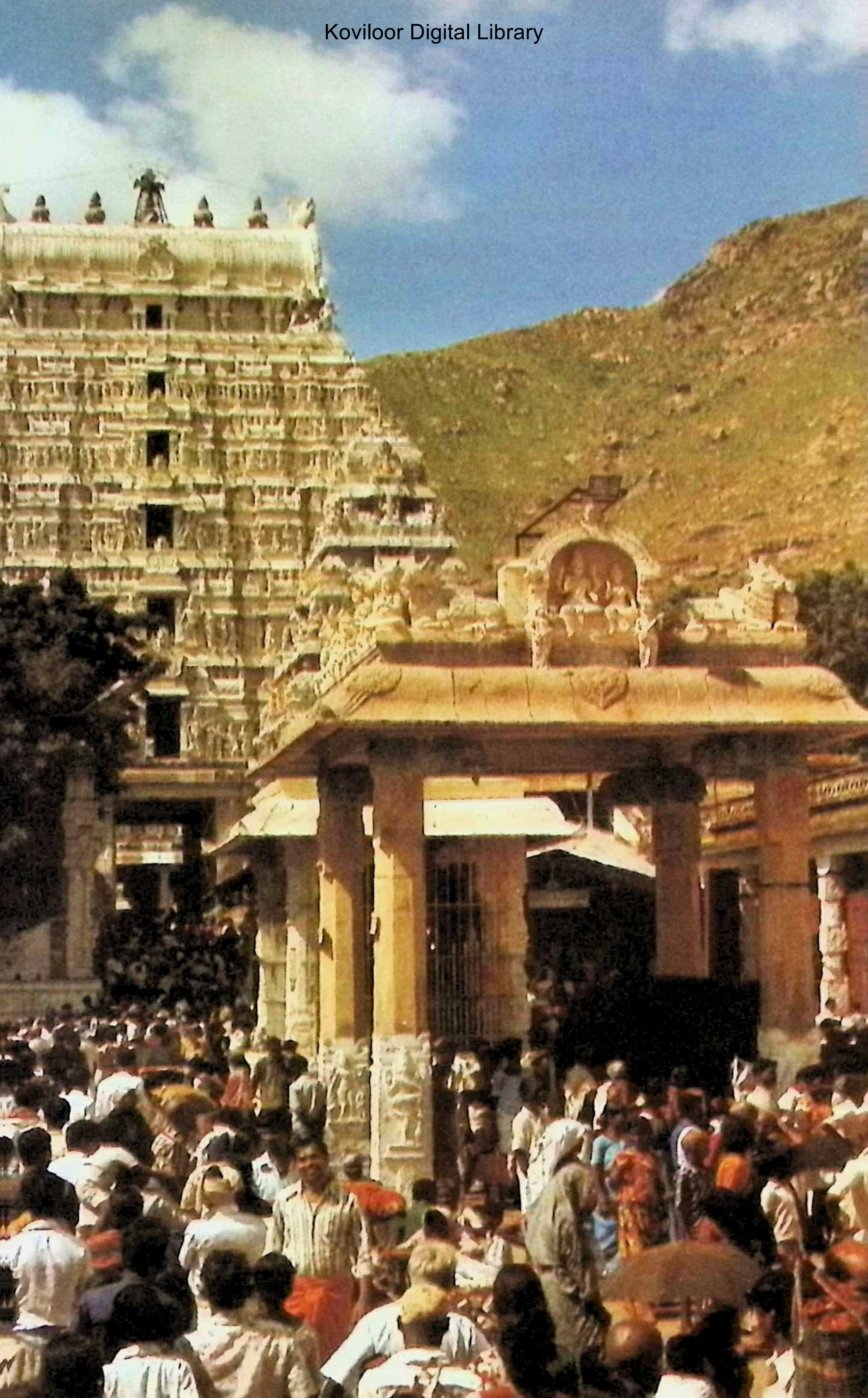
नवम् तन्त्र

तिरुमंतिरम् के अंतिम नवम् तंत्र में 'आरती' सहित तेईस अध्याय हैं। 399 मंत्रों के इस तंत्र का विषयक्षेत्र पर्याप्त विस्तृत है। प्रारम्भ में गुरुमठ दर्शन, ज्ञानगुरु दर्शन का संक्षिप्त विवरण देकर 'प्रणव-समाधि' और 'ज्योति' विषयों पर विवेचन हुआ है। स्थूल, सूक्ष्म और अति सूक्ष्म पंचाक्षर, श्रीनृत्यदर्शन, ज्ञानोदय, सत्य-ज्ञान-आनन्द, स्वरूपोदय, शिव-दर्शन, शिव-स्वरूप का दर्शन, मुक्तिभेद और कर्म-निर्वाण आदि शीर्षकों के अंतर्गत गहन, तात्त्विक और शास्त्रीय विवेचन उपलब्ध है। शून्य संवाद, मौन समाधि, पर-असीमत्व की महिमा, सायुज्य महिमा, स्तुति, सर्वव्यापी आदि शीर्षक तद्विषयक सामग्री का भण्डार हैं। अंतिम अंश वाळ्त्तु – आरती है; प्रायः विद्वानों ने इसे फलश्रुति रूप में माना है।

शिव; ॐ; सूक्ष्म-स्थूल मंत्र

शिव का निवास स्थान मानव शरीर ही है (2650)। प्रभु सप्तलोक को प्रफुल्लित करते हुए संतों के हृदय में प्रतिष्ठित होते हैं (2663); सकल लोक उनकी आज्ञा के अनुसार संचालित होते हैं (2673)। ॐ एकाक्षर रूप पर-ब्रह्म है, यह सकल-निष्कल, साकार-निराकार है; इसी में सकल भेदाभेद और सिद्धि तथा मुक्ति का मूल अंतर्निहित है (2676)। परमतत्त्व की ज्योति *(ओळि)* जब ज्ञानगोचर हो जाती है तो जीव का रूप भी ज्योतिर्मय हो जाता है, इस चिरंतन ज्योति में ही पराशक्ति अनुग्रह-ज्योति है; जब साधक योग-साधना द्वारा चन्द्र, सूर्य और अग्नि को आज्ञाचक्र में साध लेता है, उसे वहीं अंतःज्योति परमेश्वर का सान्निध्य मिलता है (2689)। 'शिवायनम' के मधुमय नाम का भक्तिपूरित हृदय से जाप शिवानंद के दिव्य-अमृत को निःसृत करता है (2704)। 'शिव' नाम के जाप से कर्म-मुक्ति, देवत्व-प्राप्ति और शिवपद-प्राप्ति का उल्लेख हुआ है (2716)। प्रभु का दिव्य ज्योतिर्मय रूप सर्वत्र भासित है, शिव-शक्ति सर्वत्र विलसित है, चिदम्बर सर्वत्र व्याप्त है और शिव की अनुग्रहलीला रूप आनंदनृत्य भी सर्वत्र हो रहा है (2722)। प्रभु के ज्ञानातीत आनन्दनृत्य के लिए हृदय रूपी मंच प्रस्तुत करो (2724); इस नृत्य के साथ ही वेद, आगम, सप्तलोक, भूतगण, समग्र भुवन नृत्यरत हो जाते हैं (2729)।

शिव, नटराजराज का यह नृत्य नाद अंतराय बिना सकल ब्रह्माण्डों से परे, आकाश गंगा के पार भी हो रहा है; वही प्रभु माणिक्य-ज्योति बनकर अंतर् में



திருவண்ணாமலை

तिरुवण्णामलै मंदिर

Thiruvannamalai Temple

नृत्य कर रहे हैं, दिव्य चिदम्बर में नृत्य कर रहे हैं; रत्नजटित कनकसभा में, जीवों के उद्धार हेतु उनका वर्णनातीत अद्‌भुत नृत्य हो रहा है (2743)। ये अनन्य, अद्वितीय प्रभु दक्षिण चिदम्बर के भव्य मंदिर में विराज रहे हैं (2758)। निखिल चराचर उनका रंगमंच है, वह्नि-मंडल, जल-मंडल सर्वत्र उनका रंगमंच है, पंचाक्षर का महामंत्र भी उनका रंगमंच है (2775)। जो एक बार इस परम-आनन्दमय दिव्यनर्तन को देख ले, इसका मर्म जान ले, उसी क्षण वह शिव के साथ एकीकृत हो जाता है (2796)।

जीव और शिव की अभिन्नता

शक्ति, शिव और परज्ञान की एक नवीन व्याख्या का प्रयास मंत्र संख्या 2828 में हुआ है—

शक्ति, शिव और परज्ञान को
व्यक्त करेंगे यों :
अंतहीन आनंद शिवानंद है,
उसका स्वरूप ही शक्ति है,
परज्ञान वह है जो
गुरुद्वारा जीव को प्रदत्त होता है
तीनों मिलकर बनते हैं सुमन
सत्-चित्-आनन्द का।

वह अरूप है पर अनेक रूपों में प्रकट होता है; अजन्मा है पर सृष्टि का बीजकारण है, अरूपत्व से परे स्थित वह मायामय है, उसे प्राप्त करने के लिए उसका गुरुरूप में आकर कृपा करना अनिवार्य आवश्यकता है (2840)। शिव जीव से अभिन्न है, वह चेतना है, जीवन है, योग है, वियोग है; हृदयकमल में रहते हुए भी वह विचार की पकड़ में नहीं आता, वह पुष्प में सुगंध के समान स्थित है (2857)। वह अलिखित शाश्वत वेद है, महत् तपस्या है, सहस्रार में, शीर्ष में अवस्थित है; जो उसे हृदय से चाहते हैं, अंतर् में ध्यान लगाते हैं, उन्हें वह अपनी कृपा प्रदान करता है (2858)।

ऊऴ् - भाग्य

तमिल के प्राचीन ग्रंथ तिरुक्कुरल में 'धर्मखण्ड' (अरत्तुपाल) के अंतर्गत 'ऊऴ्' (भाग्य) शीर्षक से कहा गया है कि दुःख भोग कर्मफल के अधीन है तथा दुःख और सुख भाग्यवश प्राप्त होता है। 'ऊऴ्' से अभिप्राय मनुष्य के संचित कर्मों की उस शक्ति से है जिसका अभी व्यय नहीं हुआ। यह एक शक्तिशाली तत्त्व है और इसका प्रभाव जन्म से ही मनुष्य के चरित्र एवं प्रवृत्तियों पर होता है। इसे भाग्य, प्रारब्ध, पूर्वकर्म आदि रूपों में अभिहित किया जाता है।

तिरुवल्लुवर से लगभग चार शती उपरान्त तिरुमूलर ने छह मंत्रों में इसकी विवेचना करते हुए माना है कि नदीतट की रेत नदी बहा ले जाती है, यह कार्य अन्य किसी का नहीं है अतः मैंने दीर्घ, पवित्र जटाधारी भस्मलेपित 'नन्दी' की आराधना की और भक्ति तथा निष्ठापूर्वक उसके संग हो लिया (2849)। इन्द्रिय रूपी हाथियों द्वारा पीछा हो रहा है, काम के बाण शरीर को भेद रहे हैं, विविध कामनाओं के सिंह घेरे हुए हैं पर मैं प्रभु-प्रदत्त ज्ञान-क्षेत्र में गहराई तक हल चला रहा हूँ (2851)। तिरुमूलर का स्पष्ट उद्घोष है कि प्रारब्ध कर्म, संचित कर्म आदि के रहते हुए भी प्रभुकृपा के मार्ग पर, ज्ञानसाधना द्वारा निरंतर अग्रसर होने पर मानव पूर्व-कर्मों को आनन्द का स्रोत बना सकता है—

पूर्वजन्मकृत कर्मफल से निर्मित
मार्ग छोड़कर कोई अन्य मार्ग नहीं
ऐसा कोई मार्ग नहीं
जो निर्धारित हो ईश से
मैंने यही मार्ग अपनाया
प्रभु के समक्ष नतशिर होकर
लक्ष्य की ओर बढ़ता गया
जो कर्म किए थे पूर्व में
वह मेरे लिए आनन्द का क्षेत्र बना। (2848)

शून्य सम्भाषण (प्रतीकों में वार्तालाप)

भारतीय साहित्य में योग, तन्त्र इत्यादि ब्रह्मविद्या के अंगों के व्यवहार, प्रयोग, साधना और सिद्धि इत्यादि को गोपनीय रखने की दीर्घ परम्परा है। अध्यात्म-ज्ञानियों का यह महत्त्वपूर्ण नियम था कि वे परमज्ञान को, उसकी पवित्रता को, गुप्त रखने का प्रयास करते थे। साधारण मनुष्य द्वारा इस विद्या का दुरुपयोग होना सम्भव माना गया। इसीलिए ज्ञानमार्ग में 'गुरु' का महत्त्व भारतीय चिंतन धारा में, प्रायः सभी भाषाओं के साहित्य में बना रहा। संकेतात्मक और प्रतीकात्मक भाषा के प्रयोग के मूल में प्रयास था कि साधारण व्यक्ति के लिए यह 'दुरूह और निरर्थक' हो, किन्तु साधनामार्ग के पथिकों के लिए यह 'अमूल्य मुक्तामणि' के समान हो। चर्यापदों की संधाभाषा, संतकाव्य के कूटपद और उलटवांसियां इसी परम्परा का एक रूप हैं। तिरुमूलर-काव्य में शब्द-विन्यास में जटिलता और श्लेष का निरंतर प्रयोग उनके अर्थों की सहज अभिव्यक्ति में बाधक बनते हैं। सम्भवतः यही कारण है कि उनकी व्याख्या एवं अर्थ-विश्लेषण अनेक रूपों में सम्भव है।

शरीर एक द्यूत-चौपड़ है, जिसमें पांच पाश, तीन मार्ग, इक्यावन वर्ग हैं।

इसमें जीव खेलते हैं, इसका प्रेरक कौन है, क्रीड़ा का क्या रहस्य है, मुझे ज्ञात नहीं (2866)। पंचेन्द्रिय, आणव, माया और कर्म मल तथा नाद के इक्यावन वर्ण क्रमशः पांच, तीन और इक्यावन के अर्थ-रूप में लें और अज्ञात परमतत्त्व को प्रेरक रूप में लें तो पद का अर्थ स्पष्ट हो जाता है। एक गहरा खेत है, दो सपाट खेत हैं, इनसे मिला एक अन्य खेत है; जो हृदय के खेत को जोतते हैं उनके लिए अमृत-वर्षा होती है जो खेतों को सींचती है और उत्तम फसल होती है (2871)। इस पद में गहरा खेत सुषुप्ति है, दो सपाट खेत जाग्रत् एवं स्वप्न अवस्था हैं, एक अन्य खेत तुरीय है। साधना द्वारा कुंडलिनी को ऊर्ध्वगमन कर सहस्रार से होने वाली अमृत-वर्षा है।

दो ढेंकलियाँ और सात कुएँ हैं; ज्येष्ठ का निकाला, कनिष्ठ का सींचा पानी क्यारियों को सींचे बिना व्यर्थ बह जाता है। इस मंत्र का अर्थ स्पष्ट करने के लिए हमें इडा-पिंगला दो ढेंकलियाँ, षडाधार और सहस्रार सात कुएँ, उच्छ्‌वास (ज्येष्ठ), निःश्वास (कनिष्ठ) का चलना पर प्राणायाम के अभाव में सुख-भोगों में लिप्त सुषुम्ना का सहस्रार की ओर न जाना समझना होगा; वेश्या के पाले चूज़े के समान नष्ट हो जाना जीव को संकेत करता है।

ब्राह्मण के घर में पांच दुधारू गाएँ हैं, चराने वाला नहीं, उच्छृंखल घूमती हैं; चरवाहा मिल जाए तो ब्राह्मण की गाएँ दूध की वर्षा करें। इस पद की व्याख्या में घर को शरीर मानें, पांच दुधारू गाएँ इंद्रिय मानें तो योगी रूपी चरवाहा मिल जाने पर शरीर में स्थित इंद्रियाँ आनन्द प्रदान करने का स्रोत बन जाती हैं। इसी प्रकार अनेक प्रतीक अर्थों का प्रयोग तिरुमूलर ने इस खण्ड में किया है। कतिपय प्रतीक प्रस्तुत हैं—निर्मल कुमारी (कुंडलिनी), पढ़ना (जाप), अलिखित ग्रंथ (ॐकार), अविकसित पुष्प (सहस्रार), अजन्मा भ्रमर (योगी), सुगंध (अमरत्व-मकरंद), पहाड़ (शीर्ष, सहस्रार), पका हुआ फल (अनुग्रह), पिघली धातु (आनंदामृत), दो बैल (इडा, पिंगला), नौकर (जीव), त्रिपुटी (आज्ञाचक्र), छह पक्षी (षड्‌रिपु), ऊंची डाल (सहस्रार), सात सीढ़ियां (षड़चक्र एवं सहस्रार), मीन (कामिनी), खरगोश (रहस्यपूर्ण चंद्रदृश्य), तीन (मल), अंतःसत्य (शिव), नौका (शरीर), समुद्र (योग), व्यापार का विकास (साधना), अमर फल (मुक्ति)।

प्रतीकों से युक्त शून्य सम्भाषण शीर्षक से 69 मंत्रों (2866-2935) में अनेक रूपों में रहस्यपूर्ण सत्य के उदघाटन का प्रयास हुआ है। यहां विषयवस्तु में नवीन चिंतन नहीं है पर गहन-गम्भीर तत्त्व-विवेचन को गुह्य रूप देने का सुनियोजित उपक्रम है। इनमें से प्रत्येक पद असाधारण है और प्रत्येक में अध्यात्म-साधना का रहस्य अंतर्भूत है :

नौका (शरीर) में सवार हो उतरा समुद्र (योग) में
पनप उठा व्यापार (साधना), मिली समृद्धि भी
ऐसे में भला आदमी (जीव)
अपने हृदय दे बैठा माया (शुद्ध विद्या, शक्ति) को
निज को भूल हुआ परवश
शीर्ष (सहस्रार) से झरे अमृतरस के साथ
मिला उसे अमर फल (शिव दर्शन)। (2915)

अनुभव-आधृत वर्णन

ग्रंथ के अंतिम चरण में ध्यान की एकाग्रता में परात्पर, शिवगति, अंतर्ज्ञान और युगान्तर के स्वानुभव का वर्णन है। एक पद में उनका कथन है कि जो वाक् से परे है उसे वाक् में बांधने की धृष्टता मत करो, जिसका कोई आर-पार नहीं भला उसके पार कैसे पहुंचोगे ? जिनका चित्त लहरों से रहित जलाशय सम शांत-स्थिर है उनके लिए निज रूप में जटाजूट परमेश्वर प्रकट होता है (2955)। वह औढर महादानी, स्वर्गापवर्ग पति, वेदवेद्य, जटाजूट, गंगाधर प्रभु संत-हृदय में इसलिए छिपकर रहता है कि कहीं योग्यताविहीन अपात्र उसके दर्शन न कर पाए (2994)। शिव जीव के लिए ज्ञानस्वरूप है; वह आदि, अनादि, सनातन है; वह सर्वज्ञ है, सबको जानता है, वही हमारा नन्दी परमेश्वर है।

अंतिम पद में तिरुमूलर का वक्तव्य है कि 'मूलन' द्वारा विरचित तीन सहस्र तमिल पद *(मूलनुरै चेय्द मूवायिरुम् तमिळ्),* मूलन द्वारा द्रष्ट पुनीत मंत्र-त्रिशती, मूलन द्वारा व्याख्यायित त्रिशत् उपदेश और ये तीनों समग्र एक ही हैं। समग्रतः ज्ञानसाधना में सिद्धहस्त योगी तिरुमूलर द्वारा विरचित यह आगम-शास्त्र तमिल की विशाल गौरवशाली परम्परा का एक प्रमुख सोपान है। ज्ञानियों, भक्तों, योगमार्ग और शिव-साधना के पथ पर अग्रसर साधकों एवं जनमानस के लिए इन लघु गीतों में अपार काव्य-सौंदर्य, ज्ञानराशि है जो नित्य नूतन अर्थ प्रदान करने में सक्षम है। इन परमानुभूतिपूर्ण मंत्रों को शुद्ध मनोवृत्ति से, जिज्ञासा भावना से, गंभीर मनन करने वाला इनमें अंतर्निहित 'अंत' के मार्ग को अवश्यमेव खोज पाएगा।

भ्रम का निराकरण

युगबोध और सामाजिक दुर्बलताओं का संकेत प्रत्येक श्रेष्ठ कृति का सहज गुण है। ब्राह्मण के धर्म का प्रतिपादन करते हुए तिरुमूलर ने यज्ञ-याग के मार्ग का विधान किया है; वे जिज्ञासु साधना द्वारा प्रणव में लीन होते हैं, नादान्त, वेदान्त और बोधान्त रूपी प्रभु में लीन होकर अनन्त आनन्द प्राप्त

करते हैं। वे निरंतर पवित्र गायत्री और रहस्यमय सावित्री मंत्र का जाप करते हुए भक्ति के रथ पर आरूढ़ होकर माया के आकर्षण से मुक्त होते हैं। इस प्रकार से विविध रूपों में आदर्श ब्राह्मण का मार्ग निर्दिष्ट करने के उपरान्त यह कहना उपयुक्त है कि पवित्र यज्ञोपवीत और जटाभार मात्र से कोई ब्राह्मण नहीं होता; 'वेदान्त' वास्तविक यज्ञोपवीत है और 'सत्यज्ञान' जटाएँ हैं। जो सत्यविमुख हैं, सत्यज्ञान-हीन हैं, आत्म नियंत्रण नहीं जानते, अध्यात्म दृष्टि से क्रियाहीन हैं वे पागल मूर्ख हैं, ब्राह्मण नहीं (231) इस अंश को तमिल साहित्य के विश्वविख्यात विद्वान् कामिल ज़्वेलेबिल ने तिरुमूलर द्वारा 'जातिप्रथा पर आक्रमण' कहा है (The Smile of Murugan, p. 226)। वास्तव में विदेशी विद्वानों का जातिप्रथा विषयक पूर्वाग्रह युक्त सीमित दृष्टिकोण इसके मूल में है। इस पद का संदर्भ-विहीन अर्थ निकालने के कारण इसे ब्राह्मण विरोधी मान लिया गया है। इस पद के तुरन्त बाद कवि ने कहा है – सच्चे ब्राह्मण चित्, अचित् से ज्ञान की चेतना प्राप्त करते हैं। गुरुप्रदत्त मार्ग से वह प्रभु के चरण प्राप्त करते हैं। सभी कर्म और कर्म-काण्ड से मुक्त होकर वे अंततः तुरीय समाधि की स्थिति में पहुँचते हैं।

एक अन्य भ्रांति यह मानना है कि तिरुमूलर ने संस्कृत में उपलब्ध शैव आगम शास्त्रों के सिद्धान्तों को तमिल में प्रस्तुत किया (Early History of Saivism in South India p. 205)। निःसन्देह तिरुमूलर के समक्ष पूर्व की एक विशद परम्परा विद्यमान थी और न ही उन्होंने परम्परा-विनिर्मुक्त होने का कोई संकेत ही दिया है पर तमिल भाषा, साहित्य और संस्कृति के प्रत्येक पक्ष के स्रोत को संस्कृत में ढूंढना भी पूर्वाग्रह है। तमिल के कतिपय विद्वान् अपनी संस्कृति को वेदों से भी पुरातन सिद्ध करने का प्रयास करते रहे हैं। तमिल साहित्य और संस्कृति की प्राचीनता असंदिग्ध है पर प्राचीनता की सीमा के विषय में किसी प्रकार का अंतिम निर्णय सम्भव नहीं।

समग्रतः तिरुमूलर कृत तिरुमंतिरम् एक अद्‌भुत शास्त्र है जो काव्य के समान रससिक्त है। दक्षिण भारत की दीर्घ दार्शनिक परम्परा के स्रोत-ग्रंथ के रूप में इसका अद्वितीय योगदान है। शैवभक्ति परम्परा के एक समादृत आधार-ग्रंथ की दृष्टि से इसकी मान्यता सर्वोपरि है। एक अद्‌भुत क्षमता-सम्पन्न ज्ञानी, योगी, और सिद्धभक्त के रूप में तमिल प्रदेश के जन-मानस में तिरुमूलर का विशिष्ट स्थान है। कई विविध चिंतनधाराओं के समन्वय का भी श्रेय उन्हें है यथा योग, प्राणायाम, कुंडलिनी आदि की योग की परम्परा को ग्रहण करना; पंचाक्षरी मंत्र के स्थूल, सूक्ष्म और अतिसूक्ष्म रूपों को भक्तिमार्ग के साथ समाहित करना और योगमार्गियों की चिंतनधारा के विपरीत अभिषेक और आराधना की तिरुमंतिरम् में स्वीकृति देना। इसी भांति मूर्तिपूजा को महत्त्व न

देते हुए भी शिवलिंग, नटराज की प्रतिमा, देवी के स्वरूप आदि की स्वीकृति के कारण वे नायन्मार् भक्तों की श्रेणी में अपना सम्मानपूर्ण स्थान बना पाए। तिरुमूलर का 'प्रेम' का मार्ग मानव-मात्र को दुःखों, यंत्रणाओं और संत्रास से मुक्त करने का साधन बने; यह लोक 'शिव' के कल्याणप्रद रूप के अनुभव से शिवलोक सदृश आनन्दमय हो जाये तो सर्वत्र सुख-शांति की भावनाओं का सागर हिलोरें लेने लगेगा।

* * *



द्वितीय खण्ड
2

தமிழ் ஆகம சாத்திரம்
திருமந்திரம்

तमिल आगम-शास्त्र — तिरुमूलर कृत
तिरुमंतिरम्

तिरुमंतिरम् के 820 मंत्र मूल तमिऴ्
देवनागरी लिप्यंतरण
और भावानुवाद

तमिऴ् मूल के बायीं ओर क्रमांक दिया गया है। तमिऴ् मूल एवं हिन्दी अनुवाद के साथ मूल ग्रंथ की मंत्र संख्या दी गई है। तमिऴ् के सन्दर्भ के लिए देखें डॉ. ना. महालिंगम् द्वारा सम्पादित एवं श्री बी. नटराजन् द्वारा अंग्रेजी में अनूदित 'तिरुमंतिरम्' संस्करण-1991.

முதல் தந்திரம்
मुदल् तन्तिरम्
प्रथम तंत्र

விநாயகர் காப்பு — विनायकर् काप्पु - विनायक वंदना
கடவுள் வாழ்த்து — कटवुळ् वाऴ्त्तु - ईश स्तुति
சிறப்புப் பாயிரம் — सिऱप्पु पायिरम् - मंगलाचरण
வேதச் சிறப்பு — वेद चिऱप्पु - वेद माहात्म्य
ஆகமச் சிறப்பு — आगम चिऱप्पु - आगम माहात्म्य
குரு பாரம்பரியம் — गुरु पारम्परियम् - गुरु परम्परा
திருமூலர் வரலாறு — तिरुमूलर वरलाऱु - तिरुमूलर इतिहास
அவையடக்கம் — अवैयडक्कम् - विनम्र निवेदन
திருமந்திரத் தொகைச் சிறப்பு —
तिरुमंतिरम् तोकैच् चिऱप्पु - तिरुमंतिरम् के तीन सहस्र का महत्त्व
குருமட வரலாறு — गुरुमट वरलाऱु - आध्यात्मिक परम्परा
மும்மூர்த்திகள் முறைமை — मुम्मूर्त्तिकळ् मुऱैमै - त्रिमूर्ति
உபதேசம் — उपदेशम् - उपदेश;
யாக்கை நிலையாமை—याक्कै निलैयामै–शरीर की अनित्यता;
செல்வம் நிலையாமை—चॆल्वम् निलैयामै–संपत्ति की अनित्यता;
இளமை நிலையாமை—इळमै निलैयामै–यौवन की अनित्यता;
உயிர் நிலையாமை—उयिर् निलैयामै–जीवन की अनित्यता;
கொல்லாமை—कॊल्लामै–अहिंसा / हिंसा न करना;
புலால் மறுத்தல்—पुलाल् मऱुत्तल्–मांस निषेध / मांस वर्जन;
பிறன்மனை நயவாமை—पिऱऩ्मनै नयवामै–परदार गमन न करना;

மகளிர் இழிவு — मगळिर् इळिवु - प्रमदा प्रवंचना;
நல்குரவு — नल्गुरवु - दुखमूल है संचय;
அக்கினி காரியம் — अक्किनि कारियम् - यज्ञाग्नि जगाना;
அந்தணரொழுக்கம் — अन्तणर् ओऴुक्कम् - ब्राह्मण-धर्म;
அரசாட்சி முறை — अरशाट्चि मुऱै - राज-धर्म;
வானச் சிறப்பு — वानच् चिऱप्पु - वर्षा महिमा;
தானச் சிறப்பு — दानच् चिऱप्पु - दान महिमा;
அறஞ்செய்வான் திறம் — अऱंचॅय्वान् तिऱम् - दानशील की महत्ता;
அறஞ்செயான் திறம் — अरंचॅयान् तिऱम् - कृपण की प्रकृति;
அன்புடமை — अन्बुडैमै - प्रेमासक्ति / प्रेमाभक्ति;
அன்பு செய்வாரை அறிவன் சிவன் —
अन्बु चॅय्वारै अऱिवन् शिवन् - प्रेमाभक्ति करने वाले को शिव पहचानता है;
கல்வி — कल्वि - विद्या;
கேள்வி கேட்டமைதல் — केळ्वि केट्टमैदल् - श्रवण से मनन;
கல்லாமை — कल्लामै - विद्या न पाना;
நடுவு நிலைமை — नडुवु निलैमै - मध्य मार्ग;
கள்ளுண்ணாமை — कळ्ळुण्णामै - मदिरा-निषेध / मदिरा वर्जन ।

* * *

1. ஒன்றவன் தானே இரண்டவன் இன்னருள்
நின்றனன் மூன்றினுள் நான்குணர்ந் தான்ஐந்து
வென்றனன் ஆறு விரிந்தனன் ஏழும்பர்ச்
சென்றனன் தானிருந்தா தானுணர்ந் தெட்டே. 1

ओन्ऱवन् ताने इरण्डवन् इन्नरुळ्
निन्ऱनन् मून्ऱिनुळ् नान्गुणर्न्दान् ऐन्दु
वेन्ऱनन् आरु विरिन्दनन् एऴुम्बर्
चेन्ऱनन् तानिरुन्दानुणर्न्दट्टे । मंत्र-संख्या, 1

वह एक है, उसकी अनुग्रह-शक्ति दो हैं
तीन में स्थित, अनुभव-गम्य चार से,
जीता पांच को, व्याप्त रहा छह में
गया सात लोक में, प्रत्यक्ष है आठ में । 1

2. சிவனொடொக் குந்தெய்வந் தேடினும் இல்லை
அவனொடொப் பார்இங்கு யாவரும் இல்லை
புவனங் கடந்தன்று பொன்னொளி மின்னுந்
தவனச் சடைமுடித் தாமரை யானே. 5

शिवनोडोक्कुम् देय्वम् तेडिनुम् इल्लै
अवनोडोप्पर् इङ्गु यावरुम् इल्लै
पुवनङ् कडन्दन्रु पोन्नोळि मिन्नुम्
तवनच्चडैमुडित् तामरैयाने .। मंत्र-संख्या, 5

खोजो तलाश करो कहीं भी
नहीं मिलेगा शिवसरिस प्रभु,
शिव के तुल्य नहीं है कोई,
चतुर्दश भुवनों के पार
विराज रही है एक स्वर्णिम ज्योति
कमल-सम निर्लिप्त परमेश्वर की ।
शोभित है स्वर्णिम जटा वहाँ
अग्निशिखा सी तेजोद्दीप्त । 5

3. அவனை ஒழிய அமரரும் இல்லை
அவனன்றிச் செய்யும் அருந்தவம் இல்லை
அவனன்றி மூவரால் ஆவதொன் றில்லை
அவனன்றி ஊர்புகு மாறறி யேனே. 6

अवनै ओऴिय अमररुम् इल्लै
अवनन्रिच् चेय्युम् अरुन्तवम् इल्लै
अवनन्रि मूवराल् आवदोन्रिल्लै
अवनन्रि ऊर् पुगुमाद्रियेने । मंत्र-संख्या, 6

महादेव परमेश्वर के अनुग्रह के बिना
देवों का भी अस्तित्व नहीं है;
उसकी कृपा बिना अनुष्ठित तपस्या नहीं है सार्थक;
उसके अनुग्रह बिन त्रिदेव भी कुछ करने में नहीं सक्षम;
उसकी करुणा के बिना प्रविष्ट न हो सकता मैं
आनन्द-पुरी के द्वार में । 6

4. தொடர்ந்துநின் றானைத் தொழுமின் தொழுதால்
படர்ந்துநின் றான்பரி பாரக முற்றுங்
கடந்துநின் றான்கம லாம்மலர் மேலே
உடந்திருந் தானடிப் புண்ணிய மாமே. 26

तॉडर्न्दु निन्रानैत् तॉऴुमिन् तॉऴुदाल्
पडर्न्दु निन्रान् परि पारग मुट्रुम्
कडन्दु निन्रान् कमलम् मलर् मेले
उडन्दिरुन्दानडिप् पुण्णियमामे । मंत्र-संख्या, 26

वंदना करो अनादि-अनंत प्रभु की
व्याप्त है जो सकल भुवन में
अंतराय बिना; नमन करो तो
भुवनों के पार व्याप्त प्रभु
आ विराजेगा हृदयकमल पर
मधुमय मुस्कान से, पुण्य है नतशिर होना
चरणकमलों में प्रभु के । 26

5. வேதத்தை விட்ட அறம்இல்லை வேதத்தின்
ஓதத் தகும்அறம் எல்லாம் உளதர்க்க
வாதத்தை விட்டு மதிஞர் வளமுற்ற
வேதத்தை ஓதியே வீடுபெற் றார்களே. 51

वेदत्तै विट्टट अऱम् इल्लै वेदत्तिन्
ओदत् तगुम् अऱम् एल्लाम् उळदर्क्क
वादत्तै विट्टु मतिञर् वळमुट्र
वेदत्तै ओदिये वीडु पेट्रार्गळे । मंत्र-संख्या, 51

वेद से विशिष्ट कोई धर्म नहीं है,
सत्य ही धर्म-सार है वेद;
इसलिए दूर रहते हैं सुधीजन
व्यर्थ की वितण्डा से
चलते हैं नित वेदमार्ग पर
सुलभ होता है मुक्तिमार्ग । 51

6. திருநெறி யாவது சித்தசித் தன்றிப்
பெருநெறி யாய பிரானை நினைந்து
குருநெறி யாஞ்சிவ மாநெறி கூடும்
ஒருநெறி ஒன்றாக வேதாந்தம் ஓதுமே. 54

तिरुनॆऱियावदु चित्तचित्तन्ऱिप्
पॆरुनॆऱियाय् पिरानै निनैन्दु
गुरुनॆऱियाम् शिव मानॆऱि कूडुम्
ऒरुनॆऱि ऒन्ऱाह वेदान्तम् ओदुमे ।* मंत्र-संख्या, 54

चित् अचित् से परे स्वतःसिद्ध ज्ञान के आगार हैं
ज्ञानगुरु शिव, वही सत्य है, मार्ग भी वही है,
ध्यान लगाओ शिवगुरु पर शिव की निस्सीम कृपा से
प्रशस्त होगा शिव-सन्मार्ग
यही निष्कर्ष है वेदांत का । 54

7. அண்ணல் அருளால் அருளுஞ் சிவாகமம்
எண்ணில் இருபத்தெண் கோடிநூ றாயிரம்
விண்ணவர் ஈசன் விழுப்பம் உரைத்தனர்
எண்ணிநின் றப்பொருள் ஏத்துவன் யானே. 58

अण्णल् अरुळाल् अरुळुम शिवागमम्
ऍण्णिल् इरुपत्तॆण् कोटि नूरायिरम्
विण्णवर् ईशन् विऴुप्पम् उरैत्तनर्
ऍण्णि निन्रअप्पोरुळ् एत्तुवन् याने ।* मंत्र-संख्या, 58

परमेश्वर की असीम कृपा से
प्रकट हुए हैं वरेण्य शिवागम
अट्ठाईस करोड़ शत-सहस्र संख्या में
देवता विस्तार करते हैं जिनमें
निस्सीम महिमा परमेश्वर की
मनन करूँ, स्तवन करूँ
मैं उस परमतत्व का । 58

8. சிவமாம் பரத்தினிற் சத்தி சதாசிவம்
உவமா மகேசர் உருத்திர தேவர்
தவமால் பிரமீசர் தம்மில்தாம் பெற்ற
நவஆ கமம்எங்கள் நந்திபெற் றானே. 62

शिवमाम् परत्तिनिर् सत्ति सदाशिवम्
उवमा महेशर् उरुत्तिर देवर्
तवमाल् पिरमीशर् तम्मिल् ताम् पॆट्र
नव आगमम् ऍङ्गळ् नन्दि पॆट्राने । मंत्र-संख्या, 62

प्राप्त हुए नवागम
परात्पर परमेश्वर से, शक्ति और सदाशिव को
उभय महेश्वर को, रुद्रदेव और त्रिदेव को,
प्रत्येक से प्राप्त नवागम उपलब्ध हुआ नंदी को
हमारे गुरुनाथ को । 62

9. நந்தி அருள்பெற்ற நாதரை நாடிடின்
நந்திகள் நால்வர் சிவயோக மாமுனி
மன்று தொழுத பதஞ்சலி வியாக்ரமர்
என்றிவர் என்னோ டெண்மரு மாமே. 67

नन्दि अरुळ् पॆट्र नादरै नाडिडिन्
नन्दिगळ् नाल्वर् शिवयोग मामुनि
मन्रु तॊऴुद पतंजलि व्याक्रमर्
एन्रिवर् ऍन्नॊडॆ एण्मरुमामे । मंत्र-संख्या, 67

नन्दि से दीक्षा-प्राप्त
नाथसिद्ध आठ हुए;
प्रथम हैं नन्दि-चतुष्टय-
(सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार);
फिर शिवयोग-महामुनि, आगे हैं पतंजलि
उपस्थित थे जो नटराज-राज की नृत्यसभा में;
फिर लेंगे नाम व्याघ्रपाद का और अंत में स्वयं मैं । 67

10. நந்தி அருளாலே நாதனாம் பேர்பெற்றோம்
நந்தி அருளாலே மூலனை நாடினோம்
நந்தி அருளாவ தென்செயும் நாட்டினில்
நந்தி வழிகாட்ட யானிருந்தேனே. 68

नन्दि अरुळाले नादनाम् पेर पॆट्रोम्
नन्दि अरुळाले मूलनै नाडिनोम्
नन्दि अरुळाव दॆन् चॆयुम् नाट्टिनिल्
नन्दि वऴिकाट्ट यानिरुन्देने । मंत्र-संख्या, 68

नन्दी की परमकृपा से नाथसिद्ध का पद पाया,
नन्दी की परमकृपा से प्रविष्ट हो पाया 'मूल' काया में,
नन्दी की परम कृपा से कहो क्या न होता सिद्ध?
जो कुछ भी सिद्ध हुआ मुझ से नन्दी की परम कृपा से । 68

11. நந்தி இணையடி யான்தலை மேற்கொண்டு
புந்தியின் உள்ளே புகப்பெய்து போற்றிசெய்
தந்தி மதிபுனை அரனடி நாடொறுஞ்
சிந்தைசெய் தாகமஞ் செப்பலுற் றேனே. 73

नन्दि इणैयडियान् तलै मेऱ्कोण्डु
पुन्दियिन् उळ्ळे पुगप् पॆय्दु पोऱ्‌ऱिशॆय्दु
अन्दि मति पुनै अरनडि नाडोऱुम्,
चिन्दैशॆय्दुआगमम् चॆप्पलुट्रेने । मंत्र-संख्या, 73

धारण किये मैंने नन्दि के चरण-युगल
निज शिर पर; बुद्धि में स्थिर किये
सदाशिव के चरण-युगल; कर लिया हृदयंगम
उसी का; और प्रकट किया सकल शिवागम । 73

12. சதாசிவந் தத்துவம் முத்தமிழ் வேதம்
மிதாசனி யாதிருந் தேனின்ற காலம்
இதாசனி யாதிருந் தேன்மன நீங்கி
உதாசனி யாதுடனே உணர்ந் தோமால். 76

सदाशिवम् तत्तुवम् मुत्तमिऴ् वेदम्
मिताशनि यादिरुन्देनिन्ऱ कालम्
इताशनि यादिरुन्देन् मन नीङ्गि
उदासनि यादुडने उणर्न्दोमाल् । मंत्र-संख्या, 76

सदाशिव तत्व-वेदांत और तमिऴ् त्रय को
आत्मसात् करने के हित साधना में लीन रहा,
मिताहारी और योग-युक्त रहा
मन से, विचारों से विलग होकर,
किन्तु साक्षात्कार तब हुआ, आत्मसात् तब हुआ
जब सबका परित्याग कर उदासीन हुआ । 76

13. சேர்ந்திருந் தேன்சிவ மங்கைதன் பங்கனைச்
சேர்ந்திருந் தேன்சிவ னாவடு தண்டுறை
சேர்ந்திருந் தேன்சிவ போதியின் நீழலிற்
சேர்ந்திருந் தேன்சிவன் நாமங்கள் ஓதியே. 79

चेर्न्दिरुन्देऩ् शिवमङ्गै तऩ् पङ्गनै
चेर्न्दिन्देऩ् शिवनावडु तण्डुऱै
चेर्न्दिरुन्देऩ् शिवबोदियिऩ् नीऴलिऱ्
चेर्न्दिरुन्देऩ् शिवऩ् नामंगळ् ओदिये ।* मंत्र-संख्या, 79

संलग्न रहा मैं सदाशिव के संग
जिन्होंने दिया उमा को निज अंग
संलग्न रहा मैं शिव-ध्यान में
बैठे शिवबोधि-तले आवडुतुरै-धाम में
संलग्न रहा मैं, जपते पुनीत शिव-नाम अनवरत् । 79

14. இருந்தேன் இக்காயத்தே எண்ணிலி கோடி
இருந்தேன் இராப்பகல் அற்ற இடத்தே
இருந்தேன் இமையவர் ஏத்தும் பதத்தே
இருந்தேன் என்நந்தி இணையடிக் கீழே. 80

इरुन्देऩ् इक्कायत्ते ऍण्णिलि कोटि
इरुन्देऩ् इराप्पगल् अट्र इडत्ते
इरुन्देऩ् इमैयवर् एत्तुम् पदत्ते
इरुन्देऩ् ऍऩ् नन्दि इणैयडिक् कीऴे । मंत्र-संख्या, 80

रहा मैं कायारूपी पिंजरे में दीर्घकाल तक,
रहा अनत काल तक आकाश में
जहाँ दिन और रात कोई अर्थ नहीं रखता,
रहा समुन्नत पद पर चिरकाल तक
ऐसा पद देवगण भी जिसकी करें प्रशंसा
रहा सानंद सभी स्थान में ।
जहाँ भी रहा मेरे नन्दिदेव के चरणों में रहा । 80

15. பின்னைநின் றென்னே பிறவி பெறுவது
முன்னைநன் றாக முயல்தவஞ் செய்கிலர்
என்னைநன் றாகஇறைவன் படைத்தனன்
தன்னைநன் றாகத் தமிழ்ச்செய்யு மாறே. 81

पिन्नै निन्ऱॆनै पिऱवि पॆरुवदु
मुन्नै नन्ऱाग मुयल् तवम् चॆय्गिलर्
ऍन्नै नन्ऱाग इरैवन् पडैत्तनन्
तन्नै नन्ऱाग तमिऴ् चॆय्युमाऱे । मंत्र-संख्या, 81

पुनः-पुनः जन्म लेने में कुछ भी नहीं धरा है
इसे टालने के लिए पहले से ही करना था तप,
निष्ठा से, मनोयोग से सिरजा है मुझे ईश ने
सुंदर ढंग से ताकि व्यक्त करूँ मैं उन्हें
सुमधुर तमिल में । 81

16. யான்பெற்ற இன்பம் பெறுகஇவ் வையகம்
வான்பற்றி நின்ற மறைப்பொருள் சொல்லிடின்
ஊன்பற்றி நின்ற உணர்வுறு மந்திரந்
தான்பற்றப் பற்றத் தலைப்படுந் தானே. 85

यान् पॆट्र इन्बम् पॆरुग इव्वैयगम्
वान् पट्रि निन्ऱ मऱैप्पोरुळ् चॊल्लिडिन्
ऊन पट्रि निन्ऱ उणर्वुरु मन्तिरम्
तान् पट्रप् पट्रत् तलैप्पडुम् ताने मंत्र-संख्या, 85

मैने जो सुख पाया प्राप्त करे यह जग सारा
मार्ग की जिज्ञासा है यदि दिव्य सुख संप्राप्ति के,
सुनो उसका यही तंत्र, गुनो मन में महामंत्र
हृदयतल की चेतना में गुनते रहो महामंत्र
गहरे उतरो, गहरे उतरो स्वयं सिद्ध होगा आनन्द । 85

17. ஆரறி வார்எங்கள் அண்ணல் பெருமையை
யாரறி வார்இந்த அகலமும் நீளமும்
பேரறி யாத பெருஞ்சுடர் ஒன்றதின்
வேரறி யாமை விளம்புகின் றேனே. 95

आरऱ़िवार् एङ्गळ् अण्णल् पॆरुमैयै
यारऱ़िवार् इन्द अगलमुम् नीळमुम्
पेरऱ़ियाद पॆरुम् चुडर् ऒन्ऱदिन्
वेरऱ़ियामै विळम्बुकिन्ऱेने । मंत्र-संख्या, 95

किसको ज्ञात है प्रभु की अपार महिमा
अपरिमेय है यह अनन्त विस्तृति
जिसका नहीं कोई नाम, न ही अभिधान
आद्यंत है वर्णनातीत उसकी विभुता । 95

18. பாடல்வல் லார்நெறி பாட அறிகிலேன்
ஆடவல் லார்நெறி ஆட அறிகிலேன்
நாடவல் லார்நெறி நாட அறிகிலேன்
தேடவல் லார்நெறி தேடகில் லேனே. 96

पाडलवल्लार् नॆऱ़ि पाड अऱ़िगिलेन्
आडवल्लार् नॆऱ़ि आड अऱ़िगिलेन्
नाडवल्लार् नॆऱ़ि नाड अऱ़िगिलेन्
तेडवल्लार् नॆऱ़ि तेड गिल्लेने । मंत्र-संख्या, 96

स्तुत्य है गाने योग्य है प्रभु
कैसे गाऊँ मैं? नहीं जानता विधि
नृत्यकला में सुदक्ष हैं प्रभु
नृत्य की विधि भी नहीं जानता !
शरण्य कोई है तो वही एकमात्र शरण्य
अनन्य-भाव से शरणागति-विधि नहीं जानता
अनुसंधान योग्य केवल वही है
कैसे करूँ संधान, नहीं जानता ! 96

19. மூலன் உரைசெய்த மூவா யிரந்தமிழ்
ஞாலம் அறியவே நந்தி அருளது
காலை எழுந்து கருத்தறிந் தோதிடின்
ஞாலத் தலைவனை நண்ணுவ ரன்றே. 99

मूलन् उरै चॅय्द मूवायिरम् तमिऴ्
ञालम् अरियवे नन्दि उरुळदु
कालै ऍऴुन्द करुत्तरिन्दोदिडिन्
ञालत्तलैवनै नण्णुवरन्रे । मंत्र-संख्या, 99

(तिरु) मूल-विरचित त्रिसहस्र तमिऴ् मंत्र
स्वयं नन्दिदेव द्वारा प्रकटित हैं
जगत् के ज्ञान हेतु, उद्धार हेतु
करें जो नित्य पारायण वरेण्य तिरुमंत्र का
प्रतिदिन अर्थज्ञान सहित
पाएँगे चरणयुगल लोकनायक परमेश्वर के । 99

20. ஈசன் இருக்கும் இருவினைக் கப்புறம்
பீசம் உலகிற் பெருந்தெய்வ மானது
ஈசன் அதுஇது என்பார் நினைப்பிலார்
தூசு பிடித்தவர் தூரறிந் தார்களே. 105

ईशन् इरुक्कुम् इरुविनैक्कप्पुरम्
बीशम् उलगिर् पॅरुम् दॅय्वमानदु
ईशन् अदु इदु एन्बार् निनैप्पिलार्
तूशु पिडित्तवर् तूररिन्दार्गळे । मंत्र-संख्या, 105

दोनों कर्मों से परे ईश्वर की अवस्थिति
विश्व का बीज सर्वशक्तिमान ईश
अज्ञ हैं जो वर्णित करते उसे
भिन्न-भिन्न रूप में
जो हैं विशुद्ध अंतर्-बाह्य
देखते वे सत् को यथावत् । 105

21. பரத்திலே ஒன்றாய்உள் ளாய்ப்புற மாகி
வரத்தினுள் மாயவ னாய்அய னாகித்
தரத்தினுள் தான்பல தன்மைய னாகிக்
கரத்தினுள் நின்று கழிவுசெய் தானே. 111

परत्तिले ऑन्राय् उळ्ळाय् पुऱमागि
वरत्तिनुळ् मायवनाय् अयनागि
तरत्तिनुळ् तान् पल तन्मैयनागि
करत्तिनुळ् निन्ऱु कऴिवु चेय्दाने ।* मंत्र-संख्या, 111

परात्पर है, एकमेव है
भीतर-बाहर सर्वत्र व्याप्त परमेश्वर
सृजन-पालन प्रभृति विविध कर्म में
निज को अज बनाता, विष्णु बनाता,
दर्शाता अन्यान्य रूप में
प्रलय में, तिरोधान में, सर्वेश
मुक्त करता कर्मबंधन से जीवों को । 111

22. விண்ணின் றிழிந்து வினைக்கீடாய் மெய்கொண்டு
தண்ணின்ற தாளைத் தலைக்காவல் முன்வைத்து
உண்ணின் றுருக்கியொ ரொப்பிலா ஆனந்தக்
கண்ணின்று காட்டிக் களிம்பறுத் தானே. 113

विण्णिन्ऱिऴिन्दु विनैक्कीडाय् मेय्कॊण्डु
तण्णिन्ऱ ताळैत् तलैक्कावल् मुन् वैत्तु
उण्णिन्ऱु उरुक्कियो रॊप्पिला आनन्दक्
कण्णिन्ऱु काट्टिक् कळिम्बरुत्ताने । मंत्र-संख्या, 113

ईश ही तो होता है अवतरित
जीवरूप में लेकर काया, कर्म के अनुरूप
सुशीतल रक्षक चरण आगे
अंतर्यामी बन करता है वास
हृदय-कुहर में

ऐसा अनुग्रह करता है
पाषाण पसीजता है प्रेम से
कटते हैं बंधन, हटती है माया
खुलते हैं आंतरिक नेत्र
झरता है अनुपम आनन्द । 113

23. களிம்பறுத் தான்எங்கள் கண்ணுதல் நந்தி
களிம்பறுத் தான்அருட் கண்விழிப் பித்துக்
களிம்பணு காத கதிரொளி காட்டிப்
பளிங்கிற் பவளம் பதித்தான் பதியே. 114

कळिम्बरुत्तान् ऍङ्गळ् कण्णुदल् नन्दि
कळिम्बरुत्तान् अरुट् कण्विळिप्पित्तुक्
कळिम्बणु काद कदिरोळि काट्टिप्
पळिङकिर् पवळम् पनित्तान् पतिये । मंत्र-संख्या, 114

काट डाले सकल मल
भालनेत्र नन्दी ने
खोल दिये आंतरिक नेत्र
शिवगुरु ने अनुग्रह-पूर्वक
दिखा दी ज्योति-किरण
मन-वाणी के लिए अगोचर
ज्योतिर्मय प्रभु ने
और अंकित कर दी
धवल स्फटिक पर
प्रवाल की अरुणिम आभा । 114

24. பதிபசு பாசம் எனப்பகர் மூன்றிற்
பதியினைப் போற்பசு பாசம் அனாதி
பதியினைச் சென்றணு காப்பசு பாசம்
பதியணு கிற்பசு பாசநில் லாவே. 115

पति पशु पाशम् ऍनप्पगर् मून्रिर्
पतियिनैप् पोर् पशु पाशम् अनादि
पतियिनैच् चॅन्रणुगाप् पशु पाशम्
पतियणुकिर् पशु पाशम् निल्लावे । मंत्र-संख्या, 115

पति, पशु, पाश के त्रितय में
पशु और पाश भी
पति के समान पुरातन हैं
हाँ जीव और बंधन
ईश सम चिरंतन
पर पहुँच नहीं पाते
पशु-पाश पति के पास
किंतु पधारता है पति
अनुग्रहपूर्वक
टिक नहीं पाते पशु के पाश । 115

25. வேயின் எழுங்கனல் போலேஇம் மெய்யெனுங்
கோயி லிருந்து குடிகொண்ட கோன்நந்தி
தாயினும் மும்மலம் மாற்றித் தயாஎன்னுந்
தோயம தாய்எழுஞ் சூரிய னாமே. 116

वेयिन् ऍऴ्ुङ्कनल् पोले इम् मॅय्यॅनुम्
कोयिलिरुन्दु कुडि कॉण्ड कोन् नन्दि
तायिनुम् मुम्मलम् माट्रित् तया ऍन्नुम्
तोयमदाय् ऍऴ्ुम् सूरियनामे । मंत्र-संख्या, 116

वंशीवृक्ष के कोमल तने में
समुत्थित वह्नि-सम
काया के सुभग मंदिर में
नित्यवास करता आनन्द-कन्द नन्दी
ममतामयी मां से बढ़कर

बरसाता वात्सल्य
काटता अहंकार कर्म-माया के त्रिलेष
खोलता आन्तरिक नेत्र
दया के सागर में उदित
शिव-सूर्य यही है । 116

26. மலங்களைந் தாமென மாற்றி அருளித்
தலங்களைந் தானற் சதாசிவ மான
புலங்களைந் தானப் பொதுவினுள் நந்தி
நலங்களைந் தானுள் நயந்தான் அறிந்தே. 118

मलङ्गळैन्दामॅन माट्रि अरुळित्
तलङ्गळैन्दानऱ् सदाशिवमान
पुलङ्गळैन्दानप् पॉदुविनुळ् नन्दि
नलङ्गळैन्दानुळ् नयन्दान् अऱिन्दे । मंत्र-संख्या, 118

अपरंपार है असीम कृपा शिवगुरु की
हर लिये जीव के सकल मल
उसका इहलोक बन गया शिवलोक
अंतर्मुखी बन गईं वृत्तियां
पंचेन्द्रिय की
हृद्-देश बन गया चित्सभा
कट गए समस्त द्वंद्व
प्रेम से बस गया शिवगुरु । 118

27. அறிவைம் புலனுட னேநான் றதாகி
நெறியறி யாதுற்ற நீராழம் போல
அறிவறி வுள்ளே அழிந்தது போலக்
குறியறி விப்பான் குருபர னாமே. 119

अऱिवैम्बुलनुडने नान्ऱदागि
नॆऱियऱि यादुट्र नीऱालुम् पोल
अऱिवऱिवुळ्ळे अऴिन्ददुपोलक्
कुऱियऱिविप्पान् गुरुपरनामे । मंत्र-संख्या, 119

बुद्धि चली पांच के संग
थाह न पाकर चकरायी
सद्गुरु ने किया स्पष्ट सूक्ष्मतत्व
चिति के महाचिति में लय का
सादृश्य दिखाकर संकेत से । 119

28. சிவயோக மாவது சித்தசித் தென்று
தவயோகத் துள்புக்குத் தன்னொளி தானாய்
அவயோகஞ் சாரா தவன்பதி போக
நவயோக நந்தி நமக்களித் தானே. 122

शिवयोगमावदु चित्तचित्तॆन्ऱु
तवयोगत्तुळ् पुक्कु तन्नॊळि तानाय्
अवयोगम् चारादवन् पति पोग
नवयोग नन्दि नमक्कळित्ताने । मंत्र-संख्या, 122

शिवयोग सिद्ध होता है
जब चित् अचित् बन जाए
योग की चरम दशा में
आत्मज्योति होती लीन
परमज्योति में, अहंकार, कर्म और माया के
अवयोग से बचकर आनन्दलोक पहुँचने के लिए
नन्दि ने प्रदान किया नवयोग । 122

29. சித்தர் சிவலோகம் இங்கே தெரிசித்தோர்
சத்தமுஞ் சத்த முடிவுந்தம் முள்கொண்டோர்
நித்தர் நிமலர் நிராமயர் நீள்பர
முத்தர்தம் முத்தி முதல்முப்பத் தாறே. 125

सित्तर् शिवलोकम् इङ्गे दॆरिशित्तोर
सत्तमुम् सत्तमुडिवुम् तम्मुळ् कॊण्डोर्
नित्तर् निमलर् निरामयर् नीळ्पर्
मुत्तर् तम् मुत्ति मुदल् मुप्पत्ताऱे । मंत्र-संख्या, 125

सिद्ध वही है जो सिद्ध करले
शिवलोक इसी लोक में
प्राप्त करे नाद को, नादान्त को भी
पहुँचे छत्तीस तत्व के पार
अजर अमर बने, निर्मल निरामय
विराजे नित्य शाश्वत मुक्ति में । 125

30. தூங்கிக்கண் டார்சிவ லோகமும் தம்உள்ளே
தூங்கிக்கண் டார்சிவ யோகமும் தம்உள்ளே
தூங்கிக்கண் டார்சிவ போகமும் தம்உள்ளே
தூங்கிக் கண்டார்நிலை சொல்வதெவ் வாறே. 129

तूङ्गिक्कण्डार् शिवलोकमुम् तम्मुळ्ळे
तूङ्गिक्कण्डार् शिवयोगमुम् तम्मुळ्ळे
तूङ्गिक्कण्डार् शिवबोगमुम् तम्मुळ्ळे
तूङ्गिक्कण्डार् निलै चौल्वदेव्वारे । मंत्र-संख्या, 129

ज्ञाननिद्रा में सुप्त सिद्ध पुरुष
दर्शन करते शिवलोक निज अंतर में;
ज्ञाननिद्रा में लीन वे रहते शिवयुत
रमते हैं शिवयोग में;
प्राप्तकर शिवयोग झूमते वे
शिवानन्द में;
धन्य हैं सिद्ध जो लेते आनन्द
सुषुप्ति में जागृति का ! 129

31. மாணிக்கத் துள்ளே மரகதச் சோதியாய்
மாணிக்கத் துள்ளே மரகத மாடமாய்
ஆணிப்பொன் மன்றினில் ஆடுந்திருக் கூத்தைப்
பேணித் தொழுதென்ன பேறுபெற் றாரே. 131

माणिक्कत्तुळ्ळे मरकत जोतियाय्
माणिक्कत्तुळ्ळे मरकत माडमाय्

आणिप्पॊन्‌ मन्‌ऱिनिल्‌ आडुम्‌ तिरुक्कूत्तै
पेणित्‌ तॊऴुदॆन्न पेरु पॆट्रारे । मंत्र-संख्या, 131

माणिक्य में राजती मरकत आभा हो
या मरकत-वेदी पर माणिक्य-ज्योति हो
यों अद्‌भुत नृत्य हो रहा कनकसभा में
धन्यभाग हैं वे जिन्होंने पाया दिव्य-दर्शन । 131

32. சத்த முதல்ஐந்துந் தன்வழித் தான்சாரில்
சித்துக்குச் சித்தன்றிச் சேர்விடம் வேறுண்டோ
சுத்த வெளியிற் சுடரிற் சுடர்சேரும்
அத்தம் இதுகுறித் தாண்டுகொள் அப்பிலே. 135

सत्तमुदल्‌ ऐन्दुम्‌ तन्‌वऴित्‌ तान्‌ सारिल्‌
चित्तुक्कुच्‌ चित्तन्‌ऱि चेर्‌विडम्‌ वेरुण्डो
सुत्त वॆळियिऱ्‌ चुडऱ्‌िर चुडर्‌ चेरुम्‌
अत्तम्‌ इदुकुऱित्ताण्डुकॊळ्‌ अप्पिले । मंत्र-संख्या, 135

शब्दादि पंचेन्द्रिय एवं छत्तीस तत्व
लीन हो जाएँ तन्मात्राओं सहित स्वयं में
चिति का होगा विलय महाचिति में स्वतः
सुन्नमंडल में होगा मिलन
ज्योति का ज्योति से शिव-महानुग्रह से
समझ लो इसके अर्थ को स्पष्ट ही ! 135

33. தெளிவு குருவின் திருமேனி காண்டல்
தெளிவு குருவின் திருநாமஞ் செப்பல்
தெளிவு குருவின் திருவார்த்தை கேட்டல்
தெளிவு குருவுரு சிந்தித்தல் தானே. 139

तॆळिवु गुरुविन्‌ तिरुमेनि काण्डल्‌
तॆळिवु गुरुविन्‌ तिरुनामम्‌ चॆप्पल्‌
तॆळिवु गुरुविन्‌ तिरुवार्‌त्तै केट्टल्‌
तॆळिवु गुरुवुरु चिन्तित्तल्‌ ताने । मंत्र-संख्या, 139

उत्तम है गुरुमूर्ति का दिव्य दर्शन
उत्तम है गुरु का दिव्य नामोच्चार
उत्तम है गुरु की अमृतवाणी का श्रवण
उत्तम है गुरु के दिव्य रूप का चिंतन । 139

34. தானே புலன்ஐந்துந் தன்வச மாயிடும்
தானே புலன்ஐந்துந் தன்வசம் போயிடும்
தானே புலன்ஐந்துந் தன்னில் மடைமாறும்
தானே தனித்தெம் பிரான்தனைச் சந்தித்தே. 140

ताने पुलन् ऐन्दुम् तन्वशमायिडुम्
ताने पुलन् ऐन्दुम् तन्वशम् पोयिडुम्
ताने पुलन् ऐन्दुम् तन्निल मडैमारुम्
ताने तनित्तेम् पिरानैच् चन्दित्ते । मंत्र-संख्या, 140

वशीभूत हो जाती हैं पांचों इन्द्रिय
स्वस्थान में जा समाएँ पांचों इन्द्रिय
ध्रुव ही अंतर्मुखी हो जातीं पांचों इन्द्रिय
जब मिलन हो जीवात्मा का परमात्म से । 140

35. ஊரெலாங் கூடி ஒலிக்க அழுதிட்டுப்
பேரினை நீக்கிப் பிணமென்று பேரிட்டுச்
சூரையங் காட்டிடைக் கொண்டுபோய்ச் சுட்டிட்டு
நீரினில் மூழ்கி நினைப்பொழிந் தார்களே. 145

ऊरेलाम् कूडि ऑलिक्क अऴु दिट्टु
पेरिनै नीक्कि पिणमॅन्रु पेरिट्टु
चूरैयङ् काट्टिडैक् कॉण्डुपोय् चुट्टिट्टु
नीरिनिल् मूऴ्गि निनैप्पॉऴिन्दार्गळे । मंत्र-संख्या, 145

उच्च स्वर में रोया चिल्लाया
सारा गाँव मिलके
उसका अच्छा-भला नाम हटाया

बुलाया 'शव' कहके
उठाकर ले गये श्मशान-घाट
जलाया सबने मिलके
फिर भुला दी उसकी याद तक
जल में डुबकी लगाकर । 145

36. பந்தல் பிரிந்தது பண்டாரங் கட்டற்ற
ஒன்பது வாசலும் ஒக்க அடைத்தன
துன்புறு காலந் துரிசுவர மேன்மேல்
அன்புடை யார்கள் அழுதகன் றார்களே. 152

पन्दल् पिरिन्दु पण्डारम् कट्टट्र
ओन्पदु वासलुम् ओक्क अडैन्दन
तुन्पुरु कालम् तुरिशुवर मेन्मेल्
अन्बुडैयार्गळ् अऴुदगन्ड्रार्गळे । मंत्र-संख्या, 152

ढह गया देह-मंडप,
बन्धन टूट गया मंडप से
मठाधीश जीव का, बन्द हुए नवद्वार एक साथ
आ गया दुःखपूर्ण अंतकाल
प्रेमपूर्ण बंधु-बांधव रोये, कलपे
और फिर हो गए विलग । 152

37. முட்டை பிறந்தது முந்நூறு நாளினில்
இட்டது தானிலை ஏதேனும் ஏழைகாள்
பட்டது பார்மணம் பன்னிரண் டாண்டினிற்
கெட்ட தெழுபதிற் கேடறி யீரே. 163

मुट्टै पिऱन्दु मुन्नूरु नाळिनिल्
इट्टदु तानिलै एदेनुम् एऴैकाळ्
पट्टदु पार्मणम् पन्निरण्डाण्डिनिल्
केट्टदेऴुपदिऱ् केड्डऱियीरे । मंत्र-संख्या, 163

सूक्ष्म सा कोई अण्ड
रहा गर्भ में तीन सौ दिवस
निर्गत हुआ, विशेषण-विहीन,
हे, दृढ़तारहित मूढ़, सुनो कहानी
बारह वर्ष का होते-होते
सूंघ ली उसने जीवन की गंध
सत्तर वर्ष का होते-होते
मिल गया वह माटी में ! 163

38. காக்கை கவரிலென் கண்டார் பழிக்கிலென்
பாற்றுளி பெய்யிலென் பல்லோர் பழிச்சிலென்
தோற்பையுள் நின்று தொழிலறச் செய்தூட்டுங்
கூத்தன் புறப்பட்டுப் போனஇக் கூட்டையே. 167

काक्कै कवरिलॆऩ् कण्डार् पऴिक्किलॆऩ्
पाट्टरुळि पॆय्यिलॆऩ् पल्लोर पऴिच्चिलॆऩ्
तोऱ् पैयुळ् निन्ऱु तॊऴिलऱच् चॆय्दूट्टुम्
कूत्तऩ् पुऱप्पट्टुप् पोन इक्कूट्टैये । मंत्र-संख्या, 167

पूर्ण होने पर निज करणीय कर्म
निकल जाता है आत्मतत्व
तजकर काया का चर्म-खोल
पंछी के उड़ जाने पर
चर्म के इस थैले को
कोई अंतर नहीं पड़ता ;
चाहे दुग्ध-स्नान करा कर
संस्कार करें सम्मान से,
चाहे अपशब्द बोलें, निन्दा करें
या फिर फेंक दें किसी विजन में
चील-कौओं का भोजन बनने को । 167

39. ஈட்டிய தேன்பூ மணங்கண் டிரதமும்
கூட்டிக் கொணர்ந்தொரு கொம்பிடை வைத்திடும்
ஓட்டித் துரந்திட் டதுவலி யார்கொளக்
காட்டிக் கொடுத்தது கைவிட்ட வாறே. 171

ईट्टिय तेन् पूमणङ्कण्डिरदमुम्
कूट्टिक् कोणर्न्दोरु कोम्बिडै वैत्तिडुम्
ओट्टित् तुरन्दिट्टदु वलियार् कोळक्
काट्टिक् कोडुत्तदु कैविट्टवाऱे । मंत्र-संख्या, 171

मधुमक्खी प्रयत्न से, परिश्रम से
फूल-फूल उड़ती जाती सूंघते हुए
बटोर लाती है सुमधुर मधु
रखती है सुरक्षा से निज छत्ते में
पर एक दिन अचानक बाहुबली कोई चोर
लूट ले जाता उसका सर्वस्व
यह गाथा है असहाय जीव की
तजकर धन-वैभव चला जाता काल-संग । 171

40. தேற்றத் தெளிமின் தெளிந்தீர் கலங்கன்மின்
ஆற்றுப் பெருக்கிற் கலக்கி மலக்காதே
மாற்றிக் களைவீர் மறுத்துங்கள் செல்வத்தைக்
கூற்றன் வருங்கால் குதிக்கலு மாமே. 172

तेट्रत्तॆळिमिन् तॆळिन्दीर् कलङ्गन्मिन्
आट्रुप पॆरुक्किर् कलक्कि मलक्कादे
माट्रिक् कळैवीर् मरुत्तुङ्गळ् चॆल्वत्तैक्
कूट्रन वरुङ्गाल् कुदिक्कलुमामे । मंत्र-संख्या, 172

जान लो नश्वर है धन-वैभव
समझ यह आने पर तजो मन का चांचल्य
धन-वैभव का ज्वार तुम्हें कर सकता मुग्ध
न हो विचलित ।

नश्वर जग का वैभव नश्वर
करो इससे आसक्ति निःशेष
जब आए काल रहो प्रस्तुत
निःसंग भाव से लम्बी कूद के लिए । 172

41. பாலன் இளையன் விருத்தன் எனநின்ற
காலங் கழிவன கண்டும் அறிகிலார்
ஞாலங் கடந்தண்டம் ஊடறுத் தானடி
மேலுங் கிடந்து விரும்புவன் யானே. 181

बालऩ् इळैयऩ् विरुत्तऩ् ऍन निऩ्ऱ
कालम् कऴिवन कण्डुम् अऱिगिलार्
ञालम् कडन्दण्डम् उडरुत्तानडि
मेलुम् किडन्दु विरुम्बुवऩ् नाने । मंत्र-संख्या, 181

बालकपन, यौवन, बुढ़ापा
यों इन दशाओं का बीतना
देखकर भी नहीं समझ पाते
कि होना है सत्कर्म में प्रवृत्त,
मेरी है कामना सदा पड़ा रहूँ
ईशचरण पर, जो विश्व को
अण्ड-बहिरण्ड को पारकर
व्याप्त है यत्र-तत्र-सर्वत्र । 181

42. எய்திய நாளில் இளமை கழியாமை
எய்திய நாளில் இசையினால் ஏத்துமின்
எய்திய நாளில் எறிய தறியாமல்
எய்திய நாளில் இருந்துகண் டேனே. 186

ऍयदिय नाळिल् इळमै कऴ़ियामै
ऍय्ऩ्दिय नाळिल् इशैयिनाल् एत्तुमिऩ्
ऍय्ऩ्दिय नाळिल् ऍरियदरियामल्
ऍय्ऩ्दिय नाळल् इरुन्दु कण्डेने । मंत्र-संख्या, 186

निर्दिष्ट निज जीवन में
यौवन और शक्ति के रहते
प्रभुलीला-गान में लगाओ मन
मर्म को न जानकर करते हैं व्यर्थ,
नपे तुले जीवन को अगणित जन
देख रहा दर्शकसम मैं
निर्णीत निज जीवन में । 186

43. ஐவர்க் கொரு செய் விளைந்து கிடந்தது
ஐவரும் அச்செய்யைக் காத்து வருவார்கள்
ஐவர்க்கு நாயகன் ஓலை வருதலால்
ஐவரும் அச்செய்யைக் காவல்விட் டாரே. 188

ऐवर्क् कोरुचॅय् विळैन्दु किडन्ददु
ऐवरुम् अच्चॅय्यै कात्तु वरुवार्गळ्
ऐवर्क्कु नायकन् ओलै वरुदलाल्
ऐवरुम् अच्चॅय्यै कावल् विट्टारे । मंत्र-संख्या, 188

पाया पंच जनों ने
पका-पकाया प्राण-खेत
पांचों ही जुटे रहे
सुरक्षा में, रखवाली में
समय हुआ पूर्ण, हुई नाथ-आज्ञा
बुलावा आया काल का
भाग निकले पांचो जन
छोड़कर स्वकर्म, सदा के लिए । 188

44. பற்றாய நற்குரு பூசைக்கும் பன்மலர்
மற்றோர்அணுக்களைக் கொல்லாமை ஒண்மலர்
நற்றார் நடுக்கற்ற தீபமுஞ் சித்தமும்
உற்றாரும் ஆவி அமர்ந்திடம் உச்சியே. 197

पट्राय नरगुरु पूशैक्कुम् पन्मलर्
मट्रोर् अणुक्कळैक् कॊल्लामै ऒणमलर्
नट्रार नडुक्कट्र दीपमुम् चित्तमुम
उट्रारुम् आवि अमर्न्दिडम् उच्चिये । मंत्र-संख्या, 197

कितने ही सुमन हैं उपलब्ध
ज्ञानगुरु के पूजन हेतु
सुन्दर, सुवासित सुमन;
सबसे वरेण्य सुमन है
हिंसा न करना किसी जीव की;
निश्चल चित्त ही निश्चल दीप
पूजा योग्य स्थान है हृदयदेव
जहाँ निवसित हैं परमेश्वर । 197

45. கொலையே களவுகட் காமம் பொய்கூறல்
மலைவான பாதக மாம்அவை நீக்கித்
தலையாஞ் சிவனடி சார்ந்தின்பஞ் சார்ந்தோர்க்
கிலையாம் இவைஞானா னந்தத் திருத்தலே. 200

कॊलैये कळवुकट् कामम् पॊय्कूरल्
मलैवान पातकमाम् अवैनीक्कि
तलैयाम् शिवनडि चार्न्दिन्पन् चार्न्दोर्क्-
किलैयाम् इवै ज्ञानानन्दत्तिरुत्तले । मंत्र-संख्या, 200

त्याज्य हैं पंचमहापातक –
जीवहत्या, चौर्य, मद्यपान
कामवासना और अनृतवचन –
इनसे परे रहेंगे, पाएँगे शाश्वत आनन्द
दत्तचित्त हैं जो
प्रभु के चरणकमल पर । 200

46. திருத்தி வளர்த்ததோர் தேமாங் கனியை
அருத்தமென் றெண்ணி அறையிற் புதைத்துப்
பொருத்தமி லாத புளிமாங் கொம்பேறிக்
கருத்தறி யாதவர் காலற்ற வாறே. 202

तिरुत्ति वळर्त्तदोर् तेमाङ्गनियै
अरुत्तमॅन्ऱॅण्णि अऱैयिऱ् पुदैत्तु
पॉरुत्तमिलाद पुळिमाङ्कॉम्बेऱि
करुत्तऱियादवर् कालट्रवाऱे । मंत्र-संख्या, 202

प्रेम से संवर्धित गार्हस्थ्य
सुमधुर पक्व आम्रफल है,
मूढ़मति हैं जो इसे कच्चा मान
गाड़ देते हैं भूमि में और
टेढ़ी-मेढ़ी 'इमली' परनारी को
समझकर रस-गागर
चढ़ते हैं गांठदार डालों पर
तुड़वाने को निज अंग । 202

47. பொருள்கொண்ட கண்டனும் போதகை யாளும்
இருள்கொண்ட மின்வெளி கொண்டுநின் றோரும்
மருள்கொண்ட மாதர் மயலுறு வார்கள்
மருள்கொண்ட சிந்தையை மாற்றகில் லாரே. 203

पॉरुळ् कॉण्ड कण्डनुम् पोदगैयाळुम्
इरुळ् कॉण्ड मिन्वॅळि कॉण्डुनिन्ऱोरुम्
मरुळ् कोण्डु मादर् मयलुरुवार्गळ्
मरुळ् कॉंड चिन्तैयै माट्रकिल्लारे । मंत्र-संख्या, 203

मदहोश हैं ये वैभव-विलास में
आच्छादित है मन घन-तिमिर से
पार नहीं जाती ज्ञान की किरण,
डूब कर अज्ञान में

लिप्त रहते हैं रमणी के मोह में, काम-वासना में,
असंभव है बदल पाना
पथ-भ्रष्ट इनके चिंतन को । 203

48. புடைவை கிழிந்தது போயிற்று வாழ்க்கை
அடையப்பட் டார்களும் அன்பில ரானார்
கொடையில்லை கோளில்லை கொண்டாட்ட மில்லை
நடையில்லை நாட்டில் இயங்குகின் றார்கட்கே. 209

पुडैवै किऴिन्ददु पोयिट्रु वाऴ्क्कै
अडैयप् पट्टार्गलुम् अन्बिलरानार्
कॊडैयिल्लै कोळिल्लै कॊण्डाट्टम् इल्लै
नडैयिल्लै नाट्टिल् इयंगुकिन्ऱाकट्के । मंत्र-संख्या, 209

जर्जर हो गया जीवन
जीर्ण वस्त्र-सम
प्रीत बरसाते प्रियजन
हो गए प्रीत-रहित
न कोई लेन-देन
न कोई राग-रंग
न वह गर्वित मदमाती चाल
बस चल रही है श्वास
इसलिए जिए चले जा रहे हैं । 209

49. கற்குழி தூரக் கனகமுந் தேடுவர்
அக்குழி தூர்க்கை யாவர்க்கும் அரியது
அக்குழி தூர்க்கும் அறிவை அறிந்தபின்
அக்குழி தூரும் அழுக்கற்ற வாறே. 211

कऱ्कुऴि तूरक् कनकमुम् तेडुवर्
अक्कुऴि तूरक्कै यावर्कुम् अरियदु
अक्कुऴि तूरक्कुम् अऱिवै अऱिन्दपिन्
अक्कुऴि तूरुम् अऴुक्कट्रवाऱे । मंत्र-संख्या, 211

यह पेट तो है एक गहरा गड्ढा
जो बटोरते हैं स्वर्ण इसे पाटने को
जानते नहीं कि नहीं पटा, नही भरा
किसी से भी किसी भी भाँति;
गड्ढा पाटने की सत्यज्ञान विधि
जान लेने पर हटेगा कर्म-कल्मष
तब पट जाता है गड्ढा स्वयमेव । 211

50. ஒண்சுட ரானை உலப்பிலி நாதனை
ஒண்சுட ராகிஎன் னுள்ளத் திருக்கின்ற
கண்சுட ரோன்உல கேழுங் கடந்தஅத்
தண்சுட ரோமத் தலைவனு மாமே. 221

ओंणचुडरानै उलप्पिलि नादनै
ओंणचुडरागि ऍन्नुळ्ळत्तिरुक्किन्ऱ
कण्चुडरोन् उलगेळुम् कडन्द अत्-
तण् चुडरोमत्तलैवनुमामे । मंत्र-संख्या, 221

विशुद्ध ज्ञान की दीपशिखा सरिस हैं
अनुपम अद्वितीय शिवनाथ;
ज्योतिरूप विराजे हैं मेरे हृदय में
भासमान उनके त्रिनेत्र
ज्योतित करते हैं ज्योतिपिण्डों को,
सकल भुवनों में व्याप्त
उनके परे अवस्थित हैं, प्रभु
शीतल ज्योति हैं यज्ञ के नायक । 221

51. அந்தண ராவோர் அறுதொழில் பூண்டுளோர்
செந்தழல் ஓம்பிமுப் போதும் நியமஞ்செய்
தந்தவ நற்கரு மத்துநின் றாங்கிட்டுச்
சந்தியும் ஓதிச் சடங்கறுப் போர்களே. 224

अन्तणरावोर् अरुतॊऴिल् पूण्डुकोर्
चॆन्तळल् ओम्बि मुप्पोदुम् नियमम् चॆय्
तन्दव नऱ्करुमत्तु निन्ऱाङ्गिट्टु
संदियुम् ओदिच् चडङ्गरुप्पोर्गळे । मंत्र-संख्या, *224*

द्विज का अभिलक्षण जानिए
निभाएँ जो निज षट्कर्म
संधान करे अग्नि का, करें यजन
तीनों बार करें आराधन
स्थिर रहें तप में निज चर्या में
करें संध्या, वंदन सकल अनुष्ठान । *224*

52. காயத் திரியே கருதுசா வித்திரி
ஆய்தற் குவப்பர் மந்திரமாங் குன்னி
நேயத் தேரேறி நினைவுற்று நேயத்தாய்
மாயத்துள் தோயா மறையோர்கள் தாமே. *226.*

गायत्तिरिये करुदु सावित्तिरि
आय्दर्कुवप्पर् मन्तिरमाङ्गुन्नि
नेयत्तेरेऱि निनैवुट्रु नेयत्ताय्
मायत्तुळ् तोया मऱैयोर्गळ् तामे । मंत्र-संख्या, *226*

अमोघ है गायत्री-मंत्र – सावित्री की विद्या,
जिसकी उपासना से सुलझती मति
फिर होते महामंत्र के ध्यान में एकाग्र
आरूढ़ हो प्रेम-रथ पर हो जाते प्रेममय,
मायामुक्त वही हैं सच्चे वेदज्ञ । *226*

53. வேதாந்தங் கேட்க விரும்பிய வேதியர்
வேதாந்தங் கேட்டுந்தம் வேட்கை ஒழிந்திலர்
வேதாந்த மாவது வேட்கை ஒழிந்திடம்
வோதாந்தங் கேட்டவர் வேட்கைவிட் டாரே. *229*

वेदान्तम् केट्टक विरुम्बिय वेदियर्
वेदान्तम् केट्टुम् तम् वेट्कै ऑऴिन्दिलर्
वेदान्तमावदु वेट्कै ऑऴिन्दिडम्
वेदान्तम् केट्टवर् वेट्कै विट्टारे । मंत्र-संख्या, 229

वैदिक ने किया वेदान्त-श्रवण
सुन लिया वेदान्त आद्योपांत
चित्त से तब भी हुआ न
आसक्ति का अंत,
वेदान्त है पर्याय अनासक्ति का
वेदान्त-श्रवण का प्रथम नियम
आसक्ति का परित्याग । 229

54. கல்லா அரசனுங் காலனும் நேரொப்பர்
கல்லா அரசனிற் காலன் மிகநல்லன்
கல்லா அரசன் அறம்ஓரான் கொல்லென்பான்
நல்லாரைக் காலன் நணுகநில் லானே. 238

कल्ला अरशनुम् कालनुम् नेरोप्पर्
कल्ला अरशनिर् कालन् मिग नल्लन्
कल्ला अरशन् अऱम् ओरान् कॉल्लॅन्बान्
नल्लारैक् कालन् नणुगनिल्लाने । मंत्र-संख्या, 238

क्रूरता में समान हैं, मूर्ख नृपति और यमराज
किन्तु अन्यायी राजा से, कहीं श्रेष्ठ है यमराज
नहीं होता न्याय-विचार, सुनाता मृत्युदण्ड अधर्मराज
पास न फटकता सच्चे ज्ञानियों के,
काल है ध्रुव ही धर्मराज । 238

55. ஆர்க்கும் இடுமின் அவரிவர் என்னன்மின்
பார்த்திருந் துண்மின் பழம்பொருள் போற்றன்மின்
வேட்கை யுடையீர் விரைந்தொல்லை உண்ணன்மின்
காக்கை கரைந்துண்ணுங் காலம் அறிமினே. 250

आर्कुम् इडुमिन् अवरिवर् ऍन्नन्मिन्
पार्त्तिरुन्दु उण्मिन् पऴम् पॉरुळ् पोट्रन्मिन्
वेट्कैयुडैयीर् विरैन्दॉल्लै उण्णन्मिन्
काक्कै करैन्दुण्णुम् कालम् अरिमिने । मंत्र-संख्या, 250

सर्वोत्तम दान का यही अमिलक्षण
करें दान मुक्तहस्त, बिना भेदभाव
करें प्रतीक्षा अतिथि-अभ्यागत की,
करें भोजन उनके संग
कभी न खिलाएँ बासी भात
भले ही बुभुक्षित हों खाएँ धीमे-धीमे
काग भी देखो खाते भोजन
बुलाकर बंधु-बांधवों को, उनके संग । 250

56. தாமறி வாரண்ணல் தாள்பணி வாரவர்
தாமறி வாரறந் தாங்கிநின் றாரவர்
தாமறி வார்சிவ தத்துவ ராவர்கள்
தாமறி வார்க்குத் தமர்பர னாமே. 251

तामरिवारण्णल् ताळ्पणिवार अवर्
तामरिवाररन् ताङ्गि निन्रारवर्
तामरिवार शिव तत्तुवरावर्गळ्
तामरिवार्कुत् तमर् परनामे । मंत्र-संख्या, 251

आत्मबोध पाता वही जो शीश नवाता ईश-चरण पर
आत्मबोध पाता वही जो अटल रहे धर्म-पथ पर
आत्मज्ञान हो सिद्ध तो ज्ञाता बने शिवतत्व का
आत्मज्ञानी का निकटबंधु है स्वयं सदाशिव परमेश्वर । 251

57. யாவர்க்கு மாம்இறை வற்கொரு பச்சிலை
யாவர்க்கு மாம்பசு வுக்கொரு வாயுறை
யாவர்க்கு மாம்உண்ணும்போதொரு கைப்பிடி
யாவர்க்கு மாம்பிறர்க் கின்னுரை தானே. 252

यावर्कुमाम् इऱैवर्कोरु पच्चिलै
यावर्कुमाम् पशुवुक्कोरु वायुऱै
यावर्कुमाम् उण्णुम् पोदोरु कैप्पिडि
यावर्कुमाम् पिऱर्किन्नुरै ताने । मंत्र-संख्या, 252

सबके लिए सम्भव है
चढ़ाना एक बिल्व ईश को,
सबके लिए सम्भव है
खिलाना मुँहभर घास गाय को,
सबके लिए सम्भव है भोजन-पूर्व
मुट्ठी भर अन्न का दान,
सबके लिए सम्भव है
दूसरों के प्रति मधुर सम्भाषण । 252

58. தன்னை அறியாது தானல என்னாதிங்
கின்மை யறியா திளையரென் றோராது
வன்மையில் வந்திடுங் கூற்றம் வருமுன்னந்
தன்மையின் நல்ல தவஞ்செய்யும் நீரே. 255

तन्नै अऱियादु तानल एन्नादिङ्
किन्मै यऱिया दिळैयरॆन्ऱोरादु
वन्मैयिल् वन्दिडुम् कूट्रम् वरुमुन्नन्
तन्मैयिन् नल्ल तवम् चॆय्युम् नीरे । मंत्र-संख्या, 255

समय पूरा होते ही आ धमकेगा काल,
अटल सत्य यह; काल किसका मीत
उसे किसकी चिन्ता ? विपन्न है
अथवा युवा, वह ले जाएगा बलात्
अतः पूर्व इसके कि आगमन हो काल का,
कर लो दान, सत्कर्म । 255

59. திளைக்கும் வினைக்கடல் தீர்வுறு தோணி
இளைப்பினை நீக்கும் இருவழி உண்டு
கிளைக்குந் தனக்கும்அக் கேடில் புகழோன்
விளைக்குந் தவம்அறம் மேற்றுணை யாமே. 258

तिळैक्कुम् विनैक्कडल तीर्वुरु तोणि
इलैप्पिनै नीक्कुम् इरुवऴि उण्डु
किळैक्कुम् तनक्कुम् अक्केडिल् पुगऴोन्
विळैक्कुम् तवम् अरम् मेट्रुणैयामे । मंत्र-संख्या, 258

फेनिल कर्म-सागर आलोड़ित
धीर साधक वृथा जीवन-संघर्ष में रहा स्थिर,
जीवन बन गया तपोमय
मिल गई ईशचरण की नौका
पुण्यशील साधक तर गया स्वयं
कुल भी पार हो गया साथ ही । 258

60. ஒழிந்தன காலங்கள் ஊழியும் போயின
கழிந்தன கற்பனை நாளுங் குறுகிப்
பிழிந்தன போலத்தம் பேரிடர் ஆக்கை
அழிந்தன கண்டும் அறம்அறி யாரே. 261

ऑऴिन्दन कालङ्गळ् ऊळियुम् पोयिन्
कळिन्दन कर्पनै नाळुम् कुरगिप्
पिऴिन्दन पोलत्तम् पेरिडर् आक्कै
अऴिन्दन कण्डुम् अरम अरियारे । मंत्र-संख्या, 261

पल-पल करके बीत गया समय, युग
जीवन के नपे-तुले दिन होते गए कम क्रमशः
अन्त समय भी आ गया सन्निकट
सूखते सूखते बन गया शरीर
रस-विहीन इक्षुखंड सा, और

मिल गया माटी में
यह सब देख कर भी
आश्चर्य है दान-धर्म का मार्ग न सूझा । 261

61. என்பே விறகா இறைச்சி அறுத்திட்டுப்
பொன்போற் கனலிற் பொரிய வறுப்பினும்
அன்போ டுருகி அகங்குழை வார்க்கன்றி
என்போல் மணியினை எய்தவொண் ணாதே. 272

ऍन्बे विऱगा इऱैच्चि अऱुत्तिट्टु
पॉनपोऱ् कनलिल् पॉरिय वरुप्पिनुम्
अन्बोडुरुगि अगम् कुळैवार्कन्ऱि
ऍन् पोल् मणियिनै ऍय्दवॉण्णादे । मंत्र-संख्या, 272

अस्थियों की बनाकर समिधा
मज्जा को बनाएँ हविष्य
यज्ञवेदी पर होमाग्नि में
कनकरंग में भूनें तब भी
प्रकट न होगा परमेश्वर;
वह महामणि तो करगत होगा उनको
नेह की आंच में पिघल जाएँ
प्रेम-विगलित हृदय से । 272

62. என்னன் புருக்கி இறைவனை ஏத்துமின்
முன்னன் புருக்கி முதல்வனை நாடுமின்
பின்னன் புருக்கிப் பெருந்தகை நந்தியுந்
தன்னன் பெனக்கே தலைநின்ற வாறே. 274

ऍन्नन्बुरुक्कि इऱैवनै एत्तुमिन्
मुन्नन्बुरुक्कि मुदल्वनै नाडुमिन्
पिन्नन्बुरुक्कि पॅरुन्दगै नन्दियुम्
तन्नन्बेनक्के तलै निन्ऱवारे । मंत्र-संख्या, 274

अन्य सभी उपाय हैं निरर्थक
पाना चाहते ईश को तो
नमन करो उस अद्वितीय को
प्रेम-विगलित हृदय से,
शरण में जाओ परमेश्वर की
अनन्य भक्ति से, श्रद्धा से
तब जाकर नन्दिदेव की होगी कृपा
स्वयं आएँगे तुम्हारी ओर
प्रदान करने को अनुग्रह । 274

63. அன்பினுள் ளான்புறத் தானுட லாயுளான்
முன்பினுள் ளான்முனி வர்க்கும் பிரானவன்
அன்பினுள் ளாகி அமரும் அரும்பொருள்
அன்பினுள் ளார்க்கே அணைதுணை யாமே. 279

अन्बिनुळ्ळान् पुऱत्तानुडलायुळ्ळान्
मुन्बिनुळ्ळान् मुनिवर्कुम् पिरानवन्
अन्बिनुळ्ळागि अमरुम् अरुम् पॉरुळ्
अन्बिनुळ्ळार्के अणैतुणैयामे । मंत्र-संख्या, 279

प्रेमस्वरूप परमेश्वर प्रेम में निवसित है
वह भीतर भी है बाहर भी; प्रेमाधार शरीर भी,
ऋषि-मुनियों का उपास्य सनातन चिरंतन
महार्हमणि वह केवल प्रेम से तुलता है
प्रेमस्वरूप वह प्रेम से ही है प्राप्य
जो करें उससे प्रेम उनका है वह आश्रय । 279

64. முன்பு பிறப்பும் இறப்பும் அறியாதார்
அன்பில் இறைவனை யாம்அறி வோம்என்பர்
இன்பப் பிறப்பும் இறப்பும் இலான்நந்தி
அன்பிலவனை அறியகி லாரே. 287

मुन्बु पिऱप्पुम् इरप्पुम् अऱियादार
अन्बिल् इरैवनै याम् अऱिवोम ऍन्बर्
इन्बप् पिऱप्पुम् इरप्पुम् इलान् नन्दि
अन्बिल् अवनै अऱियकिलारे । मंत्र-संख्या, 287

नहीं जानते मर्म जन्म-मरण का
घटित हो रहा सामने नित्य ही,
करते हैं दावा वृथा ही
जानने का परमेश्वर को
वह जन्म-मरण से है परे
प्रेम-भक्ति बिन प्राप्य नहीं । 287

65. கற்றறி வாளர் கருதிய காலத்துக்
கற்றறி வாளர் கருத்திலோர் கண்ணுண்டு
கற்றறி வாளர் கருதி உரைசெய்யுங்
கற்றறி காட்டக் கயலுள வாக்குமே. 291

कट्रऱिवाळर् करुदिय कालत्तु
कट्रऱिवाळर् करुत्तिलोर् कण्णुण्डु
कट्रऱिवाळर् करुदि उरै शॅय्युम्
कट्रऱि काट्टक् कयलुळवाक्कुमे । मंत्र-संख्या, 291

ज्ञानी होते जब अन्तर्मुखी
ध्यान में, समाधि में
खुल जाता उनका अंतःचक्षु
ज्ञानी जब व्याख्या करते
आत्म-अनुभव और ज्ञान की
खुल जाता अंतःचक्षु अन्य का भी । 291

66. நூலொன்று பற்றி நுனியேற மாட்டாதார்
பாலொன்று பற்றினாற் பண்பின் பயன்கெடுங்
கோலொன்று பற்றினாற் கூடா பறவைகள்
மாலொன்று பற்றி மயங்குகின் றார்களே. 295

नूलॉन्रु पट्रि नुनियेऱ् माट्टादार्
पालॉन्रु पट्रिनार् पण्बिन् पयन्केडुम्
कोलॉन्रु पट्रिनार् कूडा पऱवैगळ्
मालॉन्रु पट्रि मयङ्गुकिन्ऱार्गळे । मंत्र-संख्या, 295

ग्रंथ के माध्यम से कोई नहीं पहुँचा ब्रह्मरन्ध्र तक
लौकिक आसक्ति कर देती सभी प्रयास विफल
स्थिरता से जो लेता वैराग्य-आश्रय
उड़ जाते हैं निश्चय इच्छा रूपी पंछी
किन्तु हाय, चकित-भ्रमित हैं पड़कर प्रपंच-प्रेम में । 295

67. தேவர் பிரான்தனைத் திவ்விய மூர்த்தியை
யாவர் ஒருவர் அறிவார் அறிந்தபின்
ஓதுமின் கேள்மின் உணர்மின் உணர்ந்தபின்
ஓதி உணர்ந்தவர் ஓங்கி நின்றாரே. 301

देवर् पिरानतनैत् तिव्विय मूर्त्तियै
यावर् ऑरुवर् अऱिवार् अरिन्दपिन्
ओदुमिन् केळ्मिन् उणर्मिन् उणर्न्दपिन्
ओदि उणर्न्दवर् ओङ्गि निन्ऱारे । मंत्र-संख्या, 301

देवाधिदेव को, दिव्यमूर्ति को
जान सकता है कौन ?
जान लिया यदि किसी भाँति तो
गाओ स्तुतिगीत
श्रवण-मनन से निदिध्यासन से
अनुभव करो निज अंतस् में परब्रह्म को
अनुभवगम्य करले वही श्रेष्ठ पुरुष है । 301

68. சிறியார் மணற்சோற்றில் தேக்கிடு மாபோல்
செறிவால் அனுபோகஞ் சித்திக்கும் என்னில்
குறியாத தொன்றைக் குறியாதார் தம்மை
அறியா திருந்தார் அவராவர் அன்றே. 306

चिऱियार् मणऱ्चोट्रिल् तेक्किडु मापोल्
चॅऱिवाल् अनुबोगम् सित्तिक्कुम् ऍन्निल्
कुऱियाददॉन्ऱैक् कुऱियादार् तम्मै
अऱियादिरुन्दार् अवरावर् अन्ऱे । मंत्र-संख्या, 306

जो मानकर चलते हैं
पंचेन्द्रिय के माध्यम से सिद्ध हो सकता
शिवानुभव
वे अबोध बालक समान हैं
जो रेत के घरौंदे बनाकर खेलते हैं
घर-गृहस्थी का खेल
क्रीड़ा को सच मानते
दंभ भरते जो अलक्ष्य को लक्ष्य करने का
वे नहीं जानते स्वयं को, जानें कैसे ईश को ? 306

69. விண்ணினின் உள்ளே விளைந்த விளங்கனி
கண்ணினின் உள்ளே கலந்தங் கிருந்தது
மண்ணினின் உள்ளே மதித்து மதித்துநின்
றெண்ணி எழுதி இளைத்துவிட் டாரே. 315

विण्णिनिन् उळ्ळे विळैन्द विळङ्गनि
कण्णिनिन् उळ्ळे कलन्दङ्किरुन्ददु
मण्णिनिन् उळ्ळे मदित्तु मदित्तुनिन्ऱु
एण्णि ऍऴुदि इळैत्तु विट्टारे । मंत्र-संख्या, 315

आकाश में भासित ज्ञान-ज्योति
अथवा सुरलोक में फला वह शिवफल
स्फुरित होता है वही साधक के हृदय में,
इस तत्व से अनभिज्ञ जन
करते लौकिक फलों का अध्ययन-विश्लेषण
उलझते परस्पर विरोधी सिद्धान्तों में
मनन करते पढ़ते-लिखते थककर हारते । 315

70. கற்றுஞ் சிவஞானம் இல்லாக் கலதிகள்
சுற்றமும் வீடார் துரிசறார் மூடர்கள்
மற்றும் பலதிசை காணார் மதியிலோர்
கற்றன்பில் நிற்போர் கணக்கறிந் தார்களே. 318

कट्रुम् शिवज्ञानम् इल्लाक् कलदिगळ् ·
चुट्रमुम् वीडार तुरिशऱार मूडर्गळ्
मट्रुम् पलदिशै काणार् मदियिलोर्
कट्रन्नबिल् निर्पोर् कणक्करिन्दार्गळे । मंत्र-संख्या, 318

सैंकड़ों ग्रन्थों का किया पारायण
सच्चा शिवज्ञान न पाया
सच में ये पढ़ेलिखे मूर्ख हैं
निकलना नहीं चाहते बंधपाश से
जो फंसाता है उन्हें प्रपंच में
चर्तुर्दिक् सिद्ध पुरुषों का ज्ञान है, अनुभव है
इनसे लाभ उठाते नहीं
धन्य हैं वे पुरुष जो
अपनी विद्या को उतारते हैं जीवन में । 318

71. நடுவுநின் றார்நல்ல கார்முகில் வண்ணன்
நடுவுநின் றான்நல்ல நான்மறை யோதி
நடுவுநின் றார்சிலர் ஞானிக ளாவோர்
நடுவுநின் றார்நல்ல நம்பனு மாமே. 321

नडुवु निन्ऱार् नल्ल कार्मुगिल् वण्णन्
नडुवु निन्ऱार् नल्ल नान्मऱैयोदि
नडुवु निन्ऱार् चिलर् ज्ञानिकळ् आवोर्
नडुवु निन्ऱार् नल्ल नम्बनुमामे । मंत्र-संख्या, 321

नीलमेघ श्यामल विष्णु स्थित रहे मध्यम मार्ग में,
चतुर्वेदविद् चतुरानन स्थित रहे मध्यम मार्ग में,

ज्ञानियों में से कई एक स्थित रहते मध्यम मार्ग में,
हमारे प्रभु परमेश्वर भी स्थित हैं मध्यम मार्ग में । (321)

72 உள்ளுண்மை ஓரார் உணரார் பசுபாசம்
வள்ளன்மை நாதன் அருளினின் வாழ்வுறார்
தெள்ளுண்மை ஞானச் சிவயோகஞ் சேர்வுறார்
கள்ளுண்ணும் மாந்தர் கருத்தறி யாரே. 328

उळ्ळुण्मै ओरार् उणरार् पशुपाशम्
वळ्ळन्मै नादन् अरुळिनिन् वाऴ्वुरार्
तेळ्ळुण्मै ज्ञान शिवयोगम् चेर्वुरार्
कळ्ळुण्णुम् मान्दर् करुत्तरियारे । मंत्र-संख्या, 328

भीतर जो सत्य है उसे पहचानते नहीं
पशु और पाश का विवेक नहीं
परमकृपालु नाथ के अनुग्रह में जीते नहीं
ज्ञान की ज्योति में, शिवयोग में रमते नहीं
मद्यपान में आकंठ निमग्न हैं
सत्य प्राप्त कर सकते नहीं । 328

73. இராப்பகல் அற்ற இடத்தே இருந்து
பராக்கற ஆனந்தத் தேறல் பருகார்
இராப்பகல் அற்ற இறையடி இன்பத்து
இராப்பகல் மாயை இரண்டிடத் தேனே. 331

इराप्पकल् अट्र इडत्ते इरुन्दु
पराक्कर आनन्दत् तेरल् परुगार्
इराप्पकल् अट्र इरैयडि इन्बत्तु
इराप्पकल् मायै इरण्डिडत्तेने । मंत्र-संख्या, 331

मन नहीं करता
पहुँचें ध्यान की गहराई में
जहां कोई द्वंद्व नहीं रहता

दिन-रात का, सुख-दुख का
जहाँ समय-बोध नहीं रहता
और पान करें आनन्द सुधारस
ईश के चरण कमल
द्वंद्वातीत है कालातीत है
पर हाय ! फंसा हुआ हूँ
माया के बंधन में
रात-दिन और सुख-दुख के
द्वंद्वमय संसार में । 331

74. சத்தியை வேண்டிச் சமயத்தோர் கள்ளுண்பர்
சத்தி அழிந்தது தம்மை மறத்தலால்
சத்தி சிவஞானந் தன்னில் தலைப்பட்டுச்
சத்திய ஞானஆ னந்தத்திற் சார்தலே. 332

सत्तियै वेण्डिच्च् चमयत्तोर् कळ्ळुण्बर्
सत्ति अऴिन्ददु तम्मै मऱत्तलाल्
सत्ति शिवज्ञानम् तन्निल् तलैप्पट्टु
सत्तिय ज्ञान आनन्दत्तिऱ् चार्दले । मंत्र-संख्या, 332

वाममार्गी शाक्त करते हैं सुरापान
लेकर शक्ति का नाम;
हुईं चेतना शून्य इन्द्रियाँ, भूले स्वयं को
नष्ट हुई शक्ति;
शिवज्ञान प्राप्त कर उसमें करना रमण है शक्ति
हाँ, शक्ति ही शिवज्ञान है
सत्यज्ञान और आनन्दमय स्थिति ही शक्ति है । 332

75. சத்தன் அருள்தரிற் சத்தி அருளுண்டாஞ்
சத்தி அருள்தரிற் சத்தன் அருளுண்டாஞ்
சத்தி சிவமாம் இரண்டுந்தன் னுள்வைக்கச்
சத்தியம் எண்சித்தித் தன்மையு மாமே. 333

सत्तन अरुळ् तरिऱ् सत्ति अरुळुण्डाम्
सत्ति अरुळ् तरिऱ् सत्तन अरुळुण्डाम्
सत्ति शिवमाम् इरण्डुम् तन्नुळ्वैक्क
सत्तियम् ऍणसित्तित् तन्मैयुमामे । मंत्र-संख्या, 333

प्रदान करें अनुग्रह यदि सर्वशक्त
स्वतः होगा सिद्ध
शक्ति का अनुग्रह
शक्ति करे यदि प्रदान अनुग्रह
स्वतः होगा सिद्ध सर्वशक्त का अनुग्रह
शक्ति-शिव दोनों को हृदय में धारण करने से
निश्चय ही फलीभूत होंगी अष्टसिद्धियाँ । 333

76. தத்துவம் நீக்கி மருள்நீக்கித் தானாகிப்
பொய்த்தவம் நீக்கிமெய்ப் போகத்துட் போகியே
மெய்த்த சகமுண்டு விட்டுப் பரானந்தச்
சித்திய தாக்குஞ் சிவானந்தத் தேறலே. 334

तत्तुवम् नीक्कि मरुळ् नीक्कित् तानागिप्
पॅाय्त्तवम् नीक्कि मॅय्प् पोगत्तुट् पोगिये
मॅय्त्त जगमुण्डु विट्टुप् परमानन्दच्
चित्तियदाक्कुम् शिवानन्दत्तेऱले । मंत्र-संख्या, 334

देकर ज्ञान छियानबे तत्व का
तत्वातीत बना देता है जीव को
तत्वातीत स्थिति में
मिटता है अज्ञान-तम
हटता है मिथ्यातप का आडंबर
स्वयं 'वह' बनता है
पीकर परमानन्द का अमृत
डूबता है शिवानन्द में
महती सिद्धि यही है । 334

77. யோகிகள் கால்கட்டி ஒண்மதி ஆனந்தப்
போத அமுதைப் பொசித்தவர் எண்சித்தி
மோகியர் கள்ளுண்டு மூடராய் மோகமுற்
றாகும் மதத்தால் அறிவழிந் தாரே. 335

योगिकळ् काल् कट्टि ऑण्मति आनन्दप्
पोद अमुदैप् पॉशित्तवर् ऍण्चित्ति
मोगियर् कळ्ळुगण्डु मूडराय् मोहमुट्रु
आगुम् मदत्ताल् अऱिवऴन्दारे । मंत्र-संख्या, 335

नियंत्रित कर श्वासगति
प्राणशक्ति को
पहुँचाते हैं योगीजन
चंद्रमंडल में
झर रहा है जहाँ
आनन्द का अमृत
जिसके पान से मिलती हैं
आठहुं सिद्धियाँ
जाने बिना जोग-जुगत
मूढ़मति
ढूंढते हैं आनन्द
मदिरा की मादकता में
नष्ट होते हैं बुद्धि से भ्रष्ट होकर । 335

78. உண்ணீர் அமுத முறுமூ றலைத்திறந்
தெண்ணீர் குரவன் இணையடித் தாமரை
நண்ணீர் சமாதியி னாடிநீ ரானலங்
கண்ணாற் றொடேசென்று கால்வழி காணுமே. 336

उण्णीर् अमुदमुऱु मूऱलैत्तिऱन्
तॅण्णीर् गुरवन् इणैयडित् तामरै
नण्णीर् समादियिनाडि नीरानलङ्
कण्णाट्रडि चेन्ऱु काल्वऴि काणुमे । मंत्र-संख्या, 336

छक कर पियो मधुर मधु
झर रहा जो वासंतिक स्रोत सा
मगन रहो बसाकर निज मन में
शिवगुरु का अंबुज-चरण युगल
चढ़ता जाए सहज गति से
श्वास सुषुम्ना से ऊपर ऊपर
हो जाए वरेण्य समाधि में पावन मिलन । 336

ॐ ௐ ॐ

2

இரண்டாம் தந்திரம்

इरण्डाम् तंतिरम्

द्वितीय तंत्र

அகத்தியம் — अगत्तियम् - अगस्त्यम्;
பதிவலியில் வீரட்டம் எட்டு —
पतिवलियिल् वीरट्टम् एॅट्टु - शिव के अष्ट-वीर-कृत्य;
இலிங்க புராணம் — इलिंग पुराणम् - लिंग पुराण;
தக்கன் வேள்வி — तक्कन् वेळ्वि - दघ-याग;
பிரளயம் — प्रळयम् –प्रलय;
சக்கரப்பேறு — चक्करप् पेऱु - चक्र का अवदान;
எலும்பும் கபாலமும் — एॅलुम्बुम् कपालमुम् - अस्थि और कपाल;
அடிமுடி தேடல் — अडि मुडि तेडल् - शिखा-चरण का संधान;
படைத்தல் — पडैत्तल् - सृष्टि;
காத்தல் — कात्तल् - पालन/स्थिति;
அழித்தல் — अऴित्तल् - संहार;
மறைத்தல் — मऱैत्तल् - प्रच्छादन;
அருளல் — अरुळल् - अनुग्रह;
கரு உற்பத்தி — करु उर्पत्ति - सूक्ष्म जगत् का प्रजनन;
மூவகைச் சீவ வர்க்கம் — मूवगै जीव वर्गम् - त्रिविध जीव वर्ग;
பாத்திரம் — पात्तिरम् - सुपात्र;
அபாத்திரம் — अपात्तिरम् - अपात्र;
தீர்த்தம் — तीर्त्तम् - तीर्थ;
திருக்கோயில் — तिरुक्कोयिल् - पावन मंदिर;

அதோமுக தரிசனம் — अतोमुक दरिशनम् - अधोमुख- दर्शन;
சிவ நிந்தை — शिव निन्दै - शिव-निन्दा;
குரு நிந்தை — गुरु निन्दै - गुरु-निन्दा;
மயேசுர நிந்தை — मयेसुर निन्दै - महेश्वर (शिव ज्ञानी की) निन्दा;
பொறையுடைமை — पऱैयुडैमै - धृति / क्षमा;
பெரியோரைத் துணைக்கோடல் —
पॆरियोरैत् तुणैक्कोडल् - महापुरुषों की संगति ।

* * *

79. நடுவுநில் லாதிவ் வுலகஞ் சரிந்து
கெடுகின்ற தெம்பெரு மானென்ன ஈசன்
நடுவுள அங்கி அகத்திய நீபோய்
முடுகிய வையத்து முன்னிரென் றானே. 337

नडुवु निल्लादि इव्वुलगम् चरिन्दु
कॅडुगिन्र् दॅम्पॅरुमानॅन्न ईशन्
नडुवुळ अङगि अगत्तिय नी पोय्
मुडुगिय वैयत्तु मुन्निरॅन्ऱाने । मंत्र-संख्या, 337

बिगड़ा तारतम्य सूर्य-चन्द्र का
डाँवाडोल हुआ आन्तरिक ब्रह्माण्ड
त्राहि-त्राहि मच गई भूतसंघ में
देवगण की गुहार सुनकर देवदेव ने
दिया आदेश कुंभ-मुनि को
संकेत से जताया : हे अगस्त्य
मध्य में है अग्नि-पथ सुषुम्ना
साध लो साधना की धुरी
सधेगा संतुलन बिगड़े ब्रह्माण्ड का । 337

80. கொலையிற் பிழைத்த பிரசா பதியைத்
தலையைத் தடிந்திட்டுத் தானங்கி யிட்டு
நிலையுல குக்கிவன் வேண்டுமென் றெண்ணித்
தலையை யரிந்திட்டுச் சந்திசெய் தானே. 340

कॉलैयिर् पिऴैत्त प्रजापतियै
तलैयैत् तडित्तिट्टु तानङ्गियिट्टु
निलैयुलगुक्किवन् वेण्डुमॅन्ऱॅण्णि
तलैयै अरिन्दिट्टु सन्दिचॅय्दाने । मंत्र-संख्या, 340

ब्रह्मापुत्र दक्ष ने किया महापराध
हत्या से भी जघन्य पाप
दंडित करने के लिए काटा ईश ने

दक्ष प्रजापति का सिर
होम कर दिया उसे यज्ञाग्नि में
जगत् को देने के लिए शिक्षा
दक्ष-धड़ पर योजित किया
बकरे का सिर । 340

81. திரிகின்ற முப்புரஞ் செற்ற பிரானை
அரியனென் றெண்ணி அயர்வுற வேண்டா
புரிவுடை யாளர்க்குப் பொய்யலன் ஈசன்
பரிவொடு நின்றுபரிசறி வானே. 348

तिरिगिन्र् मुप्पुरम् चंद्र पिरानै
अरियनंन्रुरॉण्णि अयर्वुर् वेण्डा
पुरिवुडैयाळर्कुप् पॉय्यलन् ईशन्
परिवोडु निन्रु परिशरिवाने । मंत्र-संख्या, 348

सर्वशक्तिमान प्रभु ने
किया उड़ते हुए त्रिपुर का दहन
उन्हें मान कर दुर्लभ न होना निराश,
सत्यप्रेम-युक्त हृदय में
करते वे सदैव निवास, ऐसे जन पर
कृपा-वृष्टि करते प्रभूत स्नेह से । 348

82. தெளிந்தார் கலங்கினும் நீகலங் காதே
அளித்தாங் கடைவதெம் ஆதிப் பிரானை
விளிந்தா னதுதக்கன் வேள்வியை வீயச்
சுளிந்தாங் கருள்செய்த தூய்மொழி யானே. 361

तॅळिन्दार् कलङ्गिनुम् नी कलङ्गादे
अळिन्दाङ्गडैवदॅम् आदिप् पिराने
विळिन्दानदु तक्कन् अवेळ्वियैवीयच्
चुऴिन्दाङ्गरुळ् चॅयद तूय्मॉळियाने । मंत्र-संख्या, 361

विचलित हो जाएं शास्त्रज्ञ भले ही
विचलित होना नहीं तुम लेश भी
स्नेहसिक्त हृदय पसीज उठेगा भक्ति से
पाओगे निश्चय आदिदेव परमेश्वर को
अपमानित हुआ दंभी दक्ष
जब हुआ ध्वस्त उसका निकृष्ट यज्ञ
परितप्त हुए देव जब पश्चात्ताप से
करुणामय प्रभु ने किया सब पर अनुग्रह । *361*

83. கூறது வாகக் குறித்துநற் சக்கரங்
கூறது செய்து கொடுத்தனன் மாலுக்குக்
கூறது செய்து கொடுத்தனன் சத்திக்குக்
கூறது செய்து தரித்தனன் கோலமே. *369*

कूऱदुवागक् कुरित्तु नऱ्चक्करम्
कूऱदु चॆयदु कॊडुत्तनन् मालुक्कु
कूऱदु चॆयदु कॊडुत्तनन् सत्तिक्कु
कूऱदु चॆयदु तरित्तनन् कोलमे । मंत्र-संख्या, *369*

विभेदन किया प्रभु ने
अनन्त स्वशक्ति का,
बाँट दिया दो भागों में
प्रदान किया अर्द्धभाग
चक्ररूप में विष्णु को
शेष अर्द्ध प्रदान किया
शरीररूप में शक्ति को
स्वयं आविष्ट हुए शक्ति में । *369*

84. ஆமே முலகுற நின்றளம் எண்ணலுந்
தாமே முலகில் தழற்பிழம் பாய்நிற்கும்
வானே முலகுறும் மாமணி கண்டனை
யானே அறிந்தேன் அவன் ஆண்மையாலே. *373*

आमेऴ् उलगुऱ् निन्ऱ् एम् एण्णलुम्
ताम् एऴ् उलगिल् तऴर् पिऴम्बाय् निर्कुम्
वानेऴ् उलगुरुम् मामणिकण्टनै
याने अरिन्देन् अवन् आण्मैयाले । मंत्र-संख्या, 373

जान लिया उस प्रभु को मैंने,
उनकी असीम कृपा से, अनुग्रह से
उस प्रभु को जो व्याप्त रहे सातों लोक में
खड़े हैं जो त्रिलोक में जाज्वल्यमान ज्योति-स्तंभ-सम
जो व्याप्त हैं ऊपर के सप्तखण्ड में
जाना मैंने उस महामणिकण्ठ को । 373

85. ஆதியோ டந்தம் இலாத பராபரம்
போதம தாகப் புணரும் பராபரை
சோதி யதனிற் பரந்தோன்றத் தோன்றுமாந்
தீதில் பரையதன் பால்திகழ் நாதமே. 381

आदियोडन्दम् इलाद परापरम्
पोदमदागप् पुणरुम् परापरै
चोतियदनिर् परम् तोन्रत् तोन्रुमाम्
तीदिल् परैयदन्पाल् तिगऴ् नादमे । मंत्र-संख्या, 381

परापर परमेश्वर आद्यंतविहीन हैं
मिलन हुआ महाचिति में
परापर का परापरा से – पराशक्ति से –
इस ज्योति से उत्पन्न हुआ
तुरीयातीत पर-शिव
संयोग हुआ पर का पुनः परा से
उत्पन्न हुआ तब नाद । 381

86. நாதத்தில் விந்துவும் நாதவிந் துக்களில்
தீதற் றகம்வந்த சிவன்சத்தி என்னவே

பேதித்து ஞானங்கிரியை பிறத்தலால்
வாதித்த விச்சையில் வந்தெழும் விந்துவே. 382

नादत्तिल् विन्दुवुम् नादविन्दुक्कळिल्
तीद अट्रगम् वन्द शिवन् सत्ति ऍन्नवे
पेदित्तु ज्ञानम् किरियै पिरत्तलाल्
वादित्त विच्चैयिल् वन्दॆळुम् विन्दुवे । मंत्र-संख्या, 382

शब्द-नाद से प्रकट हुई ज्योति-बिन्दु
शिव-शक्ति हुए प्रकट नाद-बिन्दु योग से
शिव से ज्ञान का, शक्ति से क्रिया का
हुआ आविर्भाव, इच्छा जन्मी बिन्दु से । 382

87. புவனம் படைப்பான் ஒருவன் ஒருத்தி
புவனம் படைப்பார்க்குப் புத்திரர் ஐவர்
புவனம் படைப்பானும் பூமிசை யானாய்
புவனம் படைப்பானப் புண்ணியன் தானே. 386

पुवनम् पडैप्पान् ऒरुवन् ऒरुत्ति
पुवनम् पडैप्पार्कु पुत्तिरर् ऐवर्
पुवनम् पडैप्पानुम् पूमिशैयानाय्
पुवनम् पडैप्पानप् पुण्णियन् ताने । मंत्र-संख्या, 386

बनकर नर-नारी, सृजन किया
शिव ने सकल भुवन यह
भुवन-स्रष्टा के पुत्र हैं पाँच
(सदाशिव, महेश, रुद्र, विष्णु, अज)
सृजन में वही बना कमलासन
स्रष्टा बना वही पुण्यशील । 386

88. காரணன் அன்பிற் கலந்தெங்கும் நின்றவன்
நாரணன் நின்ற நடுவுட லாய்நிற்கும்
பாரணன் அன்பிற்பதஞ் செய்யும் நான்முகன்
ஆரண மாய்உல காயமர்ந் தானே. 391

कारणन् अन्बिर् कलन्दङ्गुम् निन्रवन्
नारणन् निन्र नडुवुडलाय् निर्कुम्
पारणन् अन्बिर् पदम् चेय्युम् नान्मुगन्
आरणमाय् उलगाय् अमन्दनि । मंत्र-संख्या, 391

सबका मूलकारण एक वही परमेश्वर
स्नेह-सिक्त होकर व्याप्त है वह अगजग में
वही विष्णु, वही कमलासन
वही है वेद, वही है ब्रह्माण्ड
नित्य-पारायण योग्य एक वही । 391

89. ஒருவனு் ஒருத்தி விளையாடல் உற்றார்
இருவர் விளையாட்டும் எல்லாம் விளைக்கும்
பருவங்கள் தோறும் பயன்பல வான
திருவொன்றிற் செய்கை செகமுற்று மாமே. 396

ऑरुवन् ऑरुत्ति विळैयाडल् उट्रार्
इरुवर् विळैयाट्टुम् ऍल्लाम् विळैक्कुम्
परुवङ्गळ् तोरुम् पयन् पलवान
तिरुवॉन्रिल् चेय्गै चेगमुट्रुमामे । मंत्र-संख्या, 396

शिव और शक्ति ने प्रारम्भ की लीला
सृजन हुआ सकल भुवन का क्रीड़ामात्र में,
लीला क्या है स्वयं की अभिव्यक्ति है
ऋतु-परिवर्तन, फल-फूल, धन-धान्य, समृद्धि सब
दिव्य-युग्म के संगम से
सम्पन्न होता है सृष्टि-कर्म । 396

90. புகுந்தறி வான்புவ னாபதி அண்ணல்
புகுந்தறி வான்புரி சக்கரத் தண்ணல்
புகுந்தறி வான்மலர் மேலுறை புத்தேள்
புகுந்தறி யும்முடிக் காகிநின் றாரே. 397

90. पुगुन्दरि़वान् पुवनापति अण्णल्
पुगुन्दरि़वान् पुरि चक्करत्तण्णल्
पुगुन्दरि़वान् मलर्मेलुऱै पुत्तेळ्
पुगुन्दरि़युम् मुडिक्कागि निन्ऱारे । मंत्र-संख्या, 397

सर्वेश्वर शिव है भुवनपति
रुद्र में हो आवेशित
सम्पन्न करवाते संहार
होकर चक्रधर विष्णु में आवेशित
सम्पन्न करवाते पालन
होकर आवेशित कमलासन ब्रह्मा में
सम्पन्न करवाते हैं सृजन
शिवकार्य-निष्पत्ति हेतु
निमित्तमात्र हैं त्रिदेव । 397

91. வாரணி கொங்கை மனோன்மணி மங்கலி
காரணி காரிய மாகக் கலந்தவள்
வாரணி ஆரணி வானவர் மோகினி
பூரணி போதாதி போதமு மாமே. 402

वारणि कोंङ्गै मनोन्मणि मङ्गलि
कारणि कारियमागक् कलन्दवळ्
वारणि आरणि वानवर् मोहिनि
पूरणि पोदादि पोदमु मामे । मंत्र-संख्या, 402

निस्सीम महिम्ना है महामाया
पीन-पयोधरा मनोन्मनी
सर्वमंगला सदाशिव कुटुम्बिनी
कार्य-कारण संयुक्ता
कुंजरी मनोहरी सर्वमोहिनी
आरणी-वनवासिनी सुंदरी
चिति से परे महाचिति, वह पूर्णा है । 402

92. ஓராய மேஉல கேழும் படைப்பதும்
ஓராய மேஉல கேழும் அளிப்பதும்
ஓராய மேஉல கேழும் துடைப்பதும்
ஓராய மேஉல கோடுயிர் தானே. 407

ओरायमे उलगेऴ ुम् पडैप्पदुम्
ओरायमे उलगेऴ ुम् अळिप्पदुम्
ओरायमे उलगेऴ ुम् तुडैप्पदुम्
ओरायमे उलगोडुयिर् ताने । मंत्र-संख्या, 407

शिव-शक्ति समुच्चय से
समुद्भूत है सकल ब्रह्माण्ड,
सप्तलोक का सृजन, संरक्षण,
परिपालन और उनका संहार
करता है यही शिव-परिवार
सकल जीव में, शरीर में
व्याप्त है यही शिव-शक्ति समुच्चय । 407

93. உடலாய் உயிராய் உலகமே தாகிக்
கடலாய்க் கார்முகில் நீர்பொழி வானாய்
இடையாய் உலப்பிலி எங்குந்தா னாகி
அடையார் பெருவழி அண்ணல்நின் றானே. 413

उडलाय् उयिराय् उलगमेदागि
कडलाय् कार्मुगिल् नीर्पाेऴिवानाय्
इडैयाय् उलप्पिलि ऍङ्गुम् तानागि
अडैयार् पॆरुवऴि अण्णल् निन्राने । मंत्र-संख्या, 413

सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापी
वही बना है सकल शरीर,
शरीर में स्पन्दित प्राण,
सर्वलोक, हिलोरें लेते सागर,
नीर भरे नीले जलद

मध्याकाश बन व्याप्त है
अन्तराय बिन वह अनश्वर
वह लोकैकशरण्य । 413

94. அன்பும் அறிவும் அடக்கமு மாய்நிற்கும்
இன்பமும் இன்பக் கலவியு மாய்நிற்கும்
முன்புறு காலமும் ஊழி மாய்நிற்கும்
அன்புற ஐந்தில் அமர்ந்துநின் றானே. 416

अन्बुम् अरिवुम् अडक्कमुमाय् निर्कुम्
इन्बमुम् इन्बक् कलवियुमाय् निर्कुम्
मुनबुरु कालमुम् ऊऴिमाय् निर्कुम्
अन्बुर ऐन्दिल् अमर्न्दु निन्राने । मंत्र-संख्या, 416

प्रेम, ज्ञान और विनय रूप हैं शिव,
प्रेम-संयोग और सुखानुभव भी शिव
सनातन चिरंतन वह है प्रलयंकर,
प्रलय भी वही, जो व्याप्त है
दैवी-प्रेम से पंचतत्व में अंतराय बिन । 416

95. நித்தசங் காரம் உறக்கத்து நீள்மூடம்
வைத்தசங் காரமுஞ் சாக்கிரா தீதமாஞ்
சுத்தசங் காரந் தொழிலற்ற கேவலம்
உய்த்தசங் காரம் பரன்அருள் உண்மையே. 425

नित्तसङ्गारम् उरक्कत्तु नीळ्मूडम्
वैत्त सङ्गारमुम् चाक्किरातीतमाम्
सुत्त सङ्गारम् तोऴिलट्र केवलम्
उय्त्त सङ्गारम् परन् अरुळ् उण्मैये । मंत्र-संख्या, 425

निद्रा में जो दीर्घ मूढ़ता
वही है प्रतिदिन घटित होता संहार
चिर-निद्रा में चक्रातीत अवस्था

मायिक शरीर का है संहार
मात्र अज्ञानयुत जीव की
कर्मरहित केवलावस्था शुद्ध संहार है
प्रलयनिद्रा में होता सिद्ध शिवानुग्रह
वही है उद्धारमूलक संहार । 425

96. இறையவன் மாதவன் இன்பம் படைத்த
மறையவன் மூவரும் வந்துடன் கூடி
இறையவன் செய்த இரும்பொறி யாக்கை
மறைவயன் வைத்த பரிசறி யாதே. 433

इऱैयवऩ् मादवऩ् इन्बम् पडैत्त
मऱैयवऩ् मूवरुम् वन्दुडऩ् कूडि
इऱैयवऩ् चॆय्द इरुम्पॊऱि याक्कै
मऱैयवऩ् वैत्त परिशऱियादे । मंत्र-संख्या, 433

ब्रह्मा, हरि और रुद्र
त्रिदेव का हुआ समागम
सृजित किया अंतर्लीन परमेश्वर ने
काया का यह अद्भुत यंत्र
अज्ञात था त्रिदेव के लिये यह तंत्र
इसमें कैसे संजो दीं
बहुमूल्य महार्ह निधि । 433

97. நின்றது தானாய் நிறைந்த மகேசுரன்
சென்றங் கியங்கும் அரன்திரு மாலவன்
மன்றது செய்யும் மலர்மிசை மேலயன்
என்றிவ ராகி இசைந்திருந் தானே. 438

निन्ऱु तानाय् निऱैन्द महेसुरऩ्
चॆन्ऱङगियङ्गुम् अरऩ् तिरुमालवऩ्
मन्ऱु चॆय्युम् मलर्मिशै मेलयऩ्
ऍन्ऱिवरागि इशैन्दिरुन्दाने । मंत्र-संख्या, 438

स्थित हुआ एक सदाशिव
व्याप्त हुआ महेश्वर
साथ में मिले त्रिदेव
सृष्टि-स्थिति-संहार-कर्ता
बन गया एक परिवार पांच का
पांचों का समुच्चय बनकर
विलस रहा वह परमेश्वर । *438*

98. மண்ணொன்று தான்பல நற்கலம் மாயிடும்
உண்ணின்ற யோனிகட் கெல்லாம் ஒருவனே
கண்ணொன்று தான்பல காணுந் தனைக்காணா
அண்ணலும் இவ்வண்ண மாகிநின் றானே. *440*

मण्णोन्रु तान् पल नऱ्कलमायिडुम्
उण्णिन्ऱ योनिकट्कॅल्लाम् ऑरुवने
कण्णोन्रु तान् पल काणुम् तनैक्काणा
अण्णलुम् इव्वण्ण मागि निन्ऱाने । मंत्र-संख्या, *440*

माटी एक है जिससे लेते रूप
भांति-भांति के बरतन-भांडे
स्रष्टा एक है जिससे निर्मित
अगणित जीवजाल विविध रूपों में,
अक्षि एक है देखने में सक्षम
दृश्य असंख्य, स्वयं को न देखे
इसी भांति हम भ्रमित दृश्यों में
देख नहीं पाते हृदय-अंतर के अक्षि को । *440*

99. குசவன் திரிகையில் ஏற்றிய மண்ணைக்
குசவன் மனத்துற்ற தெல்லாம் வனைவன்
குசவனைப் போல்எங்கள் கோன்நந்தி வேண்டில்
அசைவில் உலகம் அதுஇது வாமே. *443*

कुशवन् तिरिगैयिल् एट्रिय मण्णै
कुशवन् मनत्तुट्रदेल्लाम् वनैवन्
कुशवनैप् पोल् ऍड्गळ् कोन् नन्दि वेण्डिल्
अशैविल् उलगम् अदु इदुवामे । मंत्र-संख्या, 443

माटी चढ़ाकर चाक पर
मनचाहा रूप देता है कुम्हार
विश्व-सृष्टि का तत्व भी यही,
इधर कुम्हार की भाँति
अंतर्यामी गुरु नन्दिदेव भी
ढालता है मनचाहे ढंग से विश्व को । 443

100. உண்ணின்ற சோதி உறநின்ற ஒருடல்
விண்ணின் றமரர் விரும்பும் விழுப்பொருள்
மண்ணின்ற வானோர் புகழ்திரு மேனியன்
கண்ணின்ற மாமணி மாபோத மாமே. 449

उण्णिन्र् जोति उऱनिन्र् ओरुडल्
विण्णिन्रमरर् विरुम्बुम् विळ्ुप्पॊरुळ्
मण्णिन्र् वानोर् पुगळ् तिरुमेनियन्
कण्णिन्र् मामणि माबोदमामे । मंत्र-संख्या, 449

अंतर्ज्योति भी वही, बाह्य शरीर भी
सुरगणों से अभिलषित सत्य
दिव्यमूर्ति जिसकी स्तुति करते हैं भूदेव संत
महाचैतन्य वह आँखों का तारा है । 449

101. ஆக்குகின் றான்முன் பிரிந்த இருபத்தஞ்
சாக்குகின் றானவ னாதிஎம் ஆருயிர்
ஆக்குகின் றான்கர்ப்பக் கோளகை யுள்ளிருந்
தாக்குகின் றான்அவன் ஆவ தறிந்தே. 451

आक्कुकिन्रान् मुन् पिरिन्द इरुपत्तञ्चु
आक्कुकिन्रान् अवन् आदि ऍम् आरुयिर्

आक्कुकिऩ्ऱाऩ् कर्प्पक् कोळकै उळ्ळिरुन्दु
आक्कुकिऩ्ऱाऩ् अवऩ् आवदऱिन्दे । मंत्र-संख्या, 451

विगत जन्म में विलग हुए पच्चीस तत्वों को
मिलाकर फिर से निर्मित करता है आदिदेव
मानव-शरीर बड़े कौशल से, फिर उसमें
करता है संचरित प्राण; प्रवेश करता
स्वयं गोलाकार गर्भ में, करता सृजन,
जानता वही कि क्या बनेगा यह मानव । 451

102. ஏயங் கலந்த இருவர்தஞ் சாயத்துப்
பாயுங் கருவும் உருவா மெனப்பல
காயங் கலந்தது காணப் பதிந்தபின்
மாயங் கலந்த மனோலய மானதே. 459

एयङ्ग कलन्द इरुवर्तम् चायत्तुप्
पायुम् करुवुम् उरुवामॆनप् पल
कायङ् कलन्ददु काणप् पदिन्त पिऩ्
मायङ् कलन्द मनोलय मानदे । मंत्र-संख्या, 459

जन्म-मरण के चक्र में परिभ्रमित
दो प्राणों का हुआ संगम गार्हस्थ्य में
जबकि प्रवहित हुआ शुक्र-शोणित रूप में
जिससे हुआ निर्मित एक भ्रूण;
भ्रूण में हुआ प्रविष्ट एक जीव
अनेक पूर्वजन्मों की लेकर कर्मवासना
जो है अधीन मायामय मन के ! 459

103. என்பால் மிடைந்து நரம்பு வரிக்கட்டிச்
செம்பால் இறைச்சி திருந்த மனைசெய்து
இன்பால் உயிர்நிலை செய்த இறையோங்கும்
நன்பால் ஒருவனை நாடுகின் றேனே. 461

एन्बाल् मिडैन्दु नरम्बु वरिक्कट्टिच्
चेम्पाल् इऱैच्चि तिरुन्द मनै चेय्दु
इन्पाल् उयिर् निलै चेय्द इऱैयोड्गुम्
नन्पाल् ओरुवनै नाडुकिन्ऱेने । मंत्र-संख्या, 461

अद्भुत उसकी रचना-प्रक्रिया !
छोटी-बड़ी अस्थियों का कर संयोजन
निर्मित किया काया का पंजर
बांधा उसे भाँति-भाँति की नसों से
फिर सुदृढ़ बनाया यथास्थान
संयोजित कर रुधिर, मांस, मज्जा
काया-महल बनाया जीव-निवास को
ढूँढ रहा मैं इस अद्भुत कृतिकार
के चरणों को उद्धार-हेतु । 461

104. சுக்கில நாடியில் தோன்றிய வெள்ளியும்
அக்கிர மத்தே தோன்றுமவ் வியோனியும்
புக்கிடும் எண்விரல் புறப்பட்டு நால்விரல்
அக்கரம் எட்டும்எண் சாணது வாகுமே. 464

सुक्किल नाडियिल् तोन्रिय वॆळ्ळियुम्
अक्किरमत्ते तोन्रुमव् वियोनियुम्
पुक्किडुम् ऍण्विरल् पुऱप्पट्टु नाल्विरल्
अक्करम् ऍट्टुम ऍणचाणदु वागुमे । मंत्र-संख्या, 464

शुक्र-नाड़ी से प्रवहित हुआ रजत-बिन्दु
मिलन हुआ उसका शोणित से
जो हुआ निर्गत इसी भाँति योनि से
दोनों का यह संगम परिणत हुआ भ्रूण-रूप में;
श्वास-उच्छवास जिसका नपातुला है
खींचता है श्वास अष्ट-अंगुल परिमाण में

छोड़ता है चार अंगुल परिमाण में
निज हाथ के नाप में यह
केवल आठ बालिश्त भर लंबा है । 464

105. பூவுடன் மொட்டுப் பொருந்த அலர்ந்தபின்
காவுடைத் தீபங் கலந்து பிறந்திடும்
நீரிடை நின்றகுமிழி நிழலதாய்ப்
பாருடல் எங்கும் பரந்தெட்டும் பற்றுமே. 472

पूवुडऩ् मॊट्टुप् पॊरुन्द अलर्न्द पिऩ्
कावुडैत् तीपङ् कलन्दु पिऱन्दिडुम्
नीरिडै निऩ्ऱ कुमिऴि निऴलदाय्प्
पारुडल् ऍङ्गुम् परन्दॆट्टुम् पट्ऱुमे । मंत्र-संख्या, 472

गर्भाशय के फूल पर हुआ संलग्न
बिंदुवाहक स्तबक विकसित हुआ वहां
परिरक्षित होकर, हुआ जन्म इक जीवन-दीप का,
जीवन-धारा में एक बुद्बुद् बिखेरता छाया
धरती पर, आवेष्टित है पंच तन्मात्रा
मन, बुद्धि, अहंकार के अष्टतत्व से । 472

106. ஆண்மிகில் ஆணாகும் பெண்மிகிற் பெண்ணாகும்
பூணிரண் டொத்துப் பொருந்தில் அலியாகும்
தாண்மிகு மாகில் தரணி முழுதாளும்
பாணவ மிக்கிடில் பாய்ந்ததும் இல்லையே. 478

आण्मिगिल् आणागुम् पॆण्मिगिल् पॆण्णागुम्
पूणिरण्डॊत्तुप् पॊरुन्दिल् अलियागुम्
ताण्मिगु मागिल् तरणि मुऴुदाळुम्
पाणव मिक्किडिल् पाय्न्दयुम् इल्लैये । मंत्र-संख्या, 478

संयोग-वेला में दायाँ स्वर प्रबल हो,
दाईं ओर से प्रभूत श्वास चले

तो पुरुष संतान होगी
बायाँ स्वर प्रबल होने पर
स्त्री संतान होगी
दोनों श्वास समान हों तो संतान उभयलिंगी हो;
ध्यान यदि पुरुषार्थ में हो तो पुत्र हो त्रिभुवन-शासक
अंतः-अभ्यास से हो श्वास पर दृढ़ नियंत्रण
न हो यदि बिन्दुपात तो गर्भाधान भी न होगा । 478

107. கொண்டநல் வாயு இருவர்க்கும் ஒத்தொழில்
கொண்டி குழவியிங் கோமள மாயிடும்
கொண்டநல் வாயு இருவர்க்குங் குழறிடில்
கொண்டதும் இல்லையாங் கோல்வளை யாடகே. 483

कॊण्ड नल्वायु इरुवर्कुम् ऑत्तॊऴिल्
कॊण्डि कुऴवियिङ्कोमळ मायिडुम्
कॊण्ड नल्वायु इरुवर्कुम् कुऴऱिडिल्
कॊण्डदुम् इल्लैयाम् कोल्वळैयाट्के । मंत्र-संख्या, 483

संयोग-रति में
समान गति से चलें,
प्रेमी युगल के श्वास
होने वाली संतान सर्वांग सुन्दर होगी
डगमगा जाएँ यदि सांसें
तो नहीं होगा गर्भाधान । 483

108. குயிற்குஞ்சு முட்டையைக் காக்கைக் கூட்டிட்டால்
அயிர்ப்பின்றிக் காக்கை வளர்க்கின் றதுபோல்
இயக்கில்லை போக்கில்லை ஏனென்ப தில்லை
மயக்கத்தால் காக்கை வளர்க்கின்ற வாறே. 488

कुयिऱ् कुञ्जु मुट्टैयैक् काक्कैक् कूट्टिट्टाल्
अयिऱ्प्पिन्ऱिक् काक्कै वळर्किन्ऱदु पोल्



திருவாதவூர்

तिरुवादवूर मंदिर माणिक्कवाचकर की जन्मस्थली

Thiruvathavoor Temple

Birth Place of Sri. Manickavasagan

इयक्किल्लै पोक्किल्लै एर्न्बदिल्लै
मयक्कत्ताल् काक्कै वळर्क्किन्ऱवाऱे । मंत्र-संख्या, 488

कोयल दे जाती अंडे कौए के घोंसले में
अश्रांत बैठ सेता है कौआ पालता शावक को
निःशंक होकर सावधानी से, जब तक नहीं निकलते
शावक, हिलाता नहीं, स्वयं कहीं उड़ता नहीं
भ्रम में रहता अपने ही शावक हैं !
(प्रभु-संतान को माता-पिता पालते भ्रम से निजसंतान मान) ।

109. சக்தி சிவன்விளை யாட்டால் உயிராக்கி
ஒத்த இருமாயா கூட்டத் திடைபூட்டிச்
சுத்தம தாகுந் துரியம் பிரிவித்துச்
சித்தம் புகுந்து சிவமய மாக்குமே. 492

सक्ति शिवन् विळैयाट्टाल् उयिराक्कि
ओत्त इरु माया कूट्टत्तिडै पूट्टिच्
चुत्तमदागुम् तुरियम् पिरिवित्तुच्
चित्तम् पुगुन्दु शिवमयमाक्कुमे । मंत्र-संख्या, 492

शिव और शक्ति की लीला से
होता है शरीर में जीवन स्पंदित
जीव-उद्धार ही इसका उद्देश्य
जीव पड़ा था निष्क्रिय शुद्ध केवलावस्था में
उसे मुक्त कर वहां से
योजित करता सत्य और मिथ्या माया से
फिर करता प्रवेश चित्त में शिव
उसे शिवमय बनाने को । 492

110. சிவமாகி ஐவகைத் திண்மலஞ் செற்றோர்
அவமாகார் சித்தர்முத் தாந்தத்து வாழ்வார்
பவமான தீர்வோர் பசுபாசம் அற்றோர்
நவமான தத்துவம் நாடிக்கண் டோரே. 497

शिवमागि ऐवगैत् तिण्मलम् चंद्रोर्
अवमागार् सित्तर् मुत्तान्दत्तु वाऴ् वार्
पवमान तीर्वोर् पशुपाशम् अट्रोर्
नवमान तत्तुवम् नाडिक्कण्डोरे । मंत्र-संख्या, 497

पंच मलों से मुक्त जन
दोषरहित हो स्वयं बन जाते शिव
ऐसे सिद्धि-पुरुष बनते अधिकारी
मोक्ष-साम्राज्य के
जन्म-मरण से होते मुक्त
पशु-पाश बंधन से भी
सिद्ध कर लेते नवतत्वों को । 497

111. திலமத் தனையே சிவஞானிக் கீந்தால்
பலமுத்தி சித்தி பரபோக முந்தரும்
நிலமத் தனைபொன்னை நின்மூடர்க் கீந்தால்
பலமுமற் றேபர போகமுங் குன்றுமே. 501

तिलमत्तनैये शिवज्ञानिक्कीन्दाल्
पल मुत्ति सित्ति परपोगमुम् तरुम्
निलमत्तनै पोन्नै निन् मूडर्क्कीन्दात्
पलमुमट्रे परपोगमुम् कुन्रुमे । मंत्र-संख्या, 501

भले ही तिल-सम रत्ती भर धन का दान दें
पर वह दान सुपात्र को, सच्चे शिवज्ञानी को दें
अक्षय अमोघ फल मिलेगा ऋद्धि-सिद्धि-समृद्धि के साथ
मुक्ति का ब्रह्मानन्द भी
किन्तु चाहे दान में दें ढेर सा स्वर्ण
अपात्र मूढ़ को
क्षय होगा सर्वथा सब भांति
नष्ट होगा आनन्द जीवन का । 501

112. ஈவது யோக இயம நியமங்கள்
சார்வ தறிந்தன்பு தங்கு மவர்க்கன்றி
ஆவ தறிந்தன்பு தங்கா தவர்களுக்
கீவ பெரும்பிழை யென்றுகொ ளீரே. 506

ईवदु योग इयम नियमङ्गळ्
चार्वदऱिन्दन्बु तङ्गुमवर्कन्ऱि
आवदऱिन्द अन्पु तङ्गादवर्गळुक्कु
ईव पॆरुम्पिळै यॆन्ऱुकॊळीरे । मंत्र-संख्या, 506

उचित है दान देना
ऐसे गुणीजनों को
जो स्थित रहें योगमार्ग पर
पालन करें यम-नियम का
अर्चन-आराधन करें प्रभु का स्नेह से;
इसके विपरीत, दान देना ऐसे जन को
जिन के हृदय में स्नेह-करुणा का नहीं है लेश,
जघन्य पाप है, निन्दनीय कार्य है । 506

113. உள்ளத்தின் உள்ளே உணரும் ஒருவனைக்
கள்ளத்தி னாருங் கலந்தறி வார்இல்லை
வெள்ளத்தை நாடி விடுமவர் தீவினைப்
பள்ளத்தி லிட்டதோர் பந்தருள் ளானே. 511

उळ्ळत्तिन् उळ्ळे उणरुम् ऒरुवनै
कळ्ळत्तिनारुम् कलन्दरिवार् इल्लै
वॆळ्ळत्तै नाडि विडुमवर् तीविनै
पळ्ळत्तिलिट्टदोर् पन्दरुळ्ळाने । मंत्र-संख्या, 511

निवसित है प्रभु उनके हृदय में
जान नहीं पाते; क्योंकि
उनकी भक्ति, उनकी आस्था झूठी है
हाय नहीं जानते वे

अपने कर्मों का अनन्त फल
झरता हुआ बहता है नीचे की ओर
बड़े गड्ढ में निर्लक्ष्य । 511

114. முன்னவ னார்கோயில் பூசைகள் முட்டிடின்
மன்னர்க்குத் தீங்குள வாரி வளங்குன்றுங்
கன்னங் களவு மிகுந்திடுங் காசினி
என்னரு நந்தி எடுத்துரைத் தானே. 518

मुन्नवनार् कोयिल् पूशैकळ् मुट्टिडिन्
मन्नर्क्कु तीङ्गुळ वारि वळम् कुन्रुम्
कन्नम् कळवु मिगुत्तिडुम् काशिनि
ऍन्नरु नन्दि ऍडत्तुरैत्ताने । मंत्र-संख्या, 518

ऐसी स्थिति यदि हो जाए संजात
पूजा ही हो जाए समाप्त
आदिदेव परमेश्वर के मंदिर में
इससे महाअनिष्ट होगा शासक को
वर्षा भी होगी बंद
देश भर में बढ़ेगा उत्पात चोर-डाकुओं का
यह नन्दिदेव का वचन है । 518

115. அதோமுக மாமல ராயது கேளும்
அதோமுகத் தாலொரு நூறாய் விரிந்து
அதோமுக மாகிய அந்தமில் சத்தி
அதோமுக மாகி அமர்ந்திருந் தானே. 525

अतोमुक मामलरायदु केळुम्
अतोमुकत्ताल् ऑरु नूराय् विरिन्दु
अतोमुकमागिय अन्तमिल् सत्ति
अतोमुकमागि अमर्न्दिरुन्दाने । मंत्र-संख्या, 525

सुनिए भंगिमा अधोमुख की
उन्मुख है नीचे की ओर

विकसित है शतदल जैसे
इनसे बन गए शत-शत लोक
आलोकित है अनन्त ऊर्जा से
सोह रहा है प्रभु अधोमुख बनकर । 525

116. தெளிவுறு ஞானத்துச் சிந்தையின் உள்ளே
அளிவுறு வாரம ராபதி நாடி
எளியனென் றீசனை நீசர் இகழின்
கிளியொன்று பூஞையிற் கீழது வாகுமே. 526

तॅळिवुरु ञानत्तुच् चिन्तैयिऩ् उळ्ळे
अळिवुरुवार् अमरापति नाडि
ऍळियनॅन्रु ईशनै नीचर् इकऴिन्
किळियॉन्रु पूञैयिऱ् कीऴदुवागुमे । मंत्र-संख्या, 526

धन्य हैं वे तपोधन
जिनने पाया संशयरहित ज्ञान
प्रेमभक्ति से सहजरूप से
पहुँच जाते हैं देवपुरी अमरावती ।
अधम हैं वे नीच जन
प्रभु की विभुता को जानते नहीं
अवहेलना करते हैं ईश की
वही गति होगी उनकी जो बिल्ली के पंजे में
फंसे शुक की होगी । 526

117. ஓரெழுத் தொருபொருள் உணரக் கூறிய
சீரெழுத் தாளரைச் சிதையச் செப்பினோர்
ஊரிடைச் சுணங்கனாய்ப் பிறந்தங் கோருகம்
வாரிடைக் கிருமியாய் மாய்வர் மண்ணிலே. 531

ओरॅऴुत्तॉरु पॉरुळ् उणरक्कूऱिय
चीरॅऴुत्ताळरैच् चिदैयच् चॅप्पिनोर्
ऊरिडैच् चुणङ्गनाय् पिऱन्दङ्कोरुगम्
वारिडैक् किरुमियाय् माय्वर् मण्णिले । मंत्र-संख्या, 531

एकाक्षर ऊँकार का
अर्थ समझाया जिन गुरु ने
उनकी निन्दा महापराध है
बुरा फल पाएगा गुरु-निंदक
श्वान-जन्म पाएगा
भटकेगा श्वान-रूप में युग-युगों तक
फिर कृमि-कीट जन्म पाएगा
मिल जाएगा मिट्टी में । 531

118. ஞானியை நிந்திப் பவனும் நலனென்றே
ஞானிடய வந்திப் பவனுமே நல்வினை
யான கொடுவினை தீர்வா ரவன்வயம்
போன பொழுதே புகுஞ்சிவ போகமே. 538

ञानियै निन्दिप्पवनुम् नलनंऩ्ऱे
ञानियै वन्दिप्पवनुमॅय् नल्विनै
यान कॊडुविनै तीऱ्वार वऩ्वयम्
पोनपॊऴ्ुदे पुगुम् शिवबोगमे । मंत्र-संख्या, 538

जो करे निन्दा शिवज्ञानी की
निष्फल हो जाएँगे उसके सारे सत्कर्म
जो करे वन्दना शिवज्ञानी की
मुक्त होगा वह अपने सारे दुष्कर्म से
जो पहुँचे सामीप्य में शिवज्ञानी के
निश्चय ही वह पाएगा शिवानन्द । 538

119. வல்வகை யாலும் மனையிலும் மன்றிலும்
பல்வகை யாலும் பயிற்றிப் பதஞ்செய்யுங்
கொல்லையி னின்று குதிகொள்ளுங் கூத்தனுக்
கெல்லையி லாத விலயமுண் டாமே. 542

वल्वगैयालुम् मनैयिलुम् मन्रिलुम्
पल्वगैयालुम् पयिट्रि पदञ्र्चय्युम्
कोल्लैयिनिन्रु कुदि कोळ्लुम् कूत्तनुक्कु
ऍल्लैयिल्लाद विलयमुण्डामे । मंत्र-संख्या, 542

बलात् या सहजरूप से
सब विधि प्रयत्न करके
अभ्यास करें क्षमाशीलता का
घर में और बाहर, अपने हर कार्य में ;
मन लयीभूत होगा
नटराजराज के चरणों पर
नर्तित हैं जो रुद्रभूमि में निरंतर । 542

120. உடையான் அடியார் அடியா ருடன்போய்
படையா ரழன்மேனிப் பதிசென்று புக்கேன்
கடையார நின்றவர் கண்டறி விப்ப
உடையான் வருகென ஓலமென் றாரே. 547

उडैयान् अडियार् अडियारुडन् पोय्प्
पडैयार अऴन्मनिप् पति चेन्रु पुक्केन्
कडैयार निन्रवर् कण्डरिविप्प
उडैयान् वरुगॅन ओलमॅन्रारे । मंत्र-संख्या, 547

चल पड़ा मैं
प्रभु के दासानुदासों के संग
पहुँच गए पुण्यपुरी जहाँ
सोह रहे हैं त्रिशूलधर अग्निवर्ण महादेव;
निवेदित किया प्रभु को
द्वारस्थ सेवकों ने हमारा आगमन

प्रभु बोले वात्सल्य से 'चले आओ अंदर'
पुलकित हुई मंडली
हर्षारव करती दुहाई में । 547

ॐ ௐ ॐ

மூன்றாம் தந்திரம்
मून्ऱाम तन्तिरम्
तृतीय तंत्र

அட்டாங்க யோகம் — अट्टांग योगम् - अष्टांग योग;

இயமம் — इयमम् - यम;

நியமம் — नियमम् - नियम;

ஆதனம் — आदनम् - आसन;

பிராணாயாமம் — प्राणायामम् - प्राणायम;

பிரத்தியாகாரம் — प्रत्याहारम् - प्रत्याहार;

தாரணை — तारणै - धारणा;

தியானம் — दियानम् - ध्यान;

சமாதி — समादि - समाधि;

அட்டாங்கயோகப் பேறு —
अट्टांग योगप् पेरु - अष्टांग योग की उपलब्धि;

அட்டமா சித்தி — अट्टमा सित्ति - अष्ट महा सिद्धियां;

கலை நிலை — कलै निलै - अचंचल कला;

காயசித்தி உபாயம் — कायसित्ति उपायम् - कायसिद्धि का उपाय;

கால சக்கரம் — काल चक्करम् - काल-चक्र;

ஆயுள் பரீட்சை — आयुळ् परीट्चै - दीर्घायु-परीक्षा;

வாரசரம் — वार चारम् - प्राण का वार संचार;

வாரசூலம் — वार शूलम् - वार शूल;
கேசரி யோகம் — केसिर योगम् - केसिर योग;
பரியங்க யோகம் — परियंग योगम् - परियंग योग;
அமுரிதாரணை — अमुरि तारणै - अमुरि धारणा;
சந்திர யோகம் — चंदिर योगम् - चंद्र योग ।

* * *

121. உரைத்தன வற்கரி ஒன்று மூடிய
நிரைத்த இராசி நிரைமுறை எண்ணிப்
பிரச்சதம் எட்டும் பேசியே நந்தி
நிரைத்த இயமம் நியமஞ்செய் தானே. 549

उरैत्तन वर्करि ऑन्रु मूडिय
निरैत्त इराशि निरैमुरै ऍण्णिप्
पिरच्चदम् ऍट्टुम् पेशिये नन्दि
निरैत्त इयमम् नियमम् चॅय्दाने । मंत्र-संख्या, 549

निगूढ़ है योग-विद्या श्वास की
बंदकर बारी बारी से नासापुट
होता है नियमन
पूरक, कुंभक, रेचक का
सही अनुपात में
किया व्याख्यायित नन्दी ने
आठों अंग योग के
प्रारंभ करके यम-नियम से । 549

122. செய்த இயம நியமஞ் சமாதிசென்
றுய்யப் பராசக்தி உத்தர பூருவ
மெய்த கவச நியாசங்கள் முத்திரை
எய்த வுரைசெய்வன் இந்நிலை தானே. 550

चॅय्द इयम नियमञ् चमादि चॅन्-
रुय्यप् पराशक्ति उत्तर पूरुव
मॅय्द कवच नियासंगळ् मुत्तिरै
ऍय्द उरै चॅय्वन् इन्निलै ताने । मंत्र-संख्या, 550

यम-नियम का यह महा-उद्यम
परिणत हो जाए भव्य समाधि में
कुंडलिनी पराशक्ति
तजकर अपना पूर्व रूप

परिणत हो जाए उत्तर रूप में
पहुंच कर सहस्रार में
संभव करने का है विधान
कवच, न्यास और मुद्रा का
बता रहा हूँ क्रम-क्रम से । 550

123. அந்நெறி இந்நெறி என்னாதட் டாங்கத்
தன்னெறி சென்று சமாதியி லேநின்மின்
நன்னெறி செல்வார்க்கு ஞானத்தி லேகலாம்
புன்னெறி யாகத்திற் போக்கில்லை யாகுமே. 551

अन्नॆऱि इन्नॆऱि एन्नादट्टांगत्-
तन्नॆऱि चॆन्ऱु समाधियिले निन्मिन्
नन्नॆऱि चॆल्वार्क्कु ञानत्तिलेकलाम्
पुन्नॆऱि यागत्तिऱ् पोक्किल्लैयागुमे । मंत्र-संख्या, 551

वृथा है द्विधा इस-उस मार्ग की
जबकि सामने है
राजमार्ग अष्टांगयोग का
पार कर आठ सोपान
पाएँगे समाधि का आनंद
स्थिर रहेंगे शाश्वत आनंद में
चलेगा जो भी इस सन्मार्ग पर
पहुंच जाएगा ज्ञान के शिखर पर
फिर पट जाएगा वह क्षुद्र-मार्ग
नव्य योनि-प्रवेश का, आवागमन का । 551

124. இயம நியமமே எண்ணிலா ஆதனம்
நயமுறு பிராணாயா மம்பிரத்தி யாகாரஞ்
சயமிகு தாரணை தியாணஞ் சமாதி
அயமுறும் அட்டங்க மாவது மாமே. 552

इयम नियममे ऍण्णिला आदनम्
नयमुरु पिराणायामम् पिरत्तियागारम्
चयमिगु तारणै तियानम् समादि
अयमुरुम् अट्टाङ्गमावदुमामे । मंत्र-संख्या, 552

यम, नियम, आसन अगणित
करणीय प्राणायम, प्रत्याहार के साथ
धारणा, ध्यान और समाधि
यह है सन्मार्ग-दर्शक अष्टांग योग । 552

125. கொல்லான்பொய் கூறான் களவிலான் எண்குணன்
நல்லான் அடக்க முடையான் நடுச்செய்ய
வல்லான் பகுந்துண்பான் மாசிலான் கட்காமம்
இல்லான் இயமத் திடையில்நின் றானே. 554

कॊल्लान् पॊय्कूरान् कळविलान् ऍण्गुणन्
नल्लान् अडक्क मुडैयान् नडुच्चॆय्य
वल्लान् पगुत्तुण्बान् माशिलान् कट्कामम्
इल्लान् इयमत्तिडैयिल् निन्राने । मंत्र-संख्या, 554

जीवन में जो 'यम' का करता है पालन
हिंसा नहीं करता वह, बोलता नहीं अनृत वचन
होता है गुणसंपन्न, सज्जन, विनयशील
न्याय पर चलता है, बाँट कर खाता है
रहता है दूर मद्य-पान से, कामवासना से । 554

126. தூய்மை அருளூண் சுருக்கம் பொறைசெவ்வை
வாய்மை நிலைமை வளர்த்தலே மற்றிவை
காமங் களவு கொலையெனக் காண்பவை
நேமியீ ரைந்து நியமத்த னாமே. 556

तूय्मै अरुळूण् चुरुक्कम् पॊऱै चॆव्वै
वाय्मै निलैमै वळत्तलि मट्रिवै

कामम् कळ्वु कॉलैयॅनक् काण्बवै
नेमियीरैन्दु नियमत्तनामे । *मंत्र-संख्या, 556*

'यम' के बाद 'नियम' के
दस अभिलक्षण हैं–
बाह्य और आंतरिक शुद्धि
करुणा, मिताहार, क्षमाशीलता
स्पष्टवादिता, सच्चाई दृढ़ता के साथ
हिंसा और चोरी न करना
तथा दूर रहना कामवासना से । *556*

127. தவஞ்செபஞ் சந்தோடம் ஆத்திகந் தானஞ்
சிவன்றன் விரதமே சித்தாந்தக் கேள்வி
மகஞ்சிவ பூசையொண் மதிசொல்லீர் ஐந்து
நிவம்பல செய்யின் நியமத்த னாமே. *557*

तवम् जपम् सन्तोडम् आत्तिकम् दानम्
शिवन् तन् विरदमे सित्तान्नक् केळ्वि
मकम् शिवपूसैयॉण् मति चॉल्लीर् ऐन्दु
निवम् पल चॅय्यिन् नियमत्तनामे । *मंत्र-संख्या, 557*

शिवंकर है पंथ नियम का
जप-तप के संग प्रसाद मन का
शिव का व्रत, दान-पूर्वक आस्था
यजन, पूजन, श्रवण सिद्धांत का
सदा पालन सद्विचार का –
यों दश-व्रत का पालन नियम है । *557*

128. ஓரணை யப்பத மூருவின் மேலேறிட்
டார வலித்ததன் மேல்வைத் தழகுறச்
சீர்திகழ் கைகள் அதனைத்தன் மேல்வைக்கப்
பார்திகழ் பத்மா சனமென லாகுமே. *559*

ओरणै यप्पद मूरुविन् मेलेरि़ट्
टार वलित्तदन् मेल् वैत्तऴ गुऱच्
चीर् तिगऴ् कैगळ् अदनैत् तन्मेल् वैक्कप्
पार् तिगऴ् पद्मासन मंनलागुमे । मंत्र-संख्या, 559

अवस्थित हैं दोनों पाँव
एक-दूसरे ऊरु पर विलोम में
दिख रहे युगल तलुए उपरि-तल में
सुभग करयुगल सोह रहे मध्य में
तन कर बैठे हैं मेरुदंड है सीध में
यही भंगिमा है चारु पद्मासन की । 559

129. துரிசில் வலக்காலைத் தோன்றவே மேல்வைத்து
அரிய முழந்தாளி லங்கையை நீட்டி
உருசி யொடுமுடல் செவ்வே யிருத்திப்
பரிசு பெறுமது பத்திரா சனமே. 560

तुरिसिल् वलक्कालेत् तोन्ऱवे मेल् वैत्तु
अरिय मुऴन्नाळिल् अंकैये नीट्टि
उरुचि यॊडुमुडल् चॆव्वेयिरुत्तिप्
परिशु पॆऱुमदु पत्तिरासनमे । मंत्र-संख्या, 560

दायां पांव धरा है वाम ऊरु पर
दिख रहा तलुआ ऊरुमूल से
सोह रही सुभग हथेलियां जानुदेश में
बैठे हैं तनकर मेरुदंड है सीध में
अभिधान इसी का है भद्रासन । 560

130. ஒக்க அடியிணை யூருவில் ஏறிட்டு
முக்கி யுடலை முழங்கை தனில்ஏற்றித்
தொக்க அறிந்து துளங்கா திருந்திடிற்
குக்குட ஆசனங் கொள்ளலு மாமே. 561

आंक्क अडियिणै यूरुविल् एरिट्टु
मुक्कि युडलै मुळ्कै तनिल् एट्रित्
तांक्क अरिन्दु तुळंगा दिरुन्दिडिल्
कुक्कुड आसनम् कांळ्ळलुमामे । मंत्र-संख्या, 561

जमे रहें युगल तलुए ऊरुमूल में
पूरित कर सांस उठालें देह को
टिका हो भार सारा तनी कोहनी पर
धीरता से स्थित रहें इसी भंगिमा में
विश्रुत यही है कुक्कुटासन । 561

131. பாத முழுந்தாளிற் பாணி களைநீட்டி
ஆதர வோடும்வாய் அங்காந் தழகுறக்
கோதில் நயனங் கொடிமூக்கி லேயுறச்
சீர்திகழ் சிங்கா தனமெனச் செப்புமே. 562

पादमुळ्न्दाळिऱ् पाणिगळै नीट्टि
आदरवोडुम् वाय् अङ्गान्दळ्गुऱ
कोदिल् नयनम् कांडिमूक्किलेयुऱ
चीर् तिगळ् चिंगादन मेनच् चेप्पुमे । मंत्र-संख्या, 562

पैरों की पिंडली पर
धर लें दोनों हाथ
फिर बैठ जाएँ ऊर्ध्वमुख होकर
खुला रहे मुख भंगिमा से
दृष्टि स्थिर रहे नासाग्र पर
कहलाता है यही 'सिंहासन' विख्यात । 562

132. ஆரிய நல்லன் குதிரை இரண்டுள
வீசிப் பிடிக்கும் விரகறி வாரில்லை
கூரிய நாதன் குருவின் அருள்பெற்றால்
வாரிப் பிடிக்க வசப்படுந் தானே. 565

आरिय नल्लन् कुदिरै इरण्डुळ
वीशिप् पिडिक्कुम् विरगरिवारिल्लै
कूरिय नादन् गुरुविन् अरुळ् पॅट्राल्
वारिप् पिडिक्क वशप्पडुम् ताने । मंत्र-संख्या, 565

मानव है तो श्रेष्ठ
दो अश्वों का स्वामी - इडा और पिंगला का,
किंतु नहीं आता उनपर नियंत्रण
पूरक-कुंभक-रेचक के उचित अनुपात में
श्वास-अश्वों को चलाना नहीं आता
सद्गुरु का अनुग्रह पाकर
जब साधा जाता है प्राण-अश्वों को
तब वे स्वयं सध जाते हैं । 565

133. புள்ளினும் மிக்க புரவியை மேற்கொண்டாற்
கள்ளுண்ண வேண்டாந் தானே களிதருந்
துள்ளி நடப்பிக்குஞ் சோம்பு தவிர்ப்பிக்கும்
உள்ளது சொன்னோம் உணர்வுடை யோருக்கே. 566

पुळ्ळिनुम् मिक्क पुरवियै मेर्कॉण्डार्
कळ्ळुण्ण वेण्डाम् ताने कळि तरुम्
तुळ्ळि नडप्पिक्कुम् चोम्बु तविर्पिक्कुम्
उळ्ळदु चॉन्नोम् उणर्वुडै योरुक्के । मंत्र-संख्या, 566

साध लो प्राण का तुरग
उड़ रहा जो पंछी की त्वरा से
सध जाए यदि प्राण का अश्व
मद्य से क्या काम, सर्वत्र उल्लास है,
दूर हो जाता आलस्य,
सुनाऊं बात सांची विज्ञजन को नेह से । 566

134. ஏறுதல் பூரகம் ஈரெட்டு வாமத்தால்
ஆறுதல் கும்பம் அறுபத்து நாலதில்
ஊறுதல் முப்பத் திரண்டதி ரேசகம்
மாறுதல் ஒன்றின்கண் வஞ்சக மாமே. 568

एरुदल् पूरकम् ईरेट्टु वामत्ताल्
आरुदल् कुम्बम् अरुपत्तु नालदिल्
ऊरुदल् मुप्पत्ति रण्डति रेचकम्
मारुदल् ऑन्रिन् कण् वंचकमामे । मंत्र-संख्या, 568

भरलो षोडश मात्रा की सांस
वाम नासा-पुट से पूरक में
कुंभक में रोक लो सांस कलापर्यंत
बंद कर युगल नासा-पुट
रिक्त कर दो श्वास
बत्तीस मात्रा रेचक में
यों चलती रहे सांस लोम-विलोम में,
प्राण का यह आयाम है । 568

135. எங்கே இருக்கினும் பூரி இடத்திலே
அங்கே யதுசெய்ய ஆக்கைக் கழிவில்லை
அங்கே பிடித்தது விட்டள வுஞ்செல்லச்
சங்கே குறிக்கத் தலைவனு மாமே. 570

एङ्गे इरुक्किनुम् पूरि इडत्तिले
अङ्गे यदु चॅय्य आक्कैक् कऴिविल्लै
अङ्गे पिडित्तदु विट्टनवुम् चॅल्ल
चङ्गे कुरिक्कत् तलैवनुमामे । मंत्र-संख्या, 570

जहां भी रहो पूरित करलो वाम से
चले सिलसिला कुंभक-रेचक का
समुचित मात्रा में लोम-विलोम में
यों सतत अभ्यास से

बनती काया अजर-अमर
होता अनहद-नाद शंख-भेरी का
तब बनोगे योगियों में अग्रणी । 570

136. ஏற்றி இறக்கி இருகாலும் பூரிக்குங்
காற்றைப் பிடிக்குங் கணக்கறி வாரில்லை
காற்றைப் பிடிக்குங் கணக்கறி வாளர்க்குக்
கூற்றை யுதைக்குங் குறியது வாமே. 571

एट्रि इऱक्कि इरुकालुम् पूरिक्कुम्
काट्रैप् पिडिक्कुम् कणक्करि वारिल्लै
कवारिल्लैट्रैप् पिडिक्कुम् कणक्करिवाळ्क्कु
कूट्रै उदैक्कुम् कुरियदुवामे । मंत्र-संख्या, 571

नहीं जानते उपाय
प्राणवायु को साधने का
रेचक, पूरक और कुंभक के
उचित अनुपात में,
जिन्हें होता है विशिष्ट ज्ञान
प्राण-संधान का, समर्थ होते हैं वे
काल को लात मारने में,
उसकी अवहेलना करने में ! 571

137. மேல்கீழ் நடுப்பக்க மிக்குறப் பூரித்துப்
பாலாம் இரேசகத் தாலுட் பதிவித்து
மாலாகி யுந்தியுட் கும்பித்து வாங்கவே
ஆலாலம் உண்டான் அருள்பெற லாமே. 572

मेल् कीऴ् नडुप्पक्क मिक्कुरप् पूरित्तुप्
पालाम् इरेचकत्तालुट् पदिवित्तु
मालागि युन्दियुट् कुम्बित्तु वांगवे
आलालम् उणन अरुळ् पेरलामे । मंत्र-संख्या, 572

पूरित कर लो यों श्वास को
व्यापे समान-रूप से प्राण
ऊर्ध्व-मध्य-निम्न देश में
कुंभक संचरित करे वह
जठर संग नाभिदेश में
अंगीभूत कर वांछित मात्रा
मुक्त करो रेचक में शेष
सुलभ होगा सदा अनुग्रह
हलाहलपायी का । 572

138. புறப்பட்டுப் புக்குத் திரிகின்ற வாயுவை
நெறிப்பட வுள்ளே நின்மல மாக்கில்
உறுப்புச் சிவக்கும் உரோமங் கறுக்கும்
புறப்பட்டுப் போகான் புரிசடை யோனே. 575

पुऱप्पट्टुप् पुक्कुत् तिरिकिन्ऱ वायुवै
नॆरिप्पड उळ्ळे निन्मल माक्किल्
उरुप्पुच् चिवक्कुम् उरोमम् करुक्कुम्
पुऱप्पट्टुप् पोकान् पुरिचडैयोने । मंत्र-संख्या, 575

बहिर्गत होती है, स्वच्छंद विचरती है
रोक लो अंदर बना दो निर्मल
विधिवत् आयाम के अभ्यास से
अंग अंग में अरुणिम आभा
रोमराजि में श्यामल शोभा
होगा नहीं बहिर्गत प्राणेश । 575

139. கூடம் எடுத்துக் குடிபுக்க மங்கையர்
ஓடுவர் மீளுவர் பன்னிரண் டங்குலம்
நீடுவர் எண்விரல் கண்டிப்பர் நால்விரல்
கூடிக் கொளிற்கோல அஞ்செழுத் தாமே. 576

कूडम् ऍडुत्तुक् कुडिपुक्क मंगैयर्
ओडुवर् मीळुवर् पन्निरण्डंगुलम्
नीडुवर् ऍण्विरल् कण्डिप्पर् नाल्विरल्
कूडिक् कॊळ्ळिर्कोल अंचॆऴुत्तामे । मंत्र-संख्या, *576*

चंचल होते हुए भी सयानी हैं
देह-भवन में व्याप्त दो वनिता
इडा-पिंगला
चचंल यों कि लगा है तांता
भीतर-बाहर चलने का
सयानी यों कि जानती हैं
भीतर आती हैं बारह अंगुल
बचाकर अंगुल चार
बाहर जाती हैं आठ ही अंगुल
यों संचित होती है श्वास-निधि
बनता है भवन का स्वामी
मृत्युंजय
पंचाक्षर-परमेश्वर-सा । *576*

140. மூலத் திருவிரல் மேலுக்கு முன்நின்ற
பாலித்த யோனிக் கிருவிரற் கீழ்நின்ற
கோலித்த குண்டலி யுள்ளேழுஞ் செஞ்சுடர்
ஞாலத்து நாபிக்கு நால்விரற் கீழதே. 580

मूलत्तिरुविरल् मेलुक्कु मुन् निन्ऱ
पालित्त योनिक्किरुविरऱ् कीऴ् निन्ऱ
कोलित्त कुंडलियुळ्ळे यॆळुम् चॆञ्चुडर्
ञालत्तु नाबिक्कु नाल्विरऱ् कीऴदे । मंत्र-संख्या, *580*

मूलाधार से दो अंगुल उपरितल पर
गुह्यदेश से तनिक नीचे दो अंगुल पर

नाभि से चार अंगुल अधोभाग में
अवस्थित है गोलाकार कुंडलिनी
उत्थित है अरुणिम ज्योति-सी । 580

141, நாசிக் கதோமுகம் பன்னிரண் டங்குலம்
நீசித்தம் வைத்து நினையவும் வல்லையேல்
மாசித்த மாயோகம் வந்து தலைப்பெய்துந்
தேகத்துக் கென்றுஞ் சிதைவில்லை யாமே. 581

नाशिक्कदोमुगम् पन्निरण्डङ्गुलम्
नीचित्तम् वैत्तु निनैयवुम् वल्लैयेल्
माचित्त मायोगम् वन्दु तलैप्र्पय्र्दुम्
देहत्तुक्कॅन्रुम् चिदैविल्लैयामे । मंत्र-संख्या, 581

स्थिर करो निज दृष्टि
नासाग्र से बारह अंगुल नीचे
चित्त लय के साथ ध्यान करो
स्वयं ही संप्राप्त होंगी महासिद्धियाँ
कहलाओगे महायोगी
अनश्वर बनेगी निज देह । 581

142. மூலத் துவாரத்தை மொக்கர மிட்டிரு
மேலைத் துவாரத்தின் மேல்மனம் வைத்திரு
வேலொத்த கண்ணை வெளியில் விழித்திரு
காலத்தை வெல்லும் கருத்திது தானே. 583

मूलत् तुवारत्तै मॉक्कर मिट्टिरु
मेलैत् तुवारत्तिन् मेल् मनम् वैत्तिरु
वेलॉत्त कण्णै वॅळियिल् विऴित्तिरु
कालत्तै वॅल्लुम् करुत्तिदु ताने । मंत्र-संख्या, 583

मूलबंध लगा लो हो मेरुदंड सीध में
केन्द्रित करो ध्यान को सहस्रार में,

टिके रहें नेत्र-युग्म बर्छी सम शून्य में
उपाय यह अमोघ है काल पर विजय का । 583

143. புறப்பட்ட வாயுப் புகவிடா வண்ணந்
திறப்பட்டு நிச்சயஞ் சேர்ந்துடன் நின்றால்
உறப்பட்டு நின்றது உள்ளமும் அங்கே
புறப்பட்டுப் போகான் பெருந்தகை யானே. 586

पुऱप्पट्ट वायुप् पुगविडा वण्णम्
तिऱप्पट्टु निच्चयम् चेर्न्दुडन् निन्ऱाल्
उऱप्पट्टु निन्ऱदु उळ्ळमुम् अंगे
पुऱप्पट्टुप् पोकान् पॆरुन्नगैयाने । मंत्र-संख्या, 586

युक्ति करें ऐसी कि जिससे
रिक्त न होवे पूर्ण रूप से
निवर्तमान निःश्वास,
ज्यों-ज्यों संचित होती श्वास-निधि
त्यों-त्यों चित्त-वृत्ति भी होती शांत
निश्चित है बहिर्गत न होगा प्राणेश । 586

144. மேலை நிலத்தினாள் வேதகப் பெண்பிள்ளை
மூல நிலத்தில் எழுகின்ற மூர்த்தியை
ஏல எழுப்பி இவளுடன் சந்திக்கப்
பாலனும் ஆவான் பராநந்தி ஆணையே. 590

मेलै निलत्तिनाळ् वेदगप् पॆण्पिळ्ळै
मूल निलत्तिल् ऍऴुगिन्ऱ मूर्त्तियै
एल एऴुप्पि इवळुडन् चन्दिक्कप्
पालनुम् आवान् परानन्दि आणैये । मंत्र-संख्या, 590

वेदस्वरूपिणी पराशक्ति है
निवास उसका सहस्रार में
इधर सुप्त है इष्ट-मूर्ति

मूलाधार में
जगाकर उसे ले जाएं
सहस्रार में धीरे-धीरे
हो जाने दो दोनों का मिलन
फिर देखो पारस का वह चमत्कार
वाह ! तुम बन गए चिर युवा
सौगंध है उस परम नन्दी की
यह सत्य है, सदा सर्वदा सत्य है । 590

145. கலந்த உயிருடன் காலம் அறியில்
கலந்த உயிரது காலின் நெருக்கங்
கலந்த உயிரது காலது கட்டிற்
கலந்த உயிருடல் காலமும் நிற்குமே. 592

कलन्द उयिरुडऩ् कालम् अऱियिल्
कलन्द उयिरदु कालिल् नॆरुक्कम्
कलन्द उयिरदु कालदु कट्टिऱ्
कलन्द उयिरुडल् कालमुम् निऱ्कुमे । मंत्र-संख्या, 592

काल-मात्रा और अनुपात में
श्वास का सम्यक् नियमन
प्राणायाम-साधना है;
प्राणशक्ति तब सघन बनती है
तन-प्राण में
वायु को, प्राणशक्ति को जो साधे
अविनश्वर रहता है चिरकाल तक
उसका तन भी, प्राण भी । 592

146. வாய்திற வாதார் மனத்திலோர் மாடுண்டு
வாய்திறப் பாரே வளியிட்டுப் பாய்ச்சுவர்
வாய்திற வாதார் மதியிட்டு மூட்டுவர்
கோய்திற வாவிடிற் கோழையுமாமே. 593

वाय़् तिऱवादाऱ् मनत्तिलोऱ् माडुण्डु
वाय़् तिऱप्पारे वळियिट्टुप् पाय़्च्चुवऱ्
वाय़् तिऱवादाऱ् मदियिट्टु मूट्टुवऱ्
कोय़् तिऱवाविडिल् कोऴैयुमामे । मंत्र-संख्या, 593

जिनके हृदय में आप हैं
वे अपना मुंह नहीं खोलते;
जो अपना मुंह सदा खोलते हैं
व्यर्थ करते हैं अपनी प्राणशक्ति
मौनी साधक कुंडलिनी को
ले जाते हैं भ्रूमध्य में
जहाँ ज्ञाननेत्र खुल जाता है
खुल न पाए तृतीय नेत्र
तो व्यर्थ है साधना । 593

147. நிரம்பிய ஈரைந்தில் ஐந்திவை போனால்
இரங்கி விழித்திருந் தென்செய்வை பேதாய்
வரம்பினைக் கோலி வழிசெய்கு வார்க்குக்
குரங்கினைக் கொட்டை பொதியலு மாமே. 595

निरम्बिय ईरैन्दिल् ऐन्दिवै पोनाल्
इरङ्गि विऴित्तिरुन्दॆन् चॆय़्वै पेदाय़्
वरम्बिनैक् कोलि वऴि चॆय़्गुवार्क्कु
कुरङ्गिनैक् कॊट्टै पॊदियलुमामे । मंत्र-संख्या, 595

शरीर के अंदर भरे
दस वायु में से पंचप्राण–
(प्राण, अपान, व्यान, उदान, और समान)
पांच वायु गंवा रहे हो व्यर्थ में
जीवन भर प्राणायाम साधना बिन
अरे मूर्ख! जागरण और प्रार्थना से

सिद्ध नहीं होता प्रयोजन;
प्राणायाम साधना से
सीमा की सुरक्षा करनेवाला
मन-मर्कट को देह-दुर्ग में
बांधने में होता है सफल । 595

148. ஒருபொழு துன்னார் உடலோ டுயிரை
ஒருபொழு துன்னார் உயிருட் சிவனை
ஒருபொழு துன்னார் சிவனுறை சிந்தையை
ஒருபொழு துன்னார் சந்திரப் பூவே. 601

ऑरुपॊऴ् ुदुन्नार् उडलोडुयिरै
ऑरुपॊऴ् ुदुन्नार् उयिरुट् चिवनै
ऑरुपॊऴ् ुदुन्नार् शिवनुऱै चिन्तैयै
ऑरुपोऴ् ुदुननार् चन्दिरप् पूवे । मंत्र-संख्या, 601

तनिक भी इनके ध्यान में आता नहीं
इस काया में स्पंदित एक जीव भी है
तनिक भी इनके ध्यान में आता नहीं
इस जीव में विलसता हुआ शिव भी है
तनिक भी इनके ध्यान में आता नहीं
श्रद्धा और आस्था शिव के प्रति चाहिए
तनिक भी इनके ध्यान में आता नहीं
सुन्नमंडल में एक चंद्र-पुष्प है । 601

149. எண்ணா யிரத்தாண்டு யோகம் இருக்கினும்
கண்ணார் அமுதினைக் கண்டறி வாரில்லை
உண்ணாடிக் குள்ளே ஒளியுற நோக்கினால்
கண்ணாடி போலக் கலந்துநின் றானே. 603

ऍण्णायिरत्ताण्डु योगम् इरुक्किनुम्
कण्णार् अमुदिनैक् कण्डऱि वारिल्लै

उण्णाडिक्कुळ्ळे ओळियुऱ् नोक्किनाळ्
कण्णाडि पोलक् कलन्दु निन्ऱाने । मंत्र-संख्या, 603

आठ सहस्र वर्ष पर्यंत
योग-साधना करने पर भी
अलख ही रहेगा अमृततुल्य परमेश्वर
देख नहीं पाओगे नयनाभिराम प्रभु को;
ज्ञान की ज्योति जगाकर
अंतस में ढूंढो तो
सहज ही होगा उसका दर्शन
दर्पण में देख रहे हो ज्यों
प्राण में मिला है वह प्राणेश्वर । 603

150. நாட்டம் இரண்டும் நடுமூக்கில் வைத்திடில்
வாட்டமும் இல்லை மனைக்கும் அழிவில்லை
ஓட்டமும் இல்லை உணர்வில்லை தானில்லை
தேட்டமும் இல்லை சிவனவ னாமே. 604

नाट्टम् इरण्डुम् नडुमूक्किल् वैत्तिडिल्
वाट्टमुम् इल्लै मनैक्कुम् अऴिविल्लै
ओट्टमुम् इल्लै उणर्विल्लै तानिल्लै
तेट्टमुम् इल्लै शिवनवनामे । मंत्र-संख्या, 604

दोनों दृग स्थिर हो जाएँ
नासाग्र में एकाग्र
नहीं रहेगा दुख-संताप
अक्षुण्ण रहेगा देहायतन
नहीं रहेगी चंचलता, अस्थिरता
खोज और तलाश होगी समाप्त,
चेतना स्वयं की होगी विलुप्त
जीव स्वयं बनेगा शिव
अहम् नहीं रहेगा शिव ही रहेगा । 604

151. மணிகடல் யானை வார்குழல் மேகம்
அணிவண்டு தும்பி வளைபேரி கையாழ்
தணிந்தெழு நாதங்கள் தாமிவை பத்தும்
பணிந்தவர்க் கல்லது பார்க்கஒண் ணாதே. 606

मणिकडल् यानै वार्कुऴल् मेगम्*
अणिवण्डु तुम्बि वळै पेरिगै याऴ्
तणिन्देऴु नादंगळ् तामिवै पत्तुम्
पणिन्दवर्क्कल्लदु पार्क्क ऑण्णादे । मंत्र-संख्या, 606

सागर, गज, मेघ का गर्जन
शंख भेरी घोष भ्रमर का गुंजार
घण्टा, वंशी नाद के संग तंत्री निनाद
सांद्र स्वर में ये दश-विध निनाद
श्रुतिगोचर होता है उन्हें
जिनका चित्त लय हो चुका है ईश में । 606

152. கடலொடு மேகங் களிறொடும் ஓசை
அடவெழும் வீணை அண்டரண் டத்துச்
சுடர்மன்னு வேணுச் சுரிசங்கின் ஓசை
திடமறி யோகிக்கல் லாற்றெரி யாதே. 607

कडलॊडु मेगम् कळिरॊडुम् ओशै
अडवॆऴुम् वीणै अण्डरण्डत्तुच्
चुडर् मन्नु वेणुच् चुरिचंगिन् ओशै
तिडमरि योगिक्कल् लाट्रॆरियादे । मंत्र-संख्या, 607

धन्य है वे अंतर्योगी
जिन्हें सुनाई देता है अनहद नाद
समुद्र, मेघ-गर्जन के साथ हाथी की चिंघाड़
वीणा, वेणु निनाद के संग
शंख का सुमधुर घोष
सुन्नमंडल में । 607

153. உதிக்கின்ற ஆறினும் உள்ளங்கி ஐந்துந்
துதிக்கின்ற தேசுடைத் தூங்கிருள் நீங்கி
அதிக்கின்ற ஐவருள் நாதம் ஒடுங்கக்
கதிக்கொன்றை ஈசன் கழல்சேர லாமே. 610

उदिक्किन्ऱ आऱिनुम् उळ्ळंगि ऐन्दुम्
तुदिक्किन्ऱ तेसुडैत् तूंगिरुळ् नींगि
अदिक्किन्ऱ ऐवरुळ् नादम् ओडुंग
कदिक्कॊन्ऱै ईशन् कऴल् चेरलामे । मंत्र-संख्या, 610

महाज्योति के भव्य तेज में
दीप्त हैं षडाधार
सुलग रही पंचाग्नि अंतस् में
नष्ट हो गया सकल तिमिर
प्रसुप्त हैं इन्द्रियां तन्मात्राओं में
नाद का भी हो गया लय
ऐसे महालय की वेला में
ईश-चरण ही एक शरण । 610

154. பள்ளி அறையிற் பகலே இருளில்லை
கொள்ளி அறையிற் கொளுந்தாமற் காக்கலாம்
ஒள்ளி தறியிலோ ரோசனை நீளிது
வெள்ளி அறையில் விடிவில்லை தானே. 611

पळ्ळि अऱैयिले पगले इरुळिल्लै
कॊळ्ळि अऱैयिऱ् कॊळुन्दामऱ् काक्कलाम्
ऒळ्ळि तऱियिलो रोचनै नीळिदु
वॆळ्ळि अऱैयिल् विडिविल्लै ताने । मंत्र-संख्या, 611

सहस्रार मंडल के
शयनकक्ष में
दिन ही दिन है
रात का कहीं नहीं है नाम

नहीं आवश्यकता देह को
ध्वस्त करने की अग्नि में,
प्रकाशमय ज्ञान प्राप्त होने पर
बना रहता है शिवध्यान
मृत्यु का कहीं नहीं है नाम
ज्योति-जगत् में सदा प्रकाश है,
प्रभा का कहीं नहीं है अंत । 611

155. முக்குண மூடற வாயுவை மூலத்தே
சிக்கென மூடித் திரித்துப் பிடித்திட்டுத்
தக்க வலமிடம் நாழிகை சாதிக்க
வைக்கும் உயர்நிலை வானவர் கோனே. 615

मुक्कुण मूडऱ् वायुवै मूलत्ते
चिक्कॆन मूडित् तिरित्तुप् पिडित्तिट्टुत्
तक्क वलमिडम् नाऴिगै सादिक्क
वैक्कुम् उयर् निलै वानवर् कोने । मंत्र-संख्या, 615

निर्मार्जन होने पर गुण-त्रय का
बंध लगाएं मूलाधार में
पलट दें फिर श्वास की गति
इड़ा पिंगला के मार्ग से
साध ले जो यह विद्या
ध्यान कर नियत मात्रा का
अमर रहेगा धरणीतल पर
सदाशिव के अनुग्रह से । 615

156. அறிவாய சத்தென்னு மாறா றகன்று
செறிவான மாயை சிதைத்தரு ளாலே
பிறியாத பேரரு ளாயிடும் பெற்றி
நெறியான அன்பர் நிலையறிந் தாரே. 617

अऱिवायसत्तंन्नुम् आऱाऱकन्ऱु
चंऱिवान मायै चिदैत्तरुळाले
पिऱियाद पेररुळायिडुम् पंद्रि
नंऱियान अन्बर् निलै यऱिन्दारे । मंत्र-संख्या, 617

छत्तीस तत्वों के पार पहुंचने पर
हट जाता है माया का सघन पट
बोध होता है
ज्योतिर्मय ज्ञान से स्वयं की अभिन्नता का
सुखद उपलब्धि यह
प्राप्त होती है ध्यान की चरम दशा में । 617

157. விந்துவும் நாதமும் மேருவில் ஓங்கிடிற்
சந்தியி லான சமாதியிற் கூடிடும்
அந்த மிலாத அறிவின் அரும்பொருள்
சுந்தரச் சோதியுந் தோன்றிடுந் தானே. 619

विन्दुवुम् नादमुम् मेरुविल् ओङ्गिडिर्
चन्दियिलान् समादियिर् कूडिडुम्
अन्दमिलाद अऱिविन् अरुम् पोरुळ्
सुन्दरच् चोतियुम् तोन्ऱिडुम् ताने । मंत्र-संख्या, 619

सहस्रार रूपी मेरुशिखर पर
जब होता है संयोग नाद-बिंदु का
तब सिद्ध होती है समाधि
इस संयोग से
साक्षात्कार होता है
दिव्य, मंगलज्योति का
जो कि पुंजीभूत रूप है अनन्त का । 619

158. மன்மனம் எங்குண்டு வாயுவும் அங்குண்டு
மன்மனம் எங்கில்லை வாயும் அங்கில்லை

மன்மனத் துள்ளே மகிழ்ந்திருப் பார்க்கு
மன்மனத் துள்ளே மனோலய மாமே. 620

मन्मनम् ऍड्गुण्डु वायुवुम् अड्गुण्डु
मन्मनम् ऍड्गिल्लै वायुवुम् अड्गिल्लै
मन्मनत्तुळ्ळे मगिऴ् न्दिरुप्पार्क्कु
मन्मनत्तुळ्ळे मनोलयमामे । मंत्र-संख्या, 620

मनोयोग जहां है स्पंदित है प्राण वहां
मनोयोग जहां नहीं है प्राण का चैतन्य नहीं है
साधकर मनोयोग मुदित रहते हैं जो
उन्मनी दशा में मनोलय पाते हैं
शिवगुरु के चरण-युगल में । 620

159. விண்டலர் கூபமும் விஞ்சத் தடவியுங்
கண்டுணர் வாகக் கருதி யிருப்பர்கள்
செண்டு வெளியிற் செழுங்கிரி யத்திடை
கொண்டு குதிரை குசைசெறுத் தாரே. 621

विण्डलर् कूपमुम् विंचत् तडवियुम्
कण्डुणवगिक् करुदि यिरुप्पर्गळ्
चॆण्डु वॆळियिर् चॆऴुंगिरि यत्तिडै
कॊण्डु कुदिरै कुशै चॆरुत्तारे । मंत्र-संख्या, 621

सिद्ध होती है जब समाधि
लक्षित होते हैं अद्‌भुत दृश्य
सुन्नमंडल में
मनोज्ञ है कमल-सरोवर गिरिशृंग में
हो रहा स्वच्छंद विचरण गुह्य वन प्रान्तर में
स्थिर है प्राण आज्ञा में
निश्चल हैं श्वास के अश्व
बंधी हैं जिनकी बागडोर
सुमेरु की इस उपत्यका में । 621

160. பூட்டொத்து மெய்யிற் பொறிபட்ட வாயுவைத்
தேட்டற்ற வந்நிலஞ் சேரும் படிவைத்து
நாட்டத்தை மீட்டு நயனத் திருப்பார்க்குத்
தோட்டத்து மாம்பழந் துங்கலு மாமே. 624

पूट्टॊत्तु मॆय्यिऱ् पॊऱिपट्ट वायुवैत्
तेट्टट्र वन्निलम् चेरुम्पडि वैत्तु
नाट्टत्तै मीट्टु नयनत्तिरुप्पार्क्कु
तोट्टत्तु माम्बऴम् तूंगलुमामे । मंत्र-संख्या, 624

संभरित कर श्वास मूलाधार में
कर देते हैं मूलबंध, ज्यों बंद किया हो ताले में
ले जाते हैं योग-युक्ति से
उस मंडल में जहां मिट गई है चाह
लगाए रखते हैं ध्यान लक्ष्य पर
तब मिलता है आनन्द का फल
ज्यों बगिया का आम है
चख कर जिसे मग्न रहते हैं मोद में । 624

161. மூலத்து மேலது முச்சது ரத்தது
காலத் திசையிற் கலக்கின்ற சந்திநில்
மேலைப் பிறையினில் நெற்றிநேர் நின்ற
கோலத்தின் கோலங்கள் வெவ்வேறு கொண்டதே. 627

मूलत्तु मेलदु मुच्चतुरत्तदु
कालत् तिसैयिऱ् कलक्किन्ऱ चन्दिनिल्
मेलैप् पिऱैयिनिल् नॆट्रि नेर् निन्ऱ
कोलत्तिन् कोलंगळ् वॆव्वेरु कॊण्डदे । मंत्र-संख्या, 627

शोभायमान हैं मूलाधार के ऊपर
त्रिकोण आकार चक्र
संयोजित कर श्वास पहुँचें सहस्रार
मिलन-स्थली दिशा-काल की

ज्योतित है भाल-मध्य में
अमृत-किरण बरसाता चंद्र
लक्षित होते हैं यहां से
रंग-बिरंगे अनुपम दृश्य । 627

162. கற்பனை யற்றுக் கனல்வழி யேசென்று
சிற்பனை எல்லாஞ் சிருட்டித்த பேரொளிப்
பொற்பினை நாடிப் புணர்மதி யோடுற்றுத்
தற்பர மாகத் தகுந்தண் சமாதியே. 628

कर्पनैयट्रुक् कनल् वऴिये चेन्रु
चिर्पनै यल्लाम् सिरुट्टित्त पेरोळिय्
पोर्पिनै नाडिप् पुणर् मतियोडुट्रुत्
तर्परमागत् तगुन्दण् समादिये । *मंत्र-संख्या, 628*

रोक दें चित्तवृत्तियां संकल्प-विकल्प
बढ़ते चलें कुंडलिनी के अग्निपथ पर
ललक लेकर प्रिय मिलन की
महाज्योति वह सृष्टिरचना का बीज
पाकर अमृत चंद्रकला से सुन्नमहल में
स्वयं बन गए शिव-स्वरूप
क्या कहिए समाधि-सुख का, सांत बने अनंत । 628

163. தலைப்பட் டிருந்திடத் தத்துவங் கூடும்
வலைப்பட் டிருந்திடும் மாதுநல் லாளுங்
குலைப்பட் டிருந்திடுங் கோபம் அகலுந்
துலைப்பட் டிருந்திடுங் தூங்கவல் லார்க்கே. 629

तलैप्पट्टिरुन्दिडत् तत्तुवम् कूडुम्
वलैप्पट्टिरुन्दिडुम् मादु नल्लाळुम्
कुलैप्पट्टिरुन्दिडुम् कोपम् अगलुम
तुलैप्पट्टिरुन्दिडुम् तूंग वल्लार्क्के । *मंत्र-संख्या, 629*

सिद्ध हुई जब समाधि उपलब्ध हुआ शिव
सुखद इस संयोग में स्तुत्य है
(कुंडलिनी) शक्ति का सहयोग
बांधे रही प्राण को जो सहस्रार में
शमित है क्रोध, चित्त में प्रशांति
अद्भुत यह अनुभव लब्ध है उन्हें
लीन जो योग-निद्रा में । 629

164. சமாதிசெய் வார்க்குத் தகும்பல யோகஞ்
சமாதிகள் வேண்டாம் இறையுட னேகிற்
சமாதிதா னில்லை தானவ னாகிற்
சமாதியில் எட்டெட்டுச் சித்தியும் எய்துமே. 631

समादि चॅय्तार्कुत् तगुम् पलयोगम्
समादिगळ् वेण्डाम् इऱैयुडनेगिऱ्
समादि तानिल्लै तानवनागिऱ्
समादियिल् ऍट्टॆट्टु सित्तियुम् ऍय्दुमे । मंत्र-संख्या, 631

योग-समाधि लगने पर
सिद्धियाँ बहुविध स्वतः मिलती हैं
समाधि से होती हैं लब्ध
आठों महासिद्धियाँ
ईश का संयोग हो जाए तो
समाधि का क्या प्रयोजन
स्वयं 'वह' बन जाए तो
वहाँ नहीं रहती समाधि । 631

165. வந்தித் தவஞ்செய்து வானவர் கோவாய்த்
திருந்தம ராபதிச் செல்வன் இவனெனத்
தருந்தண் முழவங் குழலும் இயம்ப
இருந்தின்பம் எய்துவர் ஈசன் அருளே. 634

वन्दित्तवम् चॅय्दु वानवर् कोवाय्
तिरुत्तमरापतिच् चॅल्वन् इवनॅन
तरुन्तण् मुऴवम् कुऴलुम् इयम्ब
इरुन्दिन्बम् ऍय्दुवर् ईशन् अरुळे । मंत्र-संख्या, 634

अपरंपार है प्रभुकृपा साधक पर,
जब वह आसन, प्राणायाम के बाद
ध्यान लगाकर करता है तपस्या
एकाग्रचित्त से
ऐसे सिद्ध को पदवी मिलती है
देवों के नायक इंद्र की
स्वागत होता है उसका
डमरु, मृदंग, मुरली के घोष के साथ
अधिकारी बनता है वह चिर आनन्द का । 634

6. பணிந்தெண் திசையும் பரமனை நாடித்
துணிந்தெண் திசையுந் தொழுதெம் பிரானை
அணிந்தெண் திசையினும் அட்டமா சித்தி
தணிந்தெண் திசைசென்று தாா்பித்த வாறே. 640

पणिन्दॅण् तिसैयुम् परमनै नाडिन्
तुणिन्दॅण् तिसैयुम् ताऴुदॅम्पिरानै
अणिन्दॅण् तिसैयिनुम् अट्टमा सित्ति
तणिन्दॅण् तिसै चॅन्ऱु तापित्तवाऱे । मंत्र-संख्या, 640

संधान किया परशिव का आठों दिशाओं में
नमन कर चरण युगल आठों प्रहर
प्राप्त कर लीं आठों सिद्धियां
विनय पूरित योगिजन ने
प्रसरित किया प्रभु-महिमा को अष्ट दिशाओं में । 640

167. பரிசறி வானவர் பண்பன் அடியெனத்
துரிசற நாடியே தூவெளி கண்டேன்
அரிய தெனக்கில்லை அட்டமா சித்தி
பெரிதருள் செய்து பிறப்பறுத் தானே. 641

परिशऱि वानवर् पण्बन् अडियॅनत्
तुरिशऱ नाडिये तूवॅळि कण्डेन्
अरियदॅनक्किल्लै अट्टमासित्ति
पॅरिदरुळ् चॅय्दु पिऱप्पऱुत्ताने । मंत्र-संख्या, 641

प्रणत हुआ मैं
देवाधिदेव सर्वोत्कृष्ट प्रभु के चरणों पर
भ्रम हुए दूर सारे निर्मल बना मैं
दर्शन हुआ रहस्यमय चिदंबर का
अब असंभव कुछ भी नहीं है मेरे लिए
प्रभु ने प्रदान कर दीं
आठों महासिद्धियाँ और
मुक्त किया जनन-मरण के बंधन से । 641

168. குரவன் அருளிற் குறிவழி மூலன்
பரையின் மணமிகு சங்கட்டம் பார்த்துத்
தெரிதரு சாம்பவி கேசரி சேரப்
பெரிய சிவகதி பேறெட்டாஞ் சித்தியே. 642

कुरवन् अरुळिऱ् कुऱि वऴि मूलन्
परैयिन् मणमिगु संगट्टम् पार्त्तुत्
तॅरि तरु सांबवि केसरि चेरप्
पॅरिय शिवगति पेऱॅट्टाम् चित्तिये । मंत्र-संख्या, 642

परमगुरु की असीम अनुकम्पा से
परिज्ञान हुआ : दुष्कर है कृत्य यह
मूलाधार के प्राण का
उन्नयन सुषुम्ना से

गुरु-कृपा से साधना की तब
शांभवी-खेचरी की
धन्य हुआ पाकर अष्ट-सिद्धियां
पाया शिव-पद का संयोग भी । *642*

169. நாடும் பிணியாகு நஞ்சனஞ் சூழ்ந்தக்கால்
நீடுங் கலைகல்வி நீள்மேதை கூர்ஞானம்
பீடொன்றி னால்வாயாச் சித்திபே தத்தின்
நீடுங் துரங்கேட்டல் நீண்முடி வீராறே. *646*

नाडुम् पिणियागु नंजनम् चूऴ्न्दक्काल्
नीडुम् कलै कल्वि नील् मेदै कूर् ज्ञानम्
पीडॉन्रिनाल् वायाच् चित्ति बेदत्तिन्
नीडुम् तुरम् केट्टल् नीण्मुडिवु ईरारे । *मंत्र-संख्या, 646*

स्वजन-परिजन से सत्ता-सुख से
परिवृत होना न्योता देना है
जनन-मरण सहित सकल रोग को;
मिलने वाली नहीं है योग-सिद्धियां
विद्या-कला से या मेधा-प्रज्ञा से
संकटमय है साधना का पथ
उपलब्ध होती हैं सिद्धियां
जूझने पर संग्राम द्वादश संवत्सर । *646*

170. ஒத்தஇவ் வொன்பது வாயுவும் ஒத்தன
ஒத்தஇவ் வொன்பதின் மிக்க தனஞ்செயன்
ஒத்தஇவ் வொன்பதில் ஒக்க இருந்திட
ஒத்த வுடலும் உயிரும் இருந்ததே. *653*

ऑत्त इव्वोन्पदु वायुवुम् ऑत्तन
ऑत्त इव्वोन्पदिन् मिक्क दनञ्जयन्
ऑत्त इव्वोन्पदिल् ऑक्क इरुन्दिड
ऑत्त उडलुम् उयिरुम् इरुन्दवे । *मंत्र-संख्या, 653*

नववायु मिले रहे यथास्थान
नवनाड़ियों में समान रूप से
दसवाँ धनञ्जय सुषुम्ना में बना रहा
यों जब सकल वायु
तत्तत् स्थान पर रहें संतुलित रूप से
सहजीवी देह-प्राण का
बना रहता साथ चिरकाल तक । 653

171. இருக்குந் தனஞ்செயன் ஒன்பது காலில்
இருக்கும் இருநூற் றிருபத்து மூன்றாய்
இருக்கு முடலி லிருந்தில வாகில்
இருக்கும் உடலது வீங்கி வெடித்ததே. 654

इरुक्कुन् दनंजयन् ऑन्पदु कालिल्
इरुक्कुम् इरुनूट्रिरुपत्तु मून्राय्
इरुक्कुम् उडलिल् इरुन्दिलवागिल्
इरुक्कुम् उडलदु वींगि वॆडित्तदे । मंत्र-संख्या, 654

अमोघ है धनञ्जय का प्रभाव
परिव्याप्त है जो सकल देह में
नववात केंद्र में, नाड़ी-तंत्र में
जिन की संख्या है दो सौ चौबीस,
व्याप्त न रहा यों धनञ्जय
स्फीत होगा यह भूत-ग्राम
परिणत होगा विस्फोट में । 654

173. வீங்குங் கழலை சிரங்கொடு குட்டமும்
வீங்கும் வியாதிகள் சோகை பலவதாய்
வீங்கிய வாதமுங் கூனு முடமதாய்
வீங்கு வியாதிகள் கண்ணில் மருவியே. 655

वींगुम् कऴलै चिरंगॊडु कुट्टमुम्
वींगुम् वियादिगळ् सोगै पलवदाय्

वींगिय वादमुम् कूनु मुडमदाय्
वींगु वियादिगळ् कण्णिल् मरुविये । मंत्र-संख्या, 655

व्यवधान होना है जब
धनञ्जय की क्रियाशीलता में
जर्जर होती है काया
वात-पित्त-कफ के प्रकोप से,
रक्ताल्पता से दूषित रक्त से
सिर उठाते हैं नाना रोग
फुंसी-फोड़ा खुजली-दाद
कुष्ठ कब्ज़ पक्षाघात
संधिवात के संग नेत्ररोग । 655

173. நாடியின் ஓசை நயனம் இருதயந்
தூடியளவுஞ் சுடர்விடு சோதியைத்
தேவருள் ஈசன் திருமால் பிரமனும்
ஓவற நின்றங் குணர்ந்திருந் தாரே. 657

नाडियिन् ओसै नयनम् इरुदयत्
तूडियळवुम् चुडर्विडु जोतियैत्
देवरुळ् ईशन् तिरुमाल् पिरमनुम्
ओवऱ् निन्ऱंगुणर्न्दिरुन्दारे । मंत्र-संख्या, 657

प्रकट होता है सुषुम्ना का नाद
ज्योति होकर नेत्र में
ध्वनि होकर श्रवण में
स्पंदन होकर हृदय में
धनञ्जय का यह दिव्य नाद
अनुभवगम्य रहा
शुद्ध माया-स्वरूप
शिव-विरिंचि-विष्णु को भी । 657

174. ஒன்பது வாசல் உடையதோர் பிண்டத்துள்
ஒன்பது நாடி யுடையதோ ரோரிடம்
ஒன்பது நாடி ஒடுங்கவல் லார்கட்(கு)
ஒன்பது காட்சி யிலைபல வாமே. 658

ऑन्पदु वासल् उडैयदोर् पिण्डत्तुळ्
ऑन्पदु नाडियुडैयदो रोरिडम्
ऑन्पदु नाडि ऑडुङ्गवल्लार्कु
ऑन्पदु काट्चि इलै पलवामे । मंत्र-संख्या, 658

नव द्वार के इस पिंड में
नव वायु संचरित हैं
नव नाड़ियों में;
नव नाड़ियों के
नियंत्रण में सक्षम के हित
नव दृश्य मात्र नहीं;
नव-नव दृश्य सुलभ हैं । 658

175. ஓங்கிய அங்கிக்கீழ் ஒண்சுழு னைச்செல்ல
வாங்கி இரவி மதிவழி ஓடிடத்
தாங்கி உலகங்கள் ஏழுந் தரித்திட
ஆங்கது சொன்னோம் அருவழி யோர்க்கே. 659

ओंगिय अंगिक्कीऴ् ऑण्चुऴु नैच्चेल्ल
वांगि इरवि मति वऴि ओडिड
तांगि उलगंगळ् एऴुम् तरित्तिड
आंगदु चॉन्नोम् अरु वऴियोक्के । मंत्र-संख्या, 659

जाग उठे जब कुंडलिनी
उन्नयन करें उसे सुषुम्ना में
सूर्य-चन्द्र नाड़ियों से,
व्यर्थ में चल रही श्वास को भी
लगा दें सुषुम्ना के अग्नि-पथ में

मध्य मार्ग यही सार्थक है ।
चल कर जिसमें पहुंचेंगे सहस्रार
ज्योतित हैं जहां सप्तलोक
बता रहे सफल उपाय
सुधी साधकों के हित में । 659

176. ஓடிச்சென் றங்கே ஒருபொருள் கண்டவர்
நாடியி னுள்ளாக நாதம் எழுப்புவர்
தேடிச்சென் றங்கே தேனை முகந்துண்டு
பாடியுள் நின்ற பகைவரைக் கட்டுமே. 661

ओडिच्चॅन्ऱङ्गे ओरुपॉरुळ् कण्डवर्
नाडियिन्नुळ्ळाग नादम् ऍऴुप्पुवर्
तेडिच्चॅन्ऱङ्गे तेनै मुगन्दुण्डु
पाडियुळ् निन्ऱ पगैवरैक् कट्टुमे । मंत्र-संख्या, 661

चैतन्य-पथ पर भीतर को
भागते हुए साधक
जगा लेता है कुण्डलिनी;
नाड़ियों में बजता है
अनहद नाद;
साधना-पथ पर बढ़ते हुए
क्रम-क्रम से
पहुँचता है वह सहस्रार
ढूँढते हुए रास्ता निकालते हुए;
जहाँ वह छकता है
अमृत भ्रूमध्य में रखा हुआ;
फिर युद्ध शिविर में
पहुँचकर मर्दन करता है
पंचेन्द्रिय शत्रु का । 661

177. ஒடுங்கி ஒருங்கி யுணர்ந்தங் கிருக்கில்
மடங்கி அடங்கிடும் வாயு வதனுள்
மடங்கி மடங்கிடு மன்னுயி ருள்ளே
நடங்கொண்ட கூத்தனும் நாடுகின் றானே. 666

ओंडुंगि ओरुंगि उणर्न्दङ्गिरुक्किल्
मडंगि अडंगिडुम् वायु वदनुळ्
मडंगि मडंगिडु मन्नुयिरुळ्ळे
नडंकोण्ड कूत्तनुम् नाडुकिन्ऱाने । मंत्र-संख्या, 666

समेट कर इन्द्रियों को
उन्मुख करदें अंतर्जगत् की ओर
आसन जम जाए तो पाएंगे
विलय हो रहा विचारों का चित्त में
मंद-मंथर गति से मंडराता प्राण
लीन हो रहा धीरे-धीरे आत्म तत्व में
और तब प्रारंभ होता है
चित्सभा में नटराजराज का नृत्य !
ठगा-सा खड़ा देख रहा हूँ
चिदम्बर का यह नृत्य । 666

178. அணுமாதி சித்திக ளானவை கூறில்
அணுவில் அணுவின் பெருமையில் நேர்மை
இணுகாத வேகார் பரகாய மேவல்
அணுவத் தனையெங்குந் தானாக லென்றெட்டே. 668

अणिमादि सित्तिगळानवै कूऱिल्
अणुविल् अणुविन् पॅरुमैयिल् नेर्मै
इणुगादवेकार् परकायमेवल्
अणुवैत् तनैयॅङ्गुम् तानाग वॅन्ऱॆट्टे । मंत्र-संख्या, 668

सूक्ष्मता में अणु भीतर अणु-जैसी,
पृथुता ऐसी अतिशय करे महत् से महत् भी,

लघुता इतनी कि वाष्परेखा की छांह सी,
क्षमता वही कि पैठें काया तज परकाया में
व्याप्त होना सकल चराचर में अंतराय बिन
प्रभुत्व-संसृति का कर्ता, धर्ता, संहर्ता सम
प्रसादमय स्थिति यत्र, तत्र, सर्वत्र है वशित्वम्
यों गिनें अष्ट महान् सिद्धियाँ । 668

179. எட்டிவை தன்னோ டெழிற்பரங் கைகூடப்
பட்டவர் சித்தர் பரலோகஞ் சேர்தலால்
இட்டம துள்ளே இறுக்கல் பரகாட்சி
எட்டு வரப்பு மிடந்தானின் றெட்டுமே. 671

ऍट्टिवै तन्नोडॅऴिऱ् परम् कैकूडप्
पट्टवर् सित्तर परलोकम् चेर्दलाल्
इट्टमदुळ्ळे इरुक्कल् परकाट्चि
ऍट्टुवरप्पुमिडम् तानिन्ऱॅट्टुमे । मंत्र-संख्या, 671

अष्ट महासिद्धि पाने पर
शिवतत्व हो जाता है सिद्ध
शिवलोक में पहुँच कर
साक्षी बनता है सिद्ध
उस महादृश्य का जब
सकल ब्रह्मांड होता है विलय
अणुरूप में शिव के भीतर
आठों सिद्धियाँ पहुँचती हैं
अनायास ही उसके स्थान पर । 671

180. மெய்ப்பொருள் சொல்லிய மெல்லிய லாளுடன்
தற்பொரு ளாகிய தத்துவங் கூடிடக்
கைப்பொரு ளாகக் கலந்திடு மோராண்டின்
மைப்பொரு ளாகு மகிமாவ தாகுமே. 676

मॆय्प्पॊरुळ् चॊल्लिय मॆल्लियलाळुडन्
तऱ्पॊरुळागिय तत्तुवम् कूडिड
कैप्पॊरुळागक् कलन्दिडु मोराण्डिन्
मैप्पॊरुळागु महिमाव दागुमे । मंत्र-संख्या, 676

लघिमा प्राप्ति के
संवत्सर के अनंतर
जब तत्वों का होता है मिलन शक्ति से
तब प्रकट होती है
प्रच्छन्न महिमा सिद्धि
हस्तामलकवत् सिद्ध के समक्ष । 676

181. போவதொன் றில்லை வருவது தானில்லை
சாவதொன் றில்லை தழைப்பது தானில்லை
தாமத மில்லை தமரகத் தின்னொளி
யாவது மில்லை யறிந்துகொள் வார்க்கே. 681

पोवदॊन्ऱिल्लै वरुवदु तानिल्लै
चावदॊन्ऱिल्लै तऴैप्पदु तानिल्लै
तामदमिल्लै तमरगत् तिन्नॊळि
यावदुमिल्लै अऱिन्दु कॊळ्वार्क्के । मंत्र-संख्या, 681

ज्ञानवान सिद्धपुरुष के लिए
कोई निष्क्रमण नहीं, आगमन भी नहीं
मृत्यु नहीं, जरा की बाधा भी नहीं
क्षण भर विलंब नहीं होता
अंतर्ज्योति के दर्शन में
पहुँचे हुए सिद्ध का
प्राप्ति-अनुभव यही है । 681

182. ஆகின்ற சந்திரன் தன்னொளி யாயவன்
ஆகின்ற சந்திரன் தட்பமு மாயிடும்

ஆகின்ற சந்திரன் தன்கலை கூடிடில்
ஆகின்ற சந்திரன் தானவ னாமே. 685

आगिऩ्ऱ चन्दिरऩ् तन्नॊळि आयवऩ्
आगिऩ्ऱ चन्दिरऩ् तट्पमु मायिडुम्
आगिऩ्ऱ चन्दिरऩ् तऩ्कलै कूडिडिल्
आगिऩ्ऱ चन्दिरऩ् तानव नामे । मंत्र-संख्या, 685

ईशत्व सिद्धि पाने पर
सिद्ध स्वयं बन जाता है चन्द्रकिरण
फिर वह बन जाता है स्वयं चन्द्रकला
फिर उनमें मिलकर
वह स्वयं बन जाता है चन्द्र । 685

183. ஆறது வாகும் அமிர்தத் தலையினுள்
ஆறது ஆயிர முந்நூற் றொடைஞ்சுள
ஆறது வாயிர மாகு மருவழி
ஆறது வாக வளர்ப்ப திரண்டே. 695

आऱदुवागुम् अमिऱ्दत् तलैयिनुळ्
आऱदु आयिर मुन्नूट्ऱॊडैञ्चुळ
आऱदु वायिरमागु मरुवऴि
आऱदुवाग वऴ्प्पदिरण्डे । मंत्र-संख्या, 695

शिरोभाग में – सहस्रार में –
अमृत-प्रवाह होता है अजस्र
अक्षय नदी बनकर
प्रवहित होती है नदी
सकल नाड़ियों से होकर
एक हजार तीन सौ पचास
जिनकी संख्या है;
सहस्रार तक पहुंचने का

मार्ग षडाधार है
और मार्ग दर्शक नाड़ियाँ हैं दो
इडा और पिंगला । 695

184. அஞ்சுடன் அஞ்சு முகமுள நாயகி
அஞ்சுடன் அஞ்சது வாயுத மாவது
அஞ்சது வன்றி இரண்டது வாயிரம்
அஞ்சது காலம் எடுத்துளும் ஒன்றே. 697

अंजुडऩ् अंजु मुगमुळ नायकि
अंजुडऩ् अंजदु वायुद मावदु
अंजदु वऩ्रि इरण्डदुवायिरम्
अंजदु कालम् ऍडुत्तुळुम् ऑऩ्रे । मंत्र-संख्या, 697

विराज रही आज्ञा केंद्र में
सदाशिव शक्ति पंचमुखी
दहकते दस आयुधों के संग
पंचाक्षर का संबल लेकर
आरोहण करें
द्विदल (आज्ञा) से सहस्रदल (सहस्रार) में,
प्राण चलने लगता है
एक तार में सुषुम्ना से
संवत्सर पांच हजार
समाहित हो गए पांच अक्षर
एक ऊँकार ध्वनि में । 697

185. ஒன்றது வாகிய தத்துவ நாயகி
ஒன்றது கால்கொண் டூர்வகை சொல்லிடில்
ஒன்றது வென்றிகொள் ஆயிரம் ஆயிரம்
ஒன்றது காலம் எடுத்துளும் முன்னே. 698

ऑऩ्रदु वागिय तत्तुव नायकि
ऑऩ्रदु काल्कॉण्डूर्वगै चॉल्लिडिल्

ओन्ऱदु वन्ऱिकोळ् आयिरम् आयिरम्
ओन्ऱदु कालम् ऍण्डुत्तुळुम् मुन्ने । मंत्र-संख्या, 698

वही सदाशिव शक्ति
तत्वनायिका है
जिससे मिलती है प्राणशक्ति
सुषुम्ना मार्ग से ऊपर पहुँचकर सहस्रार में
प्राणशक्ति एक है
जब पहुँचती है सहस्रार में
व्याप्त होती है सहस्रार दल में
यहाँ पर जब सधता है ध्यान
सहस्र वर्ष तक अजर-अमर रहता है साधक । 698

186. முன்னெழும் அக்கலை நாயகி தன்னுடன்
முன்னூறு வாயு முடிவகை சொல்லிடின்
முன்னூறும் ஐம்பத் தொன்றுடன் அஞ்சுமாய்
முன்னூறு வாயு முடிவகை யாமே. 699

मुन्नॆळुम् अक्कलै नायकि तन्नुडन्
मुन्नुऱु वायु मुडिवगै चॊल्लिडिन्
मुन्नुऱुम् ऐम्बत्तॊन्ऱुडन् अञ्चुमाय्
मुन्नुऱु वायु मुडिवगैयामे । मंत्र-संख्या, 699

ऊर्ध्वमुखी प्राणशक्ति
सुषुम्ना-मार्ग से पहुँचती है
सहस्रार में, जहाँ मिलती है
पहले इक्यावन वर्ण से
फिर पाँच वर्ण से युक्त होकर
मिल जाती है चित्कला
आनन्दकलिका महाशक्ति से । 699

187. ஆய்வரும் அத்தனி நாயகி தன்னுடன்
ஆய்வரு வாயு அளப்பது சொல்லிடில்
ஆய்வரும் ஐஞ்ஞூற்று முப்பதொ டொன்பது
மாய்வரு வாயு வளப்புள் ளிருந்ததே. 700

आय्वरुम् अत्तनि नायकि तन्नुडन्
आय्वरु वायु अळप्पदु चॉल्लिडिल्
आय्वरुम् ऐञ्नूट्रु मुप्पत्तॉडोन्पदु
माय्वरु वायु वळप्पुळ्ळिरुन्ददे । मंत्र-संख्या, 700

अद्वितीय इस शक्ति के साथ
संयुक्त होती है प्राणशक्ति आज्ञाचक्र में
स्फीत होकर पूरित करते हुए
तीन सौ उनचालीस नाड़ियों में,
निःसृत होता है अमृत
शक्ति-सन्निपात की इस प्रक्रिया में
निस्पंद रहती हैं समस्त नाड़ियाँ । 700

188. இருநிதி யாகிய எந்தை யிடத்து
இருநிதி வாயு இயங்கு நெறியில்
இருநூற்று முப்பத்து மூன்றுடன் அஞ்சாய்
இருநிதி வாயு இயங்கும் எழுத்தே. 701

इरुनिदियागिय ऍन्दैयिडत्तु
इरुनिदि वायु इयङ्गु नॆरियिल्
इरुनूट्रु मुप्पत्तु मून्रुडन् अञ्चाय्
इरुनिदि वायु इयङ्गुम् ऍऴुत्ते । मंत्र-संख्या, 701

निधिद्वय से भी उत्कृष्ट प्राणशक्ति
ऊर्ध्वमुखी होकर बढ़ती है शिवसंकल्प से
स्फीत होकर दो सौ तैंतीस नाड़ियों में
आत्मसात् करते हुए पंचाक्षरों को
नाद-बिंदु अकार उकार मकार को

अंततः मिल जाती है
परमेश्वर की विभूति में । 701

189. ஆறது கால்கொண் டிரதம் விளைத்திடும்
ஏழது கால்கொண் டிரட்டி இறக்கிட
எட்டது கால்கொண் டிடவகை யொத்தபின்
ஒன்பது மாநிலம் ஒத்தது வாயுவே. 703

आऱदु काल् कॉण्डिरदम् विळैत्तिडुम्
एळ्दु काल् कॉण्डिरट्टि इऱक्किड
ऍट्टदु कालकॉण्डिड वगै यॉत्तपिन्
ऑन्पदु मानिलम् ऑत्तदु वायुवे । मंत्र-संख्या, 703

अमृत निःसृत होता है
जब प्राण-शक्ति पार करती है
षडाधार को
सप्तम् सूर्य-केंद्र में
होती है अवस्थित दुगुनी मात्रा में
अष्टम् चंद्र-केंद्र में
युक्त होती है अमृत-धार से
नवम् चरण में योजित होती है
नवशक्तियों से । 703

190. மரணஞ் சரைவிடல் வண்பர காயம்
இரணஞ் சேர்பூமி இறந்தோர்க் களித்தல்
அரணன் திருவுற வாதன்மூ வேழாங்
கரனுறு கேள்வி கணக்கறிந் தோனே. 706

मरणम् चरैविडल् वण्परकायम्
इरणम् चेर् पूमि इऱन्दोर्क्कळित्तल्
अरणन् तिरुवुऱ वादन् मूवेळाम्
करनुऱु केळ्वि कणक्करिन्दोने । मंत्र-संख्या, 706

शिवज्ञानी सिद्धपुरुष
विजय पाता है जरा और मृत्यु पर,
समर्थ है वह परकाय प्रवेश में
दिलाने में स्वर्लोक मृतकों को
धारण करता है देव-तुल्य शरीर
विचक्षण है शिवागम की
इक्कीस शाखाओं में । 706

191. மதியமும் ஞாயிறும் வந்துடன் கூடித்
துதிசெய் பவரவர் தொல்வா னவர்கள்
விதியது செய்கின்ற மெய்யடி யார்க்குப்
பதியது காட்டும் பரமன்நின் றானே. 710

मदियमुम् ञायिरुम् वन्दुडन् कूडि
तुदि चॅय्पवरवर् तॉल्वानवर्गळ्
विदियदु चॅय्किन्ऱ मॅय्यडियार्क्कु
पदियदु काट्टुम् परमन् निन्ऱाने । मंत्र-संख्या, 710

जो पुरुष सक्षम हैं
संचालित करने में श्वास को
सूर्य और चंद्र नाड़ियों में विधिवत्
पूजनीय हैं वे देवों के लिए
प्रसन्न होते हैं परमेश्वर
ऐसे सच्चे सिद्ध पुरुषों पर,
निज रहस्य खोलते हैं उनके लिए । 710

192. காக்கலு மாகுங் கரணங்கள் நான்கையுங்
காக்கலு மாகுங் கலைபதி னாறையுங்
காக்கலு மாகுங் கலந்தநல் வாயுவுங்
காக்கலு மாகுங் கருத்துற நில்லே. 713

काक्कलुमागुम् करणङ्गळ् नान्गैयुम्
काक्कलुमागुम् कलै पदिनाऱैयुम्

काक्कलुमागुम् कलन्द नल् वायुवुम्
काक्कलुमागुम् करुन्तुऱ् निल्ले । मंत्र-संख्या, 713

नियंत्रण में लाएँ चारों आंतरिक करण
नियंत्रित करें षोडश अमृत कलाएँ
नियंत्रित हो जाए निज प्राणशक्ति
तब स्वयं ही सधेगा ध्यान
सत्यरूप परमेश्वर पर । 713

193. தானே எழுந்தஅத் தத்துவ நாயகி
ஊனே- வழிசெய்தெம் உள்ளே யிருந்திடும்
வானோர் உலகீன்ற அம்மை மதித்திடத்
தேனே பருகிச் சிவாலய மாகுமே. 719

ताने ऍऴ़ुन्द अत्तत्तुव नायकि
ऊने वऴि चॆय्दॆम् उऴ्ळे इरुन्दिडुम्
वानोऱ् उलगीन्ऱ् अम्मै मदित्तिड
तेने परुगिच् चिवालयमागुमे । मंत्र-संख्या, 719

स्वयं उत्थित वह कुंडलिनी शक्ति–
तत्वों की अधीश्वरी
ऊर्ध्वमुखी हो चलती है
जीवालय मम देह के भीतर
स्वर्ग और पृथ्वी की जननी
प्रदान करती है मुझे अमृत
जीवालय तब बन जाता है शिवालय । 719

194. சோதனை தன்னில் துரிசறிக் காணலாம்
நாதனும் நாயகி தன்னிற் பிரியுநாள்
சாதன மாகுங் குருவை வழிபட்டு
மாதன மாக மதித்துக்கொள் ளீரே. 721

चोदनै तन्निऴ् तुरिशऱक् काणलाम्
नादनुम् नायकि तन्तिऱ् पिरियुनाळ्
चादनमागुम् गुरुवै वऴिपट्टु
मादनमाग मदित्तुक् कॊळ्ळीरे । मंत्र-संख्या, 721

योग-मार्ग पर बढ़ने पर
भ्रमरहित होती है दृष्टि साधक की
एक स्थिति ऐसी आती है
कुंडलिनी के साथ बढ़ते प्राण
साधना-पथ पर आगे बढ़ते हैं
कुंडलिनी को पीछे छोड़कर,
तब मिलता है मार्गदर्शन सद्गुरु का
बढ़ते जाएँ गुरु के बताए मार्ग पर
तभी जान लो मिलता है सायुज्य । 721

195. உடம்பினை முன்னம் இழுக்கென் றிருந்தேன்
உடம்பினுக் குள்ளே யுறுபொருள் கண்டேன்
உடம்புளே உத்தமன் கோயில்கொண் டான்என்று
உடம்பினை யானிருந் தோம்புகின் றேனே. 725

उडम्बिनै मुन्नम् इऴुक्कॆन्ऱिरुन्देन्
उडम्बिनुक्कुळ्ळे उरुपॊरुळ् कण्डेन्
उडम्बुळे उत्तमन् कोयिल् कॊण्डान् ऍन्ऱु
उडम्बिनै यानिरुन्दोम्बुगिन्ऱेने । मंत्र-संख्या, 725

शरीर को मलमय माना था
मैंने पूर्व में भ्रमवश
फिर देखा सत्यवस्तु
निवसित है इसी देह में
सत्य का साक्षात्कार हुआ
यह जीव-शरीर स्वयं शिवालय है

प्रभु का पावन मंदिर है
तब से पूजा करता हूँ
मैं इस मंदिर की । 725

196. நீல நிறனுடை நேரிழை யாளொடுஞ்
சாலவும் புல்லிச் சதமென் றிருப்பார்க்கு
ஞாலம் அறிய நரைதிரை மாறிடும்
பாலனு மாவர் பராநந்தி ஆணையே. 734

नीलनिऱनुडै नेरिऴैयाळोडुम्
चालवुम् पुल्लिच् चदमॆन्ऱिरुप्पार्कु
ञालम् अऱिय नरैतिरै माऱिडुम्
बालनुम् आवर् परानन्दि आणैये । मंत्र-संख्या, 734

जो लेते हैं शरण
नीलनीलिम वर्ण की
आदिशक्ति के चरणों में
निश्चय ही वे सदा बालरूप रहेंगे
मुक्त होकर जरा से, वार्धक्य की झुर्रियों से
शक्ति-तनय कुमार की भांति सुकुमार
यह सत्य कथन है
महानन्दी का । 734

197. அண்டஞ் சுருங்கில் அதற்கோ ரழிவில்லை
பிண்டஞ் சுருங்கிற் பிராணன் நிலைபெறும்
உண்டி சுருங்கில் உபாயம் பலவுள
கண்டங் கறுத்த கபாலியு மாமே. 735

अण्डम् चुरुङगिल् अदर्कोर् अऴिविल्लै
पिण्डम् चुरुङगिर् पिराणन् निलैपॆरुम्
उण्डि चुरुङ्गिल् उपायम् पलवुळ
कण्डम् कऱुत्त कपालियुमाये । मंत्र-संख्या, 735

अक्षय बना रहता है वीर्य
यदि उसकी रक्षा करें बीज में
प्राण बसता है चिरकाल देह में
देह को यदि रखें संयम में,
सिद्ध होते हैं अनेकों लाभ
मिताहार से भोजन पर संयम से,
भासमान बनोगे
स्वयं कपाली नीलकंठ तुल्य तुम । 735

198. தண்டுடன் ஓடித் தலைப்பெய்த யோகிக்கு
மண்டல மூன்று மகிழ்ந்துடல் ஒத்திடுங்
கண்டவர் கண்டனர் காணார் வினைப்பயன்
பிண்டம் பிரியப் பிணங்குகின் றாரே. 752

तण्डुडन् ओडित् तलैप्प्य्द योगिक्कु
मण्डल मून्रु मगिऴ्न्दुडल् ओत्तिडुम्
कण्डवर् कण्डनर् काणार् विनैप्पयन्
पिण्डम् पिरियप् पिणङ्गुकिन्रारे । मंत्र-संख्या, 752

मेरुदंड से होकर षडाधार पारकर
पहुँचता है जो योगी सहस्रार में
दृष्टिपथ में आते हैं तीनों मंडल –
सूर्य, चंद्र और अग्नि मंडल –
जीवन्मुक्त होता है वह इस अद्भुत दृश्य से
जो देख नहीं पाता इसे
अंत समय में भीत होता है वह
दुखी होता है देहासक्ति से । 752

199. கூத்தன் குறியிற் குணம்பல கண்டவர்
சாத்திரந் தன்னைத் தலைப்பெய்து நிற்பர்கள்
பார்த்திருந் துள்ளே அனுபோக நோக்கிடில்
ஆத்தனு மாகி யலர்ந்திரு மொன்றே. 755

कूत्तऩ् कुऱियिऱ् कुणम्पल कण्डवर्
चात्तिरम् तन्नैत् तलैप्पंयूदु निऱपर्गळ्
पार्त्तिरुन्दुळ्ळे अनुबोग नोक्किडिल्
आत्तनुमागि अलर्न्दिरुमंऩ्रे । मंत्र-संख्या, 755

होते हैं दिव्य दिभूति-दर्शन नर्तित नटराज के
जीवनचर्या बन जाती है दिव्य आगमशास्त्र
आसन लगाकर ध्याननिरत है अंतर्मुखी होकर
रमे हैं दिव्य आनन्द की अनुभूति में
शिव के साथ एकाकार होकर
व्याप्त होते हैं अगजग में । 755

200. அண்ணல் இருப்பிட மாரும் அறிகிலர்
அண்ணல் இருப்பிடம் ஆய்ந்துகொள் வார்களுக்
கண்ணல் அழிவின்றி உள்ளே அமர்ந்திடும்
அண்ணலைக் காணில் அவனிவ வாகுமே. 766

अण्णल् इरुप्पिडम् आरुम् अऱिगिलर्
अण्णल् इरुप्पिडम् आय्न्दु कोळ्वार्गळुक्-
कण्णल् अऴिविन्ऱि उळ्ळे अमर्न्दिडुम्
अण्णलैक् काणिल् अवनिववागुमे । मंत्र-संख्या, 766

जीव में ही अवस्थित है प्रभु
पर कोई नहीं जानता इस तथ्य को
जो जान लेते हैं इस सत्य को
साधना से, प्रभु के अनुग्रह से,
देखते हैं प्रभु को निज अंतर में
अंतर में प्रभु का दर्शन जब होता है
यह बन जाता है वही । 766

201. அவனிவ னாகும் பரிசறி வாரில்லை
அவனிவ னாகும் பரிசது கேள்நீ

அவனிவ னோசை ஒளியினுள் ஒன்றிடும்
அவனிவன் வட்டம தாகிநின் றானே. 767

अवनिवनागुम् परिशरिवारिल्लै
अवनिवनागुम् परिशदु केळ्नी
अवनिवनोशै ऑळियिनळ् ऑन्रिडुम्
अवनिवन् वट्टमदागि निन्राने । मंत्र-संख्या, 767

कोई नहीं जानता रहस्य यह
इसका उसमें तादात्म्य होता कैसे है
'यह' किस प्रकार बनता 'वह'
सुन लो मर्म यह
वह नाद-बिंदु में एक बनता है
इसके साथ
नाद-बिंदु के योग से उभरता प्रणव है
प्रणव – ऊँकार के मंडल में
'यह' 'यह' नहीं रहता बन जाता 'वह' है । 767

202. ஆரு மறியார் அளக்கின்ற வன்னியை
ஆரு மறியார் அளக்கின்ற வாயுவை
ஆரு மறியார் அழிகின்ற அப்பொருள்
ஆரு மறியார் அறிவறிந் தேனே. 786

आरुमरियार् अळक्किन्र वन्नियै
आरुमरियार् अळक्किन्र वायुवै
आरुमरियार् अळिकिन्र अप्पॉरुळ्
आरुमरियार् अरिविरुन्देने । मंत्र-संख्या, 786

किसी को नहीं ज्ञात, वह वह्नि कैसी है
जो आकाश नापती ऊर्ध्वमुखी बढ़ती है
किसी को विदित नहीं वह वायु कैसा है
जो अंतरिक्ष का मापन करता है

नष्ट होते हैं वे लोग जानते नहीं जो
कुंडलिनी और प्राणवायु का मर्म
मैं जान गया हूँ उस तथ्य को
जो हर किसी के लिए अज्ञात है । 786

203. நடுவுநில் லாமல் இடம்வலம் ஓடி
அடுகின்ற வாயுவை அந்தணன் கூடி
இடுகின்ற வாறுசென் றின்பணி சேர
முடிகின்ற தீபத்தின் முன்னுண்டென் றானே. 795

नडुवु निल्लामल् इडम् वलम् ओडि
अडुकिन्ऱ वायुवै अन्दणन् कूडि
इडुकिन्ऱ वाऱु चेन्ऱिन् पणिचेर
मुडिकिन्ऱ दीपत्तिन् मुन्नुण्डॆन्ऱाने । मंत्र-संख्या, 795

चंचल प्राणवायु भागती है दाएँ-बाएँ
जब वह स्थिर न होती सुषुम्मा में
साधना-मार्ग से नियंत्रित करता है
प्राणवायु को योगी
जगाकर कुंडलिनी चलाता है ऊपर
मिलन हो जाए ज्योति से
सहस्रार में
गुरुनाथ नन्दी का यही कथन है । 795

204. வாரத்திற் சூலம் வரும்வழி கூறுங்கால்
நேரொத்த திங்கள் சனிகிழக் கேயாகும்
பாரொத்த சேய்புதன் உத்தரம் பானுநாள்
நேரொத்த வெள்ளி குடக்காக நிற்குமே. 797

वारत्तिऱ् चूलम् वरुम्वऴि कूऱुङ्गाल्
नेरॊत्त तिङ्गळ् सनिक् किऴक्के यागुम्
पारॊत्त चेय् बुदन् उत्तरम् पानु नाळ्
नेरॊत्त वॆळ्ळि कुडक्काग निऱ्कुमे । मंत्र-संख्या, 797

वारशूल की स्थिति जानना हो
समझना चाहते हो किस दिन
शूल कहाँ पड़ता है
जान लो सोम शनि को
पूरब में है शूल
बुध-मंगल को उत्तर में
शुक्र रवि को है पश्चिम में । 797

205. தெக்கண மாகும் வியாழத்துச் சேர்திசை
அக்கணி சூலமு மாமிடம் பின்னாகில்
துக்கமும் இல்லை வலமுன்னே தோன்றிடின்
மிக்கது மேல்வினை மேன்மேல் விளையுமே. 798

तॆक्कणमागुम् वियाऴत्तच् चेर्तिशै
अक्कणि शूलमुमामिडम् पिन्नागिल्
दुक्कमुम इल्लै वलमुन्ने तोन्रिडिन्
मिक्कदु मेल्विनै मेन्मेल् विळैयुमे । मंत्र-संख्या, 798

पड़ता है शूल गुरु को दक्षिण में
इसलिए बुद्धिमानी यही है
शूल को बाएँ और पीछे छोड़ कर
बढ़ें आगे; कोई बाधा नहीं
सिद्ध होते हैं सकल कार्य,
शूल जब दाएँ हो या हो आगे
तब चलें काम पर; होंगी विघ्न-बाधा निश्चित् । 798

206. கட்டக் கழன்று கீழ்நான்று வீழாமல்
அட்டத்தைக் கட்டி அடுப்பை அணைகோலி
விட்டத்தைப் பூட்டி மேற்பையைத் தாட்கோத்து
நட்ட மிருக்க நமனில்லை தானே. 799

कट्टक्कऴन्रु कीऴ्नान्रु वीऴामल्
अट्टत्तैक् कट्टि अडुप्पै अणैकोलि

विट्टत्तैक् पूट्टि मेऱ्पैयैत् ताट्कोत्तु
नट्टमिरुक्क नमनिल्लै ताने । मंत्र-संख्या, 799

अमृतबिंदु का रक्षण करो
ब्रह्मरंध्र में चढ़ाकर
हर सावधानी बरत लो
कहीं वह नीचे झरे ना
जिह्वाग्र को तालु पर सटाओ
अलिजिह्व से बंद करो ऊपरी रंध्र को
सिटकनी-सी लग जाए
तिकोनी अंगीठी पर रोको प्राण
लग जाए समाधि
नाम नहीं है यम-भय का । 799

207. வண்ணான் ஒலிக்குஞ் சதுரப் பலகைமேற்
கண்ணாறு மோழை படாமற் கரைகட்டி
விண்ணாறு பாய்ச்சிக் குளத்தை நிரப்பினால்
அண்ணாந்து பார்க்க அழுக்கற்ற வாறே. 800

वण्णान् ओलिक्कुम् चतुरप् पलगै मेल्
कण्णारु मोऴै पडामऱ् करै कट्टि
विण्णारु पाय्च्चिक् कुळत्तै निराप्पिनाल्
अण्णान्दु पार्क्क अऴुक्कट्रवारे । मंत्र-संख्या, 800

शब्दायमान है जीवशक्ति
मानो घाट के चौकोर पत्थर पर
धोबी कर्मरत हो,
दृग, कर्ण, नासा, मुंह के
चौकोर तख्ते के नीचे बांध बना दो
प्राणशक्ति के अमृत को
भर लो सहस्रार के सरोवर में

ऊपर देखते हुए बैठो समाधि में
दूर होगा सकल मल-कल्मष । 800

208. இடக்கை வலக்கை இரண்டையும் மாற்றித்
துதிக்கையால் உண்பார்க்குச் சோரவும் வேண்டாம்
உறக்கத்தை நீக்கி உணரவல் லார்கட்
கிறக்கவும் வேண்டாம் இருக்கலு மாமே. 801

इडक्कै वलक्कै इरण्डैयुम् माट्रि
तुदिक्कैयाळ् उण्बार्कुच् चोरवुम् वेण्डाम्
उऱक्कत्तै नीक्कि उणर वल्लार्कट्
इऱक्कवुम् वेण्डाम् इरुक्कलुमामे । मंत्र-संख्या, 801

निद्रा और श्रांति
उन्हें बाधित न करतीं, जो
दाएँ-बाएँ हाथ का प्रयोग करके
भोजन पाते हैं सूंड से;
तात्पर्य है–
इडा, पिंगला के द्वारा
अधोमुख निःसृत
प्राणवायु रूपी अमृत को
सुषुम्ना के पथ पर
ऊर्ध्वमुखी बनाकर
उसका उपभोग जो करते हैं
वे मुक्त होते हैं
निद्रा-श्रांति जैसे शरीर-धर्म से
और मृत्यु को तब तक टालते हैं
जब तक चाहते हैं
जीवित रहना । 801

209. நாவின் நுனியை நடுவே சிவிறிடிற்
சீவனும் அங்கே சிவனும் உறைவிடம்

மூவரு முப்பத்து மூவருந் தோன்றுவர்
சாவதும் இல்லை சதகோடி யூனே. 803

नाविन् नुनियै नडुवे चिविरिडिल्
जीवनुम् अङ्गे सिवनुम् उऱैविडम्
मूवरुम् मुप्पत्तु मूवरुम् तोन्ऱुवर्
चावतुमिल्लै शतकोटियूने । मंत्र-संख्या, 803

जिह्वाग्र को ऊपर उठा कर
धरो बीच में, द्वार रोक दो
वही है जीव और शिव का वासस्थान
दर्शन होगा त्रिदेव का
तैंतीस कोटि देवता का
मृत्यु का नाम नहीं है
रहोगे शतकोटि युग तक । 803

210. நந்தி முதலாக நாமேலே யேறிட்டுச்
சந்தித் திருக்கில் தரணி முழுதாளும்
பந்தித் திருக்கும் பகலோன் வெளியாகச்
சிந்தித் திருப்பவர் தீவினை யாளரே. 806

नन्दि मुदलाग नामेले येरिट्टुच्
चन्दित्तिरुक्किल् तरणि मुऴुदाळुम्
पन्दित्तिरुक्कुम् पगलोन् वॆळियाग
चिन्दित्तिरुप्पवर् तीविनैयालरे । मंत्र-संख्या, 806

मार्गदर्शन के लिए नन्दिदेव है
ऊर्ध्वमुखी हो बढ़े चलें
अलिजिह्व को चढ़ाकर ऊपर
भेंट होगी शिव से
शासन करेंगे सकल ब्रह्मांड पर
यदि प्राणशक्ति बहिर्गत हो जाए

सूर्यनाड़ी के माध्यम से
अमृत बनने में बाधा होगी
भाग्यरहित हैं वे साधक वृथा गंवाकर श्वास
पड़ते हैं आवागमन के चक्र में । 806

211. தீவினை யாடத் திகைத்தங் கிருந்தவர்
நாவினை நாடின் நமனுக் கிடமில்லை
பாவினை நாடிப் பயனறக் கண்டவர்
தேவினை யாடிய தீங்கரும் பாமே. 807

तीविनैयागत् तिगैत्तंगिरुन्दवर्
नाविनै नाडिन् नमनुक्किडमिल्लै
पाविनै नाडिप् पयनऱक् कण्डवर्
तेविनै याडिय तीङ्करुम्बामे । मंत्र-संख्या, 807

जो फंसे होते हैं
जनन-मरण के चक्र में
कर्म-बंधन के कारण
यदि वे जिह्वा-कर्म का करें अभ्यास
खेचरी मुद्रा की करें साधना
मुक्त होंगे वे यम-भय से
कर्म की व्यर्थता का हो जाए बोध
और लग जाए योग-समाधि
चखेंगे वे आनन्द इक्षुरस के समान । 807

212. வாய்ந்தறிந் துள்ளே வழிபாடு செய்தவர்
காய்ந்தறி வாகக் கருணை பொழிந்திடும்
பாய்ந்தறிந் துள்ளே படிக்கத வொன்றிட்டுக்
கூய்ந்தறிந் துள்ளுறை கோயிலு மாமே. 810

वाय्न्दऱिन्दुळ्ळे वऴिपाडु चेय्दवर्
काय्न्दऱिवागक् करुणै पॊऴिन्दिडुम्

पायॖन्दारिन्दुळ्ळे पडिक् कदवांन्रिट्टुक्
कूय्न्दरिन्दुळ्ळुरै कोयिलुमामे । मंत्र-संख्या, 810

समुचित प्रक्रिया जानकर
जो करें आंतरिक साधना
जल जाएगा अज्ञान
वर्षा होगी करुणा-अनुग्रह की
ईश्वरीय अनुभूति में रमे रहें यदि
अंदर से बंद कर सिटकनी
ज्ञान की ज्योति होगी प्रकाशित
प्रभु के निवास से वे
स्वयं मंदिर बन जाएँगे । 810

213. குணமது வாகிய கோமள வல்லி
மணமது வாக மகிழ்ந்தங் கிருக்கில்
தனமது வாகிய தத்துவ ஞானம்
இனமது வாக இருந்தனன் தானே. 816

गुणमदुवागिय कोमलवल्लि
मणमदुवाग मगिळ्न्दङ्गिरुक्किल्
तनमदुवागिय तत्तुव ज्ञानम्
इनमदुवाग इरुन्दनन् ताने । मंत्र-संख्या, 816

लता-सी मृदुल
गुणवती शक्ति मुदित है अंतस् में
सुगंधित-सुवासित होकर
तब शक्ति से मिलते हैं प्रभु
तत्वज्ञान के घन
रमते हैं आमोद से, आनन्द से । 816

214. இருந்த பிராணனும் உள்ளே எழுமாம்
பரிந்தஇத் தண்டுடன் அண்டம் பரிய

விரிந்தஅப் பூவுடன் மேலெழ வைக்கின்
மலர்ந்தது மண்டலம் வாழலு மாமே. 817

इरुन्द पिराणनुम् उळ्ळे ऍऴ् ु माम्
परिन्द इत्तण्डुडन् अण्डम् परिय
विरिन्द अप्पूवुडन् मेलॅऴ् वैक्किन्
मलर्न्ददु मण्डलम् वाऴ्लुमामे । मंत्र-संख्या, 817

मूलाधार में स्थित प्राणशक्ति को
ऊर्ध्वमुखी करके
सुषुम्ना द्वार से चढ़ा दें
पहुँचा दे कपाल में
जहाँ खिला है सहस्रदलकमल
योजित करें प्राणशक्ति को
सहस्रार के कमल से
तब खुलता है प्रभामय चंद्रमंडल
अमृत का संस्थान
फिर अमर रहेंगे अनंत काल तक । 817

215. அங்கப் புணர்ச்சியு மாகின்ற தத்துவ
மங்கத்தில் விந்து வருகின்ற போகத்துப்
பங்கப் படாமற் பரிகரித் துத்தம்மைத்
தங்கிக் கொடுக்கத் தலைவனு மாமே. 828

अङ्गप्पुणर्चियु मागिन्ऱ तत्तुवम्
अङ्गत्तिल् विन्दु वरुगिन्ऱ बोगत्तुप्
पङ्गप् पडामऱ् परिगरित्तुत् तम्मैत्
तङ्गिक् कॊडुक्कत् तलैवनुमामे । मंत्र-संख्या, 828

अंग-संग के पर्यंक योग में
योगी बड़ा सावधान रहता है
भंग नहीं होने देता बिंदु को

ऊर्ध्वमुखी बनाकर स्थिर करता है
भ्रूमध्य में,
जो इस क्रिया में सिद्धहस्त है
निश्चय ही इंद्रियों का स्वामी है वह । 828

216. வைத்த இருவருந் தம்மின் மகிழ்ந்துடன்
சித்தங் கலங்காது செய்கின்ற ஆனந்தம்
பத்து வகைக்கும் பதினெண் கணத்துக்கும்
வித்தக னாய்நிற்கும் வெங்கதி ரோனே. 835

वैत्त इरुवरुम् तम्मिन् मगिऴ् न्दुडन्
चित्तम् कलङ्गादु चॅय्गिन्ऱ आनन्दम्
पत्तु वगैक्कुम् पदिनॅण् गणत्तुक्कुम्
वित्तगनाय् निर्कुम् वॅङ्कदिरोने । मंत्र-संख्या, 835

इस पर्यंकयोग में संलग्न
उभय पक्ष को होता है आनन्द
किन्तु उत्तेजित नहीं होता चित्त
ऐसा सिद्धहस्त योगी
तेजोद्दीप्त रहता है भानुसम
विचक्षण होता है दसों दिशा में
और श्रेष्ठ बनता है अठारह गण में । 835

217. பாரில்லை நீரில்லை பங்கயம் ஒன்றுண்டு
தாரில்லை வேரில்லை தாமரை பூத்தது
ஊரில்லை காணும் ஒளியது ஒன்றுண்டு
கீழில்லை மேலில்லை கேள்வியிற் பூவே. 844

पारिल्लै नीरिल्लै पङ्कयम् ऑन्ऱुण्डु
तारिल्लै वेरिल्लै तामरै पूत्तदु
ऊरिल्लै काणुम् ऑळियदु ऑन्ऱुण्डु
कीऴिल्लै मेलिल्लै केळ्वियिर् पूवे । मंत्र-संख्या, 844

पंकज एक विकसित है
थल बिन, जल बिन
न डंठल-नाल न जड़
किंतु फूला है यह कमल
वहाँ कोई बस्ती नहीं,
एक ज्योति चमक रही है
ऊपर नीचे कुछ नहीं है
अपूर्व पंकज खिला है । *844*

218. உடலிற் கிடந்த வுறுதிக் குடிநீர்க்
கடலிற் சிறுகிணற் றேற்றமிட் டாலொக்கும்
உடலில் ஒருவழி ஒன்றுக் கிறைக்கில்
நடலைப் படாதுயிர் நாடலு மாமே. *845*

उडलिऱ् किडन्द उरुदिक् कुडिनीर्क्
कडलिऱ् चिरुकिणट्रेट्रमिट्टाळॊक्कुम्
उडलिल् ऑरु वऴि ऑन्रुक् किरैक्किल्
नडलैप् पडादुयिर् नाडलुमामे । *मंत्र-संख्या, 845*

शरीर के भीतर एक स्रोत है
प्रेय जल का अजस्र स्रोत
समुद्रतट पर खोदने पर
रिसते मधुर जलस्रोत सम
इस स्रोत में रिसते जल का
पान करलें एक बार प्रतिदिन
शरीर की कोई क्षति न होगी
प्राणों का यह शाश्वत आधार है । *845*

219. வீர மருந்தென்றும் விண்ணோர் மருந்தென்றும்
நாரி மருந்தென்றும் நந்தி அருள்செய்தான்
ஆதி மருந்தென் றறிவார் அகலிடஞ்
சோதி மருந்திது சொல்லவொண் ணாதே. *850*

वीरमरुन्दॆन्ऱुम् विण्णोर् मरुन्दॆन्ऱुम्
नारिमरुन्दॆन्ऱुम् नन्दि अरुळ् चॆय्दान्
आदिमरुन्दॆन्ऱऱिवार् अगलिडम्
जोदि मरुन्दिदु चॊल्लवॊण्णादे । मंत्र-संख्या, 850

नन्दी कहते हैं यही वीरौषध है
दिव्यौषध यह शक्तिदायक है
सत्य को जानने वाले कहते हैं
यह आदि महौषध है;
अवर्णनीय है
विश्व को प्रशस्त करती
इस देह-ज्योति की महिमा । 850

220. தரணி சலங்கனல் கால்தக்க வானம்
அரணிய பானு அருந்திங்கள் அங்கி
முரணிய தாரகை முன்னிய ஒன்பான்
பிரணவ மாகும் பெருநெறி தானே. 859

तरणि जलम् कनल् काल्तक्क वानम्
अरणिय पानु अरुन्दिङ्कळ् अङ्गि
मुरणिय तारकै मुन्निय ऒन्पान्
पिरणवमागुम् पॆरुनॆऱिताने । मंत्र-संख्या, 859

पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश
भासमान भानु, शीतल चंद्र और
शक्तिशाली नक्षत्र-समूह
ये सब समाहित हैं
प्रणव में, ओंकार में
जिसकी उपासना प्रशस्त मार्ग है । 859

221. அங்கி எழுப்பி யருங்கதிர் ஊட்டத்துத்
தங்குஞ் சசியால் தாமஞ்ஜந் தைந்தாகிப்

பொங்கிய தாரகை யாம்புலன் போக்கறத்
திங்கள் கதிரங்கி சேர்கின்ற யோமே. 862

अङ्गि एॅऴ्ुप्पि अरुङ्कदिर् ऊट्टत्त
तङ्गुम् शशियाल् तामम् ऐन्दैन्दागि
पॉङ्गिय तारकै याम्पुलन् पोक्कऱत्-
तिङ्गळ् कदिरङ्गि चेर्गिन्ऱयोगमे । मंत्र-संख्या, 862

जगाएँ मूलाधार स्थित अग्नि को
योजित करें उसे चंद्र-कलाओं से
चंद्रमंडल में ले जाकर ।
खिलेंगी कलाएँ पंचधा
भूल जाएँगे पंचेंद्रिय-तारक
निज बहिःसरण
यही कहलाता है चंद्रयोग प्रशस्त । 862

222. அங்கி மதிகூட வாகும் கதிரொளி
அங்கி கதிர்கூட வாகு மதியொளி
அங்கி சசிகதிர் கூடவத் தாரகை
தங்கி யதுவே சகலமு மாமே. 864

अङ्गि मति कूड वागुम् कदिरॉळि
अङगि कदिर् कूड वागु मतियॉळि
अङ्गि शशि कदिर कूडवत्तारकै
तङ्गि यदुवे सकलमुमामे । मंत्र-संख्या, 864

अग्निकलाएँ चंद्रनाड़ी से होकर
चलती हैं, मिलती हैं सूर्य में,
अग्निकलाएँ सूर्यनाड़ी से होकर
चलती हैं, मिलती हैं चंद्र में,
कुंडलिनी के शिव से मिलऩ से
तारक रूपी जीव टिकते हैं
सृष्टि का संतुलन बना रहता है । 864

223. ஊதியும் ஏதும் அறியார் உரைப்பினும்
ஓதியும் ஏதும் அறியாத ஊமர்கள்
ஆதியும் அந்தமும் அந்திக்க வல்லீரேல்
வேதியன் அங்கே வெளிப்படுந் தானே. 870

ऊदियम् एदुम् अरियार् उरैप्पिनुम्
ओदियुम् एदुम् अरियाद ऊमर्गळ्
आदियुम् अन्तमुम् अंदिक्क वल्लीरेल्
वेदियन् अङ्गे वॆळिपाडुम् ताने । मंत्र-संख्या, 870

दिवांध उलूक के समान मूढ़मति हैं वे
अपना हित स्वयं न जानें
समझाने पर भी न समझें
यदि तुम्हें आदि को अंत में मिलाना आवे
कुंडलिनी को शिव के साथ
संयुक्त करने की प्रविधि आवे
प्रभु प्रकट होंगे, करेंगे अनुग्रह । 870

224. சசியுதிக் கும்அள வுந்துயி லின்றிச்
சசியுதித் தானேல் தனதூண் அருந்திச்
சசிசரிக் கின்றள வுந்துயி லாமற்
சசிசரிப் பின்கட்டன் கண்டுயில் கொண்டதே. 873

शशि युदिक्कुम् अळवुम् तुयिलिन्रि
शशि युदित्तानेळ् तनदूण् असन्दि
शशि चरिकिन्रळवुम् तुयिलामल्
शशि चरिप्पिन् कट्टन् कण्डुयिल् कॊण्डदे । मंत्र-संख्या, 873

सोना नहीं चंद्र उदित होने तक
साधना करो भ्रूमध्य से
अमृत निःसृत होने तक,
खाना नहीं अन्य कोई वस्तु

खाने योग्य है अमृत जो
चंद्रमंडल से होता है निःसृत
सोना नहीं तब तक
जब तक अमृत न व्यापे सारे शरीर में
जब अमृत हो जाए व्याप्त
सोना है निद्रा में, समाधि में । 873

ॐ ௐ ॐ

4

நாலாம் தந்திரம்

नालाम् तंतिरम्

चतुर्थ तंत्र

அசபை — अजंबै - अजपा;
திருவம்பலச் சக்கரம் — तिरुवम्बलच् चक्करम् - तिरु अम्बल चक्र;
அருச்சனை — अरुच्चनै - अर्चना;
நவகுண்டம் — नवकुण्डम् - नव कुंड;
சத்திபேதம்—திரிபுரை சக்கரம் —
सत्ति बेदम्-त्रिपुरै चक्करम् - शक्ति भेद-त्रिपुरा चक्र;
வயிரவி மந்திரம் — वयिरवि मंतिरम - भैरवी मंत्र;
பூரண சக்தி — पूरण शक्ति - पूर्ण शक्ति;
ஆதாரவாதேயம் — आदारवादेयम् - आधार-आधेय;
ஏரொளிச் சக்கரம் — एरॊळि चक्करम् - एरॊळि चक्र (महाज्योति चक्र);
வயிரவச் சக்கரம் — वयिरवच् चक्करम् - भैरव चक्र;
சாம்பவி மண்டலச் சக்கரம் —
शांबवि मंडलच् चक्करम् - शांभवी मंडल चक्र;
புவனாபதி சக்கரம் — पुवनापति चक्करम् - भुवनपति चक्र;
நவாக்கரி சக்கரம் — नवाक्करि चक्करम् - नवाक्षरी चक्र ।

* * *

225. போற்றுகின் றேன்புகழ் தும்புகல் ஞானத்தைத்
தேற்றுகின் றேன்சிந்தை நாயகன் சேவடி
சாற்றுகின் றேன்அறை யோசிவ யோகத்தை
ஏற்றுகின் றேன்நம் பிரான்ஓர் எழுத்தே. 884

पोट्रुगिन्ऱेन् पुगऴ् न्दुम् पुगल् ज्ञानत्तैत्
तेट्रुगिन्ऱेन् चिन्तै नायकन् चेवडि
चाट्रुगिन्ऱेन् अऱैयो शिवयोगत्तै
एट्रुगिन्ऱेन् नम् पिरान् ओर् ऍऴुत्ते । मंत्र-संख्या, 884

स्तुतिगान करता हूँ प्रभु की प्रशंसा में
जो ज्ञाननिधि वरेण्य है
हमारे लिए शरण्य है,
प्रभुचरणों में प्रणत होकर
व्याख्या करता हूँ
महिमामय शिवयोग तथा
अद्वितीय प्रणवमंत्र की
जो प्रदान करते हैं प्रभु का सामीप्य । 884

226. ஓரெழுத் தாலே உலகெங்குந் தானாகி
ஈரெழுத் தாலே இசைந்தங் கிருவராய்
மூவெழுத் தாலே முளைக்கின்ற சோதியை
மாவெழுத் தாலே மயக்கமே உற்றதே. 885

ओरॅऴुत्ताले उलगमॅङ्गुम् तानागि
ईरॅऴुत्ताले इशैन्दङ् गिरुवराय्
मूवॅऴुत्ताले मुळैक्किन्ऱ जोतियै
मावॅऴुत्ताले मयक्कमे उट्रदे । मंत्र-संख्या, 885

अद्वितीय प्रणव मंत्र ओंकार के
प्रथम अक्षर 'ओ' कार से
विस्तृत हुई है सकल सृष्टि

ओकार के दो घटक
अकार और उकार
प्रतीक हैं शिव और शिवा का
परमात्मा और जीवात्मा का
अकार उकार के साथ मकार के योग से
भासमान होती है ज्योति;
इनमें मकार है माया का प्रतीक,
और वह भ्रम में डालती है जीव को । 885

227. ஆமேபொன் னம்பலம் அற்புதம் ஆனந்தம்
ஆமே திருக்கூத் தனவரத தாண்டவம்
ஆமே பிரளய மாகும்அத் தாண்டவம்
ஆமேசங் காரத் தருந்தாண் டவங்களே. 887

आमे पोन्नम्बलम् अर्पुदम् आनन्दम्
आमे तिरुक्कूत्तनवरद ताण्डवम्
आमे पिरळयमागुम् अत्ताण्डवम्
आमे सङ्गारत्तरुम् ताण्डवङ्गळे । मंत्र-संख्या, 887

हो रहा है कनकसभा में
नटराजराज का अद्भुत नृत्य
कनकसभा में जो हो रहा है
वह है नटराज का आनन्द-नृत्य
यह ताण्डव-नृत्य
अनवरत चलता अद्भुत नृत्य
यह प्रलय नृत्य भी है
और भी संहार नृत्य । 887

228. தாண்டவ மான தனியெழுத் தோரெழுத்
தாண்டவ மான தனுக்கிர கத்தொழில்
தாண்டவக் கூத்துத் தனிநின்ற தற்பரந்
தாண்டவக் கூத்துத் தமனியந் தானே. 888

ताण्डवमान तनियऴुत्तोरऴुत्
ताण्डवमानद अनुग्रहत् ताऴिल्
ताण्डवक्कूत्तु तनिनिन्ऱ तर्परम्
ताण्डवक् कूत्तुत् तमनियन्ताने । मंत्र-संख्या, 888

विशिष्ट अक्षर ओंकार से
जनित है ताण्डव
यही तांडव प्रभु की अनुग्रहलीला है
कनकसभा में
नाच रहे हैं जो तांडव-नृत्य
वे स्वयंभू हैं, अनादि, अजन्मा हैं । 888

229. தராதல மூலைக்குத் தற்பர மாபரன்
தராதலம் வெப்பு நமசி வாயவாந்
தராதலஞ் சொல்லிற் றான்வா சியவாகுந்
தராதல யோகந் தயாவாசி யாமே. 890

तरातर मूलैक्कुत् तर्परमापरन्
तरातलम् वेप्पु नमशिवायवाम्
तरातलम् चोल्लिट्रान् वाशिय वागुम्
तरातल योगम् दया वाशि यामे । मंत्र-संख्या, 890

विराज रहा परात्पर प्रभु
नमशिवाय बन मूलाधार में
नमवाशिय बन वह्निमंडल में
वाशिय होकर सूर्यमंडल में
सोहता वाशि बनकर चंद्रमंडल में । 890

230. ஆமே சிவங்கள் அகார உகாரங்கள்
ஆமே பரங்கள் அறியா விடம்என்ப
ஆமே திருக்கூத் தடங்கிய சிற்பரம்
ஆமே சிவகதி ஆனந்த மாமே. 891

आमे शिवङ्गळ् अकार उकारङ्गळ्
आमे परङ्गळ् अऱिया विडम् ऍन्ब
आमे तिरुक्कूत्तडङ्गिय चिर्परम्
आमे शिवगति आनन्दमामे । मंत्र-संख्या, 891

शिव-शक्ति अकार उकार हैं
व्याप्त हैं पराकाश में
जो स्थान विचार और बुद्धि के लिए अज्ञात हैं,
विशिष्ट विज्ञान वह
मानवमन के लिए अग्राह्य है
चिदाकाश में
शिव-शक्ति का हो रहा है अद्भुत नृत्य
अकार उकार स्वरूप शिवशक्ति
जो कि सर्वलोकैक शरण्य हैं
आनन्दनिधान हैं । 891

231. வாறே சதாசிவ மாறிலா ஆகமம்
வாறே சிவகதி வண்டுறை புன்னையும்
வாறே திருக்கூத்து ஆகம வசனங்கள்
வாறே பொதுவாக மன்றின் அமலமே. 894

वाऱे सदाशिव माऱिला आगमम्
वाऱे शिवगति वण्डुऱै पुन्नैयुम्
वाऱे तिरुक्कूत्तु आगम वचनंगळ्
वाऱे पॉदुवागु मन्ऱिन् अमलमे । मंत्र-संख्या, 894

वर्णनातीत है
विमल शोभा चित्सभा की
अंतरंग निर्मल गंगा
तट पर लहलहाता 'पुन्नै' वृक्ष
कर रहा भ्रमरकुल गुंजार
जीव-राशि के उद्धार हेतु

हो रहा है शिव-तांडव
झंकृत हैं जिनसे
आगम के पुनीत वचन
चित्सभा की शोभा
वर्णनातीत है । 894

232. தலைவனு மாய்நின்ற தற்பரக் கூத்தனைத்
தலைவனு மாய்நின்ற சற்பாத் திரத்தைத்
தலைவனு மாய்நின்ற தாதவிழ் ஞானத்
தலைவனு மாய்நின்ற தாளிணை தானே. 897

तलैवनुमाय् निन्ऱ तर्परक् कूत्तनैत्
तलैवनुमाय् निन्ऱ सर्पात्तिरत्तैत्
तलैवनुमाय् निन्ऱ तादविऴ् ज्ञानत्
तलैवनुमाय् निन्ऱ ताळिणै ताने । मंत्र-संख्या, 897

तत्पर होकर शाश्वत नृत्य रचने वाले
प्रभु अद्वितीय नायक हैं,
कनकसभा में नृत्यरत
प्रभु परम पवित्र हैं
नाच रहे हैं अनवरत
नाचते नाचते उल्लसित करते
संतजनों के हृदयकमल
जहाँ से निःसृत होता है
ज्ञान रूपी मधुर मधु
प्रभु के चरणकमल
निश्चय ही परम पवित्र हैं
अद्वितीय हैं । 897

233. நடமிரண் டொன்றே நளினம தாகும்
நடமிரண் டொன்றே நமன்செய்யுங் கூத்துலயம்

நடமிரண் டொன்றே நகைசெயா மந்திரம்
நடஞ்சிவ லிங்கம் நலஞ்செம்பு பொன்னே. 902

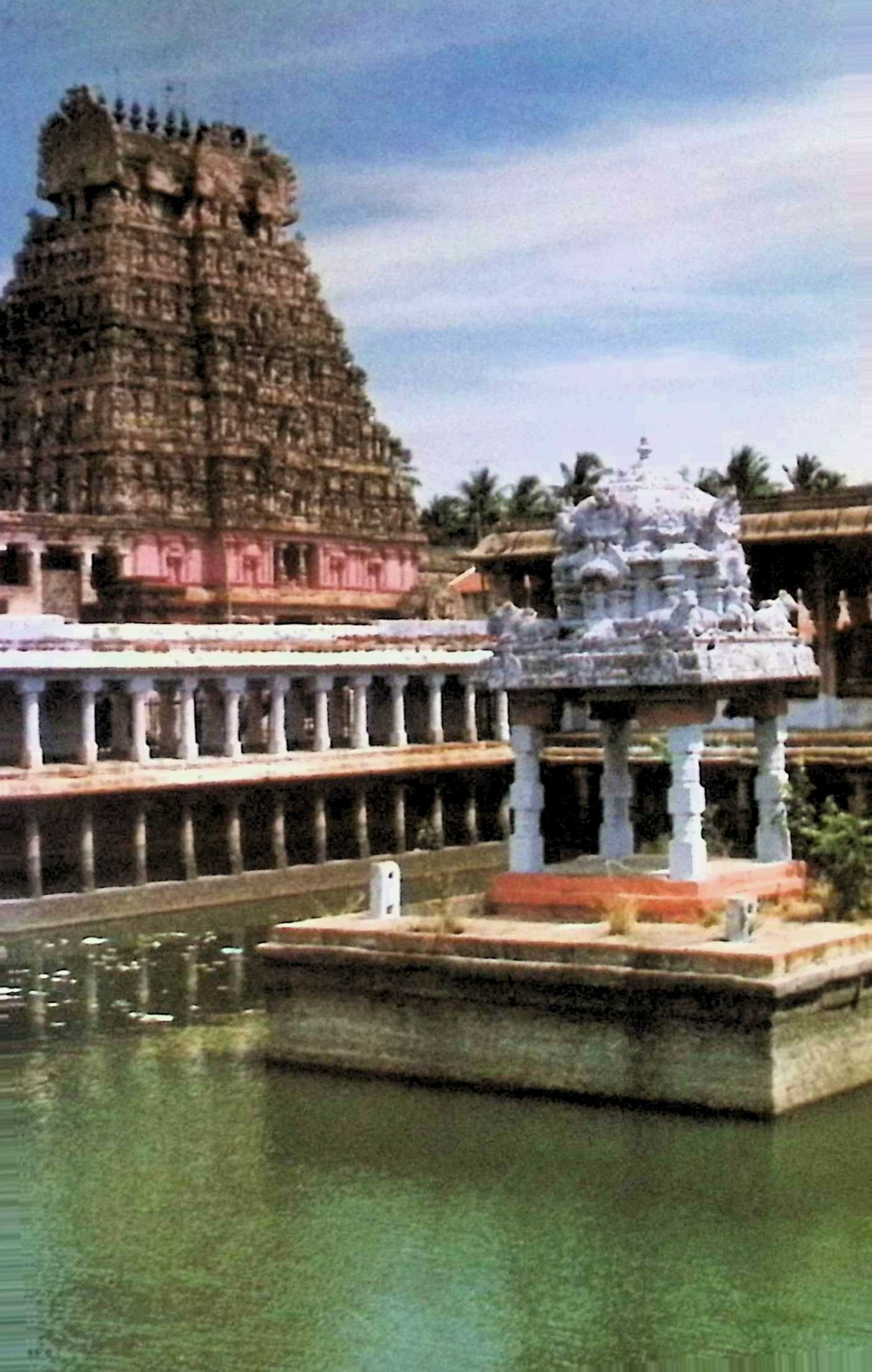
नडमिरंडान्ऱे नळिन मदागुम्
नडमिरंडान्ऱे नमन् चेयुम् कूत्तुलयम्
नडमिरंडान्ऱे नगै चेया मंतिरम्
नडम् शिवलिंगम् नलम् चेम्बु पोन्ने । मंत्र-संख्या, 902

चाहे अद्भुत कहो चाहे आनन्द,
उभयनृत्य का सार एक है
जीवराशि का उद्धार
मृत्युंजय के संहारनृत्य में
विलय हो रहा सकल तत्व
सचराचर संसृति सारी
नटराज का यह नर्तन
आनंद का अमोघ मंत्र है
अथवा अद्भुत रसवाद है
जिसमें सोना बन गया ताम्र
शिव बन गया जीव ! 902

234. செம்புபொன் னாகுஞ் சிவாய நமவென்னிற்
செம்புபொன் னாகத் திரண்டது சிற்பரஞ்
செம்புபொன் னாகும் ஸ்ரீயுங் கிரீயுமெனச்
செம்புபொன் னான திருவம் பலமே. 903

चेम्बु पोन्नागुम् शिवाय नमवेन्निर्
चेम्बु पोन्नागन् तिरण्डदु सिर्परम्
चेम्बु पोन्नागुम् श्रीयुम् किरीयुमेनच्
चेम्बु पोन्नान तिरुवम्बलमे । मंत्र-संख्या, 903

नमःशिवाय मंत्र का फल अक्षय अमोघ है
रसवाद से जिस प्रकार तांबा बन जाता है सोना



திருவானைக்கா
तिरुवानैका (जम्बुकेश्वरम्) मंदिर
Thiruvanaikka Temple

नमःशिवाय मंत्र के जाप से जीव बन गया शिव
अंतर में बसे चित्पर से तांबा बन गया सोना
शक्ति बीजमंत्र हैं श्रीं क्रीम् जिनके जाप से
हृदय बन जाता है कनकसभा
नटराजराज का रंगमंच । *903*

235. வாறே சிவாய நமச்சி வாயநம
வாறே செபிக்கில் வரும்பேர் பிறப்பில்லை
வாறே அருளால் வளர்கூத்துக் காணலாம்
வாறே செபிக்கில் வருஞ்செம்பு பொன்னே. *905*

वाऱे शिवाय नमश्शिवाय नम
वाऱे जपिक्किल् वरुम् पेऱ् पिऱप्पिल्लै
वाऱे अरुळाल् वळर् कूत्तु काणलाम्
वाऱे चॅपिक्कि वरुम् चॅम्बु पॉन्ने । *मंत्र-संख्या, 905*

यों जाप करो निरंतर
शिवायनमः
नमःशिवाय
परमेश्वर के अनुग्रह से
मुक्ति मिलेगी
जन्म-मरण के चक्र से
दर्शन होगा चित्-अम्बर में
नटराजराज का नृत्य
जपते रहो नमःशिवाय मंत्र
तांबा बनेगा सोना जीव बनेगा शिव । *905*

236. சூக்குமம் எண்ணா யிரஞ்செபித் தாலுமேற்
சூக்கும மான வழியிடைக் காணலாஞ்
சூக்கும மான வினையைக் கெடுக்கலாஞ்
சூக்கும மான சிவனதா னந்தமே. *909*

सूक्कुमम् ऍण्णायिरम् जपित्तालुमेर्
सूक्कुममान वऴियिडैक् काणलाम्
सूक्कुममान विनैयैक् कॉडुक्कलाम्
सूक्कुममान शिवनदानन्दमे । मंत्र-संख्या, 909

सूक्ष्म मंत्र है शिवपंचाक्षरी
आठसहस्त्र आवृत्ति जपने पर
सूक्ष्म-मार्ग सुषुम्ना-पथ
परिलक्षित होगा,
मुक्त होगा
सूक्ष्म शरीर कर्मबंधन से
प्राप्त होगा
सूक्ष्म शिवानन्द का अनुभव । 909

237. ஒன்றிரண் டாடவோ ரொன்று முடனாட
ஒன்றினின் மூன்றாட ஓரேழும் ஒத்தாட
ஒன்றினால் ஆடவோர் ஒன்பதும் உடனாட
மன்றினில் ஆடினான் மாணிக்கக் கூத்தே. 913

ऑन्रिरण्डाडवो रॉन्रुमुडनाड
ऑन्रिनिल् मून्राड ओरेऴुम् ऑत्ताड
ऑन्रिनाल् आडवोर् ऑन्पदुम् उडनाड
मन्रिनिल् आडिनान् माणिक्कक् कूत्ते । मंत्र-संख्या, 913

नाचे नटराज एकांत में
फिर हुआ द्वय का नृत्य
जल-थल नाच उठे ईश के संग
नाचे शिव शिवा के संग
फिर नृत्य हुआ ज्योतित्रय का
सूर्य, चंद्र और अग्नि के संग
सप्तलोक नाचे, नाचे ईश एक पाद पर

नवशक्तियों के साथ नाचे मंच पर
यह है नटराजराज का विशिष्ट माणिक्यनृत्य । 913

238. அரகர என்ன அரியதொன் றில்லை
அரகர என்ன அறிகிலர் மாந்தர்
அரகர என்ன அமரரும் ஆவர்
அரகர என்ன அறும்பிறப் பன்றே. 916

अरहर ऍन्न अरियदॊन्ऱिल्लै
अरहर ऍन्न अऱिगिलर् मान्दर्
अरहर ऍन्न अमररुमावर्
अरहर ऍन्न अरुम् पिऱप्पन्ऱे । मंत्र-संख्या, 916

'हर-हर' का उद्घोष करें
असंभव कुछ नहीं है जग में
लोगों को विदित नहीं है
हर नाम की अमोघ महिमा
हर नाम उच्चारें अमर बनेंगे
हर नाम उच्चारें कटेगा निश्चित
जन्म-मरण का बंधन । 916

239. ஆலய மாக அமர்ந்தபஞ் சாக்கரம்
ஆலய மாக அமர்ந்தவித் தூலம்போய்
ஆலய மாக வறிகின்ற சூக்குமம்
ஆலய மாக அமர்ந்திருந் தானே. 919

आलयमाग अमर्न्द पंचाक्करम्
आलयमाग अमर्न्द वित्तूलम्पोय्
आलयमाग वऱिगिन्ऱ सूक्कुमम्
आलयमाग अमर्न्दिरुन्दाने । मंत्र-संख्या, 919

पंचाक्षर में निवसित है परमेश्वर
पंचाक्षर में व्यक्त होते हैं परमेश्वर,

स्थूल से सूक्ष्म, सूक्ष्म से सूक्ष्मतर
स्थूल है नमशिवाय
सूक्ष्म है शिवायनम
स्थूल द्वारा प्रकट है लोकलीला
सूक्ष्म द्वारा व्यक्त है मुक्तिलीला । 919

240. அண்ணல் இருப்ப தவளக் கரத்துளே
பெண்ணினல் லாளும் பிரானக் கரத்துளே
எண்ணி இருவர் இசைந்தங் கிருந்திடப்
புண்ணிய வாளர் பொருளறி வார்களே. 931

अण्णल् इरुप्पदवळक् करत्तुळे
पॅण्णि नल्लाळुम् पिरानक्करत्तुळे
ऍण्णि इरुवर् इशैन्तंगिरुन्दिडप्
पुण्णियवाळर् पॅारुळऱिवार्गळे । मंत्र-संख्या, 931

विराजे हैं शिव, शक्ति बीज 'व' कार में
विलस रही शक्ति भी 'शि' कार शिव बीज में
धन्य होता है जीव वह
जिसके हृदय में
मंगल-मूर्ति शिव युगल
हों शोभित स्नेह से, अनुग्रह से
बनता वह पुण्य पुरुष तत्वज्ञानी । 931

241. அஞ்செழுத் தாலே அமர்ந்தனன் நந்தியும்
அஞ்செழுத் தாலே அமர்ந்தபஞ் சாக்கரம்
அஞ்செழுத் தாகிய வக்கர சக்கரம்
அஞ்செழுத் துள்ளே அமர்ந்திருந்தானே. 934

अञ्जॆऴुत्ताले अमर्न्दनन् नन्दियुम्
अञ्जॆऴुत्ताले अमर्न्द पञ्चाक्करम्
अञ्जॆऴुत्तागिय वक्कर चक्करम्
अञ्जॆऴुत्तुळ्ळे अमर्न्दिरुन्दाने । मंत्र-संख्या, 934

नन्दिनाथ परमेश्वर
नन्दित हैं पंचाक्षर में,
पवित्र मंत्र है पंचाक्षर
अक्षर-चक्र बनता है पंचाक्षर
ईश का आवास है पंचाक्षर । 934

242. அத்திசைக் குள்நின்ற அனலை எழுப்பியே
அத்தைசிக் குள்நின்ற நவ்வெழுத் தோதினால்
அத்திசைக் குள்நின்ற அந்த மறையனை
அத்திசைக் குள்ளூற வாக்கினன் தானே. 936

अत्तिसैक्कुळ् निन्ऱ अनलै ऍऴुप्पिये
अत्तिसैक्कुळ् निन्ऱ नव् वॆऴुत्तोदिनाल्
अत्तिसैक्कुळ् निन्ऱ अन्द मऱैयनै
अत्तिसैक्कुळ्ळुऱ वाक्किनन् ताने । मंत्र-संख्या, 936

आवाहन करें वह्नि का
मूलाधार के धरातल में
जगा करें कुंडलिनी
जाप कर 'न' कार का विधिवत्
अमोघ मंत्र इस धरातल का
सतत साधना से
साक्षात्कार होगा प्रभु का,
जो अपनाता है साधक को
इसी धरातल में । 936

243. ஆகின்ற பாதமு மந்நவாய் நின்றிடும்
ஆகின்ற நாபியுள் அங்கே மகாரமாம்
ஆகின்ற சீயிரு தோள் வவ்வாய்க் கண்டபின்
ஆகின்ற வச்சுட ரவ்வியல் பாமே. 941

आगिन्ऱ पादमु मन्नवाय् निन्ऱिडुम्
आगिन्ऱ नाबियुळ् अङ्गे मकारमाम्

आगिऩ् चीयिरु तोळ् कव्वाय् कण्डपिऩ्
आगिऩ् वच्चुडरअव्वियल्बामे । मंत्र-संख्या, 941

प्रभु का पाद देश है 'न'कार
तो उनका नाभिस्थल है 'म'कार
ईश का स्कंधद्वय है 'शि'कार
उनका मुखमंडल बना 'व'कार
कपाली का कपाल है 'य'कार
यों नमशिवाय है
स्वयं परमेश्वर । 941

244. ஓமென் றெழுப்பித்தன் உத்தம நந்தியை
நாமென் றெழுப்பி நடுவெழு தீபத்தை
ஆமென் றெழுப்பியவ் வாறறி வார்கள்
மாமன்று கண்டு மகிழ்ந்திருந் தாரே.

ओमॆन्ऱॆऴुप्पित् तऩ् उत्तम नन्दियै
नामॆन्ऱॆऴुप्पि नडुवॆऴु दीपत्तै
आमॆन्ऱॆऴुप्पि अव्वाऱऱिवार्गळ्
मामन्ऱु कण्डु मगिऴ्न्दिरुन्दारे । मंत्र-संख्या, 944

ओंकार से आवाहित करलें नन्दी
'न'कार से जगा लें कुंडलिनी-वह्नि
जोकि साधन है ज्योति-लक्ष्य तक
पहुँचने का
जो प्रभु को इस रूप में जानें
डूबते हैं अमंद आनन्द में
देखकर महामंच पर
नटराजराज का नृत्य । 944

245. அவ்வென்ற போதினில் உவ்வெழுத் தாலித்தால்
உவ்வென்ற முத்தி யுருகிக் கலந்திடும்

மவ்வென்றென் னுள்ளே வழிபட்ட நந்தியை
எவ்வணஞ் சொல்லு கேன்எந்தை இயற்கையே. 953

अव्वंऩ्र पोदिनिल् उव्वंऴ ुत्तालित्ताल्
उव्वंऩ्र मुत्तियुरुगिक् कलन्दिड्डुम्
मव्वंऩ्रेन्नुळ्ळे वऴिपट्ट नन्दियै
ऍव्वण्णम् चॉल्लुगेऩ् ऍन्दै इयऱ्कैये । मंत्र-संख्या, 953

साथ-साथ उच्चरित करें
'अ'कार के साथ 'उ'कार का
'उ'कार मुक्ति द्रवित करती है,
'म'कार से प्रकट होते हैं
गुरुदेव नन्दी प्रदर्शित करने को पथ
व्यक्त करूँ मैं किस विधि
प्रभु की महिमा अपरंपार । 953

246. நாவியின் கீழது நல்ல எழுத்தொன்று
பாவிக ளத்தின் பயனறி வாரில்லை
ஓவிய ராலும் அறியவொண் ணாதது
தேவியுந் தானுந் திகழ்ந்திருந் தானே. 956

नावियिऩ् कीऴ्दु नल्ल ऍऴ ुत्तॉन्ऱु
पाविकळत्तिऩ् पयनऱिवारिल्लै
ओवियरालुम् अऱियवॉण्णाददु
देवियुम् तानुम् तिगऴ ्न्दिरुन्दाने । मंत्र-संख्या, 956

ज्योतित है महाक्षर 'ओं'कार
नाभिकमल के नीचे
अज्ञात है उसका महत्व
अज्ञानीजन के लिए
अज्ञात है वह चित्रकार, ब्रह्मा सहित
समस्त देवगण के लिए

राजते हैं वहाँ परमेश्वर
शक्ति के संग आमोद से । 956

247. மந்திரம் ஒன்றுள் மலரால் உதிப்பது
உந்தியினுள்ளே உதயம்பண் ணாநிற்குஞ்
சந்திசெய் யாநிற்பர் தாம தறிகிலர்
அந்தி தொழுதுபோ யார்த்தகன் றார்களே. 958

मन्दिरम् ऑन्रुळ् मलराल् उदिप्पदु
उन्दियिनुळ्ळे उदयम् पण्णानिर्कुम्
सन्दि चॅय्या निर्पर् तामदरिगिलर्
अन्दि तॉऴुदु पोयार्त्तगन्रार्गळे । मंत्र-संख्या, 958

होता उद्भूत नमशिवाय का महामंत्र
हृदयकमल में
सिद्ध होता है वह पूजन-अर्चन से
उदित है कुंडलिनी की वह्नि
नाभिकमल के तले
सिद्ध करें उसे प्राणायाम-हवन से
संध्या समय लोग एकत्रित होते हैं
पूजा करते हैं जोर-शोर से मंदिर में
समझ लेते हैं बेचारे जन
पूजा उनकी हो गई सिद्ध । 958

248. அஞ்செழுத் தாலைந்து பூதம் படைத்தனன்
அஞ்செழுத் தாற்பல யோனி படைத்தனன்
அஞ்செழுத் தாலிவ் வகலிடம் தாங்கினன்
அஞ்செழுத் தாலே அமர்ந்துநின் றானே. 966

अञ्जॅऴुत्तालैन्दु पूदम् पडैत्तनन्
अञ्जॅऴुत्तार् पल योनि पडैत्तनन्
अञ्जॅऴुत्तालिव्वगलिडम् ताङ्गिनन्
अञ्जॅऴुत्ताले अमर्न्दु निन्राने । मंत्र-संख्या, 966

निर्मित किया प्रभु ने
पंचतत्व पंचाक्षर से,
सृजन किया पंचाक्षर से
नाना जीवराशि को अगणित योनियों में
धारण किया पंचाक्षर से
विशाल विश्व और अंतरिक्ष,
व्याप्त हैं स्वयं प्रभु पंचाक्षर में
निज विभूति के संग । *966*

249. ஐந்தின் பெருமையே அகலிட மாவதும்
ஐந்தின் பெருமையே ஆலய மாவதும்
ஐந்தின் பெருமையே யறவோன் வழக்கமும்
ஐந்தின் வகைசெயப் பாலனு மாமே. *969*

ऐन्दिऩ् पॆरुमैये अगलिडमावदुम्
ऐन्दिऩ् पॆरुमैये आलयमावदुम्
ऐन्दिऩ् पॆरुमैये यऱवोऩ् वऴक्कमुम्
ऐन्दिऩ् वगै चॆय्प्प् पालनुमामे । *मंत्र-संख्या, 969*

पंचाक्षर की महिमा अपरंपार है
ब्रह्मांड समाहित है पंचाक्षर में,
समाविष्ट हैं सकल तीर्थ पंचाक्षर में,
परमेश्वर का अनुग्रह निहित है पंचाक्षर में,
उच्चारण करो सदा महामंत्र पंचाक्षर का
सदा युवा रहने का रहस्य निहित है पंचाक्षर में । *969*

250. சிகார வகார யகார முடனே
நகார மகார நடுவுற நாடி
ஒகார முடனே ஒருகா லுரைக்க
மகார முதல்வன் மதித்துநின் றானே. *982*

शिकार वकार यकार मुडने
नकार मकार नडुवुऱ नाडि

ओकार मुडने ओंरुकालुरैक्क
मकार मुदल्वन् मदित्तुनिन्राने । मंत्र-संख्या, 982

उत्तम है योजित करना
पंचाक्षर को प्रणव के साथ
धारण करें हृदय में
'शि' 'वा' 'य' के साथ
'न' 'म' को निष्ठा के साथ
उच्चार करें महामंत्र को ओंकार के साथ
प्रकट होंगे परमेश्वर
अधिष्ठाता मकार के, अनुग्रह के साथ । 982

251. நம்முதல் ஓரைந்தின் நாடுங் கருமங்கள்
அம்முதல் ஐந்தில் அடங்கிய வல்வினை
சிம்முத லுள்ளே தெளியவல் லார்கட்குத்
தம்முத லாகுஞ் சதாசிவந் தானே. 983

नम् मुदल् ओरैन्दिन् नाडुम् करुमङ्गळ्
अम् मुदल् ऐन्दिल् अडङ्गिय वल्विनै
शिम् मुदल् उळ्ळे तॆळियवल्लार्कट्कु
नम् मुदलागुम् सदाशिवम् ताने । मंत्र-संख्या, 983

'न' से शुरू होते नमशिवाय मंत्र को
धरलें जो हृदय में, उनके लिए
सिद्ध होते हैं सकल कर्म
नष्ट होते हैं संचित कर्म
'शि' से शुरू होते शिवायनम मंत्र को
धरलें जो हृदय में उनके लिए
मिल जाते हैं स्वयं सदाशिव
और वे स्वयं मिल जाते हैं सदाशिव में । 983

252. நவமுஞ் சிவமும் உயர்பர மாகுந்
தவமொன் றிலாதன தத்து மாகுஞ்
சிவமொன்றி யாய்பவ ராதர வால்அச்
சிவமென்ப தானாம் எனுந்தெளி வுற்றதே. 984

नवमुम् शिवमुम् उयिर् परमागुम्
तवमॉन्ऱिलादन तत्तुवमागुम्
शिवमॉन्ऱियाय् पवरादरवाल् अच् -
चिवमॅन्ब तानाम् ऍनुम् तॅळिवुट्रदे । मंत्र-संख्या, 984

नकारादि 'न' 'म' जीवतत्व है
'शि' करादि 'शिव' परतत्व है
तत्वज्ञान से रहित जन
जिनके पास लेशमात्र भी 'तप' नहीं है
यदि 'शिव' नाम का उच्चारण करें
भव की कृपा बरसेगी उनपर
केवल नामोच्चारण से
शिव बन जाते हैं । 984

253. புண்ணிய வானவர் பூமழை தூவிநின்(று)
எண்ணுவர் அண்ணல் இணையடி மந்திரம்
நண்ணுவர் நண்ணி நமஎன்று நாமத்தைக்
கண்ணென உன்னிக் கலந்துநின் றாரே. 993

पुण्णिय वानवर् पूमऴै तूवि निन्ऱु
ऍण्णुवर् अण्णल् इणैयडि मन्तिरम्
नण्णुवर् नण्णि नम ऍन्ऱु नामत्तै
कण्णॅन उन्निक् कलन्दु निन्ऱारे । मंत्र-संख्या, 993

पुण्यशील देवगण करते हैं पुष्पवर्षा
देवाधिदेव के चरणयुगल पर
ध्यान लगाते हुए
जाप करते हैं नमशिवाय मंत्र का

ईश-चरणों पर पहुँचने हेतु
जब वे पास आते हैं
'नमोनम' का उद्घोष करते हैं श्रद्धा से
अपनी आंख के समान प्रिय
परमेश्वर के साथ वे
एकाकार हो जाते हैं । 993

254. ஆறெழுத் தாவ தாறு சமயங்கள்
ஆறுக்கு நாலே இருபத்து நாலென்பர்
சாவித் திரியில் தலையெழுத் தொன்றுள
பேதிக்க வல்லார் பிறவியற் றார்களே. 994

आऱॆऴुत्तालावदाऱु समयङ्गळ्
आऱुक्कु नाले इरुपत्तु नालॆन्बर्
सावित्तिरियिल् तलैयॆऴुत्तॊन्ऱुळ
पेदिक्कवल्लार् पिऱवियट्रार्गळे । मंत्र-संख्या, 994

षडाक्षर से बन गए षण्मत
षडाक्षर संवर्धित होता है
चतुर्गुण होकर चौबीस अक्षर का
बनता है महासावित्री मंत्र
जो कि स्वयं गायत्री है
इसके आदि में जुड़ा है ओंकार
साधक जो साधना करें
इन अक्षरों की पृथक्-पृथक्
सफल होते हैं काटने में
जनन-मरण का बंधन । 994

255. ஆங்கு வடமேற்கில் ஐயனார் கோட்டத்திற்
பாங்கு படவே பலாசப் பலகையிற்
காங்கரு மேட்டிற் கடுப்பூசி விந்துவிட்(டு)
ஓங்காமல் வைத்திடும் உச்சாட னத்துக்கே. 999

आङ्गु वडमेर्किल् ऐयनार् कोट्टत्तिर्
पाङ्गु पडवे पलाशप् पलगैयिर्
काङ्गरुमेटिल् कडुप्पूशि विन्दुविट्टु
ओङ्गामल् वैत्तिडुम् उच्चाटनत्तुक्के । मंत्र-संख्या, *999*

वायवी दिशा में शास्ता के आस्थान में
पलाश के तख्ते पर
तप्त श्यामल पट्टिका पर
गरल लेपित कर
स्थापित कर ओंकार, पूजन करें उसका
उच्चाटन करने के लिए । *999*

256. சாங்கம தாகவே சந்தொடு சந்தனந்
தேங்கமழ் குங்குமங் கர்ப்பூரங் காரகிற்
பாங்கு படப்பனி நீராற் குழைத்துவைத்(து)
ஆங்கே அணிந்துநீர் அர்ச்சியும் அன்பொடே. *1004*

चाङ्गमदागवे चन्दॉडु चन्दनम्
तेङ्कमळ् कुङ्कुमम् कर्पूरम् कारगिल्
पाङ्गुपडप् पनिनीराळ् कुळैत्तु वैत्तु
आङ्गे अणिन्दु नीर् अर्चियुम् अन्बॉडे । मंत्र-संख्या, 1004

चक्र पर लेपन करें
सुगंधित द्रव्य यथास्थान विधिपूर्वक;
बनालें सुगंध-द्रव्यों का
मिश्रण इस प्रकार–
कस्तूर्यादि सुगंधित लेपन
चन्दन और सुवासित कुंकुम,
कर्पूर, अगरु आदि को
मिला लें गुलाब जल के साथ
समुचित मात्रा में

चक्र पर करें इनका लेपन
प्रेम से करें पूजन-अर्चन । 1004

257. எய்தி வழிப்படில் எய்தா தனவில்லை
எய்தி வழிப்படில் இந்திரன் செல்வமுன்
எய்தி வழிப்படில் எண்சித்தி உண்டாகும்
எய்தி வழிப்படில் எய்திடும் முத்தியே. 1006

ऍय्दि वऴिप्पडिल् ऍय्दादनविल्लै
ऍय्दि वऴिप्पडिल् इन्दिरन् चॅल्वमुन्
ऍयदि वऴिप्पडिल् ऍण्सित्ति उण्डागुम्
ऍय्दि वऴिप्पडिल् ऍय्दिडुम् मुत्तिये । मंत्र-संख्या, 1006

विधिपूर्वक करें
पूजन-आराधन
जगमें ऐसा कुछ नहीं है
जो अप्राप्य हो
यही नहीं देवलोक की संपदा भी
सहज ही मिल जाएगी
प्राप्त होंगी अष्ट महासिद्धियाँ
हस्तगत होगा मोक्ष साम्राज्य भी । 1006

258. வேண்டார்கள் கன்மம் விமலனுக் காட்பட்டோர்
வேண்டார்கள் கன்மம் மதிலிச்சை யற்றபேர்
வேண்டார்கள் கன்மம் மிகுசிவ யோகிகள்
வேண்டார்கள் கன்மம் மிகுதியோ ராய்ந்தன்பே. 1008

वेण्डार्गळ् कन्मम् विमलनुक्काट्पट्टोर्
वेण्डार्गळ् कन्ममदिलिच्चै यट्रपेर्
वेण्डार्गळ् कन्मम् मिगुशिवयोगिकळ्
वेण्डार्गळ् कन्मम् मिगुदियोराय्न्दन्बे । मंत्र-संख्या, 1008

जो साधक शिव के प्रति
हो गए समर्पित,

जिन पर ईश का है अनुग्रह
उन्हें क्रिया-मार्ग से कोई काम नहीं
व्रती साधक भी
काम्य कर्म से दूर रहते हैं
शिवयोग के सुलझे हुए पथिक
मति नहीं धरते क्रिया पर
ज्ञानमार्ग पर चलने वाले
नहीं चाहते कर्म जो हैं जन्म का बीज । 1008

259. தானவ னாக அவனேதா னாயிட
ஆன இரண்டில் அறிவன் சிவமாகப்
போனவ னன்பிது நாலாம் மரபுறத்
தானவ னாகுமோ ராசித்த தேவரே. 1011

तानवनाग अवने तानायिड
आन इरण्डिल् अऱिवऩ् शिवमागप्
पोनवनन्बिदु नालाम् मरबुऱत्
तानवनागुमोराशित्त देवरे । मंत्र-संख्या, 1011

पाशबद्ध अवस्था में
पशु पर पति हावी रहता है
जब ईश का अनुग्रह मिलता है
जीव शिवमार्ग पर बढ़ता है
जीव को स्वाधीन करके
तब वहाँ शिव ही रहता है
प्रेमाधिक्य से जीव परिणत होता है शिव में
कर्ममार्गी भी यदि ज्ञान को अपनाएँ
वे भी शिव बन जाएँगे
किन्तु जो कर्ममार्ग के पथिक होते हैं
देवरूप में परिणत होते हैं । 1011

260. கொண்டஇக் குண்டத்தின் உள்ளெழு சோதியாய்
அண்டங்கள் ஈரேழு மாக்கி அழிக்கலாம்
பண்டையுள் வேதம் பரந்த பரப்பெலாம்
இன்றுசொல் நூலாய் எடுத்துரைத் தேனே. 1018

कॊण्ड इक्कुण्डत्तिऩ् उळ्ळॆऴु जोतियाय्
अण्डङ्गळ् ईरेऴु माक्कि अऴिक्कलाम्
पण्डैयुळ् वेदम् परन्द परप्पॆलाम्
इन्रु चॊल् नूलाय् ऍडुत्तुरैत्तेने । मंत्र-संख्या, 1018

देह में एक त्रिकोणाकार यज्ञकुंड है
मूलाधार कहते हैं जिसे
वहाँ प्रज्वलित होती है कुण्डलिनी-ज्योति
जब यह ज्योति मिलती है परम-ज्योति से
हस्तगत होती हैं सकल सिद्धियाँ
सक्षम होता है साधक ब्रह्मांड के सृजन में, संहार में
प्राचीन वेदागमों में विस्तार से वर्णित इस तथ्य को
व्यक्त करता हूँ एक ही ग्रंथ में । 1018

261. வின்னா விளம்பிறை மேவிய குண்டத்துச்
சொன்னால் இரண்டுஞ் சுடர்நாகந் திக்கெங்கும்
பன்னாலு நாகம் பரந்த பரஞ்சுடர்
என்னாகத் துள்ளே இடங்கொண்ட வாறே. 1023

विन्ना विलम्पिऱै मेविय कुण्डत्तुच्
चॊन्नालिरण्डुम् चुडर् नागत्तिक्कॆङ्गुम्
पन्नालु नागम् परन्द परम्चुडर्
ऍन्नागत्तुळ्ळे इडम् कॊण्डवाऱे । मंत्र-संख्या, 1023

वह्नि प्रज्वलित होती है यज्ञकुंड में
लपटें लेती हैं नाना रूपाकार
धनुषाकार यज्ञकुंड में सोह रहा अर्धचंद्राकार
उत्थित अग्नि जिह्वाएँ

सर्पिणी के आकार में
व्याप्त हैं आठों दिशाओं में
मेरे अन्दर भी प्रज्वलित है कुण्डलिनी
जिसके दल हैं चार
प्राणायाम प्रक्रिया से लेती है ज्वाला
मेरुदंड में नाना रूपाकार । 1023

262. முக்கணன் றானே முழுச்சுட ராயவன்
அக்கணன் றானே அகிலமும் உண்டவன்
திக்கண னாகித் திகையெட்டுங் கண்டவன்
எக்கணன் றானுக்கும் எந்தை பிரானே. 1025

मुक्कण्णन् ऱाने मुऴुच्चुडरायवन्
अक्कण्णन् ऱाने अकिलमुम् उण्डवन्
तिक्कण्णनागित् तिगैयॅट्टुम् कण्डवन्
ऍक्कण्णन् ऱानुक्कुम् ऍन्दै पिराने । मंत्र-संख्या, 1025

त्रिलोचन प्रभु स्वयं ज्योतिर्मय है
अग्निस्वरूप है; उसका तीसरा नेत्र स्वयं अग्नि है,
संहारकारी इस नेत्र से वह
निगल जाता है सकल भुवन को
सर्वव्यापी परमेश्वर देखता है समग्र
दिशाओं के नेत्र से
वही पिता परमेश्वर मेरा प्रभु है
सकल जगत्-जीवराशि का जनक है । 1025

263. எந்தை பிரானுக் கிருமூன்று வட்டமாய்த்
தந்தைதன் முன்னே சண்முகந் தோன்றலாற்
கந்தன் சுவாமி கலந்தங் கிருத்தலான்
மைந்தன் இவனென்று மாட்டிக்கொள் ளீரே. 1026

ऍन्दै पिरानुक्किरुमून्ऱु वट्टमाय्त्
तन्दै तन् मुन्ने चण्मुगम् तोन्ऱलाऱ्

कन्दन् सुवार्म् कलन्दङ्किरुन्दलान्
मैदन् इवनेन्रु माट्टिकू कोळ्ळीरे । मंत्र-संख्या, 1026

पिता परमेश्वर के
अग्निमय नेत्र से
निर्गत हुए छह स्फुलिंग
जन्म हुआ षण्मुख का
स्कन्द-स्वामी का
पिता-पुत्र शिव और स्कंद
अभिन्न रूप से स्थित हैं
पिता-पुत्र को एकाकार
समझ लो । 1026

264. மாட்டிய குண்டத்தின் உள்ளெழு வேதத்துள்
ஆட்டிய காலொன்றும் இரண்டும் அலர்ந்திடும்
வாட்டிய கையிரண் டொன்று பதைத்தெழ
நாட்டுஞ் சுராரிவர் நல்லொளி தானே. 1027

महाट्टिय कुंडत्तिन् उळ्ळेळु वेदत्तुळ्
आट्टिय कालोन्रुम् इरण्डुम् अलर्न्दिडुम्
वाट्टिय कैयिरंडोन्रु पदैत्तेळ
नाट्टुम् सुररिवर् नल्लोळि ताने । मंत्र-संख्या, 1027

मूलाधार रूपी यज्ञकुंड
में सुलगती है कुंडलिनी
वेद-अग्नि-सी,
उत्थित होती है श्वास की फूंक से
पहुँचती है सुषुम्ना-मार्ग से ऊपर
खिल उठता है द्विदल आज्ञा चक्र
फिर होतीं जब मीलित पंखुड़ियां
पार करती है कुंडलिनी

सुषुम्ना-मार्ग से सहस्रार में
करें जो ऐसे योग-साधना
होते हैं अमर, बनते ज्योतिर्मय । 1027

265. நல்லொளி யாக நடந்துல கெங்குங்
கல்லொளி யாகக் கலந்துள் இருந்திடும்
சொல்லொளி யாகத் தொடர்ந்த உயிர்க்கெலாங்
கல்லொளி கண்ணுளு மாகி நின்றாளே. 1028

नल्लॊळियाग नडन्दुलगॆङ्गुम्
कल्लॊळियागक् कलन्दुम् इरुन्दिडुम्
चॊल्लॊळियागत् तॊडर्न्द उयिर्क्कॆलाम्
कल्लॊळि कण्णुळुमागि निन्ऱाळे । मंत्र-संख्या, 1028

ज्योति-सम व्याप्त है वह सकल भुवन में
अंतर में भासित है वह रत्न की किरण सम
संधान करके गुरुकृपा से
साधना करें शिवज्योति की
प्रकट होता है उनके लिए
पर्वत में प्रज्वलित दीप सम
अनुग्रह-ज्योति वह चमकती है नयन में भी । 1028

266. நின்றஇக் குண்டம் நிலையாறு கோணமாய்ப்
பண்டையில் வட்டம் பதைத்தெழு மாறாறுங்
கொண்ட இத் தத்துவம் உள்ளே கலந்தெழ
விண்ணுளும் என்ன எடுக்கலு மாமே. 1029

निन्ऱ इक्कुण्डुम् निलैयारु कोणमाय्
पण्डैयिल् वट्टम् पदैत्तॆऴु मारारुम्
कॊण्ड इत्तत्तुवम् उळ्ळे कळन्दॆऴ
विण्णुळुम् ऍन्न एडुक्कलुमामे । मंत्र-संख्या, 1029

अद्भुत यह आंतरिक यज्ञकुंड
निर्मित है षडाधार से षट्कोण-सदृश

फूंक पाकर मूल-ध्वनि ओंकार की
धधक उठती है जब
मूलाधार में ज्वलित वह्नि
थरथर कांप उठते हैं
छत्तीस तत्व
पारकर इन्हें पहुंचे स्वर्ग में
संयोग होगा सदाशिव से
सहस्रार में । 1029

267. பத்திட்டங் கெட்டிட் டாறிட்டு நாலிட்டு
மட்டிட்ட குண்டம் மலர்ந்தெழு தாமரை
கட்டிட்டு நின்று கலந்தமெய் யாகமும்
பட்டிட்டு நின்றது பார்ப்பதி பாலே. 1032

पत्तिट्टङ् कॆट्टिट्‌ टारिट्टु नालिट्टु
मट्टिट्ट कुण्डम् मलर्न्दॆऴु तामरै
कट्टिट्टु निन्रु कलन्द मॆय्यागमुम्
पट्टिट्टु निन्‌रदु पार्प्पति पाले । मंत्र-संख्या, 1032

विचित्र है संरचना यज्ञकुंड की
विविधाकृति षडाधार के उपरितल में
कहीं दशदल, कहीं अष्टदल
कहीं षट्कोण, कहीं चतुस्राकार
यज्ञकुंड में प्रज्वलित वह्निशिखा
सोह रही अरुणकमल की आभा में
साध लो स्वयं को
व्याप्त हो रही कुंडलिनी-ज्वाला सकल देह में,
प्रकट हो रहा यज्ञकुंड से
पार्वती-पति । 1032

268. பார்ப்பதி பாகன் பரந்தகை நாலைஞ்சு
காற்பதி· பத்து முகம்பத்துக் கண்களும்
பூப்பதி பாதம் இரண்டு சுடர்முடி
நாற்பது சோத்திரம் நல்லிரு பத்தஞ்சே. 1033

पार्प्पति चदन् परन्दकै नालैञ्चु
कार्पति पत्तु मुगम् पत्तुक् कण्गलुम्
पूप्पति पादम् इरण्डुचुडर् मुडि
नार्पतु चोत्तिरम् नल्लिरुपत्तञ्चे । मंत्र-संख्या, 1033

शोभित है यज्ञकुंड में
शिव-शक्ति युगल की छवि
शिव के समान
पंचमुखी हैं शिवा
देहयष्टि दिख रही है एक
दस मुख पर विलसित हैं
तीस नेत्र बीस कर्ण
और बीस हाथ
नृत्यरत होने के कारण
धरती पर पड़े हैं दो ही चरण
हमारे लिए शरण्य हैं
यह द्विपंचधा युगल । 1033

269. முத்திநற் சோதி முழுச்சுட ராயவன்
கற்றற்று நின்றார் கருத்துள் இருந்திடும்
பற்றற நாடிப் பரந்தொளி யூடுபோய்ச்
செற்றற் றிருந்தவர் சேர்ந்திருந் தாரே. 1035

मुत्तिनऱ्चोति मुऴुच्चुडरायवन्
कट्ऱट्रु निन्ऱार् करुत्तुळ् इरुन्दिडुम्
पट्ऱर नाडिप् परन्दॊळियूडु पोय्च्
चॆट्ऱ्ट्रिरुन्दवर् चेर्न्दिरुन्दारे । मंत्र-संख्या, 1035

मुक्तिदाता ज्योतिर्मय प्रभु
विराज रहा है
ज्ञानियों के पावन हृदय में,
संधान करे जो
अनासक्त मन से, एकाग्र-चित्त से
अंतर्ज्योति के प्रकाश में
निर्द्वंद्व होकर करे साधना,
काम-मन्यु को जीतकर
मिलेंगे अनुग्रह ज्योति में । 1035

270. சேர்ந்த கலையஞ்சுஞ் சேருமிக் குண்டமும்
ஆர்ந்த திசைகளும் அங்கே அமர்ந்திடும்
பாய்ந்தஐம் பூதமும் பார்க்கின்ற வன்னியைக்
காய்ந்தவர் என்றுங் கலந்தவர் தாமே. 1036

चेर्न्द कलैयंचुम् चेरुमिक्कुण्डमुम्
आर्न्द तिसैगळुम् आंगे अमर्न्दिडुम्
पाय्न्द ऐम्पूतमुम् पार्क्किन्ऱ वन्नियैक्
काय्न्दवर् ऍन्ऱुम् कलन्दवर् तामे । मंत्र-संख्या, 1036

इस यज्ञकुंड की महिमा अपार है,
संगम-स्थली यह अद्‌भुत है
शिव की पंचकला की
पंच-भूत और दस दिशाओं की
साधक जो निरंतर जगा रहे
कुंडलिनी ऊष्मा में तपता रहे
शाश्वत संयोग पाता है शिवराज से । 1036

271. மாதன மாக வளர்கின்ற வன்னியைச்
சாதன மாகச் சமைந்த குருவென்று
போதன மாகப் பொருந்த உலகாளும்
பாதன மாகப் பிரிந்தது பார்த்தே. 1041

मादनमाग वळर्गिन्र् वन्नियै
चादनमागच्च् चमैन्द गुरुवन्रु
पोदनागप् पोरुन्द उलगाळुम्
पादनमागप् पिरिन्दुदु पार्त्ते । मंत्र-संख्या, 1041

मूलाधार से निकलकर
ऊपर तक संवर्धित
कुंडलिनी-वह्नि सोह रही है
लक्ष्य तक पहुँचने में सहायक
गुरुनाथ के समान
उद्बुद्ध करते हुए
फिर जब उदय होता है ज्ञान
परमेश्वर की गहिर-गंभीर
कृपादृष्टि पड़ती है । 1041

272. திரிபுரை சுந்தரி அந்தரி சிந்துரப்
பரிபுரை நாரணி யாம்பல வன்னத்தி
இருள்புரை ஈசி மனோன்மனி என்ன
வருபல வாய்நிற்கு மாமாது தானே. 1046

त्रिपुरै सुन्दरि अन्तरि सिन्तुरप्
परिपुरै नारणियाम् पलवन्नत्ति
इरुळ्पुरै ईशि मनोन्मनि ऍन्न
वरु पलवाय् निर्कु मामदु ताने । मंत्र-संख्या, 1046

महाशक्ति वह त्रिपुरेश्वरी है
सौंदर्यधाम वह अंतरी व्योमरूपिणी है
सिन्दूरारुण-विग्रहा वह परिपुरा है
विश्व का पालन करनेवाली नारायणी
विश्वधारक नारायण की शक्ति

श्यामल वर्ण में वह ईश की शक्ति है
सदाशिव-शक्ति मनोन्मनी भी है
यों नाना वर्ण, आकार और प्रकृति के साथ
विलसित है महाशक्ति । 1046

273. தாளணி நூபரஞ் செம்பட்டுத் தானுடை
வாரணி கொங்கை மலர்க்கன்னல் வாளிவில்
ஏரணி அங்குச பாசம் எழில்முடி
காரணி மாமணிக் குண்டலக் காதிக்கே. 1049

ताळणि नूपुरम् चॆम्बट्टुत् तानुडै
वारणि कॊङ्गै मलर्क्कन्नल् वाळिविल्
एरणि अंकुश पाशम् ऍऴिल् मुडि
कारणि मामणिक् कुण्डलक्कादिक्के । मंत्र-संख्या, 1049

मोहक है रूपलावण्य
त्रिपुरा-सुन्दरी महेश्वरी का,
चरण में चारु नूपुर
रुचिर हैं अरुणिम वसन,
सुनिबद्ध है सुगठित उरोज भी
ललित कर में शोभित हैं
इक्षु-धनुष के संग सुमन सायक
शक्तियुत पाश-अंकुश
शोभित केशराशि पर
रत्नजटित किरीट
कर्ण में डोलते माणिक्य-कुंडल
विलसती है शंकरी सर्वकारणी । 1049

274. குண்டலக் காதி கொலைவிற் புருவத்தள்
கொண்ட வரத்த நிறமன்னு கோலத்தள்
கண்டிகை யாரங் கதிர்முடி மாமதிச்
சண்டிகை நாற்றிசை தாங்கிநின் றாளே. 1050

कुण्डलक् कादि कॉलैविऱ् पुरुवत्ताळ्
कॉण्ड वरत्त निऱमन्नु कोलत्ताळ्
काण्डिगै यारम् कदिऱ्मुडि मामतिच्
चण्डिगै नाट्रिसै तांगि निन्ऱाळे । मंत्र-संख्या, 1050

सुमनोहर है मां का भव्य वेश
डोल रहे हैं कानों में कुंडल
देखते ही बनती है भ्रू-भंगिमा
वार करते धनुष के सरिस,
अंग-अंग से छलक रही आरक्त आभा
चारु कंठ में शोभित हैं
रुद्राक्षमाला, पुष्पहार
रत्नमुकुट पर प्रभा बिखेरती चंद्रकला
मां का यह चण्डिका रूप है
रक्षित हैं जिससे चतुर्दिक् । 1050

275. நின்ற திரிபுரை நீளும் புராதனி
குன்றலில் மோகினி மாதிருக் குஞ்சிகை
நன்றறி கண்டிகை நாற்காற் கரீடணி
துன்றிய நற்சுத்த தாமரைச் சுத்தையே. 1051

निन्ऱ तिरिपुरै नीळुम् पुरातनि
कुन्ऱलिल् मोहिनि मादिरुक् कुंजिगै
नन्ऱरिक् कण्डिगै नाऱ्काऱ् करीटणि
तुन्ऱिय नऱ्चुत्त तामरैच् चुत्तैये । मंत्र-संख्या, 1051

खड़ी है त्रिपुरा चिरंतना, पुरातना
अक्षय लावण्यमयी चिरयौवना
केशराशि पर शोभित गंगा
कंठदेश पर शिवमणि (रुद्राक्ष) माला
निकट में खड़ी मत्त हस्तिनी

मां का है प्रिय वाहन,
कमलासना है कमल-सी पावन । 1051

276. சுத்தவம் பாரத் தனத்தி சுகோதயள்
வத்துவ மாயா ளுமாசத்தி மாபரை
அத்தகை யாவும் அணோரணி தானுமாய்
வைத்தவக் கோல மதியவ ளாகுமே. 1052

सुत्तवम्पारत् तनत्ति सुकोदयळ्
वत्तुव मायाळुमासत्ति मापरै
अत्तगै यावुम् अणोरणिनानुमाय्
वेत्तवक् कोलमतियवळागुमे । मंत्र-संख्या, 1052

शोभित है उन्नत स्तनभार
जिन पर विलसित है
सुंदर कंचुक और सुवासित हार
सुखमूल वह आनन्ददात्री है
महाशक्ति माँ पराशक्ति
माया की संचालिका है
अणु से भी अणु है,
ज्ञानस्वरूपिणी है । 1052

277. அவளை யறியா அமரரும் இல்லை
அவளன்றிச் செய்யும் அருந்தவம் இல்லை
அவளன்றி ஐவரால் ஆவதொன் றில்லை
அவளன்றி யூர்புகு மாறறி யேனே. 1053

अवळै यऱिया अमररुम् इल्लै
अवळन्ऱिच् चेय्युम् अरुन्तवम् इल्लै
अवळन्ऱि ऐवराल् आवदोन्ऱिल्लै
अवळन्ऱियूर् पुगुमाऱऱियेने । मंत्र-संख्या, 1053

ऐसा कोई देव नहीं
जो अभिभूत न हो

मां की महिमा से,
ऐसा कोई नहीं तप
जो अनुष्ठित हो सके
माँ की कृपा के बिना,
पंचकृत्य में नियत देवता
अशक्त हैं निजकर्म में
उसके अनुग्रह के बिना,
मैं नहीं जानता मार्ग
मोक्षपुरी में प्रवेश का । 1053

278. அறிவார் பராசக்தி ஆனந்தம் என்பர்
அறிவா ரருவுரு வாமவள் என்பர்
அறிவார் கரும மவளிச்சை என்பர்
அறிவார் பரனு மவளிடத் தானே. 1054

अऱिवार् पराशक्ति आनन्दम् ऍन्बर्
अऱिवार् अरुवुरुवाम् अवळ् ऍन्बर्
अऱिवार् करुमम् अवळिच्चै ऍन्बर
अऱिवार् परमुम् अवळिडम् ताने । मंत्र-संख्या, 1054

ज्ञानी कहते हैं पराशक्ति आनन्दस्वरूपा है
फिर कहते हैं वह निराकार-रूपा है
ज्ञानियों का कहना है
संसृति की सकल क्रियाएं उसकी इच्छा है
ज्ञानियों को ज्ञात है
पराशक्ति के वश में हैं परात्पर भी । 1054

279. பராசக்தி மாசத்தி பல்வகை யாலுந்
தராசக்தி யாய்நின்ற தன்மை யுணராய்
உராசத்தி ஊழிகள் தோறும் உடனே
புராசக்தி புண்ணிய மாகிய போகமே. 1056

परशक्ति मासत्ति पल्वगैयालुम्
तराशक्तियाय् निन्ऱ् तन्मैयुणराय्
उराशत्ति ऊऴिगळ् तोरुम् उडने
पुराशक्ति पुण्णियमागिय बोगमे । मंत्र-संख्या, 1056

सर्वव्यापिनी है पराशक्ति
धरा में सकल जीव का
आधार है वही महाशक्ति,
युग-युगों से वही माँ
पालन करती है जीवों का
पूर्ण करती सबकी मनोकामना
यही माँ की प्रकृति है
प्रदान करती है वही मां
पुण्य-फल भोग यथायोग्य । 1056

280. உணர்ந்துட னேநிற்கும் உள்ளொளி யாகி
மணங்கமழ் பூங்குழல் மங்கையுந் தானும்
புணர்ந்துட னேநிற்கும் போதருங் காலைக்
கணிந்தெழு வார்க்குக் கதியளிப் பாளே. 1063

उणर्न्दुडने निर्कुम् उळ्ळॊळियागि
मणङ्कमऴ् पूङ्कुऴल् मङ्कैयुम् तानुम्
पुणर्न्दुडने निर्कुम् पोदरुम् कालैक्
कणिन्दॆऴु वार्क्कुक् कदियळिप्पाले । मंत्र-संख्या, 1063

सुमन संभार से सुरभित
वेणी जिनकी, वह मां पराशक्ति
अंतर्ज्योति बनकर साधक के हित
व्यक्त करती है निज को
शिव से संयुक्त होकर
जो करते उसकी आराधना

उन पर वर्षा करती है अनुग्रह की
और प्रदान करती है सद्गति । 1063

281. நின்றா ளவன்தன் உடலும் உயிருமாய்ச்
சென்றாள் சிவகதி சேரும் பராசக்தி
ஒன்றாக என்னுட் புகுந்துணர் வாகியே
நின்றாள் பரஞ்சுடர் ஏடங்கை யாளே. 1066

निन्ऱाळवळ् तन् उडलुम् उयिरुमाय्
चॅन्ऱाळ् शिवगति चेरुम् पराशक्ति
ऑन्ऱाग ऍन्नुट् पुगुन्दुणर्वागिये
निन्ऱाळ् परंचुडर् एडंकैयाळे । मंत्र-संख्या, 1066

खड़ी है माँ
शिव के मन, प्राण, देह बनकर
ले जाती है माँ
जीव को शिवस्थिति में
महाचिति वह
मेरी चिति में प्रवेश करती है
ज्योति बनकर
स्थित है ज्ञानरूपिणी
हस्त में लेकर ज्ञान-ग्रंथ । 1066

282. பன்னிரண் டாங்கலை யாதி பயிரவி
தன்னில் அகாரமு மாயையுங் கற்பித்துப்
பன்னிரண் டாதியோ டந்தம் பதினாலுஞ்
சொன்னிலை சோடச மந்தமென் றோதிடே. 1075

पन्निरंडाम् कलै यदि बयिरवि
तन्निल् अकारमु मायैयुम् कर्पित्तुप्
पन्निरंडादि योडन्तम् पतिनालुम्
चॉन्निलै सोडश मन्तमॅन्ऱोदिडे । मंत्र-संख्या, 1075

आदि भैरवी की द्वादश कलाएं
युक्त कर लें आदि में 'अ'कार
बारहवीं 'ऐ' के साथ जुड़ता है
माया का प्रतीक 'म'कार
ऐसे 'ओं' से 'ऐं' तक चतुर्दश कलाओं में
शोभायमान है मां भैरवी
विराजती है चंद्र की षोडश कलाओं में । 1075

283. அந்தம் பதினாலும் அதுவே வயிரவி
முந்து நடுவும் முடிவும் முதலாகச்
சிந்தைக் கமலத் தெழுகின்ற மாசத்தி
அந்தமும் ஆதியு மாகிநின் றாளே. 1076

अन्तम् पतिनालुम् अदुवे वयिरवि
मुन्दु नडुवुम् मुडिवुम् मुदलाग
चिन्तैक् कमलत्तॆऴुकिन्ऱ माशत्ति
अन्तमुम् आदियुमागि निन्ऱाळे । मंत्र-संख्या, 1076

संस्थित है भैरवी
चौदहवीं कला के अंत में
आदि, मध्य और अंत रूप में
महाशक्ति वह विकसित है
चिति के कमल पर
सबका आदिअंत बनकर । 1076

284. ஆகின்ற மூவரும் அங்கே அடங்குவர்
போகின்ற பூதம் பொருந்து புராதரர்
சார்கின்ற சார்வுழிச் சாரார் கதிர்பெறப்
போகுந் திரிபுரை புண்ணியத் தோரே. 1077

आगिन्ऱ मूवरुम् अङ्गे अडंगुवर्
पोगिन्ऱ बूतम् पॊरुन्दु पुरातरर्

चार्गिन्ऱ चाऱ्वुऴिच्च् चाराऱ् कदिऱ्पॆरुप्
पोगुम् तिरिपुरै पुण्णियत्तोरे । मंत्र-संख्या, 1077

समाहित हैं महाशक्ति भैरवी में
शिव, विरिंचि, विष्णु भी
जानते हैं सुधीजन मां की महिमा
चलना नहीं चाहेंगे तत्वों में बंधे
सामान्य जीवों के मार्ग पर,
ध्यान करते हैं वे मनोयोग से
पाकर ज्ञान की ज्योति त्रिपुरा की कृपा से
ज्योतिर्मय बनते हैं वे पुण्यपुरुष । 1077

285. புண்ணிய நந்தி புனிதன் திருவாகும்
எண்ணிய நாட்கள் இருபத்தேழ் சூழ்மதி
பண்ணய வன்னி பகலோன் மதியீறு
திண்ணிய சிந்தைதன் தென்னனு மாமே. 1078

पुण्णिय नन्दि पुनिदन् तिरुवागुम्
ऍण्णिय नाट्कळ् इरुपत्तेऴ् चूऴ्मति
पण्णिय वन्नि पगलोन् मतियीऱु
तिण्णिय चिन्दै तन् तॆन्ननुमामे । मंत्र-संख्या, 1078

भैरवी, शांकरी, महेश्वरी–
शक्ति है वह नन्दिरूप परमेश्वर की
पुण्यधाम की परम-पुनीत की
ध्यान लगाएं भैरवी पर
निरत रहें कुंडलिनी-साधना में
सत्ताईस दिन
ज्योतिर्मय बनेंगे, शिव बनेंगे । 1078

286. சூலங் கபாலங்கை ஏந்திய சூலிக்கு
நாலாங் கரமுள நாகபா சாங்குச்

மாலங் கயனறி யாத வடிவுக்கு
மேலங்க மாய்நின்ற மெல்லிய லாளே. 1081

शूलम् कपालम्कै एन्दिय शूलिक्कु
नालाङ् करमुळ नाग पाशाङ्कुश
मालाङ्कयनरियाद वडिवुकु
मेलङ्कमाय् निन्र मेल्लियलाळे । मंत्र-संख्या, 1081

चतुर्भुजा है भैरवी
जिनके दो करों में शोभित हैं
त्रिशूल और कपाल
अन्य दो करों में लसित हैं
नाग-पाश और हस्ति-अंकुश
हरि-ब्रह्मा के लिए अज्ञात
शिव के ज्योतिस्वरूप पर
ताम्रवर्ण में सुशोभित है मां शक्ति
शिव का अंग बन कर । 1081

287. கண்ட சிலம்பு வளைசங்கு சக்கரம்
எண்டிசை யோகி இறைவி பராசக்தி
அண்டமோ டெண்டிசை தாங்கும் அருட்செல்வி
புண்டரி கத்தினுட் பூசனை யாளே. 1085

कण्ड चिलम्बु वळै चंगु चक्करम्
ऍडिसै योगि इऱैवि पराशक्ति
अण्डमो डॅन्डिसै तांगुम् अरुट्चॅल्वि
पुण्डरिगत्तिनुट् पूसनैयाळे । मंत्र-संख्या, 1085

नूपुर-कंकण के संग शंख चक्रधर
शोभायमान है भैरवी सुमनोहरी
योगिनी वह सर्वेश्वरी पराशक्ति है
संरक्षण देती अंड-बहिरंड को, सकल दिशा को,

कृपामयी वह प्रसन्न होती है पूजन से
विराजती है साधक के हृदय-कमल पर
अनुग्रह-शक्ति रूप में । 1085

288. காரணி மந்திரம் ஓதுங் கமலத்துப்
பூரண கும்ப விரேசம் பொருந்திய
நாரணி நந்தி நடுவங் குறைசெய்த
ஆரண வேதநூல் அந்தமு மாமே. 1088

कारणि मन्तिरम् ओदुङ् कमलत्तुप्
पूरण कुम्ब विरेचम् पॊरुन्दिय
नारणि नन्दि नडुवङ्वङ्कुरै चॆय्द
आरण वेदनूल् अन्तमुमामे । मंत्र-संख्या, 1088

आदिशक्ति वह सर्वकारणी है
स्थित है जपतप में, मंत्रोच्चार में,
ओंकार स्वरूपिणी वह
योगरत साधक के
हृदय-कमल रेचक रूप में
साधना में सहायिका
वही नारायणी है
वेदस्वरूपिणी वह
वेद का सार और वेदागमों का अंत भी वही
नन्दी ने परमकृपा से
प्रकट की है माँ की महिमा अपार । 1088

289. காணும் இருதய மந்திர முங்கண்டு
பேணு நமவென்று பேசுந் தலைமேலே
வேணு நடுவு மிகநின்ற வாகுதி
பூணு நடுவென்ற வந்தஞ் சிகையே. . 1092

काणुम् इरुदय मन्तिरमुम् कण्डु
पेणु नमवॆन्रु पेशुन्तलैमेले

वेणु नड्डुवु मिग निन्ऱ् वागुदि
पूणु नड्डुवंन्ऱ् वन्दञ्चिकैये । *मंत्र-संख्या, 1092*

उच्चारण करो हृदयमंत्र का
वही उसका हृदय है (हृदयाय नमः)
'नम' का उच्चार करते हुए
प्राणों को समर्पित कर दो
चढ़ाओ उन्हें
मध्यवर्ती सुषुम्ना-मार्ग से
यही प्राणों की आहुति है,
सहस्रार की शिखा में
चढ़ाकर प्राण
उच्चारण करो शिखामंत्र का ।
(शिखायै नमः) । *1092*

290. சிகைநின்ற வந்தக் கவசங்கொண் டாதிப்
பகைநின்ற வங்கத்தைப் பாரென்று மாறித்
தொகைநின்ற நேத்திர முத்திரை சூலம்
வகைநின்ற யோனி வருத்தலு மாமே. 1093

शिगै निन्ऱवन्दक् कवचम् कोण्डादिप्
पगै निन्ऱ् वंगत्तैप् पारॅन्ऱु मारित्
तगै निन्ऱ् नेत्तिर मुत्तिरै शूलम्
वगै निन्ऱ् योनि वरुत्तलु मामे । *मंत्र-संख्या, 1093*

विधिपूर्वक करें उपासना सांगोपांग
न्यास-कवच-मुद्राओं से
अस्त्र मंत्र से अरिदमन कर
धारण करें कवच मंत्र अति अमोघ
सुनिश्चित होता है देह-रक्षण
कर अनुष्ठान शूल-मुद्रा का, पढ़ें नेत्र-मंत्र

इन मंत्रों से स्पर्श करें संबंधित अंग
फिर ध्यानपूर्वक करें उपासना
सिद्ध होता है मंत्र
कट जाता है बंधन जनन-मरण का । 1093

291. ஆதி வயிரவி கன்னித் துறைமன்னி
ஓதி யுணரில் உடலுயிர் ஈசனாம்
பேதை உலகிற் பிறவிகள் நாசமாம்
ஓத வுலவாத கோலமொன் றாகுமே. 1099

आदि वयिरवि कन्नित्तु़रै मन्नि
ओदि युणरिल् उडलुयिर् ईशनाम्
पेदै उलगिऱ् पिऱविगळ् नाशमाम्
ओद वुलवाद कोलमोन्ऱागुमे । मंत्र-संख्या, 1099

आदिभैरवी जगदम्बा होकर भी
वह कन्यारूपिणी है नित्य ही
जो जगा लें इस कुंडलिनी को
सदा वे रहेंगे ईश के साथ
एक शरीर एक प्राण;
मुक्त होंगे जन्म-मरण के
बंधन से
अवर्णनीय होगी देहकांति । 1099

292. கோலக் குழலி குலாய புருவத்தள்
நீலக் குவளை மலரன்ன கண்ணினாள்
ஆலிக்கும் இன்னமு தானந்த சுந்தரி
மேலைச் சிவத்தை வெளிப்படுத் தாளே. 1100

कोलक् कुऴलि कुलाय पुरुवत्तळ्
नीलक् कुवळै मलरन्न कण्णिनाळ्
आलिक्कुम् इन्नमुदानन्द सुन्दरि
मेलैच् चिवत्तै वॆळिप्पडुत्ताळे । मंत्र-संख्या 1100

मां भैरवी सुगंध-कुंतला
है अति मनोहर भ्रूभंगिमा
सुनयना नील कुमुद-सी
अमृतमयी आनन्दसुन्दरी
भैरवी दिलाती है दर्शन
परात्पर का, परमेश्वर का । 1100

293. நாடிகள் மூன்று நடுவெழு ஞாளத்துக்
கூடி இருந்த குமரி குலக்கன்னி
பாடகச் சீறடிப் பைம்பொற் சிலம்பொலி
ஊடக மேவி உறங்குகின் றாளே. 1106

नाडिगळ् मून्रु नडवॆऴु ञाळत्तुक्
कूडि इरुन्द कुमरि कुलक्कन्नि
पाडगच् चीऱडिप् पैम्पॊऱ् चिलम्बॊलि
ऊडग मेवि उऱङ्गुकिन्ऱाळे । मंत्र-संख्या, 1106

तीन नाड़ियों में से
मध्यवर्ती सुषुम्ना में स्थित है
वह तन्वंगी कुंडलिनी कन्या
कोमल चरणों पर झंकृत नूपुर
इस भंगिमा के साथ
प्रवेश कर गई मेरे हृदय में
जहाँ निद्रालीन है निश्चित । 1106

294. ஆருயி ராயும் அருந்தவப் பெண்பிள்ளை
காரியல் கோதையள் காரணி நாரணி
ஊரும் உயிரும் உலகும் ஒடுக்கிடுங்
கோரியென் உள்ளங் குலாவிநின் றாளே. 1110

आरुयिरायुम् अरुन्तवप् पॆन्पिळ्ळै
कारियल् कोदैयळ् कारणि नारणि

ऊरुम् उयिरुम् उलगुम् ओंडुक्किडुम्
कोरियंन् उळ्ळङ् कुलावि निन्ऱाळे । मंत्र-संख्या, 1110

प्राणों से भी प्रिय है वह
जीवों के लिए
अद्भुत तपस्विनी, उसी की
तलाश में हैं जीवगण
घनश्याम कुंतला वह सर्वकारणी है
नारायणी वह सबको धारण करती है
महेश्वरी वह जिसमें लय पाते हैं
सकल ब्रह्मांड जीवराशि प्रलयकाल में
देखने में भयंकरी वह
रमी रहती है मेरे हृदय में । 1110

295. கலைத்தலை நெற்றியோர் கண்ணுடைக் கண்ணுள்
முலைத்தலை மங்கை முயங்கி இருக்குஞ்
சிலைத்தலை யாய தெரிவினை நோக்கி
அலைத்த பூங்கொம்பினள் அங்கிருந் தாளே. 1112

कलैत्तलै नंद्रियोर् कण्णुडैक् कण्णुळ्
मुलैत्तलै मंगै मुयंगि इरुक्कुम्
शिलैत्तलै आय तंरिविनै नोक्कि
अलैत्त पूंकोम्पिनळ् अंगिरुन्दाळे । मंत्र-संख्या, 1112

चंद्रकलाधर हैं, त्रिनेत्र हैं
ज्ञानस्वरूप प्रभु ;
विराजे हैं मेरु की उपत्यका में
चन्द्रमंडल पर,
भ्रूमध्य में विलसित शक्ति
तन्वंगी पृथुस्तनी शांकरी
निहार रही है प्रिय को

चंचलता से हो रही कंपित
पुष्पवल्लरी सम । 1112

296. ஆதி யனாதிய காரணி காரணி
சோதிய சோதி சுகபர சுந்தரி
மாது சமாதி மனோன்மனி மங்கலி
ஓதியென் னுள்ளத் துடனியைந் தாளே. 1114

आदियनादि यकारणि कारणि
जोतिय जोति सुकपर सुन्दरि
मादु समादि मनोन्मनि मङ्गलि
ओदियन्नुल्ळत् तुडनियैन्दाळे । मंत्र-संख्या, 1114

आदि है वह अनादि भी
कारणी है कारणहीन भी
ज्योति भी ज्योतिरहित भी
सुख, शांति, आनन्ददायिनी माँ
सुंदरी है मनोन्मनी सर्वमंगला है
मंत्रोपदेश देकर वह
मेरे हृदय में रमी रहती है । 1114

297. பிதற்றிக் கழிந்தனர் பேதை மனிதர்
முயற்றியின் முத்தி அருளும் முதல்வி
கயற்றிகழ் முக்கண்ணுங் கம்பலைச் செவ்வாய்
முகத்தருள் நோக்கமும் முன்னுள்ள தாமே. 1116

पिदट्रिक् कऴिन्दनर् पेदै मनिदर्
मुयट्रियिन् मुत्ति अरुळुम् मुदल्वि
कयट्रिगऴ् मुक्कण्णुम् कम्बलैच् चॆव्वाय्
मुगत्तरुळ् नोक्कमुम् मुन्नुळ्ळदामे । मंत्र-संख्या, 1116

निरर्थक बातों में
अज्ञानी जन ने

किया व्यर्थ बहुमूल्य जीवन
नहीं जानते वे
सतत प्रयासरत जन को
मुक्ति देने के लिए उद्यत है
आदिशक्ति दयामयी
मीन जैसे सुदीर्घ
तीन-तीन नेत्र हैं जिसके
सुंदर है अधरोष्ठ बिंबाफल निकर
प्रसाद और अनुग्रहपूर्ण मुख
सक्षम है कृपा बरसाने को । 1116

298\. அளந்தேன் அகலிடத் தந்தமும் ஈறும்
அளந்தேன் அகலிடத் தாதிப் பிரானை
அளந்தேன் அகலிடத் தாணொடு பெண்ணும்
அளந்தேன் அவனருள் ஆய்ந்துணர்ந் தேனே. 1125

अळन्देऩ् अगलिडत्तन्तमुम् ईऱुम्
अळन्देऩ् अगलिडत्तादिप् पिरानै
अळन्देऩ् अगलिडत्ताणॊडु पॆण्णुम्
अळन्देऩ् अवनरुळ् आय्न्दुणर्न्दे ने । मंत्र-संख्या, 1125

नाप डाला मैंने
अंतरिक्ष का विस्तार आदि से अंत तक
और अनुभव किया
आद्यंतविहीन आदिदेव के विस्तार का
माप डाली मैंने
अनंत विस्तृत में नरनारी की प्रकृति
रहस्य जान लिया
प्रकृति और पुरुष का, शिव-शक्ति ऐक्य का
यह सब संभव हुआ उसकी कृपा से, अनुग्रह से । -1125

299. உணர்ந்திலர் ஈசனை ஊழிசெய் சத்தி
புணர்ந்தது பூரணம் புண்ணியர் தங்கள்
கணங்களைத் தன்னருள் செய்கின்ற கன்னி
கொணர்ந்த வழிகொண்டு கும்பக மாமே. 1126

उणर्न्दिलर् ईशनै ऊऴि चेय् सत्ति
उणर्न्दु पूरणम् पुण्णियर् तंगळ्
कणंगळैत् तन्नरुळ् चेय्किन्ऱ् कन्नि
कोणर्न्द वऴि कोण्डु कुम्बकमामे । मंत्र-संख्या, 1126

सामान्य जन को
ज्ञात नहीं यह तथ्य
कि शिव बनता है परिपूर्ण
पाकर आदि पराशक्ति का संयोग;
पराशक्ति की महिमा अपरंपार है
साधना-रत योगियों पर
दयामयी मां करती अनुग्रह-वर्षा
उपासना करें उसकी मूलाधार में
तब सुझाएगी मार्ग
कुम्भक का, श्वास-लय का
दर्शाएगी मार्ग भवसागर से उद्धार का । 1126

300. கும்பக் களிறைந்துங் கோலொடு பாகனும்
வம்பில் திகழும் மணிமுடி வண்ணனும்
இன்பக் கலவி இனிதுறை தையலும்
அன்பிற் கலவியு ளாயொழிந் தாரே. 1127

कुम्बक् कळिरैन्दुम् कोलोडु पागनुम्
वम्बिल् तिगळुम् मणिमुडि वण्णनुम्
इन्बक् कलवि इनिदुरै तैयलुम्
अन्बिर् कलवियुळा यॊळिन्दारे । मंत्र-संख्या, 1127

मत्त वारण सरिस हैं पांच इंद्रिय
नियंत्रण के प्रयास में रत हैं जीव

जैसे हाथी के संग पाश-हस्त महावत हो;
सकल जीवराशि का नियंता परमेश्वर
जो फणमणि-विभूषित हैं
शक्ति के साथ रमे हैं एकाकार हो
इसी दिव्य-देश सहस्रार में
अद्भुत संगम होता है, महामिलन होता है,
परिपक्व जीवों का शिव-शक्ति से
इस योग-संयोग से
उद्धार होता है जीव-जगत् का । 1127

301. இரவும் பகலும் இலாத விடத்தே
குரவஞ்செய் கின்ற குழலியை நாடி
அரவஞ்செய் யாமல் அருளுடன் தூங்கப்
பருவஞ்செய் யாததோர் பாலனு மாமே. 1134

इरवुम पगलुम् इलाद विडत्ते
कुरवम् चेय्किन्र् कुळलियै नाडि
अरवम् चेय्मामल् अरुलुडन् तूङ्गप्
परुवम् चेय्याददोर् पालनुमामे । मंत्र-संख्या, 1134

अंतरिक्ष की अनन्त विस्तृति में
क्रीड़ारत है वह निस्तुला नीलचिकुरा
खोजो और पाओ उसको
मौन ही मौन में योगनिद्रा में
निद्रालीन हो जाओ उसके संग
सदा युवा बने रहोगे
देश काल को जीतकर । 1134

302. சிந்தையின் உள்ளே திரியுஞ் சிவசத்தி
விந்துவும் நாதமு மாயே விரிந்தனள்
சந்திர பூமி சடாதரி சாத்தவி
அந்தமொ டாதிய தாம்வண்ணத் தாளே. 1138

चिन्नैयिन् उळ्ळे तिरियुम् शिवशक्ति
विंदुवुम् नादमुमाये विरिन्दनळ्
चन्दिर पूमि जडादरि सात्तवि
अन्दमांडादियदाम् वण्णत्ताळे । मंत्र-संख्या, 1138

शिवशक्ति ने उद्वेलित किया
शिव के मानस को
यों हुआ सृष्टि का उपक्रम
वही शक्ति विकसित हुई
नाद और बिंदु रूप में
सृष्टि-प्रक्रिया को बढ़ाते हुए
वही शक्ति चंद्रकलाधरी
जटाधरी साध्वी
सत्वगुणसंपन्ना आद्यंतविहीना
वही आद्यंतयुक्त जग की कारणी । 1138

303. அடுக்குந் தாமரை ஆதி இருப்பிடம்
எடுக்குந் தாமரை இல்லகத் துள்ளது
மடுக்குந் தாமரை மத்தகத் தேசெல
முடுக்குந் தாமரை முச்சது ரத்தே. 1144

अडुक्कुम् तामरै आदि इरुप्पिडम्
ऍडुक्कुम् तामरै इल्लगत्तुळ्ळदु
मडुक्कुम् तामरै मत्तगत्ते चॅल
मुडुक्कुम् तामरै मुच्चतुरत्ते । मंत्र-संख्या, 1144

आदिशक्ति की निवासभूमि है
आज्ञाचक्र – अगणित दलों वाला कमल
प्राणशक्ति के अमृत को
पहुँचाता विशुद्धिचक्र भी कमल है
मस्तक में पहुँचा अमृत

भ्रूमध्यकमल अनाहत में संभरित होता है;
यों मूलाधार का त्रिदल कमल
जब होता है जागृत
उधर खिलता है सहस्रारकमल । 1144

304. முச்சது ரத்தே எழுந்த முளைச்சுடர்
எச்சது ரத்தும் இடம்பெற ஓடிடக்
கைச்சது ரத்துக் கடந்துள் ஒளிபெற
எச்சது ரத்தும் இருந்தனள் தானே. 1145

मुच्चतुरत्ते ऍऴ़ुन्दमुळैच्चुडर्
ऍच्चतुरत्तुम् इडम्पॆऱ ओडिडक्
कैच्चतुरत्तुक् कडन्दुळ् ऒळिपॆऱ
ऍच्चतुरत्तुम् इरुन्दनळ् ताने । मंत्र-संख्या, 1145

जागृत हुई कुंडलिनी की वह्नि
त्रिकोणाकार मूलाधार में
बढ़ी ऊपर फैल चली
सब आधार-चक्रों में
भेदन करती हुई पहुँची सहस्रार में
उज्ज्वल होकर विलसी
यों व्याप्त हुई शक्ति
समस्त चक्रों में एक समान । 1145

305. மெல்லிசைப் பாவை வியோமத்தின் மென்கொடி
பல்லிசைப் பாவை பயன்தரு பைங்கொடி
புல்லிசைப் பாவையைப் போகத் துரந்திட்டு
வல்லிசைப் பாவை மனம்புகுந் தாளே. 1152

मॆल्लिशैप् पावै वियोमत्तिन् मॆन्कॊडि
पल्लिशैप् पावै पयन्तरु पैङ्कॊडि
पुल्लिशैप् पावैयैप् पोगत् तुरन्तिट्टु
वल्लिशैप् पावै मनम् पुगुन्दाळे । मंत्र-संख्या, 1152

संगीत की रागिनी से भी
मंजुल मधुर है उसकी वाणी
अनुग्रह के निस्सीम व्योम की
वह मृणाल सी मृदुल लता है
सकल जीवराशि से
समरस होकर बरसाती है अनंत शुभफल
दूर करती है माया को
जो पैदा करती दिग्भ्रम;
प्रदान करती है साधक को सद्गति
ऐसी महिमामयी मां
प्रविष्ट हुई मम अंतर में । 1152

306. தாவிப் தவப்பொருள் தானவன் எம்மிறை
பாவித் துலகம் படைக்கின்ற காலத்து
மேவிப் பராசக்தி மேலொடு கீழ்தொடர்ந்
தாவிக்கு மப்பொருள் தானது தானே. 1153

तावित्तवप्पॊरुळ् तानवन् ऍम्मिऱै
पावित्तुलगम् पडैक्किन्ऱ कालत्तु
मेविप् पराशक्ति मेलॊडु कीऴ् तॊडर्न्द
ताविक्कुमप् पॊरुळ् तानदु ताने । मंत्र-संख्या, 1153

संकल्प उठा प्रभु के हृदय में
सकल लोक और जीवराशि के
सृजन का,
सक्रिय बनी उस समय पराशक्ति
परमेश्वर के संगसंग ।
आकाश से लेकर धरती तक
सृजन करके अगणित जीवराशि
प्रदत्त किये उनको प्राण

व्याप्त हो गई शक्ति
सकल देह में, प्राण और अंतःकरण में । 1153

307. மாதுநல் லாளும் மணாளன் இருந்திடப்
பாதிநல் லாளும் பகவனு மானது
சோதிநல் லாளைத் துணைப்பெய்ய வல்லிரேல்
வேதனை தீர்தரும் வெள்ளடை யாமே. 1157

मादुनल्लाळुम् मणाळन् इरुन्दिडप्
पादिनल्लाळुम् पगवनुमानदु
जोतिनल्लाळैत् तुणैपंय्य वल्लीरेल्
वेदनै तीर्तरुम् वॆळ्ळडैयामे । मंत्र-संख्या, 1157

प्रदान कर निज देह का अर्ध भाग
प्रियतम को,
बनी रही शुभदा माँ अर्धांगिनी उनकी
सच्चे अर्थ में,
रमे रहे भगवान् परमेश्वर भी मोद से
माँ पराशक्ति के संग,
शरण में जाओ
ज्योतिस्वरूपिणी माँ की,
अंत होगा समस्त दुख और दुरित
बनोगे तुम निष्पाप, निष्कलंक, निर्मल । 1157

308. குத்து முலைச்சி குழைந்த மருங்கினள்
துத்தி விரிந்த சுணங்கினள் தூமொழி
புத்தகச் சீறடிப் பாவை புணர்வினைத்
தொத்த கருத்துச் சொல்லகி லேனே. 1163

कुत्तु मुलैच्चि कुऴैन्द मरुंगिनळ्
तुत्ति विरिन्द चुणंगिनळ् तूमॊऴि
पुत्तगच् चीऱडि पावै पुणर्विनैत्
तॊत्त करुत्तुच् चॊल्लगिलेने । मंत्र-संख्या, 1163

पीनस्तनी है कटितट लचकदार
कनकाभ देहकांति पर
शोभित स्वर्णिम आभा
मंजु-मधुर भाषिणी
मयूर-पंख सरिस मृदुल चरण,
इस भंगिमा के साथ
आ गई है ज्ञानांबिका
मेरी प्रज्ञा में, चेतना में
वर्णनातीत अनुभव है । 1163

309. சொல்லவொண் ணாத அழற்பொதி மண்டலஞ்
செல்லவொண் ணாது திகைத்தங் கிருப்பர்கள்
வெல்லவொண் ணாத வினைத்தனி நாயகி
மல்லவொண் ணாத மனோன்மனி தானே. 1164

चॊल्लवॊण्णाद अऴऱ् पॊदि मण्डलम्
चॊल्लवॊण्णादु तिगैत्तङ्गिरुप्पर्गळ्
चॊल्लवॊण्णाद विनैत्तनि नायकि
मल्लवॊण्णाद मनोन्मनि ताने । मंत्र-संख्या, 1164

वर्णनातीत है वह्नि-वलयित मंडल
जहां पहुंच कर होते हैं चकित-भ्रमित
ज्ञानीजन भी खोकर अपनी वाणी
अपराजेय हैं इसके इंद्रजाल
अबूझ भी अग्राह्य भी,
नाम है मनोन्मनी जो अपराजिता है । 1164

310. கண்டெண் டிசையுங் கலந்து வருங்கன்னி
பண்டெண் டிசையும் பராசக்தி யாய்நிற்கும்
விண்டெண் டிசையும் விரைமலர் கைக்கொண்டு
தொண்டெண் டிசையுந் தொழநின்ற கன்னியே. 1167

कण्डॅण्डिसैयुम् कलन्दु वरुम् कन्नि
पण्डॅण्डिसैयुम् पराशक्तियाय् निर्कुम्
विण्डॅडिसैयुम् विरैमलर् कैक्कॉण्डु
तॉण्डॅण्डिसैयुम् तॉऴ निन्र् कन्नियॆ । मंत्र-संख्या, 1167

नित्यकन्या परमेश्वरी
परिपालन करती है सकल दिशा का
निखिल ब्रह्मांड का
माँ पराशक्ति का अस्तित्व
संसृति के पूर्व से है
जगज्जननी यह सर्वकारणी है,
लेकर सुगंधित सुमन
निखिल जगत के भक्तजन
गा रहे हैं स्तुति, कर रहे पूजन-आराधन । 1167

311. கன்னி ஒளியென நின்றவிச் சந்திரன்
மன்னி யிருக்கின்ற மாளிகை செந்நிறஞ்
சென்னி யிருப்பிடஞ் சேர்பதி னாறுடன்
பன்னி யிருப்பப் பராசக்தி யாமே. 1168

कन्नि ऑळियॆन निन्र्विच् चन्दिरन्
मन्नि यिरुक्किन्र् माळगै चॆन्निर्म्
चॆन्नि इरुप्पिडम् चेर् पतिनारुडन्
पन्नि इरुप्पप् पराशक्ति यामे । मंत्र-संख्या, 1168

विराज रही है चंद्रमंडल में
ज्योति-रूप कन्या परमेश्वरी
अरुणाभ कांति में ज्योतित है
भव्य-भवन वह भाल देश में
षोडश कलाओं में शोभित है
जन-जन आराधित पराशक्ति । 1168

312. உணர்ந்துல கேழையும் யோகினி சத்தி
உணர்ந்துயி ராய்நிற்கும் உன்னதன் ஈசன்
புணர்ந்தொரு காலத்துப் போகம தாதி
இணைந்து பரமென் றிசைந்திது தானே. 1170

उणर्न्दुल केऴैयुम् योगिनि सत्ति
उणर्न्दुयिराय् निर्कुम् उन्नतन् ईशन्
पुणर्न्दोरुकालत्तुप् पोगमदादि
इणैन्दु परमॅन्रिशैन्ददु ताने । मंत्र-संख्या, 1170

सातों भुवन उसकी सृष्टि है
और वह योगिनी शक्ति है
जीवराशि को आश्रय देती
बनकर प्राणों का आधार
सृजनकाल में संयुक्त हुई
परमेश्वर से
बनकर भोग-शक्ति
फिर बन गई स्वयं पराशक्ति
होकर शिव से अभिन्न । 1170

313. யோகநற் சத்தி ஒளிபீடந் தானாகும்
யோகநற் சத்தி ஒளிமுகந் தெற்காகும்
யோகநற் சத்தி உதர நடுவாகும்
யோகநற் சத்திதாள் உத்தரந் தேரே. 1172

योगनर् शक्ति ऑळिपीटम् तानागुम्
योगनर् शक्ति ऑळिमुगम् तॅर्कागुम्
योगनर् शक्ति उदर नडुवागुम्
योगनर् शक्तिताळ् उत्तरम् तेरे । मंत्र-संख्या, 1172

माँ योगशक्ति समासीन है ज्योतिपीठ पर
माँ योगशक्ति अभिमुख है दक्षिण की ओर
माँ योगशक्ति का नाभिकेंद्र है ब्रह्मांड का मध्य
माँ योगशक्ति के चरण वरेण्य हैं । 1172

314. தானான வாறெட்ட தாம்பரைக் குண்மிசை
தானான வாறுமீ ரேழுஞ் சமகலை
தானான விந்து சகமே பரமெனுந்
தானாம் பரவா தனையெனத் தக்கதே. 1174

तानानवार्ट्टटताम् परैक्कुण्मिशै
तानान वारु भी रेळुम् समकलै
ताना‍ना विन्दु जगमे परमंनुम्
तानाम् परवादनैयंनत् तक्कदे । मंत्र-संख्या, 1174

पराशक्ति से प्रादुर्भूत हुईं आठ अन्य शक्तियाँ
तत्समान चौदह कलाओं से युक्त
स्वयं बनी रही बिंदु
समस्त ब्रह्मांड के सृजन में
अग-जग में व्याप्त रही
नादरूपी वही
बनी रही पराशक्ति । 1174

315. தாரமு மாகுவள் தத்துவ மாய்நிற்பள்
காரண காரிய மாகுங் கலப்பினள்
பூரண விந்து பொதிந்த புராதனி
பாரள வாந்திசை பத்துடை யாளே. 1179

तारमुमागुवळ् तत्तुवमाय् निर्पळ्
कारण कारियमागुम् कलप्पिनळ्
पूरण विन्दु पोंदिन्द पुरातनि
पारळवाम् तिशै पत्तुडैयाळे । मंत्र-संख्या, 1179

शिव की पत्नी है वह
सर्वतत्वमयी वह
शिव की ज्ञान-शक्ति भी है
यह शिव-शक्ति ऐक्य
जगत् का कारण-कार्य संबंध है

वही है पुरातनी आदिशक्ति
बिंदु से आविष्ट है सब ओर
सर्वशक्तिमयी है वह
दशों दिशाओं की स्वामिनी है । 1179

316. உள்ளத்தி னுள்ளே யுடனிருந் தைவர்தங்
கள்ளத்தை நீக்கிக் கலந்துட னேபுல்கிக்
கொள்ளத் தவநெறி கூடிய இன்பத்து
வள்ளற் றலைவி மருட்டிப் புரிந்தே. 1183

उळ्ळत्तिनुळ्ळे उडनिन्दैवर्तम्
कळ्ळत्तै नीक्किक् कलन्दुडने पुल्कि
कॊळ्ळत्तवनॆरि कूडिय इन्बत्तु
वळ्ळट्रलैवि मरुट्टिप् पुरिन्दे । मंत्र-संख्या, 1183

मेरे प्राणों के साथ
प्राण बनकर बसी
पंचेन्द्रियों को उपदेश दिया
गुरु के समान,
और दूर करदी उनकी दुष्टप्रवृत्ति,
फिर मेरे साथ एकाकार हुई
धन्य किया ज्ञान से, आनंद से
परम उदार कृपालु शक्ति ने,
अद्भुत है, विस्मयकारी है
उसका अनुग्रह । 1183

317. சடங்கது செய்து தவம்புரி வார்கள்
கடந்தனி னுள்ளே கருதுவ ராகில்
தொடர்ந்தெழு சோதி துளைவழி ஏறி
அடங்கிடும் அன்பின தாயிழை பாலே. 1192

च़डङ्गदु चॆय्दु तवम् पुरिवार्गळ्
कडन्तदिनुळ्ळे करुदुवरागिल्

तांड्रन्दळ्ु जोति तुळै वळि एरि
अडङ्गिडुम् अन्बिन दायिळै पाले । मंत्र-संख्या, 1192

यज्ञ, याग, पूजादि कर्मानुष्ठान करनेवाले
यदि ध्यान लगाएँ, निज अंतर में झांकें
जगेगी कुंडलिनी की ज्योति
ऊर्ध्वमुखी वह सुषुम्ना मार्ग से बढ़ेगी
और माँ पराशक्ति के चरणों में
शांत होगी सानन्द । 1192

318. முத்து வதனத்தி முந்தொறு முக்கண்ணி
சத்தி சதிரி சகளி சடாதரி
பத்துக் கரத்தி பராபரன் பைந்தொடி
வித்தகி என்னுள்ள மேவிநின் றாளே. 1194

मुत्तुवदनत्ति मुगन्तॉरु मुक्कणि
सत्ति सदिरि सकळि जडादरी
पत्तुक् करत्ति परापरन् पैन्तॉडि
वित्तकि ऍन्नुळ्ळ मेवि निन्ऱाळे । मंत्र-संख्या, 1194

मुक्ता सरिस शुभ्र हैं पांचों वदन
प्रतिमुख पर विलसित हैं त्रिनेत्र
शक्ति वह परम चतुरा है
जीवों के उद्धार हेतु बनी है सकला
जटाधरी वह दस भुजाओं वाली है
ऐसी मेरी माँ परात्पर की पत्नी है
विद्यास्वरूपिणी माँ बसी है
मेरे हृदय में । 1194

319. சத்தியென் பாளொரு சாதகப் பெண்பிள்ளை
முத்திக்கு நாயகி என்ப தறிகிலர்
பத்தியைப் பாழில் உகுத்தஅப் பாவிகள்
கத்திய நாய்போற் கதறுகின் றாரே. 1199

सत्तियॅन्बाळॊरु सादगप् पॆण्पिळ्ळै
मुत्तिक्कु नायकि ऍन्बदऱिगिलर्
पत्तियैप् पाऴिल् उगुत्त अप्पाविगळ्
कत्तिय नाय् पोल् कदरुगिन्ऱारे । मंत्र-संख्या, 1199

शक्ति नाम से अभिहित नारी
मार्गदर्शिका है साधकों के हित
पहुँचाती है उन्हें शिवचरणों पर
मुक्ति की पथप्रदर्शिका है
इस तथ्य को न जानकर
शक्ति-चरणों में लगाने योग्य
अपनी अमूल्य शक्ति को, भक्ति को
वृथा करते हैं
निरर्थक मंत्रों का उच्चार करते हैं
जैसे कोई श्वान व्यर्थ में भूंकता है । 1199

320. ஆமையொன் றேறி அகம்படி யானென
ஓமஎன் றோதிஎம் உள்ளொளி யாய்நிற்கும்
தாம நறுங்குழல் தையலைக் கண்டபின்
சோம நறுமலர் சூடிநின் றாளே. 1206

आमैयॊन्ऱेऱि अगम्पडियानॆन
ओम ऍन्ऱोदि ऍम् उळ्ळॊळियाय् निर्कुम्
ताम नऱुङ्कुऴल् तैयलैक् कण्डपिन्
सोम नऱुमलर् चूडिनिन्ऱाळे । मंत्र-संख्या, 1206

कच्छप सरिस संकुचित कर लो
निज इन्द्रियों को
परम अनुग्रह के सामने समर्पित करो
निज अहंकार को
उच्चार करो ओम् के प्रणवमंत्र का

अंतर में ज्योति जगेगी
प्रकट होगी सुरभित सुमनों से सज्जित
नीलकुंतला माँ
दर्शन होगा चन्द्रकला का । 1206

321. ஆலமுண் டானமு தாங்கவர் தம்பதஞ்
தாலவந் தெய்துந் தவத்தின்பந் தான்வருங்
கோலிவந்த தெய்துங் குவிந்த பதவையோ
டேலவந் தீண்டி இருந்தனள் மேலே. 1211

आलमुण्डानमु दाङ्गवऱ् तम्पदम्
चाल वन्दॆय्दुम् तवत्तिऩ्बम् ताऩ् वरुम्
कोलि वन्दॆय्दुम् कविन्द पदवैयो
डेल वन्दीण्डि इरुन्दनळ् मेले । मंत्र-संख्या, 1211

साधनापथ पर तुम्हें अमरत्व मिलेगा
देखो परमदयालु प्रभु ने
स्वयं पी लिया हलाहल, देवों को पिलाया अमृत
तुभ भी पा सकोगे वही अमरत्व
तपस्या का सारा आनन्द तुम्हारा ही है
यह लो, कुंडलिनी शक्ति
समस्त चक्रों का करके भेदन
पहुँच गई सहस्रार के अनखिले फूल में । 1211

322. கலந்துநின் றாள் கன்னி காதல னோடுங்
கலந்துநின் றாளுயிர் கற்பனை எல்லாங்
கலந்துநின் றாள்கலை ஞானங்கள் எல்லாங்
கலந்துநின் றாள்கன்னி காலமு மாயே. 1215

कलन्दु निऩ्ऱाळ् कन्नि कादलनोडुम्
कलन्दु निऩ्ऱाळुयिर् कर्पनै ऍल्लाम्
कलन्दु निऩ्ऱाळ् कलै ज्ञानङ्गळ् ऍल्लाम्
कलन्दु निऩ्ऱाळ् कन्नि कालमुमाये । मंत्र-संख्या, 1215

अवस्थित है शक्ति प्रेमरंग में प्रिय के संग
अवस्थित है शक्ति जनजीवन में भरती रंग
अवस्थित है शक्ति विद्या कला और ज्ञान में
अवस्थित है शक्ति आमोद भरती युग युग से । 1215

323. ஆகின்ற நாள்கலை ஐம்பத் தொருவர்கள்
ஆகிநின் றார்களில் ஆருயி ராமவள்
ஆகிநின் றாளுட னாகிய சக்கரத்
தாகிநின் றானவன் ஆயிழை பாடே. 1219

आगिन्र् नाळ्कलै ऐम्बत्तोरुवर्गळ्
आगिन्रार्गळिल् आरुयिरामवळ्
आगिनिन्राळुड नागिय चक्करत्तु
आगि निन्रानवन् आयिळै पाडे । मंत्र-संख्या, 1219

जब-जब अस्तित्व में आता है ब्रह्मांड
हर बार प्रकट होते हैं इक्यावन अक्षर
इक्यावन कलाओं सी
बसती है शक्ति इक्यावन अक्षरों में
उनकी आत्मा और प्राण बनकर
प्रथम अक्षर 'अ'कार स्वयं वही है
और प्रभु आकर खड़े हो जाते हैं
निज प्रिया के संग । 1219

324. மார்க்கங்கள் ஈன்ற மனோன்மனி மங்கலி
யார்க்கும் அறிய் வரியா ளவளாகும்
வாக்கு மனமும் மருவியொன் றாய்விட்ட
நோக்கும் பெருமைக்கு நுண்ணறி வாமே. 1227

मार्गड्गळ् ईन्र् मनोन्मनि मंगलि
यार्क्कुम् अरिय करियाळवळागुम्
वाक्कु मनमुम् मरुवियोन्राय् विट्ट
नोक्कुम् पॆरुमैक्कु नुण्णरिवामे । मंत्र-संख्या, 1227

संतान को सही मार्ग पर लाने के लिए
माँ ने बनाए हैं विभिन्न मार्ग
मनोन्मनी वह मंगलकारिणी है
किंतु उसको कोई विरला ही ढूँढ पाता है
जिसके अंदर है लगन और जिज्ञासा
जिसकी वाणी और विचार में नहीं है अंतर
ज्ञानस्वरूपिणी माँ प्रकट होती है उसे ही । 1227

325. வென்றிட லாகும் விதிவழி தன்னையும்
வென்றிட லாகும் வினைப்பெரும் பாசத்தை
வென்றிட லாகும் விழைபுலன் தன்னையும்
வென்றிடு மங்கைதன் மெய்யுணர் வோர்க்கே. 1232

वॆन्ऱिडलागुम् विदि वऴि तन्नैयुम्
वॆन्ऱिडलागुम् विनैप्पॆरुम् पाशत्तै
वॆन्ऱिडलागुम् विऴैपुलन् तन्नैयुम्
वॆन्ऱिडुमङ्गै तन् मॆय्युणर्वोर्क्के । मंत्र-संख्या, 1232

संभव है नियति के साथ खेलना
भाग्य-रेखा को बदल डालना
संभव है काट डालना उभय प्रकार के
बोझिल कर्मबंधन-पाश को
संभव है कामनाओं में आकंठ लिप्त
इंद्रियों पर विजय पाना
कौन-सी बात असंभव है उनके लिए
जो शरण में रहते हैं सर्वविजयिनी माँ के । 1232

326. தோன்றிடும் வேண்டுரு வாகிய தூய்நெறி
ஈன்றிடு மாங்கவள் எெய்திய பல்கலை
மான்றரு கண்ணியும் மாரனும் வந்தெதிர்
சான்றது வாகுவர் தாமவ ளாயுமே. 1238

तोन्ऱिडुम् वेण्डुरुवागिय तूय्नॅऱि
ईन्ऱिडुम् आङ्गवळ् ऍयदिय पल्कलै
मान्ऱरु कण्णियुम् मारनुम् वन्दॆदिर्
चान्ऱु वागुवर् तामवळायुमे । मंत्र-संख्या, 1238

इच्छारूपिणी माँ
दर्शन देती है भक्तों को वांछित रूप में
और उन्हें दिखाती है शुद्धमार्ग
प्रदान करती है सकल विज्ञान, कलाएँ
तुम चाहो तो
हरिण सम सुनयना देवी प्रकट होगी
मन्मथ तुल्य सुन्दरेश्वर के संग । 1238

327. ஆயும் அறிவுங் கடந்தணு வாரணி
மாயம தாகி மதோமதி யாயிடுஞ்
சேய அரிவை சிவானந்த சுந்தரி
நேயம தாநெறி யாகிநின் றாளே. 1239

आयुम् अऱिवुम् कडन्दणुवारणि
मायमदागि मतोमतियायिडुम्
चेय अरिवै शिवानन्द सुन्दरि
नेयमदा नॆऱियागि निन्ऱाळे । मंत्र-संख्या, 1239

अणु से भी अणुरूपिणी
माँ वेदों के लिए भी दुर्लभ है
कोई नहीं पा सकता उसे
बुद्धि से, तर्कशक्ति से
महामाया वह मधुमती मनोहरी है
अरुणाभ सुंदरी शिवानन्द सुन्दरी है
यदि वह किसी उपाय से
वशीभूत हो सकती है तो
वह है केवल प्रेमाभक्ति । 1239

328. ஆமயன் மாலரன் ஈசன்மா லாங்கதி
ஓமய மாகிய ஒன்பதும் ஒன்றிடத்
தேமய னாளுந் தெனாதென என்றிடும்
மாமய மானது வந்தெய்த லாமே. 1241

आमयन् मालरन् ईशन् मालाङ्गति
ओमयमागिय ऑन्बदुम् ऑन्ऱिड
तेमयनाळुन्तनातेन ऍन्ऱिडुम्
मामय मानदु वन्दॆय्दलामे । मंत्र-संख्या, 1241

हरि, हर, ब्रह्मा और महेश पद से भी
श्रेष्ठ और उत्कृष्ट है ओंकार
ओंकार के साथ तुम पहुँचोगे
नवों केंद्रों में
हाँ षडाधार और तीनों मंडलों में
काया बनेगी दिव्य मधुमय सदा सुन्दर
पहुँचोगे सब दैवतों से
महत्तम पद पर । 1241

329. நவிற்றுநன் மந்திரம் நன்மலர் தூபங்
கவற்றிய கந்தங் கவர்ந்தெரி தீபம்
பயிற்றும் உலகினிற் பார்ப்பதி பூசை
அவிக்கொண்ட சோதிக்கோர் அர்ச்சனை தானே. 1243

नविट्रु नन्मन्दिरम् नन्मलर् तूपम्
कवट्रिय कन्तम् कवर्न्दॆरिदीपम्
पयिट्रुम् उलगिनिल् पार्पति पूशै
अविक् कॊण्ड जोतिक्कोर् अर्चनै ताने । मंत्र-संख्या, 1243

उत्तम मंत्र-सुमन उच्चारें
चढ़ाएँ सुरभित पुष्प
सर्वमंगला पार्वती के चरणों में
आवाहित करें देवी को

घृतपूरित बहुमुख-दीप में
सुवासित करें चतुर्दिक् अगरु-धूप से
विधि-विधान से यों अनुष्ठित पूजन
स्वीकार्य होता है शिव को भी
जो दीप-ज्योति में निवसित है । 1243

330. தொடங்கி உலகினிற் சோதி மணாளன்
அடங்கி இருப்பதென் அன்பின் பெருமை
விடங்கொள் பெருஞ்சடை மேல்வரு கங்கை
ஒடுங்கி யுமையொடும் ஓருரு வாமே. 1247

तोडङ्गि उलगिनिऱ् जोति मणाळन्
अडङ्गि इरुप्पदॆन् अन्बिन् पॆरुमै
विडङ्कॊळ् पॆरुंचडै मेल्वरुम् गंगै
ओडुङ्गि युमैयॊडुम् ओरुरुवामे । मंत्र-संख्या, 1247

लोकैक ज्योति है शिव
ज्योतिर्मय शक्ति का नाथ
आश्चर्य है यह ज्योतिराट्
कैसे समाया है मेरे अंतर में
सत्य ही प्रेम की शक्ति अमोघ है
प्रभु समाहित है निज प्रिया में भी
जटा में गंगा तिरोधानशक्ति
साथ में पार्वती संचालिकाशक्ति
दोनों अभिन्न हैं
एक दूसरे की पूरक हैं । 1247

331. ஏரொளி யுள்ளெழு தாமரை நாலிதழ்
ஏரொளி விந்துவி னாலெழு நாதமாம்
ஏரொளி யக்கலை எங்கும் நிறைந்தபின்
ஏரொளிச் சக்கர மந்நடு வன்னியே 1255

एरॊळि युळ्ळॆऴ़ु तामरै नालिदऴ़्
एरॊळि विन्दुविनालॆऴ़ु नादमाम्
एरॊळि यक्कलै ऎङ्गुम् निऱैन्द पिन्
एरॊळिच् चक्करमन्नडु वन्निये । मंत्र-संख्या, 1255

मूलाधार में प्रकट है
चतुर्दल कमल
जहाँ से ब्रह्मरंध्र तक व्याप्त है एक किरण
इस किरण की ज्योति से
प्रकट होता है बिंदु
जिससे उत्पन्न होता है नाद
जब यह अनुपम ज्योति
सर्वत्र होती है व्याप्त
तब प्रकट होती है
वह्निरूपिणी कुंडलिनी । 1255

332. விரிந்த எழுத்தது விந்துவும் நாதமும்
விரிந்த எழுத்தது சக்கர மாக
விரிந்த எழுத்தது மேல்வரும் பூமி
விரிந்த எழுத்தினில் அப்புறம் அப்பே. 1260

विरिन्द ऎऴुत्तदु विन्दुवुम् नादमुम्
विरिन्द ऎऴ़ुत्तदु चक्करमाग
विरिन्द ऎऴ़ुत्तदु मेल् वरुम् पूमि
विरिन्द ऎऴ़ुत्तिनिल् अप्पुऱम् अप्पे । मंत्र-संख्या, 1260

अक्षर से हुआ सूत्रपात सृष्टि का
अक्षर से प्रकट हुए बिंदु और नाद
अक्षर व्याप्त हुए चक्र-रूप में
अक्षर से व्याप्त उद्भूत हुई यह पृथ्वी
अक्षर से ही पृथ्वी पर प्रकटित हुआ जल । 1260

333. ஆகாச அக்கர மாவது சொல்லிடில்
ஆகாச அக்கரத் துள்ளே எழுத்தவை
ஆகாச அவ்வெழுத் தாகிச் சிவானந்தம்
ஆகாச அக்கர மாவ தறிமினே. 1262

आकाश अक्कर मावदु चॊल्लिडिल्
आकाश अक्करत्तुळ्ळे ऍऴुत्तवै
आकाश अव्वॆऴुत्तागिच् चिवानन्दम्
आकाश अक्करमावदऱिमिने । मंत्र-संख्या, 1262

आकाश अक्षर की महिमा अपरंपार है
आकाश अक्षर मूलस्थान है समस्त अक्षरों का
आकाश अक्षर 'ह'कार है जो कि शिवानन्द स्वयं है
आकाश अक्षर की महिमा को यों यथातथ जानो । 1262

334. எழுத்தவை நூறொடு நாற்பத்து நாலும்
எழுத்தவை யாறது வந்நடு வன்னி
எழுத்தவை யந்நடு வச்சுட ராகி
எழுத்தவை தான்முதல் அந்தமு மாமே. 1265

ऍऴुत्तवै नूऱॊडु नार्पत्तु नालुम्
ऍऴुत्तवै याऱदु वन्नडु वन्नि
ऍऴुत्तवै यन्नडु वच्चुडरागि
ऍऴुत्तवै तान् मुदल् अन्तमुमामे । मंत्र-संख्या, 1265

उज्ज्वल मूलाधार से प्रादुर्भूत
अक्षर एक सौ चवालीस हैं
जो वितरित हैं समस्त चक्र में
इन सबके मध्य में हैं
षडाक्षर ऊँ शिवायनमः
जिसके मध्य का वकान
वह्निमय है, ज्योतिरूप है
यों आदि और अंत षडाक्षर हैं । 1265

335. விந்துவும் நாதமும் ஒக்க விழுந்திடில்
விந்துவும் நாதமும் ஒக்க விரையதாம்
விந்திற் குறைந்திடு நாதம் எழுந்திடில்
விந்துவை எண்மடி கொண்டது வீசமே. 1276

विन्दुवुम् नादमुम् ओक्क विऴुन्दिडिल्
विन्दुवुम् नादमुम् ओक्क विरैयदाम्
विन्दिऱ् कुऱैन्द नादम् ऍऴुन्दिडिल्
विन्दुवै ऍण्मडि कॊण्डदु वीशमे । मंत्र-संख्या, 1276

बिंदु और नाद यदि मिश्रित हों
समान अनुपात में
उस संयोग से बनता है अंड का बीज
अधिक हो जाए अनुपात नाद का
उस योग से उत्पन्न होता है मंत्रबीज
बिंदु की तुलना में
आठ गुना अधिक होता है नाद । 1276

336. மந்திரஞ் சக்கர மானவை சொல்லிடில்
தந்திரத் துள்ளெழுத் தொன்றெரி வட்டமாம்
தந்திரத் துள்ளு மிரேகையில் ஒன்றில்லை
பந்தம தாகும் பிரணவம் உன்னிடே. 1281

मन्तिरम् चक्करमानवै चॉल्लिडिल्
तन्तिरत् तुळ्ळॆऴुत् तॉन्ऱेरि वट्टमाम्
तन्तिरत् तुळ्ळुमिरेकैयिल् ऑन्ऱिल्लै
पन्दमदागुम् प्रणवम् उन्निडे । मंत्र-संख्या, 1281

मंत्र और चक्र की उपासना का
यही सार है
भीतर दर्शित है एक ज्योतिमंडल
मंत्र चक्र यही है

तंत्र-आगम इसी की महिमा गाते हैं
भ्रूमध्य में ध्यान लगाओ प्रणव का
स्थिर रहो आंतरिक साधना में
कर्म-बंधन नष्ट होगा निस्सन्देह । 1281

337. அறிந்திடுஞ் சக்கர மாதி யெழுத்து
விரிந்திடுஞ் சக்கர மேலெழுத் தம்மை
பிரிந்திடுஞ் சக்கரம் பாராங்கி நாலும்
குவிந்திடுஞ் சக்கரம் கூறலு மாமே. 1284

अरिन्दिडुम् चक्कर मादि यॆऴुत्तु
विरिन्दिडुम् चक्कर मेलॆऴुत् तम्मै
परिन्दिडुम् चक्करम् पाराङ्गि नालुम्
कुविन्दिडुम् चक्करम् कूऱलुमामे । मंत्र-संख्या, 1284

आज्ञा में दर्शित है प्रणव 'ओं'कार
प्रथमाक्षर 'अ'कार शिव है
उत्तर अक्षर 'उ'कार शक्ति है
चक्र में दर्शित हैं चारों तत्व
पृथ्वी जल वह्नि और वायु । 1284

338. கூறிய சக்கரத் துள்ளெழு மந்திரம்
மாறியல் பாக அமைந்து விரிந்திடுந்
தேறிய அஞ்சுடன் சேர்ந்தெழு மாரண
மாறியல் பாக மதித்துக்கொள் வார்க்கே. 1285

कूऱिय चक्करत्तुळ्ळॆऴु मंतिरम्
माऱियल्बाग अमैन्दु विरिन्दिडुम्
तेऱिय अंजुडन् चेर्न्दॆऴुम् आरणम्
आऱियल्बाग मदित्तुक्कॊळ्वार्क्के । मंत्र-संख्या, 1285

गुंजित होता है चक्र के भीतर
प्रशस्त एकाक्षर मंत्र

गुंफित 'ओं'कार अनुनादित होता
बनकर षडाक्षर मंत्र
- ओं नमः शिवाय -
धन्य हैं वे साधक
जिनके हृदय से सहज रूप में
नादित होता है
वेद मंत्र ॐ के संग
अमोघ पंचाक्षर मंत्र । 1285

339. மதித்திடும் அம்மையும் மாமாது மாகும்
மதித்திடும் அம்மையு மங்கனல் ஒக்கும்
மதித்தங் கெழுந்தவை காரண மாகில்
கொதித்தங் கெழுந்தவை கூடகி லாவே. 1286

मदित्तिडुम् अम्मैयुम् मामादुमागुम्
मदित्तिडुम् अम्मैयुम् मंगनल् ऑक्कुम्
मदित्तङ्केऴुन्दवै कारणमागिल्
कॉदित्तङ्केऴुन्दवै कूडकिलावे । मंत्र-संख्या, 1286

मंत्र की अधिष्ठात्री है मां पराशक्ति
अभ्यास-रत साधकों के लिए
परिलक्षित होती है अग्नि सम कुंडलिनी
भस्मीभूत हो जाते हैं षड्रिपु
पास न फटकता पाश
जो फंसाता है, बहकाता है । 1286

340. தெளிந்திடுஞ் சக்கர மூலத்தி னுள்ளே
அளிந்த வகாரத்தை யந்நடு வாக்கிக்
குளிந்த வரனைக் கூடியுள் வைத்து
வளிந்தவை யங்கெழு நாடிய காலே. 1288

तॅळिन्दिडुम् चक्कर मूलत्तिनुळ्ळे
अळित्त अकारत्तै अन्नडुवाक्कि

कुळिन्दं वरनैक् कूडियुळ् वैत्तु
वळिन्दवै अड्ग्ंऴु नाडिय काले । मंत्र-संख्या, 1288

स्पष्ट लक्षित चक्र मूलाधार में
संक्रेद्रित करें सुभग 'अ'कार को
जोकि मूलभूत है सब वर्णों का
ध्यान करें वरेण्य शिव का भीतर ही भीतर
ऊर्ध्वमुखी बनाएं प्राण को नाड़ी मार्ग से । 1288

341. கொண்டஇம் மந்திரங் கூத்தன் எழுத்ததாய்ப்
பண்டையுள் நாவிற் பகையற விண்டபின்
மன்றுள் நிறைந்த மணிவிளக் காயிடும்
இன்றும் இதயத் தெழுந்து நமவெனே. 1290

कॊण्ड इम्मन्तिरम् कूत्तन् ऍऴुत्तायप्
पण्डैयुळ् नाविऱ् पगैयुऱ विण्डपिन्
मन्ऱुळ् निऱैन्द मणि विळक्कायिडुम्
इन्ऱुम् इदयत्तॆऴुन्दु नमवॆने । मंत्र-संख्या, 1290

अपना लो यह है मंत्र-राज
प्रसन्न होते जिससे नटराजराज
जपो अंदर के अलि-जिह्व से
होगा रिपुगण-दलन
बनोगे जाज्वल्यमान मणिदीप तुम
चित्सभा में
जाग्रत रहकर सदा
अंतस् में जपते रहो नमःशिवाय मंत्र
स्नेह से । 1290

342. ஆமேவப் பூண்டரு ளாதி வயிரவன்
ஆமே கபாலமுஞ் சூலமுங் கைகொண்டங்
காமே தமருக பாசமுங் கையது
வாமே சிரத்தொடு வாளது கையே. 1293



சீர்காழி
सीर्काऴि मंदिर
Seerkazhi Temple

आमे अप्पूण्डरुळ् आदि वयिरवन्
आमे कपालमुम् शूलमुम् कैक्कोण्डङ्
कामे तमरुक पाशमुम् कैयदु
वामे शिरत्तांडु वाळदु कैये । मंत्र-संख्या, 1293

प्रकट हो रहा है आदि भैरव
अनुग्रह-मूर्ति है
बरसाता वांछित वरदान जीवों पर
देखने योग्य भैरव-मूर्ति की भंगिमा
शोभित हो रहे सुभग कर आयुधों से
त्रिशूल, कपाल, डमरुक, पाश
खंडित मस्तक, करवाल से । 1293

343. பூசனை செய்யப் பொருந்தியோ ராயிரம்
பூசனை செய்ய மதுவுட னாடுமால்
பூசனை சாந்து சவாது புழுகுநெய்
பூசனை செய்துநீர் பூசலை வேண்டுமே. 1295

पूशनै चॅय्यप् पॉरुन्दियो रायिरम्
पूशनै चॅय्य मदुवुडनाडुमाल्
पूशनै चान्द् चवादु पुऴुगुनॅय्
पूशनै चॅय्दु नीर् पूशळै वेण्डुमे । मंत्र-संख्या, 1295

सद्यः फलदायक है भैरवपूजन
सहस्रनाम का करो उच्चार
सहस्र पमन से सादर अर्चन
प्रिय है भैरव को मधु और मत्त-नर्तन
चढ़ाएँ चंदन-सुगंध मिश्रण
लेपन करें नाना सुगंधित द्रव्य
कस्तूरी और मार्जार-गंध के साथ
यों पूजन आराधन करें

करें प्रार्थना सच्चे मन से
निपट लेंगे शत्रुओं से भैरव स्वयं । 1295

344. ஆறிரு பத்துநா லஞ்செழுத் தஞ்சையும்
வேறுரு வாக விளைந்து கிடந்தது
தேறி நிருமல சிவாய நமவென்று
கூறுமின் கூறிற் குறைகளும் இல்லையே. 1300

आऱिरु पत्तुनालञ्चॆऴुत्तंचैयुम्
वेरुरुवाग विळैन्दु किडन्ददु
तेऱि निरुमल शिवाय नम वॆन्ऱु
कूऱुमिऩ् कूऱिऱ् कुऱैगळुम् इल्लैये । मंत्र-संख्या, 1300

अक्षर समुच्चय इक्यावन में
पैंतीस व्यंजन हैं
कालक्रम में जिनके रूप बदले
इनमें प्राणस्वरूप व्यंजन
पांच हैं–'शिवायनम'
उपासना करो इनकी विधिवत्
'ऐ'कार शक्ति-अक्षर के साथ
जपते रहो निरंतर 'शिवायनमः'
जीवन में नहीं होगा कोई अभाव । 1300

345. காணும் பொருளுங் கருதிய தெய்வமும்
பேணும் பதியும் பெருகிய தீர்த்தமும்
ஊணும் உணர்வும் உறக்கமுந் தானாகக்
காணுங் கனகமுங் காரிகை யாமே. 1302

काणम् पॊरुळुम् करुदिय दॆय्वमुम्
पेणुम् पतियुम् पॆरुगिय तीर्त्तमुम्
ऊणुम् उणर्वुम् उऱक्कमुम् तानागक्
काणुम् कनकमुम् कारिकै यामे । मंत्र-संख्या, 1302

सिद्ध होती है शांभवी की कृपा से
सकल संपदा जग भर की,
सान्निध्य निज इष्ट देवता का
सुकृत सकल तीर्थों का,
भक्ष्य भोज्य, सुखद अनुभव
सानंद निद्रा के संग
कनक-मणि-रत्न का विभव । 1302

346. பகையில்லை என்றும் பணிந்தவர் தம்பால்
நகையில்லை நாணாளும் நன்மைக ளாகும்
வினையில்லை என்றும் விருத்தமும் இல்லை
தகையில்லை தானுஞ் சலமது வாமே. 1304

पगैयिल्लै ऍन्रुम् पणिन्दवर् तम्पाल्
नगैयिल्लै नाणाळुम् नन्मैकळागुम्
विनैयिल्लै ऍन्रुम् विरुत्तमुम् इल्लै
तगैयिल्लै तानुम् चलमदु वामे । मंत्र-संख्या, 1304

शत्रुभय नहीं होगा उन्हें
जो प्रणत होते हैं मातृचरण में
कहीं अनादर या उपहास न होगा
ऋद्धि-सिद्धि समृद्धि छुएँगी चरण
कर्मबंधन, कर्मफल से मिलेगी मुक्ति
विघ्न बाधा संकटों से रहेंगे मुक्त
जीवन में नित्य ही मिलेंगे शुभफल
बहती जलधारा समान सुखद सरल होगा जीवन । 1304

347. ஆரும் உரைசெய்ய லாமஞ் செழுத்தாலே
யாரும் அறியாத ஆனந்த ரூபமாம்
பாரும் விசும்பும் பகலும் மதியதி
ஊனும் உயிரும் உணர்வது வாமே. 1305

आरुम् उऱैचय्यलाम् अंचॆळुत्ताले
यारुम् अऱियाद आनन्द रूपमाम्
पारुम् विशुम्बुम् पगलुम् मतियति
ऊनुम् उयिरुम् उणर्वदु वामे । मंत्र-संख्या, 1305

उपास्य है शांभवी
सुलभ है सकल जन के हित
पंचाक्षर का अमोघ मंत्र
आनन्द-रूपिणी है शांभवी
अपरिमेय है जिसकी महिमा
परिव्याप्त है वह अग-जग में
धरती-अंबर, सूर्य-चंद्र बन,
देह-प्राण बन, ज्ञान-चेतना बन । 1305

348. ஏக பராசத்தி ஈசற்காம் அங்கமே
யாகம் பராவித்தை யாமுத்தி சித்தியே
ஏகம் பராசத்தி யாகச் சிவகுரு
யோகம் பராசக்தி உண்மைஎட் டாமே. 1309

एक पराशत्ति ईशर्काम् अङ्गमे
पागम् परावित्तै यामुत्ति सित्तिये
एकम् पराशत्तियाग शिवगुरु
योगम् पराशत्ति उण्मै ऍट्टामे । मंत्र-संख्या, 1309

एक पराशक्ति है–
जिसका अर्धांश परमेश्वर का है
पराविद्या वह मुक्तिदा है
सिद्धि प्रदात्री है
पराशक्ति एक है
पर जब शिव योगगुरु बनते हैं
पराशक्ति अष्टांगयोग रूप बन जाती है । 1309

349. பூசிக்கும் போது புவனா பதிதன்னை
ஆசற் றகத்தினில் ஆவா கனம்பண்ணிப்
பேசிய பிராணப் பிரதிட்டை யதுசெய்து
தேசுற் றிடவே தியான மதுசெய்யே. 1315

पूशिकुम् पोदु पुवनापति तन्नै
आश ट्रगत्तिनिल् आवाहनम् पण्णि
पेशिय प्राणप् प्रतिट्टै अदु चॅय्दु
तेशुट्रिडवे तियानमदु चॅय्ये । मंत्र-संख्या, 1315

भुवनपति के पूजन का विधान है
मोहविहीन निज हृदय में
आवाह्न कर लो देवी का
निज प्राण और अंतःकरण
समर्पित करो इष्ट के चरणों पर
प्राण-प्रतिष्ठा मंत्र से
इष्ट के प्राण अंतःकरण को
निज हृदय में
निज तेज के संवर्धन के लिए
लग जाओ ध्यान में, आंतरिक उपासना में । 1315

350. நவாக்கரி யாவது நானறி வித்தை
நவாக்கரி யுள்ளெழும் நன்மைகள் எல்லாம்
நவாக்கரி மந்திர நாவுளே ஓத
நவாக்கரி சத்தி நலந்தருந் தானே. 1321

नवाक्करियावदु नानऱि वित्तै
नवाक्करि युळ्ळॅऴुम् नन्मैगळ् ऍल्लाम्
नवाक्करि मन्तिर नावुळे ओद
नवाक्करि शत्ति नलन्तरुम् ताने । मंत्र-संख्या, 1321

नवाक्षरी-मंत्र
जिसकी साधना मैं स्वयं करता हूँ

शुभप्रदायिनी विद्या है;
नवाक्षरी का उच्चारण
जिह्वा पर सांद्र-मंद स्वर में होता है
नवाक्षरी की ऐसी उपासना
सकल कल्याणकारी है। 1321

351. நேர்தரு மத்திரு நாயகி யானவள்
யாதொரு வண்ணம் அறிந்திடும் பொற்பூவை
கார்தரு வண்ணங் கருதின கைவரும்
நார்தரு வண்ணம் நடத்திடு நீயே. 1325

नेऱ्तरुमत्तिरु नायकि आनवळ्
यादॊरुवण्णम् अऱिन्दिडुम् पॊऱ्पूवै
कार्तरु वण्णम् करुदिन कैवरुम्
नार्तरु वण्णम् नडत्तिडु नीये। मंत्र-संख्या, 1325

'श्रीं' से लेकर 'क्लीं' तक
नवाक्षरी के जाप से
प्रसन्न होती है श्रीं शक्ति
आदिशक्ति यह धर्म की अधिष्ठात्री
ध्यान करें नीलोत्पल-वर्ण में देवी का
पूर्ण होते हैं मानस-धारित सकल मनोरथ
आचरण पवित्र करो, अनुग्रह प्राप्त करो माँ का। 1325

352. நாபணி சக்கரம் நேர்தரு வண்ணங்கள்
பாரணி யும்ஹிரீ முன்ஸ்ரீமீறாந்
தாரணி யும்புகழ்ந் தையல்நல் லாள்தனைக்
காரணி யும்பொழிற் கண்டுகொள் ளீரே. 1329

नापणि चक्करम् नेऱ्तरु वण्णङ्गळ्
पारणियम् ह्री मुन श्रीमीऱाम्
तारणियुम् पुगऴ्‌ तैयल् नल्लाळ् तन्नै
कारणियुम् पॊऴिल् कण्डुकॊळ्ळीरे। मंत्र-संख्या, 1329

'ह्रीं' से लेकर 'श्रीं' तक
नवाक्षरी का जाप करें
आरेखित करें श्रीचक्र पर
मंत्रमाला का यही क्रम
'ह्रीं' से लेकर 'श्रीं' तक
दिव्यमालाधारिणी
'ह्रीं' शक्ति प्रकट होती है
जो नीर भरे नीले मेघों से आवृत
कदम्बवन में शोभायमान है । 1329

353. வழுத்திடு நாவுக் கரசிவள் தன்னைப்
பகுத்திடும் வேதமெய் யாகம மெல்லாந்
தொகுத்தொரு நாவிடை சொல்லவல் லாளை
முகத்துளும் முன்னெழக் கண்டுகொ ளீரே. 1335

वऴ़ुत्तिडु नावुक्करशि यवळ् तन्नै
पगुत्तिडुम् वेदमॅय्यागमम् ऍल्लाम्
तॊगुत्तॊरु नाविडै चॊल्लवल्लाळै
मुगत्तुळुम् मुन्नॆऴ़क् कण्डुकॊळीरे । मंत्र-संख्या, 1335

'ऐं' से लेकर 'ह्रीं' तक
नवाक्षरी के जाप से
'ऐं' शक्ति प्रकट होती है,
साक्षात् वागीश्वरी
सकल वेदागम स्वरूपिणी
जिह्वा में 'ऐं' शक्ति वागीश्वरी सिद्ध होने पर
सिद्ध होती है सकलविद्या
विद्या के विलास से
शोभित रहता है साधक का मुख
उपासक के लिए देवी
स्वयं प्रत्यक्ष होती है । 1335

354. வணங்கிடுந் தத்துவ நாயகி தன்னை
நலங்கிடு நல்லுயி ரானவை யெல்லாங்
கலங்கிடுங் காம வெகுளி மயக்கந்
துலங்கிடுஞ் சொல்லிய சூழ்வினை தானே. 1340

वणङ्गिडुम् तत्तुव नायकि तन्नै
नलङ्गिडु नल्लुयिरानवै एल्लाम्
कलङ्गिडुम् काम वॅगुळि मयक्कम्
तलङ्गिडुम् चॉल्लिय चूऴ् विनै ताने । मंत्र-संख्या, 1340

'गौं' से लेकर 'ऐं' तक
नवाक्षरी के जाप से
प्रकट होती है 'गौं' शक्ति
अधिष्ठात्री छत्तीस तत्वों की
'गौं' शक्ति की उपासना
सर्वजन वशकरी है
दूर होते हैं सकल अघ
काम, क्रोध, अज्ञान
प्रशस्त होते हैं शील, सत्कर्म । 1340

355. தானது கம்மீறிக் கௌவது ஈறாம்
நானது சக்கர நன்றறி வார்க்கெலாம்
கானது கன்னி கலந்த பராசக்தி
கேளது வையங் கிளரொளி யானதே. 1344

तान्दु कम्मिरीक् कौवदु ईराम्
नान्दु चक्कर नन्ररिवार्कॅलाम्
कान्दु कन्नि कलन्द पराशक्ति
केळ्दु वैयम् किळरॉळियानदे । मंत्र-संख्या, 1344

'क्रीं' से 'गौं' तक चक्र में
नवाक्षरी के आरेखन उपासना से
'क्रीं' पराशक्ति सिद्ध होती है

जैसा कि स्वयं मुझे ज्ञात है
ध्यानावस्थित होकर
उपासना करें जो 'क्रीं' शक्ति की
प्रिय होते हैं वे पराशक्ति के
सत्यज्ञानमयी सर्वशक्तिमयी
बाला त्रिपुरसुदरी की कृपा से
साधक पाते हैं सर्वोच्च स्थान । 1344

356. ஆமே சதாசிவ நாயகி யானவள்
ஆமே அதோமுகத் துள்ளறி வானவள்
ஆமே சுவையொளி யூறோசை கண்டவள்
ஆமே யனைத்துயிர் தன்னுளு மாமே. 1350

आमे सदाशिव नायकि यानवळ्
आमे अतोमुगत्तुळ्ळरि वानवळ्
आमे चुवैयॉळि ऊऱोशै कण्डवळ्
आमे अनैत्तुयिर् तन्नुळुमामे । मंत्र-संख्या, 1350

'हौं' से लेकर 'क्रीं' तक
नवाक्षरी के जाप से
प्रसन्न होती है 'हौं' शक्ति
सदाशिव-नायिका जो
ज्योतित करती है
शिव का अधोमुख
यही अधिष्ठात्री शक्ति है
शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गंध की,
स्थित होकर सकल जीव में
संचालित करती है पंचेन्द्रिय । 1350

358. மெய்ப்பொரு ளௌமுதல் ஹௌவது ஈறாக்
கைப்பொரு ளாகக் கலந்தெழு சக்கரந்

தற்பொரு ளாகச் சமைந்தமு தேஸ்வரி
நற்பொரு ளாக நடுவிருந் தாளே. 1354

मॆय्प्पॊरुळ् औमुदल् हौवदु ई॒रा
कैप्पॊरुळागक् कलन्दॆऴु चक्करम्
तऱ्पॊरुळागच् चमैन्दमुदेश्वरी
नऱ्पॊरुळाग नडुविरुन्दाळे । मंत्र-संख्या, 1354

'औं' से लेकर 'हौं' तक
आरेखित चक्र का
तत्वार्थ है ॐ
इसके मध्य में विलसित है
स्वयंभू अमृतेश्वरी,
ऋद्धि-सिद्धि-समृद्धि की अधीश्वरी
साधक के भीतर-बाहर
स्फुरित होकर प्रदान करती है
ऋद्धि, सिद्धि, समृद्धि । 1354

358. விளக்கொளி ஸௌமுத லௌவது ஈறா
விளக்கொளிச் சக்கரம் மெய்ப்பொரு ளாகும்
விளக்கொளி யாகிய மின்கொடி யாளை
விளக்கொளி யாக விளங்கிடு நீயே. 1359

विळक्कॊळि सौमुदल् औवदु ई॒रा
विळक्कॊळि चक्करम् मॆय्प्पॊरुळागुम्
विळक्कॊळि यागिय मिन्कॊडियाळै
विळक्कॊळियाग विळङ्गिडु नीये । मंत्र-संख्या, 1359

'सौं' से लेकर 'औं' तक चक्र में
आरेखित करने पर प्रकट होती है
'सौं' शक्ति दीप-ज्योति-सी
तत्वार्थमयी ज्ञान-ज्योति है

तडित्लता से भासित 'सौं' शक्ति
व्याख्या देती है शिवतत्व की
ध्यान लगाओ इस शक्ति पर
बन जाओ स्वयं ज्योतिर्मय । 1359

359. ஆகின்ற சந்தனங் குங்குமங் கத்தூரி
போகின்ற சாந்து சவாது புழுகுநெய்
ஆகின்ற கற்பூர மாகோ சன்நீருஞ்
சேர்கின்ற ஒன்பதுஞ் சேரநீ வைத்திடே. 1368

आगिन्ऱ चन्दनम् कुंकमम् कत्तूरि
पोगिन्ऱ चान्दु चवादु पुऴ़ुगु नेय्
आगिन्ऱ कर्पूर मागोचन् नीरुम्
चेर्गिन्ऱ ऑन्पदुम् चेरनी वैत्तिडे । मंत्र-संख्या, 1368

आवाहन होता है माँ का
श्रीचक्र पर नवसुगंध लेपन से
चंदन, केसर, कस्तूरी
सुगंध मिश्रित लेप,
मार्जारगंध, घृत,
कर्पूर, गोरोचन का लेप
सुगंधित जल का छिड़काव । 1368

360. வைத்திடும் பொன்னுடன் மாதவ நோக்கிடிற்
கைச்சிறு கொங்கை கலந்தெழு கன்னியைத்
தச்சிது வாகச் சமைந்தஇம் மந்திரம்
அர்ச்சனை யாயிரம் ஆயிரஞ் சிந்தியே. 1369

वैत्तिडुम् पॉन्नुडन् मातव नोक्किडिल्
कैच्चिऱु कॉङ्गै कलदॆऴ़ु कन्नियै
तत्चिदु वागच् चमैन्द इम्मन्तिरम्
अर्चने आयिरम् आयिरम् सित्तिये । मंत्र-संख्या, 1369

तपोफल से उत्पन्न होती है
श्रीचक्र-पूजन में प्रीति
सुनहले पत्र पर निर्मित चक्र पर
आवाहित करें
सुंदर नन्हें कुचों से युत
बाला त्रिपुरसुंदरी का
वश्य होती है देवी
जाप करने से सहस्रों आवृत्ति
सिद्धियाँ भी मिलती हैं सहस्रों । 1369

361. சிந்தையி னுள்ளே திகழ்தரு சோதியாய்
எந்தை கரங்கள் இருமூன்றும் உள்ளது
பந்தமா சூலம் படைபாசம் வில்லம்பு
முந்தை கிலீமெழ முன்னிருந் தாளே. 1370

चिन्तैयिनुळ्ळे तिगऴ् तरु जोतियाय्
एन्दै करङ्गळ् इरुमून्रुम् उळ्ळदु
पन्द माशूलम् पडै पाशम् विल्लम्बु
मुन्दै किलीमॆऴ मुन्निरुन्दाळे । मंत्र-संख्या, 1370

'क्लीं' के जाप से
प्रकट होती है ज्योतिरूपिणी
ममता में मातृसम
रक्षण में पितृसम
तभी तो छहों करों में
शोभित है दिव्य षडायुध
परशु, तोमर, शूल, पाश
एवं धनुष-बाण
'क्लीं' नवाक्षरी की उपासना से
प्रत्यक्ष होती है माँ पराशक्ति । 1370

362. பேரொளி யாய பெரிய பெருஞ்சுடர்
சீரொளி யாகித் திகழ்தரு நாயகி
காரொளி யாகிய கன்னிகை பொன்னிறம்
பாரொளி யாகிப் பரந்துநின் றாளே. 1375

पेरॊळियाय पॆरिय पॆरुम् चुडर्
चीरॊळियागित् तिगऴ्तरु नायकि
कारॊळियागिय कन्निगै पॊन्निऱम्
पारॊळियागिप् परन्दु निन्ऱाळे । मंत्र-संख्या, 1375

ज्योतिमंडलों को उद्भासित करती
महाज्योति है माँ पराशक्ति
बिखेरती शीतल किरणें सदा एक समान
शोभित कन्यका स्वर्णाभ नीलमेघ कुंतला
भासित है ज्ञानज्योतिरूप में लोक में । 1375

363. ஆகின்ற மூலத் தெழுந்த முழுமலர்
போகின்ற பேரொளி யாய மலரதாய்ப்
போகின்ற பூரண மாக நிறைந்தபின்
சேர்கின்ற செந்தழல் மண்டல மானதே. 1380

आगिन्ऱ मूलत्तॆऴुन्द मुऴुमलर्
पोगिन्ऱ पेरॊळियाय मलरदाय्प्
पोगिन्ऱ पूरणमाग निऱैन्दपिन्
चेर्गिन्ऱ चॆन्तऴल् मण्डलमानदे । मंत्र-संख्या, 1380

मूलाधार में खिलती है शक्ति
पुष्परूप में
ऊर्ध्वमुखी होकर विकसित होती है
ज्योतिर्मयरूप में
व्याप्त होती है ज्योति
समस्त चक्र में
पहुँचाती है प्राणशक्ति को
अरुण-ज्योति शिव के संग । 1380

364. பாசம தாகிய வேரை யறுத்திட்டு
நேசம தாக நினைத்திரு மும்முளே
நாசம தெல்லாம் நடந்திடும் ஐயாண்டிற்
காசினி மேலமர் கண்ணுத லாகுமே. 1383

पाशमदागिय वेरै अऱुत्तिट्टु
नेशमदाग निनैत्तिरु मुम्मुळे
नाशमदॆल्लाम् नडन्दिडुम् ऐयाण्डिऱ्
काशिनि मेलमर् कण्णुदलागुमे । मंत्र-संख्या, 1383

पाशबंधन को उखाड़कर समूल
करो उपासना शक्ति की
प्रेम से, लगन से
चमत्कार होगा पाँच वर्ष में
दूर होंगे पाश और समस्त मल
जगत में शोभित होगे तुम
त्रिनेत्र शिव के समान । 1383

365. நாவுக்கு நாயகி நன்மணி பூணாரம்
பூவுக்கு நாயகி பொன்முடி யாடையாம்
பாவுக்கு நாயகி பாலொத்த வண்ணத்தள்
ஆவுக்கு நாயகி அங்கமர்ந் தாளே. 1387

नावुक्कु नायकि नन्मणि पूणारम्
पूवुक्कु नायकि पॊन्मुडि याडैयाम्
पावुक्कु नायकि पालॊत्त वण्णत्तळ्
आवुक्कु नायकि अङ्गमन्दाळे । मंत्र-संख्या, 1387

जिह्वा में आसीन है वागीश्वरी
धर कर मुक्तामणिमय हार
वही कमलासना लक्ष्मी है
हेमाभ किरीट कनकमय परिधान में
गीतों की अधीश्वरी शोभित है

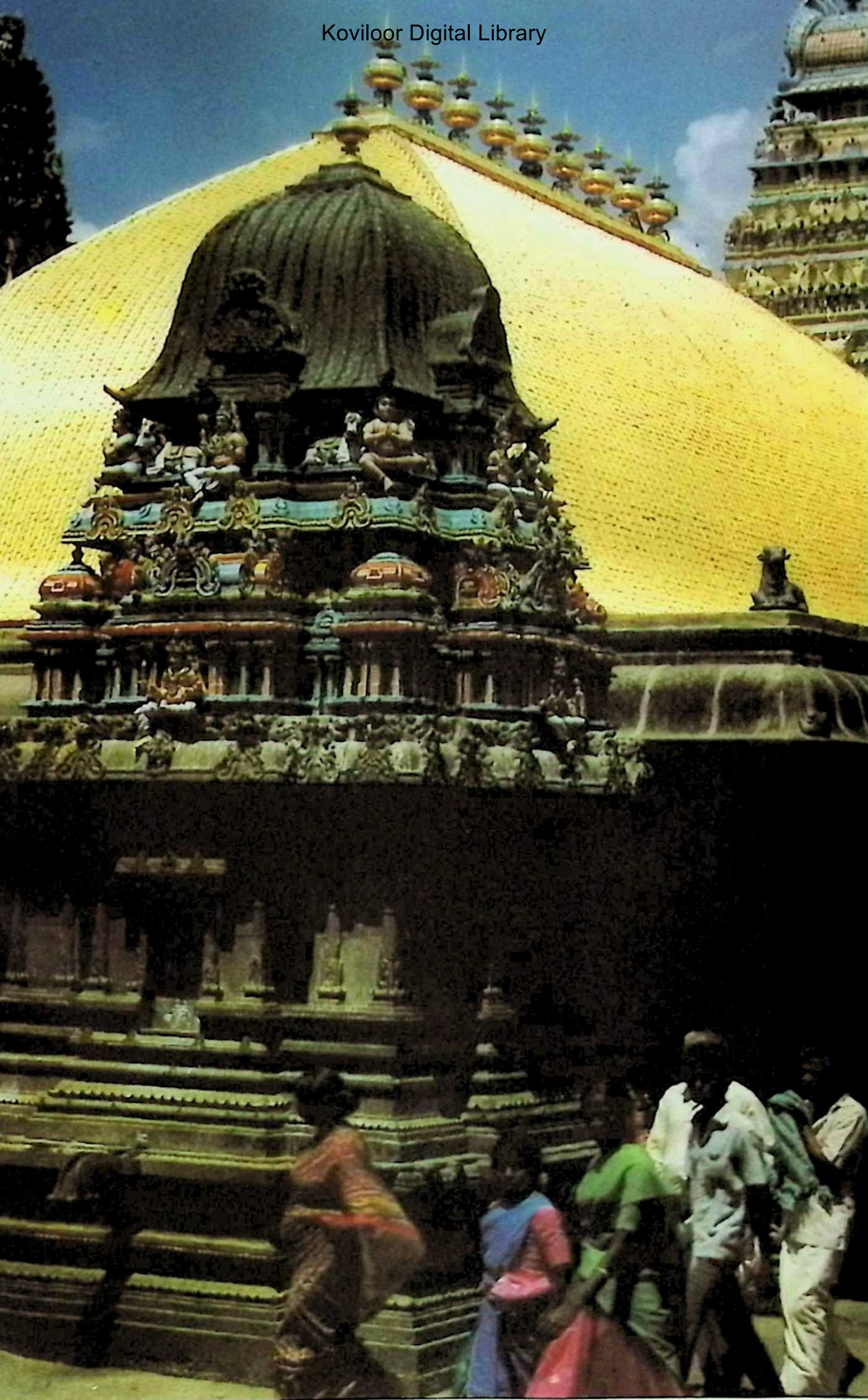
दुग्ध धवल वर्ण में
जीवों की अधीश्वरी मनोन्मनी
अधिष्ठित नाभिदेश के
मूलाधार में । 1387

366. கொண்டங் கிருந்தனர் கூத்தன் ஒளியினைக்
கண்டங் கிருந்தனர் காரணத் துள்ளது
பண்டை மறைகள் பரந்தெங்குந் தேடுமால்
இன்றென் மனத்துளே இல்லடைந் தாளுமே. 1416

कॉण्डङ्गिरुन्दनर् कूत्तन् ऑळियिनै
कण्डङ्गिरुन्दनर् कारणत्तुळ्ळदु
पण्डैमऱैगळ् परन्दॆङ्गुम् तेडुमाल्
इन्ऱॆन् मनत्तुळे इल्लडैन्दाळुमे । मंत्र-संख्या, 1416

धन्य हो रहे थे साधक
नटेश्वर की ज्योति में रमती
माँ पराशक्ति के दिव्यदर्शन से
यही शिवशक्ति ऐक्या
आदि कारण है जगत् और सृष्टि का
आदि वेद और आगम-शास्त्र
खोज रहे हैं सर्वत्र माँ के चरण
वही माँ पराशक्ति
विराज रही है मेरे हृदय में । 1416

ॐ ௐ ॐ



சிதம்பரம் (கனகசபை)
चिदम्बरम् (कनकसभा)
Chithambaram (The Golden Hall)

ஐந்தாம் தந்திரம்

ऐन्दाम् तन्तिरम्

पंचम तंत्र

சுத்த சைவம் — सुत्त शैवम् - शुद्ध शैव;

அசுத்த சைவம் — असुत्त शैवम् - अशुद्ध शैव;

மார்க்க சைவம் — मार्ग शैवम् - मार्ग शैव;

கடுஞ்சுத்த சைவம் — कडुंचुत्त शैवम् - तीव्र शुद्ध शैव;

சரியை — चरियै - चर्या;

கிரியை — किरियै - क्रिया;

யோகம் — योगम् - योग;

ஞானம் — ज्ञानम् - ज्ञान;

சன்மார்க்கம் — सन्मार्गम् - सन्मार्ग (ज्ञान मार्ग);

சகமார்க்கம் — सहमार्गम् - सहमार्ग (योग मार्ग);

சற்புத்திர மார்க்கம் —
सर्पुत्तिर मार्गम् - सत्पुत्र मार्ग (क्रिया मार्ग); दास मार्गम् दास मार्ग (भक्ति मार्ग);

சாலோகம் — सालोकम् - सालोक्य;

சாமீபம் — सामीपम् - सामीप्य;

சாரூபம் — सारूपम् - सारूप्य;

சாயுச்சியம் — सायुच्चियम् - सायुज्य;

சத்திநிபாதம் — सत्ति निपातम् - शक्ति निपात;

அறுசமயப் பிணக்கம் — अरुसमयप् पिणक्कम् - नानामत विमर्श;

நிராசாரம் — निराचारम् - निराचार (मतभेदों का निराकरण);

உட்சமயம் — उट्चमयम् - आंतरिक आस्था ।

* * *

367. இல்லடைந் தானுக்கும் இல்லாத தொன்றில்லை
இல்லடைந் தானுக் கிரப்பது தானில்லை
இல்லடைந் தானுக் கிமையவர் தாமொவ்வார்
இல்லடைந் தானுக்கு இல்லாதில் லானையே. 1417

इल्लडैन्दानुक्कुम् इल्लाददॊन्ऱिल्लै
इल्लडैन्दानुक्कु इरप्पदु तानिल्लै
इल्लडैन्दानुक्कु इमैयवर् तामॊवार्
इल्लडैन्दानुक्कु इल्लादिल्लानैये । मंत्र-संख्या, 1417

जो माँ की शरण में है
उसके लिए कोई अभाव नहीं है
जो माँ की शरण में है
उसके लिए किसी से माँगना नहीं है
जो माँ की शरण में है
उसके लिए देवता ही तुलनीय हैं
जो माँ की शरण में हैं
उस के लिए प्रभु स्वयं सुलभ हैं । 1417

368. ஊரும் உலகமும் ஒக்கப் படைக்கின்ற
பேரறி வாளன் பெருமை குறித்திடின்
மேருவும் மூவுல காளி யிலங்கெழுந்
தாரணி நால்வகைச் சைவமு மாமே. 1419

ऊरुम् उलगमुम् ऑक्कप् पडैक्किन्ऱ
पेरऱिवाळन् पॆरुमै कुऱित्तिडिन्
मेरुवुम् मुवुलकाळियिलङ्कॆऴुन्दु
तारणि नाल्वगैच् चैवमुमामे । मंत्र-संख्या, 1419

निस्सीम ज्ञानधन प्रभु
सृजन करते हैं संकल्पमात्र से
सकल ब्रह्मांड और जीवजाल विचित्र
अपरिमेय है विभु की विभुता

जिसका प्रमाण दे रहे हैं
उत्तुंग मेरु, विशाल विश्व
प्रभु द्वारा विवेचित चतुर्विध शैवमार्ग । 1419

369. வேதாந்தஞ் சுத்தம் விளங்கிய சித்தாந்த
நாதாந்தங் கண்டோர் நடுக்கற்ற காட்சியர்
பூதாந்த போதாந்த மாகப் புனஞ்செய்ய
நாதாந்த பூரணர் ஞானநே யத்தரே. 1422

वेदान्तम् सुत्तम् विळङ्गिय सिद्धान्त
नादान्तम् कण्डोर् नडुक्कट्र काट्चियर्
पूदान्त बोधान्तमागप् पुनम् चेय्य
नादान्त पूरणर् ज्ञान नेयत्तरे । मंत्र-संख्या, 1422

वेदान्त से विकसित होता है
सिद्धान्त, जिसमें दृढ़ होने पर
नादांत में गति होती है,
नादांत का क्षितिज नापने पर
दर्शन होता है संशयरहित
साधना से, ज्ञान से,
भूतांत परिणत होता है बोधांत में,
नादांत में पूर्ण रूप से रमनेवाले
प्रेमसन्मार्ग के पथिक होते हैं । 1422

370. ஞானி புவியெழு நன்னூ லனைத்துடன்
மோன திசையும் முழு எண்ணெண் சித்தியும்
ஏனை நிலமும் எழுதா மறையீறுங்
கோனோடு தன்னையுங் காணுங் குணத்தனே. 1426

ज्ञानि पुवियॅळ्ु नन्नूल् अनैत्तुडन्
मोन दिशैयुम् मुळ्ु ऍण्णॅण् सित्तियुम्
एनै निलमुम् ऍळ्ुदा मऱैयीरुम
कोनॉडु तन्नैयुम् काणुम् गुणत्तने । मंत्र-संख्या, 1426

ज्ञानी पुरुष को सहजसिद्ध है
विश्व में उपलब्ध सकलशास्त्र
चौंसठ कलाएँ और उन से प्राप्त
चौंसठ सिद्धियाँ; अधिकार है उसका
मौनलोक और अन्यान्य क्षितिज पर,
वेदवेदांत का सारपूर्ण तत्व भी
दक्ष है वह अपने अन्तर्लोक में
स्वयं को ईश्वर के साथ एकाकांर देखने में । 1426

371. பொன்னாற் சிவசாத னம்பூதி சாதனம்
நன்மார்க்க சாதனம் மாஞான சாதனந்
துன்மார்க்க சாதனந் தோன்றாத சாதனஞ்
சன்மார்க்க சாதன மாஞ்சுத்த சைவர்க்கே. 1427

पॉन्नार् शिव सादनम् पूदि सादनम्
नन्मार्ग सादनम् मा-ज्ञान सादनम्
तुन्मार्ग सादनम् तोन्ऱाद सादनम्
सन्मार्ग सादनमाम् सुत्त शैवर्के । मंत्र-संख्या, 1427

कनक-खचित हैं रुद्राक्ष शिव-चिह्न
भस्म-लेपित है सकल शरीर
शैवमार्ग के पथिक के लिए.
यह सब अलंकार अनुयोज्य हैं
किंतु इस मार्ग का वांछित साधन ज्ञान है
जिसकी उपस्थिति में पास न फटकता
दुर्मार्ग का कोई भी साधन
सन्मार्ग ही वरेण्य साधन है
शुद्धशैव के लिए । 1427

372. ஆகமம் ஒன்பான் அதிலான நாலேழு
மோகமில் நாலேழு முப்பேத முற்றுடன்

வேகமில் வேதாந்த சித்தாந்த மெய்ம்மையொன்
றாக முடிந்த வருஞ்சுத்த சைவமே. 1429

आगमम् ओन्पान् अदिलान नालेऴु
मोगमिल् नालेऴु मुप्पेद मुट्रुडन्
वेगमिल् वेदान्त सित्तान्त मॅय्म्मैयोन्-
ऱाग मुडिन्दवरुम् सुत्त शैवमे । मंत्र-संख्या, 1429

पुरासमय में प्रकट नवागम
प्रसरित हुए कालांतर में
अष्टविंशति संख्या में,
विभक्त हुए फिर त्रिधा
मंत्र, तंत्र, उपदेश में ।
यों विविध होने पर भी
स्फुरित है आगमों का सार-निष्कर्ष
वेदान्त के सिद्धान्त-सत्य में
परिणत हुआ वह फिर
अपूर्व महार्ह शुद्ध-शैव में । 1429

373. சுத்தம் அசுத்தந் துரியங்கள் ஒரேழுஞ்
சத்தும் அசத்துந் தணந்த பராபரை
உய்த்த பராபரை யுள்ளாம் பராபரை
அத்தன் அருட்சத்தி யாயெங்கு மாமே. 1430

सुत्तम् असुत्तम् तूरियंगळ् ओरेऴुम्
सत्तुम असत्तुम् तणन्द परापरै
उय्त्त परापरै उळ्ळाम् परापरै
अत्तन् अरुट्चत्ति यायॅङ्गु मामे । मंत्र-संख्या, 1430

अतीत है परापरा
शुद्ध-अशुद्ध-तुरीय संज्ञक
लोक-सप्तक से
सदसत् से, कारण-कार्य से ।

विलस रही है परापरा
केवल रूप में अंतर्यामी
तारती वह सकल जीव को
सर्वव्यापिनी परापरा
अनुग्रह-शक्ति है ईश की । 1430

374. வேதாந்தங் கண்டோர் பிரமமித் தியாதரர்
நாதாந்தங் கண்டோர் நடுக்கற்ற யோகிகள்
வேதாந்த மல்லாத சித்தாந்தங் கண்டுளோர்
சாதா ரணமன்ன சைவர் உபாயமே. 1435

वेदान्तम् कण्डोर पिरममित्यादरऱ्
नादान्तम् कण्डोऱ् नडुक्कट्र योगिकळ्
वेदान्त मल्लाद सित्तान्तम् कण्डुळोऱ्
सादारण मन्न शैवऱ् उपायमे । मंत्र-संख्या, 1435

वेदांत के ज्ञाता ब्रह्मविद् हैं
विचक्षण हैं ब्रह्मविद्या में,
इनके हित मिथ्या है सकल जगत्
नादांत में रमते योगी
अचंचल रहते हैं योग-विद्या में
वेदांत से भिन्न सिद्धांत में
शिवानंद-दर्शक शैव
होते हैं सहज, सरल, सामान्य । 1435

375. ஒன்றும் இரண்டும் இலதுமாய் ஒன்றாக
நின்று சமய நிராகார நீங்கியே
நின்று பராபரை நேயத்தைப் பாதத்தாற்
சென்று சிவமாதல் சித்தாந்த சித்தியே. 1437

ओंन्रुम् इरण्डुम् इलदुमाय् ओंन्ऱाग
निन्रु समय निराकार नीङ्गिये

निन्रु परापरै नेयत्तैप् पादत्तार्
चेन्रु शिवमादल् सित्तान्त सित्तिये । मंत्र-संख्या, 1437

अद्वैत केवल है अलग मानता द्वैत है
सिद्धांत यह उचित है
एक होकर साथ रहना
पड़ना नहीं पचड़े में संप्रदाय के
लगाव हो यदि परापरा-पद में
उसके स्नेह से, अनुग्रह से
शिव बनोगे तुम
यही सिद्धि है सिद्धांत की । 1437

376. வேடங் கடந்து விகிர்தன்றன் பான்மேவி
ஆடம் பரமின்றி ஆசாபா சஞ்செற்றுப்
பாசொன்று பாசம் பசுத்துவம் பாழ்படச்
சாடுஞ் சிவபோ தகர்சுத்த சைவரே. 1438

वेडम् कडन्दु विकिर्दन् तन् पान्मेवि
आडम्बरम् इन्रि आशापाशम् चेट्रु
पार्डोन्रु पाशम् पशुत्तुवम् पाऴ् पड
चारुम् शिवबोदर् सुत्त शैवरे । मंत्र-संख्या, 1438

वृथा हैं बाह्य वेश, गेरुआ परिधान
और अन्य सारे आडंबर;
शुद्धशैव वही है
जो काट देता है आशापाश
दत्तचित्त है निर्मल-निरामय में
नित्यशुद्ध परमेश्वर में
स्वतः कट जाता है
कर्मपाश, वासना, अहंकार
और अंत में जीवबोध भी

शुद्ध शिवज्ञानी
शिव को पाकर शिव बन जाता है । 1438

377. உடலான ஐந்தையும் ஓராறும் ஐந்து
மடலான மாமாயை மற்றுள்ள நீவப்
படலான கேவல பாசந் துடைத்துத்
திடமாய்த் தனையுறல் சித்தாந்த மார்க்கமே. 1439

उडलान अयन्दैयुम् ओरारुम् ऐन्दैयुम्
अडलान मामाये मट्रुळ्ळ नीवप्
पडलान केवल पाशम् तुडैत्तुत्
तिडमाय्त् तनैयुरल् सिद्धान्त मार्गमे । मंत्र-संख्या, 1439

पंचतत्व से निर्मित है शरीर
तीस अन्य तत्वों सहित
बलवती माया का तत्व भी है
इन सब के पार जब पहुँचा जाता है
हट जाती है कर्मवासना की परत
फिर दृढ़ हो जाता है आत्मसाक्षात्कार
यही प्रशस्त सिद्धान्त मार्ग है । 1439

378. சுத்தச் சிவனுரை தானதில் தோயாமல்
முத்தர் பதப்பொருள் முத்திவித் தாமூலம்
அத்தகை யான்மா அரனை அடைந்தற்றாற்
சுத்த சிவமாவ ரேசுத்த சைவரே. 1440

सुत्तच् चिवनुरै तानदिल् तोयामल्
मुत्तर् पदप्पॊरुळ् मुत्तिवित्ता मूलम्
अत्तगैयान्मा अरनै अडैन्दट्रार्
सुत्त शिवमावरे सुत्त शैवरे । मंत्र-संख्या, 1440

बिना रुके शुद्धमाया शिव-तत्व में
रहते साधना-रत वे पाते हैं शिव-पद,

मुक्ति का बीज इसे मानकर
संलग्न रहते हैं साधना में
पाने तक शिव-सायुज्य
मिलकर शिव में एकाकार
कहलाते हैं वे शुद्ध-शैव । 1440

379. நானென்றுந் தானென்றும் நாடிநான் சாரவே
தானென்று நானென் றிரண்டிலாத் தற்பதந்
தானென்று நானென்ற தத்துவ நல்கலால்
தானென்று நானென்றுஞ் சாற்றகில் லேனே. 1441

नानॆन्ऱुम् तानॆन्ऱुम् नाडि नान् चारवे
तानॆन्ऱु नानॆन्ऱिरण्डिलात् तर्पदम्
तानॆन्ऱु नानॆन्ऱ तत्तुव नल्गलाल्
तानॆन्ऱु नानॆन्ऱुम् चाट्रकिल्लेने । मंत्र-संख्या, 1441

खोजता रहा मैं उसे
'मैं' और 'तुम' भाव से
किन्तु तत्पद वह परे है
'मैं' और 'तुम' के भाव से
उपदेश दिया मुझे स्नेह से
मैं तुझ में और तुम मुझ में
नहीं भेद है 'मैं' और 'तुम' में
तत्वमसि का रहस्य जानकर
मौन हो गया मैं
बोलता नहीं 'मैं' और 'तुम' । 1441

380. சாற்றரி தாகிய தத்துவஞ் சித்தித்தால்
ஆற்றரி தாகிய ஐந்தும் அடங்கிடும்
மேற்றிகழ் ஞானம் விளக்கொளி யாய்நிற்கும்
பாற்பர சாயுச்சிய மாகும் பதியே. 1442

चाट्ररिदागिय तत्तुवम् चिन्तित्ताल्
आट्ररिदागिय ऐन्दुम् अडंगिडुम्
मेट्रिगळ् ज्ञानम् विळक्कोळियाय् निर्कुम्
पार्पर सायुज्जिमागुम् पतिये । मंत्र-संख्या, 1442

अनुभूति होती है जब
शब्दातीत तत्वबोध की
शमित होते हैं दुर्दम पंचेंद्रिय,
प्रकाशमान होता है चित्सभा में
मणिमय दीप शिवज्ञान का,
प्रशस्त होता है मार्ग
शिव-सायुज्य का
प्रभु से तादात्म्य का । 1442

381. உயிர்க்குயி ராய்நிற்றல் ஒண்ஞான பூசை
உயிர்கொளி நோக்கல் மகாயோக பூசை
உயிர்ப்பெறு மாவா கனம்புறப் பூசை
செயிற்கடை நேசஞ் சிவபூசை யாமே. 1444

उयिरुक्कुयिराय् निट्रल् ओंणु ज्ञान पूजै
उयिर्कोळि नोक्कल् महायोग पूजै
उयिर्प्पॅरुम् आवाहनम् पुरप्पूजै
चॅयिर्कडै नेशम् शिवपूजैयामे । मंत्र-संख्या, 1444

संधान कर प्राण भीतर प्राण
तन्मय होना महाप्राण में
ज्ञानपूजा वरेण्य है,
निरख कर प्राण भीतर ज्योति
तल्लीन होना महाज्योति में
योगपूजा विशिष्ट है,
आवाह्न कर इष्टदेव का

प्राणों का करना स्थापन
बाह्यपूजन की क्रिया है,
स्नेह-प्रेम से, भक्तिभाव से
अर्चन आराधन शिव का
कहलाती है चारु चर्या । 1444

382. நாடு நகரமும் நற்றிருக் கோயிலுந்
தேடித் திரிந்து சிவபெரு மான்என்று
பாடுமின் பாடிப் பணிமின் பணிந்தபின்
கூடிய நெஞ்சத்துக் கோயிலாய்க் கொள்வனே. 1445

नाडु नगरमुम् नट्रिरुक् कोयिलुम्
तेडित् तिरिन्दु शिवपॅरुमान् ऍन्रु
पाडुमिन् पाडिप् पणिमिन् पणिन्द पिन्
कूडिय नॅञ्जत्तुक् कोयिलाय्क् कॉळ्वने । मंत्र-संख्या, 1445

ग्राम, नगर में, तीर्थ-धाम में
डोलो खोजो हर मंदिर में,
पुकारो उसे भक्ति-भाव से
स्नेह से द्रवित हृदय से,
शिव ! शिव ! मेरे प्रभु
चरण-युगल में प्रणत होकर
गाओ नाचो आनन्द से
पावन बनेगा तव हृदय
बसेंगे प्रभु इस मंदिर में । 1445

383. பத்தர் சரிதை படுவோர் கிரியையோர்
அத்தகு தொண்டர் அருள்வேடத் தாகுவோர்
சுத்த வியமாதி சாதகர் தூயோகர்
சித்தர் சிவஞானஞ் சென்றெய்து வோர்களே. 1446

पत्तर् चरितै पडुवोर् किरियैयोर्
अत्तगु तॉण्डर् अरुळ् वेडत्तागुवोर्

सुत्त वियमदि सादकर् तूयोगर्
सित्तर् शिवज्ञानम् चेन्रय्दुवोर्गळे । मंत्र-संख्या, 1446

शिवभक्त का लक्ष्य यही है–
दृढ़ता से पालन करना चर्या का
शिवसेवक की सहज पहचान
अंग-अंग में मंगल शिवचिह्न
शिवयोगी साधना निरत हैं
यम-नियम में, योग-समाधि में,
शिवज्ञानी पहुंचे हुए सिद्ध हैं
रमे रहते हैं सदाशिव में सदा । 1446

384. சார்ந்தமெய்ஞ் ஞானத்தோர் தானவ னாயினோர்
சேர்ந்தவெண் யோகத்தர் சித்தர் சமாதியோர்
ஆய்ந்த கிரியையோர் அருச்சனை தப்பாதோர்
நேர்ந்த சரியையோர் நீள்நிலத் தோரே. 1447

चार्न्द मय्ज्ञानत्तोर् तानवनायिनोर्
चेर्न्द ऍण्योगत्तर् सित्तर् समादियोर्
आय्न्द क्रियैयोर् अरुच्चनै तप्पादोर्
तेर्न्द चरियैयोर् नीळ् निलत्तोरे । मंत्र-संख्या, 1447

पूर्णता में निमग्न पूर्ण बने हैं
आनन्दमग्न हैं शिवज्ञानी
पार कर आठों योग चरण
समाधिलीन हैं सिद्धयोगी,
शिवार्चन और अनुष्ठान में
अप्रमादी हैं क्रियायोगी,
संचरण करते अनवरत
ज्ञानभूमि में चर्या-रत । 1447

385. கிரியை யோகங்கள் கிளர்ஞான பூசை
அரிய சிவனுரு அமரும் அரூபந்
தெரியும் பருவத்துத் தேர்ந்திடும் பூசை
உரியன நேயத் துயர்பூசை யாமே. 1448

किरियै योगङ्गळ् किळर् ज्ञान पूशै
अरिय शिवनुरु अमरुम् अरुपम्
तेरियुम् परुवत्तु तेर्न्दिडुम् पूशै
उरियन नेयत्तुयर् पूशैयामे । मंत्र-संख्या, 1448

क्रिया होती है साकार की पूजा
षोडशोपचार सहित
योग होता है ध्यानमग्न होना
निर्गुण निराकार में
ज्ञान लब्ध होता है साधक को
साधना की पक्वदशा में
स्निग्ध हृदय से प्रभु का आराधन
चर्या का वरेण्य शील है । 1448

386. கானுறு கோடி கடிகமழ் சந்தனம்
வானுறு மாமல ரிட்டு வணங்கினும்
ஊனினை நீக்கி உணர்பவர்க் கல்லது
தேனமர் பூங்கழல் சேரவொண் ணாதே. 1452

कानुरु कोटि कडि कमऴ् चन्दनम्
वानुरु मामलर् इट्टु वणङ्गिनुम्
ऊनिनै नीक्कि उणर्बवर्कल्लदु
तेन्मर् पूङ्कळल् चेरवोण्णादे । मंत्र-संख्या, 1452

शृंगार करें प्रभु का
मलय पर्वत के सुगंधित चंदन से
पूजन नमन करें प्रभु का
नन्दन-कानन के दिव्य प्रसून से

मधु-स्रवित चरणकमल तक
पहुँच पाते हैं वही पुण्यात्मा
जो मांसल-इच्छाओं से ऊपर उठे हों
मग्न हों जो दिव्य शिवानुभव में । 1452

387. கோனக்கன் றாயே குரைகழல் ஏத்துமின்
ஞானக்கன் றாகிய நடுவே யுழிதரும்
வானக்கன் றாகிய வானவர் கைதொழு
மானக்கன் றீசன் அருள்வள்ள மாமே. 1453

कोनक्कन्राये कुरैकळ्ल् एत्तुमिन्
ज्ञानक्कन्रागिय नडुवे उळि तरुम्
वानक्कन्रागिय वानवर् कैतोळु
मानक्कन्रीशन् अरुळ् वळ्ळमामे । मंत्र-संख्या, 1453

व्यग्र होकर खोजें ईशचरण
उसी तड़प से
वत्स ज्यों पुकार रहा गोमाता को,
ज्ञान के संग स्थान मिलेगा सुरगण मध्य में
जहां आराधना करते हैं देवगण
देव-देव महादेव को नित्य ही,
गंभीर वृषभ पर आरूढ़ प्रभु
परमदयालु है अनुग्रह-नौका है । 1453

388. இதுபணிந் தெண்டிசை மண்டலம் எல்லாம்
அதுபணி செய்கின் றவளொரு கூறன்
இதுபணி மானுடர் செய்பணி யீசன்
பதிபணி செய்வது பத்திமை காணே. 1454

इदु पणिन्दॆण्डिसै मण्डलम् ऍल्लाम्
अदु पणिचेय्किन्रवळॊरु कूरन्
इदु पणि मानुडर् चॆय्पणि ईशन्
पति पणि चॆय्वदु पत्तिमै काणे । मंत्र-संख्या, 1454

कार्यरत हुई मां ईश-इंगित जानकर
सृजन किया दिशि-दिशि निखिल भुवन,
सचराचर ब्रह्मांड, निर्वाह करती है पंचकृत्य भी,
अंतर्लीन है शक्ति ईश के वामभाग में
मानव के लिए वरेण्य कार्य है
महिमामय महेश की सेवा
दत्तचित्त हो पूर्ण-भक्ति से । 1454

389. பத்தன் கிரியை சரியை பயில்வுற்றுச்
சுத்த அருளால் துரிசற்ற யோகத்தில்
உய்த்த நெறியுற் றுணர்கின்ற ஞானத்தாற்
சித்தங் குருவரு ளாற்சிவ மாகுமே. 1455

पत्तऩ् किरियै चरियै पयिल्वुट्रुच्
चुत्त अरुळाल् तुरिसट्र योगत्तिल्
उय्त्त नॆ़रियुट्रु उणर्गिऩ्ऱ ज्ञानत्तार्
चित्तम् गुरुवरुळाल् शिव मागुमे । मंत्र-संख्या, 1455

करता है भक्त साधना का श्रीगणेश
क्रिया और चर्या के अभ्यास से,
कृपा से, अनुग्रह से खुलता है
तब योग का विशुद्ध मार्ग;
षडाधार का अनुभव पाकर
विचरता है तब ज्ञान-मार्ग में
परमगुरु की निस्सीम कृपा से
बन जाता है ज्योतिर्मय शिव । 1455

390. நெறிவழி யேசென்று நேர்மையுள் ஒன்றித்
தறியிருந் தாற்போல் தம்மை யிருத்திச்
சொறியினுந் தாக்கினுந் துண்ணென் றுணராக்
குறியறி வாளர்க்குக் கூடலு மாமே. 1457

नेरिवऴियै चेन्रु नेर्मैयुळ् ओन्रित्
तरियिरुन्दार् पोल् तम्मै यिरुत्तिच्
चोरियिनुम् ताक्किनुम् तुण्णेन्रुणराक्
कुरियरिवाळर्क्कुक् कूडलुमामे । मंत्र-संख्या, 1457

पार कर षट्चक्र साधना के बल से
पहुंचे हैं जो योगी भ्रूमध्य में, अनाहत में,
स्थिर रहते हैं दंड-सम अचंचल होकर;
निपट संज्ञाहीन हैं, उत्तेजना
बोध नहीं होता किसी आघात का,
चित्त उनका एकाग्र है निज लक्ष्य पर
सिद्धि मिलती है ध्रुव ईश के अनुग्रह से । 1457

391. ஊழிதோ றூழி உணர்ந்தவர்க் கல்லால்
ஊழிதோ றூழி யுணரவுந் தானொட்டான்
ஆழி அமரும் அரியயன் என்றுளார்
ஊழி முயன்றும் ஒருச்சியு ளானே. 1458

ऊऴितोरूऴि उणर्न्दवर्क्कल्लाल्
ऊऴितोरूऴि उणर्वुम् तानोट्टान्
आऴि अमरुम् अरिययन् एन्रुळार्
ऊऴि मुयन्रुम् ओरुच्चि युळाने । मंत्र-संख्या, 1458

कालातीत नित्य शाश्वत प्रभु
जब तक स्वयं अनुग्रह न करता
अनुभव-वेद्य नहीं होता
चाहे युग-युगों तक रत रहें साधना में,
क्षीर-सागर-शायी और कमलासन
उद्यम करते रहे युगों तक
हार गए पार न पाकर
पहुंचे नहीं उस शिखर तक । 1458

392. பூவினிற் கந்தம் பொருந்திய வாறுபோற்
சீவனுக் குள்ளே சிவமணம் பூத்தது
ஓவியம் போல உணர்ந்தறி வாளர்க்கு
நாவி யணைந்த நடுதறி யாமே. 1459

पूविनिऱ् कन्दम् पॊरुन्दियवाऱु पोऱ्
जीवनुक्कुळ्ळे शिवमणम् पूत्तदु
ओवियम् पोल उणर्न्दरिवाळर्क्कु
नावि अणैन्द नडुतऱियामे । मंत्र-संख्या, 1459

पुष्प में महकती है सुगंध
इसी भांति महकता है
जीव के अंदर शिवबोध
जिसका आनंद लेता है योगी
चित्रलिखित-सा ध्यानयोग में बैठकर
यों अनुभव में जानने पर
वही यष्टिसम बनता है निश्चल निश्चेष्ट
जिस पर सुगंध-मार्जार आश्लिष्ट होता है । 1459

393. உய்ந்தனம் என்பீர் உறுபொருள் காண்கிலீர்
கந்த மலரிற் கலக்கின்ற நந்தியைச்
சிந்தை யுறவே தெளிந்திருள் நீங்கினால்
முந்தைப் பிறவிக்கு மூலவித் தாமே. 1460

उय्न्दनम् ऍन्बीर् उरुपॊरुळ् काण्किलीर्
कन्द मलरिऱ् कलक्किन्ऱ नन्दियै
चिन्तै युऱवे तॆळिन्दिरुळ् नींगिनाल्
मुन्दैप् पिऱविक्कु मूलवित्तामे । मंत्र-संख्या, 1460

पाया कहां सत्य वस्तु को
दंभ भरते हो 'पा लिया है'
मार्ग सरल है पाने का
रमता है वह तेरे अंदर

ज्यों पुष्पों में है सुगंध;
खोजो उसे एकाग्र मन से
चित शुद्ध होता है जब
हटता है तम,
कारण है जो जनन-मरण का
अज्ञान मिट जाने पर
मिलेगा अंतस् में परमेश्वर । 1460

394. பேணிற் பிறவா உலகருள் செய்திடுங்
காணில் தனது கலவியு ளேநிற்கும்
நாணில் நரக நெறிக்கே வழிசெயும்
ஊணிற் சுடுமங்கி யுத்தமன் றானே. 1463

पेणिऱ् पिऱवा उलगारुळ् चॅय्दिडुम्
काणिल् तनदु कलवियुळे निर्कुम्
नाणिल् नरक नॆंऱिक्के वऴि चॅयुम्
ऊनिऱ् चुडुमंगि उत्तमन्ऱाने । मंत्र-संख्या, 1463

साधनारत रहोगे
कटेगा जन्म-बन्धन,
प्रशस्त होगा मुक्ति-मार्ग
लक्ष्यबेध करो एकाग्र होकर
ज्योति-मिलन होगा अंतर में;
पर च्युति हुई साधना में
चित्त यदि हुआ चंचल
जानलो खुलेगा
नरक का तमोमय मार्ग
साधना करो कुंडलिनी की
अनुग्रह करती अग्नि है
स्वयं सदाशिव-सी । 1463

395. யோகிக்கு யோகாதி மூன்றுள கொண்டுற்றோர்
ஆகத் தகுகிரி யாதி சரியையாந்
தாகத்தை விட்ட சரியையொன் றாம்ஒன்றுள்
ஆதித்தன் பத்தியுள் அன்புவைத் தேனே. 1465

योगिक्कु योगादि मून्रुळ कॉण्डुट्रोर्
आगत्तगु किरियादि चरियैयाम्
दागत्तै विट्ट चरियै आन्राम् ऑन्रुळ्
आदित्तन् पत्तियुळ् अन्बु वैत्तेने । मंत्र-संख्या, 1465

योगी के लिए सुलभ हैं तीनों मार्ग
योग सहित क्रिया और चर्या का मार्ग
कर्मयोग फलता है चर्या में, शील में,
शील से छुटकारा मिलता है इच्छा से
मन होता है तब एकाग्र योग में
केंद्रित होता है आदित्य में, अंतर्ज्योति में । 1465

396. ஞானத்தின் மிக்க அறநெறி நாட்டில்லை
ஞானத்தின் மிக்க சமயமும் நன்றன்று
ஞானத்தின் மிக்கவை நன்முத்தி நல்காவா
ஞானத்தின் மிக்கார் நரரின்மிக் காரே. 1467

ज्ञानत्तिन् मिक्क अऱनॆऱि नाट्टिल्लै
ज्ञानत्तिन् मिक्क समयमुम् नन्ऱन्ऱु
ज्ञानत्तिन् मिक्कवै नन्मुत्ति नल्गावा
ज्ञानत्तिन् मिक्कार् नररिन् मिक्कारे । मंत्र-संख्या, 1467

अमोघ है ज्ञान का मार्ग
इसके आगे कहीं नहीं है
अगजग में कोई नीतिमार्ग
ढूंढे नहीं मिलेगा
ज्ञान से बढ़ कर कोई धर्ममार्ग
ज्ञान से विलग धर्ममार्ग

प्रशस्त न करे मुक्तिमार्ग
मुक्तिदायक है एकमेव ज्ञानमार्ग
ज्ञानी हैं नरों में उत्कृष्ट । 1467

397. இருக்குஞ் சேம இடம் பிரமமாகும்
வருக்கஞ் சராசர மாகும் உலகந்
தருக்கிய ஆசார மெல்லாந் தருமே
திருக்கிலா ஞானத்தைத் தேர்ந்துணர்ந் தோர்க்கே. 1470

इरुक्कुम् चेम इडम् पिममागुम्
वरुक्कम् चराचरमागुम् उलगम्
तरुक्किय आचार मेलाम् तरुमे
तिरुक्किला ज्ञानत्तै तेर्न्दुणर्न्दार्क्के । मंत्र-संख्या, 1470

संशयातीत विशुद्धज्ञान के धनी के लिए
निज आवास-स्थान है ब्रह्मस्थान,
बंधु-बांधव हैं सकल चराचर
वंदनीय शील सदाचार होते हैं स्वतःसिद्ध
इसलिए कि वे संशयातीत विशुद्ध ज्ञान के धनी हैं । 1470

398. அறிவும் அடக்கமும் அன்பும் உடனே
பிறியா நகர்மன்னும் பேரரு ளாளன்
குறியுங் குணமுங் குரைகழல் நீங்கா
நெறியறி வார்க்கிது நீர்த்தொனி யாமே.. 1471

चाट्रुम् सन्मार्गमाम् तर्चिव तत्तुवत्
तोट्रंगळान सुरुदिच् चुडर् कण्डु
चीट्रम् ओऴिन्दु शिवयोग सित्तराय्क्
कूट्रत्तै वॅन्ऱार् कुऱिप्पऱिन्दार्गळे । मंत्र-संख्या, 1477

आगमों में वर्णित शिवतत्व को
समझ लेते हैं यथातथ
अनुभव-वेद्य कर लेते हैं निज अंतर में

परात्पर की अनुग्रह-ज्योति को
मुक्त होकर क्रोध से, अहंकार से;
सिद्ध बन जाते हैं शिवयोग में
जीत लेते हैं मृत्यु को भी
पहुँचते हैं जो इस दशा में
कहलाते हैं सन्मार्ग के पथिक । 1477

399. சைவப் பெருமைத் தனிநா யகன்நந்தி
உய்ய வகுத்த குருநெறி ஒன்றுண்டு
தெய்வச் சிவநெறி சன்மார்க்கஞ் சேர்ந்துய்ய
வையத்துள் ளார்க்கு வகுத்துவைத் தானே. 1478

शैवप्पॅरुमैत् तनि नायकऩ् नन्दि
उय्य वगुत्त गुरुनॅऱि ऑन्रुण्डु
दॅय्वच् चिवनॅऱि सन्मार्गम् चेर्न्दुय्य
वैयत्तुळ्ळार्क्कु वगुत्तु वैत्ताने । मंत्र-संख्या, 1478

(प्रणत हैं हम गुरुचरणों पर)
शैव-सन्मार्ग के अद्वितीय गुरु
नन्दिदेव के चरणकमलों पर
परमकृपालु गुरुदेव ने
प्रशस्त किया एक सन्मार्ग
जीवमात्र के उद्धार का सहजमार्ग
जगत् के लिए अनुकरणीय दिव्यमार्ग
शिवमार्ग ही कल्याणकारी सन्मार्ग । 1478

400. தெரிசிக்கப் பூசிக்கச் சிந்தனை செய்யப்
பரிசிக்கக் கீர்த்திக்கப் பாதுகஞ் சூடக்
குருபத்தி செய்யுங் குவலயத் தோர்க்குத்
தருமூர்த்திச் சார்பூட்டுஞ் சன்மார்க்கந் தானே. 1479

तॅरिशिक्कपू पूशिक्कच् चिन्तनै चॅय्यप्
परिशिक्कक् कीर्त्तिक्कप् पादुकञ् चूडक्

गुरु पत्ति चेय्युम् कुवलयत्तोर्क्कुत्
तरु मूत्तिच् चार्बूट्टुम् सन्मार्गम् ताने । मंत्र-संख्या, 1479

दर्शन, पूजन, मनन के साथ
स्पर्शन, कीर्तन और पादसेवन
श्रद्धायुत करें यह षड्धा-भक्ति
सिद्ध होती है निश्चय गुरुभक्ति
जिससे प्रशस्त होता है सन्मार्ग
खुल जाता है जिससे मुक्तिमार्ग । 1479

401. தெளிவறி யாதார் சிவனை யறியார்
தெளிவறி யாதார் சீவனு மாகார்
தெளிவறி யாதார் சிவமாக மாட்டார்
தெளிவறி யாதவர் தீரார் பிறப்பே. 1480

तॆळिवऱियादार् शिवनै अऱियार्
तॆळिवऱियादार् जीवनु मागार्
तॆळिवऱियादार् शिवमाग माट्टार्
तॆळिवऱियादवर् तीरार् पिऱप्पे । मंत्र-संख्या, 1480

जिनकी चिति सुलझी नहीं
शिव का बोध उन्हें नहीं होता
शिव-बोध तो दूर की बात है
जीव-बोध भी उन्हें नहीं होता
सम्यक् दर्शन के अभाव में
शिवानन्द में लीन होकर
स्वयं शिवतत्व बनना
उनके लिए नहीं संभव
मुक्त नहीं होते वे
आवागमन के चक्कर से । 1480

402. தானவ னாகித் தானைந்தா மலஞ்செற்று
மோனம தாமொழிப் பான்முத்த ராவது
மீனமில் ஞானானு பூதியில் இன்பமுந்
தானவ னாயுற லானசன் மார்க்கமே. 1481

तानवनागित् तानैन्दामलम् चॆट्रु
मोनम् तामॊऴिप् पान्मुत्तरावदुम्
ईनमिल् ज्ञानानुभूतियिल् इन्बमुम्
तानवनायुरलान सन्मार्गमे । मंत्र-संख्या, 1481

जब सिद्धि मिलती है सन्मार्ग में
विलय हो जाता है 'अहं' का 'तत्' में
तन्मय वह विमल भी है
परे हो जाते हैं सकल मल,
मौन बन जाती है भाषा मुक्तज्ञानी की
व्यक्त होता है अंतर का आनन्द,
परज्ञान का सुखद अनुभव
अगोचर है वाणी के लिए
जीव का शिव होना सन्मार्ग-सिद्धि है । 1481

403. அன்னிய பாசமும் ஆகுங் கருமமும்
முன்னும் அவத்தையும் மூலப் பகுதியும்
பின்னிய ஞானமும் பேதாதி பேதமுந்
தன்னொடுங் கண்டவர் சன்மார்க்கத் தோரே. 1485

अन्निय पाशमुम् आगुम् करुममुम्
मुन्नुम् अवत्तैयुम् मूलप्पगुदियुम्
पिन्निय ज्ञानमुम् बेदादि बेदमुम्
तन्नॊडुम् कण्डवर् सन्मार्गत्तोरे । मंत्र-संख्या, 1485

तत्व दर्शन होता है ज्ञानी को
खुल जाता है तब सारा दृश्य
पहचान में आ गया वह पाश

दूर किया जिसने उसे जीव से,
स्पष्ट होता है पाश-विमोचक कर्म
कर्म-फल अनुभव दुख-संताप
इनमें लगा रही मूल प्रकृति
चेतना जो पाश से बांधती है
इन सबके भेदाभेद और गुत्थियां
यों होता है तत्वबोध सन्मार्ग ज्ञानी को । 1485

404. பசுபாச நீக்கிப் பதியுடன் கூட்டிக்
கசியாத நெஞ்சங் கசியக் கசிவித்
தொசியாத வுண்மைச் சொரூபோ தயத்துற்
றசைவான தில்லாமை யானசன் மார்க்கமே. 1486

पशु पाश नीक्किप् पतियुडन् कूट्टिक्
कशियाद नेञ्जम् कशियक् कशिवित्
ताशियाद उण्मैच् चारूपोदयत्तुर्–
ऱशैवान दिल्लामै यान सन्मागमि । मंत्र-संख्या, 1486

हटाकर पाश-बंधन समग्र
सन्मार्ग मिला देता है जीव को शिव से,
पिघला देता है चित्त को
जो जानता नहीं कभी पसीजना,
युक्त कर देता है स्वरूपज्ञान से
नित्य निरामय आनन्द-स्वरूप में
मुदित रहता है सन्मार्ग ज्ञानी
अविचल, अचंचल । 1486

405. சன்மார்க்கந் தானே சகமார்க்க மானது
மன்மார்க்க மாமுத்தி சித்திக்குள் வைப்பதாம்
பின்மார்க்க மானது பேராப் பிறந்திறந்
துன்மார்க்க ஞானத் துறதியு மாமே. 1488

सन्मार्गम् ताने सहमार्गम् आनदु
मन्मार्ग मामुत्ति सित्तिक्कुळ् वैप्पदाम्
पिन्मार्गम् आनदु पेराप् पिऱन्दिऱन्दु
उन्मार्ग ज्ञानत् तुरुदियु मामे । मंत्र-संख्या, 1488

सन्मार्ग से अभिन्न है सहमार्ग
अतः सिद्धिप्रद है मुक्तिदायक है
चर्या, क्रिया, योग और ज्ञान पर
आधारित इन मार्गों को छोड़कर
इतर मार्ग पर चलनेवाले
भटकते हैं जन्म-मरण के बीच
भ्रमवश मान लेते हैं
सहज स्थिति यही है । 1488

406. யோகச் சமாதியின் உள்ளே யகலிடம்
யோகச் சமாதியின் உள்ளே யுளரொளி
யோகச் சமாதியின் உள்ளே யுளசத்தி
யோகச் சமாதி யுகந்தவர் சித்தரே. 1490

योग समादियिन् उळ्ळे अगलिडम्
योग समादियिन् उळ्ळे उळरॊळि
योग समादियिन् उळ्ळे उळसत्ति
योग समादि उगन्दवर् सित्तरे । मंत्र-संख्या, 1490

(सहमार्ग है योगसमाधि)
समाधि जब लग जाती है
दृश्यमान है भीतर अनन्त विस्तार .
विलसती है अंतर्ज्योति में परमज्योति
योगसमाधि में लीन होने पर
क्रीड़ा करती है महाशक्ति अंतर में
योगसमाधि सिद्ध होने पर
कहलाते हैं सच्चे सिद्ध वही । 1490

407. ஆதார சோதனை யானாடி சுத்திகள்
மேதாதி யீரெண் கலாந்தத்து விண்ணொளி
போதா லயத்துப் புலன்கர ணம்புந்தி
சாதா ரணங்கெட லாஞ்ச மார்க்கமே. 1492

आदार सोदनै यानाडि सुत्तिगळ्
मेदादि यीरेण् कलान्दत्तु विण्णाळि
पोदालयत्तुप् पुलन् करणम् पुन्दि
सादारणम् केडलाम् समागमि । मंत्र-संख्या, 1492

पथ बड़ा सुंदर है सहमार्ग
पार करता है साधक षट्चक्र
विशुद्ध हो जाती हैं नाड़ियां,
प्रकट होती हैं मेधादि षोडश कलाएं
कलान्त में मिलती है झांकी,
सुन्नमंडल में ज्ञानज्योति की
खोती हैं निज साधारण स्थिति
करण, बुद्धि और इंद्रियां
सबका विलय होता है परज्ञान में
परमज्योति में । 1492

408. பூசித்தல் வாசித்தல் போற்றல் செபித்திடல்
ஆசற்ற நற்றவம் வாய்மை அழுக்கின்மை
நேசித்திட் டன்னமும் நீசுத்தி செய்தன்மர்
றாசற்ற சற்புத் திரமார்க்க மாகுமே. 1496

पूशित्तल् वासित्तल् पोट्रल जपित्तिडल्
आशट्र नट्रवम् वाय्मै अऴुक्किन्मै
नेशित्तिट्टन्नमुम् नीशुत्ति चेय्दन्मट्-
राशट्र सतुपुत्र तिरमार्ग मागुमे । मंत्र-संख्या, 1496

साधना के नाना मार्गों में
अन्यतम है सत्पुत्र मार्ग

प्रभु यहाँ तात साधक सत्पुत्र
करता है निशिदिन प्रभु का पूजन
जप-तप के साथ गुण-संकीर्तन
ईर्ष्या तजकर सत्य का आचरण
स्वयं-पाक करके प्रभु को स्नेह-समर्पण
वांछारहित सत्पुत्र मार्ग यही है । 1496

409. அறுகாற் பறவை அலர்ந்தேர்ந் துழலும்
மறுகா நரையன்னநந் தாமரை நீலங்
குறுகா நறுமலர் கொய்வன கண்டுஞ்
சிறுகால் அறநெறி சேரகி லாரே. 1497

अदुकाऱ् पऱवै अलर् तेर्न्दुऴ़लुम्
मरुगा नरैयन्नम् तामरै नीलम्
कुरुगा नरुमलर् कोय्वन कण्डुम्
चिरुकाल् अऱमेरि चेरकिलारे । मंत्र-संख्या, 1497

भटकता है षट्पद सरोवर में
केवल कमल का मधु ढूंढ़ता,
थकता नहीं चारु हंस भी
नील-कमल की तलाश से,
अनुकरणीय ही इनकी वांछा
प्राप्त करने की सर्वोत्कृष्ट को
देखकर भी सीखते नहीं कुछ लोग
चित्त लय करना ईश-चरण में । 1497

410. எளியனல் தீப மிடல்மலர் கொய்தல்
அளிதின் மெழுக லதுதூர்த்தல் வாழ்த்தல்
பளிமணி பற்றல் பன்மஞ் சனமாதி
தளிதொழில் செய்வது தான்தாச மார்க்கமே. 1502

ऍळियनल् दीपमिडल् मलर् कॉय्दल्
अळितिन् मॆऴुगलदूर्त्तल् वाऴ्त्तल्
पळिमणि पट्रल् पन्मंजनमादि
तळितॉऴिल् चॆय्वदुतान् दास मार्गमि । मंत्र-संख्या, 1502

दासमार्ग में निरत भक्त
दीप जलाता, तोड़ लाता फूल पूजा के लिए
स्वच्छ करता आलय परिसर
यत्नपूर्वक झाडू-बुहारी से;
स्तुति-गान करता, घंटा-नाद करता
पूजा की हर घड़ी में,
लाता शुद्ध जल ईश के अभिषेक के हित
यों समर्पित भाव से
लगा रहता सेवा में मंदिर की । 1502

411. *அந்திப்பன் திங்க ளதன்பின்பு ஞாயிறு*
சிந்திப்பன் என்றும் ஒருவன் செறிகழல்
வந்திப்ப வானவர் தேவனை நாடோறும்
வந்திப்ப தெல்லாம் வகையின் முடிந்ததே. 1504

अन्दिप्पन् तिङ्गळदन् पिन्बु
चिन्दिप्पन् ऍन्रुम् ऑरुवन् चॆरिकऴल्
वन्दिप्प वानवर् देवनै नाडॉरुम्
वन्दिप्पदॆल्लाम् वगैयिन् मुडिन्ददे । मंत्र-संख्या, 1504

साधना करते हुए दबाता मैं
चंद्रनाड़ी को और फिर सूर्य को
चलता रहेगा यों बारी-बारी से प्राण का आयाम;
लगाऊंगा ध्यान ईश-चरण में
करूंगा वंदना भक्ति-भाव से
देवाधिदेव की नित्य ही
इस चर्या से बढूंगा साधना-मार्ग में । 1504

412. அண்ணலை வானவர் ஆயிரம் பேர்சொல்லி
உன்னுவர் உள்மகிழ்ந் துண்ணின் றடிதொழக்
கண்ணவ னென்று கருது மவர்கட்குப்
பண்ணவன் பேரன்பு பற்றிநின் றானே. 1505

अण्णलै वानवर् आयिरम् पेर् चॊल्लि
उन्नुवर् उळ्मगिऴ्न्दु उण्णिन्रडि तॊऴक्
कण्णवनॆन्रु करुदुमवर्गट्कुप्
पण्णवन् पेरन्बु पट्रि निन्ऱाने । मंत्र-संख्या, 1505

स्तुतिरत हैं देवगण भी
लेकर प्रभु का सहस्रनाम
किन्तु प्रभु-प्रीति उन पर विशेष है
जिनका चित्त लय हुआ प्रभु चरण पर,
पूजनरत हैं नतशिर हैं मन ही मन
मान कर प्रभु को नयनों का तारा,
प्रकट होता है शिव प्रेमपूरित हृदय में
आनन्दकन्द बन कर । 1505

413. வாசித்தும் பூசித்தும்மாமலர் கொய்திட்டும்
பாசிக் குளத்தில்வீழ் கல்லா மனம்பார்க்கின்
மாசற்ற சோதி மணிமிடற் றண்ணலை
நேசத் திருந்த நினைவறி யாரே. 1506

वासित्तुम् पूशित्तुम् मामलर् कॊय्दिट्टुम्
पाशिक्कुळत्तिल् वीऴ् कल्लामनम् पार्क्किन्
माशट्र जोति मणिमिडट्रण्णलै
नेशत् तिरुन्द निनैवरियारे । मंत्र-संख्या, 1506

वेदागम के पठन-पाठन में
शास्त्रचर्चा में मति है;
पुष्प चयन कर विधिपूर्वक
पूजन-अर्चन में गति है ।

इनसे कुछ नहीं होने का
पामर मन डूबा है अज्ञान में
काई से आवृत तालाब में
डूबी है कोई शिला ज्यों
सूझता नहीं है मन को
अंतर में विराजे ज्योतिरूप
श्रीनीलकंठ का करें स्मरण । 1506

414. சாலோக மாதி சரியாதி யிற்பெறுஞ்
சாலோகஞ் சாமீபந் தங்குஞ் சரியையால்
மாலோகஞ் சேரில் வழியாகுஞ் சாரூபம்
பாலோகம் இல்லாப் பரனுரு வாமே. 1507

सालोकमादि· चरियादियिऱ् पॆऱुम्
सालोकम् सामीपम् तङ्गुम् चरियैयाल्
मालोकम् चेरिल् वऴियाकुम् सारूपम्
पालोकमिल्लाप् परनुरुवामे । मंत्र-संख्या, 1507

प्राप्त होते हैं चर्यादि प्रक्रिया से
सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य और सायुज्य
चर्या से मिलता है सालोक्य,
सालोक्य से प्राप्त होता है सामीप्य,
जहां सतत मिलता है दिव्यदर्शन
सामीप्य सिद्ध होता है सारूप्य,
जिसकी परिणति होती है
अखंड ब्रह्मानंद सायुज्य में । 1507

415. பாசம் பகவான தாகும்இச் சாலோகம்
பாச மருளான தாகும்இச் சாமீபம்
பாசஞ் சிரமான தாகும்இச் சாரூபம்
பாசங் கரைபதி சாயுச் சியமே. 1509

पाशम् पशुवानदागुम् इच्चालोकम्
पाशम् अरुळानदागुम् इच्चामीपम्
पाशम् चिरमानदागुम् इच्चारूपम्
पाशम् करैपति सायुज्यमे । *मंत्र-संख्या, 1509*

सालोक्य में पशुज्ञान
पाशज्ञान में परिणत होता है,
संसार-ज्ञान बन जाता है अध्यात्म-ज्ञान
सामीप्य में पशुज्ञान
अनुग्रह-ज्ञान में परिणत होता है
सारूप्य में पशुज्ञान
पति-ज्ञान में परिणत होता है
सायुज्य में पशुज्ञान
घुलमिल जाता है शिवानन्द में
वहाँ जीव नहीं रहता, शिव ही रहता है । *1509*

416. சைவஞ் சிவனுடன் சம்பந்த மாகுதல்
சைவந் தனையறிந் தேசிவஞ் சாருதல்
சைவஞ் சிவந்தன்னைச் சாராமல் நீங்குதல்
சைவஞ் சிவானந்தஞ் சாயுச் சியமே. 1512

शैवम् शिवनुडन् संबंदमागुदल्
शैवम् तनै यरिन्दे शिवम् चारुदल्
शैवम् शिवम् तन्नै चारामल् नीङ्गुदल्
शैवम् शिवानन्दम् सायुज्यमे । *मंत्र-संख्या, 1512*

जोड़ लेता है जीव पहले
निज संबंध शिव के साथ,
पाकर फिर आत्म-अनुभव
पहुंचता है शिव के समीप
सामीप्य में बढ़ती है सघनता

एकाकार होता है सारूप्य में,
साधना की पूर्णता में
सिद्ध होता है सायुज्य
अखंड अजस्र शिवानन्द । 1512

417. சாயுச் சியஞ்சாக் கிராதீதஞ் சாருதல்
சாயுச் சியமுப சாந்தத்துத் தங்குதற்
சாயிச் சியஞ்சிவ மாதல் முடிவிலாச்
சாயுச் சியமனத் தானந்த சத்தியே. 1513

सायुज्यम् चाक्करातीतम् चारुदल्
सायुज्यम् उपशान्तत्तुत् तंगुदल्
सायुज्यम् शिवमादल् मुडिविला
सायुज्य मनत्तानन्द सत्तिये । मंत्र-संख्या, 1513

ज्ञान और चेतना से परे
जाग्रतातीत स्थिति है सायुज्य,
उपशांति के इस लोक में
अनासक्ति का साम्राज्य है
ज्ञान या चेतना का कोई काम नहीं;
शिव हो जाना सायुज्य है
शिवमय बनकर मग्न रहना
आंतरिक शांति में
अखंड शिवानंद में सर्वदा । 1513

418. இருட்டறை மூலை யிருந்த கிழவி
குருட்டுக் கிழவனைக் கூடல் குறித்துக்
குருட்டினை நீக்கிக் குணம்பல காட்டி
மருட்டி யவனை மணம்புரிந் தாளே. 1514

इरुट्टरै मूलै यिरुन्द किऴवि
कुरुट्टुक् किऴवनैक् कूडल् कुऱित्तुक्

कुरुट्टिनै नीक्किक् कुणम् पल काट्टि
मरुट्टि यवनै मणम् पुरिन्दाळे । मंत्र-संख्या, 1514

कोने में बैठी थी चिर-कुमारी कृपा
अंधकार पूर्ण कक्ष में,
मन हुआ उसका ब्याह करले
इस कक्ष के अंधे निवासी वृद्ध आत्मा से
हटाया पर्दा अंधकार का
मुग्ध किया फिर शिवगुणों से
चित्त-शुद्धि लाकर
ले गई उसे विवाह-मंडप में । 1514

419. தீம்புல னான திசையது சிந்திக்கில்
ஆம்புல னாயறி வார்க்கமு தாய்நிற்குந்
தேம்புல னான தெளிவறி வார்கட்குக்
கோம்புல னாடிய கொல்லையு மாமே. 1515

तीम्पुलनान तिसैयदु चिन्तिक्किल्
आम्पुलनाय् अऱिवार्क्कमुदाय् निर्कुम्
तेम्पुलनान तॆळिवऱिवार्गट्कु
कोम्पुलनाडिय कॊल्लैयुमामे । मंत्र-संख्या, 1515

विभ्रम से पीड़ित होने पर
ध्यान करें आदि पराशक्ति का
बन जाएगी बिगड़ी बात
सुधी जनों के लिए
साकार होती है वह अमृत बन कर
चित्त शुद्ध हो जाता है और
मनोलय होता है शिवस्नेह में
शक्ति की असीम कृपा से । 1515

420. இருள்நீக்கி எண்ணில் பிறவி கடத்தி
அருநீங்கா வண்ணமே யாதி யருளும்
மருள்நீங்கா வானவர் கோனொடுங் கூடிப்
பொருள்நீங்கா இன்பம் புலம்பயல் தானே. 1516

इरुळ् नीक्कि ऍण्णिल् पिऱवि कडत्ति
अरुळ् नींगा वण्णमे आदियरुळुम्
मरुळ् नींगा वानवर् कोनॊडुम् कूडिप्
पॊरुळ् नींगा इन्बम् पुलम्पयल् ताने । मंत्र-संख्या, 1516

अनुग्रह पराशक्ति है, आदिशक्ति है
दूर करती है जीव का अज्ञान-मल
ले आती है अमित दया से
जन्म जन्मांतरों के चक्र से
ध्यान रखती है कि जीव के मन में
अक्षुण्ण रहे शिवानुराग
संयोग करा देती है देवों के देव से
आश्चर्य है देव स्वयं माया में हैं
जीव पर इतनी दया है शक्ति की
प्रदान करती है शिवानंद
जीव में जब प्राण-इंद्रिय सब अक्षुण्ण हैं । 1516

421. இருள்சூ ழறையில் இருந்தது நாடிற்
பொருள்சூழ் விளக்கது புக்கெரிந் தாற்போன்
மருள்சூழ் மயக்கத்து மாமலர் நந்தி
அருள்சூழ் இறைவனும் அம்மையு மாமே. 1517

इरुळ् चूऴैयिल् इरुन्ददु नाडिल्
पॊरुळ् चूऴ् विळक्कदु पुक्कॆरिन्दार् पोन्
मरुळ् चूऴ् मयक्कत्तु मामलर् नन्दि
अरुळ् चूऴ् इऱैवनुम् अम्मैयु मामे । मंत्र-संख्या, 1517

भटकता है कोई जब तमस-आवृत कक्ष में
सहसा प्रकाशित दीप से भासित होती हैं
संपूर्ण कक्ष की वस्तुएं और प्रशस्त होता है मार्ग,
इसी भांति जब संत्रस्त रहता है
अज्ञान-तम से आवृत मानस
प्रकट होता है अनुग्रह नंदी
पराशक्ति के संग,
बरसाता है असीम अनुग्रह
नन्दी वही जो वन्दित होता है हृदय-कमल पर । 1517

422. செய்யன் கரியன் வெளியன்நற் பச்சையன்
எய்த வுணர்ந்தவர் எய்வர் இறைவனை
மைவென் றகன்ற பகடுரி போர்த்தவெங்
கைய னிவனென்று காதல்செய் வீரே. 1520

चॅय्यन् करियन् वॆळियन् नर्पच्चैयन्
ऍय्द उणर्न्दवर् ऍय्वर् इऱैवनै
मैवॆन्ऱगन्ऱ पगडुरि पोर्त्तवॆङ्
कैयन् इवनॆन्ऱु कादल् चॆय्वीरे । मंत्र-संख्या, 1520

वही साधक उसे खोज पाता है
जो जानता है इस मर्म को
सृजन में वह अरुणिम है
पालन में श्यामल वर्ण
संहार में गौर, हरित है तिरोधान में
वर्ण अलग, कर्म अलग, मूल में वही एक
देखो, तमस से भी काले अहं के हाथी को
चीर डाला है प्रभु ने
और पहन लिया परिधान बना कर,
हाथ में शोभित है अग्नि-ज्वाला
इसी का करो पूजन, आराधन । 1520

423. அண்ணிக்கும் பெண்பிள்ளை அப்பனார் தோட்டத்தில்
எண்ணிக்கும் ஏழேழ் பிறவி யுணர்விக்கும்
உண்ணிற்ப தெல்லாம் ஒழிய முதல்வனைக்
கண்ணுற்று நின்ற கனியது வாகுமே. 1523

अण्णिक्कुम् पॆण्पिळ्ळै अप्पनार् तोट्टत्तिल्
ऍण्णिक्कुम् एऴेऴ् पिरवि उणर्विक्कुम्
उण्णिर्पदॆल्लाम् ऒऴिय मुदल्वनै
कण्णुट्रु निन्र कनियदु वागुमे । मंत्र-संख्या, 1523

परमपिता का सुरम्य उद्यान है
यह जीव-शरीर
इस उपवन में निवसित है
करुणामयी शक्तिरूपिणी माँ
साक्षात्कार होने पर वह
खोल देती है साधक के लिए
अगणित जनन-मरण का मर्म
माँ की कृपा से
नष्ट होता है कर्म-कारण बीज
तब दृश्य होता है
शिव रूपी फल स्वतः ही । 1523

424. இரவும் பகலும் இலாத இடத்தே
குரவஞ் செய்கின்ற குழலியை உன்னி
அரவஞ் செய்யாமல் அவளுடன் சேரப்
பரிவொன்றி லாளும் பராபரை தானே. 1528

इरवुम् पगलुम् इलाद इडत्ते
कुरवम् चॆय्किन्र कुऴलियै उन्नि
अरवम् चॆय्यामल् अवळुडन् चेरप्
परिवॊन्रिलाळुम् परापरै ताने । मंत्र-संख्या, 1528

गहन मंडल में नृत्यरत है माँ
जहाँ निशि-दिन का नहीं बोध
उस नीलवेणी महामाया का
करो ध्यान शांतिमय मौन में
नीरव निःशब्दता सहित पा लो उसे
फिर साध लेती है वह सुत के समान
पूर्ण करती है सकल मनोरथ
हाँ, वही पराशक्ति है कृपामयी । 1528

425. மாலை விளக்கும் மதியமும் ஞாயிறுஞ்
சாலை விளக்குந் தனிச்சுடர் அண்ணலுள்
ஞானம் விளக்கிய நாதன்என் உள்புகுந்(து)
ஊனை விளக்கி யுடனிருந் தானே. 1529

माले विळक्कुम् मदियमुम् ञायिरुम्
चाले विळक्कुम् तनिच्चुडर् अण्णलुळ्
ञानम् विळक्किय नादन् ऍन् उळ्पुगुन्दु
ऊनै विळक्कि उडनिरुन्दाने । मंत्र-संख्या, 1529

वही भानु है वही चंद्रमा
भासित होता है जिससे लोक
सांध्य-दीप वह, पंथ-दीप वह
अपने ढंग का अद्वितीय दीप,
मेरा प्रभु स्वयं ज्योतिदीप
नाथ वह प्रवेश कर गया अंतर में
ज्योतित किया सकल शरीर,
कराया तत्व-दर्शन
धन्य हूं बस गया वह मेरे संग । 1529

426. ஆன சமயம் அதுஇது நன்றெனும்
மாய மனிதர் மயக்க மதுவொழி

கானங் கடந்த கடவுளை நாடுமின்
ஊனங் கடந்த வுருவது வாமே. *1545*

आन समयम् अदुइदु नन्ऩुम्
माय मनिदर् मयक्क मदु मांऴि
कानम् कडन्द कडवुलै नाडुमिन्
ऊनम् कडन्द उरु अदुवामे । मंत्र-संख्या, 1545

धर्म, सम्प्रदाय और पंथ को लेकर
दावे प्रस्तुत किये जाते है
यह धर्म उत्कृष्ट है और
वही पंथ सही है, अनुकरणीय है
छल-प्रवंचना के मोहक वचन हैं
इनमें कोई सार नहीं है,
शरण में चलें परमेश्वर की
जो तत्वातीत हैं, संशय से परे हैं,
दोषरहित हैं, आनन्दस्वरूप हैं, वही हैं । 1545

427. உறுமா றறிவதும் உள்நின்ற சோதி
பெறுமா றறியிற் பிணக்கொன்றும் இல்லை
அறுமா றதுவான வங்கியு ளாங்கே
இருமா றறிகிலர் ஏழைகள் தாமே. *1547*

उरुमाऱरिवदुम् उळ्निन्ऱ् जोति
पॅरुमाऱरियिऱ् पिणक्कॉन्ऱुमिल्लै
अरुमाऱदुवान वङ्गियुळाङ्गे
इरुमाऱअरिगिलर् एऴैगळ् तामे । मंत्र-संख्या, 1547

अंतर में भासित ज्योति
दर्शाएगी तुम्हें लक्ष्य तक पहुँचने का सही मार्ग
यदि पहचान लोगे
प्राप्ति के साधन को, मार्ग को

नहीं शेष कोई उलझन
लीन होना है
अग्नीश्वर महादेव में
जो तुम्हारे भीतर है
जन्म-मरण का बंधन काटने को,
निश्चय ही वे लोग दरिद्र हैं, अभागे हैं
जो नहीं जानते विलीन होना । 1547

428. அறிவுடன் கூடி அழைத்ததோர் தோணி
பறிவுடன் பாரம் பழம்பதி சிந்துங்
குறியது கண்டுங் கொடுவினை யாளர்
செறிய நினைக்கிலர் சேவடி தானே. 1554

अऱिवुडन् कूडि अऴैत्तदोर् तोणि
पऱिवुडन् पारम् पऴम्पति चिन्तुम्
कुऱियदु कण्डुम् कॊडुविनैयाळर्
चॆऱिय निनैक्किलर् चेवडि ताने । मंत्र-संख्या, 1554

जीवन की नौका
मार्गदर्शन पाकर दिव्यज्ञान का,
पहुँचती है
अपनी गंतव्य प्राचीन नगरी
जहाँ कर्म-भार से मिलती है मुक्ति
सकल-मल और अहंकार होते हैं नष्ट
साधक का शरीर स्वर्णसम कमनीय बनता है
इन सब बातों को प्रत्यक्ष देखकर भी
दुर्भाग्य के मारे दुराचारी जन
नहीं चाहते प्रभुचरणों में नत होना । 1554

429. இமையவர் தம்மையும் எம்மையும் முன்னம்
அமைய வகுத்தவன் ஆதி புராணன்

சமையங்க ளாறுந்தன் றாளினை நாட
அமையங் குழல்கின்ற ஆதிப் பிரானே. 1557

इमैयवर् तम्मैयुम् ऍम्मैयुम् मुन्नम्
अमैय वगुत्तवन् आदि पुराणन्
समैयङ्गळारुम् तन् ताळिनै नाड
अमैयङ् कुऴल्गिन्ऱ आदिप् पिराने । मंत्र-संख्या, 1557

आदिदेव ने
सृष्ट किया स्वर्ग और मर्त्यलोक
सृष्ट किये देव और मनुष्यगण
बनाए छह आंतरिक मार्ग
अपनी नगरी में पहुँचने के हित
जो लोग मार्ग में ही भ्रमित रहते हैं
ऊपर देख नहीं पाते
मार्ग को सत्य मान कर
उलझे रहते हैं मार्ग में ही । 1557

430. ஒன்றது பேரூர் வழியா றதற்கு
என்றது போல இருமுச் சமயமும்
நன்றிது தீதிது என்றுரை யாளர்கள்
குன்று குரைத்தெழு நாயையொத் தார்களே. 1558

ऑन्ऱदु पेरूर् वऴियाऱदर्कु
ऍन्ऱदु पोल इरुमुच्चमयमुम्
नन्ऱिदु तीदिदु ऍन्ऱु उरैयाळर्गळ्
कुन्ऱु कुरैत्तॆऴु नायै ऑत्तार्गळे । मंत्र-संख्या, 1558

एक महानगरी –
जहाँ पहुँचने के लिए बने हैं छह मार्ग
यही उपमा है
ईश्वर तक पहुँचने के लिए

बने षण्मत की
किन्तु विभिन्न धर्ममार्गी
वितंडा में उलझे हैं,
मेरा मार्ग सही और तुम्हारा भ्रमित
मतवाद पर संघर्ष करनेवाले
उस श्वान समान हैं
जो पहाड़ी के निकट
सुनकर अपने ही स्वर की प्रतिध्वनि
व्यर्थ भूंकता है । 1558

431. சிவனவன் வைத்ததோர் தெய்வ நெறியிற்
பவனவன் வைத்த பழவழி நாடி
இவனவன் என்ப தறியவல் லார்கட்
கவனவ னங்குள தாங்கட னாமே. 1560

शिवनवन् वैत्तदोर् दॅय्व नॅऱियिऱ्
पवनवन् वैत्त पऴवऴि नाडि
इवनवन् ऍन्ब दरिय वल्लार्कट्
कवनवनङ्गुल ताम् कडनामे । मंत्र-संख्या, 1560

प्रभु शिव ने एक सत्यमार्ग बनाया
सनातन सन्मार्ग
महादेव भव के बनाए
प्राचीन मार्ग पर चलकर
जो उसे पहचान सकते हैं
उन पर बरसाता है अनुग्रह;
अन्य मार्गों पर चलनेवाले भी
उसी के दर्शन करते हैं
अपने विश्वास के अनुरूप । 1560

432. தேர்ந்த அரனை அடைந்த சிவநெறி
பேர்ந்தவர் உன்னிப் பெயர்ந்த பெருவழி
ஆர்ந்தவர் அண்டத்துப் புக்க அருள்நெறி
போந்து புனைந்து புணர்நெறி யாமே. 1563

तेर्न्द अरनै अडैन्द शिवनॆऱि
पेर्न्दवर् उन्निप् पॆयर्न्द पॆरुवऴि
आर्न्दवर् अण्डत्तुप् पुक्क अरुळ्नॆऱि
पोन्दु पुनैन्दु पुणर् नॆऱियामे । मंत्र-संख्या, 1563

शिवमार्ग ही उत्कृष्ट राजमार्ग है
जो शिव तक पहुँचा देता है
इस आदिमार्ग को छोड़
अन्य मार्ग पर चलने वाले
अपनी अपनी भूमि में
फलों का भोग कर
अंत में मुक्तिफल की इच्छा से
अवलम्बन करते हैं
इसी पुण्य मार्ग का । 1563

433. சைவ சமயத் தனிநா யகன்நந்தி
உய்ய வகுத்த குருநெறி ஒண்றுண்டு
தெய்வச் சிவநெறி சன்மார்க்கஞ் சேர்ந்துய்ய
வையத்து ளார்க்கு வகுத்துவைத் தானே. 1567

शैव समयत् तनिनायकन् नन्दि
उय्य वगुत्त गुरुनॆऱि ऑन्ऱुण्डु
दॆय्वच् चिवनॆरि सन्मार्गम् चेर्न्दुय्य
वैयत्तु ळार्क्कु वगुत्तु वैत्ताने । मंत्र-संख्या, 1567

शैवधर्म के उत्कृष्ट नायक
नन्दिदेव ने

बनाया एक अनुपम मार्ग
उद्धार का अमोघ मार्ग
उस का नाम है शैवसन्मार्ग
स्थापित किया है
जगत् के निवासियों के लिए
उनके उद्धार के हित । 1567

434. ஆதிப் பிரானுல கேழும் அளந்தவன்
ஓதக் கடலும் உயிர்களு மாய்நிற்கும்
பேதிப் பிலாமையின் நின்ற பராசத்தி
ஆதிக்கட் டெய்வமும் அந்தமு மாமே. 1570

आदिप्पिरानुलगेऴ्ुम् अऴन्दवन्
ओदक्कडलुम् उयिर्गऴुमाय् निऱ्कुम्
पेदिप्पिलामैयिन् निन्ऱ पराशक्ति
आदिक्कट् दॆउय्वमुम् अन्तमुमामे । मंत्र-संख्या, 1570

आदि ब्रह्म परमेश्वर है
नापकर सातों लोक
सागर-सा शोभायमान
व्याप्त है अगणित जीवराशि में
यह सब माँ पराशक्ति के
अद्भुत संयोग का परिणाम है
शक्ति से अभिन्न शिव
सब का आदि है, सबका अंत है । 1570

ॐ ௐ ॐ

तिरुमंतिरम् திருமந்திரம்

6

ஆறாம் தந்திரம்
आऱाम् तन्तिरम्
षष्ठ तंत्र

சிவகுரு தரிசனம் — शिवगुरु दरिशनम् - शिवगुरु का दर्शन;
திருவடிப்பேறு — तिरुवडिप् पेरु - गुरु चरण कृपा;
ஞாதுரு ஞான ஞேயம் — ज्ञातुरु ज्ञान ज्ञेयम् - ज्ञातृ-ज्ञान-ज्ञेय;
துறவு — तुऱवु -- निर्वाण;
தவம் — तवम् - तपस्या;
தவ நிந்தை — तव निन्दै - तप की निन्दा;
அருளுடைமையின் ஞானம் வருதல் —
अरुळुडैमैयिन् ज्ञानम् वरुदल् - ईश अनुग्रह से ज्ञान प्रवाह;
அவவேதம் — अव वेडम् - मिथ्या वेष / मिथ्या वेश-धारण;
தவ வேடம் — तव वेडम् - तपस्या वेष;
திருநீறு — तिरुनीऱु - विभूति / भस्म;
ஞான வேடம் — ज्ञान वेडम् - ज्ञान वेष;
சிவ வேடம் — शिव वेडम् - शिव वेष;
அபக்குவன் — अपक्कुवन् - अपक्व शिष्य;
பக்குவன் — पक्कुवन् - पक्व शिष्य ।

* * *

435. எல்லா உலகிற்கும் அப்பாலோன் இப்பாலாய்
நல்லார் உள்ளத்து மிக்கருள் நல்கலால்
எல்லாரும் உய்யக்கொண் டிங்கே அளித்தலாற்
சொல்லார்ந்த நற்குருச் சுத்த சிவமே. 1576

ऍल्ला उलगिर्कुम् अप्पालोन् इप्पालाय्
नल्लार् उळ्ळत्तु मिक्करुळ् नल्कलाल्
ऍल्लारुम् उय्यक्कॉण्डिङ्गे अळित्तलार्
चॉल्लार्न्द नऱ्गुरु शुत्त शिव में । मंत्र-संख्या, 1576

समस्त भुवन और ब्रह्मांड से परे है
फिर भी यहाँ इस लोक में
सज्जनों, साधुओं के हृदय में रमता है
अनुग्रह बरसाता हुआ
प्रभु परमेश्वर का वात्सल्य सब पर है
सबको सन्मार्ग पर लाने के लिए
सबके उद्धार के हित
स्वयं सद्गुरु बनकर आता है
शिव की महिमा वर्णनातीत है । 1576

436. சிவனே சிவஞானி யாதலாற் சுத்த
சிவனே யெனஅடி சேரவல் லார்க்கு
நவமான தத்துவ நன்முத்தி நண்ணும்
பவமான தின்றிப் பரலோக மாமே. 1580

शिवने शिवज्ञानि यादलार् सुत्त
शिवने ऍन अडि चेरवल्लार्क्कु
नवमान तत्तुव नन्मुत्ति नण्णुम्
पवमानतिन्ऱिप् परलोकमामे । मंत्र-संख्या, 1580

शिवज्ञानी स्वयं शिव हैं
जो शिवगुरु को

स्वयं शिव मानकर
चरणों में नत हो जाएँ
गुरुकृपा से
उनका कायाकल्प हो जाता है
जीव तत्वों के स्थान पर नव्य शिवतत्व सिद्ध होता
भव बंधन कटता है, मिलती है मुक्ति । 1580

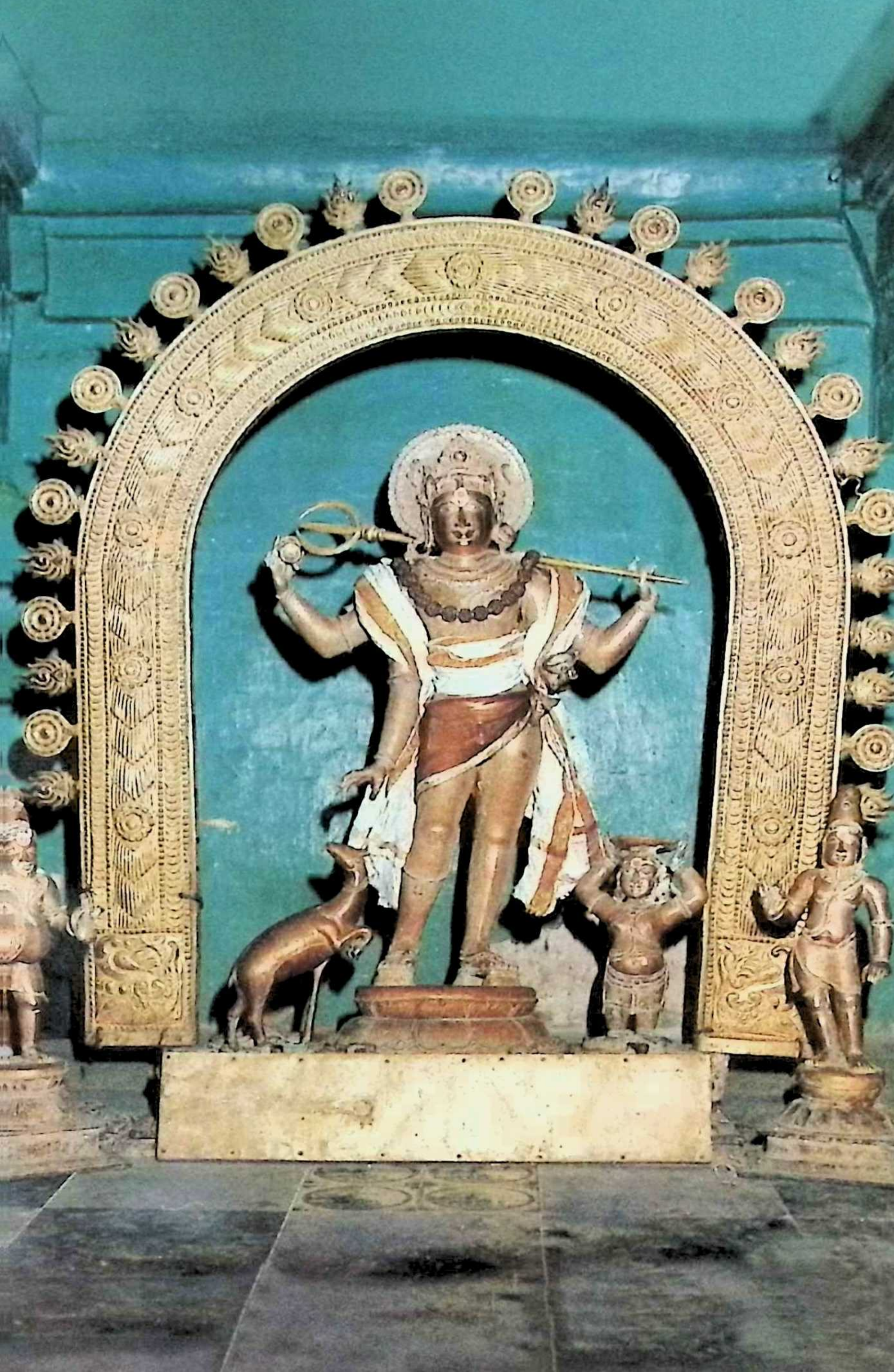
437. குருவே சிவமெனக் கூறினன் நந்தி
குருவே சிவமென் பதுகுறித் தோரார்
குருவே சிவனுமாய்க் கோனுமாய் நிற்கும்
குருவே யுரையுணர் வற்றதோர் கோவே. 1581

गुरुवे शिवमॅनक् कूऱिनऩ् नन्दि
गुरुवे शिवमॅन्बदु कुऱित्तोरार्
गुरुवे शिवनुमाय् कोनुमाय् निर्कुम्
गुरुवे युरैयुणर्वट्रदोर् कोवे । मंत्र-संख्या, 1581

नन्दी ने कहा – गुरु शिव से अभिन्न है
जो लोग नहीं जानते
गुरु ही शिव है
वे अज्ञानी हैं;
गुरु स्वयं शिव है, हमारा मार्गदर्शक है
गुरु हमारा स्वामी भी है
गुरुमहिमा वाणी द्वारा अवर्णनीय है । 1581

438. சிவமான ஞானந் தெளியவொண் சித்தி
சிவமான ஞானந் தெளியவொண் முத்தி
சிவமான ஞானஞ் சிவபரத்தே யேகச்
சிவமான ஞானஞ் சிவானந்த நல்குமே. 1587

शिवमान ञानम् तॅळियवॉण् सित्ति
शिवमान ञानम् तॅळियवॉण् मुत्ति



பிக்ஷாடன மூர்த்தி

भिक्षाटनर, शिवजी की भिक्षाटन मुद्रा

Bhikshandanar

शिवमान ञानम् शिवपरत्ते येक
शिवमान ञानम् शिवानन्दम् नल्कुमे । मंत्र-संख्या, 1587

शिवज्ञान से सुलझती है प्रज्ञा
हस्तगत होती हैं अपूर्व सिद्धियाँ
शिवज्ञान से खुलता है मुक्तिमार्ग
शिवज्ञान प्रदान करता है शिव का सामीप्य
शिवज्ञान से मिलता है
अवर्णनीय शिवानन्द । 1587

439. பேச்சற்ற இன்பத்துப் பேரானந் தத்திலே
மாச்சற்ற என்னைச் சிவமாக்கி மாள்வித்துக்
காச்சற்ற சோதி கடன்மூன்றுங் கைக்கொண்டு
வாச்ச புகழ்மாளத் தாள்தந்து மன்னுமே. 1595

पेच्चट्र इन्दत्तुप् पेरानन्दत्तिले
माच्चट्र ऍन्नैच् चिवमाक्कि माळ्वित्तु
काच्चट्र जोति कडन्मून्रुम् कैक्कॉण्डु
वाच्च पुगऴ् माळत् ताळ् तन्दु मन्नुमे । मंत्र-संख्या, 1595

परमदयालु प्रभु का
महान् अनुग्रह हुआ मुझ पर
प्रभु ने बना दिया मुझे
निर्मल, निष्पाप, निष्कलंक
स्वयं शिव बना दिया मुझे
और निमग्न कर दिया
शिवानन्द में शब्दातीत वर्णनातीत
शिवानन्द अनुभव में,
उस स्नेहिल ज्योति ने मुझे नियुक्त किया
मन-वाणी-काया से निज सेवा में

अहंता और आत्मश्लाघा के दोष से मुक्त करके
अपने चरणयुगल प्रदान किये । 1595

440. தானென் றவனென் றிரண்டாகுந் தத்துவந்
தானென றவனென் றிரண்டுந் தனிற்கண்டு
தானென்ற பூவை யவனடி சாத்தினால்
தானென் றவனென்கை நல்லதொன் றன்றே. 1607

तानॆन्ऱ् वनॆन्ऱिरण्डागुम् तत्तुवम्
तानॆन्ऱ् वनॆन्ऱिरण्डुम् तनिऱ् कण्डु
तानॆन्ऱ् पूवै अवनडि चात्तिनाल्
नानॆन्ऱवनॆन्कै नल्लतॊन्ऱन्ऱे । मंत्र-संख्या, 1607

अहं और तत् दो पृथक् तत्व थे
फिर अपने अंदर दोनों को देख लिया
'मैं' को और 'उस' को
फिर 'मैं' का 'अहं' का सुमन उठाकर
उसके चरणों में समर्पित किया
जीव ने स्वयं को समर्पित किया शिव को
तब 'मैं' और 'वह' नहीं रहे
जीव और शिव एक हुए । 1607

441. காணாத கண்ணுடன் கேளாத கேள்வியுங்
கோணாத போகமுங் கூடாத கூட்டமும்
நாணாத நாணமும் நாதாந்த போதமுங்
காணா யெனவந்து காட்டினன் நந்தியே. 1610

काणाद कण्णुडन् केळाद केळ्वियुम्
कोणाद बोगमुम् कूडाद कूट्टमुम्
नाणाद नाणमुम् नादान्त बोदमुम्
काणायॆन वन्दु काट्टिनन् नन्दिये । मंत्र-संख्या, 1610

बोले गुरुनाथ नन्दी असीम कृपा से
आओ तुम्हें दिखाऊँ ऐसा दृश्य

आँखों ने जिसे नहीं देखा
सुनाऊँ ऐसा संदेश कानों ने जिसे नहीं सुना
चखाऊँ ऐसा आनन्द जिससे कभी अघाये न मन
मिलाऊँ उस योग मे जो योग है नहीं
सुनाऊँ वह नाद जिसका अंत नहीं
दूँ वह बोध जो नादांत है आओ
देखो सुनो भोगो इन्हें सब तुम्हारे हित है
गुरुदेव नन्दी ने मुझे दिया सर्वस्व । 1610

442. மோனங்கை வந்தோர்க்கு முத்தியுங் கைகூடும்
மோனங்கை வந்தோர்க்குச் சித்தியும் முன்நிற்கும்
மோனங்கை வந்தூமை யாமொழி முற்றுங்காண்
மோனங்கை வந்தைங் கருமமும் முன்னுமே. 1611

मोनङ्कैवन्दोर्क्कु मुत्तियुम् कैकूडुम्
मोनङ्कैवन्दोर्क्कुच् चित्तियुम् मुन्निर्कुम्
मोनङ्कैवन्दूमै यामोऴि मुट्रुंकाण्
मोनङ्कैवन्दैङ् करुमयुम् मुन्नुमे । मंत्र-संख्या, 1611

वशीभूत कर लेते हैं जो मौन-साधन को
प्रशस्त होता है मुक्ति-मार्ग उनके समक्ष,
अधिकार पा लेते हैं जो मौन-साधना में
चेरी बन जाती हैं उनकी आठों सिद्धियां
सिद्ध हो जाता है जिन के लिए वरेण्य मौन
पूर्णता मिलती है उन्हें अजपा-जाप में
यों जिन के लिए सिद्ध हो जाता है मौन
पाते हैं वे शक्तियां अमोघ
समर्थ होते हैं वे पंचकृत्य के निर्वाह में । 1611

443. முத்திரை மூன்றின் முடிந்தது மூன்றன்பால்
வைத்த கலைகால் நான்மடங் கான்மாற்றி

உய்த்தவத் தானந்தத் தொண்குரு பாதத்தே
பெத்த மறுத்தோர் பிறந்திற வாரே. 1612

मुत्तिरै मून्रुम् मुडिन्ददु मून्रन्पाल्
वैत्त कलै काल् नान्मडंगान् माद्रि
उय्त्तवत्तानन्दत् तॉण्गुरु पादत्ते
पॅत्त मरुत्तोर् पिरन्दिर् वारे । मंत्र-संख्या, 1612

शांभवी, भैरवी, खेचरी
तीनों मुद्राओं में सुदक्ष योगी
सूर्य-चन्द्र-अग्नि नाड़ियों में
नियंत्रित कर श्वास को
प्राणायाम से,
संवर्धन करते हैं चौगुना प्राण का
आसन लगाये, ध्यान-मग्न योगी
चित्त लगा है पावन गुरुचरण पर
हृदय देश में,
फूट रहा आनन्द का उत्स
मुक्त हैं ऐसे योगी
नाते-रिश्ते और सकल बंधन से
आवागमन के चक्र से । 1612

444. அறவன் பிறப்பிலி யாரும் இலாதான்
உறைவது காட்டகம் உண்பது பிச்சை
துறவனுங் கண்டீர் துறந்தவர் தம்மைப்
பிறவி யறுத்திடும் பித்தன்கண் டீரே. 1616

अऱवन् पिऱप्पिलि यारुम् इलादान्
उऱैवदु काट्टगम् उण्बदु पिच्चै
तुऱवनुम् कण्डीर् तुऱन्दवर् तम्मैप्
पिऱवि अरुत्तिडुम् पित्तन् कण्डीरे । मंत्र-संख्या, 1616

धर्म स्वरूप परमेश्वर अजन्मा है
एकाकी वह, उसका कोई नहीं है
निवास अरण्य में, अशन है भिक्षान्न
परिव्राजक वेश में है, शिक्षा देता है
सर्वसंग परित्यागी है
जो परिव्राजक बनते हैं
कर्मबंधन उनका काटता है
ऐसा पगला है हमारा प्रभु ! 1616

445. நாகமும் ஒன்று படம்ஐந்து நாலது
போகமுட் புற்றிற் பொருந்தி நிறைந்தது
ஆக மிரண்டும் படம்விரித் தாட்டொழிந்
தேகப் படஞ்செய் துடம்பிட மாமே. 1621

नागमुम् ओन्रु पडम् ऐन्दु नालदु
पोगमुट् पुट्रिर् पोरुन्दि निऱैन्ददु
आगमिरण्डुम् पडम् विरित्ताट्टॊऴिन्
तेगप् पडम् चेय् तुडम्बिडमामे । मंत्र-संख्या, 1621

जीव रूपी नागसर्प के थे पांच इंद्रिय-फण
अपने चारों अंतःकरण और इंद्रिय सहित
मग्न रहा वह अपने भोग रूपी कंटीले बिल में
कारण-सूक्ष्म दोनों शरीरों से फण उठा-उठा कर
नाचा वह जीव-सर्प भरपूर
अंत में बोध होने पर बंद किया यह नाच
फिर एक फण कुंडलिनी के साथ
वह समा गया अपने शरीर में
समाधि में लीन हुआ निश्चेष्ट । 1621

446. ஒடுங்கி நிலைபெற்ற வுத்தமர் உள்ளம்
நடுங்குவ தில்லை நமனுமங் கில்லை

இடும்பையும் இல்லை இராப்பகல் இல்லை
படும்பயன் இல்லை பற்றுவிட் டோர்க்கே. 1624

ओंडुङ्गि निलै पट्र उत्तमर् उळ्ळम्
नडुङ्गुवदिल्लै नमनुमङ्गिल्लै
इडुम्बैयुम् इल्लै इराप्पगल् इल्लै
पडुम् पयन् इल्लै पट्रु विट्टार्क्के । मंत्र-संख्या, 1624

नहीं कांपता न ही होता विचलित
संयमी तपोधनों का हृदय
यमभय का वहाँ नाम नहीं है
वे तो अनासक्त हैं कर्मबंधन से मुक्त हैं
उनके मार्ग में न विघ्न है न संकट
कोई कर्म नहीं, कर्म का फल भी नहीं
वे तो ऐसी अवस्था में हैं
जहाँ न दिन का बोध है न रात का । 1624

447. சாத்திரம் ஓதுஞ் சதுர்களை விட்டுநீர்
மாத்திரைப் போது மறித்துள்ளே நோக்குமின்
பார்த்தவப் பார்வை பசுமரத் தாணிபோல்
ஆர்த்த பிறவி அகலவிட் டோடுமே. 1631

चात्तिरम् ओदुम् चतुर्गळै विट्टु नीर्
मात्तिरैप् पोदु मरित्तुळ्ळे नोक्कुमिन्
पार्त्तवप् पार्वै पशुमरत्ताणि पोल्
आर्त्त पिरवि अगल विट्टोडुमे । मंत्र-संख्या, 1631

छोड़दो ये सारी शास्त्रचर्चाएँ
और चमत्कारपूर्ण तर्कवाद
निश्चित बैठो आसन में
क्षणभर के लिए झांको निज अंतर् में
अंतर्मुखी हो जाओ

इस अंतर्दृष्टि से होगा कायाकल्प तुम्हारा
युग युगों से बांधनेवाले
जन्म-मरण बंधन से
मिलेगी मुक्ति । 1631

448. தவம்வேண்டு ஞானந் தலைபட வேண்டில்
தவம்வேண்டா ஞான சமாதிகை கூடில்
தவம்வேண்டா மச்ச கசமார்க்கத் தோர்க்குத்
தவம்வேண்டா மாற்றந் தனையறி யாரே. 1632

तवम् वेण्डु ज्ञानम् तलैपड वेण्डिल्
तवम् वेण्डा ज्ञान समादि कैकूडिल्
तवम् वेण्डा मच्चकसमार्गत्तोर्क्कु
तवम् वेण्डा मात्रम् तनैयरियारे । मंत्र-संख्या, 1632

ज्ञानप्राप्ति के लिए करना होगा तप-अनुष्ठान
ज्ञानसमाधि लग जाए तप का नहीं कोई काम
सहमार्ग के पथिक बनें आवश्यक नहीं तपश्चरण
जिन्होंने जान लिया 'स्व' को
'स्व' को परम में रूपान्तर के लिए
नहीं आवश्यक तप-अनुष्ठान । 1632

449. கத்தவும் வேண்டாங் கருத்தறிந் தாறினாற்
சத்தமும் வேண்டாஞ் சமாதிகை கூடினாற்
சுத்தமும் வேண்டாந் துடக்கற்று நிற்றலாற்
சித்தமும் வேண்டாஞ் செயலற் றிருக்கிலே. 1634

कत्तवुम् वेण्डाम् करुत्तरिन्दारिनाल्
चत्तमुम् वेण्डाम् समादि कैकूडिनाल्
चुत्तमुम् वेण्डाम् तुडक्कट्रु निट्रलाल्
चित्तमुम् वेण्डाम् चेयलट्रिरुक्किले । मंत्र-संख्या, 1634

चीखने की आवश्यकता नहीं
सारतत्व को ग्रहण करने पर,
बोलने की आवश्यकता नहीं
योगसमाधि लग जाने पर,
आचरण-अनुष्ठान से कोई काम नहीं
अनासक्त बन जाने पर,
ध्यान से कोई काम नहीं
कर्म-विहीन समाधि में जाने पर । 1634

450. இலைதொட்டுப் பூப்பறித் தெந்தைக்கென் றெண்ணி
மலர்தொட்டுக் கொண்டேன் வரும்புனல் காணேன்
தலைதொட்ட நூல்கண்டு தாழ்ந்ததென் உள்ளந்
தலைதொட்டுக் கண்டேன் தவங்கண்ட வாறே. 1640

इलै तॉट्टप् पूप्परि़त्तॅन्दैक्कॅन्रॅण्णि
मलर् तॉट्टुक् कॉण्डेन् वरुम् पुनल्काणेन्
तलै तॉट्ट नूल् कण्डु ताऴ्न्दर्दन् उळ्ळम्
तलै तॉट्टुक्कॉण्डेन् तवम् कण्डवा़रे । मंत्र-संख्या, 1640

संचित कर लिए पत्र और पुष्प
इष्टदेव की पूजा के हित
सुमनों की माला बनाई
पिता परमेश्वर के हित
पर यह क्या, नहीं पसीजा मेरा हृदय
दृग में न आए अश्रुकण;
शास्त्रों का धर्मग्रंथों का किया अध्ययन
फल नहीं हुआ, मन मेरा हुआ चकित,
मैं लग गया तब तपस्या में
साधना करके ज्योतिदर्शन किये सहस्रार में
पा लिया अपने प्रभु को, पिता को । 1640

451. பிரானருள் உண்டெனில் உண்டுநற் செல்வம்
பிரானருள் உண்டெனில் உண்டுநன் ஞானம்
பிரானரு ளிற்பெருந் தன்மையும் உண்டு
பிரானரு ளிற்பெருந் தெய்வமு மாமே. 1645

पिरानरुळ् उण्डॅनिल् उण्डु नऱ्चॅल्वम्
पिरानरुळ् उण्डॅनिल् उण्डु नन् ज्ञानम्
पिरानरुळिल् पॅरुन्तन्मैयुम् उण्डु
पिरानरुळिल् पॅरुन्दॅय्वमुमामे । मंत्र-संख्या, 1645

प्रभु का यदि अनुग्रह मिले
प्राप्त होगी सच्ची संपदा,
प्रभु का यदि अनुग्रह मिले
प्राप्त होगा सच्चा ज्ञान,
प्रभु का यदि अनुग्रह मिले
प्राप्त होगा उत्तम पद,
प्रभु का यदि अनुग्रह मिले
स्वयं बन जाएंगे देवता । 1645

452. புண்ணிய பாவம் இருண்டுள பூமியில்
நண்ணும் பொழுதறி வார்சில ஞானிகள்
எண்ணி இரண்டையும் வேரறுத் தப்புறத்
தண்ணல் இருப்பிடம் ஆய்ந்துகொள் வீரே. 1647

पुण्णिय पावम् इरण्डुळ पूमियिल्
नण्णुम् पॉऴुदरिवार् चिल ज्ञानिगळ्
ऍण्णि इरण्डैयुम् वेररुत्तप्पुरत्-
तण्णल् इरुप्पिडम् आय्न्दुकॉळ्वीरे । मंत्र-संख्या, 1647

पुण्य और पाप दोनों इस धरती पर हैं
शिव को खोजते ज्ञानियों में
कुछ इसे जानते हैं
उनका कहना है :

पुण्य और पाप दोनों को पहचान लो
फिर दोनों को ही समूल उखाड़ कर फेंक दो
तब पता चलेगा कि ईश्वर का स्थान
इन से परे है । 1647

453. சிவனரு ளாற்சிலர் தேவரு மாவர்
சிவனரு ளாற்சிலர் தெய்வத்தோ டொப்பர்
சிவனரு ளால்வினை சேரகி லாமை
சிவனருள் கூடின்அச் சிவலோக மாமே. 1649

शिवनरुळाल् चिलर् देवरुमावर्
शिवनरुळाल् चिलर् दॅय्वत्तोडॉप्पर्
शिवनरुळाल् विनै चेरकिलामै
शिवनरुळ् कूडिन् अच्चिवलोकमामे । मंत्र-संख्या, 1649

शिवानुग्रह से कुछ देव बनते हैं
शिवानुग्रह से कुछ देवतुल्य
शिवानुग्रह हो तो भागते हैं कर्म सारे
शिवानुग्रह हो मिलेगा शिवलोक का साम्राज्य । 1649

454. காயத்தே ரேறி மனப்பாகன் கைகூட்ட
மாயத்தே ரேறி மயங்கு மவையுணர்
நேயத்தே ரேறி நிமலன் அருள்பெற்றால்
ஆயத்தே ரேறி யவனிவ னாமே. 1651

कायत्तेरेऱि मनप्पागन् कैकूट्ट
मायत्तेरेऱि मयङ्गुमवै युणर्
नेयत्तेरेऱि निमलन् अरुळ् पॅट्राल्
आयत्तेरेऱि यवनिवनामे । मंत्र-संख्या, 1651

आरूढ हैं काया के रथ पर
वल्गा साधे है मन का सारथी
फल – मायामय लोक में संचार

भ्रमित होना मिथ्या जगत् में;
जब इसे समझते हैं देर हो जाती है ।
इसके विपरीत
हो जाएँ प्रेम-भक्ति के रथ पर आरूढ़
प्रभु की कृपा और अनुग्रह पाएँ
समाधियोग का रथ मिलेगा
स्वयं शिव बन जाएँगे । 1651

455. நாடும் உறவுங் கலந்தெங்கள் நந்தியைத்
தேடுவன் தேடிச் சிவபெரு மான்என்று
கூடுவன் கூடிக் குறைகழற் கேசெல்ல
வீடு மளவும் விடுகின் றிலேனே. 1654

नाडुम् उऱवुम् कलन्दॅङ्गळ् नन्दियै
तेडुवन् तेडिच् चिवपॅरुमान् ऍन्ऱु
कूडवन् कूडिक् कुऱैकऴऱ्के चॅल्ल
वीडुमळवुम् विडुकिन्ऱिलेने । मंत्र-संख्या, 1654

ध्यान, चिंतन, मनन से खोजूँगा
गुरुनाथ नन्दिदेव को
जब पाऊँगा उन्हें
गुरुनाथ को शिव मान कर
मिल जाऊँगा उनसे
ग्रहण कर लूँगा
गुंजायमान नूपुरवाले
उनके चरणयुगल
तब तक नहीं छोडूँगा
जब तक नहीं मिलेगा
मुक्ति का अभयदान । 1654

456. ஆடம் பரங்கொண் டடிசிலுண் பான்பயன்
வேடங்கள் கொண்டு வெருட்டிடும் பேதைகாள்

ஆடியும் பாடியும் அழுதும் அரற்றியுந்
தேடியுங் காணீர் சிவனவன் தாள்களே. 1655

आडम्बरम् कोण्डडिशिलुण्बान् पयन्
वेडङ्गळ् कोण्डु वेरुट्टिडुम् पेदैकाळ्
आडियुम् पाडियुम् अऴुदुम् अरट्रियुम्
तेडियुम् काणीर् शिवनवन् ताळ्गळे । मंत्र-संख्या, 1655

ये मिथ्यावेशधारी
आडंबर से तपस्वी वेश धरते हैं
लोगों को बहकाते हैं, ठगते हैं
इनका उद्देश्य पेट भरना
रुचिकर अन्न और नाना व्यंजनों से
मूढ़ हैं ये लोग
सच्ची भक्ति का नाट्य करते हैं
नाचते गाते हैं रोते प्रलाप करते हैं,
कभी नहीं पाएँगे शिव के चरणकमल । 1655

457. பூதி யணிவது சாதன மாதியிற்
காதணி தாம்பிர குண்டலங் கண்டிகை
ஓதி யவர்க்கும் உருத்திர சாதனந்
தீதில் சிவயோகி சாதனந் தேரிலே. 1662

पूदियणिवदु सादनमादियिऱ्
कादणि ताम्बिर कुण्डलम् कण्डिगै
ओदियवर्क्कुम् उरुत्तिर सादनम्
तीदिल् शिवयोगि सादनम् तेरिले । मंत्र-संख्या, 1662

शिवयोगी के लिए
सर्वप्रथम साधन है विभूत-धारण
यहीं से प्रारंभ होता है उसका तप
तपस्वी के अन्य साधन होते हैं

कानों में ताम्र-निर्मित कुंडल,
गले में शोभित रुद्राक्ष
मुख पर पंचाक्षर का पवित्र मंत्र । 1662

458. காதணி குண்டலங் கண்டிகை நாதமும்
ஊதுநற் சங்கும் உயர்கட்டி கப்பரை
ஏதமில் பாதுகம் யோகாந்த மாதனம்
ஏதமில் யோகபட் டந்தண்டம் ஈரைந்தே. 1664

कादणि कुण्डलम् कण्डिगै नादमुम्
ऊदु नऱ्चङ्गुम् उयर्कट्टि कप्परै
एदमिल् पादुगम् योगानन्द मादनम्
एदमिल् योगपट्टम् दण्डम् ईरैन्दे । मंत्र-संख्या, 1664

शिवयोगी का है भव्य रूप
कानों में· शोभित कुंडल
गले में रुद्राक्ष की कंठी
मुंह में पंचाक्षर का सांद्र नाद
फूंकने के लिए शंख, कपाल और खप्पर
आसन पादुका योगपट्ट के साथ
हाथ में धरे हैं योगदंड । 1664

459. கங்காளன் பூசுங் கவசத் திருநீற்றை
மங்காமற் பூசி மகிழ்வரே யாமாகில்
தங்கா வினைகளுஞ் சாருஞ் சிவகதி
சிங்கார மான திருவடி சேர்வரே. 1666

कङ्गाळन् पूशुम् कवचत् तिरुनीट्रै
मङ्गामल् पूशि मगिऴ्वरे यामागिल्
तङ्गा विनैकळुम् चारुम् शिवगति
चिङ्गारमान तिरुवडि चेर्वरे । मंत्र-संख्या, 1666

मुंडमालाधारी शिव द्वारा लेपित
पवित्र विभूत को लगा लें

अपने शरीर में
आनन्द से, आमोद से,
निश्चय जानो भाग जाएँगे कर्मबंधन
प्राप्त होगी शिवगति
मिलेंगे आनन्दमय चरणयुग्म
प्रभु परमेश्वर के । 1666

460. தானற்ற தன்மையுந் தானவ னாதலும்
ஏனைய வச்சிவ மான இயற்கையுந்
தானுறு சாதக முத்திரை சாத்தலு
மேனமும் நந்தி பதமுத்தி பெற்றதே. 1675

तानट्र तन्मैयुम् तानव नादलुम्
एनैय वच्चिवमान इयर्कैयुम्
तानुरु चादक मुत्तिरै चात्तलु
मेनमुम् नन्दि पदमुत्ति पट्रदे । मंत्र-संख्या, 1675

नन्दिचरणों में जो पाते हैं
मुक्ति का वरदान
कैसा होता है उन शिवभक्तों का
स्वभाव और उनके अभिलक्षण ?
अहं का त्याग
स्वयं शिव से तादात्म्य
आचार-व्यवहार में, मुद्राधारण में,
हाथ में होता है भिक्षापात्र । 1675

461. கன்றலுங் கருதலுங் கருமஞ் செய்தலும்
தின்றலுஞ் சுவைத்தலுந் தீமை செய்தலும்
பின்றலும் பிறங்கலும் பெருமை கூறலும்
என்றிவை இறைபால் இயற்கை அல்லவே. 1686

कन्ऱलुम् करुदलुम् करुमम् चॅय्दलुम्
तिन्ऱलुम् चुवैत्तलुम् तीमै चॅय्दलुम्

पिन्ऱलुम् पिऱड्ग्लुम् पंरुमैकूऱलुम्
ऍन्ऱिवै इऱैपाल् इयऱ्कै अल्लवे । *मंत्र-संख्या, 1686*

शिवमार्ग पर चलनेवाले
ज्ञानी के लिए सहज नहीं है–
क्रोध और चिंता, कर्म में लीन होना
स्वाद लेकर भोजन करना
परपीड़न, उत्थान, पतन
करना स्वप्रशंसा,
ज्ञानी रहता है इनसे दूर । *1686*

ॐ ஓ ॐ

7

ஏழாம் தந்திரம்
एऴाम् तंतिरम्
सप्तम तंत्र

ஆறாதாரம் — आऱादारम् - षडाधार;
அண்ட லிங்கம் — अण्ड लिंगम् - अंड लिंग;
பிண்ட லிங்கம் — पिण्ड लिंगम् - पिंड लिंग;
சதாசிவ லிங்கம் — सदाशिव लिंगम् - सदाशिव लिंग;
ஆத்ம லிங்கம் — आत्म लिंगम् - आत्म लिंग;
ஞான லிங்கம் — ज्ञान लिंगम् - ज्ञान लिंग;
சிவ லிங்கம் — शिव लिंगम् - शिव लिंग;
சம்பிரதாயம் — संप्रदायम् - संप्रदाय;
சிவ லிங்கம் — शिव लिंगम् - शिव लिंग;
திருவருள் வைப்பு — तिरुवरुळ् वैप्पु - अनुग्रह-निधि;
அருளொளி — अरुळॊळि - अनुग्रह ज्योति;
சிவபூசை — शिवपूजै - शिव पूजा;
குரு பூசை — गुरु पूजै - गुरु पूजा;
மகேசுவர பூசை — महेश्वर पूजै - महेश्वर पूजा;
அடியார் பெருமை — अडियार् पॆरुमै - शिवभक्त महिमा / ज्ञानियों की महिमा;
போசன விதி — पोसन विदि - भोजन कराने का नियम;
பிட்சா விதி — पिट्चा विदि - भिक्षा-नियम (भिक्षा ग्रहण का नियम);
முத்திரை பேதம் — मुत्तिरै बेदम् - मुद्रा भेद;
பூரணக்குகைநெறிச் சமாதி — पूरणक्कुगै नॆरिच् चमादि - पूर्ण गुहा मार्ग समाधि;
சமாதிக் கிரியை — सामादिक् किरियै - समाधि क्रिया;

விந்துற்பனம் — विन्दुर्पनम् – बिंदु उत्पत्ति;
விந்துசயம்-போகசரவோட்டம் — विन्दु जयम्-बोगचर वोट्टम् – बिंदु-जय - बिंदुप्रवाह का नियमन;
ஆதித்தநிலை அண்டாதித்தன் — आदित्त निलै - अण्डादित्तन् – आदित्य स्थिति - अण्डादित्य;
பிண்டாதித்தன் — पिण्डादित्तन् – पिण्डादित्य;
மனவாதித்தன் — मनवादित्तन् – मनादित्य;
ஞானாதித்தன் — ज्ञानादित्तन् – ज्ञानादित्य;
சிவாதித்தன் — शिवादित्तन – शिवादित्य;
பசுவிலக்கணம்-பிராணன் — पशुविलक्कणम्-प्राणन् – जीव प्राण की प्रकृति;
புருடன் — पुरुडन् – पुरुष;
சீவன் — जीवन – जीव (आत्मा);
பசு — पशु – जीव (पशु);
போதன் — बोदन् – बोध प्रदाता;
ஐந்திந்திரியம் அடக்கும் அருமை — ऐन्दिन्दिरियम् अडक्कुम् अरुमै – पंचेन्द्रिय दमन का महत्व;
ஐந்திந்திரியம் அடக்கு முறைமை — ऐन्दिन्दिरियम् अडक्कु मुऱैमै – पंचेन्द्रिय दमन की विधि;
அசற்குரு நெறி — असर्गुरु नॆऱि – असद्गुरु के मार्ग;
சற்குரு நெறி — सर्गुरु नॆऱि – सद्गुरु के मार्ग;
கூடாவொழுக்கம் — कूडावॊऴुक्कम् – वर्जित आचरण;
கேடு கண்டிரங்கல் — केडु कण्डिरंगल् – मानव के पतन पर करुणा;
இதோபதேசம் — इदोपदेशम् – हितोपदेश ।

* * *

462. ஆதார சோதனை யானாடி சுத்திகள்
மேதாதி யீரெண் கலாந்தத்து விண்ணொளி
போதா லயத்துப் புலன்கர ணம்புந்தி
சாதா ரணங்கெட்டான் றான்சக மார்க்கமே. 1707

आदार शोदनैयान् आडि शुत्तिगळ्
मेदादि ईरॆण् कलान्दत्तु विण्णॊळि
पोदालयत्तुप् पुलन् करणम् पुन्दि
सादारणम् कॆट्टान्तान् सह मार्क्कमे । मंत्र-संख्या, 1707

अद्भुत अनुभव है सहमार्ग योग
षडाधार पार करने पर
नाड़ियाँ स्वयमेव हो जाती हैं विशुद्ध
प्रवेश होता है मेधालय में
कलांत से होकर पहुँचता है बोधालय में
जहाँ पहुँचकर निवर्तित होता है
साधारण मन और इंद्रिय,
महाचिति की है वह क्रीड़ाभूमि । 1707

463. ஆயு மலரின் அணிமலர் மேலது
வாய இதழும் பதினாறும் அங்குள
தூய அறிவு சிவானந்த மாகிப்போய்
மேய அறிவாய் விளைந்தது தானே. 1711

आयुमलरिन् अणिमलर् मेलदु
वाय इदऴुम् पदिनारुम् अङ्गुळ
तूय अऱिवु शिवानन्दमागिप्पोय्
मेय अऱिवाय् विळैन्ददु ताने । मंत्र-संख्या, 1711

मूलाधार से लेकर
जितने कमल हैं
उनमें उत्कृष्ट है
विशुद्धिचक्र का कमल
जिसके सोलह दल हैं

यहाँ पहुँच कर
विशुद्धज्ञान शिवानन्द में
परिणत होता है
शिवज्ञान बन जाता है । 1711

464. இலிங்கம தாவ தியாரும் அறியார்
இலிங்கம தாவதெண் டிசை யெல்லாம்
இலிங்கம தாவ தெண்ணெண் கலையும்
இலிங்கம தாக எடுத்த துலகே. 1712

इलिङ्गमदावदि यारुम् अरियार्
इलिङ्गमदावदॅण्डिशै यॅल्लाम्
इलिङ्गमदाव दॅण्णॅण्ण् कलैयुम्
इलिङ्गमदाग ऍडुत्तदुलगे । मंत्र-संख्या, 1712

शिवशक्ति स्वरूपलिंग का
मर्म और महत्व ज्ञात नहीं किसी को
लिंग हैं आठ दिशाएँ,
चौंसठ कलाएँ भी लिंग हैं,
दृश्यमान सकल लोक लिंग ही हैं । 1712

465. போகமும் முத்தியும் புத்தியுஞ் சித்தியும்
ஆகமும் ஆறாறு தத்துவத் தப்பாலாம்
ஏகமும் நல்கியிருக்குஞ் சதாசிவம்
ஆகம வத்துவா வாறுஞ் சிவமே. 1714

पोगमुम् मुत्तियुम् पुत्तियुम् सित्तियुम्
आगमुम् आऱारु तत्तुवत्तप्पालाम्
एकमुम् नल्कि यिरुक्कुम् सदाशिवम्
आगम मत्तुवा वारुम् शिवमे । मंत्र-संख्या, 1714

सदाशिवमय है सब कुछ
लौकिक भोग-भोग्य, स्वर्गिक आनन्द
बुद्धि और चमत्कार
यह शरीर, छत्तीस तत्व

और उनसे परे की स्थिति
सब सदाशिव द्वारा प्रदत्त हैं
आगमशास्त्र में वर्णित
छह अध्वा-मार्ग-भी
सदाशिवरूप हैं । 1714

466. தூய விமானமுந் தூலம தாகுமால்
ஆய சதாசிவ மாகுநற் சூக்குமம்
ஆய பலிபீடம் பத்திர லிங்கமாம்
ஆய அரனிலை ஆய்ந்துகொள் வார்கட்கே. 1718

तूय विमानमुम् तूलमदागुमाल्
आय सदाशिवमागुनऱ् सूक्कुमम्
आय बलिपीटम् पत्तिर लिङ्गमाम्
आय अरनिलै आय्न्दु कोऴ्वार् कट्के । मंत्र-संख्या, 1718

शिवस्वरूप को यथावत् जानना है
तो सुनो, मंदिर के ऊपर बना
विमान स्थूललिंग है
गर्भगृह में प्रतिष्ठित
सदाशिव सूक्ष्मलिंग है,
बलिपीठ भद्रलिंग है । 1718

467. மானுட ராக்கை வடிவு சிவலிங்கம்
மானுட ராக்கை வடிவு சிதம்பரம்
மானுட ராக்கை வடிவு சதாசிவம்
மானட ராக்கை வடிவு திருக்கூத்தே. 17726

मानुड राक्कै वडिवु शिवलिङ्गम्
मानुड राक्कै वडिवु चिदम्बरम्
मानुड राक्कै वडिवु सदाशिवम्
मानुड राक्कै वडिवु तिरुक्कूत्ते । मंत्र-संख्या, 1726

मानव-काया है स्वयं शिवलिंग
मानव-काया है पवित्र चिदम्बर

वह रंगमंच जहाँ नृत्यरत है
नटराज-राज आमोद से
मानव-काया है सदाशिव मंदिर
अनुग्रह-मूर्ति सदाशिव का वासस्थान
मानव-काया वह नृत्यसभा है
जहाँ निरंतर रचते हैं प्रभु लास्य-नृत्य । 1726

468. கோயில்கொண் டானடி கொல்லைப் பெருமறை
வாயில்கொண் டானடி நாடிகள் பத்துள
பூசைகொண் டான்புல னைந்தும் பிறகிட்டு
வாயில்கொண் டானெங்கள் மாநந்தி தானே. 1729

कोयिल् कॉण्डानडि कॉल्लैप् पॅरुमऱै
वायिल् कॉण्डानडि नाडिगळ् पत्तुळ
पूशै कॉण्डान् पुलनैन्दुम् पिऱकिट्टु
वायिल् कॉण्डानॅङ्गळ् मानन्दि ताने । मंत्र-संख्या, 1729

जीवालय को शिवालय बनाने का
संकल्प किया प्रभुपाद ने
जिनके चरणों में हैं सकल वेदागम
पंचेन्द्रिय और दसों नाड़ियों को
बनाया द्वार समान
जीव की प्रार्थना सुनकर
पूजा से प्रसन्न होकर,
प्रभु ने इंद्रियों को बनाया अनुचर
द्वार खुल गए विस्तृत स्वागत में,
पधारे प्रभु देहरूपी मंदिर में । 1729

469. கூடிய பாதம் இரண்டும் படிமிசை
பாடிய கையிரண் டெட்டும் பரந்தெழுந்
தேடு முகம்ஐந்து செங்கணின் மூவைந்து
நாடுஞ் சதாசிவ நல்லொளி முத்தே. 1730

कूडिय पादम् इरण्डुम् पडिमिशै
पाडिय कैयिरण्डॅट्टुम् परन्दॅऴुन्

तेड्डुमुगम् ऐन्दु चंड्गणिन् मूवैन्दु
नाड्डुम् सदाशिव नल्लॉळि मुत्ते । मंत्र-संख्या, 1730

चरणयुग्म स्थित हैं धरती पर
संतों से प्रकीर्तित दसों भुजाएँ
व्याप्त हैं दसों दिशाओं में
ज्ञानीजन, जिन की खोज में हैं
पंचदश अरुण नेत्रों से
शोभित हैं पंचमुख
यह है सदाशिव का अपूर्व रूप
अनुपम अमूल्य मुक्ता हैं प्रभु । 1730

471. சத்திதான் நிற்கின்ற ஐம்முகஞ் சாற்றிடில்
உத்தமம் வாம முரையத் திருந்திடுந்
தத்துவம் பூருவந் தற்புரு டன்சிர
மத்தகு கோர மகுடத்தீ சானனே. 1741

सत्तितान् निर्किन्र ऐम्मुगम् चाट्रिडिल्
उत्तमम् वाम मुरैयत् तिरुन्दिड्डुम्
तत्तुवम् पूरुवम् तत्पुरुडन् शिर
मत्तगु कोर मकुटत्तीशानने । मंत्र-संख्या, 1741

शक्ति-तुंदिल पंचमुख हैं प्रभु के
उत्तर में विलसित मुख है वामदेव
पश्चिम में शोभित है सद्योजात
पूर्व की ओर उन्मुख है तत्पुरुष
दक्षिणाभिमुख है अघोर
ऊर्ध्व की ओर शोभित है ईशान । 1741

471. உணர்ந்தேன் உலகினில் ஒண்பொரு ளானைக்
கொணர்ந்தேன் குவலயங் கோயிலென் நெஞ்சம்
புணர்ந்தேன் புனிதனும் பொய்யல்ல மெய்யே
பணிந்தேன் பகலவன் பாட்டு மொலியே. 1748

उणर्न्देन् उलगिनिल् ऑण्पॉरुळानैक्
कॉणर्न्देन् कुवलयम् कोयिलॅन् नॅञ्चम्

पुणर्न्देन् पुनितनुम् पोय्यल्ल मॆय्ये
पणिन्देन् पकलवन् पाट्टु मॊलिये । मंत्र-संख्या, 1748

अनुभव किया मैंने
सत्य-स्वरूप को निज-हृदय में
निज-हृदय को बना कर मंदिर
मैं ले आया उसे धरती पर
अद्वैत भाव से उससे घुलमिल गया
यह सत्य है मिथ्या नहीं
विरचित किये सुंदर गीत
सूर्य सम जाज्वल्यमान
प्रभु की कीर्ति में, प्रार्थना में । 1748

472. மனம்புகுந் தென்னுயிர் மன்னிய வாழ்க்கை
மனம்புகுந் தின்பம் பொழிகின்ற போது
நலம்புகுந் தென்னொடு நாதனை நாடும்
இலம்புகுந் தாதியு மேற்கொண்ட வாறே. 1759

मनम् पुगुन्दॆन्नुयिर् मन्निय वाऴ्क्कै
मनम् पुगुन्दिन्बम् पॊऴिकिन्ऱ पोदु
नलम् पुगुन्दॆनॊडु नादनै नाडुम्
इलम् पुगुन्दादियु मेऱ्कॊण्डवाऱे । मंत्र-संख्या, 1759

मेरे अंतर में प्रवेश कर
प्रभु ने प्रदान किया परमानन्द
वर्षा करदी अनुग्रह की;
तुम भी मेरे साथ कामना करो
मांगों नाथ से कृपा और अनुग्रह
प्रवेश कर तुम्हारे हृदय में
बरसा देगा आनन्द । 1759

473. உருவும் அருவும் உருவோ டருவும்
மருவு பரசிவன் மன்பல் லுயிர்க்குங்
குருவு மெனநிற்குங் கொள்கைய னாகுந்
தருவென நல்குஞ் சதாசிவன் தானே. 1763

उरुवुम् अरुवुम् उरुवोडरुवुम्
मरुवु परशिवन् मन्पल्लुयिर्क्कुम्
गुरुवु मन निर्कुम् कोळ्गैयनागुम्
तरुवन नल्कुम् सदाशिवन् ताने । मंत्र-संख्या, 1763

साकार वह निराकार भी है
कभी वह परमेश्वर उभयरूप है
परमदयालु वह
गुरू रूप भी धरता है
जीवों के उद्धार हेतु
जीवों का कल्याण ही उसका प्रण है
अनुग्रह प्रदान करने में
कल्पवृक्ष समान है, प्रभु सदाशिव । 1763

474. ஆதி பரந்தெய்வம் அண்டத்து நற்றெய்வஞ்
சோதி யடியார் தொடரும் பெருந்தெய்வம்
நீதியுள் மாதெய்வநின்மலன் எம்மிறை
பாதியுள் மன்னும் பராசத்தி யாமே. 1767

आदि परन्तेय्वम् अण्डत्तु नट्रेय्वम्
जोति यडियार् तोडरुम् पेरुन्तेय्वम्
नीतियुळ् मातेय्व निन्मलन् ऍम्मिरै
पातियुळ् मन्नुम् पराशत्तियामे । मंत्र-संख्या, 1767

आदि परमेश्वर है
अनादि देव है
ब्रह्मांड के लिए एकमेव देव
ज्ञानीजनों का उपास्य देव वही
देवाधिदेव महादेव
नीति और धर्म का अधिष्ठाता
शुद्ध तत्व निर्मल सच्चिदानन्द
जिसके अर्धांग में
विलसित है आदि पराशक्ति । 1767

475. சத்தி சிவன்றன் விளையாட்டுத் தாரணி
சத்தி சிவமுமாஞ் சிவன்சத் தியுமாகுஞ்
சத்தி சிவமன்றித் தாபரம் வேறில்லை
சத்திதான் என்றுஞ் சமைந்துரு வாகுமே. 1772

शत्ति शिवन् तन् विळैयाट्टुत् तारणि
शत्ति शिवमाम् शिवन् शत्तियुमागुम्
शत्ति शिवमन्रित् तापरम् वेरिल्लै
शत्तितान् ऍन्रुम् चमैन्दुरुवागुमे । मंत्र-संख्या, 1772

शक्ति और शिव की क्रीड़ा है
यह धरणी, समस्त ब्रह्मांड
शिव ही शक्ति है, शक्ति ही शिव
शिव शक्ति के बिना
सृजन का उपक्रम नहीं
शक्ति ही खिलती है
नव-नव रूप में निरंतर । 1772

476. ஒன்றெனக் கண்டேயெம் ஈசன் ஒருவனை
நன்றென் றடியினை நானவ னைத்தொழ
வென்றைம் புலனுமி கக்கிடந் தின்புற
அன்றென் றருள்செய்யும் ஆதிப் பிரானே. 1775

ऑन्रॆनक्कण्डेयॆम् ईशन् ऑरुवनै
नन्रॆन्रडियिणै नानवनैत् तॊऴ
वॆन्रैम् पुलनुमिगक् किडन्दिन्बुर
अन्रॆन्ररुळ् चॆय्युम् आदिप्पिराने । मंत्र-संख्या, 1775

प्रभु को मैंने जगदीश जाना
समझा वही सर्वलोक शरण्य है
प्रणत हुआ मैं चरण-कमल पर
निष्ठा से श्रद्धा-भक्ति से
उसका अनुग्रह मिला
विजय पाई इंद्रियों पर
उसकी कृपा हुई मिला आशीर्वाद
रहो तुम शाश्वत आनन्द में । 1775

477. பச்சிம திக்கிலே வைத்தேஆ சாரியன்
நிச்சலும் என்னை நினையென்ற வப்பொருள்
உச்சிக்குங் கீழது வுண்ணாக்கு மேலது
வைச்ச பதமிது வாய்திற வாதே. 1780

पच्चिम दिक्किले वैत्ते आचार्यन्
निच्चलुम् ऍन्नै निनै यॆन्ऱ वप्पॊरुळ्
उच्चिक्कुम् कीऴ्दु वुण्णाक्कु मेलदु
वैच्च पदमिदु वाय् निऱवादे । मंत्र-संख्या, 1780

दीक्षा के समय
बिठाया मुझे आचार्य नन्दी ने
निज पश्चिम भाग में
सदा ध्यान का निर्देश देकर
उपदेश दिया गुरु ने
ध्येय वस्तु अवस्थित है
शिरोमध्य और तालु के बीच में
यह सत्यवचन है
मौनी बनो, करो साधना । 1780

478. அவனும் அவனும் அவனை யறியார்
அவனை யறியில் அறிவானும் இல்லை
அவனும் அவனும் அவனை யறியில்
அவனும் அவனும் அவனிவ னாமே. 1789

अवनुम् अवनुम् अवनै यऱियार्
अवनै यरियिल् अऱिवानुम् इल्लै
अवनुम् अवनुम् अवनै अऱियिल्
अवनुम् अवनुम् अवनिवनामे । मंत्र-संख्या, 1789

वह और वह उसे नहीं जानें
वह उसे जान ले यदि
नहीं रहता ज्ञाता वहाँ
वह उसे जान ले यदि
ज्ञाता और ज्ञेय एक बन जाएँ । 1789

479. குறிப்பினின் உள்ளே குவலயந் தோன்றும்
வெறுப்பிருள் நீங்கில் விகிர்தனும் நிற்குஞ்
செறிப்புறு சிந்தையைச் சிக்கென நாடில்
அறிப்புறு காட்சி அமரரு மாமே. 1794

कुरिप्पिन् उळ्ळे कुवलयम् तोन्रुम्
वॆरुप्पिरुळ् नींगिल् विगिर्दनुम् निर्कुम्
चॆरिप्पुरु चिन्तैयैच् चिक्कॆन नाडिल्
अरिप्पुरु काट्चि अमररुमामे । मंत्र-संख्या, 1794

कृपा-संकेत मिलने की देर है
द्योतित होता है सकल भुवन हृदय में,
अज्ञान-तम के हटने की देर है
दर्शन देता है प्रभु अंतर में,
भर लें यदि चिंतन-मनन-स्मरण में
परिपूर्ण का रूप
भासित होगी प्रज्ञा ज्ञान के प्रकाश से
अमर बन जाओगे तुम । 1794

480. தானே யறியும் வினைகள் அழிந்தபின்
நானே யறிகிலன் நந்தி யறியுங்கொல்
ஊனே யுருகி யுணர்வை யுணர்ந்தபின்
தேனே யனையனந் தேவர் பிரானே. 1796

तानेयरियुम् विनैकळ् अऴिन्दपिन्
ताने यरिकिलन् नन्दि अरियुङ्कॊल्
ऊने युरुगि उणरवै उणर्न्द पिन्
तेने यनैयनम् देवर् पिराने । मंत्र-संख्या, 1796

स्वयं वह ज्ञात होगा
जब नष्ट होंगे कर्म सारे
यह कब घटित होगा
मुझे नहीं ज्ञात, गुरु नन्दी को ज्ञात है
इतना अवश्य कर सकते हैं
प्रेम में, भक्ति में पसीज उठें

पहुँच सकते हैं तब महाचिति में
मधुतुल्य मधुर है देवदेव । 1796

481. அருளெங்கு மான அளவை யறியார்
அருளை நுகரமு தானதுந் தேரார்
அருளைங் கருமத் ததிசூக்க முன்னார்
அருளெங்குங் கண்ணான தாரறி வாரே. 1798

अरुळ्ङ्गुमान अळवै यरियार्
अरुळै नुगरमुदानदुम् तेरार्
अरुळैङ् करुमत्तति सूक्क मुन्नार्
अरुळ्ङ्गुम् कण्णानदाररिवारे । मंत्र-संख्या, 1798

कोई न जाने सीमा अनुग्रह की
जो व्याप्त है अगजग में सब कहीं
कोई न जाने अमृतोपम मधुरिमा
जो निःसृत है अनुग्रह से
कोई न जाने पंचकृत्य का मर्म
जो सूक्ष्म रूप से प्रवर्तित है
कोई न जाने किस तरह व्याप्त है
अनुग्रह – लोक के उद्धार हेतु । 1798

482. அறிவில் அணுக அறிவது நல்கிப்
பொறிவழி யாசை புகுத்திப் புணர்ந்திட்
டறிவது வாக்கி அடியருள் நல்குஞ்
செறிவொடு நின்றார் சிவமாயி னாரே. 1799

अरिविल् अणुग अरिवदु नल्गिप्
पॊरि वऴियाशै पुगुत्तिप् पुणर्न्दिट्–
ट्टरिवदुवाक्कि अडियरुळ् नल्गुम्
चॆरिवॊडु निन्रार् शिवमायिनरे । मंत्र-संख्या, 1799

ब्रह्म में ऐक्य पाने के लिए
देता है इसका बोध स्वयं ईश ही
फूंक देता है इच्छा और तड़पन
जीव के चित्त-मन-इंद्रियों में

रहता है साथ में साक्षी बनकर
ज्योतित होती है प्रज्ञा ईश्वरीय ज्ञान से
प्रभुकृपा साथ रहती है
लीन रहता है चित्त प्रभुचरण में
यों साधना के अंत में
शिव बन जाता है जीव । 1799

483. அருளிற் பிறந்திட் டருளில் வளர்ந்திட்
டருளில் அழிந்திளைப் பாறி மறைந்திட்
டருளான ஆனந்தத் தாரமு தூட்டி
அருளால் என்நந்தி யகம்புகுந் தானே. 1800

अरुळिऱ् पिऱन्दिट्ट अरुळिल् वळर्न्दिट्टु
अरुळिऱ् अऴिन्दिळैप्पाऱि मऱैन्दिट्टु
अरुळान आनन्दत् तारमुदूट्टि
अरुळाल् ऍन् नन्दि यगम् पुगुन्दाने । मंत्र-संख्या, 1800

अनुग्रह में जन्मा मैं अनुग्रह में पला
अनुग्रह में मिट कर चिरविश्राम पाया
अनुग्रह में मैं रहा धुंधलके में तिरोधान के
अनुग्रहपूर्वक चखाया आनन्द
नन्दिदेव ने गुरुनाथ के रूप में
मेरे अन्दर प्रवेश कर । 1800

484. பிறவா நெறிதந்த பேரரு ளாளன்
மறவா அருள்தந்த மாதவன் நந்தி
அறவாழி அந்தணன் ஆதிப் பராபரன்
உறவாகி வந்தென் உளம்புகுந் தானே. 1803

पिऱवा नॅऱि नन्द पेररुळाळन्
मऱवा अरुळ् तन्द मातवन् नन्दि
अरवाऴि अन्दणन् आदिप् परापरन्
उऱवागि वन्दॅन् उळम् पुगुन्दाने । मंत्र-संख्या, 1803

परम-कृपालु हैं अनुग्रह-वारिधि हैं
मुक्त किया जनन-मरण के बंधन से

वरदान दिया सतत सुरति का, ध्यान का
महापुनीत परमपवित्र हैं नन्दिदेव
धर्म का सागर ब्रह्मण्य देवता
आदिदेव परात्पर परमेश्वर
साधिकार पधारे मेरे हृदय में । 1803

485. அகம்புகுந் தானடி யேற்கரு ளாலே
அகம்புகுந் துந்தெரி யானரு ளில்லோர்க்
ககம்புகுந் தானந்த மாக்கிச் சிவமாய்
அகம்புகுந் தானந்தி யானந்தி யாமே. 1804

अगम् पुगुन्दानडियेर्करुळाले
अगम् पुगुन्दु तॆरियानरुळिन्नोर्क्कु
अगम् पुगुन्दानन्द माक्कि शिवमाय्
अगम् पुगुन्दानन्दि यानन्दियामे । मंत्र-संख्या, 1804

अनुग्रह-वारिधि महादेव
पैठ गए मेरे हृदय में
मैंने जान लिया उनके अनुग्रह से
बिना अनुग्रह अज्ञानी 'अनुभव' नहीं कर पाता;
पधारे मेरे हृदय में प्रभु
भर दिया आनन्द से
यही नहीं, शिव बना दिया मुझे
जीव को शिवानन्द में मग्न करके
स्वयं आनन्दित हो गए नन्दी । 1804

486. ஆயும் அறிவோ டறியாத மாமாயை
ஆய கரணம் படைக்குமைம் பூதமு
மாய பலவிந் திரிய மவற்றுடன்
ஆய வருளைந்து மாமருட் செய்கையே. 1805

आयुम् अऱिवोडऱियाद मामायै
आय करणम् पडैक्कुम् ऐम्बूदमुम्
आय पलविन्दिरियत्तुडन्
आय वरुळैन्दु मामरुट् चॆय्गैये । मंत्र-संख्या, 1805

दिया परमदयालु ने
ज्ञान और बुद्धि विवेक,
तर्कबुद्धि से बूझ सकूं मैं
माया की अबूझ पहेली
पंचतत्व सृजन है उसी का
साधना करूँ मैं इनकी समरसता में
पंचकृत्य में रमे हैं प्रभु
मुक्ति दिलाने के लिए इस जीव को,
परमदयालु है प्रभु उसके वरदान असीम हैं । 1805

487. அருளே சகலமு மாய பவுதிகம்
அருளே சராசர மாய வமலமே
இருளே வெளியே யெனுமெங்கும் ஈசன்
அருளே சகளத்த னன்றியின் றாமே. 1806

अरुळे सकलमुमाय पवुदिगम्
अरुळे चराचरमाय अमलमे
इरुळे वॆळियॆ यॆनु मॆङ्गुम् ईशन्
अरुळे सकलत्तनन्रियिन् ऱामे । मंत्र-संख्या, 1806

परम कृपा-अनुग्रह का परिणाम है
यह सचराचर प्रकृति, सकल भुवन
अनंत रमणीय संसृति
उसी का प्रसाद है सब
ज्योति-तम बनकर जड़चेतन-बनकर
ईश कृपा परिव्याप्त है
वही है सब कुछ उसके बिना कुछ नहीं है । 1806

488. அருட்கண் ணிலாதார்க் கரும்பொருள் தோன்றா
அருட்கண் ணுளோர்க்கெதிர் தோன்றும் அரனே
இருட்கண் ணினோர்க்கங் கிரவியுந் தோன்றாத்
தெருட்கண் ணினோர்க்கெங் குஞ்சீரொளி யாமே. 1808

अरुट् कण्णिल्लादार्क्करुम् पॊरुळ् तोन्ऱा
अरुट् कण्णुळोर्क्कॆदिर् तोन्ऱुम् अरने



इरुट्ट् कण्णिनोर्क्कड्ङ्गु इरवियुम् तोन्ऱात्
तेरुट्ट् कण्णिनोर्क्कड्ङगुम् चीरॉळियामे । मंत्र-संख्या, 1808

जिन नयनों में अंधकार है
दिखता नहीं रवि का प्रकाश भी
जिन नयनों में प्रकाश है
स्पष्ट दिखता है सकल पदार्थ
नयन जो रिक्त हैं कृपा से, अनुग्रह से
देख नहीं पाते सत्यरूप परमेश्वर को,
अनुगृहीत हैं वे नयन
जिनके सामने प्रकट होता है शिव । 1808

489. தானே படைத்திடுந் தானே அளித்திடுந்
தானே துடைத்திடுந் தானே மறைத்திடுந்
தானே யிவைசெய்து தான்முத்தி தந்திடுந்
தானே வியாபித் தலைவனு மாமே. 1809

ताने पडैत्तिडुम् ताने अळित्तिडुम्
ताने तुडैत्तिडुम् ताने मऱैत्तिडुम्
ताने इवैचेय्दु तान् मुत्ति तन्दिडुम्
ताने वियापित् तलैवनुमामे । मंत्र-संख्या, 1809

सिरजनहार वह पालनहार भी,
संहार-कर्ता वही तिरोधानकारी भी,
कर्ता-धर्ता वह मोक्षदायक है
सर्वव्यापी है, सबका स्वामी भी । 1809

490. தலையான நான்குந் தனதரு வாகும்
அலையா வருவுரு வாகுஞ் சதாசிவம்
நிலையான கீழ்நான்கு நீடுரு வாகுந்
துலையா இவைமுற்று மாயல்ல தொன்றே. 1810

तलैयान नान्गुम् तनदरुवागुम्
अलैया अरुवुरु वागुम् सदाशिवम्
निलैयान कीऴ् नान्गु नीडुरुवागुम्
तुलैया इवै मुट्रु मायल्ल दॊन्ऱे । मंत्र-संख्या, 1810

निराकार रूप है प्रभु का
शिव, शक्ति, नाद और बिंदु,
अचल सदाशिव रूपारूप है
साकार रूप चार हैं
– ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, महेश –
इन सब के साथ जोड़ लो एक और
उसका स्वरूप वही है । 1810

491. நேயத்தே நின்றிடும் நின்மலன் சத்தியோ
டாயக் குடிலையுள் நாதம் அடைந்திட்டுப்
போயக் கலைபல வாகப் புணர்ந்திட்டு
வீயத் தகாவிந்து வாக விளையுமே. 1812

नेयत्ते निन्ऱिडुम् निन्मलन् सत्तियो–
डायक् कुडिलैयुळ् नादम् अडैन्दिट्टुप्
पोयक् कलै पलवागप् पुणनिर्न्दिट्टु
वियत् तगा विन्दुवाग विळैयुमे । मंत्र-संख्या, 1812

हृद्देश में रमता है
निर्मल ईश्वर निज शक्ति के संग,
प्रवर्तन होता है शक्ति का
कुटिला माया में,
जनित होता है नाद तब
फिर प्रकट होता है बिंदु
सृष्टि रचना का बीज–
नाना कलाओं के संग । 1812

492. அருளிற் றலைநின் றறிந்தழுந் தாதார்
அருளிற் றலைநில்லார் ஐம்பாச நீங்கார்
அருளிற் பெருமை யறியார் செறியார்
அருளிற் பிறந்திட் டறிந்தறி வாரே. 1814

अरुळिट्रलै निन्ऱ्रिन्दळ्ुन्दादार्
अरुळिट्रलै निल्लार् ऐम्पाश नीङ्गार्
अरुळिर् पॆरुमै यरियार् चॆरियार्
अरुळिर् पिरन्दिट्ट रिन्दरिवारे । मंत्र-संख्या, 1814

विश्वास जिनका अडिग नहीं है
ईश की असीम कृपा में,
अटूट नहीं है जिनका संकल्प
नहीं पाएंगे प्रभु-अनुग्रह,
छूट नहीं पाएंगे पंच-विध पाश से
नहीं जानते परमेश्वर की महिमा
रहते हैं सदा दूर-दूर
अनुभव वेद्य उसी को होता है
जन्म लेता है जो अनुग्रह में । 1814

493. ஆடியும் பாடியும் அழுதும் அரற்றியுந்
தேடியுங் கண்டேன் சிவன்பெருந் தன்மையைக்
கூடிய வாறே குறியாக் குறிதந்தென்
ஊடுநின் றானவன் தன்னரு ளூற்றே. 1816

आडियुम् पाडियुम् अऴुदुम् अरट्रियुम्
तेडियुम् कण्डेन् शिवन् पॅरुन्तन्मैयै
कूडियवारे कुरियाक् कुरि तन्दॆन्
ऊडु निन्रानवन् तन्नरुळुट्रे । मंत्र-संख्या, 1816

प्रभु को पाने के लिए
मैं कभी नाचा-गाया
कभी रोया-कलपा
यों पा लिया मैंने प्रभु को
जब मिलन हो गया
परमकृपालु ने प्रदान किया मुझे
निज अपूर्व अवर्णनीय रूप, पधारे अंतर् में
व्याप्त हो गये कृपा से, अनुग्रह से । 1816

494. உற்ற பிறப்பும் உறுமல மானதும்
பற்றிய மாயாப் படலெமனப் பண்ணி
அத்தனை நீயென் றடிவைத்தான் பேர்நந்தி
கற்றன விட்டேன் கழல்பணிந் தேனே. 1817

उट्र पिरप्पुम् उरु मलमानदुम्
पट्रिय मायाप् पडलमॅनप् पण्णि

अत्तनै नीयंन्ऱडिवैत्तान् पंयर् नन्दी
कट्रन विट्टेन् कळ्ल् पणिन्देने । मंत्र-संख्या, 1817

मेरा जन्म लिप्त था सकलमल से
धूमिल सा था सब कुछ,
कृपा हुई परमेश्वर की
ओझल हुआ धूमिल पटल
जैसे माया का कोई मेघ था
'छूट गए इन सब से वत्स !'
कहते हुए धरे निज चरण
मेरे हृदय - अंतर् में अनुग्रह नन्दी ने;
तजकर अपना कोरा ज्ञान,
प्रणत हुआ मैं नाथ चरण पर । 1817

495. விளக்கினை யேற்றி வெளியை அறிமின்
விளக்கினை முன்னே வேதனை மாறும்
விளக்கை விளக்கும் விளக்குடை யார்கள்
விளக்கில் விளங்கும் விளக்கவர் தாமே. 1818

विळक्किनै एट्रि वंळियै अऱिमिन्
विळक्किनै मुन्ने वेदनै माऱुम्
विळक्कै विळक्कुम् विळक्कुडैयार्गळ्
विळक्किल् विळंगुम् विळक्कवर् तामे । मंत्र-संख्या, 1818

प्रदीप्त करो ज्योति
ज्योतित होगा चिदम्बर,
टिकते नहीं दुख-संताप
ज्योति के सान्निध्य में;
जिनके पास रहता है
ज्योति जगाने का दीप
ज्योति में रमते हैं वे
स्वयं परमज्योति हैं । 1818

496. ஒளியும் இருளும் ஒருகாலுந் தீரா
ஒளியுளோர்க் கன்றோ ஒழியா தொளியும்
ஒளியிருள் கண்டகண் போலவே றாயுள்
ஒளியிருள் நீங்க வுயிர்சிவ மாமே. 1819

ऑळियुम् इरुळुम् ऑरुकालुम् तीरा
ऑळियुळोर्क्कन्ऱो ऑऴिया दॉळियुम्
ऑळियिरुळ् कण्ड कण् पोलवेऱायुळ्
ऑळियिरुळ् नींग उयिर् शिवमामे । मंत्र-संख्या, 1819

नित्य निरंतर बना रहता है
ज्योति के संग तम भी,
पास में जब रहता है दीपक
तुरंत मिट जाता अंधकार;
भासमान है जिनका हृदय
ज्ञान की दिव्य-ज्योति से
तिरोधान कर जाता है
अज्ञान-तम उनके हृदय से
और तब होता है ऐक्य
जीव और शिव का । 1819

497. உள்ளம் பெருங்கோயில் ஊனுடம் பாலயம்
வள்ளற் பிரானார்க்கு வாய்கோ புரவாசல்
தெள்ளித் தெளிவார்க்குச் சீவன் சிவலிங்கங்
கள்ளப் புலனைந்துங் காளா மணிவிளக்கே. 1823

उळ्ळम् पॅरुङ्कोयिल् ऊनुडम्बालयम्
वळ्ळर् पिरानार्क्कु वाय् गोपुर वासल्
तॅळ्ळित् तॅळिवार्क्कुच् चीवन् शिवलिङ्गम्
कळ्ळप् पुलनैन्दुम् काळामणि विळक्के । मंत्र-संख्या, 1823

हृदय बन गया गर्भ-गृह प्रभु के लिए
रुधिर मांस का यह शरीर बना

दयामय का पावन मंदिर
मुख मेरा है उनका गोपुरद्वार
जो विवेकी हैं जानते हैं वे
जीव ही है शिवलिंग
और मायामय पांचों इंद्रियाँ
उनके लिए हैं जाज्वल्यमान दीप। 1823

498. புண்ணியஞ் செய்வார்க்குப் பூவுண்டு நீருண்டு
அண்ணல் அதுகண்டருள்புரி யாநிற்கும்
எண்ணிலி பாவிகள் எம்மிறையீசனை
நண்ணறி யாமல் நழுவுகின் றாரே. 1828

पुण्णियम् चॅय्वार्क्कुप् पूवुण्डु नीरुण्डु
अण्णल् अदुकण्डु अरुळ् पुरिया निर्कुम्
एण्णिलि पाविकळ् ऍम्मिऱै यीशनै
नण्णऱियामल् नऴुवुकिन्ऱारे। मंत्र-संख्या, 1828

पुण्यशील साधक जन
पूजा करते हैं प्रभु की
पुष्प से, जल से,
प्रसन्न होते हैं प्रभु उनपर
करते हैं वर्षा अनुग्रह की;
असंख्य अनगिनत पापीजन
विधि जानते हैं उन तक पहुँचने की
बेचारे डूबे हुए हैं
अज्ञान के गर्त में। 1828

499. மறப்புற்று விவ்வழி மன்னிநின் றாலுஞ்
சிறப்பொடு பூநீர் திருந்தமுன் ஏந்தி
மறப்பின்றி யுன்னை வழிபடும் வண்ணம்
அறப்பெற வேண்டும் அமரர் பிரானே. 1830

मऱप्पुट्रु इव्वऴि मन्नि निन्ऱालुम्
चिरप्पांडु पूनीर् तिरुन्द मुन् एन्दि
मऱप्पिन्ऱि युन्नै वऴिपडुम् वण्णम्
अऱ्प्पऱ वेण्डुम् अमरर् पिराने । मंत्र-संख्या, 1830

विचार-रहित क्षण में
मैं प्रमाद कर जाऊं
विरत हो जाऊं तव सुधि से, पूजन से,
हे नाथ, मत भूलो मुझे
करो अनुग्रह
कि मैं कभी ना भूलूं तुझे
वरदान दो कि लेकर हाथ में
पावन जल और सुमन
करता रहूँ पूजन नित्य ही
मेरे नाथ ! देव-देव !
यही है विनय मेरी । 1830

500. கழிப்படுந் தண்கடற் கௌவை யுடைத்து
வழிப்படு வாமாலர் மொட்டறி யார்கள்
பழிப்படு வார்பல ரும்பழி வீழ
வெளிப்படு வோஃருச்சி மேவிநின் றானே. 1835

कऴिप्पडुम् तण्कडऱ् कौवै युडैत्तु
वऴिप्पडुवामालर् मोट्टऱियार्गऴ्
पऴिप्पडुवार् पलरुम् पऴिवीऴ
वॆऴिप्पडुवोर् उच्चि मेवि निन्ऱाने । मंत्र-संख्या, 1835

कोलाहल कर रहा है भवसागर
किंतु भक्त हारते नहीं
कीर्तन करते हैं उदात्त स्वर से
निरस्त करते हुए सागर का शोर,

अंजलि दे रहे हैं सुमनों की
कुछ खिले कुछ अधखिले,
पुण्य-रहित हैं वे जन
पड़े हैं भवसागर के गर्त में
प्रकट होता है प्रभु
ज्ञानियों के शीश में
ज्योति बनकर सहस्रार में । 1835

501. ஏத்துவர் மாமலர் தூவித் தொழுதுநின்
றார்த்தெம தீசன் அருட்சே வடியென்றன்
மூர்த்தியை மூவா முதலுரு வாய்நின்ற
தீர்த்தனை யாருந் துதித்துண ராரே. 1837

एत्तुवर् मामलर् तूवित् तॊऴुदु निन् -
ऱार्त्तॆमदीशन् अरुट् चेवडि यॆन्ऱन्
मूर्तियै मूवा मुदलुरुवाय् निन्ऱ
तीर्त्तनै यारुम् तुदित्तुणरारे । मंत्र-संख्या, 1837

स्तुति करते हैं भक्तजन
प्रभुचरण पर होकर प्रणत
याचना करते हुए परमकृपा की
पुनः पुनः पुकारते हैं
'हे नाथ ! आदि-अंत-विहीन !
अजर अमर महादेव
तार दो, हम हैं तेरी शरण में !'
किन्तु ऐसे भी जन हैं जग में
नहीं पूजते ईश को, न ही करते स्तुतिगान । 1837

502. உழைக்கவல் லோர்நடு நீர்மல ரேந்திப்
பிழைப்பின்றி யீசன் பெருந்தவம் பேணி
இழைக்கொண்ட பாதத் தினமலர் தூவி
மழைக்கொண்டல் போலவே மன்னிநில் லீரே. 1839

उऴैक्कवल्लोर् नडुनीर् मलरेन्दिप्
पिऴैप्पिन्रि यीशन् परुन्तवम् पेणि
इऴैक्कोण्ड पादत् तिनमलर् तूवि
मऴैक्कोण्डल् पोलवे मन्नि निल्लीरे । मंत्र-संख्या, 1839

यत्नपूर्वक पुष्पसंचय करो
शुद्ध जल ले आओ प्रभुपूजन के हित
च्युति-रहित होकर प्रतिदिन
करो ईश्वर का पूजन-आराधन
चढ़ाओ चरण-कमल पर
श्रद्धा-सुमन और
बहाओ नयनों से भक्ति के अश्रु
नीर भरे समृद्ध मेघ की भांति
तुम्हारा जीवन भी होगा समृद्ध
दैवी संपदा से । 1839

503. சாத்தியும் வைத்துஞ் சயம்புவென் றேத்தியும்
ஏத்தியு நாளு மிறையை யறிகிலார்
ஆத்தி மலக்கிட் டகத்திழுக் கற்றக்கான்
மாத்திக்கே செல்லும் வழியது வாமே. 1841

चात्तियुम् वैत्तुम् सयम्बुवॆन्रेत्तियुम्
एत्तियु नाळुम् इऱैयै अऱिकिलार्
आत्तिमलक् किट्टकत्तिऴुक्कट्रक्कान्
मात्तिक्के चॆल्लुम् वऴि यदुवामे । मंत्र-संख्या, 1841

सजाया प्रभु को पुष्पहार से
चढ़ाया चरणों पर सुमन-अंबार
कीर्तिगान किया स्तुतिगीतों से
हे शंभो ! तुम स्वयंभू हो, आदिदेव हो
पर वे लोग जान न पाते ईश को;

ईश को पाने का मार्ग है
परित्याग करो इच्छाओं का,
दूर करो मनोमालिन्य
मुक्ति का, प्रभुकृपा का यही द्वार है । 1841

504. சாணாகத் துள்ளே அழுந்திய மாணிக்கங்
காணு மளவுங் கருத்தறி வாரில்லை
பேணிப் பெருக்கிப் பெருக்கி நினைவோர்க்கு
மாணிக்க மாலை மனம்புகுந் தானே. 1843

चाणागत्तुळ्ळे अऴुन्दिय माणिक्कम्
काणुमळवुम् करुत्तऱिवारिल्लै
पेणिप् पॆरुक्किप् पॆरुक्कि निनैवोर्क्कु
माणिक्क मालै मनम् पुगुन्दाने । मंत्र-संख्या, 1843

आज्ञा और सहस्रार के मध्य
बालिश्त भर स्थान में
जटित माणिक्य है परमेश्वर;
जब-तक उसका अनुभव न होता
उसके मूल्य का अवबोध न होता
जो उसी का करते हैं सतत स्मरण
उनके लिए वह
शोभित होता है माणिक्य--माला सम । 1843

505. கானுறுகோடி கடிகமழ் சந்தனம்
வானுற மாமல ரிட்டு வணங்கினும்
ஊனினை நீக்கி யுணர்பவர்க் கல்லது
தேனமர் பூங்கழல் சேரவொண் ணாதே. 1848

कानुरु कोटि कडिकमऴ् चन्दनम्
वानुऱ् मामलरिट्टु वणङ्गिनुम्
ऊनिनै नीक्कि उणर्पवर्क्कल्लदु
तेनमर् पूङ्कऴल् चेरवॊण्णादे । मंत्र-संख्या, 1848

भले ही मलय का समग्र सुरभित चंदन
लाकर करें लेपन
भले ही प्रभु की पूजा-अर्चा में
नभ तक सुमनों का लगा दें अंबार
प्रभु का अनुभव नहीं होगा;
प्रभु का अनुभव होगा उन्हीं को,
जो देहबोध तजकर
भावना में अनुभव करें परमेश्वर का
ऐसी आराधना के बिना मधु-स्रवित सुमनों से
पहुँच नहीं सकते चरण-कमल तक । 1848

506. இந்துவும் பானுவும் இலங்குந் தலத்திடை
வந்தித்த தெல்லாம் அசுரர்க்கு வாரியாம்
இந்துவும் பானுவும் இலங்காத் தலத்திடை
வந்தித்தல் நந்திக்கு மாபூசை யாமே. 1852

इन्दुवुम् पानुवुम् इलङ्गुम् तलत्तिडै
वन्दित्तदेल्लाम् असुरर्क्कु वारियाम्
इन्दुवुम् पानुवुम् इलङ्गात् तलत्तिडै
वन्दित्तल् नन्दिक्कु मापूशैयामे । मंत्र-संख्या, 1852

चन्द्र और सूर्य नाड़ियों के चलते
अनुष्ठित पूजा का फल ले जाते हैं
असुरगण,
जहाँ चन्द्र और सूर्य जगमगाते नहीं
ऐसे तल पर अनुष्ठित पूजा
स्वीकार्य है नन्दी-परमेश्वर को । 1852

507. படமாடக் கோயிற் பகவற்கொன் றீயில்
நடமாடக் கோயில் நம்பர்க்கங் காகா
நடமாடக் கோயில் நம்பர்க்கொன் றீயில்
படமாடக் கோயிற் பகவற்க தாமே. 1857

पडमाडक् कोयिल् पगवर्कॉन्ऱीयिल्
नडमाडक् कोयिल् नम्बर्क् कड्काग
नडमाडक् कोयिल् नम्बर्क्कॉन्ऱीयिल्
पडमाडक् कोयिऱ् पगवर्कदामे । मंत्र-संख्या, 1857

अर्पित करते तुम बहुमूल्य भेंट
भव्य मंदिर में विराजे भगवान् को
नहीं पहुँचता है वह साधुओं-भक्तों को
जो कि चलते-फिरते मंदिर हैं;
यदि तुम खिलाओगे
साधुओं और भक्तों को
वह स्वयमेव पहुँच जाता है
भव्य मंदिर में विराजे देवता को । 1857

508. அகரம் ஆயிரம் அந்தணார்க் கீயிலென்
சிகரம் ஆயிரஞ் செய்து முடிக்கிலென்
பகரு ஞானி பகலூண் பலத்துக்கு
நிகரிலை என்பது நிச்சயந் தானே. 1860

अगरम् आयिरम् अन्दणर्क्कीयिलॅन्
शिकरम् आयिरम् चॅय्दुमुडिक्किलॅन्
पगरु ज्ञानि पगलूण् पलत्तुक्कु
निगरिल्लै ऍन्बदु निच्चयम् ताने । मंत्र-संख्या, 1860

सहस्र ग्राम किए निर्मित
दे दिये दान में द्विजश्रेष्ठों को,
सहस्र मंदिरों का किया निर्माण
समर्पित किया देवाधिदेव को
इनसे जितना पुण्य मिलेगा
उससे कहीं अधिक मिलेगा पुण्य
एक ज्ञानी को भरपेट खिलाओ
केवल एक मध्याह्न में । 1860

509. ஏறுடை யாயிறை வாஎம்பி ரானென்று
நீறிடு வாரடி யார்நிகழ் தேவர்கள்
ஆறணி செஞ்சடை யண்ண லிவரென்று
வேறணி வார்க்கு வினையில்லை தானே. 1862

एरुडैयाइ़रैता ऍम्बिरानॆन्रु
नीरि़डुवारडियार् निगऴ् देवर्गळ्
आऱणि चॆञ्चडै अण्णलिवरॆन्रु
वेऱणिवार्क्कु विनैयिल्लै ताने । मंत्र-संख्या, 1862

'हे वृषभारूढ़ ! भगवन् ! मेरे नाथ !'
यों उच्चरित करते हुए
जो भक्त धारण करें विभूत
वे निश्चय ही देवतुल्य होते हैं;
जो भाग्यवांन पूजा करता है
इन शिवभक्तों को साक्षात् शिव मानकर
गंगाधर, जटाधर, महादेव मानकर
अहोभाग्य होता है उसका
सारे कर्म हो जाते हैं नष्ट । 1862

519. அண்டங்கள் ஏழும் அகண்டமும் ஆவியுங்
கொண்ட சராசர முற்றுங் குணங்களும்
பண்டை மறையும் படைப்பளிப் பாதியுங்
கண்ட சிவனுமென் கண்ணன்றி யில்லையே. 1871

अण्डङ्गळ् एऴुम् अगण्डमुम् आवियुम्
कॊण्ड चराचर मुट्रुम् गुणङ्गळुम्
पण्डै मऱैयुम् पडैप्पळिप्पादियुम्
कण्ड शिवनुम् ऍन्नकण्णिन्रि इल्लैये । मंत्र-संख्या, 1871

सातों भुवन, सकल ब्रह्मांड,
चराचर जगत् के समस्त जीव,
तीनों गुण, प्राचीन वेदागम,

सर्जक ब्रह्मा, पालक विष्णु,
इन के ऊपर महादेव –
ये सारे के सारे
मेरे अंदर बसे हैं
जो कुछ है मैं ही मैं हूँ
मुझे छोड़ कर कुछ नहीं है । 1871

511. என்தாயோ டென்னப்பன் ஏழேழ் பிறவியும்
அன்றே சிவனுக் கெழுதிய ஆவணம்
ஒன்றா யுலகம் படைத்தான் எழுதினான்
நின்றான் முகில்வண்ணன் ஏரெழுந் தாயே. 1876

ऍऩ् तायोडॆऩ्ऩप्पऩ् एऴेऴ् पिऱवियुम्
अऩ्ऱे शिवऩुक्कॆऴुदिय आवणम्
ऑऩ्ऱाय् उलगम् पडैत्ताऩ् ऍऴुदिनाऩ्
निऩ्ऱाऩ् मुगिल् वण्णऩ् एरेऴुन्ताये । मंत्र-संख्या, 1876

'मेरे तात-मात दोनों ही शिव हैं
मेरे सातों जन्म उन्हीं को समर्पित'
अनादिकाल में परमेश्वर के नाम पर
लिखा गया है यह प्रलेख
स्वयं ब्रह्मा द्वारा जिनने
एक साथ सृजन किया सकल भुवन का
इस प्रलेख के साक्षी हैं
नीलमेघ सरिस श्यामवर्ण साक्षात् विष्णु । 1876

512. சிவயோகி ஞானி செறிந்தஅத் தேசம்
அவயோகம் இன்றி அறிவோருண் டாகும்
நவயோகங் கைகூடு நல்லியல் காணும்
பவயோகம் இன்றி பரலோக மாமே. 1882

शिवयोगि शिवज्ञानि चॆऱिन्द अत्तेशम्
अवयोगम् इऩ्ऱि अऱिवोरुण्डागुम्

नवयोगम् कैकूड नल्लियल् काणुम्
पवयोगम् इन्रिप् परलोकमामे । मंत्र-संख्या, 1882

शिवयोगी-शिवज्ञानियों की आवास-भूमि
अक्षरार्थ में होती है वह पुण्यभूमि
वहाँ दुर्भाग्य का नाम न होगा
सब के सब होंगे ज्ञानी
आ जुटेगा नित नवयोग, नव-नव कल्याण
वह भूमि सत्य में स्वर्ग बनेगी
भवबंधन से मुक्त होंगे
उस भूमि के निवासी । 1882

513. அச்சவன் உள்நின்ற அருளை அறிந்தவர்
உச்சியம் போதாக வுள்ளமர் கோவிற்குப்
பிச்சை பிடித்துண்டு பேத மறநினைந்
திச்சைவிட் டேகாந்தத் தேறி யிருப்பரே. 1885

अच्चिवन् उळ्निन्र् अरुळै अऱिन्दवर्
उच्चियम् पोदाग उळ्ळमर् कोविर्कु
पिच्चै पिडित्तुण्डु पेदमऱ निनैन्दु
इच्चै विट्टेकान्तत् तेऱियिरुप्पारे । मंत्र-संख्या, 1885

आलोकित है जिनका हृद्देश
परमेश्वर के आवास से, परमकृपा से,
ऐसे ज्ञानी तपोधन
ग्रहण करते हैं भिक्षान्न
मध्याह्न में एक बार
धारण हेतु देह रूपी शिवालय को
खाते हैं भिक्षान्न
भेदविचार नहीं है मन में
नहीं कोई इच्छा, रमते हैं एकान्त में । 1885

514. பரந்துல கேழும் படைத்த பிரானை
இரந்துணி என்பர்கள் எற்றுக் கிரக்கும்
நிரந்தர மாக நினையும் அடியார்
இரந்துண்டு தன்கழல் எட்டச்செய் தானே. 1888

परन्दुलकेऴ्ुम् पडैत्त पिरानै
इरन्दुणि ऍन्बर्गळ् ऍट्रुक्किरक्कुम्
निरन्तरमाग निनैयुम् अडियार्
इरन्दुण्डु तन्कऴल् ऍट्टच् चेय्दाने । मंत्र-संख्या, 1888

बुद्धिहीनता है भिक्षुक कहना
परमेश्वर को
जिसने बनाये सातों भुवन, सकल वैभव
क्यों भिक्षाटन करता है वह ?
मार्ग दिखाने के लिए निज भक्तों को
जो सतत ध्यान करते हैं चरणों का
ताकि वे याचना करें मुक्ति की
और पाएँ परमपद । 1888

515. சாம்பவி நந்தி தன்னருட் பார்வையாம்
ஆம்பவ மில்லா அருட்பாணி முத்திரை
ஓம்பியல் ஓங்கிய வுண்மைய கேசரி
நாம்பயில் நாதன்மெய்ஞ் ஞானமுத் திரையே. 1894

शाम्बवि नन्दि तन्नरुट् पार्वैयाम्
आम्बव मिल्ला अरुट्पाणि मुत्तिरै
ओम्बियल् ओङ्गिय उण्मैय केचरि
नाम्पयिल् नादन् मॆय्ज्ञानमुत्तिरैये । मंत्र-संख्या, 1894

शाम्भवी मुद्रा नन्दी-अनुग्रह है
जिससे कटता है भव-बंधन, वर्धित होता है अनुग्रह
खेचरी मुद्रा में साधना होती है ओंकार की
मौन ज्ञानप्रद साधना

इसी मुद्रा का मैं अभ्यास करता हूँ
अपने गुरुनाथ की भांति । 1894

516. மோனத்து முத்திரை முத்தர்க்கு முத்திரை
ஞானத்து முத்திரை நாதர்க்கு முத்திரை
தேனிக்கு முத்திரை சித்தாந்த முத்திரை
கானிக்கு முத்திரை கண்ட சமயமே. 1900

मोनत्तु मुत्तिरै मुत्तक्कु मुत्तिरै
ज्ञानत्तु मुत्तिरै ज्ञानिक्कु मुत्तिरै
तेनिक्कु मुत्तिरै सित्तान्त मुत्तिरै
कानिक्कु मुत्तिरै कण्ड समय । मंत्र-संख्या, 1900

मौनमुद्रा मोक्षार्थियों की मुद्रा है;
खेचरी नाम से अभिहित
ज्ञानमुद्रा ज्ञानियों की मुद्रा है
नाथ और गुरुजनों की मुद्रा है यह;
धेनुमुद्रा का अभ्यास करते हैं
सिद्धांत ज्ञानी
वशीभूत होता है श्वास मुद्राओं में । 1900

517. எங்குஞ் சிவமா யருளா மிதயத்துத்
தங்குஞ் சிவஞானிக் கெங்குமாந் தற்பரம்
அங்காங் கெனநின்று சகமுண்ட வான்தோய்தல்
இங்கே யிறந்தெங்கு மாய்நிற்கும் ஈசனே. 1909

ऍङ्गुम् शिवमायरुळाम् इदयत्तुत्
तङ्गुम् शिवज्ञानिक् कॅङ्गुमाम् तर्परम्
अङ्गाङ्गॅन निन्रु चगमुण्ड वान्तोयल्
इङ्गे यिऱन्दॅङ्गुमाय् निर्कुम् ईशने । मंत्र-संख्या, 1909

उमड़ रहा अनुग्रह
हृदय भर गया, हो रहा उद्रेक,

शिवज्ञानी के लिए
जहाँ देखो शिव ही शिव
शिवमय है सर्वत्र
शिवज्ञानी को विचित्र अनुभव हो रहा
खंड-खंड दिखने वाला आकाश
यथार्थ में लपेटे हुए है अंतरिक्ष को
समस्त अवकाश को
इसी भांति शिवज्ञानी जहाँ वह खड़ा है
चिति को भूल कर खो गया है
किन्तु महाचिति में मिलकर सर्वत्र व्याप्त है
वह शिव के साथ निज को सर्वत्र पाता है व्याप्त । 1909

518. புண்ணிய மாமவர் தம்மைப் புதைப்பது
நண்ணி யனல்கோக்கில் நாட்டில் அழிவாகும்
மண்ணி லழியில் அலங்கார பங்கமாம்
மண்ணுல கெல்லா மயங்குமனல் மண்டியே. 1912

पुण्णियमामवर् तम्मैप् पुदैप्पदु
नण्णियनल् कोक्किल् नाट्टिल् अऴिवागुम्
मण्णिलऴियिल् अलङ्कार पङ्गमाम्
मण्णुलकेल्ला मयङ्गुमनल् मण्डिये । मंत्र-संख्या, 1912

पुण्यकर्म है ज्ञानी के शरीर को
गाड़ना विधिवत्
जब वे चिरसमाधि लेते हैं,
अग्नि-संस्कार यदि किया जाए
नष्ट होते हैं ग्राम-नगर
संस्कार बिन सड़ने दें मिट्टी में
होगा भयंकर उत्पात देश में
महामारी, अग्निबाधा, सर्वनाश । 1912

519. உதயத்தில் விந்துவில் ஓங்குகுண் டலியும்
உதயக் குடிலில் வயிந்தவம் ஒன்பான்
விதியிற் பிரமாதி கள்மிகு சத்தி
கதியிற் கரணங் கலைவை கரியே. 1923

उदयत्तिल् विन्दुविल् ओङ्गु कुंडलियम्
उदयक् कुडिलिल् वयिन्तवम् ओन्पान्
विदियिर् पिरमादिकळ् मिगु सत्ति
गतियिर् करणम् कलैवै करिये । मंत्र-संख्या, 1923

सृष्टि के प्रारंभ में
उदित हुई कुंडलिनी परबिंदु में
कुंडलिनी से प्रकट हुए पराकाश में
नव - देव - सम्मिलित जिनमें हैं
ब्रह्मादि देव निज शक्तियों के संग,
फिर प्रकट हुए चार करण, पंच कलाएं
और वैखरी नाद । 1923

520. செய்திடும் விந்துபே தத்திறன் ஐயைந்துஞ்
செய்திடு நாதபே தத்திற் னாலாறுஞ்
செய்திடு மற்றவை யீரிரண் டிற்றிறஞ்
செய்திடு மாறாது சேர்தத் துவங்களே. 1924

चेय्दिडुम् विन्दु बेदत्तिऱन् ऐयैन्दुम्
चेय्दिडु नाद बेदत्तिऱ् नालारुम्
चेय्दिडु मट्रवै ईरिरंडिट्रिऱम्
चेय्दिडु माऱादु चेर् तत्तुवंगळे । मंत्र-संख्या, 1924

निराकार रूप में हैं
शक्ति, शिव, नाद, बिंदु
सृष्टि के उत्तरोत्तर विकास में
बिन्दु के होते हैं पच्चीस भेद
और नाद के दस भेद

शेष दो शक्ति और शिव
रहते अपरिवर्तित
करते हैं सक्रिय नाद-बिंदु को । 1924

521. வந்திடு பேத மெலாம்பர விந்து
தந்திடு மாமாயை வாகேசி தற்பரை
உந்து குடிலையோ டேமுறு குண்டலி
விந்துவில் இந்நான்கு மேவா விளங்குமே. 1925

वन्दिडु बेदमॅलाम् पर विन्दु
तन्दिडु मामायै वाकेशि तर्परै
उन्दु कुडिलैयोडे मुरु कुण्डलि
विन्दुविल् इन्नान्गु मेवा विलंगुमे । मंत्र-संख्या, 1925

ये सारे पच्चीस भेद
महामाया के कार्य हैं
जो स्वयं प्रकट होती है पर-बिंदु में,
उत्पन्न होती हैं चार शक्तियाँ - बिंदु से
वागेशी, तत्परा, कुटिला
और कुण्डलिनी ।· 1925

522. வித்தினி லன்றி முளையில்லை அம்முளை
வித்தினி லன்றி வெளிப்படு மாறில்லை
வித்தும் முளையும் உடனன்றி வேறல்ல
அத்தன்மை யாகும் அரனெறி காணுமே. 1932

वित्तिनिलन्ऱि मुळैयिल्लै अम्मुळै
वित्तिनिलन्ऱि वॅळिप्पडुमाऱिल्लै
वित्तुम् मुळैयुम् उडनन्ऱि वेऱल्लै
अत्तन्मैयागुम् अरनॅऱि काणुमे । मंत्र-संख्या, 1932

बीज में समाया है अंकुर
और निकलता है वह बीज से

बीज के बिना नहीं है अस्तित्व
अंकुर का
निकलने के बाद
बीज के साथ-साथ रहने पर भी
अंकुर बीज से अभिन्न है,
यही सत्य है
शिव और बिंदु के विषय में भी । 1932

523. இரத முதலான ஏழ்தாது மூன்றின்
உரிய தினத்தின் ஒருபுற் பனிபோல்
அரிய துளிவிந்து வாகுமேழ் மூன்றின்
மருவிய விந்து வளருங்கா யத்திலே. 1934

इरद मुदलान एऴ्तादु मून्ऱिऩ्
उरिय दिनत्तिऩ् ओरुपुऱ् पनिपोल्
अरिय तुळि विन्दुवागुमेऴ् मून्ऱिऩ्
मरुविय विन्दु वळरुम् कायत्तिले । मंत्र-संख्या, 1934

पुरुष के शरीरस्थ
रसादि सप्तधातुओं में से
रस, रुधिर और शुक्र तीनों
संसक्त होते हैं
और बिंदु का रूप लेते हैं
उचित दिन पाकर,
देखने में यह ओस कण-सा होता है
इस तरह बना बिंदु
संवर्धित होता रहता है काया में
इक्कीस दिन तक
तब पूर्णता पाता है । 1934

524. ஒழியாத விந்து வுடன்நிற்க நிற்கும்
அழியாப் பிராணன் அதிபலஞ் சத்தி

ஒழியாத புத்தி தபஞ்செப மோனம்
அழியாத சித்தியுண் டாம்விந்து வற்றிலே. 1948

ऑऴियाद विन्दु वुडन् निर्क निर्कुम्
अऴियाप् पिराणन् अतिबलम् सत्ति
ऑऴियाद पुत्ति तपम् जपमोनम्
अऴियाद सित्ति युण्डाम् विन्दु वट्रिले । मंत्र-संख्या, 1948

बिंदुरक्षण प्राणरक्षण है
काया में यदि बचाए रखें बिंदु को.
जीवन का होता नहीं ह्रास
अमित शक्ति तेजोबल मेधा
तप, ध्यान, मौन में निष्ठा के साथ
सिद्धियों का लाभ
सब कुछ होता है उपलब्ध
यदि बिंदु मूलाधार की अग्नि में
सूख कर मिल जाता है होकर काया में एकाकार । 1948

525. வற்ற அனலைக் கொளுவி மறித்தேற்றித்
துற்ற கழியனல் சொருகிச் சுடருற்று
முற்று மதியத் தமுதை முறைமுறை
செற்றுண் பவரே சிவயோகி யாரே. 1949

वट्र अनलैक् कॊळुवि मरित्तेट्रित्
नुट्र चुऴियनल् चॊरुगिच् चुडरुट्रु
मुट्रु मदियत्तमुदै मुऱै मुऱै
चॆट्रुएण्पवरे शिवयोगियारे । मंत्र-संख्या, 1949

शिवयोगी वह
जो मूलाधार की वह्नि में
सुखा लेता है बिंदु को,

सुषुम्ना मार्ग से
चढ़ा लेता है भ्रूमध्य में
वहाँ पर पीता है अमृत, जो
सोममंडल में निःसृत होता है
अखंडित रूप से लगातार
करता रहता है कनकाभ शरीर
अमृतपान से अमर बनता है
युग-युग तक । 1949

526. காலங் கடந்தவன் காண்விந்து செற்றவன்
காலங் கடந்தழிந் தான்விந்து செற்றவன்
காலங் களின்விந்து செற்றுற்ற காரிகை
காலின்கண் வந்த கலப்பறி யாரே. 1954

कालम् कडन्दवन् काण् विन्दु चॅट्रवन्
कालम् कडन्दऴिन्दान् विन्दु चॅट्रवन्
कालङ्कळिन् विन्दु चॅट्ररुट्र कारिकै
कालिन्कण् वन्द कलप्पऱियारे । मंत्र-संख्या, 1954

कालजयी होता है वह
जो बिंदुजयी होता है
बिंदु यदि हो वृथा तो
मृत्यु निश्चित है कालपूर्व ही,
सामान्य जन को ज्ञात नहीं है
बिंदु पर हो जाए विजय
काल पर वह मिलता है
शक्ति से – कुंडलिनी से –
एकाकार होकर उसके साथ
जीत सकते हैं काल को । 1954

527. சாற்றிய விந்து சயமாகுஞ் சத்தியால்
ஏற்றிய மூலத் தழலை யெழமூட்டி

நாற்றிசை யோடா நடுநாடி நாதத்தோ
டாற்றி யமுதம் அருந்தவிந் தாமே. 1962

चाट्रिय विन्दु जयमागुम् सत्तियाल्
एट्रिय मूलत्तऴलै यॅऴ मूट्टि
नाट्रिशैयोडा नडुनाडि नादत्तो
डाट्रियमुदम् अरुन्द विन्दामे । मंत्र-संख्या, 1962

कुंडलिनी योग से बिंदुजय होता है
मूलाधार में करें प्रज्वलित वह्नि को
तब बिंदु को शक्ति के साथ मिलाकर
चढ़ा दें सुषुम्ना-मार्ग से
भ्रूमध्य तक,
उसके ऊपर चंद्रमंडल में
बिंदु का योग होता है नाद से
अमृत से प्रक्षालित
कायिक बिंदु परिणत होता है
दिव्य बिंदु में । 1962

528. விந்துவும் நாதமும் மேவி யுடன்கூடிச்
சந்திர னோடே தலைப்படு மாயிடில்
அந்தர வானத் தமுதம்வந் தூறிடும்
அங்குதி மந்திரம் ஆகுதி யாகுமே. 1971

बिन्दुवुम् नादमुम् मेवि युडन् कूडिच्
चन्तिरनोडे तलैप्पडुमायिडिल्
अन्तर वानत्तमुदम् वन्दूऱिडुम्
अङ्गुदि मन्तिरम् आहुतियागुमे । मंत्र-संख्या, 1971

हो जाए संयोग
बिंदु और नाद का
चंद्रमंडल में

वर्षित होता है तब
सहस्रार से अमृत
अजस्रधार सा
उस पावन वेला में
आहुति बनता है
प्रणव का महामंत्र । 1971

529. பகலவன் மாலவன் பல்லுயிர்க் கெல்லாம்
புகலவ னாய்நின்ற புண்ணிய நாதன்
இகலற ஏழுல கும்முற வோங்கும்
பகலவன் பல்லுயிர்க் காதியு மாமே. 1976

पगलवन् मालवन् पल्लुयिर्क्कॅल्लाम्
पुगलवनाय् निन्र् पुण्णिय नादन्
इगलर् एऴ् ुलगुम् मुर्वोङ्गुम्
पगलवन् पल्लुयिर्क् कादियुमामे । मंत्र-संख्या, 1976

संरक्षण में रत होने से
आदित्य विष्णु है
वह आदिनाथ शिवस्वरूप भी है
जो सकल सृष्टि का एकमेव शरण्य है
और जो बरसाता है सुख-समृद्धि
सातों लोक में
वह आदिदेव है समस्त जीव का । 1976

530. தானே யுலகுக்குத் தத்துவ னாய்நிற்குந்
தானே யுலகுக்குத் தையலு மாய்நிற்குந்
தானே யுலகுக்குச் சம்புவு மாய்நிற்குந்
தானே யுலகுக்குத் தண்சுட ராகுமே. 1978

ताने युलगुक्कुत् तत्तुवनाय् निर्कुम्
ताने युलगुक्कुत् तैयलुमाय् निर्कुम्
ताने युलगुक्कुच् चम्बुवमाय् निर्कुम्
ताने युलगुक्कुत् तण्चुडरागुमे । मंत्र-संख्या, 1978

भासित है शिवस्वरूप सूर्य
स्थित रहता है वह सकल जगत् के तत्व रूप में
स्थित रहता है वह जगत् की शक्ति रूप में
स्थित रहता है वह स्वयंभू रूप में
स्थित रहता है वही शीतकिरण के रूप में । 1978

531. பாருக்குக் கீழே பகலோன் வரும்வழி
பாருக்குங் காணவொண் ணாதஅரும்பொருள்
நீருக்குந் தீக்கும் நடுவே யுதிப்பவன்
ஆருக்கும் எட்டாத ஆதித்தன் தானே. 1982

पारुक्कुक् कीऴे पगलोन् वरुम् वऴि
यारुक्कुम् काण वॊण्णाद अरुम् पॊरुळ्
नीरुक्कुम् तीक्कुम् नडुवे युदिप्पवन्
आरुक्कुम् ऍट्टाद आदित्तन् ताने । मंत्र-संख्या, 1982

सूर्य जब संचार करता है
'मूलाधार' पृथ्वी के नीचे
अपने मार्ग में
वह किसी के दृष्टिपथ में नहीं पड़ता
अदृश्य रहता है
'मणिपूरक' अग्नि और
'स्वाधिष्ठान' जलमंडल के मध्य में । 1982

532. நின்றும் இருந்தும் கிடந்தும் நடந்தும்
கன்றாய நந்திக் கருத்துள் இருந்தனன்
கொன்று மலங்கள் குழல்வழி யோடிட
வென்று விளங்கும் விரிசுடர் காணுமே. 1985

निन्ऱुम् इरुन्दुम् किडन्दुम् नडन्दुम्
कन्ऱाय नन्दिक् करुत्तुळ् इरुन्दनन्
कॊन्ऱु मलङ्गळ् कुऴाल् वऴि योडिड
वॆन्ऱु विळङ्गुम् विरिचुडर् काणुमे । मंत्र-संख्या, 1985

जीव की हर स्थिति में
चाहे वह खड़ा रहे, बैठे, लेटे या चले
हृदय में नन्दी रहता है
उसके साथ में
नन्दी कृपा से
मलों को मारकर
पिंडादित्य – जीवसूर्य –
सुषुम्ना मार्ग से चढ़ता है ऊपर
सहस्रार में मिल जाता है
विशाल ज्योतिर्मय सूर्य से । 1985

533. ஆதித்தன் ஓடி யடங்கும் இடங்கண்டு
சாதிக்கஃ வல்லவர் தம்மை யுணர்ந்தவர்
பேதித் துலகம் பிதற்றும் பிதற்றெல்லாம்
ஆதித்த னோடே யடங்குகின் றாரே. 1986

आदित्तन् ओडि यडङ्गुम् इडम्कण्डु
चादिक्क वल्लवर् तम्मै युणर्न्दवर्
पेदित्तुलगम् पिदट्रुम् पिदट्रॆल्लाम्
आदित्तनोडे यडङ्गुकिन्रारे । मंत्र-संख्या, 1986

तीव्रगति प्राणशक्ति
सुषुम्ना में चलकर ज्योति से मिलती है जहाँ
उस स्थल को जो देख सकते हैं
उन्हें होता है आत्मबोध
वही कालजयी होते हैं;
इसके विपरीत
जो लोग बढ़-चढ़ कर करते मिथ्याज्ञान की चर्चा
वे डूबे हुए हैं अंधकार में
बाह्य सूर्य के समान वे डूब जाते हैं
काल पाकर मृत होते हैं । 1986

534. எறிகதிர் ஞாயிறு மின்பனி சோரும்
எறிகதிர் சோமன் எதிர்நின் றெறிப்ப
விரிகதி ருள்ளே வியங்குமென் ஆவி
ஒருகதி ராகில் உவாவது வாமே. 1988

ऍऱिकदिर् ञायिरु मिन्पनि चोरुम्
ऍऱिकदिर् सोमन् ऍदिर्निन्ऱॅरिप्प
विरिकदिरुळ्ळे वियङ्गुमॅन् आवि
ऑरु कदिरागिल् उवावदुवामे । मंत्र-संख्या, 1988

पूर्णकला के साथ जब चंद्रमा
बिखेरता है निज शीत किरण
थक जाता है प्रचंड भानु
हिमकण जैसा शीतल बन जाता है
यही पूर्णिमा की शोभा है;
इसी भांति
चंद्रमंडल में जब अमृतवर्षा होती है
मेरी प्राणशक्ति का सूर्य निस्पंद रहता है
उसके अंदर से किरण फूटती है
योगी के जीवन की पूर्णिमा यही है । 1988

535. ஒன்பதின் மேவி யுலகம் வலம்வரும்
ஒன்பது மீசன் இயலறி வாரில்லை
முன்பதில் மேவி முதல்வன் அருளிலார்
இன்ப மிலாரிருள் சூழநின் றாரே. 1992

ऑन्पदिन् मेवि युलगम् बलम्वरुम्
ऑन्पदुम् ईशन् इयलबरिवारिल्लै
मुन्बदिन् मेवि मुदल्वन् अरुळिलार्
इन्बमिलारिरुळ् चूळनिन्ऱारे । मंत्र-संख्या, 1992

परिक्रमा कर रहे हैं
नवग्रह निज निज ग्रह-कक्ष में

अनंत काल से घूम रहे हैं
बिना जाने परमेश्वर की महिमा
इन पर विश्वास करके
परमेश्वर के अनुग्रह को भूलनेवाले
भला क्या फल पाएँगे ?
वे भी भ्रमित रहेंगे अंधकार में
नवग्रहों की भांति ही । 1992

536. பொய்யிலன் மெய்யன் புவனா பதியெந்தை
மையிருள் நீங்கு மதிமயங்கி ஞாயிறு
செய்யிருள் நீக்குந் திருவுடை நந்தியென்
கையிருள் நீங்கக் கலந்தெழுந் தானே. 1996

पॉय्यिलन् मॅय्यन् पुवनापति यॅन्तै
मैयिरुळ् नीक्कु मतिमयङ्कि ञायिरु
चॅय्यिरुळ् नीक्कुम् तिरुवुडै नन्दियॅन्
कैयिरुळ् नीङ्गक् कलन्दॅऴुन्दाने । मंत्र-संख्या, 1996

सत्यस्वरूप है परमेश्वर
मिथ्या नहीं है
वही समस्त भुवनों का पति है
अनुग्रह करनेवाला तात;
वही सूर्य है, वही चंद्रमा, वही है अग्नि,
अंधकार को करता ध्वस्त
वही है नन्दी, वही परमेश्वर
दूर करता है अज्ञान और कर्मबंधन । 1996

537. தனிச்சுட ரெற்றித் தயங்கிருள் நீங்க
அனித்திடு மேலை யருங்கனி யூறல்
கனிச்சுட ராய்நின்ற கயிலையில் ஈசன்
நனிச்சுடர் மேல்கொண்ட வண்ணமு மாமே. 1997

तनिच्चुडरंद्रित् तयङ्गिरुळ् नीङ्ग
अनित्तिडु मेलै यरुड्कनि यूरल्
कनिच्चुडराय् निन्र् कयिलैयिल् ईशन्
ननिच्चुडर् मेल्कोण्ड वण्णमुमामे । मंत्र-संख्या, 1997

अपनी अनुपम किरणों से
दूर किया देव-देव ने मेरा अंधकार
फैली ज्ञान की ज्योति
दिव्यफल से मधु हुआ निःसृत
कृपापूर्ण किरणों के साथ
भासित है मेरे अंतर् में
कैलासनाथ ज्योति बन कर । 1997

538. மண்டலத் துள்ளே மலர்ந்தெழும் ஆதித்தன்
கண்டிடத் துள்ளே கதிரொளி யாயிடுஞ்
சென்றிடத் தெட்டுத் திசையெங்கும் போய்வரும்
நின்றிடத் தேநிலை நேரறி வார்க்கே. 1999

मण्डलत्तुळ्ळे मलर्न्दॆऴुम् आदित्तन्
कण्डिडत्तुळ्ळे कदिरॊळियायिडुम्
चॆन्रिडत्तॆट्टुत् तिशैयॆङ्गुम् पोय्वरुम्
निन्रिडत्ते निलै नेररि वार्क्के । मंत्र-संख्या, 1999

आकाशमंडल में उदित होता है जब सूर्य
सब दिशाओं में फैल जाता है प्रकाश
इसी भांति
मूलाधार से उठता है प्राणशक्ति का सूर्य
विशुद्धि में पहुँच कर होता है भासित
सब दिशाओं में
ईश के अनुग्रह से
अपने ही स्थान पर बैठे-बैठे हो जाता है सब ज्ञात । 1999

539. நாபிக்கண் ணாசி நயன நடுவினுந்
தூபியோ டைந்துஞ் சுடர்விடு சோதியைத்
தேவர்கள் ஈசன் திருமால் பிரமனும்
மூவரு மாக வுணர்ந்திருந் தாரே. 2000

नाबिक्कण्णाशि नयन नडुविनुम्
तूबियोडैन्दुम् चुडर् विडु जोतियैत्
देवर्गळ् ईशन् तिरुमाल् पिरमनुम्
मूवरुमाग उणर्न्दिरुन्दारे । मंत्र-संख्या, 2000

नाभि, नयन, नासाग्र,
भ्रूमध्य और शिरोमध्य में
विराजे हैं प्रभु ज्योतिरूप में
देवगण इन्हें देखते हैं
त्रिदेव के रूप में
ब्रह्मा, विष्णु और ईश के रूप में । 2000

540. அன்றிய பாச இருளுமஞ் ஞானமுஞ்
சென்றிடு ஞானச் சிவப்பிர காசத்தால்
ஒன்று மிருசுட ராம்அரு ணோதயந்
துன்றிருள் நீங்குதல் போலத் தொலைந்ததே. 2001

अऩ्रिय पाश इरुळुम् ज्ञानमुम्
चॆन्ऱिडु ज्ञान शिव प्रकाशत्ताल्
ओऩ्र मिरुचुडराम् अरुणोदयम्
तुऩ्रिरुळ् नींगुदल् पोलत् तॊलैन्ददे । मंत्र-संख्या, 2001

विकीर्ण होता है जब
ज्ञान-सूर्य का प्रकाश
तिरोधान हो जाता है
तिमिर पाश का, अज्ञान का,
जैसे कि होने पर अरुणोदय
टिकता नहीं अंधकार,

भासित होता है चन्द्र, सूर्य भी
शिवादित्य की ज्योति से । 2001

541. கடங்கடந் தோறுங் கதிரவன் தோன்றில்
அடங்கிட மூடில் அவற்றில் அடங்கான்
விடங்கொண்ட கண்டனு மேவிய காயத்
தடங்கிட நின்றதும் அப்பரி சாமே. 2002

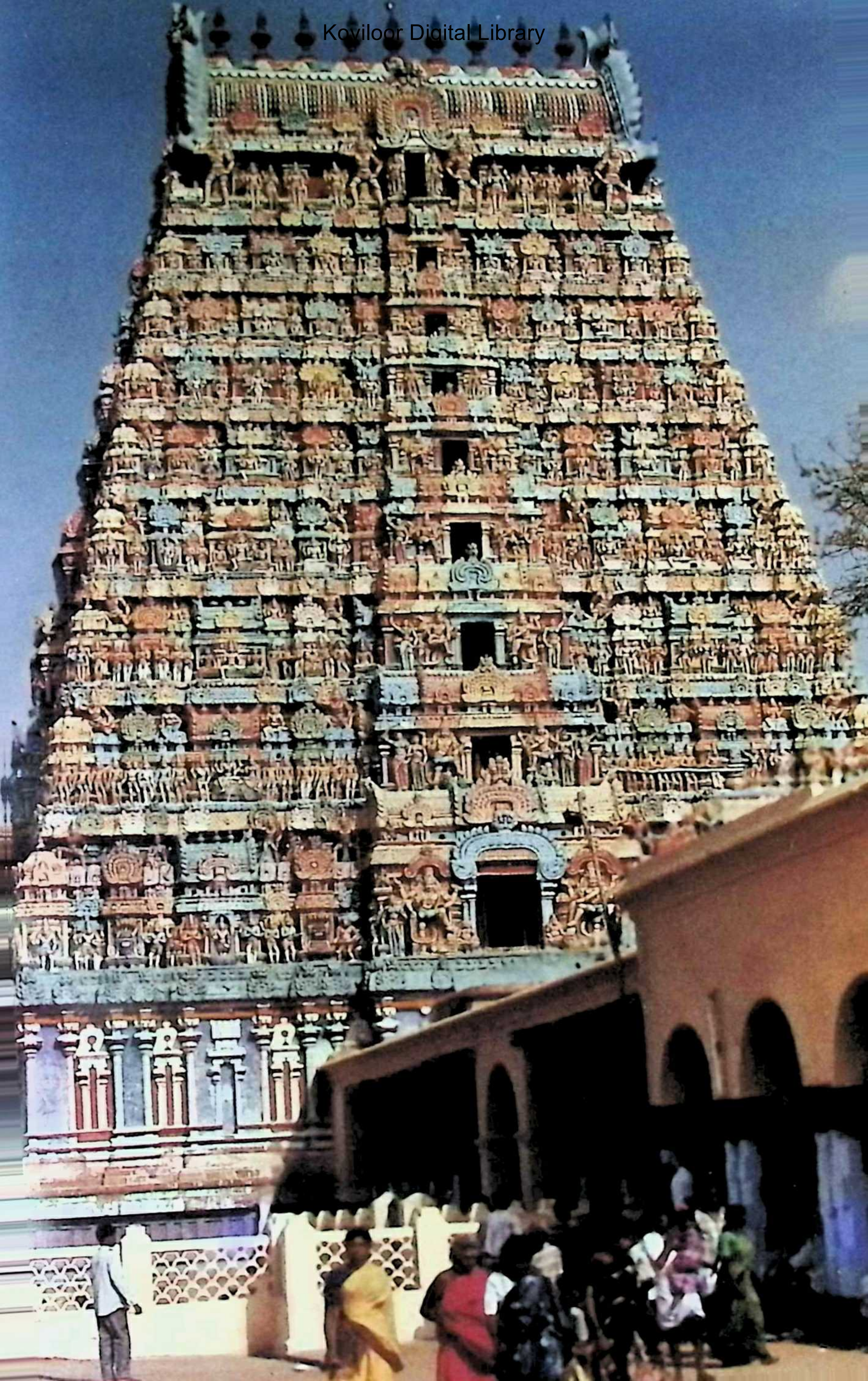
कडम् कडम् तोरुम् कदिरवन् तोन्रिल्
अडङ्गिड मूडिल् अवट्रिल् अडङ्गान्
विडङ्कोण्ड कण्डनु मेविय कायत्तु
अडङ्गिड निन्ऱदुम् अप्परिसामे । मंत्र-संख्या, 2002

प्रतिबिंबित है सूर्य प्रति घट में
ढक कर देखो समाए नहीं घट में
नीलकंठ महादेव भी घट-घट वासी हैं
अंतर्यामी वे व्याप्त हैं
भीतर बाहर सर्वत्र । 2002

542. தானே விரிசுடர் மூன்றுமொன் றாய்நிற்குந்
தானே யயன்மா லெனநின்று தாபிக்குந்
தானே யுடலுயிர் வேறன்றி நின்றுளன்
தானே வெளியொளி தானிருட் டாமே. 2003

ताने विरिचुडर् मून्रुमोन्राय् निर्कुम्
ताने अयन् मालॅन निन्रु तापिक्कुम्
ताने उडलुयिर् वेऱन्रि निन्रुळन्
ताने वॆळियॊळि तानिरुट्टामे । मंत्र-संख्या, 2003

भासित है वही शिवादित्य
अग्नि, इंदु, भानु – तीन ज्योति में
उसी ज्ञान-भानु के स्वरूप हैं
शिव, विरिंचि, विष्णु भी



கும்பகோணம்
कुंभकोणम् , श्री कुंभेश्वर मंदिर
Kumbakonam Sri. Kumbeswarar Temple

देह ओर देही बनकर
खड़ा वही है अभिन्न
स्थित है वही
पराकाश, प्रकाश और तम रूप । *2003*

543. தெய்வச் சுடரங்கி ஞாயிறுந் திங்களும்
வையம் புனல்அனல் மாருதம் வானகஞ்
சைவப் பெரும்பதி தாங்கிய பல்லுயிர்
ஐவர்க் கிடமிடை யாறங்க மாமே. *2004*

दॅय्वच् चुडरंगि ञायिरु तिङ्गळुम्
वैयम् पुनल् अनल् मारुदम् वानगम्
शैवप् पॅरुम्पति तांत्रिय पल्लुयिर्
ऐवर्क्किडमिडै आऱङ्गमामे । *मंत्र-संख्या, 2004*

निवास-क्षेत्र है शिवादित्य का,
त्रिज्योति – अग्नि इन्दु भानु –
पंचतत्व और अगणित जीवराशि
इन नौ स्थानों के संग
शिवादित्य प्रेम से रमता है
पंच-देव और चतुर्वेद में भी । *2004*

544. உன்னும் அளவில் உணரும் ஒருவனைப்
பன்னு மறைகள் பயிலும் பரமனை
என்னுள் இருக்கும் இளையா விளக்கினை
அன்ன மயமென் றறிந்துகொண் டேனே. *2005*

उन्नुम् अळविल् उणरुम् ऑरुवनैप्
पन्नु मऱैगळ् पयिलुम् परमनै
ऍन्नुळ् इरुक्कुम् इळैया विळक्किनै
अन्नमयमॅन् ऱऱिन्दु कॉण्डेने । *मंत्र-संख्या, 2005*

अनुभव-वेद्य होता है
ध्यान करने मात्र से;

नहीं थकते स्तुतिगान करते
चतुर्वेद उस परात्पर की;
भासमान है मेरे हृदय में
अनुग्रह-ज्योति रूप में
तिर रहा है मेरे मानस में
अनोखा दिव्य-हंस । 2005

545. அன்ன மிரண்டுள ஆற்றங் கரையினில்
துன்னி யிரண்டுந்த துணைப்பிரி யாதன்னந்
தன்னிலை யன்னந் தனியொன்ற தென்றக்கால்
பின்ன மடவன்னம் பேறணு காதே. 2006

अन्नमिरण्डुळ आट्रङ्करैयिनिल्
तुन्नियिरण्डुम् तुणैपिरियादन्नम्
तन्निलै यन्नम् तनियोन्ऱदेन्ऱक्काल्
पिन्न मडवन्नम् पेऱणुहादे । मंत्र-संख्या, 2006

जीवन की नदिया के तट पर
संग-संग बैठे हैं दो हंस
(एक जीव है एक ब्रह्म)
एक पंछी मान ले यदि
मेरा अस्तित्व है पृथक्
मूर्ख है, मुक्ति का अनधिकारी है । 2006

546. வைகரி யாதியு மாயா மலாதியும்
பொய்கரி யான புருடாதி பேதமும்
மெய்கரி ஞானங் கிரியை விசேடத்துச்
செய்கரி யீசன் அனாதியே செய்ததே. 2007

वैकरि यादियु माया मलादियुम्
पॉय्करि यान पुरुडादि बेदमुम्
मॅय्करि ज्ञानम् किरिया विशेडत्तुच्
चॅय्करि इशन् अनादिये चॅयददे । मंत्र-संख्या, 2007

परमदया से ईश ने
रच रखा है सारा विधान
जीव की शुद्धि और मुक्ति के हित
वैखर्यादि चतुर्गिरा
मायामल रूपी पंचक्लेश
पुरुष प्रभृति सप्ततत्व
जब तक प्रक्रिया चलती है
जीव के भोक्तृत्व की
तब तक साक्षी रहता है शिवगुरु । 2007

547. அணுவில் அணுவினை ஆதிப் பிரானை
அணுவில் அணுவினை ஆயிரங் கூறிட்
டணுவில் அணுவை அணுகவல் லார்கட்
கணுவில் அணுவை அணுகலு மாமே. 2008

अणुविल् अणुविनै आदिप्पिरानै
अणुविल् अणुविनै आयिरम् कूरिट्टु
अणुविल् अणुवै अणुग वल्लार्कट्कु
अणुविल् अणुवै अणुगलुमामे । मंत्र-संख्या, 2008

अणु का भी अणु है आदिदेव
अणु को भेदते भेदते
जो कर सके सहस्र भाग
वही पा सकता है उसकी थाह
अणोरणीयान् है प्रभु
सब का मूल-स्रोत । 2008

548. மேவிய சீவன் வடிவது சொல்லிடில்
கோவின் மயிரொன்று நூறுடன் கூறிட்டு
மேவிய கூறது ஆயிர மாயினால்
ஆவியின் கூறுநூ றாயிரத் தொன்றே. 2011

मेविय जीवन् वडिवदु चॉल्लिडिल्
कोविन् मयिरॉन्रु नूरुडन् कूरिट्टु
मेविय कूरदु आयिर मायिनाल्
आवियिन् कूरु नूरायिरत्तॉन्रे । मंत्र-संख्या, 2011

जानोगे जीव का स्वरूप है कैसा
गौ का इक रोम लो, करो शतधा,
उसके एक भाग को करो सहस्रधा
जीव का यही परिमाण है
गौ के रोम का शतसहस्र भाग । 2011

549. கற்ற பசுக்கள் கதறித் திரியினுங்
கொற்ற பசுக்கள் குறிகட்டி மேயினு
முற்ற பசுக்கள் ஒருகுடம் பால்போது
மற்றைப் பசுக்கள் வறள்பசு தானே. 2015

कट्र पशुक्कळ् कदरित् तिरियिनुम्
कॉट्र पशुक्कळ् कुरिकट्टि मेयिनु
मुट्र पशुक्कळ् ऑरु कुडम् पाल्पोदु
मट्रैप पशुक्कळ् वरळ्पशु ताने । मंत्र-संख्या, 2015

भांति-भांति के पशु हैं जग में
गाल बजाते हैं पंडित पशु
जो भूले हैं अधिकार-मद में
विरुद पाते हैं दिशि-दिशि घूमकर;
शिवज्ञान में पूर्ण हैं जो
अचंचल रहते हैं
दुग्ध से परिपूर्ण घट समान
जगत् के आधार हैं यही
शेष सारे पशु वंध्य हैं वृथा हैं । 2015

550. கொல்லையின் மேயும் பசுக்களைச் செய்வதென்
எல்லை கடப்பித் திறைவ னடிகூட்டி
வல்லசெய் தாற்ற மதித்தபின் அல்லது
கொல்லைசெய் நெஞ்சங் குறிப்பறி யாதே. 2016

कॉल्लैयिन् मेयुम् पशुक्कळैच् चॆय्वदॆन्
ऍल्लै कडप्पित्तिऱैवनडि कूट्टि
वल्ल चॆय्दाट्र मदित्तपिन् अल्लदु
तॉल्लै चॆय् नॆञ्जम् कुऱिप्पऱियादे । मंत्र-संख्या, 2016

इन गायों का होगा कैसे उद्धार
चर रही हैं जो विषयसुख पिछवाड़े में सानंद
ईश-कृपा से निकालें वहाँ से, लगाएँ ईश-चरणों पर
इस युक्ति के बिना इनका नहीं होगा उद्धार । 2016

551. சீவ னெனச்சிவ னென்னவே றில்லை
சீவ னார்சிவ னாரை யறிகிலர்
சீவ னார்சிவ னாரை யறிந்தபின்
சீவ னார்சிவ னாயிட் டிருப்பரே. 2017

जीवर्नंनच् चिवर्नंन वेऱिल्लै
जीवनार् शिवनारै अऱिगिलर्
जीवनार् शिवनारै अऱिन्दपिन्
जीवनार् शिवनायिट्टिरुप्परे । मंत्र-संख्या, 2017

पृथक् नहीं हैं जीव और शिव
पर जीव नहीं जानता शिव को
जैसे ही जीव जान लेगा शिव को
जीव स्वयं विराजेगा शिव बन कर । 2017

552. குணவிளக் காகிய கூத்தப் பிரானும்
மணவிளக் காகிய மன்னுயிர்க் கெல்லாம்
பணவிளக் காகிய பல்தலை நாகங்
கணவிளக் காகிய கண்காணி யாகுமே. 2018

कुणविळक्कागिय कूत्तप्पिरानुम्
मण विळक्कागिय मन्नुयिर्क्कॆल्लाम्
पण विळक्कागिय पल्तलै नागम्
कण विळक्कागिय कण्काणि यागुमे । मंत्र-संख्या, 2018

अनुग्रह-ज्योति है नटराजराज
जीव-जंगत् के लिए आनन्दज्योति
हो रही है विकीर्ण नाना-रत्न-ज्योति,
नाथ के नाग-आभरण से
कर रहा है पर्यवेक्षण
जीव की गतिविधियों का
निपट रहा कैसे मन-दीप-प्रकाश में
पंचमुखी इन्द्रियनाग से । 2018

553. அறிவாய் அறியாமை நீங்கி யவனே
பொறிவாய் ஒழிந்தெங்குந் தானான போதன்
அறிவா யவற்றினுட் டானா யறிவன்
செறிவாகி நின்றஅச் சீவனு மாகுமே. 2019

अऱिवाय् अऱियामै नीङ्गियवने
पॊऱिवाय् ऒऴिन्दॆङ्गुम् तानान पोदन
अऱिवायवट्रिनुट्ट् टानायऱिवन्
चॆऱिवागि निन्ऱ अच्चीवनुमामे । मंत्र-संख्या, 2019

ज्ञानस्वरूप प्रभु परे है अज्ञान से
अतीन्द्रिय वह, सर्वज्ञ स्वयंबोध है;
स्वयं ज्ञान और ज्ञाता बनकर
जीव-जगत् में परिव्याप्त
वह स्वयं जीव भी है । 2019

554. ஆறாறின் தன்மை அறியா திருந்தேனுக்
காறாறின் தன்மை அறிவித்தான் பேர்நந்தி

ஆறாறின் தன்மை அருளால் அறிந்தபின்
ஆறாறுக் கப்புற மாகிநின் றானே. 2020

आऱारिऩ् तन्मै अऱियादिरुन्देनुक्कु
आऱारिऩ् तन्मै अऱिवित्ताऩ् पेऱ् नन्दी
आऱारिऩ् तन्मै अरुळाल् अऱिन्द पिऩ्
आऱारुक्कप्पुऱ मागि निऩ्ऱाने । मंत्र-संख्या, 2020

मर्म नहीं जानता था छत्तीस तत्वों का
समझाया मुझे आचार्य नन्दी ने,
हो गए ज्ञात अभिलक्षण
समस्त तत्वों के गुरुकृपा से
परमेश्वर तब तत्वातीत बन गया
दर्शन दिया तत्वों से परे रहकर । 2020

555. சிவமா கியஅருள் நின்றறிந் தோரார்
அவமா மலமைந்து மாவ தறியா
தவமான செய்து தலைப்பறி கின்றார்
நவமான தத்துவ நாடகி லாரே. 2021

शिवमागिय अरुळ् निऩ्ऱऱिन्दोराऱ्
अवमा मलमैन्दु माव दऱिया
तवमान चेय्दु तलैप्पऱिकिऩ्ऱाऱ्
नवमान तत्तुव नाडकिलारे । मंत्र-संख्या, 2021

ज्ञान नहीं है इन्हें शिवरूपी अनुग्रह का
ज्ञान नहीं है पंच मलों का
जिनसे पानी है मुक्ति
भ्रमित रहते हैं बहुशाखी तप में
क्रमशः नाना अनुष्ठानों में
भटकते हैं ऐसे,
जान न पाते तत्व जो नित-नवीन है । 2021

556. கருத்தினன் னூல்கற்றுக் கால்கொத்திப் பாகன்
திருத்தலம் பாய்மாத் திகைத்தன்றிப் பாயா
எருத்துற வேறி யிருக்கிலு மாங்கே
வருத்தினும் அம்மா வழிநட வாதே. 2024

करुत्तिनऩ् नूल् कट्रुक् काल्कोत्तिप् पागऩ्
तिरुत्तलम् पाय्मात् तिगैत्तऩ्ऱिप् पाया
ऍरुत्तुऱ वेऱि यिरुक्कुलु माङ्गे
वरुत्तिनुम् अम्मा वऴि नडवादे । मंत्र-संख्या, 2024

सीख लें सकल शास्त्र एकाग्रता से,
अभ्यास करें यौगिक प्राणायाम का,
बाज नहीं आता इंद्रियों का अश्व
अपने अड़ियल स्वभाव से,
जीव रूपी सवार
भले ही डटे रहे उसकी गर्दन पर
देख ले चतुर्विध उपाय करके
नाम नहीं लेता चलने का यह अश्व । 2024

557. புலமைந்து புள்ளைந்து புட்சென்று மேயும்
நிலமைந்து நீரைந்து நீர்மையும் ஐந்து
குலமொன்று கோல்கொண்டு மேயப்பான் ஒருவன்
உலம்வந்து போம்வழி யொன்பது தானே. 2025

पुलमैन्दु पुळ्ळैन्दु पुट्चॅन्ऱु मेयुम्
निलमैन्दु नीरैन्दु नीर्मैयुम् ऐन्दु
कुलमॉन्ऱु कोल् कोणु मेय्प्पाऩ् ऑरुवऩ्
उलम् वन्दु पोम्वऴि ऑन्पदुताने । मंत्र-संख्या, 2025

आधारभूमि इंद्रियों की पांच हैं
ज्ञानेन्द्रिय के पांच पक्षी
उड़कर बैठते हैं
शब्द, रस, गंध आदि पांच क्षेत्र में

कर्मेन्द्रिय-जल पांच हैं
पांच हैं उनकी प्रकृति
यों बहुविध होने पर भी
इनका कुल-समुदाय एक है
अंकुश लेकर चलाने वाला
जीव एक है जो पाता है दुःख
घूम-घूम कर नवद्वार में । 2025

558. அஞ்சுள சிங்கம் அடவியல் வாழ்வன
அஞ்சும்போய் மேய்ந்ததும் அஞ்சுக மேபுகும்
அஞ்சின் உகிரும் எயிறும் அறுத்திட்டால்
எஞ்சா திறைவனை எய்தலு மாமே. 2026

अञ्जुळ शिङ्गम् अडवियिल् वाऴ्वन
अञ्जुम् पोय् मेय्न्ददुम् अञ्जुगमे पुगुम्
अञ्जिन् उगिरुम् ऍयिरुम् अऱुत्तिट्टाल्
ऍञ्जादिऱैवनै ऍय्दलुमागुमे । मंत्र-संख्या, 2026

बसे हैं पाँच सिंह कानन में
शिकार खेलने के बाद नित्य ही
लौटते हैं पांचों अपनी गुफा में
निकाल दें इनके नाखून और दांत
तभी आएँगे ईश के चरण में । 2026

559. குட்ட மொருமுழ முள்ள தரைமுழம்
வட்டம் அமைந்ததோர் வாவியுள் வாழ்வன
பட்டன மீன்பல பரவன் வலைகொணர்ந்
திட்டனன் யாமினி யேதமி லோமே. 2031

कुट्ट मॊरुमुऴ मुळ्ळ तरैमुऴम्
वट्टम् अमैन्ददोर् वावियुळ् वाऴ्वन
पट्टन मीन् पल परवन् वलैकॊणर्न्दु
इट्टनन् यामिनि येदमिलोमे । मंत्र-संख्या, 2031

एक हाथ गहरा बालिश्त भर चौड़ा
ताल, है गोलाकार जिसका मुंह
शरीर-वापी में रहते थे
मीन-तुल्य इंद्रिय
चंचल वे तड़पते-तड़पाते थे
बड़ी कृपा की मछुआरे ने
जाल बिछाया फंस गए मीन
पीड़ा-मुक्त होकर
सो गया मैं योग-मुद्रा में । 2031

560. அஞ்சு மடக்கடக் கென்பார் அறிவிலார்
அஞ்சு மடக்கும் அமரரும் அங்கிலை
அஞ்சு மடக்கில் அசேதன மாமென்றிட்
டஞ்சு மடக்கா அறிவறிந் தேனே. 2033

अंजु मडक्कडक् कॅन्पर् अऱिविलार्
अंजु मडक्कुम् अमररुम् अङ्गिल्लै
अंजु मडक्किल् अचेतन मार्मॅन्ऱिट्
टंजु मडक्का अऱिवऱिन्देने । मंत्र-संख्या, 2033

बोधरहित जन हैं जो कहते हैं बारंबार
'दमन करो इंद्रियों का, दबा दो इन्हें !'
जानते नहीं ये, सर्वथा असंभव है
इन्द्रिय-दमन देवगण के लिए भी;
दमन करो इन्हें निःशेष
तब जड़ ही शेष रहेगा,
उपाय मैंने जान लिया
दबाये बिना पार पाने का उपाय
लगा दिया इन्हें ईश-चरण पर
हो गया ज्ञान-स्वरूप । 2033

561. முழக்கி யெழுவன மும்மத வேழம்
அடக்க அறிவென்னும் கோட்டையை வைத்தேன்
பிழைத்தன வோடிப் பெருங்கேடு மண்டிக்
கொழுத்தன வேழங் குலைக்கின்ற வாறே. 2034

मुऴक्कि ऍऴ्ुवन मुम्मद वेऴम्
अडक्क अऱिवॆन्नुम् कोट्टैयै वैत्तेन्
पिऴैत्तन ओडिप् पॆरुङ्केडु मण्डिक्
कॊऴ्ुत्तन वेऴम् कुलैक्किन्ऱ वाऱे । मंत्र-संख्या, 2034

गरज रहे थे मत्तगज तीनों,
वश में लाने के लिए इन्द्रियों को
रख दिया मैंने बुद्धि का अंकुश उन पर,
काम नहीं बना अंकुश से, बच निकले मत्तगज
निरंकुश बन इन मोटे हाथियों ने
ऊधम जो मचाया क्षति हुई क्षेत्र की बड़ी
दलित हुआ गन्ने का खेत शरीर यह । 2034

562. ஐந்தில் ஒடுங்கில் அகலிட மாவது
ஐந்தில் ஒடுங்கில் அருந்தவ மாவது
ஐந்தில் ஒடுங்கில் அரன்பத மாவது
ஐந்தில் ஒடுங்கில் அருளுடை யாரே. 2035

ऐन्दिल् ऑडुङ्गिल् अगलिडमावदु
ऐन्दिल् ऑडुङ्गिल् अरुन्तवमावदु
ऐन्दिल् ऑडुङगिल् अरन् पदमावदु
ऐन्दिल् ऑडुङ्गिल् अरुलुडैयारे । मंत्र-संख्या, 2035

उदात्तीकरण करो पंचेंद्रिय का
स्वामित्व मिलेगा सकल भुवन का
वही स्थिति है तपःसिद्धि की
लब्ध होंगे उससे दिव्य चरण ईश के
वही जन अधिकारी हैं ईश-अनुग्रह के । 2035

563. பெருக்கப் பிதற்றிலென் பேய்த்தேர் நினைந்தென்
விரித்த பொருட்கெல்லாம் வித்தாவ துள்ளம்
பெருக்கிற் பெருக்குஞ் சுருக்கிற் சுருக்கும்
அருத்தமும் அத்தனை ஆய்ந்துகொள் வார்க்கே. 2036

पॆरुक्कप् पिदट्रिलॆन् पेय्त्तेर् निनैन्दॆन्
विरित्त पॊरुट्कॆल्लाम् वित्ताव दुळ्ळम्
पॆरुक्किर् पॆरुक्कुम् चुरुक्किर् चुरुक्कुम्
अरुत्तमुम् अत्तनै आय्न्दु कॊळ्वार्क्के । मंत्र-संख्या, 2036

मृगमाया से उपमित करें जग को
इस भाँति लंबी-चौड़ी बातें करते रहें
नहीं इसमें सार, सार है यह तथ्य
माया के सकल पदार्थ का बीज
मन है और मन का विचार है,
विस्तार दो इसे होगा विस्तृत
समेट लो तो सिमट जाएगा
यह प्रयोग कर देखो अनुभव से । 2036

564. இளைக்கின்ற வாறறிந் தின்னுயிர் வைத்த
கிளைக்கொன்று மீசனைக் கேடில் புகழோன்
தளைக்கொன்ற நாகமஞ் சாடல் ஒடுக்கத்
துளைக்கொண்ட தவ்வழி தூங்கும் படைத்தே. 2037

इळैक्किन्ऱवाऱ् रिन्दिन्नुयिर् वैत्त
किळैक्कॊन्ऱु मीशनै केडिल् पुगऴोन्
तळैक्कॊन्ऱ नागमंजाडल् ऑडुक्क
तुळैक्कॊण्ड दव्वऴि तूङ्गुम् पडैत्ते । मंत्र-संख्या, 2037

बोध होता है जब जीव को
निज दुर्गति के यथार्थ कारण का
परम-कृपा से प्रकट होता है
ईश अक्षय-कीर्ति का धनी

आधार देने के लिए जीव को
वश में करता है उस सर्पिणी को
पंच फणों वाली जो पड़ी है
मूलाधार में
ऊर्ध्वमुखी बना चला देता है
मध्य सुषिर सुषुम्ना से । 2037

565. பாய்ந்தன பூதங்கள் ஐந்தும் படரொளி
சார்ந்திடு ஞானத் தறியினிற் பூட்டிட்டு
வாய்ந்துகொள் ஆனந்த மென்னும்அருள் செய்யில்
வேய்ந்துகொள் மேலை விதியது தானே. 2038

पाय्न्दन बूतङ्गळ् ऐन्दुम् पडरॊळि
चार्न्दिडु ज्ञानत्तऱियिनिऱ् पूट्टिट्टु
वाय्न्दु कॊळ् आनन्द मॆन्नुम् अरुळ् चॆय्यिल्
वेय्न्दु कॊळ् मेलै विदियदु ताने । मंत्र-संख्या, 2038

दुर्दम हैं पांचों इन्द्रिय
झपटती हैं हर समय बाहर की ओर
इन्हे करो अंतर्मुखी, बांध दो भली-भाँति
ज्ञान के दीप-स्तंभ से
फिर देखो मौन हो जाएंगी
मग्न रहो तब आनन्द में
यही उपाय उत्कृष्ट है
इंद्रियों के दमन का । 2038

566. நடக்கின்ற நந்தியை நாடோறு முன்னில்
படர்க்கின்ற சிந்தையைப் பைய வொடுக்கிக்
குறிக்கொண்ட சிந்தை குறிவழி நோக்கில்
வடக்கொடு தெற்கு மனக் கோயிலாமே. 2039

नडक्किन्ऱ नन्दियै नाडोरु मुन्निल्
पडर्क्किन्ऱ चिन्नैयैप् पैय ऑडुक्किक्

कुऱिक्कॉण्ड चिन्तै कुऱिवऴि नोक्किल्
वडक्कॉडु तॅर्कु मनक्कोयिलामे । *मंत्र-संख्या, 2039*

चित्त की सुरति लगी रहे
प्रत्यक्ष परमेश्वर नन्दी पर
प्रतिदिन प्रतिपल
चहुंदिशि बिखरते चित्त को
एकाग्र करो धीरे-धीरे
चलाओ प्राण को मूलाधार से
ऊपर की ओर सुषुम्ना मार्ग से,
पहुंचकर अनाहत में
देखो लक्ष्य को निर्निमिष नेत्र से
सुन्न-मंडल में प्रकाशित मिलेगा
एक दिव्य मंदिर सुदूर उत्तर से
धुर दक्षिण तक व्याप्त । *2039*

567. மந்திர தந்திர மாயோக ஞானமும்
பந்தமும் வீடுந் தரிசித்துப் பார்ப்பவர்
சிந்தனை செய்யாத் தெளிவியா தூண்பொருட்
டந்தக ராவோர் அசற்குரு வாமே. *2045*

मंतिर तंतिर मायोग ज्ञानमुम्
बन्दमुम् वीडुम् दरिसित्तुप् पार्प्पवर्
चिन्नै चॅय्यात् तॅळिविया तूण्पॉरुट्
टन्तकरावोर् असर्कुरुवामे । *मंत्र-संख्या, 2045*

मंत्र-तंत्र, योग-ज्ञान, बंध-मोक्ष–
इन्हें जानने की प्रवृत्ति नहीं, तत्परता नहीं,
ऐसे गुरु कहलाते हैं असद्गुरु;
चिंतन नहीं करते, दूर नहीं करते
मन का संशय शिष्यों का
भोजन भट्ट हैं, केवल मात्र लक्ष्य है उदर-पूर्ति । *2045*

568. ஆமா றறியாதோன் மூடன் அதிமூடன்
காமாதி நீங்காக் கலதி கலதிகட்
காமா றசத்தறி விப்போன் அறிவிலோன்
கோமா னலசனத் தாகுங் குரவனே. 2046

अमाऱ्ऱियादोऩ् मूडऩ् अतिमूडन
कामादि नीङ्गाक् कलदि कलदिकट्
कामाऱसत्ताऱिविप्पोऩ् अऱिविलोऩ्
कोमा नलचनत्तागुम् कुरवने । मंत्र-संख्या, 2046

मूर्ख है वह जिसे नहीं आता
उद्धार पाने का उपाय,
मूर्ख ही नहीं महामूर्ख है
छूट नहीं पाया है कामादि रिपु से;
विवेक नहीं सदसत् का
ज्ञान शून्य है वह
प्रस्तुत करता है शिष्यों के सामने
मिथ्या को सत्यरूप में
सर्वथा अनादरणीय है, कदर्य है
ऐसा असद्गुरु । 2046

569. குருடர்க்குக் கோல்காட்டிச் செல்லுங் குருடர்
முரணும் பழங்குழி வீழ்வர்கள் முன்பின்
குருடரும் வீழ்வர்கள் முன்பின் னறவே
குருடரும் வீழ்வார் குருடரோ டாகியே. 2048

कुरुडर्क्कुक् कोल्काट्टिच् चॆल्लुम् कुरुडर्
मुरणुम् पऴङ्कुऴि वीऴ् वर्गल् मुऩ्पिऩ्
कुरुडरुम् वीऴ् वर्गल् मुऩ्पिन्नऱवे
कुरुडरुम् वीऴ् वार् कुरुडरोडागिये । मंत्र-संख्या, 2048

मार्ग दिखाने चला असद्गुरु
मूर्ख और अज्ञ शिष्यों को

जैसे अंधा राह दिखावे अंधे को
गहिर गर्त में गिरा गुरु
गिरे गर्त में शिष्य भी
गुरुवर सहित शिष्य सब डूबे
अंधे के पीछे बन कर अंधे । 2048

570. தாடந் தளிக்குந் தலைவனே சற்குரு
தாடந்து தன்னை யறியத் தரவல்லோன்
தாடந்து தத்துவா தீதத்துச் சார்சிவன்
தாடந்து பாசந் தணிக்கு மவன்சத்தே. 2049

ताडन्दळिक्कुम् तलैवने सऱ् गुरु
ताडन्दु तन्नै यऱियत्तर वल्लोऩ्
ताडन्दु तत्तुवातीतत्तुच् चार् जीवऩ्
ताडन्दु पाशम् तणिक्कुमवऩ् सत्ते । मंत्र-संख्या, 2049

ईशचरण प्रदान करता है सद्गुरु
ईशचरण प्रदान करके
बोध कराता है जीव को निज स्वरूप का
ले जाता है उसे तत्वातीत स्थिति में,
ईशचरण देकर मुक्त करना है बंधपाश
इतनी कृपा इतना अनुग्रह करता है,
गुरु शिव और परशिव सचमुच अभिन्न हैं । 2049

571. கறுத்தே இரும்பே கனகம தானான்
மறித்திரும் பாகா வகையது போலக்
குறித்தஅப் போதே குருவருள் பெற்றான்
மறித்துப் பிறவியில் வந்தணு கானே. 2051

करुत्ते इरुम्बे कनकमदानाऩ्
मऱुत्तिरुम्बागा वगैयदु पोलक्
कुऱित्त अप्पोदे गुरुवरुळ् पॅट्राऩ्
मऱित्तुप् पिऱवियिल् वन्दणुगाने । मंत्र-संख्या, 2051

कृष्णलौह बन जाए एक बार स्वर्ण,
फिर नहीं बनता वह कृष्णलौह
इसी विध, एक बार मिल जाए गुरु की कृपा
छूट गया वह निश्चय पुनर्जन्म के चक्र से । 2051

572. குருவென் பவனே வேதாக மங்கூறும்
பரவின்ப னாகிச் சிவயோகம் பாவித்
தொருசிந்தை யின்றி உயர்பாச நீக்கி
வருநல் குரவன்பால் வைக்கலு மாமே. 2057

गुरुवॅन्पवने वेदागमम् कूरुम्
परविन्बनागिच् चिवयोगम् पावित्
तॉरुचिन्तै यिन्ऱि उयर्पाश नीक्कि
वरु नल् कुरवन् पाल् वैक्कलुमामे । मंत्र-संख्या, 2057

सद्गुरु कहलाता वही है
वेदागमों में जो विचक्षण है
निवास करता है आनन्द में
अभ्यास करते हुए शिवयोग का,
मनोजयी वह एकाग्र चित्त है
मुक्त करता है शिष्यों का बंध-पाश,
और उन्हें ले जाता है
शिवगुरु के पास । 2057

573. சத்தும் அசத்துஞ் சதசத்துந் தான்காட்டிச்
சித்தும் அசித்துஞ் சிவபரத் தேசேர்த்துச்
சுத்த மசுத்த மறச்சுக மானசொல்
அத்தன் அருட்குரு வாமவன் கூறிலே. 2058

सत्तुम् असत्तुम् सदसत्तुम् तान् काट्टिच्
चित्तुम् अचित्तुम् शिवपरत्ते चेर्त्तु
सुत्तमसुत्त मऱक्क सुगमान चॉल्
अत्तन् अरुट्गुरुवामवन् कऱिले । मंत्र-संख्या, 2058

शिवगुरु दिखा देता है साधक को स्पष्ट ही
सत् क्या है असत् क्या है और सदसत् कैसा है
फिर वह चित् (जीव) और तत्व को
ले जाता है परशिव के समीप
अद्भुत मंत्र-दीक्षा से, अनुग्रहपूर्ण वचनों से
पहुँचाता है उसे आनन्दमय दशा में
शुद्ध और अशुद्ध से परे । 2058

574. அத்த னருளின் விளையாட் டிடஞ்சடஞ்
சித்தொ டசித்தறத் தெளிவித்த சீவனைச்
சுத்தனு மாக்கித் துடைத்து மலத்தினைச்
சத்துட னைங்கரு மத்திடுந் தன்மையே. 2062

अत्तनरुळिन् विळैयाट्टिडम् चडम्
चित्तोडचित्तऱत् तॆळिवित्त जीवनैच्
चुत्तनुमाक्कित् तुडैत्तु मलत्तिनै
चत्तुडनैङ् करुमत्तिडुम् तन्मैये । मंत्र-संख्या, 2062

प्रभु की क्रीड़ास्थली है जीव-शरीर
उपदेश देता है शिवगुरु जीव को
सदसत् के विवेक का,
दूर कर सकल मल
कर देता है शुद्ध और नित्य मुक्त
योजित कर सत् में
नियुक्त करता है पंचकृत्य में
जीव को शिव बनाना शिव की क्रीड़ा है । 2062

575. ஈசத்து வங்கடந் தில்லையென் றப்புறம்
பாசத்து ளேயென்றும் பாவியும் அண்ணலை
நேசத்து ளேநின்ற நின்மலன் எம்மிறை
தேசத்தை யெல்லாந் தெளியவைத் தானே. 2063

ईशत्तुवम् कडन्दिल्लै अप्पुऱम्
पाशत्तुळे यॅन्ऱुम् पावियुम् अण्णालै
नेशत्तुळे निन्ऱ निन्मलन् ऍम्मिऱै
देशत्तै यॅल्लाम् तॅळियवैत्ताने । *मंत्र-संख्या, 2063*

संतुष्ट न बनो यह सोचकर
ईशत्व के परे कुछ भी नहीं है
प्रभु पर पूरी आस्था से हो युक्त
आगे बढ़ो साधना में
नित्यशुद्ध निर्मल प्रभु मेरा
दिखा देगा ईशत्व के परे
सकल ब्रह्माण्ड, अन्तहीन सकल भुवन । *2063*

576. ஏறு நெறியே மலத்தை எரித்தலால்
ஈறில் உரையால் இருளை யறுத்தலான்
மாறில் பசுபாசம் வாட்டலால் வீடுக
கூறு பரனே குருவாம் இயம்பிலே. *2066*

एऱु नॅऱिये मलत्तै ऍरित्तलाल्
ईऱिल् उरैयाल् इरुवळै यऱुत्तलान्
माऱिल् पशुपाशम् वाट्टलाल् वीडुग
कूऱु परने गुरुवाम् इयम्बिले । *मंत्र-संख्या, 2066*

षडाधार में आरोहण की प्रक्रिया में
भस्म करता है सकल मल माया-कर्म के,
काटता है अज्ञान-तम सतत उपदेश से
झुलसा देता है पाश को विलग कर पशु से,
यों परिपक्व जीव से कहता है
'उद्धार पाओ मुक्त होकर'
पूछा जाए सद्गुरु का लक्षण
तो कहें यों साथ रहकर कृपा करता है जो
वही परशिव सद्गुरु है । *2066*

577. கண்காணி யில்லென்று கள்ளம் பலசெய்வார்
கண்காணி யில்லா விடமில்லை காணுங்கால்
கண்காணி யாகக் கலந்தெங்கு நின்றானைக்
கண்காணி கண்டார் களவொழிந் தாரே. 2067

कण्काणि यिल्लॅन्रु कळ्ळम् पल चॅय्वार्
कण्काणियिल्ला विडमिल्लै काणुङ्काल्
कण्काणियागक् कलन्दॅङ्गु निन्ऱानैक्
कण्काणि कण्डार् कळवॊऴिन्दारे । मंत्र-संख्या, 2067

दुष्कर्म करते हुए मानते हैं लोग
कोई दर्शक नहीं है, निरीक्षक नहीं है
सोचकर देखें तो यह तथ्य स्पष्ट होगा
ऐसा कौन स्थान है जहाँ देखनेवाला नहीं है
जो जानते हैं यथातथ्य ईश को सर्वसाक्षी
दूर रहते हैं वे बुराई से, दुष्कर्म से । 2067

578. செய்தான் அறியுஞ் செழுங்கடல் வட்டத்துப்
பொய்தான் மிகவும் புலம்பும் மனிதர்கள்
மெய்தான் உரைக்கில் விண்ணோர் தொழச்செய்வன்
மைதாழ்ந் திலங்கு மிடறுடை யோனே. 2068

चॅय्दान् अऱियुम् चॅऴुङ्कडल् वट्टत्तुप्
पॊय् तान् मिगवुम् पुलम्बुम् मनिदर्गळ्
मॅय् तान् उरैक्किल् विण्णोर् तॊऴच्चॅय्वन्
मैताऴ्न्दिलङ्गु मिडरुडैयोने । मंत्र-संख्या, 2068

सागर-मेखला वलयित
भूमंडल उसी की रचना है,
पर जगत् के लोग विमुख नहीं होते,
मिथ्या-भाषण से, कदाचरण से,
'सर्वज्ञ' उससे छिपा नहीं कुछ भी,
यदि मानव बोलता सत्यवचन

करता सदाचार
तो नीलकंठ प्रभु
बाध्य करेगा अमरलोक के वासियों को
कि वे नमन करें मानवों को । *2068*

579. பத்திவிற் றுண்டு பகலைக் கழிவிடு
மத்தகர்க் கன்றோ மறுபிறப் புள்ளது
வித்துக்குற் றுண்டு விளைபுலம் பாழ்செய்யும்
பித்தர்கட் கென்றும் பிறப்பில்லை தானே. *2069*

पत्ति विट्रुण्डु पगलैक् कऴिविडु
मत्तगर्क्कन्ऱो मऱु पिऱप्पुळ्ळदु
वित्तुक्कुट्रुण्ड विळैपुलम् पाऴ् चेय्युम्
पित्तुर्कट्कॅन्ऱुम् पिऱप्पिल्लै ताने । *मंत्र-संख्या, 2069*

बेच खा जाते हैं भक्ति को नित्य ही
प्रमत्त ये बच नहीं सकते
जन्म-मरण के चक्र से;
ऐसे ढोंगियों का पुनर्जन्म ध्रुव है
किन्तु जो ईश पर आसक्त हैं
दलन कर खाते हैं बीज
– कर्म बीज – जो जन्म-कारण है
बीज खाकर ऊसर बना डालते हैं
शरीर का क्षेत्र
न रहे बीज, न फले कर्म
ऐसे बावरे नहीं पाते पुनर्जन्म । *2069*

580. வடக்கு வடக்கென்பர் வைத்ததொன் றில்லை
நடக்க வுறுவரே ஞானமி லாதார்
வடக்கில் அடங்கிய வையகம் எல்லாம்
அகத்தில் அடங்கும் அறிவுடை யோர்க்கே. *2070*

वडक्कु वडक्कॅन्बर् वैत्तदॊन्ऱिल्लै
नडक्क वुरुवरे ज्ञानमिलादार्
वडक्किल् अडंगिय वैयगम् ऍल्लाम्
अगत्तिल् अडंगुम् अऱिवुडैयोर्क्के । मंत्र-संख्या, 2070

उत्तर का नाम लेते हैं बार-बार
जानते हैं कुछ नहीं रखा है
उत्तर दिशा में,
ज्ञानहीन हैं यात्रा करते हैं
उत्तर दिशा की ओर
जिनका चित्त शुद्ध निर्मल है
उनके हृदय में समाये हैं
उत्तर के सारे तीर्थ, ज्ञान, वैभव । 2070

581. காயக் குழப்பனைக் காயநன் னாடனைக்
காயத் தினுள்ளே கமழ்கின்ற நந்தியைத்
தேயத்து ளேயெங்குந் தேடித் திரிவர்கள்
காயத்துள் நின்ற கருத்தறி யாரே. 2071

कायक्कुऴप्पनै कायनन्नाडनै
कायत्तिनुळ्ळे कमऴ्गिन्ऱ नन्दियै
तेयत्तुळे यॆङ्गुम् तेडित्तिरिवर्गळ्
कायत्तुळ् निन्ऱ करुत्तऱियारे । मंत्र-संख्या, 2071

ईश्वर की अद्भुत रचना है मानव-काया
समग्र देश यह बड़ा मन-भाया
रहता है वह प्रेम से
महकता हुआ इस देहालय में
अनुग्रह-नन्दी वही है;
छान रहे हैं लोग अग-जग सारा
तलाशते हुए उसे

जानते नहीं बिचारे
निवसित है प्रभु मन-मंदिर में । 2071

582. பித்தன் மருந்தால் தெளிந்து பிரகிருதி
உய்த்தொன்று மாபோல் விழியுந்தன் கண்ணொளி
அத்தன்மை யாதல்போல் நந்தி அருள்தரச்
சித்தம் தெளிந்தேன் செயலொழிந் தேனே. 2075

पिन्तन् मरुन्दाल् तॅळिन्दु प्रकृति
उय्त्तॉन्रु मापोल् विऴियुन्दन् कण्णॉळि
अत्तन्मैयादल् पोल् नन्दि अरुळ् तरच्
चित्तम् तॅळिन्देन् चॅयलॉऴिन्देने । मंत्र-संख्या, 2075

जिस तरह दूर हो जाता है पागलपन
सुयोग्य वैद्य की अमोघ औषध-से,
जिस तरह लौट आती है नयन-ज्योति
हटा देने पर दृष्टि पर लगी परत,
उसी भाँति
नन्दी के असीम अनुग्रह से
उपशांत हुए कर्म, मैं निर्मलचित्त बना । 2075

583. ஒன்றிரண் டாகிநின் றொன்றியொன் றாயினோர்க்
கொன்றும் இரண்டும் ஒருகாலுங் கூடிடா
ஒன்றிரண் டென்றே யுரைதரு வோர்க்கெலாம்
ஒன்றிரண் டாய்நிற்கும் ஒன்றோடொன் றானதே. 2077

ऑन्ऱिरण्डागि निन्ऱॉन्ऱि ऑन्ऱायिनोर्क्कु
ऑन्रुम् इरण्डुम् ऑरुकालुम् कूडिडा
ऑन्ऱिरण्डॅन्ऱे उरै तरुवोर्क्कॅलाम्
ऑन्ऱिरण्डाय् निऱ्कुम् ऑन्ऱोडॉन्ऱानदे । मंत्र-संख्या, 2077

एक से दो बनने पर भी जो युक्त हैं ब्रह्म से
अभिन्न और एकात्म भाव से

उनके लिए 'मैं–तुम' का द्वैत नहीं है
किन्तु उनके लिए वह सदा ही द्वैत में है
जो 'मैं–तुम' को दो कहते हैं । 2077

584. உயிரது வேறா யுணர்வெங்கு மாகும்
உயிரை யறியில் உணர்வறி வாகும்
உயிரன் றுடலை விழுங்கு முணர்வை
அயரும் பெரும்பொரு ளாங்கறி யாரே. 2079

उयिरदु वेराय् उणर्वॆङ्गु मागुम्
उयिरै अरिदल् उणर्वरिवागुम्
उयिरन्रुडलै विऴुङ्गुमुणर्वै
अयरुम् पॆरुम्पॊरुळाङ्करियारे । मंत्र-संख्या, 2079

बोध आना चाहिए – प्राण को
चेतना से भिन्न समझने का,
प्राण बोध से चेतना-बोध होगा
चेतना ही ज्ञान है
व्याप्त है देह-भर में चेतना
और परतत्व छिपा है चेतना में
अज्ञात रूप से । 2079

585. உலகாணி யொண்சுடர் உத்தம சித்தன்
நிலவாணி ஐந்தினுள் நேருற நிற்குஞ்
சிலவாணி யாகிய தேவர் பிரானைத்
தலைவாணி செய்வது தன்னை யறிவதே. 2080

उलगाणि ऑण्चुडर् उत्तम चित्तन्
निलवाणि ऐन्दिनुळ् नेरुर् निर्कुम्
चिलवाणियागिय देवर् पिरानैत्
तलैवाणि चॆय्वदु तन्नै यरिवदु । मंत्र-संख्या, 2080

धुरी है वह निखिल जगत् की
ज्योतिराट् दयामय चित्त

अनुग्रह-नन्दी,
भू से नभ तक पंचतत्व में है व्याप्त
उनका संतुलन रखते हुए
देवाधिदेव, देवगण-आराध्य
वह स्वयंभू है;
उपासना करें उसे मंत्रराज पंचाक्षर से
जानने के लिए आत्मतत्व । 2080

586. தானந்த மாமென நின்ற தனிச்சுடர்
ஊனந்த மாயுல காய்நின்ற வொண்சுடர்
தேனந்த மாய்நின்ற சிற்றின்ப நீயொழி
கோனந்த மில்லாக் குணத்தரு ளாமே. 2081

तानन्त मार्मन निन्ऱ् तनिच्चुडर्
ऊनन्त मायुलकाय् निन्ऱ् ऑण्चुडर्
तेनन्त माय् निन्ऱ् चिट्रिन्ब नीयाऴि
कोनन्त मिल्लाक् कुणत्तरुळामे । मंत्र-संख्या, 2081

ज्योतिस्वरूप है परमेश्वर
अखंड, अनादि, अनंत ज्योति
प्रलय काल में विलय होता है सकल भूत
सचराचर जगत् इसी ज्योति में
बात सुन लो मेरे मित्र
क्या रखा है लौकिक सुख में
अधिक से अधिक मधुतुल्य है न ?
तज कर इसे बढ़ो आगे
परमानंददायक है ईश का अनन्त अनुग्रह । 2081

587. உன்முத லாகிய வூனுயிர் உண்டெனுங்
கன்முத லீசன் கருத்தறி வாரில்லை
நன்முத லேறிய நாம மறநின்றால்
தன்முத லாகிய தத்துவ மாமே. 2082

उन्मुदलागिय ऊनुयिर् उण्डॅनुम्
कन्मुदलीशन् करुत्तारिवारिल्लै
नन्मुदलेरिय नाममर् निन्राल्
तन्मुंदलागिय तत्तुवमामे । मंत्र-संख्या, 2082

आदिमूल वह तुम्हारा भी मूल है
इस देह में प्राण-स्वरूप है,
विराज रहा विश्रुत कैलाश में भी,
जब शिव-अनुग्रह होगा
नष्ट होगा अहंकार निःशेष
देख पाओगे निज स्वरूप
परमानन्द-तत्व । 2082

588. இன்பத்து ளேபிறந் தின்பத்து ளேவளர்ந்
தின்பத்து ளேநினைக் கின்ற திதுமறந்
துன்பத்து ளேசிலர் சோறொடு கூறையென்
துன்பத்து ளேநின்று தூங்குகின் றார்களே. 2089

इन्बत्तुळे पिरन्दिन्बत्तुळे वळर्न्दु
इन्बत्तुळे निनैक्किन्रदिदु मरन्-
तुन्बत्तुळे चिलर् चोरॉडु कूरैयॅन्
तुन्बत्तुळे निन्रु तूङ्गुकिन्रार्गळे । मंत्र-संख्या, 2089

जीवन धन्य है जो मानते हैं
आनंद में जन्मे हैं पल रहे आनन्द में
सदा मग्न रहें हम आनंद ही आनंद में,
किंतु कुछ ऐसे हैं जो इसे भूलते हैं
भटकते हैं जग में अन्न और परिधान के लिए
दुःख में डूबे रहते हैं सोते हैं अज्ञान में । 2089

589. பெறுதற் கரிய பிறவியைப் பெற்றும்
பெறுதற் கரிய பிரானடி பேணார்
பெறுதற் கரிய பிராணிகள் எல்லாம்
பெறுதற் கரியதோர் பேறிழந் தாரே. 2090

पॅरुदर्करिय पिऱवियैप् पॅट्रुम्
पॅरुदर्करिय पिरानडि पेणार्
पॅरुदर्करिय पिराणिगळ् ऍल्लाम्
पॅरुदर्करियदोर् पेऱिऴन्दारे । मंत्र-संख्या 2090

दुर्लभ है यह मानव जीवन
पाकर भी यह अनोखा चोला
ईश-चरण का ध्यान नहीं करता
जो दिव्य है महार्ह है
अद्भुत जीवन पाकर भी
खो देते हैं अलभ्य वस्तु 'मुक्ति' को । 2090

590. இப்பரி சேயிள ஞாயிறு போலுரு
அப்பரி சங்கியின் உள்ளுறை யம்மானை
இப்பரி சேகம லத்துறை யீசனை
மெய்ப்பரி சேவினை வாதிருந் தோமே. 2092

इप्परिसे यिळञायिरु पोलुरु
अप्परिसङ्गियिन् उळ्ळुऱै यम्मानै
इप्परिसे कमलत्तुऱै ईशनै
मॅय्प्परिसे विनैवादिरुन्दोमे । मंत्र-संख्या, 2092

प्रकाशित है प्रभु बालार्क सम
ज्योतित है वह आत्मतत्व है
निवसित है प्रभु हृदयकमल में
सत्यवस्तु के विषय में
खेद! पहले ही पूछा नहीं विज्ञजनों से । 2092

591. கூடகில் லார்குரு வைத்த குறிகண்டு
நாடகில் லார்நயம் பேசித் திரிவர்கள்
பாடகில் லாரவன் செய்த பரிசறிந்
தாடவல் லாரவர் பேறெது வாமே. 2093

कूडकिल्लार् गुरु वैत्त कुऱि कण्डु
नाडकिल्लार् नयम् पेसित्तिरिवार्गळ्
पाडकिल्लार् अवन् चॅय्द परिसऱिन्दु
आडकिल्लार् अवर् पेऱॅदुवामे । मंत्र-संख्या, 2093

गुरु के बताए मार्ग पर चल
मिलते नहीं ईश से, तलाशते नहीं उसे
बस व्यर्थ भाषण में गंवाते हैं जीवन
जीव के हित ईश के अनुग्रह का
कीर्तन नहीं करते प्रभु के गुणों का
जीवन है इनका व्यर्थ
जो गंवा देते हैं निज जीवन नाच-गान में वृथा ही । 2093

592. நெஞ்சு நிறைந்தங் கிருந்த நெடுஞ்சுடர்
நஞ்செம் பிரானென்று நாதனை நாடொறுந்
துஞ்சு மளவுந் தொழுமின் தொழாவிடில்
அஞ்சற்று விட்டதோர் ஆனையு மாமே. 2094

नॅञ्जम् निऱैन्दङ्किरुन्द नॅडुञ्चुडर्
नञ्जॅम्पिरानॅन्ऱु नादनै नाडॉऱुम्
तुञ्जुमळवुम् तॉऴुमिन् तॉऴाविडिल्
अञ्जट्रु विट्टदोर् आनैयुमामे । मंत्र-संख्या, 2094

'अंतर में व्याप्त महान् ज्योति है
मेरा यह अनन्य नाथ है'
इसी भावना से विगलित हृदय से
वंदना, आराधना करो निरंतर

प्रभु की, अंतिम श्वास तक
यों वंदना नहीं करोगे
उच्छृंखल हाथी बनेंगी इन्द्रिय
उत्पात करेंगी अकथनीय । 2094

593. குதித்தோடிப் போகின்ற கூற்றமுஞ் சார்வாய்
விதித்தன நாட்களும் வீழ்ந்து கழிந்த
வதிர்த்திருந் தென்செய்தி ராறுதி ராகிற்
கொதிக்கின்ற கூழில் துடுப்பிட லாமே. 2099

कुदित्तोडिप् पोगिन्ऱ कूट्रमुम् चार्वाय्
विदित्तन नाट्कलुम् वीऴ्न्दु कऴिन्द
वदिर्त्तिरुन्तॆन् चॆय्दिराऱुदि रागिऱ्
कॊदिक्किन्ऱ कूऴिल् तुडुप्पिडलामे । मंत्र-संख्या, 2099

भाग जाता है काल
प्राण-हरण कर के हर बार
तुम्हारा सहयोग पाकर
वृथा जो गंवाते हो सुनहला जीवन,
अंत समय पछताने से
थर-थर कांपने से क्या मिलेगा ?
चेतो अब भी, ध्यान लगाओ शांत चित्त से,
निज कर्मों की उबलती लपसी में
स्नेह की कलछी चलाओ
ठंडा होकर शांत बनेगा चित्त
लीन होगा शिवज्योति में । 2099

594. கரையரு காறாக் கழனி வளைந்த
திரையரு காமுன்னம் சேர்ந்தின்பம் எய்தும்
வரையரு கூறிய மாதவ நோக்கின்
நரையுரு வாச்செல்லு நாளில வாமே. 2100

करैयरु काराक् कऴनि वळैन्द
तिरैयरुगा मुन्नम् चेर्न्दिन्बम् ऍय्दुम्
वरैयरु कूऱिय मादव नोक्किन्
नरैयुरुवाच् चॅलु नाळिलवामे । मंत्र-संख्या, 2100

जीवन-नदी के तट पर
फली-फूली है अनुग्रह की फसल
प्रयास करो प्रभु-अनुग्रह पाने को
जरा के आगमन से पूर्व ही
पहुँच जाओ पर्वत की ऊँचाइयों में
तपोबल से, योग-साधना से
जहाँ अमृत का पान करते हुए
जरा-मृत्यु को नकार सकते हो । 2100

595. செல்லு மளவுஞ் செலுத்துமின் சிந்தையை
வல்ல பரிசால் உரைமின்கள் வாய்மையை
இல்லை யெனினும் பெரிதுளன் எம்மிறை
நல்ல வரனெறி நாடுமி னீரே. 2103

चॅल्लुमळवुम् चॅलुत्तुमिन् चिन्तैयै
वल्ल परिशाल् उरैमिन्गळ् वाय्मैयै
इल्लै यॅनिनुम् पॅरिदुळन् ऍम्मिऱै
नल्ल वरनॅऱि नाडुमिनीरे । मंत्र-संख्या, 2103

जितना संभव हो करो ध्यान
अंतस् में पैठकर करो तलाश
वाणी से वर्णन करो प्रभु का
शक्ति भर व्यक्त करो उस सत्य को,
अज्ञजन तर्क करेंगे
'कहां है ? नहीं है वह'
बोलो पूरे जारे से 'मेरा प्रभु है,

व्याप्त है सब कहीं ।'
और स्थिर रहो
शिवभक्ति वरेण्य पथ पर । 2103

596. ஒன்றே குலமும் ஒருவனே தேவனும்
நன்றே நினைமின் நமனில்லை நாணாமே
சென்றே புகுங்கதி யில்லைநுஞ் சித்தத்து
நின்றை நிலைபெற நீர்நினைந் துய்மினே. 2104

ऑन्ऱे कुलमुम् ऑरुवने देवनुम्
नन्ऱे निनैमिन् नमनिल्लै नाणामे
चॆन्ऱे पुगुम् गतियिल्लै नुम् चित्तत्तु
निन्ऱे निलै पॆऱ नीर् निनैन्दुय्मिने । मंत्र-संख्या, 2104

एक है समग्र कुल एक सबका देव है
शिवमय भाव हो मृत्यु नहीं ध्रुव ही
इसके सिवा नहीं कोई निस्तार है; निज हृदय में
स्थापित कर लो यही आस्था
उद्धार का यही मार्ग है । 2104

597. இக்காய நீக்கி யினியொரு காயத்திற்
புக்குப் பிறவாமற் போம்வழி நாடுமின்
எக்காலத் திவ்வுடல் வந்தமெக் கானதென்
றக்கால முன்ன அகுள்பெற லாமே. 2106

इक्काय नीक्कि यिनियॊरु कायत्तिल्
पुक्कुप् पिऱवामल् पोम् वऴि नाडुमिन्
ऍक्कालत्तिव्वुडल् वन्दमक्कानदॆन्ऱु
अक्काल मुन्न अरुळ् पॆऱलामे । मंत्र-संख्या, 2106

ऐसा करो उपाय जिससे
इस काया को तज दूसरी में प्रवेश का
बने संयोग न

इसके लिए विचिंतन करो उस क्षण का
जिस क्षण प्राप्त हुई यह काया
इस ओर ध्यान लगाने पर तत्क्षण ही
अपार अनुग्रह मिलेगा ईश का । 2106

598. கூடியும் நின்றுந் தொழுதெம் மிறைவனைப்
பாடியு ளேநின் றறிவுசெய் வார்கட்கு
ஆடியு ளேநின் றறிவுசெய் வார்கட்கு
நீடிய வீற்றுப் பசுவது வாமே. 2109

कूडियुम् निन्रुम् तॊऴुदॆम्मिऱैवनैप्
पाडियुळे निन्रु पादम् पणिमिन्गळ्
आडियुळे निन्ऱरिवु चॆय्वार्कट्कु
नीडिय वीट्रुप् पशुवदुवामे । मंत्र-संख्या, 2109

स्तुति करो प्रभु की
भक्तिभाव से एकांत में, समूह में,
गान करो उसके गुणगणों का
ध्यान करो अंतर में ईशचरण का
यों नाचते हुए जो प्राप्त करते हैं ईश को
वह उनके लिए बन जाता दुधारू गाय है । 2109

599. இன்புறு வீர்அறிந் தேஎம் இறைவனை
அன்புறு வீர்தவஞ் செய்யுமெய்ஞ் ஞானத்துப்
பண்புறு வீர்பிற வித்தொழி லேநின்று
துன்புறு பாசத் துவைத்தொழிந் தீரே. 2112

इन्बुऱुवीर् अऱिन्दे ऍम् इऱैवनै
अन्बुरुवीर् तवम् चॆय्यु मॆय् ज्ञानत्तु
पण्बुऱुवीर् पिऱवित्तॊऴिले निन्रू
तुन्बुऱु पासत्तुवैत्तॊऴिन्दीरे । मंत्र-संख्या, 2112

प्रभु को पहचान लो मग्न रहो आनंद में
तपस्या करो, भरकर अंतर् में अनुराग
क्रम-क्रम से प्रशस्त सत्यज्ञान होगा
खेद! तुम इतने दिनों तक
दुखपूर्ण पाश से जकड़े रहे,
करना पड़ा कठिन परिश्रम इससे मुक्त होने को । 2112

600. மேற்கொள்ள லாவதோர் மெய்த்தவம் ஒன்றுண்டு
மேற்கொள்ள லாவதோர் மெய்த்தாளும் ஒன்றுண்டு
மேற்கொள்ள லாவதோர் மெய்ந்நெறி ஒன்றுண்டு
மேற்கொள்ள லாம்வண்ணம் வேண்டிநின் றோர்க்கே.2113

मेऱ्कॊळ्ळलावदोर् मॆय्त्तवम् ऑन्ऱुण्डु
मेऱ्कॊळ्ळलावदोर् मॆय्त्ताळुम् ऑन्ऱुण्डु
मेऱ्कॊळ्ळलावदोर् मॆय्न्नॆऱि ऑन्ऱुण्डु
मेऱ्कॊळ्ळलाम् वण्णम् वेण्डि निन्ऱोर्क्के । मंत्र-संख्या, 2113

स्वीकारने योग्य तपोमार्ग एक है
वन्दनीय पूज्य चरणयुगल भी एक है
अपनाने योग्य उत्तम मार्ग एक है
यह सब उनके लिए
जो सच्चे मन से कामना करते हैं उद्धार की । 2113

601. முத்தியை ஞானத்தை முத்தமிழ் ஓசையை
எத்தனை காலமும் ஏத்துவர் ஈசனை
நெய்த்தலைப் பால்போல் நிமலனும் அங்குளன்
அத்தரு சோதி யதுவிரும் பாரே. 2115

मुत्तियै ज्ञानत्तै मुत्तमिऴ् ओशैयै
ऍत्तनै कालमुम् एत्तुवर् ईशनै
नॆय्त्तलैप् पाल्पोल् निमलनुम् अंगुळन्
अत्तरु जोतियदु विरुम्बारे । मंत्र-संख्या, 2115

स्तुतिरत हैं भक्त नतशिर होकर
सदा सर्वेश के समक्ष,
जो मुक्तिदायक है ज्ञानस्वरूप है
नादब्रह्म है
नाद जो ओंकार है और जिसमें
समाया है मधुर तमिल का शाखा-त्रितय,
छिपा हुआ है निर्मल परमेश्वर
दुग्ध में नवनीत के तुल्य
संतजन के पावन हृदय में
पुण्यहीन हैं वे जो उसे प्राप्त करने की
नहीं करते कामना, न करते उससे प्रेम । 2115

6 02. இங்கித்தை வாழ்வு மெனைத்தோ ரகிதமுந்
துஞ்சொத்த காலத்துத் தூய்மணி வண்ணனை
விஞ்சத் துறையும் விகிர்தா எனநின்னை
நஞ்சற் றவர்க்கன்றி நாடவொண் ணாதே. 2117

इंगित्तै वाऴ्वु मॅनैत्तो रगितमुम्
तुंचॉत्त कालत्तुत् तूय्मणि वण्णनै
विंचत्तुऱैयुम् विकिर्दा एन निन्नै
नंजट्रवर्क्किन्ऱि नाडवॉण्णादे । मंत्र-संख्या, 2117

दुख संताप पूरित है इहलोक जीवन
जब मृत्यु सम विपत्ति आती है
स्तुति करो विमल हृदय से,
निर्मलमणि सम शोभित ईश की
विनय करो
'हे नाथ, तत्वातीत हो तुम
त्राण करो कृपापूर्वक

अहंकार-विष तजे बिना
नहीं मिलेगी नाथ-कृपा । *2117*

603. சிவனை வழிபட்டார் எண்ணிலாத் தேவர்
அவனை வழிபட்டங் காமாறொன் றில்லை
அவனை வழிபட்டங் காமாறு காட்டுங்
குருவை வழிபடிற் கூடலு மாமே. 2119

शिवनै वऴिपट्टार् ऍण्णिलात्तेवर्
अवनै वऴिपट्टङ्गु आमाऱॊन्ऱिल्लै
अवनै वऴिपट्टङ्गामाऱु काट्टुम्
गुरुवै वऴिपडिल् कूडलुमामे । *मंत्र-संख्या, 2119*

शिव की उपासना में लगे रहे
अगणित देवगण
उनकी उपासना से क्या कुछ मिला किसी को ?
उचित तो यही होगा
उपासना करो सद्गुरु की
वही मार्ग दिखा पाएगा
शिव होने का, अपने अनुभव से,
तुम्हारी मुक्ति सुनिश्चित है ! *2119*

604. ஆட்கொண் டவர்தனி நாயகன் அன்புற
மேற்கொண் டவர்வினை போயற நாடொறும்
நீர்க்கின்ற செஞ்சடை நீளன் உருவத்தின்
மேற்கொண்ட வாறலை வீவித்து ளானே. 2121

आट्कॊण्डनर् तनि नायकन् अन्पुऱ
मेऱ्कॊण्डवर् विनै पोयऱ नाडॊऱुम्
नीर्क्किन्ऱ चॆञ्चडै नीळन् उरुमत्तिन्
मेऱ्क्कॊण्ड वाऱलै वीवित्तुळाने । *मंत्र-संख्या, 2121*

शिष्य रूप से अपना कर
कृपावृष्टि करता शिवगुरु
परम दयालु है,
उसके अनुग्रह से
कट जाते हैं कर्मबंधन
नित्य ही,
दर्शन देता है फिर
अरुणिम जटाभार
शोभित जिस पर गंगा
थम जाती हैं दुख-तरंगें
मुक्ति मिलती है भवसागर से । 2121

ॐ ௐ ॐ

எட்டாம் தந்திரம்

ऍट्टाम् तन्तिरम्

अष्टम तंत्र

உடலிற் பஞ்சபேதம் — उडलिऱ् पंचबेदम् - शरीर के पांच विभाग;
உடல்விடல் — उडल् विडल् - शरीर-त्याग;
அவத்தைபேதம்—கீழாலவத்தை — अवत्तै बेदम्-कीऴवत्तै - अवस्था भेद-निम्नावस्था;
மத்திய சாக்கிராவத்தை —
मत्तिय जाग्गिरतावत्तै - मध्य-जाग्रत-अवस्था;
அத்துவாக்கள் — अत्तुवाक्कळ् - अध्वा (उपर्युपरि मार्ग);
சுத்த நனவாதி பருவம் —
सुत्त ननवादि परुवम् - शुद्ध जाग्रत तथा अन्य अवस्थाएं;
கேவல சகல சுத்தம் — केवल सकल सुत्तम् - केवल, सकल, शुद्ध;
பராவத்தை — परावत्तै - परा-अवस्था;
முக்குண நிர்க்குணம் — मुक्कुण निर्गुणम् - त्रिगुण और निर्गुण;
அண்டாதி பேதம் — अण्डादि बेदम् - अण्डादि भेद;
பதினொராந்தானமும் அவத்தையெனக் காணல் —
पदिनोरान्तानमुम् अवत्तैयॅनक् काणल् - एकादश स्थिति भी अवस्था ही;
கலவு செலவு — कलवु चॅलवु - मिश्रण और विलग होना;
நின்மலாவத்தை — निन्मलावत्तै - निर्मल अवस्था;
அறிவுதயம் — अऱिवुदयम् - ज्ञानोदय;
ஆறந்தம் — आऱन्नम् - षडांत;
பதிபசுபாசம் — पतिपशुपाशम् वेऱिन्मै - पति पशु पाश-अभेद;
அடித்தலை அறியும்திறங்கூறல் —
अडित्तलै अऱियुम् तिरम् कूऱल् - शिखा-चरण परिज्ञान;

முக்குற்றம் — मुक्कुट्रम् – त्रिदोष;
முப்பதம் — मुप्पदम् – आत्म-साक्षात्कार के पदत्रय;
முப்பரம் — मुप्परम् – परत्रय;
பரலட்சணம் — पर लक्षणम् – पर का अभिलक्षण;
முத்துரியம் — मुत्तुरियम् – तुरीयत्रय;
மும்முத்தி — मुम्मुत्ति – मुक्तित्रय;
முச்சொரூபம் — मुच्चोरूपम् – स्वरूपत्रय;
முக்கரணம் — मुक्करणम् – करणत्रय;
முச்சூனிய தொந்தத்தசி —
मुच्चूनिय दोन्दत्तसि – शून्यत्रय तथा त्वम्-तत्-असि;
முப்பாழ் — मुप्पाऴ् – शून्यत्रय;
காரிய காரணவுபாதி — कारिय कारण उपादि – कार्य कारण उपाधि;
உபசாந்தம் — उपशान्तम् – उपशांत;
புறங்கூறாமை — पुरङ्कूरामै – पर दूषण न करना;
எட்டிதழ்க் கமல முக்குண அவத்தை —
ऍट्टिदऴ् कमल मुक्कुण अवत्तै – अष्टदल कमल में अनुभव;
ஒன்பான் அவத்தை-ஒன்பான் அபிமானி —
ऑन्बान् अवत्तै-ऑन्बान् अबिमानि – नौ अवस्थाएं और नौ साधक;
சுத்தாசுத்தம் — सुत्तासुत्तम् – शुद्धाशुद्ध;
முத்திநிந்தை — मुत्ति निन्दै – मुक्ति-निन्दा;
இலக்கணாத் திரயம் — इलक्कणत् तिरयम् – लक्षणत्रय;
தத்துவமசி வாக்கியம் — तत्तुवमसि वाक्कियम् – तत्वमसि वाक्य;
விசுவக் கிராசம் — विशुवक् किरासम् – विश्व अंतर्लयन (समग्र तन्मयता);
வாய்மை — वाय्मै – सत्य;
ஞானிசெயல் — ज्ञानिच्चॅयल् – ज्ञानी का मार्ग;
அவாவறுத்தல் — अवावरुत्तल् इच्छाओं को काटना / इच्छा परित्याग;
பக்தியுடைமை — पक्तियुडैमै – भक्ति-युक्तता (भक्ति में रमना);
முக்தியுடைமை — मुक्तियुडैमै – मुक्ति में रमना;
சோதனை — शोदनै – प्रयोग ।

* * *

605. காயப்பை யொன்று சரக்குப் பலவுள
மாயப்பை ஒன்றுண்டு மற்றுமோர் பையுண்டு
காயப்பைக் குள்நின்ற கள்வன் புறப்பட்டால்
மாயப்பை மண்ணா மயங்கிய வாறே. 2122

कायप्पै योन्रु चरक्कुप् पलवुळ
मायप्पै ओन्रुण्डु मट्रुमोर् पैयुण्डु
कायप्पैक्कुळ् निन्र् कळ्वन् पुरप्पट्टाल्
मायप्पै मण्णा मयङ्गि यव्वारे । मंत्र-संख्या, 2122

एक है थैली काया की
जिसमें मांस मज्जादि सामान अनेक हैं
एक अन्य थैली है माया जिसका नाम
जीव जब निकल गया छोड़ काया की थैली
माटी में मिल जाएगी यह माया की थैली । 2122

606. அத்தன் அமைத்த உடலிரு கூறினிற்
சுத்தம தாகிய சூக்குமஞ் சொல்லுங்காற்
சத்த பரிச ரூப ரசகந்தம்
புத்திமா னாங்காரம் புரியட்ட காயமே. 2123

अत्तन् अमैत्त उडलिरु कूरिनिर्
चुत्तमदागिय चूक्कुमम् चोल्लुंगार्
चत्त परिश रूप रसगन्दम्
पुत्ति मानांकारम् पुरियट्ट कायमे । मंत्र-संख्या, 2123

तात-निर्मित शरीर द्विधा है
एक सूक्ष्म है अपर स्थूल
सूक्ष्म देह शुद्ध है
निर्मित है पंच तन्मात्राओं से
– शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध –
तथा मन बुद्धि अहंकार से
यही है पुरि-अष्टक सूक्ष्म शरीर । 2123

607. எட்டினில் ஐந்தாகும் இந்திரி யங்களுங்
கட்டிய மூன்று கரணமு மாயிடும்
ஓட்டிய பாசம் உணர்வது வாகவே
கட்டி யவிழ்த்திடுங் கண்ணுதல் காணுமே. 2124

ऍट्टिनिल् ऐन्दागुम् इन्दिरियंगळुम्
कट्टिय मून्रु करणमु मायिडुम्
ओट्टिय पाशम् उणर्वदु वागवे
कट्टि यविऴ्त्तिडुम् कण्णुदल् काणुमे । मंत्र-संख्या, 2124

उपर्युक्त अष्टक में
प्रथम पांच तन्मात्राएं बाह्य इंद्रिय हैं
शेष तीन बनते हैं अंतः करण,
जीव पाश बद्ध है अनादिकाल से
इनके संबंध के कारण
समय पाकर प्रदान करता है
भाल-नेत्र प्रभु पाश-ज्ञान
ज्ञान देकर काट डालता है पाशमल
जान लो बंध-मोक्ष नहीं मिलता
ईश-अनुग्रह के बिना । 2124

608. ஆரே அறிவார் அடியின் பெருமையை
யாரே அறிவார் அங்கவர் நின்றது
யாரே அறிவார் அறுபத்தெட் டாக்கையை
யாரே அறிவார் அடிக்காவ லானதே. 2126

आरे अऱिवार् अडियिन् पॅरुमैयै
यारे अऱिवार् अङ्गवर् निन्ऱदु
यारे अऱिवार् अरुपत्तॅट्टाक्कैयै
यारे अऱिवार् अडिक्कावलानदे । मंत्र-संख्या, 2126

कौन जानता है चरणयुगल की महिमा
कौन जानता है अंतर् में प्रभु की अवस्थिति

कौन जानता है अड़सठ तत्वों से निर्मित
काया के रंगमंच पर शिव का अनवरत नर्तन
कौन जानता है इस काया के मर्म को
चलते फिरते इस मंदिर को । *2126*

609. எண்சா ணளவால் எடுத்த வுடம்புக்குட்
கண்கால் உடலிற் கரக்கின்ற கைகளிற்
புண்கால் அறுபத்தெட் டாக்கை புணர்க்கின்ற
நண்பால் உடம்புதன் னாலுடம் பாமே. 2127

ऍण्चाणळवाल् ऍडुत्त उडम्बुक्कुट्
कण्काल् उडलिऱ् करक्किन्ऱ कैकळिऱ्
पुण्काल् अरुपत्तॆट्टाक्कै पुणक्किन्ऱ
नण्पाल् उडम्बु तन्नालुडम्बामे । मंत्र-संख्या, 2127

आठ बालिश्त भर नाप के शरीर में
नयन के साथ हस्त-पाद हैं
जिनसे छिपता है शरीर
साठ और आठ तत्व मिलाकर
जोड़ता है शरीर को
अपने इस मंदिर को,
स्नेह से, दिव्य-अनुग्रह से,
अड़सठ तत्वों का यह शरीर
जिसके चार रूप हैं । *2127*

610. உடம்புக்கும் நாலுக்கும் உயிராய சீவன்
ஒடுங்கும் பரனோ டொழியாய் பிரமங்
கடந்தொறு நின்ற கணக்கது காட்டி
அடங்கியே அற்றது ஆரறி வாரே. 2128

उडम्बुक्कुम् नालुक्कुम् उयिराय जीवन्
ओडुंगुम् परनोडॊऴियाप् पिरमम्

कडन्तॉरु निन्ऱ् कणक्कदु काट्टि
अडंगिये अट्रदु आरऱिवारे । मंत्र-संख्या, 2128

भोक्ता बन रहता है जीव
शरीर में तथा चार अन्य में
पाकर अनुभव पांच अवस्थाओं का
लीन होता है परतत्व में
परतत्व सर्वव्यापी है
जैसे आकाश समाया है
घट-घट में
प्राण के अंदर प्राण बना है
पृथक् भी है जग प्राण बनकर । 2128

611. ஆறந்த மாகி நடுவுடன் கூடினால்
தேறிய மூவாறுஞ் சிக்கென் றிருந்திடுங்
கூறுங் கலைகள் பதினெட்டுங் கூடியே
ஊறும் உடம்பை உயிருடம் பெண்ணுமே. 2129

आऱन्दमागि नड्डुवुडन् कूडिनाल्
तेऱिय मूवारुम् चिक्कॅन्ऱिरुन्दिडुम्
कूरुम् कलैगळ् पदिनॅट्टुम् कूडिये
ऊरुम् उडम्बै उचिरुडम्बॅण्णुमे । मंत्र-संख्या, 2129

षडाधार से होकर
यदि मध्यवाहिनी सुषुम्ना से मिल जाएं
शरीर के नवों रंध्र होंगे नियंत्रण में
निर्मित होगा अठारह कलाओं से युक्त
कारण शरीर
यही जीव की काया है । 2129

612. நாக முடலுரி போலுநல் லண்டட
மாக நனாவிற் கனாமறந் தல்லது

போகலு மாகும் அரனரு ளாலேசென்
றேகு மிடஞ்சென் றிருபயன் உண்ணுமே. 2132

नागमुडलुरि पोलु नल्लण्डज
माग ननाविऱ् कनामऱन्दल्लदु
पोगलुमागुम् अरनरुळाले चॆन्
ऱेगु मिडम् चॆन्ऱिरु पयन् उण्णुमे । मंत्र-संख्या, 2132

ज्यों निकल जाता है नाग
केंचुली उतार कर,
ज्यों उड़ जाता है पंछी
अंडे के फूटने पर,
भूल जाता है जीव भी
सारी पुरानी कथा
नए शरीरं में प्रवेश कर,
जैसे स्वप्न के अनुभव
स्मरण में नहीं आते जागने पर,
यों चलती है जीव की यात्रा
शरीरों में जब तक शिवकृपा न होती,
शिव-अनुग्रह से पहुंचकर गंतव्य स्थान
कर्मफल वह भोगता है । 2132

613. தானவ னாகிய தற்பரந் தாங்கினோன்
ஆனவை மாற்றிப் பரமத் தடைந்திடும்
ஏனை யுயிர்வினைக் கெய்து மிடஞ்சென்றும்
வானும் நிலனும் புகுந்தும் வருந்துமே. 2134

तानवनागिय तर्परम् तांगिनोन्
आनवै माट्रिप् परमत्तडैन्दिडुम्
एनै युयिर् विनैक्कॆय्दुमिडम् चॆन्ऱुम्
वानुम् निलनुम् पुगुन्दुम् वरुन्दुमे । मंत्र-संख्या, 2134

तत्पर अवस्था में पहुँच कर
बोध होता है परिपक्व जीव को
'मैं' और 'तुम' एक हैं, अभिन्न हैं;
यह ज्ञान पाने पर बदलता है मार्ग
सायुज्य पाता है परतत्व में
शेष सारे जीव
गंतव्य स्थान भू, नरक या स्वर्ग में
भटकते हैं
भोगने के लिए
और पाते हैं निरंतर दुःख । 2134

614. மலமென் றுடம்பை மதியாத ஊமர்
தலமென்று வேறு தரித்தமை கண்டீர்
நலமென் றிதனையே நாடி யிருக்கிற்
பலமுள்ள காயத்திற் பற்றமிவ் வண்டத்தே. 2137

मलमॅन्रुडम्बै मदियाद ऊमर्
तलमॅन्रु वेरु तरित्तमै कण्डीर्
नलमॅन्रिदनैये नाडि यिरुक्किर्
पलमुळ्ळ कायत्तिर् पट्रमिव्वण्डत्ते । मंत्र-संख्या, 2137

गूंगे हैं, मूर्ख हैं
नहीं जानते ये, शरीर मलमय है
काया पर आसक्त होकर
स्थान-स्थान पर ये
नव-नव काया बदलते हैं
काया को शाश्वत मानकर
भटकते रहते हैं भुवनों में
इस ब्रह्मांड के अंदर । 2137

615. நல்ல வசனத்து வாக்கு மனாதிகள்
மெல்ல விளையாடும் விமலன் அகத்திலே

அல்ல செவிசத்த மாதி மனத்தையும்
மெல்லத் தரித்தார் முகத்தார் பசித்தே. 2138

नल्ल वसनत्तु वाक्कु मनादिगळ्
मॅल्ल विळैयाडुम् विमलन् अगत्तिले
अल्ल चॅवि रात्तमादि मनत्तैयुम्
मॅल्लत् तरित्तार् मुगत्तार् पशित्ते । मंत्र-संख्या, 2138

मन, वचन, कर्म से जो पवित्र हैं
विमल ईश क्रीड़ा करेगा उनके अंतर् में
मन, वचन, कर्म से जो निकृष्ट हैं
दुख पाएँगे क्षुधा-क्लांति से होकर विवर्णवदन । 2138

616. பண்ணாகும் காமம் பயிலும் வசனமும்
விண்ணாம பிராணன் விளங்கிய சத்தமும்
புண்ணாம் உடலிற் பொருந்து மனத்தையும்
அண்ணாந்து பார்க்க அழியும் உடம்பே. 2139

पण्णागुम् कामम् पयिलुम् वचनमुम्
विण्णाम् पिराणन् विळंगिये चत्तमुम्
पुण्णाम् उडलिर् पॉरुन्दु मनत्तैयुम्
अण्णान्दु पार्क्क अऴियुम् उडम्बे । मंत्र-संख्या, 2139

माधुर्ययुक्त वाणी
जो प्रेमोन्मत्त कर रही,
अंतरिक्ष में बह रही वायु
वायु में मुखरित नाद
मांस-मज्जा से बनी काया
काया में स्थित मन
प्रेक्षा ध्यान से देखो इन्हें
छूट जाएगा देह-बोध
नहीं रहेगी देह-स्मृति । 2139

617. அழிகின்ற வோருடம் பாகுஞ் செவிகண்
கழிகின்ற காலவ் விரதங்கள் தானம்
மொழிகின்ற வாக்கு முடிகின்ற நாடி
ஒழிகின்ற ஊனுக் குறுதுணை யில்லையே. 2140

अऴिकिन्ऱ वोरुडम्बाकुम् चॅविकण्
कऴिकिन्ऱ कालव् विरदंगळ् दानम्
मॊऴिकिन्ऱ वाक्कु मुडिकिन्ऱ नाडि
ऒऴिकिन्ऱ ऊनुक्कुरुतुणै इल्लैये । मंत्र-संख्या, 2140

जब निकलें प्राण देह से
नष्ट हो जाते हैं नयन श्रोत्र
सकल इंद्रिय और करण,
कोई फल नहीं मिलेगा
उस समय अनुष्ठित
व्रत दान से,
निश्चल हो रही है वाणी
निस्पंद हो रही हैं नाड़ियां
साथ छोड़ कर निकल जाते हैं सभी
साथ देने वाला कोई नहीं होता
धराशायी म्रियमाण काया का । 2140

618. இலையா மிடையில் எழுகின்ற காம
முலைவாய நெஞ்சத்து மூழ்கும் உளத்துத்
தலையாய மின்னுடல் தாங்கித் திரியுஞ்
சிலையாய சித்தஞ் சிவமுன் னிடைக்கே. 2141

इलैया मिडैयिल् ऍऴुकिन्ऱ काम
मुलैवाय नॆञ्जत्तु मूऴ्गुम् उळत्तुत्
तलैयाय मिन्नुडल् तांगित् तिरियुम्
चिलैयाय चित्तम् शिवमुन्निडैक्के । मंत्र-संख्या, 2141

कामासक्त होता है जब मन
कोमलांगी की तन्वी कटि पर
अशांत चित्त रहता है अस्थिर,
पर जिनका चित्त आसक्त रहता है शिव पर
भासित होती है देह
विद्युल्लता-सी भारहीन और ज्योतिर्मय
शिला-सम स्थिर रहता है मन
शिव के सान्निध्य में । 2141

619. ஐயைந்து மத்திமை யானது சாக்கிரங்
கைகண்ட பன்னான்கிற் கண்டங் கனாவென்பர்
பொய்கண் டிலாத புருடனித யஞ்சுழுனை
மெய்கண் டவனுந்தி யாகுந் துரியமே. 2142

ऐयैन्दु मत्तिमै यानदु चाक्किरम्
कैकॊण्ड पन्नान्किऱ् कण्डङ्कनावॆन्पर्
पॊय्‌ कण्डिलाद पुरुडनिदयं चुऴुनै
मॆय्‌ कण्डवनुन्दि यागुम् तुरियमे । मंत्र-संख्या, 2142

जाग्रत अवस्था में पुरुष रहता है
भ्रूमध्य में पच्चीस तत्वों के संग,
स्वप्न में आत्मतत्व वह
कंठ में स्थित है चौदह तत्वों के संग,
सुषुप्ति में अजर आत्मतत्व
एकाकी रहता है हृदय-देश में,
नित्य शाश्वत आत्मा का
नाभि-देश में वास तुरीय अवस्था है । 2142

620. முப்பதோ டாறின் முதல்நனா ஐந்தாகச்
செப்பதி னான்காய்த் திகழ்ந்திரண் டொன்றாகி
அப்பதி யாகும் நியதி முதலாகச்
செப்புஞ் சிவமீறாய்த் தேர்ந்துகொள் ளீரே. 2143

मुप्पदोडारिऩ् मुदल् नना ऐन्दागच्
चप्पति नान्गाय्त् तिगऴ् न्दिरण्डांऩ्ागि
अप्पति यागुम् नियति मुदलागच्
चप्पुम् शिवमीराय्त् तेर्न्दु कोळ्ळीरे । मंत्र-संख्या, 2143

जाग्रत अवस्था में
प्रवर्तित करते हैं कलादि को
पांच शिवतत्व :
शुद्ध विद्या, महेश्वर, सादाख्य शक्ति शिव
स्वप्नावस्था में कलादि का प्रवर्तन होता है
महेश्वर सादाख्य शक्ति शिव – इन चार से
सुषुप्ति में संचालन करते हैं
तीन शिवतत्व : सादाख्य, शक्ति, शिव
तुरीय अवस्था में
होता है संचालन शक्ति शिव से,
तुरीयातीत में केवल शिव
यह सब पति शिव की आज्ञा है । 2143

621. இந்திய மீரைந் தீரைந்து மாத்திரை
மந்திர மாய்நின்ற மாருதம் ஈரைந்தும்
அந்தக் கரணம் ஒருநான்கும் ஆன்மாவும்
பந்தவச் சக்கரப் பாலது வாகுமே. 2144

इन्दिय मीरैन्दीरैन्दु मात्तिरै
मन्तिरमाय् निन्ऱ् मारुदम् ईरैन्दुम्
अन्तक्करणम् ओरु नान्गु मान्मावुम्
पन्दव चक्करप् पालदु वागुमे । मंत्र-संख्या, 2144

दस इंद्रिय, दस उनकी तन्मात्राएं
दस वायु, जो मंत्र-सम गुप्त हैं
चार अंतःकरण

और पुरुष जो भोक्ता जीव है
ये सारे के सारे
बंधते हैं भव-चक्र में बारंबार । 2144

622. பாரது பொன்மை பசுமை யுடையது
நீரது வெண்மை செம்மை நெருப்பது
காரது மாருதங் கருப்பை யுடையது
வானகந் தூம மறைந்துநின் றாரே. 2145

पारदु पॉन्मै पसुमै युडैयदु
नीरदु वॅण्मै चॅम्मै नॅरुप्पदु
कारदु मारुदम् करुप्पै उडैयदु
वानगम् तूम मऱैन्दु निन्ऱारे । मंत्र-संख्या, 2145

स्वर्ण-वर्ण यह धरा
झिलमिलाती हरीतिमा में
स्वच्छ धवल है नीर का वर्ण
अरुणिम है अनल
कृष्ण-वर्ण है पवन जो
जल-अनिल का देता साथ
और धूमिल है नभ
सबका आधार
रहता अनंत और अव्यक्त । 2145

623. பூதங்கள் ஐந்தும் பொறியவை ஐந்துளும்
ஏதம் படஞ்செய் திருந்த புறநிலை
ஓது மலங்குண மாகுமா தாரமோ
டாதி யவத்தைக் கருவிதொண் ணூற்றாறே. 2146

बूतंगळ् ऐन्दुम् पॉऱियवै ऐन्दुळुम्
एदम् पडञ्चॅय्दिरुन्द पुऱनिलै
ओदु मलङ्गुण मागुमादारमो
डादि यवत्तैक् करुवि तॉण्णूट्राऱे । मंत्र-संख्या, 2146

पंचभूत और इंद्रिय पांच
जीव को दोष पहुंचाते ये दस बाह्य कारक हैं,
जब प्रवर्तन होता है
इन दस का मलत्रय के साथ
विकसित होते हैं षष्ठि संख्यक तत्व इन से
यों अवस्थाकारक छयानबे बने । 2146

624. இடவகை சொல்லில் இருபதஞ் சானை
படுபர சேனையும் பாய்பரி ஐந்தும்
உடையவன் மத்திமை யுள்ளுறு நால்வர்
அடைய நெடுங்கடை ஐந்தொடு நான்கே. 2147

इडवगै चॊल्लिल् इरुपत्तंचानै
पडु परसेनैयुम् पाय्परि ऐन्दुम्
उडैयवन् मत्तिमै उळ्ळुरु नाल्वर्
अडैय नॆडुंकडै ऐन्दॊडु नान्गे । मंत्र-संख्या, 2147

जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय में
तत्तत् स्थान में कार्यरत जो करण हैं
गज-पदादि-तुरंग समान हैं
गज सेना बनती है पच्चीस तत्व से
वाक्-पाद-पाणि-पायु-उपस्थ
आते हैं पदादि में,
तुरंग हैं शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध
फिर जीव के लिए अमात्य चार हैं
मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार
ये सब स्थित हैं नवद्वार में । 2147

625. இருக்கின்ற வாறொன் றறிகிலர் ஏழைகள்
முருக்கு மசபையை மாற்றி முகந்து
கருக்கொண்டு காமாரி சார முகந்தேர்ந்
துருக்கொண்டு தொக்க உடலொழியாதே. 2149

इरुक्किन्ऱ वारान्ऱरिगिलर् एळैगळ्
मुरुक्कुम् असबैयै माट्रि मुगन्दु
करुक्कोण्डु कामारि चार मुगन्देऱ्न्दु
उरुक्कोण्डु तोक्क उडलोळियादे । मंत्र-संख्या, 2149

अज्ञजन हैं पता नहीं इन्हें
चिरकाल जीने की कला
देह को वज्रकाय बनाने का उपाय है
सतत चल रही श्वास को
ऊर्ध्वमुखी करें अजपा-विधि में,
चिंता में हो शिव-ध्यान
जीव-बोध बदलेगा शिवज्ञान में
इच्छाओं का होगा दलन
जब युक्त होगा कामारि जीव के संग । 2149

626. முன்னிக் கொருமகன் மூர்த்திக் கிருவர்
வன்னிக்கு மூவர் வதுவைக்கு நால்வர்
கன்னிக்குப் பிள்ளைகள் ஐவர்மு னாளில்லை
கன்னியைக் கன்னியே காதலித் தாளே. 2152

मुन्निक्कोरुमगन् मूर्त्तिक्किरुवर्
वन्निक्कु मूवर् वदुवैक्कु नाल्वर्
कन्निक्कुप् पिळ्ळैगळ् ऐवर् मुनाळिल्लै
कन्नियैक् कन्नियेे कादलित्ताळे । मंत्र-संख्या, 2152

एक पुत्र है अंतरिक्ष का,
वायु के हैं दो, वह्नि के तीन,
जल के चार, पृथ्वी के हैं पाँच,
सृष्टि के पूर्व यह सब नहीं था
यह तभी हुआ जब
नारी (शक्ति) ने नारी (माया) से प्रेम किया । 2152

627. ஊமை யெழுத்தொடு பேசும் எழுத்துறில்
ஆமை யகத்தினில் அஞ்சும் அடங்கிடும்
ஓமய முற்றது வுள்ளொளி பெற்றது
நாமய மற்றது நாமறி யோமே. 2158

ऊमै यॆऴुत्तॊडु पेसुम् ऎऴत्तुऱिल्
आमै यगत्तिनिल् अंजुम् अडंगिडुम्
ओमय मुट्रदु उळ्ळॊळि पॆट्रदु
नामय मट्रदु नामऱियोमे । मंत्र-संख्या, 2158

योग होता है जब
मूक 'म'कार के संग
मुखर 'अ'कार - 'उ'कार का
संनादित होता है 'ऊं'कार
जिसके प्रभाव से
लीन हो जाते हैं पंचेंद्रिय
जैसे कि सिमट जाते हैं सारे अंग
कछुए के अंदर
जब प्रसरितं होती है अंतर में ऊँकार-ज्योति,
मिट जाता है जीवबोध
शिवज्ञान आने पर
भूल जाता है जीव निज नाम को । 2158

628. துரிய மிருப்பதுஞ் சாக்கிரத் துள்ளே
நரிகள் பதினாலு நஞ்சுண்டு செத்தன
பரிய புரவியும் பாறிப் பறந்தது
துரிய மிறந்திடஞ் சொல்லவொண் ணாதே. 2159

तुरियमिरुप्पदुम् चाक्किरत्तुळ्ळे
नरिकळ् पतिनालु नंजुण्डु चॆत्तन
परिय पुरवियुम् पाऱिप् पऱन्ददु
तुरिय मिऱन्दिडम् चॊल्लवॊण्णादे । मंत्र-संख्या, 2159

तुरीय रहता है जाग्रत में
जब होता है तुरीय का अनुभव
मृत हो जाते हैं चौदह शृगाल
इंद्रियकरण के,
ज्यों विषपान से हो गए हों मृत,
उड़ चले शब्दादि पांच अश्व भी
जब तुरीय का ऐसा आनंद है
क्या कहना तुरीयातीत का
जिसमें तुरीय भी मर जाए । 2159

629. மாறா மலமைந்தான் மன்னு மவத்தையின்
வேறாய மாய தநுகர ணாதிக்கிங்
கீறாக தேஎவ் வுயிரும் பிறந்திருந்
தாறாத வல்வினை யாலடி யுண்ணுமே. 2160

मा़रा मलमैन्दान् मन्नु भवत्तैयिन्
वे़राय माया तनुकरणादिक्किङ् -
की़रागादे ऍव्वुयिरुम् पि़रन्दिरुन् -
दा़राद वल्विनै यालडि युण्णुमे । मंत्र-संख्या, 2160

दोष करते पांच मल
जीव के संग रहते हैं मुक्ति तक,
नहीं होते विलग जीव से
पांच अवस्थाओं में भी,
इस कारण समाप्त नहीं होते
माया कार्य तनु-करण
समाप्त नहीं होता कर्म-बंधन,
अगणित जन्मों में भी
कष्ट पाता है जीव
ले लेकर अनगिनत जन्म । 2160

630. ஆசான்முன் னேதுயில் மாண வகரைத்
தேசாய தண்டால் எழுப்புஞ் செயல்போல்
நேசாய வீசனு நீடாண வத்தரை
ஏசாத மாயாடன் னாலே எழுப்புமே. 2163

आशान् मुन्ने तुयिल् माणवगरैत्
तेशाय तण्डाल् ऍऴ्ुप्पुम् चॅयल् पोल्
नेशाय वीशनु नीडाणवत्तरै
एशाद मायाडन्नाले ऍऴ्ुप्पुमे । मंत्र-संख्या ,2163

गुरु के सान्निध्य में सोते शिष्य को
जगाता है गुरु निज दंड के प्रयोग से
इसी भांति स्नेहमय ईश भी
अहंकार की दीर्घ निद्रा में लीन जीव को
जगाता है निर्दोष शुद्धमाया के दंड से । 2163

631. ஆவன ஆவ அழிவ அழிவன
போவன போவ புகுவ புகவன
காலன் பேர்நந்தி காட்டித்துக் கண்டவன்
ஏவன செய்யும் இலங்கிழை யோனே. 2175

आवन आव अऴिव अऴिवन
पोवन पोव पुगुव पुगुवन
कावलन् पेर्नन्दि काट्टित्तुक् कण्डवन्
एवन चॅय्युम् इलङ्गिऴैयोने । मंत्र-संख्या, 2175

बने रहें जिनको रहना है
मिट जाएँ जिनको मिट जाना है
निकले जिसे निकलना है आवे जिसको आना है
सबका संचालक नियंता नन्दिदेव है
नन्दी हमें दिखाते हैं, स्वयं देखते हैं साक्षी बन कर
जो भी करते हैं उचित करते हैं स्नेह से वात्सल्य से । 2175

632. அறிவொன் றிலாதன ஐயேழு மொன்றும்
அறிகின்ற என்னை அறியா திருந்தேன்
அறிகின்றாய் நீயென் றருள்செய்தார் நந்தி
அறிகின்ற நானென் றறிந்துகொண் டேனே. 2181

अऱिवॉन्ऱिलादन ऐयेऴु मॉन्ऱुम्
अऱिगिन्ऱ ऍन्नै अऱियादिरुन्देन्
अऱिगिन्ऱाय् नी ऍन्ऱु अरुळ् चॅय्दार् नन्दि
अऱिगिन्ऱ नानॅन्ऱु अऱिन्दुकॉण्डेने । मंत्र-संख्या, 2181

तत्व हैं कुल पैंतीस जमा एक
किन्तु सब के सब अचेतन
विडंबना हैं, चेतन होकर भी
निज को जान न पाया तब तक
नन्दी ने कृपापूर्वक कहा नहीं जब तक
"वत्स, निज को तुम जानोगे अब"
बस तब ज्ञाता मैं जान पाया निज को । 2181

633. சாக்கிர சாக்கிர மாதி தனில்ஐந்தும்
ஆக்கு மலாவத்தை யைந்து நனவாதி
போக்கி யிவற்றொடும் பொய்யான வாறாறு
நீக்கி நெறிநின்றொன் றாகியே நிற்குமே. 2182

चाक्किर चाक्किर मादि तनिल् ऐन्दुम्
आक्कु मलावत्तै ऐन्दु ननवादि
पोक्कि यिवट्रॉडुम् पॉय्यान वाऱाऱु
नीक्कि नॅऱि निन्ऱॉन्ऱागिये निकुमे । मंत्र-संख्या, 2182

क्रमशः बोध होता रहता है
अवस्था पंचक का,
उत्पन्न है जो मल कारण से,
छूट जाता है जब जीव इस पंचक से,
बोध होता है मायामय हैं

छत्तीस तत्व,
परिपक्व होता है परे होकर तत्वों से
और तब
संयोग होता है शिव का
और वहां रहता है एकमेव । 2182

634. தத்துவம் ஆறாரு தன்மனு வேழ்கோடி
மெய்த்தகு வன்னம்ஐம் பானொன்று மேதினி
ஒத்திரு நூற்றிரு பான்நான்கெண் பானொன்று
வைத்த பதங்கலை யோரைந்தும் வந்தவே. 2184

तत्तुवम् आ़रा़रु तन्मनु वेऴ् कोडि
मय्त्तगु वन्नम् ऐम्पानोन्ऱु मेदिनि
ओत्तिरु नूट्रिरुपान् नान्कॆण् पानोन्ऱु
वैत्त पतंकलै ओरैन्दुम् वन्दवे । मंत्र-संख्या, 2184

षट्त्रिंशत संख्यक हैं तत्व
नमः स्वाह स्वधादि
सप्तकोटि हैं सकल मंत्र
विश्रुत वर्ण हैं इक्यावन
अकारादि 'क्ष'कारान्त
दो सौ चौबीस भुवन हैं
मूल पद इक्यासी के संग
पांच कलाएं हैं । 2184

635. நாடிய மண்டல மூன்று நலந்தெரிந்
தோடு மவரோ டுள்ளிரு பத்தைஞ்சுங்
கூடுவர் கூடிக் குறிவழி யேசென்று
தேடிய பின்னர்த் திகைத்திருந் தார்களே. 2185

नाडिय मण्डल मून्रु नलन्तॆरिन्
तोडु मवरोडुळ्ळिरु पत्तैंचुम्

कूडुवर् कूडिक् कुऱिवऴियॆ चॆन्ऱु
तेडिय पिन्नर् तिगैत्तिरुन्दार्गळे । मंत्र-संख्या, 2185

नाड़ी मंडल तीन हैं
इडा, पिंगला, सुषुम्ना (सूर्य, चंद्र, अग्नि)
गुरुकृपा होने पर
भागते हैं आर-पार होते हैं
आर-पार होकर
मिलते हैं पच्चीस तत्व से,
फिर एक होकर
चढ़ते हैं सुषुम्ना-मार्ग से
खोजते हुए,
खोज कर जब पा लेते हैं,
स्थित हो जाते हैं वहीं पर
चकित होकर । 2185

636. சாக்கிர சாக்கிர மாதித் தலையாக்கி
ஆக்கிய தூல மளவாக்கி அதீதத்துத்
தாக்கிய வன்பான தாண்டவஞ் சார்ந்தது
தேக்குஞ் சிவமாதல் ஐந்துஞ் சிவாயமே. 2186

चाक्किर चाक्किर मादित् तलैयाक्कि
आक्किय तूलमळवाक्कि अतीतत्तुत्
ताक्किय वन्पान तांडवम् चार्न्ददु
तेक्कुम् शिवमादल् ऐन्दुम् शिवायमे । मंत्र-संख्या, 2186

जाग्रत में जाग्रत के क्रम से
अनुभव पूरा होता है अवस्था-पंचक का,
फिर काया में श्वास सध जाते हैं
पहुंचते हैं वे तुरीयातीत में,
जहां दर्शन होता है नटराजराज का

आनंद तांडव,
पान कर आनन्द का अमृत
बन जाते हैं शिवमय । (2186)

637. ஆதி பரஞ்சிவஞ் சத்தி சதாசிவம்
ஏதமில் ஈசன்நல் வித்தியா தத்துவம்
போதங் கலைகால நியதிமா மாயை
நீதியீ றாக நிறுத்தினன் என்னே. 2190

आदि परम् शिवम् सत्ति सदाशिवम्
एदमिल् ईशन् नल् वित्तिया तत्तुवम्
पोदम् कलै काल नियति मामायै
नीदियीऱाग निऱुत्तिनन् ऍन्ने । मंत्र-संख्या, 2190

आद्यंतविहीन परतत्व ने
संसृति के प्रवर्तन हेतु
क्रम यह बनाया-
शिव, शक्ति, सदाशिव
महेश्वर के साथ
विद्यातत्व बनाए –
बोध, कला, नियति, काल
और महामाया
क्या ही अद्भुत विकास-क्रम ! 2190

638. தேசு திகழ்சிவஞ் சத்தி சதாசிவம்
ஈசன் அனல்வித்தை இராகங் கலைகால
மாசகல் வித்தை நியதி மகாமாயை
ஆசில் புருடாதி ஆன்மாவீ றாறே. 2191

तेशु तिगऴ् शिवम् सत्ति सदाशिवम्
ईशन् अनल् वित्तै इरागम् कलै काल
मासकल् वित्तै नियति महामायै
आसिल् पुरुडादि आन्मावीऱाऱे । मंत्र-संख्या, 2191

तेजोद्दीप्त शिवतत्व पांच हैं
शिव-शक्ति सदाशिव के संग
महेश्वर और रुद्र (शुद्ध विद्या)
निचले स्तर में हैं विद्यातत्व सात
कार्य माया से जनित :
राग, कला, काल, ज्ञान
नियति, पुरुष और महामाया
शिवतत्व और विद्यातत्व
मिलकर बनते हैं बारह । *2191*

639. ஆணவ மாயையுங் கன்மமு மாமலங்
காணு முளைக்குத் தவுடுமி யான்மாவுந்
தாணுவை யொவ்வாமற் றண்டுல மாய்நிற்கும்
பேணுவாய் மற்றுநின் பாசம் பிரித்தே. *2192*

आणव मायैयुम् कन्ममु मामलम्
काणुमुळैक्कुत् तविडुमि यान्मावुम्
ताणुवै ओव्वामल् तण्डुलमाय् निर्कुम्
पेणुवाय् मट्रु निन् पाशम् पिरित्ते । *मंत्र-संख्या, 2192*

अहंकार भूसी सम है, माया चोकर सी
और कर्म धान का वर्धमान अंकुर है
जिनके कारण चावल
स्थाणु (शिव) से मिले बिना पृथक् रहता है,
पाशों को दूर करो एक-एक कर
लगाओ अंतःकरण शिवचरण पर । *2192*

640. பசுக்கள் பலவண்ணம் பாலொரு வண்ணம்
பசுக்களை மேய்க்கின்ற ஆயன் ஒருவண்ணம்
பசுக்களை மேய்க்கின்ற ஆயன்கோல் போடிற்
பசுக்கள் தலைவனைப் பற்றி விடாவே. *2193*

पशुक्कळ् पलवण्णम् पालॊरु वण्णम्
पशुक्कळै मेय्क्किन्र आयन् ऑरुवण्णम्
पशुक्कळै मेय्क्किन्र आयन् कोल्पोडिर्
पशुक्कळ् तलैवनैप् पट्रि विडावे । मंत्र-संख्या, 2193

रंगबिरंगी गाएँ दूध एक रंग का
गैया चराता ग्वाला दूजे ही रंग का
गायें चराते ग्वाला धरदे निज लकुटिया
गायें स्थिर खड़ी रहती हैं
नायक के पास ही । 2193

641. நனவிற் கனவில்லை ஐந்து நனவிற்
கனவிலாச் சூக்குமங் காணுஞ் சுழுத்தி
தனலுண் பகுதியே தற்கூட்டு மாயை
நனவிற் றுரிய ததீதந் தலைவந்தே. 2196

ननविर् कनविल्लै ऐन्दु ननविर्
कनविलाच् चूक्कुमम् काणुम् सुऴुत्ति
तनलुण् पहुदिये तर्कूट्टु मायै
ननविल् तुरियततीतम् तलैवन्दे । मंत्र-संख्या, 2196

तुरीयातीत जाग्रत में
जो कि पंचम अवस्था है
सूक्ष्म शरीर स्वप्न नहीं देखता
तुरीयातीत सुषुप्ति में
मन आदि पांचों करण स्वकर्मरत हैं
तुरीय से ही स्वतः प्रादुर्भाव है
तुरीयातीत का । 2196

642. அதீதத் துரியத் தறிவனாம் ஆன்மா
அதீதத் துரிய மதனாற் புரிந்தால்
அதீதத் தெழுந்தறி வாகிய மானன்
முதிய அனலிற் றுரியத்து முற்றுமே. 2199

अतीतत् तुरियत्तार्विनाम् आन्मा
अतीतत् तुरिय मदनाल् पुरिन्दाल्
अतीतत् तंळ्ुन्दरिवाहिय मानन्
मुदिय अनलिल् तुरियत्तु मुट्रुमे । मंत्र-संख्या, 2199

तुरीयातीत में पहुँच ज्ञाता होता है आत्मा
तुरीयातीत से भी आगे पहुँचकर
ज्ञानवान् जीव का होता है विलय
ज्योतितुरीय में, शिवाग्नि में । 2199

643. ஈதென் றறிந்திலன் இத்தனை காலமும்
ஈதென் றறிந்தபின் ஏதும் அறிந்திலன்
ஈதென் றறியும் அறிவை அறிந்தபின்
ஈதென் றறியும் இயல்புடை யோனே. 2209

ईदेन्ररिन्दिलन् इत्तनै कालमुम्
ईदेन्ररिन्दपिन् एदुम् अरिन्दिलेन्
ईदेन्ररियुम् अरिवै अरिन्दपिन्
ईदेन्ररियुम् इयल्बुडैयोने । मंत्र-संख्या, 2209

यह मुझे ज्ञात नहीं था इतने काल तक
इसे यथातथ जानने पर अन्य सब हुआ अज्ञात
इस तथ्य का जब हुआ बोध
मैं जान गया, हाँ वही मैं हूँ । 2209

644. திகைக்கின்ற சிந்தையுள் சிங்கங்கள் மூன்று
நகைக்கின்ற நெஞ்சுள் நரிக்குட்டி நான்கு
வகைக்கின்ற நெஞ்சினுள் ஆனைக்கன் றைந்து
பகைக்கின்ற நெஞ்சுக்குப் பாலிரண் டாமே. 2214

तिगैक्किन्र चिन्तैयुळ् चिङ्गङ्गळ् मून्रु
नगैक्किन्र नेञ्जुळ् नरिक्कुट्टि नान्गु
वगैक्किन्र नेञ्जिनुळ् आनैक्कन्रैन्दु
पगैक्किन्र नेञ्जुक्कु पालिरण्डामे । मंत्र-संख्या, 2214

चकित-भ्रमित विचार में हैं तीन सिंह
(काम, क्रोध, मोह)
उछलते कूदते मन में हैं चार शृगाल-शावक
(मन, बुद्धि, इच्छा, अहंकार)
संवेदी हृदय में पाँच हैं हस्ती-शावक
(शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध)
ये सब हैं शत्रु बाह्य और आंतरिक । (2214)

645. நின்றவன் ஆசான் நிகழ்துரி யத்தனாய்
ஒன்றி யுலகின் நியமாதிக ளூற்றுச்
சென்று துரியாதீ தத்தே சிலகாலம்
நின்று பரனாய் நின்மல னாமே. 2217

निन्रवन् आशान् निगऴ् तुरियत्तनाय्
ओन्रियुलगिन् नियमादिगळुट्रुच्
चेन्रु तुरीयातीतत्ते चिलकालम्
निन्रु परनाय् निन्मलनामे । मंत्र-संख्या, 2217

यों स्थित होकर जीव
गुरुकृपा से प्रवेश करना है तुरीय में ।
पालन करता है अष्टांगयोग का
यम-नियम से लेकर
और पहुँचता है तुरीयातीत में
जहाँ कुछ समय बिताने पर बनता है
निर्मल निरामय, नित्यशुद्ध । 2217

646. ஆனவவ் வீசன் அதீதத்தில் வித்தையாத்
தானுல குண்டு சதாசிவ மாசத்தி
மேனிகள் ஐந்தும்போய் விட்டுச் சிவமாகி
மோன மடைந்தொளி மூலத்த னாமே. 2218

आनवव् वीशन् अतीतत्तिल् वित्तैयात् -
नानुलगुण्डु सदाशिव मासत्ति

मेनिकळ् ऐन्दुम् पोय्विट्टुच् शिवमागि
मोन मडैन्दाळि मूलत्तनामे । मंत्र-संख्या, 2218

पहुँचकर तुरीयातीत अवस्था में
ईश बन जाता है वह (जीव)
सकल लोक में व्याप्त ज्ञान ज्यों
फिर ठहरता है शिव-रूपों में
सदाशिव, महेश्वर, रुद्र, विष्णु, विरिंचि बन
इनसे परे होकर
जीव बन जाता है शिव ही
अंत में पहुंचकर
नादातीत मौन-स्थिति में
मिल जाता है शिव-ज्योति में । 2218

647. மண்டல மூன்றினுள் மாயநன் னாடனைக்
கண்டுகொண் டுள்ளே கருதிக் கழிகின்ற
விண்டலர் தாமரை மேலொன்றுங் கீழாகத்
தண்டமுந் தானா யகத்தினுள்ளாமே. 2219

मण्डल मून्रिनुळ् माय नन्नाडनैक्
कण्डु कॊण्डुळ्ळे करुदिक् कळिकिन्र
विण्डलर् तामरै मेलॊन्रुम् कीळागत्
तण्डमुम् तानायगत्तिनुळ्ळामे । मंत्र-संख्या, 2219

इस काया में है एक माया-लोक
सोम-सूर्याग्निमंडल है इसका नाम
इस देश का अधिपति
प्रभु अंतःस्थ है
पाने पर जिसका दर्शन
लक्षित होते हैं काया में
डंठल से युत दो कमल
एक ब्रह्मरंध्र में सहस्रदलयुत

जो पूर्ण विकसित है
दूसरा है हृदय-देश में। 2219

648. அறியாத வற்றை அறிவான் அறிவான்
அறிவான் அறியாதான் தன்னறி வாகான்
அறியா தவத்தை அறிவானைக் கூட்டி
அறியா தறிவானை யாரறி வாரே. 2224

अऱियादवट्रै अऱिवान् अऱिवान्
अऱियान् अऱियादान् तन्नऱिवागान्
अऱिया तवत्तै अऱिवानैक् कूट्टि
अऱियादऱिवानै यारऱिवा,रे। मंत्र-संख्या, 2224

सर्वज्ञ वह है जिसे ज्ञात हो अज्ञात भी,
ज्ञाता वह नहीं जो स्वबोध से
जान लेने का दावा करे,
ज्ञान के लिए व्याकुल जीव का
मार्गदर्शक है सद्गुरु बोध के लिए
इस सद्गुरु का संयोग
जिस परतत्व ने कराया कारुण्य से
उसे जानता कौन है ? 2224

649. தன்னை யறிசுத்தன் றற்கேவ லன்றானும்
பின்ன முறநின்ற பேத சகலனும்
மன்னிய சத்தசத் துச்சத சத்துடன்
துன்னுவர் தத்தந் தொழிற்கள வாகவே. 2227

तन्नै यऱि सुत्तन् ऱ्ऱ्केवलन्ऱानुम्
पिन्नमुऱ निन्ऱ पेद सकलनुम्
मन्निय सत्तसत्तुच् सतसत्तुडन्
तुन्नुवर् तत्तम् तॊऴिर्कळवागवे। मंत्र-संख्या, 2227

'शुद्ध' हैं वे जो जानते हैं निज को,
जो न जाने, कहलाते हैं 'केवल',

'सकल' वे हैं जो जानते हैं
विचलित करते भेदभाव से
तीनों जन फल पाते हैं
निज कर्म के परिपाक से
संयुक्त होता है
शुद्ध सत् से, केवल असत् से
सकल सदसत् से । 2227

650. தானே தனக்குப் பகைவனும் நட்டானுந்
தானே தனக்கு மறுமையும் இம்மையுந்
தானே தான்செய்த வினைப்பயன் துய்ப்பானுந்
தானே தனக்குத் தலைவனு மாமே. 2228

ताने तनक्कुप् पगैवनुम् नट्टानुम्
ताने तनक्कु मरुमैयुम् इम्मैयुम्
ताने तान् चेय्द विनैप्पयन् लुय्प्पानुम्
ताने तनक्कुत् तलैवनुमामे । मंत्र-संख्या, 2228

आप ही आप का शत्रु है मित्र भी
आप ही आप का इह-पर दोनों है
आप ही भोक्ता है निज कर्मफल का
आप ही स्वयं का स्वामी है, मालिक है । 2228

651. சகல அவத்தையிற் சார்ந்தோர் சகலர்
புகலு மலமூ வகையும் புணர்ந்தோர்
நிகரின் மலரோன்மா னீடுபல் தேவர்கள்
நிகழ்நரர் கீட மந்தமு மாமே. 2230

सकल अवत्तैयिर् चार्न्दोर् सकलर्
पुगलु मल मूवगैयुम् पुणर्न्दोर्
निगरिन् मलरोन् मानीडु पल् देवर्गळ्
निगऴ् नरर् कीट मन्तमुमामे । मंत्र-संख्या, 2230

सकलावस्था में पड़े हैं जो वे हैं सकल
इंद्रियानुभव में पड़े ये मग्न हैं त्रिविध पाश में
इनमें आते हैं – अनुपम ब्रह्मा, हरि
देवगणों से लेकर समस्त मानव
कीटांत समग्र जीवगण । 2230

652. தாவிய மாயையில் தங்கும் பிரளய
மேவிய மற்ற துடம்பாய்மிக் குள்ளன
ஓவல் இலக்கணர் ஒன்றிய சீகண்டர்
ஆவயி னூற்றெட் டுருத்திர ராமே. 2231

ताविय मायैयिल् तङ्गुम् प्रळय
मेविय मट्रदुडम्बाय् मिक्कुळ्ळन
ओवल् इलक्कणर् ऑन्रिय शीकण्डर्
आवयिनूट्रॅट्टु रुत्तिररामे । मंत्र-संख्या, 2231

शुद्धमाया से परे पहुँचे हुए प्रलयकल वे हैं
जो मुक्त हो गए एक मल (कर्म) से प्रलयकाल में,
उनमें है माया और अहंकार
पर माया भी उन्हें मोहित नहीं करती
इनमें आते हैं श्रीकण्ठरुद्र तथा
एक सौ आठ रुद्र । 2231

653. ஆகின்ற கேவலத் தாணவத் தானவ
ராகின்ற வித்தேச ராமனந் தாகிய
ராகின்ற எண்மர் எழுகோடி மந்திர
ராகின்ற ஈசர் அநேகரு மாமே. 2232

आगिन्र् केवलत्ताणव त्तानव
रागिन्र् वित्तेसरामनन्तादिय
रागिन्र् ऍण्मर् ऍऴु कोटि मन्तिर
रागिन्र् ईशर् अनेकरुमामे । मंत्र-संख्या, 2232

जो केवल अहंकार से युक्त हैं
माया तथा कर्म से मुक्त
वे विज्ञानकल कहलाते हैं
इनमे आते हैं आठ विद्येश्वर तथा
सप्तकोटि मंत्रों के ईश । 2232

654. ஆமவ ரிற்சிவ னாரருள் பெற்றுளோர்
போமலந் தன்னாற் புகழ்விந்து நாதம்விட்
டோமய மாகி யொடுங்கலி னின்மலந்
தோமறு சுத்தா வவத்தைத் தொழிலே. 2233

आमवरिऱ् शिवनाररुळ् पॅरुळोर्
पोमलम् तन्नाल् पुगऴ् विन्दु नादम् विट्टु
ओमयमागि ऑडुङ्गलिनिन् मलम्
तोमरु सुत्तावत्तैत् तॊऴिले । मंत्र-संख्या, 2233

केवलावस्था में रहने वालों में
पाते हैं कुछ शिव का परम अनुग्रह
जिससे अहंकार भी छूट जाता है
पहुँचते हैं वे नाद और बिंदु के पार
जहाँ वे 'ओंकार' में समा जाते हैं
सानंद रमे रहते हैं निवृत्ति में । 2233

655. மாயையின் மன்னும் பிரளயா கலர்வந்து
மாயையுந் தோன்றா வகைநிற்க ஆணவ
மாய சகலத்துக் காமிய மாமாயை
ஏயமன் னூற்றெட் டுருத்திரர் என்பவே. 2243

मायैयिन् मन्नुम् प्रळयाकलर् वन्दु
मायैयुम् तोन्ऱा वगै निऱ्क आणव
माय सकलत्तुक् कामिय मामायै
एय मन्नूर्ट्ट्टु रुत्तिरर् ऍन्पवे । मंत्र-संख्या, 2243

केवल शुद्धमाया में रहते हैं प्रलयकल
माया के मोह से परे;
उनमें केवल अहंकार है
शरीर शुद्ध मायामय
वे जो भी करें काम्य कर्म
सभी ईश की सेवा होती है
ये कहलाते हैं अष्टोत्तरशत रुद्र । 2243

656. மும்மலங் கூடி முயங்கி மயங்குவோர்
அம்மெய்ச் சகலத்தார் தேவர் சுரர்நரர்
மெய்ம்மையில் வேதா விரிமிகு கீடாந்தத்
தம்முறை யோனிபுக் கார்க்குஞ் சகலரே. 2244

मुम्मलम् कूडि मुयङ्गि मयङ्गुवोर्
अम्मॆय् सकलत्तार् देवर् सुरर् नरर्
मॆय्म्मैयिल् वेदा विरिमिगु कीटान्तत्
तम्मुऱै योनि पुक्कार्क्कुम् सकलरे । मंत्र-संख्या, 2244

त्रिविध मल में जो फंसे हैं
मूल माया के वशवर्ती ये
आकंठमग्न हैं जग-जीवन में
अगणित देव और मानव से लेकर
कुलबुलाते कोटि-कोटि कीट पर्यंत
समग्र जीव ब्रह्मसृष्टि के
कहलाते हैं सकल । 2244

657. சுத்த அவத்தையில் தோய்ந்தவர் மும்மலச்
சத்தசத் தோடத் தனித்தனி பாசமும்
மத்த இருள்சிவ னான கதிராலே
தொத்தற விட்டிடச் சுத்தரா வார்களே. 2245

सुत्त अवत्तैयिल् तोय्न्दवर् मुम्मलच्
सत्तसत्तोडत् तनित्तनिप् पाशमुम्

मत्त इरुळ् शिवनान कदिराले
तोत्तऱ् विट्टिडिच्च् सुत्तरावर्गळे । मंत्र-संख्या, 2245

'सकल' जो सिक्त होते हैं
शुद्ध-अवस्था में
हट जाता है उनका मलत्रय
निवृत्ति मिलती है सदसत् से
इच्छात्मक पाश से, अज्ञान से,
पाकर ज्योति शिवसूर्य की,
बन जाते हैं 'शुद्ध' । 2245

658. இருவினை யொத்திட இன்னருட் சத்தி
மருவிட ஞானத்தில் ஆதன மன்னிக்
குருவினைக் கொண்டருட் சத்திமுன் கூட்டிப்
பெருமல நீங்கிப் பிறவாமை சுத்தமே. 2262

इरुविनै यॉत्तिड इन्नरुट् चत्ति
मरुविड ज्ञानत्तिल् आदन मन्निक्
गुरुविनैक् कॉण्डरुट् चत्ति मुन्कूट्टिप्
पॅरुमल नीङ्गिप् पिऱवामै सुत्तमे । मंत्र-संख्या, 2262

पहुँचते हैं सकल ऐसी स्थिति में
जहां सम हो जाते हैं पाप-पुण्य
शक्ति-निपात पाकर,
विराजते हैं ज्ञान के आसन में
सद्गुरु के उपदेश से
पाते हैं 'शक्ति' का सान्निध्य
जहां मुक्त होकर आणव के आदिमल से
पहुंचते हैं 'शुद्ध' स्थिति में
जन्म-मरण से परे । 2262

659. அப்பும் அனலும் அகலத்து ளேவரும்
அப்பும் அனலும் அகலத்து ளேவாரா

அப்பும் அனலும் அகலத்து ளேதெனில்
அப்பும் அனலும் கலந்தவ் வாறே. 2266

अप्पुम् अनलुम् अगलत्तुळे वरुम्
अप्पुम् अनलुम् अगलत्तुळे वारा
अप्पुम् अनलुम् अगलत्तुळेदॅनिल्
अप्पुम् अनलुम् कलन्दव्वाऱे । मंत्र-संख्या, 2266

अतीत से परे व्याप्त अंतर् में
दर्शित हैं सलिल और अनल एक साथ
यह कैसी अनबूझ पहेली है
जल और अग्नि संग-संग कैसे हैं ?
यह पहेली नहीं है युक्तियुक्त है
क्योंकि जल 'शक्ति' है और अग्नि है 'शिव'
वहाँ दिख रहा है शिव-शक्ति ऐक्य । 2266

660. மாயைகைத் தாயாக மாமாயை யீன்றிட
வாய பரசிவன் தந்தையாய் நிற்கவே
ஏயும் உயிர்க்கே வலசகலத் தெய்தி
ஆய்தரு சுத்தமுந் தான்வந் தடையுமே. 2268

मायै कैत्तायाग मामायै ईन्ऱिड
वाय परशिवन् तन्दैयाय् निकवे
एयुम् उयिर्के वल सकलत्तॅय्दि
आय्तरु सुत्तमुम् तान् वन्दडैयुमे । मंत्र-संख्या, 2268

तात-मात हैं जीवात्मा के
परशिव और महामाया
पालती है अशुद्ध माया धाई-मां के रूप में,
प्रारंभ होती है जीव की मुक्ति-यात्रा
पार कर केवल, सकल अवस्थाएं
पहुंचता है वह 'शुद्धावस्था' में । 2268

661. அஞ்சுங் கடந்த அனாதி பரந்தெய்வ
நெஞ்சம தாய நிமலன் பிறப்பிலி
விஞ்சும் உடலுயிர் வேறு படுத்திட
வஞ்சத் திருந்த வகையறிந் தேனே. 2269

अञ्जुम् कडन्द अनादि परम्दॅय्व
नॅञ्जमदाय निमलन् पिऱप्पिलि
विञ्जुम् उडलुयिर् वेरुपडुत्तिड
वञ्जत्तिरुन्द वगैयऱिन्देने । मंत्र-संख्या, 2269

पांचों मलों से परे है अतः परशिव है
सज्जनों के हृदय में बसता है वह प्रेम से
विमल है, अनादि है, अजन्मा है;
माया से बने शरीर से
जीव को अलग करने हेतु
वह माया से भी मिला है
इस 'तत्व' को भी जाना मैंने । 2269

662. சத்தி பராபரஞ் சாந்தி தனிலான
சத்தி பரானந்தந் தன்னிற் சுடர்விந்து
சத்திய மாயை தனுச்சத்தி ஐந்துடன்
சத்தி பெறுமுயிர் தானங்கத் தாறுமே. 2270

सत्ति परापरम् शांति तनिलान
सत्ति परमानन्दम् तन्निऱ् चुडर् विन्दु
सत्तिय मायै तनुच्चत्ति ऐन्दुडन्
सत्ति पॅरुभूयिर् तानंगत्तारुमे । मंत्र-संख्या, 2270

परापर स्थिति में शक्ति
कहलाती है पराशक्ति
शांति में वह चित्शक्ति है
परानंद में इच्छाशक्ति
ज्योतिर्मय बिंदु में वह ज्ञानशक्ति है

और मायामय स्थिति में क्रियाशक्ति
पाकर इन शक्तियों का अनुग्रह
जीव का लय होता है शिव में । 2270

663. ஆறாறுக் கப்பால் அறிவார் அறிபவர்
ஆறாறுக் கப்பால் அருளார் பெறுபவர்
ஆறாறுக் கப்பால் அறிவாம் அவர்கட்கே
ஆறாறுக் கப்பால் அரனினி தாமே. 2271

आ़ारुक्कप्पाल् अ़रिवार् अ़रिबवर्
आ़ारुक्कप्पाल् अरुळार् पॅरुबवर्
आ़ारुक्कप्पाल् अ़रिवाम् अवरकट्के
आ़ारुक्कप्पाल् अरनिनिदामे । मंत्र-संख्या, 2271

पहुँचे हुए हैं वे जो पहुँचे छत्तीस तत्व के पार
सत्य के ज्ञाता वहीं हैं
अनुग्रह के पात्र वही जो पहुँचे छत्तीस के पार
वे ही सत्यज्ञान के अधिकारी हैं
वहाँ पहुँच कर जान जाते हैं
आनंदमय है हर, आनंद का नाम है शिव । 2271

664. பரமாம் அதீதமே பற்றறப் பற்றப்
பரமாம் அதீதம் பயிலப் பயிலப்
பரமாம் அதீதம் பயிலாத் தபோதனர்
பரமாகார் பாசமும் பற்றொன் றறாதே. 2274

परमाम् अतीतमे पट्ऱ्रप् पट्रप्
परमाम् अतीतम् पयिलप् पयिलप्
परमाम् अतीतम् पयिलात् तपोतनर्
परमागार, पाशमुम् पट्रॉन्ऱ्रादे । मंत्र-संख्या, 2274

परातीत तुरीय जब लक्ष्य में होता है
स्वतः दूर हो जाती हैं इच्छाएँ, कामनाएँ

अनासक्त योगी स्थित रहता है इसी साधना में
अंत में स्वयं परशिव बन जाता है
किन्तु तथाकथित योगी मुँह मोड़ते हैं अभ्यास से
वे कभी परशिव नहीं बन पाते
सदा बद्ध रहते हैं आसक्ति में, माया के पाश में । 2274

665. நின்றஇச் சாக்கிர நீள்துரி யத்தினின்
மன்றனு மங்கே மணஞ்செய்ய நின்றிடும்
மன்றன் மணஞ்செய்ய மாயை மறைந்திடும்
அன்றே யிவனும் அவன்வடி வாமே. 2277

निन्ऱ् इच्चाक्कर नीळ्तुरियत्तिन्
मन्ऱनुमङ्गे मणम् चेय्य निन्ऱिडुम्
मन्ऱन् मणम् चेय्य मायै मऱैन्दिडुम्
अन्ऱे यिवनुम् अवन् वडिवामे । मंत्र-संख्या, 2277

तुरीयातीत जाग्रत अवस्था में
पधारते हैं संयोग हेतु नटराजराज
जब योग होता है भाग जाती है माया
तब जीव बन जाता है स्वयं शिव । 2277

666. உன்னை யறியா துடலைமுன் நானென்றாய்
உன்னை யறிந்து துரியத் துறநின்றாய்
தன்னை யறிந்தும் பிறவி தணவாதால்
அன்ன வியாத்தன் அமலனென் றறிதியே. 2279

उन्नै यऱिया दुडलै मुन् नानॆन्ऱाय्
उन्नै यऱिन्दु तुरियत्तुऱ निन्ऱाय्
तन्नै यऱिन्दुम् पिऱवि तणवादाल्
अन्न वियात्तान् अमलनॆन्ऱऱिदिये । मंत्र-संख्या, 2279

जब स्व को न पहचाना था देह को 'मैं' माना था
अब अनुग्रह से, कृपा से तुमने पहचाना स्व को

मात्र इससे मुक्त न होंगे जन्मबंध से
चलो, आगे बढ़ो, लक्ष्य करो तुरीयातीत का
जहाँ रहता है सर्वव्याप्त अमल-विमल
जिसकी कृपा से मुक्त बनोगे जन्म-बंधन से । 2279

667. கலப்பறி யார்கடல் சூழுல கேழும்
உலப்பறி யாருட லோடுயிர் தன்னை
அலப்பறிந் திங்கர சாளகி லாதார்
குறிப்பது கோல மடலது வாமே. 2287

कलप्परियार् कडल् चूऴुलगेऴ्ुम्
उलप्परियार् उडलोडुयिर् तन्नै
अलप्परिन्दिङ्ग रसाळकिलादार्
कुऱिप्पदु कोल मडलदुवामे । मंत्र-संख्या, 2287

अबोध हैं जो नहीं जानते
सागरवलयित सात भुवन
सचराचर जीवराशि सब
मायाकार्य से जनित हैं
अज्ञ वे आसक्त हैं
नश्वर देह पर,
भटकते हैं निर्लक्ष्य होकर
कैसे राज कर सकते हैं
अद्भुत आत्मलोक पर
सत्य-ज्ञान पाना हो
चित्त लगाएं शिव-स्वरूप पर
यही मार्ग है उद्धार का । 2287

668. பொன்னை மறைத்தது பொன்னணி பூடணம்
பொன்னின் மறைந்தது பொன்னணி பூடணம்
தன்னை மறைத்தது தன்கர ணங்களாம்
தன்னின் மறைந்தது தன்கர ணங்களே. 2289

पॉन्नै मऱैत्तदु पॉन्नणि पूडणम्
पॉन्निन् मऱैन्दतु पॉन्नणि पूडणम्
तन्नै मऱैत्तदु तन् करणङ्गळाम्
तन्निन् मऱैन्ददु तन् करणङ्गळे । मंत्र-संख्या, 2289

कनक को छिपाए कनकमणि भूषण
कनक में छिप गया कनकमणि भूषण
आत्मा को छिपावें इन्द्रिय और करण
आत्मा में छिप जाते हैं निज के करण । 2289

669. மரத்தை மறைத்தது மாமத யானை
மரத்தின் மறைந்தது மாமத யானை
பரத்தை மறைத்தது பார்முதற் பூதம்
பரத்தின் மறைந்தது பார்முதற் பூதமே. 2290

मरत्तै मऱैत्तदु मामद यानै
मरत्तिन् मऱैन्ददु मामद यानै
परत्तै मऱैत्तदु पार् मुदल् पूतम्
परत्तिन् मऱैन्ददु पार्मुदल् पूतम् । मंत्र-संख्या, 2290

(सुदक्ष कारीगर द्वारा निर्मित)
मदमत्त हाथी छिपाये महावृक्ष को
जिससे रचित है वह
महावृक्ष संकल्प से हाथी को देखो
छिप जाता है हाथी
इसीविध परात्पर को छिपावे पंचभूत
जिनसे निर्मित है चराचर जगत्
परात्पर के ध्यान से देखा जाए
छिप जाते हैं पंचभूत और सकल चराचर । 2290

670. நின்றான் அருளும் பரமுமுன் னேயமும்
ஒன்றாய் மருவும் உருவும் உபாதியுஞ்

சென்றா னெனைவிடுத் தாங்கிற்செல் லாமையும்
நன்றான ஞானத்தின் நாதப் பிரானே. 2295

निन्रान् अरुळुम् परमुमुन् नेयमुम्
ओन्राय् मरुवुम् उरुवुम् उपादियुम्
चेन्रानैनै विडुत्ताङ्गिर् चेल्लामेयुम्
नन्रान ज्ञानत्तिन् नादप्पिराने । मंत्र-संख्या, 2295

स्थित रहा वह परशिव
अनुग्रह रूप में प्रेम, वात्सल्य बन कर
सकल रूप और उपाधियाँ मिलकर एकरूप
क्या ही इंद्रियातीत अनुभव है
धन्य भाग, अपनाया मुझे
मेरे गुरु मेरे ज्ञाननाथ ने । 2295

671. சாத்திக மெய்து நனவெனச் சாற்றுங்கால்
வாய்த்த இராசத மன்னுங் கனவென்ப
ஓய்த்திடுந் தாமதம் உற்ற சுழுத்தியாம்
மாய்த்திடு நிர்க்குண மாசில் துரியமே. 2296

सात्तिकमेय्दु ननवेनच् चाट्रुङ्काल्
वायत्त इरासत मन्नुम् कनवेन्ब
ओय्त्तिडुम् तामदम् उट्र सुऴुत्तियाम्
माय्त्तिडु निर्गुण मासिल् तुरियमे । मंत्र-संख्या, 2296

जागृति में सत्वगुण, रजोगुण स्वप्न में
गहन सुषुप्ति में प्राबल्य है तमोगुण का
किंतु निर्गुण की स्थिति में
तीनों होते हैं नष्ट, निर्गुण उन पर रहता है हावी
यही विशेषता है शुद्ध तुरीयावस्था की । 2296

672. பெறுபகி ரண்டம் பேதித்த அண்டம்
எறிகடல் ஏழின் மணல்அள வாகப்

பொறியொளி பொன்னணி யென்ன விளங்கிச்
செறியும்அண் டாசனத் தேவர் பிரானே. 2297

पॆरु बहिरण्डम् बेदित्त अण्डम्
ऎरिकडल् एऴिन् मणल् अळवागप्
पॊरियॊळि पॊन्नणि यॆन्न विळंगिच्
चॆरियुम् अण्डासनत् तेवर् पिराने । मंत्र-संख्या, 2297

ब्रह्माण्ड और बहिरण्ड का विस्तार
जिसमें व्याप्त हैं
सकल विश्व, लोकालोक,
असंख्य अगणित बिखरे हैं,
ज्यों सुनहली चमकती रेत बिखरी हो
सात समुद्र की
देव-देव का आसन है
यह सारा ब्रह्मांड, बहिरंड । 2297

673. ஆனந்த தத்துவம் அண்டா சனத்தின்மேல்
மேனிஐந் தாக வியாத்தமுப் பத்தாறாய்த்
தானந்த மில்லாத தத்துவ மானவை
ஈனமி லாஅண்டத் தெண்மடங்காமே. 2298

आनन्द तत्तुवम् अण्डासनत्तिन् मेन्
मेनि ऐन्दाग वियात्त मुप्पत्ताराय्
तानन्त मिल्लाद तत्तुव मानवै
ईनमिला अण्डत्तॆण् मडंगामे । मंत्र-संख्या, 2298

विराज रहा है ब्रह्माण्ड-आसन पर
आनन्द-तत्व,
पांच स्वरूप लेकर जो
व्याप्त हुआ छत्तीस तत्वों में,
उनसे वर्द्धित तत्व संख्यातीत हैं
अण्डों से आठ-आठ गुना अधिक । 2298

674. கேவலந் தன்னிற் கலவச் சகலத்தின்
மேவுஞ் செலவு விடவரு நீக்கத்துப்
பாலந் தனைக்காண்டன் மூன்றும் படர்வற்ற
தீதறு சாக்கிரா தீதத்திற் சுத்தமே. 2302

केवलन्तन्निऱ् कलवच् चकलत्तिन्
मेवुम् चॅलवु विडवरु नीक्कत्तु
पावुम् तनैक्काण्डन् मून्ऱुम् पडर्वट्र
तीतऱु चाक्किरातीतत्तिऱ् चुत्तमे । मंत्र-संख्या, 2302

जीव का स्वयं में रहना केवलावस्था
इन्द्रियों से मिश्रित होवे तब सकलावस्था है
आगे चल कर स्वयं को पहचान लेता है
चलकर इन तीनों के पार
प्रवेश करता है जाग्रतातीत में
यही शुद्धावस्था है । 2302

675. வெல்லும் அளவில் விடுமின் வெகுளியை
செல்லும் அளவுஞ் செலுத்துமின் சிந்தையை
அல்லும் பகலும் அருளுடன் தூங்கினாற்
கல்லும் பிளந்து கடுவொளி யாமே. 2303

वॅल्लुम् अळविल् विडुमिन् वॅगुळियै
चॅल्लुम् अळवुम् चॅलुत्तुमिन् चिन्तैयै
अल्लुम् पगलुम् अरुळुडन् तूंगिनाऱ्
कल्लुम् पिळन्दु कडुवॉळियामे । मंत्र-संख्या, 2303

जुटे रहो क्रोध-जय के प्रयास में
जितना संभव हो तुम से
लगाए रखो चित्त प्रभु-ध्यान में,
जितनी गहराई में पैठ सको
यदि सुरत लगी रहे सतत

निश्चित ध्वस्त होगा विघ्नों का पहाड़
और लक्षित होगा
अखंड विस्तार सुन्नमंडल का । 2303

676. ஆன்மாவே மைந்த னாயினன் என்பது
தான்மா மறையறை தன்மை யறிகிலர்
ஆன்மாவே மைந்தன் அரனுக் கிவனென்றால்
ஆன்மாவும் இல்லையால் ஐயைந்தும் இல்லையே. 2306

आत्मावे मैन्दनायिनऩ् ऍऩ्पदु
तान्मा मऱैयऱै तन्मै यऱिकिलऱ्
आन्मावे मैन्दऩ् अरनुक्किवनॆंऩ्ऱल्
आन्मावुम् इल्लैयाल् ऐयैन्दुम् इल्लैये । मंत्र-संख्या, 2306

वेदवचन है 'आत्मा वै पुत्र नाम'
तात्पर्य इसका रहस्यमय है
शिवानन्द के अनुभव का अधिकार
जीव को ही है इसलिए जीव शिव का सूनु है
चौबीस तत्वों के साथ एक मिलकर
जीव कहलाता है,
किंतु देहवियोग होने पर
न जीव है वहाँ न ही पच्चीस तत्व । 2306

677. நெருப்புண்டு நீருண்டு வாயுவும் உண்டங்
கருக்கனுஞ் சோமனும் அங்கே அமருந்
திருத்தக்க மாலுந் திசைமுகன் தானும்
உருத்திர சோதியும் உள்ளத்து ளாரே. 2315

नॆरुप्पुण्डु नीरुण्डु वायुवुम् उण्डङ्ङु
अरुक्कनुम् सोमनुम् अङ्गे अमरुम्
तिरुत्तक्क मालुम् तिशैमुगऩ् तानुम्
उरुत्तिर जोतियुम् उळ्ळत्तुळारे । मंत्र-संख्या, 2315

(शिवसायुज्य प्राप्त)
सिद्धों के अंतर् में
अनल सलिल के साथ अनिल भी है
ज्योतित हैं वहाँ आदित्य के साथ चन्द्रमा
हृदय में विराजे हैं
त्रिदेव – ब्रह्मा, हरि और रुद्र । 2315

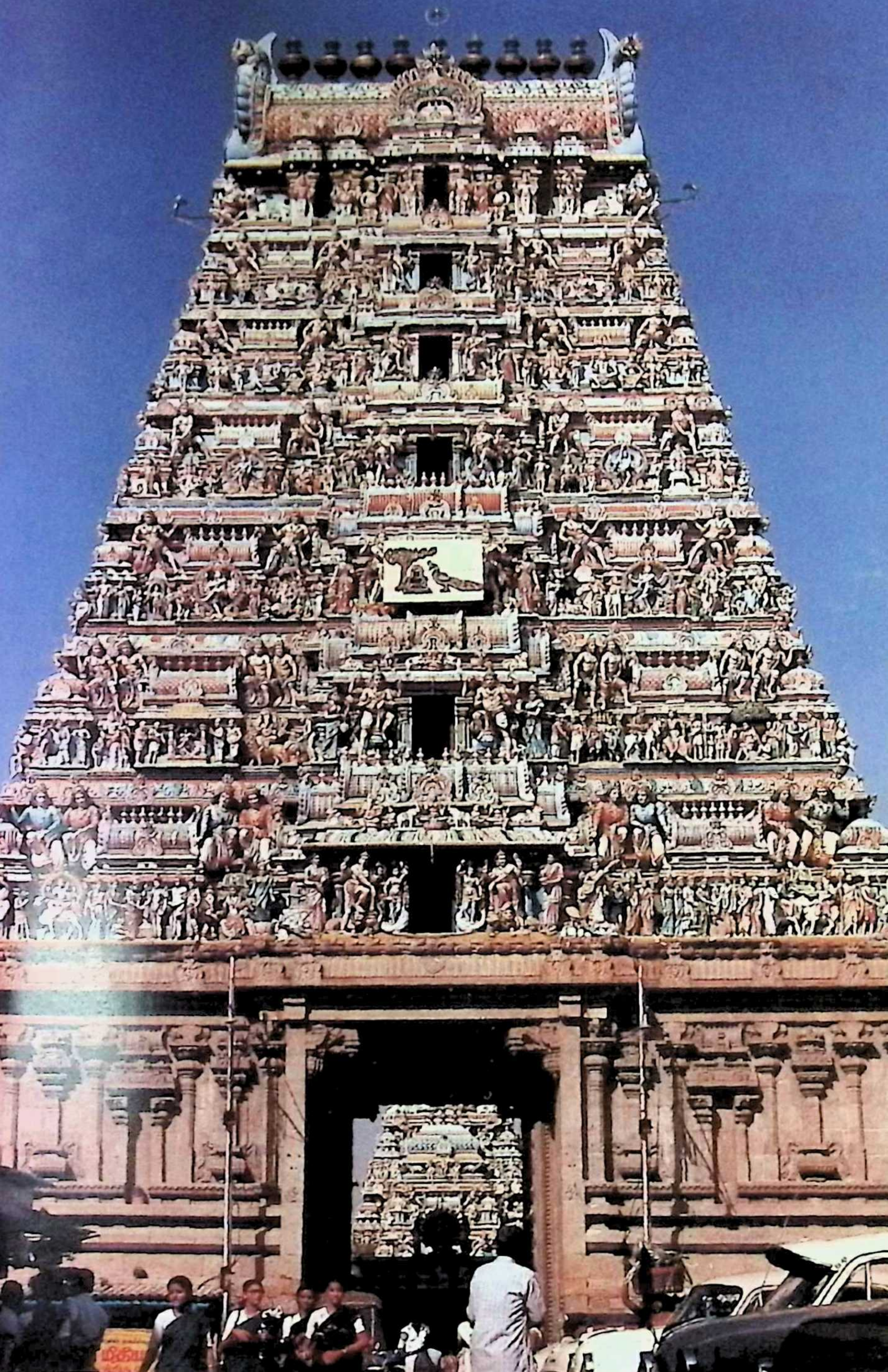
678. ஆடிய காலில் அசைக்கின்ற வாயுவுந்
தாடித் தெழுந்த தமருக ஓசையும்
பாடி யெழுகின்ற வேதா கமங்களும்
நாடி யினுள்ளாக நான்கண்ட வாறே. 2317

आडिय कालिन् अशैक्किन्र् वायुवुम्
ताडित् तॆऴ्ुन्द दमरुग ओशैयुम्
पाडि यॆऴ्ुगिन्र् वेदागमङ्गळुम्
नाडियिनुळ्ळाग नान् कण्डवाऱे । मंत्र-संख्या, 2317

मनमंदिर में नटराज ने किया नर्तन
उत्थित चरणों से प्रेरित हुई प्राणवायु
सुषुम्ना से चढ़ते हुए
कण्ठदेश में श्रव्य हुआ डमरूनाद
वेदागमों का दिव्यगान
इन सब का साक्षात्कार किया
अनुभव किया मैंने मध्यनाड़ी में । 2317

679. செயலற் றிருக்கச் சிவானந்த மாகுஞ்
செயலற் றிருப்பார் சிவயோகந் தேடார்
செயலற் றிருப்பார் செகத்தொடுங் கூடார்
செயலற் றிருப்பார்க்கே செய்தியுண் டாமே. 2319

चॆयलट्रिरुक्कच् चिवानन्दमागुम्
चॆयलट्रिरुप्पार् शिवयोगम् तेडार्



மயிலாப்பூர் அருள்மிகு கபாலீசுவரர் திருக்கோவில், சென்னை
श्री कपालीश्वर मंदिर, मयिलापुर, मद्रास
Sri. Kapaleeswarar Temple, Mylapore Madras-600004

चेयलट्रिरुप्पार् जगत्तोडुम् कूडार्
चेयलट्रिरुप्पार्के चेय्दि युण्डामे । मंत्र-संख्या, 2319

निष्क्रिय निस्पंद रहना समाधि में
यही है शिवानन्द का महानन्द
निष्क्रिय हो समाधिलीन तपोधन
कामना नहीं करते शिवयोग की
जग-जीवन से उनका नहीं है नाता
उन्हीं को लब्ध शिवानन्द संदेश । 2319

680. தானவ னாகிய ஞானத் தலைவனை
வானவ ராதியை மாமணிச் சோதியை
ஈசமின் ஞானத் தின்னருட் சத்தியை
ஊனமி லாள்தன்னை யூனிடைக் கண்டதே. 2324

तानवनागिय ज्ञानत्तलैवन्
वानवरादियै मामणिच् चोतियै
ईनमिन् ज्ञानत्तिन्नरुट् चक्तियै
ऊनमिल्लाळ् तन्नै यूनिडैक् कण्डदे । मंत्र-संख्या, 2324

धन्य हूँ मैं अपार कृपा है उसकी
जिसने मुझे वही बनाया
उस देवाधिदेव परमेश्वर को
उस अद्वितीय रत्न की दिव्यज्योति को
माँ पराशक्ति की अनुपम ज्योति को
देख रहा हूँ मैं उसके अनुग्रह से
देख रहा इस पार्थिव देह में । 2324

681. அறிவிக்க வேண்டாம் அறிவற் றயர்வோர்க்கும்
அறிவிக்க வேண்டாம் அறிவிற் செறிவோர்க்கும்
அறிவுற் றறியாமை யெய்திநிற் போர்க்கே
அறிவிக்கத் தம்மறி வாரறி வோரே. 2327

अऱिविक्क वेण्डाम् अऱिविट्रियर् वोर्क्कुम्
अऱिविक्क वेण्डाम् अऱिविर् चॅऱिवोर्क्कुम्
अऱिवुट्ररियामै ऍय्दि निर्प्पोर्क्के
अऱिविक्कत् तम्मऱिवारऱिवोरे । मंत्र-संख्या, 2327

जताना नहीं है उन्हें जो निमग्न हैं अज्ञान में
जताना नहीं है उन्हें जो ज्ञान से परिपूर्ण हैं
जताना है उन्हें जिनको ज्ञात है कि वे अज्ञान में हैं
तमस से प्रकाश की ओर आने का ढूंढ रहे हैं मार्ग
जताओ उन्हें वे जान लेंगे, निज को जान लेंगे । 2327

682. தன்னை யறிந்து சிவனுடன் தானாக
மன்னு மலங்குணம் மாளும் பிறப்பறும்
பின்னது சன்முத்தி சன்மார்க்கப் பேரொளி
நன்னது ஞானத்து முத்திரை நண்ணுமே. 2331

तन्नैयरिन्दु शिवनुडन् तानाग
मन्नु मलङ्गुणम् माळुम् पिऱप्परुम्
पिन्नदु सन्मुत्ति सन्मार्गप् पेरॉळि
नन्नदु ज्ञानत्तु मुत्तिरै नण्णुमे । मंत्र-संख्या, 2331

निज को जानने पर शिव ही बन जाता है
दूर होते हैं सकल मल, छूटता है जनन-मरण का चक्र
फिर लब्ध होती है महामुक्ति
सन्मार्ग की कमनीय ज्योति
ज्ञान की महामुद्रा अंकित होती है । 2331

2340. அவமுஞ் சிவமும் அறியார் அறியார்
அவமுஞ் சிவமுஞ் அறிவார் அறிவார்
அவமுஞ் சிவமும் அருளால் அறிந்தால்
அவமுஞ் சிவமும் அவனரு ளாமே. 2340

अवमुम् शिवमुम् अऱियार् अऱियार्
अवमुम् शिवमुम् अऱिवार् अऱिवार्

अवमुम् शिवमुम् अरुळाल् अऱिन्दाल्
अवमुम् शिवमुम् अवनरुळामे । मंत्र-संख्या, 2340

अज्ञ हैं वे जो न जानते शिव-भव का भेद
संतजन को ज्ञात है यह शिव-भव का भेद
शिव-भव के यथावत् ज्ञान के लिए चाहिए
उसका अनुग्रह
शिव-भव को समझें तो होता ज्ञात
शिव-भव भी उसका अनुग्रह । 2340

684. தானென் றவனென் றிரண்டென்பர் தத்துவந்
தானென் றவனென் றிரண்டற்ற தன்மையைத்
தானென் றிரண்டுன்னார் கேவலத் தானவர்
தானின்றித் தானாகத் தத்துவ சுத்தமே. 2348

तानॆन्ऱवनॆन्ऱु इरण्डॆन्बर् तत्तुवम्
तानॆन्ऱवनॆन्ऱु इरण्डट्र तन्मैयै
तानॆन्ऱिरण्डुन्नार् केवलम् तानवर्
ताननिऱित् तानागत् तत्तुव सुत्तमे । मंत्र-संख्या, 2348

तत्वबोध से रहित
कहते हैं 'मैं' और 'वह' दो हैं,
तत्वबोध होने पर
'मैं' और 'वह' का नहीं रहता भेद,
जो पहुँचे हैं शुद्ध केवल स्थिति में
तत्पर वे होते हैं विलीन
तत् में तजकर 'अहम्' बोध । 2348

685. தன்னினில் தன்னை யறியுந் தலைமகன்
தன்னினில் தன்னை யறியத் தலைப்படுந்
தன்னினில் தன்னைச் சார்கில னாகில்
தன்னினில் தன்னையுஞ் சார்தற் கரியவே. 2349

तन्निनिल् तन्नै यरियुम् तलैमगन्
तन्निनिल् तन्नै यरियत् तलैप्पडुम्
तन्निनिल् तन्नैच् चार्न्दिलनागिल्
तन्निनिल् तन्नैयुम् चार्दर् करियवे । मंत्र-संख्या, 2349

महनीय हैं वे अनुभव करें जो
आत्मतत्व निज अंतस् में
शिवानन्द इस जीवालय में;
जो न जानता
स्वयं में रमते आत्मतत्व को
खोजता नहीं शिव को निज में
असंभव है उसके लिए
देहालय में शिव का दर्शन । 2349

686. மண்ணொன்று தான்பல நற்கல னாயிடும்
உண்ணின்ற யோனிகட் கெல்லாம் ஒருவனே
கண்ணொன்று தான்பல காணுந் தனைக்காணா
அண்ணலும் அவ்வண்ண மாகிநின் றானே. 2351

मण्णोन्रु तान् पल नर्कलनायिडुम्
उण्णिन्र योनिकट्कॅल्लाम् ऑरुवने
कण्णोन्रु तान् पल काणुम् तनैक्काणा
अण्णलुम् अव्वण्णमागि निन्राने । मंत्र-संख्या, 2351

अनगिनत हैं घड़े पर माटी एक है
अगणित जीवों में रमता वही एक है
अगणित दृश्यों को देखती नयन-ज्योति एक है
जो सबको देख पाती है निज को नहीं
यही उपमा अंतर्यामी सर्वेश्वर की है
सब को दिखाता है स्वयं छिपा है सब में । 2351

687. தன்னை யறியத் தனக்கொரு கேடில்லை
தன்னை யறியாமல் தானே கெடுகின்றான்
தன்னை யறியும் அறிவை அறிந்தபின்
தன்னையே யர்ச்சிக்கத் தானிருந் தானே. 2355

तन्नैयरियत् तनक्कॉरु केडिल्लै
तन्नैयरियामल् ताने कॅडुकिन्रान्
तन्नैयरियुम् अरिवै अरिन्द पिन्
तन्नैये यर्चिक्कत् तानिरुन्दाने । मंत्र-संख्या, 2355

आत्मज्ञान से क्षति नहीं होती निज की
आत्मज्ञान बिन नष्ट होता है जीव,
जिस क्षण जीव में उदित होता है
आत्मबोध पाने का ज्ञान
जीव शिव बनकर रमता है
आत्मा का करता पूजन । 2355

688. அறிவுக் கழிவில்லை யாக்கமும் இல்லை
அறிவுக் கறிவல்ல தாதாரம் இல்லை
அறவே யறிவை யறிகின்ற தென்றிட்
டறைகின் றனமறை யீறுகள் தாமே. 2358

अरिवुक्कळिविलै याक्कमुम् इल्लै
अरिवुक्करिवल्ल तातारम् इल्लै
अरिवे यरिवै यरिकिन्र तॅन्रिट्-
टरैकिन्रन मरैयीरुकळ् तामे । मंत्र-संख्या, 2358

ज्ञान का होता नहीं तिरोधान न प्रादुर्भाव
ज्ञान का आधार भी स्वयं ज्ञान है,
वेद-वेदांत की यही है घोषणा
ज्ञान से ही ज्ञान का होता है बोध । 2358

689. அறிவுடை யார்நெஞ் சகலிட மாவ
தறிவுடை யார்நெஞ் சருந்தவ மாவ

தறிவுடை யார்நெஞ்சொ டாதிப் பிரானும்
அறிவுடை யார்நெஞ்சத் தங்குநின் றானே. 2364

अऱिवुडैयार् नॆञ्जगलिडमावदु
अऱिवुडैयार् नॆञ्जरुन्तनमावदु
अऱिवुडैयार् नॆञ्जॊडादिप् पिरानुम्
अऱिवुडैयार् नॆञ्जत्तङ्गु निन्ऱाने । मंत्र-संख्या, 2364

अनन्त विस्तार है ज्ञानी का हृदय
अद्भुत तपोधाम है ज्ञानी का हृदय
आदिदेव का आवास है ज्ञानी का हृदय
प्रभु की रमण-स्थली है ज्ञानी का हृदय । 2364

690. மாயனு மாகி மலரோன் இறையுமாய்க்
காயநன் னாட்டுக் கருமுத லானவன்
சேயன் அணியன் தித்திக்குந் தீங்கரும்
பாயமு தாகிநின் றண்ணிக்கின் றானே. 2365

मायनुमागि मलरोन् इऱैयुमाय्
कायनन्नाट्टुक् करु मुदलानवन्
चेयन् अणियन् तित्तिक्कुम् तीङ्करुम्-
पायमुदागि निन्ऱण्णिक्किन्ऱाने । मंत्र-संख्या, 2365

अज-हरि-हर स्वरूप है प्रभु
संसृति का मूल-कारण
दूर दिखने पर भी प्रभु
दूर नहीं है जीव से,
माधुर्य में इक्षु-सा, अमृत-सा वह
निकट ही है जीव के । 2365

691. மாய விளக்கது நின்று மறைந்திடுந்
தூய விளக்கது நின்று சுடர்விடுங்
காய விளக்கது நின்று கனன்றிடுஞ்
சேய விளக்கினைத் தேடுகின் றேனே. 2367

माय विळक्कदु निन्रु मऱैन्दिडुम्
तूय विळक्कदु निन्रु चुडर् विडुम्
काय विळक्कदु निन्रु कनन्ऱिडुम्
चेय विळक्किनैत् तेडुकिन्ऱेने । मंत्र-संख्या, 2367

माया का झिलमिलाता दीप
कभी जलता है कभी बुझता है,
शुद्धज्ञान का है जो दीप
स्थिरता से जलता रहता है,
और काया का यह दीप
सुलगता अंदर ही अंदर
मेरा लक्ष्य है वह ज्योतिदीप
जो अम्बर में भासित है । 2367

692. தானான வேதாந்தந் தானென்னுஞ் சித்தாந்த
மானாத் துரியத் தணுவன் றனைக்கண்டு
தேனார் பராபரஞ் சேர்சிவ யோகமாய்
ஆனா மலமற் றருஞ்சித்தி யாதலே. 2372

तानान वेदान्तम् तार्नन्नुम् सित्तान्तम्
आनात् तुरियत्तणुवन् तनैक्कण्डु
तेनार् परापरम् चेर् शिवयोगमाय्
आना मलमद्ररुम् सित्तियादले । मंत्र-संख्या, 2372

वेदांत कहे, "मैं ब्रह्म हूँ"
सिद्धांत कहे, "मैं बनूँगा ब्रह्म"
तुरीय में होता है साक्षात्कार आत्मा का
और शिवयोग में
दूर होते हैं तीन मल
सिद्ध होता है मधुर संयोग परात्पर से । 2372

693. தானவ னாகுஞ் சமாதி தலைப்படில்
ஆன கலாந்தநா தாந்தயோ காந்தமும்
ஏனைய போதாந்தம் சித்தாந்த மானது
ஞான மெனஞேய ஞாதுரு வாகுமே. 2381

तानवनागुम् समादि तलैप्पडिल्
आन कलान्त नादान्त योगान्तमुम्
एनैया बोदान्तम् सित्तान्तमान्दु
ज्ञानमॅन ज्ञेय ज्ञातुरुवागुमै । मंत्र-संख्या, 2381

कलांत, नादांत और योगांत के साथ
बोधांत और सिद्धांत से होकर
आत्मा का परमात्म में होना लीन
समाधि की महादशा है
अद्भुत अनुभव है
जहाँ एक होकर राजता है
ज्ञान, ज्ञातृ और ज्ञेय । 2381

694. வேதாந்தஞ் சித்தாந்தம் வேறிலா முத்திரை
போதாந்த ஞானம் யோகாந்தம் பொதுஞேய
நாதாந்தம் ஆனந்தஞ் சீரோ தயமாகும்
மூதாந்த முத்திரை மோனத்து மூழ்கவே. 2386

वेदान्तम् सित्तान्तम् वेऱिला मुत्तिरै
बोदान्त ज्ञानम् योगान्तम् पॉदुज्ञेय
नादान्तं आनन्दं चीरोदयमागुम्
मूदान्त मुत्तिरै मोनत्तु मूऴ्गवे । मंत्र-संख्या, 2386

अभिन्न हैं लक्षण
वेदांत और सिद्धांत का
बोधांत दिव्यज्ञान तो
योगांत है ज्ञेय
नादांत स्वयं आनंद है

इन सब से बढ़कर है
अंतिम स्थिति
मग्न होना मौन में । 2386

695. தத்துவ மாகுஞ் சகள வகளங்கள்
தத்துவ மாம்விந்து நாதஞ் சதாசிவந்
தத்துவ மாகுஞ் சீவன்றன் தற்பரந்
தத்துவ மாஞ்சிவ சாயுச் சியமே. 2396

तत्तुवमागुम् सकळ वकळङ्गळ्
तत्तुवमाम् विन्दु नादम् सदाशिवम्
तत्तुवमागुम् जीवन् तन् तर्परम्
तत्तुवाम् शिव सायुच्यमे । मंत्र-संख्या, 2396

सकल भी निष्कल भी तत्व है
बिंदु-नाद-सदाशिव भी तत्व हैं
जीव की तत्पर स्थिति भी तत्व है
जीव का शिवसायुज्य भी तत्व है । 2396

696. வேதமோ டாகமம் மெய்யாம் இறைவன்நூல்
ஓதும் பொதுவுஞ் சிறப்புமென் றுள்ளன
நாதன் உரையவை நாடில் இரண்டந்தம்
பேதம தென்பர் பெரியோர்க் கபேதமே. 2397

वेदमोडागमम् मॅय्याम् इऱैवन् नूल्
ओदुम् पॉदुवुम् चिऱप्पुमॅन्ऱुळ्ळन
नादन् उरैयवै नाडिल् इरण्डन्तम्
बेदमदॅन्बर् पॅरियोर्क्कबेदमे । मंत्र-संख्या, 2397

यह सत्य है कि
वेद और आगम
ईश द्वारा प्रकटित सद्ग्रंथ हैं,
एक सामान्य दूसरा विशिष्ट

कहते हैं दोनों के लक्ष्य हैं भिन्न
किन्तु सच्चे ज्ञानियों के लिए
दोनों ही हैं अभिन्न । 2397

697. அறிவறி வென்ற அறிவு மனாதி
அறிவுக் கறிவாம் பதியும் அனாதி
அறிவினைக் கட்டிய பாசம் அனாதி
அறிவு பதியிற் பிறப்பறுந் தானே. 2405

अऱिवऱिर्वॆन्ऱ अऱिवुमनादि
अऱिवुक्कऱिवाम् पतियुम् अनादि
अऱिविनैक्कट्टिय पाशम् अनादि
अऱिवुपतियिऱ् पिऱप्पऱुत्ताने । मंत्र-संख्या, 2405

ज्ञानमय आत्मरूप अनादि है
परज्ञानरूप पति भी अनादि है
ज्ञान को बांधता पाश भी अनादि है
सत्यज्ञान का बोध होने पर
समाप्त होता है जन्म-मृत्यु-चक्र । 2405

698. நாடும் பதியுடன் நற்பசு பாசமும்
நீடுமா நித்தன் நிலையறி வாரில்லை
நீடிய நித்தம் பசுபாச நீக்கமும்
நாடிய சைவர்க்கு நந்தி யளித்ததே. 2410

नाडुम् पतियुडन् नऱ्पसु पाशमुम्
नीडुमानित्तन् निलैयऱिवाऱिल्लै
नीडिय नित्तम् पसुपाश नीक्कमुम्
नाडिय शैवर्क्कु नन्दि यळित्तदे । मंत्र-संख्या, 2410

जिसको खोजते हैं वह पति नित्य है
पति के साथ जीव और पाश भी नित्य हैं
प्रभु की महिमा-गरिमा से अज्ञात है जीव

शैव-सिद्धांत के साधक के लिए
सच्चा ज्ञान मिलता है नन्दी से
ज्ञान के साथ पाश-मोचन शाश्वत मुक्ति । *2410*

699. பதிபசு பாசம் பயில்வியா நித்தம்
பதிபசு பாசம் பகர்வோர்க் காறாக்கிப்
பதிபசு பாசத்தைப் பற்றற நீக்கும்
பதிபசு பாசம் பயில நிலாவே. *2412*

पतियसुपाशम् पयिल्विया नित्तम्
पतिपसुपाशम् पगर्वोर्क्काऱाक्कि
पतिपसुपाशत्तैप् पट्ऱर नीक्कुम्
पतिपसुपाशम् पयिल निलावे । *मंत्र-संख्या, 2412*

स्वयं प्रभु गुरु बनकर
उद्बुद्ध करते हैं मर्म पशु और पाश का
बोध पाता है जीव जब पशु-पाश मर्म का
स्फुरित करते हैं मार्ग, काटते हैं पाश-बंधन
पशु-पाश से यों संबद्ध प्रभु
पशु पाश से स्वयं मुक्त हैं । *2412*

700. படைப்பு மளிப்பும் பயிலிளைப் பாற்றுந்
துடைப்பு மறைப்புமுன் தோன்ற அருளுஞ்
சடத்தை விடுத்த அருளுஞ் சகலத்
தடைத்த அனாதியை ஐந்தென லாமே. *2418*

पडैप्पुमळिप्पुम् पयिलिळैप्पाट्रुम्
तुडैप्पु मऱैप्पु मुन्तोन्र अरुळुम्
चडत्तै विडुत्त अरुळुम् सकलत्
तडैत्त अनादियै ऐन्देनलामे । *मंत्र-संख्या, 2418*

सृजन, पालन, विश्रामदायक संहार
तिरोधान और अनुग्रह

ये पांचों ही
सकल-जीव को
जड़ से चेतन बनाकर
उद्धार हेतु प्रभु से अनुष्ठित
पंच-कृत्य हैं । 2418

701. நண்ணிய பாசத்தில் நானெனல் ஆணவம்
பண்ணிய மாயையில் ஊட்டற் பரிந்தனன்
கண்ணிய சேதனன் கண்வந்த பேரருள்
அண்ணல் அடிசேர் உபாயம தாகுமே. 2421

नण्णिय पाशत्तिल् नान्नल् आणवम्
पण्णिय मायैयिल् ऊट्टर् परिन्दनन्
कण्णिय चेतनन् कण्वन्द पेररुळ्
अण्णल् अडिचेर् उपायमदागुमे । मंत्र-संख्या, 2421

पाश-बद्ध जीव में रहता है अहंकार
पाश-ग्रस्त वह लिप्त रहता है भोग में
अंतर्यामी पति की कृपा होती है जब
अनुग्रह की होती है वर्षा
मार्ग मिल जाता है प्रभु-चरण तक पहुँचने का । 2421

702. தலையடி யாவ தறியார் காயத்தில்
தலையடி யுச்சியில் உள்ளது மூலந்
தலையடி யான அறிவை யறிந்தோர்
தலையடி யாகவே தானிருந் தாரே. 2426

तलैयडियावदरियार् कायत्तिल्
तलैयडि युच्चियिल् उळ्ळदु मूलम्
तलैयडियान अरिवै अरिन्दोर्
तलैयडियागवे तानिरुन्दारे । मंत्र-संख्या, 2426

ज्ञान नहीं रहता ईश के शीश-चरण का
जब जान लेते हैं योग-मार्ग से

ईश का शीर्ष है सहस्रार
और चरण हैं मूलाधार
साधना में लीन होकर
चित्त को एकाग्र करते हैं चरण पर । 2426

703. நின்றான் நிலமுழு தண்டமும் மேலுற
வன்றாள் அசுரர் அமரரும் உய்ந்திடப்
பின்றான் உலகம் படைத்தவன் பேர்நந்தி
தன்றா ளிணையென் தலைமிசை யானதே. 2427

निन्ऱान् निलमुऴ् दण्डमुम् मेलुऱ
वन्ऱाळ् अमरर् असुररुम् उय्न्दिडप्
पिन्ऱान् उलगम् पडैत्तवन् नन्दि
तन्ऱाळ् इणैयॅन् तलैमिशै यानदे । मंत्र-संख्या, 2427

स्थित हुआ वह ज्योति बन कर
धरती और आकाश को आवृत करते हुए
ताकि उद्धार का मार्ग पाएँ देवों के साथ असुर भी
जिसने फिर सृष्टि-रचना की
उनका नाम है महानन्दी
नतमस्तक हूँ मैं नन्दी-चरण पर । 2427

704. பதியது தோற்றும் பதமது வைம்மின்
மதியது செய்து மலர்ப்பத மோது
நதிபொதி யுஞ்சடை நாரியோர் பாகன்
கதிசெயுங் காலங்கள் கண்டுகொ ளீரே. 2430

पतियदु तोट्रुम् पदमदु वैम्मिन्
मतियदु चॅय्दु मलर्प्पदमोदु
नदि पॉदियुम् चडै नारियोर् पागन्
गति चॅयुम् कालङ्गळ् कण्डुकॉळीरे । मंत्र-संख्या, 2430

मन में, धारणा में भरलो
प्रभु के चरण-कमल

करो मनन, पूजन, अर्चन एकाग्रचित्त से प्रभु का
जिसने धारण किया है शक्ति को
निज देह के अर्धभाग में और
बांध लिया है गंगा को जटा में,
प्रभु की प्रार्थना में लीन रहकर
करो प्रतीक्षा, प्रभु आगमन और उद्धार की । 2430

705. பெற்ற புதல்வர் போற்பேணிய நாற்றமுங்
குற்றமுங் கண்டு குணங்குறை செய்யவோர்
பற்றைய வீச னுயிரது பான்மைக்குச்
செற்றமி லாச்செய்கைக் கெய்தின செய்யுமே. 2434

पॆट्र पुदल्वर् पेणिय नाट्रमुम्
कुट्रमुम् कण्डु गुणाम् कुऱै चॆय्यवोर्
पट्रैय ईशनुयिरदु पान्मैक्कुच्
चॆट्रमिलाच् चॆय्गैक् कॆय्दिन चॆय्युमे । मंत्र-संख्या, 2434

पितृसम प्रेम करते हैं प्रभु जीव से
मल-पंक में लिप्त जीव का
दूर करते हैं मल, दिखाते हैं सही मार्ग
ऐसी होती है प्रभु की करुणा जीव पर,
प्रत्येक की कर्म-वासना के अनुरूप
दुःख-दर्द भी देना पड़े उद्धार के लिए
वह भी प्रभु की करुणा है, अनुग्रह है । 2434

706. காமம் வெகுளி மயக்க மிவைகடிந்
தேமம் பிடித்திருந் தேனுக் கெறிமணி
ஓமெனும் ஓசையி னுள்ளே யுறைவதோர்
தாம மதனைத் தலைப்பட்ட வாறே. 2436

कामम् वॆगुळि मयक्कमिवै कडिन्दु
एमम् पिडित्तिरुन्देनुक्कॆऱिमणि

ओर्मनुम् ओशैयिनुळ्ळे उऱैवदोऱ्
नाममदनैत्त् तलैप्पट्टवाऱे । मंत्र-संख्या, 2436

काम, क्रोध और अज्ञान जब
दूर हुआ अनुग्रह से,
शिवानन्द में लीन हुआ मैं
घंटानाद श्रवण-गोचर हुआ हृदय में
जिस में निहित था
ओंकार प्रणवमंत्र । 2436

707. போதந் தனையுன்னிப் பூதாதி பேதமும்
ஓதுங் கருவிதொண் ணூறுடன் ஓராறு
பேதமும் நாதாந்தப் பெற்றியிற் கைவிட்டு
வேதஞ்சொல் தொம்பத மாகுதன் மெய்ம்மையே. 2438

बोदम् तनैयुन्निप् पूतादि बेदमुम्
ओदुम् करुवि तॊण्णूरडन् ओराऱु
पेदमुम् नादान्तप् पॅट्रियिऱ् कैविट्टु
वेदम् चॊल् तॊम्पदमागु तन् मॅय्म्मैये । मंत्र-संख्या, 2438

बोध को लक्ष्य कर बढ़ते चलो आगे-आगे
भूत से प्रारंभ होकर तत्व मिलेंगे
जिनकी संख्या है छियानबे
ये सभी करण हैं, साधन है ज्ञान का,
साध्य नहीं है; जानना है जानकर
इन सब के आगे, इनके भेदों के आगे,
नादांत से आगे चलते जाना है
सब को छोड़कर जब ऊपर पहुँचें
वही त्वम्-पद है, 'तत्-त्वम्-असि' का पद
तब साक्षात्कार होगा वेदों में घोषित सत्य का । 2438

708. மன்று நிறைந்தது மாபர மாயது
நின்று நிறைந்தது நேர்தரு நந்தியுங்
கன்று நினைந்தெழு தாயென வந்தபின்
குன்று நிறைந்த குணவிளக் காமே. 2446

मन्रु निऱैन्ददु मापरमायदु
निन्रु निऱैन्ददु नेर्तरुनन्दियुम्
कन्रु निनैन्दॆऴु तायॆन वन्दपिन्
कुन्रु निऱैन्द गुण विळक्कामे । मंत्र-संख्या, 2446

भर गया अंबर का रंगमंच
महापरतत्व के ऐश्वर्य से
व्याप्त रही अग-जग में
शिव की अनंत विभूति
पहुँच गए नन्दिदेव भी
गोवत्स की पुकार पर गायसम,
जीवों के उद्धार के लिए
शोभित था वह पर्वत पर
प्रकाशित ज्योति-दीप सा । 2446

709. பற்றறப் பற்றிற் பரம்பதி யாவது
பற்றறப் பற்றிற் பரனறி வேபரம்
பற்றறப் பற்றினிற் பற்றவல் லோர்கட்கே
பற்றறப் பற்றிப் பரம்பர மாமே. 2448

पट्रऱप्पट्रिऱ् परम् पतियावदु
पट्रऱप्पट्रिऱ् परनऱिवे परम्
पट्रऱप्पट्रिनिऱ् पट्र वल्लोर्गट्के
पट्रऱप्पट्रिप् परम् परमामे । मंत्र-संख्या, 2448

अनासक्ति से खोजो 'पर' को
लब्ध होगा प्रभु का साम्राज्य
अनासक्ति से, सघन भक्ति से

लब्ध होगा 'पर' का सत्यज्ञान
जो मोहमाया, कामना तज
घनीभूत प्रेम से करें उपासना
वे स्वयं बन जाते हैं परशिव । 2448

710. ஆதியும் அந்தமும் இல்லா வரும்பதி
சோதிப் பரஞ்சுடர் தோன்றத்தோன் றாமையின்
நீதிய தாய்நிற்கும் நீடிய வப்பர
போதம் உணர்ந்தவர் புண்ணியத் தோரே. 2453

आदियुम् अन्तमुम् इल्ला वरुम्पति
जोदिप्परम् चुडर् तोन्रत्तोन्रामैयिन्
नीतियदाय् निर्कुम् नीडियवप्पर
बोदम् उणर्न्दवर् पुण्णियत्तोरे । मंत्र-संख्या, 2453

आदि-अंत-विहीन अद्वितीय प्रभु
ज्योति बनकर विलस रहा अंतर में
संतों के लिए दृश्य वह
अदृश्य है अन्य जन के हित
नीति-न्याय के ऋजुपथ पर स्थित है
धन्य हैं संत जिन्हें
परात्पर का दिव्यबोध । 2453

711. என்னை யறிய இசைவித்த என்னந்தி
என்னை யறிந்தறி யாத விடத்துய்த்துப்
பின்னை யொளியிற் சொரூபம் புறப்பட்டுத்
தன்னை யளித்தான் தற்பர மாகவே. 2457

ऍन्नैयरिय इशैवित्त ऍन्नन्दि
ऍन्नैयरिन्दरियाद विडत्तुय्त्तुप्
पिन्नै यॉळियिर् सॉरूपम् पुरप्पट्टुत्
तन्नै यळित्तान् तर्परमागवे । मंत्र-संख्या, 2457

दर्शाकर निज को पहचानने का मार्ग
परिपक्व किया मुझे मेरे नन्दी ने
फिर ले गया उस दिव्यदेश में
जहाँ समाप्त हो गया आत्मबोध
अहा ! प्रकट हुई दिव्यज्योति
उसने स्वयं को प्रदान किया मुझे
और मैं बन गया 'तत्-पर' । 2457

712. சத்தின் நிலையினில் தானான சத்தியுந்
தற்பரை யாய்நிற்குந் தானாம் பரற்குடல்
உய்த்தகு மிச்சையில் ஞானாதி பேதமாய்
நித்த நடத்து நடிக்குமா நேயத்தே. 2459

सत्तिऩ् निलैयिनल् तानान सत्तियुम्
तर्पैयाय् निर्कुम् तानाम् परर्कुडल्
उय्त्तगु मिच्चैयिल् ज्ञानादि बेदमाय्
नित्तनडत्तु नडिक्कुमा नेयत्ते । मंत्र-संख्या, 2459

शिव 'सत्' से प्रकट होती है शक्ति
स्थित रहती है तत्परा बनकर,
यही पराशक्ति बनती है ईश की देह
रचती है विश्व इच्छाशक्ति से
जीवों के उद्धार के हित,
फिर बनती है ज्ञानशक्ति
नित नव रूप लेती है
जगत् के संचालन के हित । 2459

713. தொட்டே யிருமின் துரிய நிலத்தினை
எட்டா தெனினின் றெட்டும் இறைவனைப்
பட்டாங் கறிந்திடிற் பன்னா வுதடுகள்
தட்டா தொழிவதோர் தத்துவந் தானே. 2470

तांट्टे यिरुमिऩ् तुरिय निलत्तिनै
ऍट्टा दॆनिनिऩ्ऱट्टुम् इऱैवनै
पट्टाङ्गरिन्दिडिऱ् पन्नावुदड्डुगळ्
तट्टादाऴिवदोऱ् तत्तुवम् ताने । मंत्र-संख्या, 2470

तुरीयावस्था को स्पर्श करते रहो ध्यान से
पहुँच के बाहर होने पर भी
ग्राह्य होता है वह जो देखते हैं उसे
ज्ञान के अनुभव में
जैसा कि उद्घोषित करते हैं वे
प्राप्त कर सकते हो परमतत्व को
जो शब्दातीत है । 2470

714. சீவன்றன் முத்தி யதீதம் பரமுத்தி
ஓயுப சாந்தஞ் சிவமுத்தி யானந்த
மூவயின் முச்சொருப முத்திமுப் பாலதாய்
ஓவுறு தாரத்தில் உள்ளுநா தாந்தமே. 2474

जीवऩ्ऱऩ् मुत्ति यतीतम् परमुत्ति
ओयुपशान्तम् शिवमुत्तियानन्द
मूवैयिऩ् मुच्चॊरूप मुत्ति मुप्पालदाय्
ओवुरु तारत्तिल् उळ्ळु नादान्तमे । मंत्र-संख्या, 2474

(चेतना के लिए)
अतीतावस्था है जीव-मुक्ति
उपशांति दशा है पर-मुक्ति
आनंद की स्थिति है शिव-मुक्ति
ये तीनों ही हैं स्वरूप-मुक्ति
यहाँ से नादांत मार्ग मिलता है
जहाँ प्रणव-मंत्र है

'अ'कार 'उ'कार 'म'कार के त्रितय में
यही है नादांत की स्थिति । 2474

715. மூன்றுள மாளிகை மூவர் இருப்பிடம்
மூன்றினின் முப்பத் தாறு முதிப்புள
மூன்றினி னுள்ளே முளைத்தெழுஞ் சோதியைக்
காண்டலுங் காயக் கணக்கற்ற வாறே. 2479

मून्ऱुळ माळिगै मूवर् इरुप्पिडम्
मून्ऱिनिन् मुप्पत्तारु मुदिप्पुळ
मून्ऱिनिनुळ्ळे मुळैत्तॆऴ्ुम् जोतियै
काण्डलुम् कायक्कणक्कट्रवाऱे । मंत्र-संख्या, 2479

तीन भवन हैं जो आवास हैं तीन का
– (स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर का) –
इन तीनों में उदित हैं छत्तीस तत्व
तीनों भवनों में भासित है ज्योति
जिसके दर्शन करना काम्य है
जो संभव है उसी की कृपा से
इस दर्शन से कटता है
जन्म-मृत्यु का चक्र । 2479

716. உலகம் புடைபெயர்ந் தூழியும் போன
நிலவு சுடரொளி மூன்றுமொன் றாய
பலவும் பரிசொடு பான்மையுள் ஈசன்
அளவும் பெருமையு மாரறி வாரே. 2480

उलगम् पुडैपॆयर्न्दूऴियुम् पोन
निलवु चुडरॉळि मून्ऱुमॉन्ऱाय
पलवुम् परिसॉडु पान्मैयुळ् ईशन्
अळवुम् पॆरुमैयु माररिवारे । मंत्र-संख्या, 2480

महाप्रलय की वेला
धरती और आकाश कांप उठे सचराचर,

हो गया युग का अंत
सूर्य, चंद्र और अग्नि
तीनों ज्योति मिलकर हुईं एक
सबका विलय हुआ ईश में
उनकी महिमा-गरिमा अपरंपार है । 2480

717. இடனொரு மூன்றி லியைந்த வொருவன்
கடனுறு மவ்வுரு வேறெனக் காணுந்
திடமது போலச் சிவபர சீவர்
உடனுறை பேதமும் ஒன்றென லாமே. 2485

इडनॊरु मून्ऱिनिलयैन्द ऒरुवन्
कडनुऱु मव्वुरु वेऱॆनक् काणुम्
तिडमदु पोलच् चिवमदु जीवर्
उडनुऱै बेदमुमम् ऒन्ऱॆनलामे । मंत्र-संख्या, 2485

तीन स्थानों में काम कर रहा
एक ही व्यक्ति
अलग-अलग तीन व्यक्ति सम दिख रहा
उसी भांति
जीव, पर और शिव की स्थिति है
तीनों एक होने पर भी
स्थान-भेद से अलग दिख रहे हैं । 2485

718. வைத்துச் சிவத்தை மதிசொரு பானந்தத்
துய்த்துப் பிரணவ மாம்உப தேசத்தை
மெய்த்த இதயத்து விட்டிடு மெய்யுணர்ந்
தத்தற் கடிமை யடைந்துநின் றானே. 2491

वैत्तुच् चिवत्तै मतिसॊरूपानन्दत्
तुय्त्तुप् पिरणवमाम् उपदेशत्तै
मॆय्त्त इदयत्तु विट्टिड्डु मॆय्युणन्दु
अत्तर्क्कडिमै अडैन्दु निन्ऱाने । मंत्र-संख्या, 2491

'तत्वमसि' मंत्र के प्रथम पद में
न्यस्त कर शिव (तत्) को
स्वरूपानन्द का ध्यान करें
फिर प्रणव-मंत्र को लाएँ हृदय में
इस तरह योग-साधना करने से
साक्षात्कार होता है सत्य का
ऐसी स्थिति में स्वीकृत होती है
प्रभु की दासता । 2491

719. *செற்றிடுஞ் சிவ வுபாதித் திறனேழும்*
பற்றும் பரோபாதி ஏழும் பகருரை
உற்றிடுங் காரிய காரணத் தோடற
அற்றிட வச்சிவ மாகும் அணுவனே. 2501

चॆट्रिडुम् जीववुपादित् तिऱनेऴुम्
पट्रुम् परोपादि एऴुम् पगरुरै
उट्रिडुम् कारिय कारणत्तोडऱ
अट्रिडवच्चिवमागुम् अणुवने । मंत्र-संख्या, 2501

छूट जाती हैं जब
जीव-संबंधी कार्य उपाधियाँ
शरीर, मन, करण आदि सातों ही
फिर जब छूट जाएँ
पर-संबंधी कारण उपाधियाँ
सर्वज्ञत्व आदि सातों ही
कार्य-कारण का मिट जाता है भेद
मोहमुक्त, आसक्ति-मुक्त दशा में
जीव और शिव में सिद्ध होता है अभेद । 2501

720. *முத்திக்கு வித்து முதல்வன்தன் ஞானமே*
பத்திக்கு வித்துப் பணிந்துற்றுப் பற்றலே

சித்திக்கு வித்துச் சிவபரந் தானாதல்
சத்திக்கு வித்துத் தனதுப சாந்தமே. 2506

मुत्तिक्कु वित्त मुदल्वन् तन् ञानमे
पत्तिक्कु वित्तु पणिन्दुट्रुरुप् पट्रले
सित्तिक्कु वित्तु शिवपरम् तानादल्
सत्तिक्कु वित्तु तनदुपशान्तमे । मंत्र-संख्या, 2506

मुक्ति का बीज परमात्म-ज्ञान है,
भक्ति का बीज होता है
विनय सहित उसपर आसक्ति,
सिद्धि का बीज स्वयं परशिव है,
शक्ति का बीज
उपशांति की अवस्था है
(जहाँ जीव पहुँचता है शिव-तुरीय में) । 2506

721. காரியம் ஏழுங் கரந்திடு மாயையுள்
காரணம் ஏழுங் கரக்குங் கடுவெளி
காரிய காரண வாதனைப் பற்றறப்
பாரண வும்முப சாந்தப் பரிசிதே. 2507

कारियम् एऴ ुम् करन्दिडु मायैयुळ्
कारणम् एऴ ुम् करक्कुम् कडुवॆळि
कारिय कारण वादनैप् पट्र्रप्
पारणवुम्मुपशान्तप् परिसदे । मंत्र-संख्या, 2507

तिरोहित हो गईं माया में
देहादि कार्य-उपाधियाँ सातों ही
तिरोहित हो गईं शून्य में
पर की कारण-उपाधियाँ सातों ही
कारण सहित कार्य अदृश्य हुआ
निर्बंध जीव तब अनासक्त हुआ
उपशांति मंडल व्याप्त हुआ । 2507

722. பிணங்கவும் வேண்டாம் பெருநில முற்றும்
இங்கியெம் மீசனை யீசனென் றுன்னிற்
கணம்பதி னெட்டுங் கழலடி காண
வணங்கெழு நாடியங் கன்புற லாமே. 2515

पिणङ्गवुम् वेण्डाम् पॆरुनिल मुट्रुम्
इणङ्गियॆम् मीशने ईशनॆन्रुन्निऱ्
कणम् पदिनॆट्टुम् कऴलडि काण
वणङ्गॆऴु नाडियङ् कन्पुऱलामे । मंत्र-संख्या, 2515

संशय का अवकाश नहीं है
सकल भुवन में व्याप्त जो ईश है
वही है सर्वेश्वर जगदीश्वर,
जब अंतर् में होगा यह शिवबोध
नत होंगे अष्टादश गण
तव चरण पर
लगो खोज में, हो ध्यानमग्न
तिरते जाओ आनंद-वारिधि में । 2515

723. நின்றும் இருந்துங் கிடந்தும் நிமலனை
ஒன்றும் பொருள்கள் உரைப்பவ ராகிலும்
வென்றைம் புலனும் விரைந்து பிணக்கறுத்
தொன்றா யுணரும் ஒருவனு மாமே. 2517

निन्रुम् इरुन्दुम् किडन्दुम् निमलनै
ऒन्रुम् पॊरुळ्गळ् उरैप्पवरागिलुम्
वॆन्ऱम्पुलनुम् विरैन्दु पिणक्करुत्तु
ऒन्ऱायुणरुम् ऒरुवनुमामे । मंत्र-संख्या, 2517

चलती रहे सतत विमल की वंदना
चाहे खड़े हों चाहे बैठे हों
लेटे ही लेटे क्यों न हों !
शास्त्र-मर्मज्ञ हों, पंडित-वेदज्ञ हों

करणीय है पंचेंद्रियों का दमन
पाना है पाश-विमोचन
होना है एकाग्र, जान लेना है उसे
फिर तो पा लोगे निज अंतस् में । 2517

724. விண்ணவ ராலும் அறிவறி யான்றன்னைக்
கண்ணற வுள்ளே கருதிடிற் காலையில்
எண்ணுற வாகமுப் போது மியற்றிநீ
பண்ணிடில் தன்மை பராபர னாமே. 2519

विण्णवरालुम् अरिवरियान् तन्नैक्
कण्णर् वुळ्ळे करुदिडिर् कालैयिल्
ऍण्णुरवाग मुप्पोदुमियट्रि नी
पण्णिडिल् तन्मै परापरनामे । मंत्र-संख्या, 2519

देवगण भी जिसका पार न पाते
खोजना उसे बाहर व्यर्थ है,
ढूँढो उसे निज अंतर में
नित्य ही ब्रह्म वेला में
मनन करो सतत तीनों काल में
अनवरत पूजन आराधन से
स्वयं बन सकते हो परात्पर । 2519

725. ஆறே யருவி யகங்களும் ஒன்றுண்டு
நூறே சிவகதி நுண்ணிது வண்ணமுங்
கூறே குவிமுலைக் கொண்பனை யாளொடும்
வேறே யிருக்கும் விழுப்பொருள் தானே. 2530

आरे यरुवि यगम् कुळमान्रुण्डु
नूरे शिवगति नुण्णिदु वण्णमुम्
कूरे कुविमुलैक् कोण्पनैयाळोडुम्
वेरे यिरुक्कुम् विऴुप्पोरुळ् ताने । मंत्र-संख्या, 2530

रिसता रहता है अमृत का उत्स
षडाधार के सूक्ष्म-मार्ग से
संगम होता है जलाशय में
शिवानन्द के सागर में
यही है शिवगति,
शुद्ध सच्चिदानन्दमय स्थिति
विलसित है यहीं पर महेश्वर
पीनस्तनी तन्वीलता शक्ति के संग
वही है सत्यस्वरूप । 2530

726. ஒன்றும் இரண்டும் ஒருங்கிய காலத்து
நின்றும் இருந்தும் நிலம்பல பேசினும்
வென்று மிருந்து விகிர்தனை நாடுவர்
சென்றும் இருந்துந் திருவடை யோரே. 2536

ऑन्रुम् इरण्डुम् ऑरुङ्गिय कालत्तु
निन्रुम् इरुन्दुम् निलम् पल पेसिनुम्
वॅन्रु मिरुन्दु विकिर्दनै नाडुवर्
चॅन्रुम् इरुन्दुम् तिरुवडैयोरे । मंत्र-संख्या, 2536

द्वैत मिटकर लीन हो जाए एक में
ऐसी दशा सध जाने पर
तर जाते हैं वे पवित्र जीव
उनको क्या, खड़े रहें चाहे बैठें,
चाहे लगे रहें संसार में
इंद्रिय उनके वश में हैं
अंतर्मन लीन है परमेश्वर में
अनुगृहीत हैं वे
चाहे इहलोक में रहें या निर्गत हैं । 2536

727. சிவமான சிந்தையிற் சீவன் சிதைய
பவமான மும்மலம் பாறிப் பயிற
நவமான அந்தத்தின் நற்சிவ போதந்
தவமா மவையாகித் தானல்ல வாகுமே. 2539

शिवमान चिन्तैयिऱ् जीवन् चिदैय
पवमान मुम्मलम् पाऱिप् पऱिय
नवमान अन्तत्तिन् नऱ्चिव बोदम्
तवमा मवैयागित् तानल्लवागुमे । मंत्र-संख्या, 2539

जीव लीन होता है
ज्यों-ज्यों शिवध्यान में
भाग जाते हैं तीनों मल
जन्म-मरण के कारण;
नवावस्था के अंत में
सिद्ध होती है शिव-सुषुप्ति
रहता है ऐसे में केवल शिवबोध
जीव का तब मिट जाता है निजबोध । 2539

728. நாசி நுனியினின் நாக்குமூ விரலிடை
ஈசன் இருப்பிடம் யாரும் அறிகிலர்
பேசியிருக்கும் பெருமறை யம்மறை
கூசியிருக்குங் குணமது வாமே. 2546

नाशि नुनियिन् नान्गुमू विरलिडै
ईशन् इरुप्पिडम् यारुम् अऱिगिलर्
पेशि यिरुक्कुम् पॅरुमऱै यम्मऱै
कूशि यिरुक्कुम् गुणमदुवामे । मंत्र-संख्या, 2546

द्वादश अंगुल नासाग्र से
जहाँ पहुँच निवर्तित है प्राणवायु,
वही परमधाम है परमेश्वर का

कोई न जानता इसका मर्म
उल्लेख करते हैं वेदशास्त्र
सकुचाते किन्तु उद्घोष में
ऐसी महिमा परमेश्वर की । *2546*

729. மாயை மறைக்க மறைந்த மறைப்பொருள்
மாயை மறைய வெளிப்படும் அப்பொருள்
மாயை மறைய மறையவல் லார்கட்குக்
காயமும் இல்லை கருத்தில்லை தானே. *2548*

मायै मऱैक्क मऱैन्द मऱैप्पॊरुळ्
मायै मऱैय वॆळिप्पडुम् अप्पॊरुळ्
मायै मऱैय मऱैय वल्लार्गट्कुक्
कायमुम् इल्लै करुत्तिल्लै ताने । *मंत्र-संख्या, 2548*

मायावृत जीव के लिए
अगोचर था परमार्थ-तत्व
जो कि वेद-वेदांत का सार है,
माया का आवरण हटा
स्वच्छ दृश्य हुआ परमतत्व
निज अंतर में दर्पण-सा,
सक्षम हैं जो काटने में मायाजाल
तत्क्षण वे लीन होते हैं परमेश्वर में
फिर काया नहीं मिलती
अंत होता है संकल्प-विकल्प । *2548*

730. கூடகில் லார்குரு வைத்த குறிகண்டு
நாடகில் லார்நயம் பேசித் திரிவர்கள்
பாடகில் லாரவன் செய்த பரிசறிந்
தாடவல் லாரவர் பேறெது வாமே. *2559*

कूडकिल्लार् गुरुवैत्त कुऱि कण्डु
नाडकिल्लार् नयम् पेशित्तिरिवर्गळ्

पाडकिल्लार् अवन् चेय्द परिसरिन्दु
आडवल्लार् अवर् पेरंदुवामे । मंत्र-संख्या, 2559

चलते नहीं ये उस मार्ग पर
जो गुरु-देशिक से निर्देशित है
ध्यान नहीं इन्हें निज लक्ष्य का
बस, रमे रहते हैं व्यर्थ के आलाप में
स्तुति नहीं करते प्रभु-लीलाओं की
नाच रहे हैं वृथा ही,
कैसे होगा इनका उद्धार ? 2559

731. திடரிடை நில்லாத நீர்போல ஆங்கே
உடலிடை நில்லா உறுபொருள் காட்டிக்
கடலிடை நில்லாக் கலஞ்சேரு மாபோல்
அடலெரி வண்ணனும் அங்குநின் றானே. 2561

तिडरिडै निल्लाद नीर् पोल आङ्गे
उडलिडै निल्ला उरुपॊरुळ् काट्टिक्
कडलिडै निल्लाक् कलम् चेरुमा पोल्
अडलॆरि वण्णनुम् अङ्गु निन्राने । मंत्र-संख्या, 2561

पहाड़ी पर अवस्थित जलधारा
जिस भाँति बहे निचले तलों की ओर,
थमता नहीं है सत्य-प्रेम भी देह में
दर्शित करा देता है सत्यवस्तु का
इसी भाँति वायु से भ्रमित नौका सम
जो तट की ओर बढ़ना चाहती है
मैं भी था चकित-भ्रमित भवसागर में
ज्योति-स्तंभ सम खड़े थे अग्निवर्ण के देव । 2561

732. வில்லின் விசைநாணிற் கோத்திலக்கெய்தபின்
கொல்லுங் களிறைந்துங் கோலொடு சாய்ந்தன

வில்லு ளிருந்தெறி கூரும் ஒருவற்குக்
கல்கலன் என்னக் கதிரெதி ராமே. 2567

विल्लिन् विशै नाणिऱ् कोत्तिलक्कॅय्दपिन्
कॉल्लुम् कळिरैन्दुम् कोलॉडु चायुन्दन्
विल्लुकिरुन्तॅरि कूरुम् ऑरुवर्कुक्
कल्कलन् ऍन्नक् कदिरॅदिरामे । मंत्र-संख्या, 2567

साध लेता है साधक धनुष को
संधान करता है शर का लक्ष्य से
धराशायी हो जाते हैं पाँच हाथी एक साथ,
ऐसा इन्द्रिय-जयी योगी
दर्शन करता है ज्ञान-ज्योति का
हृदय में महामणि-सम शिवज्योति का । 2567

733. பூரணி யாது புறம்பொன்றி லாமையின்
பேரணி யாதது பேச்சொன்றி லாமையில்
ஓரணை யாதது வொன்றுமி லாமையிற்
காரண மின்றியே காட்டுந் தகைமைத்தே. 2576

पूरणियादु पुऱम्बॉन्ऱिलामैयिन्
पेरणियाददु पेच्चॉन्ऱिलामैयिल्
ओरणैयाददु ऑन्ऱुमिलामैयिऱ्
कारणमिन्ऱिये काट्टुम् तगैमैत्ते । मंत्र-संख्या, 2576

व्याप्त है सर्वत्र यह, सीमा नहीं कोई
भाषण नहीं है अभिधान नहीं कोई
निस्संग मुक्त है, शून्य है संकल्प नहीं कोई
स्वयं प्रकाशित है क्योंकि इसका कारण नहीं कोई । 2576

734. நீயது வானா யெனநின்ற பேருரை
ஆயது நானானேன் என்னச் சமைந்தறச்
சேய சிவமாக்குஞ் சீர்நந்தி பேரருள்
ஆயது வாயனந் தானந்தி யாகுமே. 2577

नीयदुवानार्यन निन्ऱ् पेरुरै
आयदु नानानेन् एन्नच्च् चमैन्दऱच्च्
चेय शिवमाक्कुम् चीऱ्नन्दि पेररुळ्
आयदु वार्यनन् तानन्दि यागुमे । मंत्र-संख्या, 2577

तत् त्वमसि –
तुम वही हो, वही हो तुम
यह है प्रशस्त महावाक्य
सो मैं वही बना
नन्दि ने अनुगृहीत किया
मुझे – शिव बनने को
सो मैं वही बना
मग्न हुआं शिवानन्द में । 2577

735. அறிவறி யாமை இரண்டு மகற்றிச்
செறிவறி வாய்எங்கும் நின்ற சிவனைப்
பிறிவறி யாது பிரானென்று பேணுங்
குறியறி யாதவர் கொள்ளறி யாரே. 2580

अऱिवऱियामै इरण्डुमगट्रिच्च्
चॆऱिवऱिवाय् ऍङ्गुम् निन्ऱ् शिवनैप्
पिऱिवऱियाद पिरानॆन्ऱु पेणुम्
कुऱियादवर् कॊळ्ळऱियारे । मंत्र-संख्या, 2580

जीव के ज्ञान को, अज्ञान को
संपूर्ण रूप से मार्जित करके
सर्वत्र व्याप्त है वह परमज्ञान
वही शिव-परमेश्वर है
उससे कभी न रहो विलग
पहचानो यही है सर्वेश्वर,
पूजन, अर्चन से तर जाओ,

जो नहीं पहचानते इस मार्ग को
कभी नहीं पहुँचते लक्ष्य तक । 2580

736. நின்மல மேனி நிமலன் பிறப்பிலி
என்னுளம் வந்திவன் என்னடி யானென்று
பொன்வளர் மேனி புகழ்கின்ற வானவன்
நின்மல மாகென்று நீக்கவல் லானே. 2584

निन्मल मेनि निमलऩ् पिऱप्पिलि
ऍन्नुळ्ळम् वन्दिवऩ् ऍन्नडियानॆन्ऱु
पॊऩ्वलर् मेनि पुगऴ्किऩ्ऱ वानवऩ्
निन्मलमार्गन्ऱु नीक्क वल्लाने । मंत्र-संख्या, 2584

निर्मल-नित्य-निरामय है
पावन पूज्य है, अजन्मा है प्रभु
कहते हैं मेरे हृदय में आकर
"वत्स, लो यह मेरा अनुग्रह
वर्षित है तुम पर,
उठो बनो निर्मल"
यों अनुगृहीत किया परमदयालु ने
जो कनकसम कांतिमान हैं
देवों से वंदित, आराधित हैं । 2584

737. உடலும் உயிரும் ஒழிவற ஒன்றிற்
படருஞ் சிவசத்தி தாமே பரமாம்
உடலைவிட் டிந்த உயிரெங்கு மாகிக்
கடையுந் தலையுங் கரக்குஞ் சிவத்தே. 2588

उडलुम् उयिरुम् ऑऴिवऱ ऑन्ऱिऱ्
पडरुम् शिवसत्ति तामे परमाम्
उडलै विट्टिन्द उयिरॆङ्गुमाहिक्
कडैयुम् तलैयुम् करक्कुम् शिवत्ते । मंत्र-संख्या, 2588

योग साधना से
देह और जीव में बनता है संतुलन
दोनों का योग होता है अभिन्न;
बरसती है उस पर शिवशक्ति की कृपा
फिर जब निर्गत होता है जीव निज देह से
विलय होता है शिवज्योति में
जो आद्यंतविहीन है । 2588

738. எல்லாம் அறியும் அறிவு தனைவிட்டு
எல்லாம் அறிந்தும் இலாபமங் கில்லை
எல்லாம் அறிந்த அறிவினை நானென்னில்
எல்லாம் அறிந்த இறையென லாமே. 2596

ऍल्लाम् अऱियुम् अऱिवु तनै विट्टु
ऍल्लाम् अऱिन्दुम् इलाबम् इङ्गिल्लै
ऍल्लाम् अऱिन्द अऱिविनै नानॅन्निल्
ऍल्लाम् अऱिन्द इऱैयॅनलामे । मंत्र-संख्या, 2596

क्या होना है सब कुछ जान लेने से
पाया नहीं यदि उस ज्ञान को
जो सर्वस्व जानता है, सब कुछ देखता है,
जिस दिन तुम कह सकते हो
मैं वह ज्ञान हूँ जो सर्वस्व का ज्ञान रखता है,
तब तुम यह भी कह सकते हो
मैं ही सर्वात्म हूँ, परमेश्वर हूँ । 2596

739. தலைநின்ற தாழ்வரை மீது தவஞ்செய்து
முலைநின்ற மாதறி மூர்த்தியை யானும்
புலைநின்ற பொல்லாப் பிறவி கடந்து
கலைநின்ற கள்வனைக் கண்டுகொண் டேனே. 2597

तलै निन्ऱ ताऴ्‌वरै मीदु नवम् चॅय्दु
मुलै निन्ऱ मादऱि मूर्त्तियै यानुम्

पुलै निन्ऱ् पॉल्लाप् पिऱवि कडन्दु
कलै निन्ऱ् कळ्वनैक् कण्डुकॉण्डेने । *मंत्र-संख्या, 2597*

साधना में, तपस्या में रत रहा मैं
अपने शीर्ष की घाटी सहस्रार में,
अहा, धन्य हूँ, प्रभु का दर्शनलाभ हुआ
पाया दिव्यदर्शन शक्ति-संग परमेश्वर का
पार किया भवसागर इसी अस्थिचर्ममय देह से
मिला उस 'चोर' से जो छिपा था कैलास में । *2597*

740. மெய்கலந் தாரொடு மெய்கலந் தான்தன்னைப்
பொய்கலந் தார்முன் புகுதா ஒருவனை
உய்கலந் தூழித்தலைவனுமாய் நிற்கும்
மெய்கலந் தின்பம் விளைந்திடும் மெய்யர்க்கே. *2600*

मॅय्कलन्दारॉडु मॅय्कलन्दान् तन्नैप्
पॉय्कलन्दार्मुन् पुगुदा ऑरुवनै
उय्कलन्दूऴित् तलैवनुमाय् निर्कुम्
मॅय् कलन्दिन्बम् विळैन्दिडुम् मॅय्यर्के । *मंत्र-संख्या, 2600*

सत्यस्वरूप वह
सत्यमार्ग के ज्ञानियों में रमता है
उनके अंतर में,
दूर रहता है वह
मिथ्याचारी पाखंडियों से,
कल्पांत में जब महाकालेश्वर
लगते हैं जीवों के उद्धार में
शाश्वत आनंद के अधिकारी बनते हैं
सत्य-मार्गी संतजन । *2600*

741. உய்யும் வகையால் உணர்வினால் ஏத்துமின்
மெய்யன் அரனெறி மேலுண்டு திண்ணெனப்

பொய்யொன்று மின்றிப் புறம்பொலி வார்நடு
ஐயனும் அங்கே அமர்ந்துநின் றானே. 2606

उय्युम् वगैयाल् उणर्विनाल् एट्रुमिन्
मंय्यन् अरनेरि मेलुण्डु तिण्णन
पॉय्यॉन्रुमिन्रिप् पुरम्पॉलिवार् नडु
ऐयनुम् अङ्गे अमर्न्दु निन्राने । 2606

उद्धार पाना हो तो
आओ बंधुओ, करो आराधन प्रभु का
सच्चे मन से विह्वल होकर
निश्चय ही बरसेगी प्रभुकृपा तुम पर,
वह प्रकाशित होता है
उनके हृदय में स्वयं
जो मिथ्या से रहते हैं दूर
विलसित रहते हैं प्रभु संतों के मध्य में । 2606

742. முன்னை வினைவரின் முன்னுண்டே நீங்குவர்
பின்னை வினைக்கணார் பேர்ந்தறப் பார்ப்பர்கள்
தன்னை யறிந்திடுந் தத்துவ ஞானிகள்
நன்மையில் ஐம்புலன் நாடலி னாலே. 2610

मुन्नै विनैवरिन् मुन्नुण्डे नीङ्गुवर्
पिन्नै विनैक्कणार् पेर्न्दरम् पार्प्पर्गळ्
तन्नै यरिन्दिडुम् तत्तुव ज्ञानिगळ्
नन्मैयिल् ऐम्बुलन् आडलिनाले । मंत्र-संख्या, 2610

जब हो जाता है सामना
पूर्वसंचित कर्मों का
उन्हें समाप्त करते है ज्ञानी स्वयं भोगकर
सजग रहते हैं आगे कर्म लगे ना
सच्चे अर्थ में वे ज्ञानी हैं
तत्वों को पहचाना, मुक्त हुए उन से

निज को पहचाना
प्रशिक्षित किया इंद्रियों को सही मार्ग पर । 2610

743. தன்னை யறிந்திடுந் தத்துவ ஞானிகள்
முன்னை வினையின் முடிச்சை யவிழ்ப்பர்கள்
பின்னை வினையைப் பிடித்துப் பிசைவர்கள்
சென்னியில் வைத்த சிவனரு ளாலே. 2611

तन्नै यरिन्दिडुम् तत्तुव ज्ञानिगळ्
मुन्नै विनैयिन् मुडिच्चै अविऴ्प्पर्गळ्
पिन्नै विनैयैप् पिडित्तुप् पिशैवर्गळ्
चॆन्नियिल् वैत्त शिवनरुळाले । मंत्र-संख्या, 2611

तत्वज्ञानी संतपुरुष
अपने को यथातथ जान कर
गांठ खोल देते हैं संचित पूर्वकर्म की
मसल डालते हैं आगाम्य-कर्म को,
परमेश्वर की कृपा से
जो उनके शीश पर विलसित है । 2611

744. மனவாக்குக் காயத்தால் வல்வினை மூளும்
மனவாக்கு நேர்நிற்கில் வல்வினை மன்னா
மனவாக்குக் கெட்டவர் வாதனை தன்னால்
தனைமாற்றி யாற்றத் தகுஞானி தானே. 2612

मनवाक्कुक् कायत्ताल् वल्विनै मूळुम्
मनवाक्कु नेर् निर्किल् नेरनिलै मन्ना
मनवाक्कुक् कॆट्टवर् वादनै तन्नाल्
तनैमाट्रि याट्रत् तगु ज्ञानि ताने । मंत्र-संख्या, 2612

मन-वचन-कर्म से होता है कर्मसंचय
मन-वचन में संतुलन हो
फिर नहीं होता कर्म-बंधन,

जो जीत लेते हैं मन-वचन को
वे सिद्ध पुरुष जलाते हैं पूर्वकर्म
उनको स्वयं भोगकर,
फिर तो उनका मार्ग ही बदल जाता है
अधिकारी बनते हैं ज्ञानमार्ग के । 2612

745. ஆசை யறுமின்கள் ஆசை யறுமின்கள்
ஈசனோ டாயினும் ஆசை யறுமின்கள்
ஆசை படப்பட ஆய்வருந் துன்பங்கள்
ஆசை விடவிட ஆனந்த மாமே. 2615

आशै यऱुमिन्गळ् आशै यऱुमिन्गळ्
ईशनोडायिनुम् आशै यऱुमिन्गळ्
आशै पडप् पड आय्वरुम् तुन्बङ्गळ्
आशै विड विड आनन्दमामे । मंत्र-संख्या, 2615

कामना मिटा दो कामना मिटा दो
चाहे ईश से क्यों न हो कामना मिटा दो
कामनाओं में फंसना दुःखों का घेरा है
कामनाओं से छूटना आनंद ही आनंद है । 2615

746. அடியார் அடியார் அடியார்க் கடிமைக்
கடியனாய் நல்கிட் டடிமையும் பூண்டேன்
அடியார் அருளால் அவனடி கூட
அடியா னிவனென் றடிமைகொண் டானே. 2624

अडियार् अडियार् अडियार्क्कडिमैक्
कडियनाय् नल्गिट्टडिमैयुम् पूण्डेन्
अडियार् अरुळाल् अवनडि कूडिड
अडियानिवनेंन्ऱडिमै कोंण्डाने । मंत्र-संख्या, 2624

दासानुदासों का जो दास
उसके दास का दासत्व
मैंने किया स्वीकार,

कर दिया निज को उन दास के प्रति समर्पित
दासों की असीम कृपा से, अनुग्रह से
अंत में पहुँच पाया उसके चरणतल पर
'यह मेरा दास-उपासक आया है'
यों कहकर उसने अपनाया मुझे । 2624

747. ஆன்கன்று தேடி யழைக்கு மதுபோல்
நான்கன்றாய் நாடி யழைத்தேனென் நாதனை
வான்கன்றுக் கப்பாலாய் நின்ற மறைப்பொருள்
ஊன்கன்றா னாடிவந் துள்புகுந் தானே. 2627

आऩ्कन्ऱु तेडि यऴैक्कु मदुपोल्
नाऩ् कऩ्ऱाय् नाडि अऴैत्तेनॆऩ् नादनै
वाऩ् कऩ्ऱुक्कप्पालाय् निऩ्ऱ मऱैप्पॊरुळ्
ऊऩ् कऩ्ऱानाडि वन्दुळ्पुगुन्दाने । मंत्र-संख्या, 2627

गैया की तलाश में व्याकुल वत्स-सम
मैंने पुकारा प्रभु को विह्वल होकर
प्रभु जो वेद-वेदांत का सार है
स्थित रहा जो द्युलोक से भी पार
परमदयालु वह आया मेरे पास
पुकार सुन कर
प्रवेश किया मेरी इस मांसल देह में । 2627

748. முத்தியில் அத்தன் முழுத்த அருள்பெற்றுத்
தத்துவ சுத்தி தலைப்பட்டுத் தன்பணி
மெய்த்தவஞ் செய்கை வினைவிட்ட மெய்யுண்மைப்
பத்தியி லுற்றோர் பரானந்த போதரே. 2633

मुत्तियिल् अत्तऩ् मुऴुत्त अरुळ्पॆट्रुत्
तत्तुव सुत्तित् तलैप्पट्टुत् तऩ्पणि
मॆय्त्तवम् चॆय्गै विनैविट्ट मॆय्युण्मैप्
पत्तियिलुट्रदोर् परानन्द बोदरे । मंत्र-संख्या, 2633

मुक्तावस्था में जिन्हें मिली प्रभु की परमकृपा
छत्तीस तत्वों से छूटकर पाते हैं तत्वशुद्धि
फिर जो कर्म करते हैं ऐसे शुद्ध पुरुष
वह शिव का ही होता है कर्म
तप-ध्यान छूट जाता है कर्मबंधन
फिर जगती है सच्ची भक्ति
तदनंतर बनते हैं ज्ञानी
हो जाता है आनन्दबोध । 2633

749. குறியாக் குறியினிற் கூடாத கூட்டத்
தறியா அறிவில் அவிழ்ந்தேக சித்தமாய்
நெறியாம் பராநந்தி நீடருள் ஒன்றுஞ்
செறியாச் செறிவே சிவமென லாமே. 2638

कुऱियाक् कुऱियिनिऱ् कूडाद कूट्टत्
तऱिया अऱिविल् अविऴ्न्देग चित्तमाय्
नॆऱियाम् परानन्दि नीडरुळ् ऑन्ऱुम्
चॆऱियाच् चॆऱिवे शिवमॆनलामे । मंत्र-संख्या, 2638

उस लक्ष्य में जो लक्ष्यातीत है
उस सभामंडप में जहाँ कोई एकत्र न होता
उस ज्ञान में जो ज्ञानातीत है
मैंने स्वयं को श्लथ किया
एकाग्रचित्त से निमग्न हुआ
परानन्दी की असीम कृपा में
उस व्याप्ति में जो व्याप्ति से अतीत है
स्थित मिला परमेश्वर । 2638

750. காலினில் ஊறுங் கரும்பினிற் கட்டியும்
பாலினுள் நெய்யும் பழத்துள் இரதமும்
பூவினுள் நாற்றமும் போலுளன் எம்மிறை
காவலன் எங்குங் கலந்துநின் றானே. 2639

कालिनिल् ऊरुम् करुम्बिनिल् कट्टियुम्
पालिनुळ् नेय्युम् पऴत्तिनुळ् इरदमुम्
पूविनुळ् नाट्रमुम् पोलुळन् ऍम्मिऱै
कावलन् ऍङ्गुम् कलन्दु निन्ऱाने । मंत्र-संख्या, 2639 -

वायु में स्पर्श-सा, गन्ने में मिठास-सा
दूध में घृत सरिस, फल में रस-सरिस
पुष्प में गंध सम निहित है मेरा प्रभु
जगत् का रक्षक वह व्याप्त है सब कहीं । 2639

751. உரையற்ற தொன்றை யுரைத்தான் எனக்குக்
கரையற் றெழுந்த கலைவேட் டறுத்துத்
திரையொத்த என்னுடல் நீங்கா திருத்திப்
புரையற்ற என்னுட் புகுந்தற் பரனே. 2648

उरैयट्रदान्ऱै उरैत्तान् ऍनक्कुक्
करैयट्रॆळुन्द कलैवेट्टरुत्तुत्
तिरैयॊत्त ऍन्नुडल् नीङ्गादिरुत्तिप्
पुरैयट्र ऍन्नुट् पुगुन्तर्परने । मंत्र-संख्या, 2648

उपदेश दिया मुझे करुणामय ने
जो ज्ञान शब्दातीत है
कर्तन किया मेरी लालसा को
अधिकाधिक शास्त्र-कलाएँ सीखने की,
स्थिर किया मेरे शरीर को ध्यान में,
जो पहले चंचल था लहरों की भाँति
यों निर्मल कर मेरे हृदय को
प्रवेश किया प्रभु ने मेरे अंतर में । 2648

ॐ ௐ ॐ

9

ஒன்பதாம் தந்திரம்

ऑन्पदाम् तन्तिरम्

नवम तंत्र

குருமட தரிசனம் — गुरु मड दरिशनम् - गुरु मठ का दर्शन;
ஞானகுரு தரிசனம் — ज्ञान गुरु दरिशनम् - ज्ञान गुरु का दर्शन;
பிரணவ சமாதி — प्रणव समादि - प्रणव समाधि;
ஒளி — ऑळि - प्रकाश / ज्योति;
தூல பஞ்சாக்கரம் — तूल पंचाक्करम् - स्थूल पंचाक्षर;
சூக்கும பஞ்சாக்கரம் — सूक्कुम पंचाक्करम् - सूक्ष्म पंचाक्षर;
அதிசூக்கும பஞ்சாக்கரம் —
अति सूक्कुम पंचाक्करम् - अति सूक्ष्म पंचाक्षर;
திருக்கூத்துத் தரிசனம் — तिरुक्कूत्तुत् तरिशनम् - श्रीनृत्य-दर्शन;
ஆகாசப்பேறு — आकाशप्पेरु - आकाश-सिद्धि;
ஞானோதயம் — ज्ञानोदयम् - ज्ञानोदय;
சத்திய ஞானானந்தம் — सत्तिय ज्ञानानन्दम् - सत्य ज्ञानानन्द;
சொரூப உதயம் — सॊरूप उदयम् - स्वरूपोदय;
ஊழ் — ऊऴ् - नियति; சிவதரிசனம் — शिवदरिशनम् - शिव दर्शन;
சிவசொரூப தரிசனம் — शिवसॊरूप दरिशनम् - शिवस्वरूप का दर्शन;
முத்தி, பேதம், கரும நிருவாணம் —
मुत्ति बेदम् करुम निरुवाणम् - मुक्ति भेद और कर्म निर्वाण;
சூனிய சம்பாஷணை — शूनिय संबाषणै - शून्य संवाद;
மோன சமாதி — मोन समादि - मौन समाधि;

வரையுறை மாட்சி — वरैयुऱै माट्चि –
 पर-अनंतता की महिमा असीमता;
அணைந்தோர் தன்மை — अणैन्ददोर् तन्मै – सायुज्य महिमा;
தோத்திரம் — तोत्तिरम् – स्तुति / स्तवन;
சர்வ வியாபி — सर्वव्यापी – सर्वव्यापी;
வாழ்த்து — वाऴ्त्तु – आरती ।

* * *

752. இவனில்ல மல்ல தவனுக்கங் கில்லை
அவனுக்கும் வேறில்லம் உண்டா அறியின்
அவனுக் கிவனில்ல மென்றென் றறிந்தும்
அவனைப் புறம்பென் றரற்றுகின் றாரே. 2650

इवनिल्लमल्लदु अवनुक्कङ्गिल्लै
अवनुक्कुम् वेऱिल्लाम् उण्डा अऱियिऩ्
अवनुक्किव निल्लम् ऍऩ्ऱॆऩ्ऱऱिन्दुम्
अवनैप् पुऱम्बॆऩ्ऱरट्रु गिऩ्ऱारे । मंत्र-संख्या, 2650

शिव का अपना कोई आलय नहीं
जीवालय को छोड़कर
प्रश्न उठाते हैं कोई कोई
उसका कोई आलय नहीं ?
हो तो तनिक ढूंढ कर बताएँ
यह जानते हुए भी
जीवालय ही शिवालय है
वृथा ढूंढ रहे हैं बाहर उसे । 2650

753. மனம்புகுந் தானுல கேழு மகிழ
நிலம்புகந் தானெடு வானிலந் தாங்கிச்
சினம்புகுந் தான்திசை எட்டும் நடுங்க
வனம்புகுந் தானூர் வடக்கென்ப தாமே. 2663

मनम् पुगुन्दानुलगेऴु मगिऴ
निलम् पुगुन्दानॆंडु वानिलम् ताङगि
चिनम् पुगुन्दाऩ् तिशै ऍट्टुम् नडुङ्ग
वनम् पुगुन्दाऩूर् वडक्कॆंन्पदामे । मंत्र-संख्या, 2663

संत-हृदय में पधारे प्रभु
सप्तलोक को प्रफुल्लित करते हुए,
फिर पधारे पृथ्वी पर
अम्बर को धारण करते हुए

(मोहासक्त जीवराशि देख)
रुष्ट हुआ परमेश्वर
कांप उठीं आठों दिशाएं
प्रवेश किया तत्वों से पुंजीभूत
उत्तरपुरी कैलास में । *2663*

754. அம்பர நாதன் அகலிட நீள்பொழில்
தம்பர மல்லது தாமறி யோம்என்பர்
உம்பருள் வானவர் தானவர் கண்டிலர்
எம்பெரு மானருள் பெற்றிருந் தாரே. 2673

अम्बरनादन् अगलिड नीळ्पॉऴिल्
तम्बरमल्लदु तामऱियोम् ऍन्बर्
उम्बरुळ् वानवर् तानवर् कण्डिलर्
ऍम्पॅरुमानरुळ् पॅट्रिरुन्दारे । *मंत्र-संख्या, 2673*

निखिल ब्रह्मांड अंतरिक्ष-व्योम में
सकल भुवन में व्याप्त है अंबरनाथ
उसकी आज्ञा से चलते हैं
सकल चराचर
ज्ञानीजन का कहना है हमें तथ्य ज्ञात है
परमेश्वर को छोड़कर कौन है परात्पर ?
सुवर्लोक के देव-दानव भी
मर्म न जानें ईश्वर का
उन्हीं के लिए वह प्रकट है
जो ज्ञानी हैं, द्रष्टा हैं । *2673*

755. ஓமெனும் ஓங்காரத் துள்ளே யொருமொழி
ஓமெனும் ஓங்காரத் துள்ளே யுருவரு
ஓமெனும் ஓங்காரத் துள்ளே பலபேதம்
ஓமெனும் ஓங்காரம் ஒண்முத்தி சித்தியே. 2676

ओर्मनु मोड्कारतुळ्ळे ओरुमोऴि
ओर्मनु मोड्कारत्तुळ्ळे उरुवरु
ओर्मनु मोड्कारत्तुळ्ळे पलबेदम्
ओर्मनु मेड्कारम् ओण्मुत्ति सित्तिये । *मंत्र-संख्या, 2676*

ओम्--यह एकाक्षर है परब्रह्म
(ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म)
ओम्--यह एकाक्षर है सकल-निष्कल
निराकार साकार
ओम्--इस एकाक्षर में निहित सकल भेदाभेद
ओम्--यह एकाक्षर सिद्धि-मुक्ति का मूल । *2676*

756. ஒளியை யறியில் உருவும் ஒளியும்
ஒளியும் உருவும் அறியில் உருவாம்
ஒளியின் உருவம் அறியில் ஒளியே
ஒளியும் உருக வுடனிருந் தானே. *2681*

ओळियै अऱियिल् उरुवुम् ओळियुम्
ओळियुम् उरुवुम् अऱियिल् उरुवाम्
ओळियिन् उरुवम् अऱियिल् ओळिये
ओळियुम् उरुग उडनिरुन्दाने । *मंत्र-संख्या, 2681*

ज्योति जब ज्ञानगोचर हो जाए
निज रूप ज्योतिर्मय बन जाए
अंतर् में छिपा है रूप आत्मन् का
उसे जान लो, ज्ञानस्वरूप बन जाओ
ज्योति का तब स्वरूप जानलो
स्वयं बन जाओ ज्योतिरूप
इस ज्योति को तब पिघला दो
पाओगे संग ही है प्रेममय । *2681*

757. இலங்கிய தெவ்வொளி யவ்வொளி யீசன்
துலங்கொளி போல்வது தூங்கருட் சத்தி
விளங்கொளி மூன்றே விரிசுடர் தோன்றி
உளங்கொளி யுள்ளே யொருங்குகின் றானே. 2689

इलङ्गिय दॆव्वॊळि अव्वॊळि ईशऩ्
तुलङ्कॊळि पोल्वदु तूङ्करुट्चत्ति
विळङ्कॊळि मूऩ्ऱे विरिशुडर् तोऩ्ऱि
उळङ्कॊळि युळ्ळे ऑरुङ्कुगिऩ्ऱाने । मंत्र-संख्या, 2689

चिरंतन ज्योति है परमेश्वर
उनमें अंतर्निहित
अनुग्रह-ज्योति है पराशक्ति
(योग-साधना से)
त्रिपुटी में जब भासित होंगे
सोम-सूर्य-अग्नि
वहीं मिलेगा सान्निध्य
अंतर्ज्योति परमेश्वर का
ज्योतिर्मय इस संगम में । 2689

758. சுடருற ஓங்கிய ஒள்ளொளி யாங்கே
படருறு காட்சிப் பகலவன் ஈசன்
அடருறு மாயையி னாரிருள் வீசில்
உடலுறு ஞானத் துறவிய னாமே. 2694

चुडरुऱ ओङ्गिय ऑळ्ळॊळि याङ्गे
पडरुऱु काट्चिप् पगलवऩ् ईशऩ्
अडरुऱु मायैयिनारिरुळ् वीशिल्
उडलुऱु ज्ञानत्तुऱवियनामे । मंत्र-संख्या, 2694

अंतस् में जाज्वल्यमान
परमज्योति
भासित है सूर्यसम कांति से

सर्वव्याप्त होती हैं
ज्ञानमय किरणें
विनष्ट होता है तिमिर माया का
ज्ञान पाता है जीव
स्वयं ज्ञानस्वरूप बन जाता है । *2694*

759. ஐம்ப தெழுத்தே அனைத்துவே தங்களும்
ஐம்ப தெழுத்தே அனைத்தாக மங்களும்
ஐம்ப தெழுத்தின் அடைவை யறிந்தபின்
ஐம்ப தெழுத்தே அஞ்செழுத் தாமே. 2698

ऐम्बदॆऴुत्ते अनैत्तु वेदङ्गलुम्
ऐम्बदॆऴुत्ते अनैत्तागमङ्गलुम्
ऐम्बदॆऴुत्तिऩ् अडैवै अऱिन्दपिऩ्
ऐम्बदॆऴुत्ते अञ्जॆऴुत्तामे । *मंत्र-संख्या, 2698*

पंचादश वर्ण हैं सकल वेदस्वरूप
पंचादश वर्ण हैं सकल आगम भी
पंचादश वर्ण का मर्म स्फुरित होने पर
पंचादश वर्ण स्वयं पंचाक्षर बन जाते हैं । *2698*

760. அகராதீ யீரெண் கலந்த பரையும்
உகராதி தன்சத்தி யுள்ளொளி யீசன்
சிகராதி தான்சிவ வேதமே கோண
நகராதி தான்மூல மந்திர நண்ணுமே. 2700

अकरादि ईरॆण्कलन्द परैयुम्
उकरादि तऩ्शत्ति उळ्ळॊळि ईशऩ्
शिकरादि ताऩ् शिववेदमे कोण
नकरादि ताऩ् मूलमन्तिर नण्णुमे । *मंत्र-संख्या, 2700*

'अ' कारादि षोडश वर्ण
पराशक्ति स्वरूप हैं

'उ' करादि में उन्मनी शक्ति है
इसी मनोन्मनी दशा में
दर्शित है ईश की ज्योति अंतर् में
'शि' करादि मंत्र (शिवायनमः)
शिव सहित सकल वेद का समुच्चय है
पलटने पर बनता है वही
'न' करादि मंत्र (नमः शिवाय)
यही बीजमंत्र है वरेण्य । 2700

761. தெள்ளமு தூறச் சிவாய நமவென்
றுள்ளமு தூற வொருகால் உரைத்திடும்
வெள்ளமு தூறல் விரும்பியுண் ணாதவர்
துள்ளிய நீர்போற் சுழல்கின்ற வாறே. 2704

तॆळ्ळमुदूरच् चिवाय नमवॆन्ऱु
उळ्ळमुदूर ऑरुकाल् उरैत्तिडुम्
वॆळ्ळमुदूरल् विरुम्बि युण्णादवर्
तुळ्ळियनीर्पोल् चुळल्गिन्ऱवारे । मंत्र-संख्या, 2704

जाप करो एक बार
'शिवायनम' का मधुमय नाम
भक्तिपूरित हृदय से
पाओगे निःसृत हो रहा अमृत
शिवानन्द का दिव्य अमृत
जो नहीं चाहते चखना इस अमृत को
जल के बुदबुदे के समान
घूमते रहेंगे जनन-मरण के चक्र में । 2704

762. வெறிக்க வினைத்துயர் வந்திடும் போது
செறிக்கின்ற நந்தி திருவெழுத் தோதுங்
குறிப்பது வுன்னிற் குரைகழல் கூட்டுங்
குறிப்பறி வான்றவங் கோனுரு வாமே. 2706

वॅरिक्क विनैत्तुयर् वन्दिडुम् पोदु
चॅरिक्किन्र् नन्दि तिरुवॅळ् त्तोदुम्
कुरिप्पदु वुन्निल् कुरैकळ्ल् कूट्टुम्
कुरिप्पदरिवान्रवम् कोनुरुवामे । मंत्र-संख्या, 2706

पीड़ित करें जब कर्म के दुरित
जाप करो तब पंचाक्षर का महामंत्र
महानन्दी का दिव्यमंत्र
करते जाओ उपासना इसी भाँति
मिलेगा अनुग्रह, दिव्यचरणयुगल
साधनारत बनोगे स्वयं शिवरूप । 2706

763. *சிவசிவ என்கிலர் தீவினை யாளர்*
சிவசிவ என்றிடத் தீவினை மாளுஞ்
சிவசிவ என்றிடத் தேவரு மாவர்
சிவசிவ என்னச் சிவகதி தானே. 2716

शिव शिव ऍन्किलर् तीविनैयाळर्
शिव शिव ऍन्रिडत् तीविनै माळुम्
शिव शिव ऍन्रिडत् तेवरुमावर्
शिव शिव ऍन्नच् चिवगति ताने । मंत्र-संख्या, 2716

'शिव शिव' जपते नहीं कर्म में फंसे जन,
'शिव शिव' जपने से मुक्ति मिलेगी कर्म से,
'शिव शिव' के जाप से मिलता है देवत्व,
'शिव शिव' के जाप से मिलता है शिवपद । 2716

764. *சிவாய நமவெனச் சித்தம் ஒருக்கி*
அவாயம் அறவே யடிமைய தாக்கிச்
சிவாய சிவசிவ வென்றென்றெ சிந்தை
அவாயங் கெடநிற்க ஆனந்த மாமே. 2718

शिवाय नमवॅनच् चित्तम् ऑरुक्कि
अवायम् अरवे अडिमैयदाक्कि

शिवाय शिव शिव ऍन्ऱ्न्ऱे चिन्तै
अवायङ् कंड निर्क आनन्दमामे । मंत्र-संख्या, 2718

उच्चरित करते हुए
'शिवायनमः' का महामंत्र
एकाग्र करो निज चित्त को
दुःख दुरित दूर करने को
स्वयं उसका बनने को
चित्त में भरलो यही नाम
शिवाय शिव शिव का दिव्य नाम
दूर होंगे दुःख दुरित
रहेगा आनन्द, केवल आनन्द । 2718

765. எங்குந் திருமேனி எங்குஞ் சிவசத்தி
எங்குஞ் சிதம்பரம் எங்குந் திருநட்டம்
எங்குஞ் சிவமா யிருத்தலால் எங்கெங்குந்
தங்குஞ் சிவனருட் டன்விளை யாட்டதே. 2722

ऍङ्ङ्गुम् तिरुमेनि ऍङ्ङ्गुम् शिवशत्ति
ऍङ्ङ्गुम् चिदम्बरम् एङ्ङ्गुम् तिरुनट्टम्
ऍङ्ङ्गुम् शिवमाय् इरुत्तलाल् ऍङ्ङ्गॅङ्ङ्गुम्
तङ्ङ्गुम् शिवनरुळ् तन् विळैयाट्टे । मंत्र-संख्या, 2722

सर्वत्र भासित है प्रभु का दिव्यरूप
सर्वत्र विलसित है शिवशक्ति
सर्वत्र व्याप्त है चिदम्बर
सर्वत्र हो रहा आनंद-नृत्य
सर्वत्र व्याप्त है शिवराज
सर्वत्र व्याप्त शिव का अनुग्रह
सर्वत्र हो रही प्रभु की लीला । 2722

766. தானந்தம் இல்லாச் சதானந்த சத்திமேல்
தேனுந்தும் ஆனந்த மாநடங் கண்டீர்
ஞானங் கடந்து நடஞ்செய்யும் நம்பிக்கங்
கானந்தக் கூத்தாட ஆடரங் கானதே. 2724

तानन्दम् इल्ला सदानन्द सत्तिमेल्
तेनुन्दुम् आनन्द मानडम् कण्डीर्
ज्ञानम् कडन्दु नडम् चेय्युम् नम्बिक्कङ्गु
आनन्दक्कूत्ताड आडरङ्गानदे । मंत्र-संख्या, 2724

अंतहीन सदानन्द शक्ति के संग
नृत्यरत हैं नटराज
हो रहा मधुमय नृत्य,
देख लिया तुमने यह नृत्य
ज्ञानातीत यह नृत्य
निज हृदय को अब तुम बना लो मंच
प्रभु के आनन्द-नृत्य के हित । 2724

767. வேதங்க ளாட மிகுஆ கமமாடக்
கீதங்க ளாடக் கிளரண்டம் ஏழாடப்
பூதங்க ளாடப் புவன முழுதாட
நாதங்கொண் டாடினான் ஞானானந் தக்கூத்தே. 2729

वेदङ्गळाड मिगु आगममाड
गतिङ्गळाडक् किळरण्डम् एऴाड
पूतङ्गळाड पुवनमुऴुदाड
नादम् कोण्डाडिनान् ज्ञानानन्दक्कूत्ते । मंत्र-संख्या, 2729

नृत्यरत हुए जब नटराजराज
संग उनके नाच उठे वेद और आगम,
नादगीत के संग सप्तलोक
नाच उठे भूतगण, निखिल भुवन

नाद शक्ति के संग नाच उठे प्रभु
ज्ञानानन्द का दिव्य नृत्य । 2729

768. பரமாண்டத் தூடே பராசத்தி பாதம்
பரமாண்டத் தூடே படரொளி ஈசன்
பரமாண்டத் தூடே படர்தரு நாதம்
பரமாண்டத் தூடே பரன்நட மாடுமே. 2734

परमाण्डत्तूडे परासत्ति पादम्
परमाण्डत्तूडे पडरॊळि इशन्
परमाण्डत्तूडे पडर्तरु नादम्
परमाण्डत्तूडे परन् नडमाडुमे । मंत्र-संख्या, 2734

परब्रह्माण्ड के शिखर पर लसित हैं
पराशक्ति के दिव्य चरण,
परब्रह्माण्ड के शिखर पर शोभित है
परमेश्वर की दिव्य ज्योति,
व्याप्त है नाद अंतराय बिन
सकल ब्रह्मांडों के पार,
जहाँ हो रहा नृत्य निरंतर
नटराजराज का महानृत्य
आकाश-गंगा के पार । 2734

769. மாணிக்கக் கூத்தனை வண்தில்லைக் கூத்தனைப்
பூணுற்ற மன்றுட் புரிசடைக் கூத்தனைச்
சேணுற்ற சோதிச் சிவானந்தக் கூத்தனை
ஆணிப்பொற் கூத்தனை யாருரைப் பாரே. 2743

माणिक्ककक्कूत्तनै वण्तिल्लैक्कूत्तनै
पूणुट्र मन्रुळ् पुरिशडैक्कूत्तनै
चेणुट्र जोति शिवानन्दक्कूत्तनै
आणिप्पॊर् कूत्तनै यारुरैप्पारे । मंत्र-संख्या, 2743

नाच रहे हैं प्रभु माणिक्य-ज्योति बनकर अंतर् में
नाच रहे हैं दिव्य चिदम्बर के मंदिर में
दिशि-दिशि बिखरी जटाओं के संग
नाच रहे हैं प्रभु दूर में लसी दिव्य-ज्योति में
अमृत सम शिवानन्द में
नाच रहे हैं प्रभु रत्न-खचित कनक-सभा में
अद्‌भुत नृत्य उद्धार-हेतु जीवों के
अनुपम नृत्य जो कि वर्णनातीत है । *2743*

770. காளியோ டாடிக் கனகா சலத்தாடிக்
கூளியோ டாடிக் குவலயத் தேயாடி
நீடிய நீர்தீகால் நீள்வா னிடையாடி
நாளுற அம்பலத் தேயாடும் நாதனே. *2746*

कालियोडाडिक् कनकाचलत्ताडिक्
कूडियोडाडिक् कुवलयत्तेयाडि
नीडिय नीर्ती काल् नीळ्वानिडैयाडि
नाळुर् अम्बलत्तेयाडुम् ईशने । *मंत्र-संख्या, 2746*

नाच उठे प्रभु शक्ति के संग
कनकाचल पर,
नाच उठे फिर भूतगण के संग,
नाच उठे निखिल भुवन में
जल-अनिल-अनल पर आकाश में,
नाच रहे प्रभु नित्य ही
चित्-अम्बर में स्नेह से । *2746*

771. ஆதி பரன்ஆட அங்கைக் கனலாட
ஓதுஞ் சடையாட உன்மத்த முற்றாடப்
பாதி மதியாடப் பாரண்ட மீதாட
நாதமோ டாடினான் நாதாந்த நட்டமே. *2751*

आदिपरन् आड अङ्गैक् कनलाड
ओदुम् चडैयाड उन्मत्तमुट्राड
पादि मदियाडप् पारण्ड मीदाड
नादमोडाडिनान् नादान्त नट्टमे । मंत्र-संख्या, *2751*

नाच उठे आदिदेव परमेश्वर
नाच उठी वह्नि उनके हाथ में
नाच उठी बिखरी जटाएँ साथ में
नाच उठे प्रभु उन्मत्त होकर आनन्द से
नाच उठी चन्द्रकला, नाचे ब्रह्माण्ड चराचर
नाच उठे प्रभु नाद के संग
नादांत का महानृत्य । *2751*

772. நாதத் தினிலாடி நாற்பதத் தேயாடி
வேதத்தி லாடித் தழலந்த மீதாடி
போதத்தி லாடிப் புவன முழுதாடுந்
தீதற்ற தேவாதி தேவர் பிரானே. *2756*

नादत्तिनिलाडि नार्पदत्तेयाडि
वेदत्तिलाडि तऴलन्द मीदाडि
बोदत्तिलाडिप् पुवन मुऴुदाडुम्
तीदट्र देवादि देवर् पिराने । मंत्र-संख्या, *2756*

नृत्यरत हैं प्रभु नाद में
नाद के संग चार स्थितियों में
नृत्यरत हैं प्रभु वेद में
वह्नि की ज्योति में
बोध में निखिल भुवन में
नृत्यरत हैं निर्मल निरामय प्रभु
देवाधिदेव महादेव । *2756*

773. ஆறு முகத்தில் அதிபதி நானென்றுங்
கூறு சமயக் குருபரன் நானென்றுந்
தேறினர் தெற்குத் திருஅம்ப லத்துளே
வேறின்றி யண்ணல் விளங்கிநின் றானே. 2758

आरुमुगत्तिल् अदिपदि नानॆन्रुम्
कूरु समयक् कुरुपरन् नानॆन्रुम्
तेऱिनर् तॆर्कुत्तिरु अम्बलत्तुळे
वेऱिन्ऱि यण्णल् विळङ्गि निन्ऱाने । मंत्र-संख्या, 2758

'षण्मुखों का अधिपति मैं हूँ
षण्मतों का गुरुवर मैं हूँ–'
यों कहते हुए विराज रहे हैं प्रभु
दक्षिण चिदम्बरम् के भव्य मंदिर में
प्रभु जो अनन्य-अद्वितीय हैं । 2758

774. ஆடிய காலும் அதிற்சிலம் போசையும்
பாடிய பாட்டும் பலவான நட்டமுங்
கூடிய கோலங் குருபரன் கொண்டாடத்
தேடியு ளேகண்டு தீர்ந்தற்ற வாறே. 2760

आडिय कालुम् अदिर् चिलम्बोशैयुम्
पाडिय पाट्टुम् पलवान नट्टमुम्
कूडिय कोलम् गुरुपरन् कॊण्डाडत्
तेडियुळे कण्डु तीर्न्दट्रवाऱे । मंत्र-संख्या, 2760

नृत्यरत चरण-नूपुर का क्वणन
संग में हैं मंजुगीत का मधुर रणन
द्रुत गति लय से परिवर्तित होते
चरण-युगल कर रहा अहा दिव्यनर्तन
क्षणक्षण धर रहे गुरुपर नव्यरूप
प्रशंसित है ज्ञानियों से यह महानृत्य

दर्शन करलो अंतर् में यह दिव्यनृत्य
कट जाए जिससे भवबंधन । 2760

775. இடங்கொண்ட சத்தியும் எந்தை பிரானும்
நடங்கொண்டு நின்றமை நானும் அறிந்தேன்
படங்கொடு நின்றஇப் பல்லுயிர்க் கெல்லாம்
அடங்கலுந் தாமாய்நின் றாடுகின் றாரே. 2768

इडङ्कॊण्ड सत्तियुम् ऍन्दै पिरानुम्
नडङ्कॊण्डु निन्ऱमै नानुम् अरिन्देन्
पडङ्कॊडु निन्ऱ इप्पल्लुयिर्क्कॆल्लाम्
अडङ्गलुम् तामाय् निन्ऱाडुकिन्ऱारे । मंत्र-संख्या, 2768

नृत्यरत हैं प्रभु
वाम भाग में लसी शक्ति के संग,
जाना मैंने परमकृपा से
इस दिव्य-नृत्य का मर्म,
नृत्यरत हैं प्रभु
उद्धार हेतु अगणित जीवों के
जो आवृत हैं माया के पट से । 2768

776. அம்பல மாவ தகில சராசரம்
அம்பல மாவது ஆதிப் பிரானடி
அம்பல மாவது அப்புத்தீ மண்டலம்
அம்பல மாவது அஞ்செழுத் தாமே. 2775

अम्बलमावदकिल चराचरम्
अम्बलमावदु आदिप्पिरानडि
अम्बलमावदु अप्पुत्तीमण्डलम्
अम्बलमावदु अञ्जेऴुत्तामे । मंत्र-संख्या, 2775

रंगमंच है निखिल चराचर
रंगमंच वही है जहाँ थिरक रहे हैं

नटराजराज के दिव्यचरण
रंगमंच है वह्निमंडल के साथ जलमंडल
रंगमंच है पंचाक्षर का महामंत्र । 2775

777. ஆதி நடஞ்செய்தான் என்பர்கள் ஆதர்கள்
ஆதி நடஞ்செய்கை யாரும் அறிகிலர்
ஆதி நடமாட லாரும் அறிந்தபின்
ஆதி நடமாட லாமருட் சத்தியே. 2787

आदिनडम् चॅय्दान् ऍन्पर्गळ् आदर्गळ्
आदि नडम् चॅय्गै यारुम् अऱिकिलर्
आदि नडमाडलारुम् अऱिन्दपिन्
आदि नडमाडला मरुट् सत्तिये । मंत्र-संख्या, 2787

अनजान हैं वे जो कहते हैं
आदिशक्ति के साथ महानृत्य का प्रसंग
अज्ञात है नटराज का वह आदिनृत्य
ज्ञात होने पर महानृत्य का मर्म
नाचने लगेंगे स्वयं भी
अनुग्रह-शक्ति से । 2787

778. தத்துவம் ஆடச் சதாசிவந் தானாடச்
சித்தமும் ஆடச் சிவசத்தி தானாட
வைத்த சராசரம் ஆட மறையாட
அத்தனும் ஆடினான் ஆனந்தக் கூத்தே. 2789

तत्तुवम् आडच् चदाशिवम् तानाड
चित्तमुम् आड शिवसत्ति तानाड
वैत्त चराचरम् आड मऱैयाड
अत्तनुम् आडिनान् आनन्दक्कूत्ते । मंत्र-संख्या, 2789

नटराजराज के ब्रह्मांड-नृत्य में
नाचे सारे तत्व, नाचे सदाशिव

नाचे चित्त, नाचे शिवशक्ति
नाचे सकल चराचर, वेद-वेदांत
यों नाच रहा था प्रभु नटराज
आनन्दनृत्य, अद्भुत नृत्य । 2789

779. இருவருங் காண எழில்அம் பலத்தே
உருவோ டருவோ டுருபர ரூபமாய்த்
திருவருட் சத்திக்குள் சித்தனா னந்தன்
அருளுரு வாகநின் றாடலுற் றானே. 2790

इरुवरुम् काण ऍऴिलम्बलत्ते
उरुवोडरुवोडुरु पररूपमाय्
तिरुवरुट् सत्तिक्कुळ् चित्तनानन्दन्
अरुळुरुवाह निन्ऱाडलुट्राने । मंत्र-संख्या, 2790

(चिदम्बरम् में स्थित)
भव्य मंदिर में
नृत्य हुआ नटराजराज का
दर्शकों में थे दो महर्षि (पतंजलि, व्याघ्रपाद)
विश्वचेतना का वह ब्रह्मांड-नृत्य
कभी रूप लेकर कभी अरूप,
कभी रूप-अरूप की धूप-छाँह,
निज अनुग्रह-शक्ति की व्याप्ति में
महानृत्य किया परमेश्वर ने
सिद्ध बन, आनंद बन, अनुग्रह बनकर
नृत्यरत था नटराज । 2790

780. ஆனந்தம் ஆனந்தம் என்பர் அறிவிலர்
ஆனந்த மாநட மாரும் அறிகிலர்
ஆனந்த மாநட மாரும் அறிந்தபின்
தானந்தம் அற்றிடம் ஆனந்த மாமே. 2796

आनन्दम् आनन्दम् ऍन्बर् अऱिविलर्
आनन्द मानदडमारुम् अऱिकिलर्
आनन्द मानडमारु मऱिन्दपिन्
नादान्तम् अद्रिडम् आनन्दमामे । *मंत्र-संख्या, 2796*

'आनन्द है ! क्या ही आनन्द है !!'
यों प्रमुदित जो होते हैं वे अबोध मूर्ख हैं
किसी ने नहीं देखा है नहीं जाना है
आनन्दनृत्य का मर्म,
एक बार जो जानले आनन्दनृत्य का मर्म
देख ले वह परमानंदमय दिव्यनर्तन
अलगाव उसी क्षण होता है समाप्त
जीव होता है एकाकार शिव से । *2796*

781. உள்ளது ளோமென ஈசன் ஒருவனை
உள்ளத்து ளேயங்கி யாய வொருவனை
உள்ளத்து ளேநீதி யாய வொருவனை
உள்ளத்து ளேயுடல் ஆகாய மாமே. *2804*

उळ्ळत्तुळोमॅन ईशन् ऑरुवनै
उळ्ळत्तुळे यंगि याय ऑरुवनै
उळ्ळत्तुळे नीति याय ऑरुवनै
उळ्ळत्तुळे युडळ् आकायमामे । *मंत्र-संख्या, 2804*

प्रणव-स्वरूप प्रभु निवसित है हृदय में
ध्यान लगाकर 'ओम्' का उच्चार करें
प्रकट हो जाता है तत्क्षण
ज्योतिरूप में स्थित है वह तेजोमय,
वह सत्य-स्वरूप नीति-न्याय का रूप
शरीर का हृदयाकाश है वह । *2804*

782. ஆகாச வண்ணன் அமரர் குலக்கொழுந்
தேகாச மாசுண மிட்டங் கிருந்தவன்
ஆகாச வண்ணம் அமர்ந்துநின் றப்புறம்
ஆகாச மாயங்கி வண்ணனு மாமே. 2809

आकाशवण्णन् अमरर् कुलक्कॊऴुन्दु
एकाशमाशुण मिट्टङ्किरुन्दवन्
आकाशवण्णम् अमर्न्दुनिन्ऱप्पुऱम्
आकाशमायङ्गि वण्णनुमामे । मंत्र-संख्या, 2809

नभ-सम नीलवर्ण है प्रभु
देवों का परम-प्रिय
संत जनों की 'आँखों का तारा'
धारण किए है प्रभु
शुद्ध माया-स्वरूप पंचमुखी सर्प
व्याप्त है नभोदेश में
फिर आकाश के पार बहिरंड में
अग्निवर्ण प्रभु । 2809

783. மிக்கா ரமுதுண்ண நஞ்சுண்ட மேலவன்
தக்கார் உரைத்த தவநெறி யேசென்று
புக்கா லருளும் பொன்னுரை ஞானத்தை
தக்கார் கழல்வழி நாடுமின் நீரே. 2815

मिक्कारमुदुण्ण नञ्जुण्ड मेलवन्
तक्कारुरैत्त तवनॆऱिये चॆन्ऱु
पुक्कालरुळुम् पॊन्नुरै ज्ञानत्तै
नक्कार् कऴल्वऴि नाडुमिन् नीरे । मंत्र-संख्या, 2815

शेष देवगण अमृत चखें
इसलिए स्वयं ग्रहण किया विष
महादेव श्रेष्ठ हैं, वही उपास्य हैं
योग्य गुरु के बताए

तपोमार्ग पर चलो
उन्मुख बनो
ज्ञान प्रदान करेंगे प्रभु
स्वर्णसम ज्ञान
खोजो शिव के चरण-युगल । 2815

784. தத்துவம் எங்குண்டு தத்துவன் அங்குண்டு
தத்துவம் எங்கில்லை தத்துவன் அங்கில்லை
தத்துவ ஞானத்தின் தன்மை யறிந்தபின்
தத்துவன் அங்கே தலைப்படுந் தானே. 2817

तत्तुवम् ऍङ्गुण्डु तत्तुवन् अङ्गुण्डु
तत्तुवम् ऍङ्गिल्लै तत्तुवन् अङ्गिल्लै
तत्तुव ज्ञानत्तिन् तन्मै यऱिन्दपिन्
तत्तुवन् अङ्गे तलैप्पडुवाने । 2817

जहाँ तत्व हैं तत्वों का अधीश वहाँ है,
जहाँ तत्व नहीं हैं तत्व-स्वरूप भी नहीं है,
ज्ञात होगा जब तत्वज्ञान का सत्य
प्रकट होंगे निश्चय तत्वों के अधीश । 2817

785. சத்தி சிவன்பர ஞானமுஞ் சாற்றுங்கால்
உய்த்த அனந்தஞ் சிவமுயர் ஆனந்தம்
வைத்த சொருபத்த சத்தி வருகுரு
உய்த்த வுடலிவை யுற்பலம் போலுமே. 2828

सत्ति शिवन् परज्ञानमुम् चाट्रुङ्काल्
उय्त्त अनन्तम् शिवमुयर् आनन्दम्
वैत्त सॊरूपत्त सत्ति वरुगुरु
उय्त्त उडलिवैयुर्पलम् पोलुमे । मंत्र-संख्या, 2828

शक्ति, शिव और परज्ञान को
व्यक्त करेंगे यों :

अंतहीन आनन्द शिवानन्द है (आनन्द)
उनका स्वरूप ही शक्ति (सत्) है
परज्ञान वह है जो
गुरु द्वारा जीव को
प्रदत्त होता है (चित्)
तीनों मिलकर बनते हैं सुमन
सत्-चित्-आनन्द का । 2828

786. அங்குநின் றானயன் மால்முதல் தேவர்கள்
எங்குநின் றாரும் இறைவனென் றேத்துவர்
தங்கிநின் றான்தனி நாயகன் எம்மிறை
பொங்கிநின் றான்புவ னாபதி தானே. 2837

अङ्गु निन्ऱानयन् मालमुदल् देवर्गल्
ऍङ्गु निन्ऱारुम् इऱैवनॅन्ऱेत्तुवर्
तङ्गि निन्ऱान् तनि नायकन् ऍम्मिऱै
पॊङ्गि निन्ऱान् पुवनपति ताने । मंत्र-संख्या, 2837

देवाधिदेव प्रभु स्थित रहे अंतरिक्ष में
ब्रह्मा, विष्णु प्रभृति सकल देव
जो जहाँ थे वहीं से पूजने लगे प्रभु को
सर्वेश्वर मान कर,
अनुपम अद्वितीय मेरे प्रभु
व्याप्त रहे अग-जग में स्थिर होकर
बने रहे वहाँ पर, उन सभी के बाद भी
सकल भुवनों के अधीश । 2837

787. உருவன்றி யேநின் றுருவம் புணர்க்குங்
கருவன்றி யேநின்று தான்கரு வாகும்
அருவன்றி யேநின்ற மாயப் பிரானைக்
குருவன்றி யாவர்க்குங் கூடவொண் ணாதே. 2840

उरुवन्ऱिये निन्ऱुरुवम् पुणर्क्कुम्
करुवन्ऱिये निन्ऱु तान् करुवागुम्
अरुवन्ऱिये निन्ऱ मायप्पिरानै
गुरुवन्ऱि यावर्क्कुम् कूडवोण्णादे । मंत्र-संख्या, 2840

अरूप है वह, लेता है अनेक रूप
अजन्मा है वह, बीजकारण है सृष्टि का
अरूपत्व से परे स्थित वह मायामय भी है
उसको पाना हो तो चाहिए उसकी कृपा
स्वयं गुरुरूप में आकर मार्ग दिखाए
तभी हो सकता है साक्षात्कार । 2840

788. ஆமா றறிந்தேன் அகத்தின் அரும்பொருள்
போமா றறிந்தேன் புகுமாறு மீதென்றே
ஏமாப்ப தில்லை இனியோ ரிடமில்லை
நாமா முதல்வனும் நானென லாமே. 2846

आमाऱरिन्देन् अगत्तिन् अरुम्पॊरुळ्
पोमाऱरिन्देन् पुगुमारु मीदॆन्ऱे
एमाप्पदिल्लै इनियोरिडमिल्लै
नामा मुदल्वनुम् नानॆनलामे । मंत्र-संख्या, 2846

पा लिया मैंने मार्ग
अंतस् में रमे प्रभु को पाने का,
उस सत्य के साथ मिलने का
उसमें प्रवेश करने का अमोघ मार्ग,
अब कोई अहंकार नहीं है
उनके चरण-कमल छोड़
कोई आश्रय-स्थल भी नहीं,
कृपा से, अनुग्रह से अपनाया मुझे
और अपने रंग में रंग लिया

स्थिति आ गई है मैं घोषित कर सकता हूँ
मैं वही हूँ, वही हूँ मैं । 2846

789. தான்முன்னஞ் செய்த விதிவழி தானல்லால்
வான்முன்னஞ் செய்தங்கு வைத்ததோர் மாட்டில்லை
கோன்முன்னஞ் சென்னி குறிவழி யேசென்று
நான்முன்னஞ் செய்ததே நன்னில மானதே. 2848

तान् मुन्नम् चॅय्द तनिवऴि तानल्लाल्
वान् मुन्नम् चॅय्दङ्गु वैत्तदोर् माट्टिल्लै
कोन् मुन्नम् चॅन्नि कुऱिवऴियॆ चॅन्ऱु
नान् मुन्नम् चॅय्ददे नन्निलमानदे । मंत्र-संख्या, 2848

पूर्वजन्म कृत कर्मफल से निर्मित
मार्ग छोड़कर कोई अन्य मार्ग नहीं,
ऐसा कोई मार्ग नहीं
जो कि निर्धारित हो ईश से
मैंने यही मार्ग अपनाया
प्रभु के समक्ष नतशिर होकर
लक्ष्य की ओर बढ़ता गया
जो कर्म किए थे पूर्व में
वह मेरे लिए आनन्द का क्षेत्र बना । 2848

790. வாக்கு மனமு மறைந்த மறைப்பொருள்
நோக்குமின் நோக்கப் படும்பொருள் நுண்ணிது
போக்கொன்றும் இல்லை வரவில்லை கேடில்லை
ஆக்கமும் அத்தனை ஆய்ந்துகொள் வார்க்கே. 2854

वाक्कु मनमु मऱैन्द मऱैप्पॊरुळ्
नोक्कुमिन् नोक्कप्पडुम् पॊरुळ् नुण्णिदु
पोक्कॊन्ऱुमिल्लै वरविल्लै केडिल्लै
आक्कमुम् अत्तनै आय्न्दुकॊळ्वाक्कें । मंत्र-संख्या, 2854

वेदों में उद्घोषित
सत्यतत्व परमेश्वर यही है
जो वाक् ओर मन से परे है
देखो इसे दर्शनीय है, सुसूक्ष्म है
इसका न गमनागमन है, न ही नाश,
सकल मंगल पाते हैं वे
जो उस परम को खोजते हैं । 2854

791. உணர்வும் அவனே உயிரும் அவனே
புணரும் அவனே புலவி யவனே
இணரும் அவன்தன்னை யெண்ணலு மாகான்
துணரின் மலர்க்கந்தந் துன்னிநின் றானே. 2857

उणर्वुम् अवने उयिरुम् अवने
पुणरुम् अवने पुलवि यवने
इणरुम् अवन् तन्नै यॆण्णलुमागान्
तुणरिन् मलर्क्कन्दम् तुन्नि निन्ऱाने । मंत्र-संख्या, 2857

जीव से अभिन्न शिव
चेतना भी है, स्वयं जीवन भी,
योग भी वही है वियोग भी
हृदयकमल में निरंतर रहते हुए भी
पकड़ में नहीं आता विचार द्वारा
पुष्प में सुगंध सम
स्थित है वह । 2857

792. துன்னிநின் றான்தன்னை யுன்னிமுன் னாவிரு
முன்னி யவர்தங் குறையை முடித்திடும்
மன்னிய கேள்வி மறையவன் மாதவன்
சென்னியுள் நின்றதோர் தேற்றத்த னாமே. 2858

तुन्नि निन्ऱान् तन्नै युन्नि मुन्नाविरु
मुन्नियवर् तम् कुऱैयै मुडित्तिडुम्

मन्निय केळ्वि मऱैयवन् मादवन्
चेन्नियुळ् निन्ऱदोऱ् तेट्रत्तनामे । मंत्र-संख्या, 2858

(फूलों की सुगंध सम)
अंतर् में स्थित प्रभु पर
ध्यान लगाओ
उसकी कृपा के लिए
पूर्ण मनोयोग से,
पूरा करेगा वह उनकी कमियाँ
जो उसे हृदय से चाहते हैं,
वह स्वयं अलिखित शाश्वत वेद
वही तपस्या महान्
शीर्ष में अवस्थित है
सहस्रार में । 2858

793. பற்றற் றவர்பற்றி நின்ற பரம்பொருள்
கற்றற் றவர்கற்றுக் கருதிய கண்ணுதல்
சுற்றற் றவர்சுற்றி நின்றஎன் சோதியைப்
பெற்றுற் றவர்கள் பிதற்றொழிந் தாரே. 2865

पट्रट्रवऱ् पट्रि निन्ऱ परम्पॉरुळ्
कट्रट्रवऱ् कट्रुक् करुदिय कण्णुदल्
सुट्रट्रवऱ् सुट्रि निन्ऱ ऍन् जोतियै
पॅट्रुट्रवर्गळ् पिदट्रॉऴिन्दारे । मंत्र-संख्या, 2865

अनासक्तों द्वारा गृहीत परमतत्व को,
पारंगतों द्वारा संचित तृतीयनेत्र को,
बंधनहीनों से परिक्रमित ज्योतिरूप को,
पा लिया जिन्होंने समाप्त है उनका जल्पन । 2865

794. பள்ளச்செய் யொன்றுண்டு பாடச்செய் இரண்டுள
கள்ளச்செய் யங்கே கலந்து கிடந்தது

உள்ளச்செய் யங்கே யுழவுசெய் வார்கட்கு
வெள்ளச்செய் யாகி விளைந்தது தானே. 2871

पळ्ळच्चॆय्यॊन्ऱुण्डु पाडच्चॆय् इरण्डुळ
कळ्ळच्चॆय्यङ्गे कलन्दु किडन्ददु
उळ्ळच्चॆय्यङ्गे उऴवु चॆय्वार्गट्कु
वॆळ्ळच्चॆय्यागि विळैन्ददु ताने । मंत्र-संख्या, 2871

एक गहरा खेत है (सुषुप्ति)
और दो खेत सपाट (जाग्रत्-स्वप्न)
इनसे मिला हुआ एक अन्य खेत है (तुरीय)
उन जनों के लिए जो हृदय के खेत को जोतते हैं
अमृत बरसता है, खेतों को सींचता है
जिससे फसल बढ़िया होती है । 2871

795. ஏற்றம் இரண்டுள ஏழு துரவுள
மூத்தான் இறைக்க இளையான் படுத்தநீர்
பாத்தியிற் பாயாது பாழ்ப்பாய்ந்து போயிடிற்
கூத்தி வளர்த்ததோர் கோழிப்புள் ளாமே. 2873

एट्रम् इरण्डुळ एऴु तुरवुळ
मूत्तान् इ़रैक्क इळैयान् पडुत्तनीर्
पात्तियिर् पायादु पाऴ्प्पाय्न्दु पोयिडिर्
कूत्ति वळर्त्तदोर् कोऴिप्पुळ्ळामे । मंत्र-संख्या, 2873

ढेंकलियाँ दो हैं (इडा, पिंगला)
और कुएँ सात (छह आधार एवं सहस्रार)
ज्येष्ठ (उच्छवास) का निकाला
कनिष्ठ (निःश्वास) का सींचा पानी
क्यारियों को सींचे बिना (सुषुम्ना)
व्यर्थ बह जाए (सुख भोगों में)
वेश्या के पाले चूज़े के समान (वृथा) हो जाए । 2873

796. மலைமேல் மழைபெய்ய மான்கன்று துள்ளக்
குலைமேல் இருந்த கொழுங்கனி வீழ
உலைமேல் இருந்த உறுப்பெனக் கொல்லன்
முலைமேல் அமிர்தம் பொழியவைத் தானே. 2882

मलैमेल् मऴैपॅय्य मान्कन्रु तुळ्ळक्
कुलैमेल् इरुन्द कॊऴुङ्कनि वीऴ
उलैमेल् इरुन्द उरुप्पॅनक् कॊल्लन्
मुलैमेल् अमिर्दम् पॊऴियवैत्ताने । मंत्र-संख्या, 2882

पानी बरसा पहाड़ पर उछला हिरन शावक (शीर्ष)/(शक्ति)
ऊपर की डाली (सहस्रार) से गिर पड़ा पका फल (कृपा)
और वह पिघल गया
जैसे लुहार की भट्टी पर धातु पिघले
पिघल कर वह (आनन्दामृत) प्रवाहित हुआ हृदय पर । 2882

797. பார்ப்பான் அகத்திலே பாற்பசு ஐந்துண்டு
மேய்ப்பாரும் இன்றி வெறித்துத் திரிவன
மேய்ப்பாரும் உண்டாய் வெறியும் அடங்கினாற்
பார்ப்பான் பசுஐந்தும் பாலாச் சொரியுமே. 2883

पार्प्पान् अगत्तिले पार्पसु ऐन्दुण्डु
मेय्प्पारुम् इन्रि वॅरित्तुत्तिरिवन्
मेय्प्पारुमत् उण्डाय् वॅरियुम् अडङ्गिनार्
पार्प्पान् पसु ऐन्दुम् पालाच्चॊरियुमे । मंत्र-संख्या, 2883

ब्राह्मण के घर (शरीर) में पाँच दुधारू गाएँ (इन्द्रिय)
चराने वाला नहीं, उच्छृंखल घूमती हैं
चरवाहा (योगी) मिल जाए, मद भी थम जाए
ब्राह्मण की गाएँ दूध बरसाएँ । 2883

798. எழுதாத புத்தகத் தேட்டின் பொருளைத்
தெருளாத கன்னி தெளிந்திருந் தோத

மலராத பூவின் மணத்தின் மதுவைப்
பிறவாத வண்டு மணமுண்ட வாறே. 2885

ऍऴ्ुदाद पुत्तगत्तेट्टिन् पॉरुळैत्
नॆरुळाल कन्नि तॆळिन्दिरुन्दोद
मलराद पूविन् मणत्तिन् मदुवैप्
पिऱवाद वण्डु मणमुण्डवाऱे । मंत्र-संख्या, 2885

निर्मल कुमारी (कुंडलिनी) जब पढ़ती है (जाप) स्पष्ट स्वर से
अलिखित ग्रंथ का सार (ऊँकार)
मधु बरसता अविकसित पुष्प (सहस्रार) से
अजन्मा भ्रमर (योगी) सूंघता है
जिसकी सुगंध (अमरत्व का मकरंद) । 2885

799. இரண்டு கடாவுண்டு இவ்வூரி னுள்ளே
இரண்டு கடாவுக்கும் ஒன்றே தொழும்பன்
இரண்டு கடாவும் இருத்திப் பிடிக்கில
இரண்டு கடாவும் ஒருகடா வாமே. 2889

इरण्डु कडावुण्डु इव्वूरिनुळ्ळे
इरण्डु कडावुक्कुम् ऑन्ऱे तॊऴ्ुम्बन्
इरण्डु कडावुम् इरुत्तिप् पिडिक्किल्
इरण्डु कडावुम् ऑरुकडावामे । मंत्र-संख्या, 2889

इस गाँव (शरीर) में हैं दो बैल (इडा, पिंगला)
उनकी देखभाल के लिए है एक नौकर (जीव)
वश में कर ले दोनों बैलों को
दोनों मिल कर एक (सुषुम्ना) हो जाएँ । 2889

800. ஒத்த மனக்கொல்லை யுள்ளே சமன்கட்டிப்
பத்தி வலையிற் பருத்தி நிறுத்தலால்
முத்தக் கயிறாக மூவர்கள் ஊரினுள்
நித்தம் பொருது நிரம்பநின் றாரே. 2890

ऑत्त मनक्कॉल्लै युळ्ळे समन् कट्टिप्
पत्ति वलैयिऱ् परुत्ति निऱुत्तलाल्
मुत्तक् कयिऱाग मूवर्गळ् ऊरिनुळ्
नित्तम् पॉरुदु निरम्ब निन्ऱारे । मंत्र-संख्या, 2890

पाट लें सीधा-सच्चा मन का बाग
बिछाकर भक्ति का जाल, उगाएँ कपास
फिर प्रवेश करें त्रिपुटी (आज्ञाचक्र) पर
मुक्ति की रज्जु से चल कर
नित्य ही चढ़ते रहें पूर्ण बनने को । 2890

801. ஆறு பறவைகள் ஐந்தகத் துள்ளன
நூறு பறவை நுனிக்கொம்பின் மேலன
ஏறும் பெரும்பதி ஏழுங் கடந்தபின்
மாறுத லின்றி மனைபுக லாமே. 2905

आरु पऱवैगळ् ऐन्दगत्तुळ्ळन
नूरु पऱवै नुनिक्कॉम्बिन् मेलन
एरुम् पॅरुम् पति एऴुम् कडन्दपिन्
मारुदलिन्ऱि मनै पुगलामे । मंत्र-संख्या, 2905

छह (षड्रिपु) पंछी बसे हैं पंचतत्व के शरीर में
और सौ पंछी हैं ऊँची डाल पर (सहस्रार)
पहुँच सकते हैं घर (मुक्ति) के भीतर
निश्चित ही, पार कर
सात सीढ़ियाँ (षड्चक्र एवं सहस्रार) । 2905

802. கயலொன்று கண்டவர் கண்டே இருப்பர்
முயலொன்று கண்டவர் மூவரும் உய்வர்
பறையொன்று பூசல் பிடிப்பா னொருவன்
மறையொன்று கண்ட துருவம்பொன் னாமே. 2910

कयलॉन्रु कण्डवर् कण्डे इरुप्पर्
मुयलॉन्रु कण्डवर् मूवरुम् उय्वर्
पऱैयॉन्रु पूसल् पिडिप्पानॉरुवन्
मऱैयॉन्रु कण्डतुरुवम् पॉन्नामे । मंत्र-संख्या, 2910

मीन (कामिनी) देखें जो, देखते रह जाते हैं;
खरगोश (रहस्यपूर्ण चंद्रदृश्य) देखें जो
छूट जाते हैं तीन (मल) से
नियंत्रण करे संग्राम (इंद्रिय) पर जो
जानेगा अंतःसत्य (शिव) को, बनेगा कंचन-रूप । 2910

803. தோணியொன் றேறித் தொடர்ந்து கடல்புக்கு
வாணிபஞ் செய்து வழங்கி வளர்மகன்
நீலிக் கிறையுமே நெஞ்சின் நிலைதளர்ந்
தாலிப் பழம்போல் அளிக்கின்ற அப்பே. 2915

तॉणियॉन्रेऱित् तॉडर्न्दु कडल्पुक्कु
वाणिबम् चॅय्दु वऴङ्गि वळर् मगन्
नीलिक्किऱैयुमे नॅञ्जिन् निलैतळर्न्दु
आलिप् पऴम् पोल् अळिक्किन्ऱ अप्पे । मंत्र-संख्या, 2915

नौका (शरीर) में सवार हो, उतरा समुद्र (योग) में
पनप उठा व्यापार (साधना) मिली समृद्धि भी
ऐसे में भला आदमी (जीव)
अपना हृदय दे बैठा माया (शक्ति) को
निज को भूला हुआ परवश
शीर्ष (सहस्रार) से झरे अमृत-रस के साथ
मिला उसे अमरफल (मुक्ति) । 2915

804. நீரின்றிப் பாயும் நிலத்தினிற் பச்சையாம்
யாவரும் என்றும் அறியவல் லாரில்லை

கூரு மழைபொழி யாது பொழிபுனல்
தேரினிற் நீர்மை திடரினில் லாதே. 2920

नीरिऩ्ऱिप् पायुम् निलत्तिनिऱ् पच्चैयाम्
थावरुम् ऍऩ्ऱुम् अऱियवल्लारिल्लै
कूरु मऴैपॊऴियादु पॊऴिपुनल्
तेनिनिऩ् नीर्मै तिडरिनिल्लादे । मंत्र-संख्या, 2920

प्रवहित नहीं है जल फिर भी खेत हरा है
कोई नहीं जाने इसका मर्म
(सच यह है)
यह वर्षा से नहीं कृपावारि से है सिंचित
जल नहीं टिकता योग से अनजुती भूमि में । 2920

805. குடைவிட்டுப் போந்தது கோயில் எருமை
படைகண்டு மீண்டது பாதி வழியில்
உடையவன் மந்திரி யுள்ளலும் ஊரார்
அடையா நெடுங்கடை ஐந்தொடு நான்கே. 2925

कुडैविट्टुप् पोन्दु कोयिल् एरुमै
पडैकण्डु मीण्डदु पादि वऴियिल्
उडैयवन् मन्तिरि युळ्ळलुम् ऊरार्
अडैया नॆंडुङ्कडै ऐन्दॊडु नान्गे । मंत्र-संख्या, 2925

योग-साधना की गोशाला से
निकल पड़ा भैंसा (चित्त)
कामादि रिपु सामने आये
लौट पड़ा डर कर बीच राह से,
जीव ने तब मंत्रणा की गुरु से
साधना प्रारंभ हुई विधिवत्
संतरियों ने बंद कर दिए नवद्वार
(तब जाकर सुरक्षा हुई, फलतः)

मुक्ति मिली नवद्वारयुक्त देह से । 2925

806. முகத்திற் கண்கொண்டு காண்கின்ற மூடர்காள்
அகத்திற் கண்கொண்டு காண்பதே ஆனந்தம்
மகட்குத் தாய்தன் மணாளனோ டாடிய
சுகத்தைச் சொல்லென்றாற் சொல்லு மாறெங்ஙனே. 2944

मुगत्तिऱ् कण्कॊण्डु काण्किन्ऱ मूडर्गाळ्
अगत्तिऱ् कण्कॊण्डु काण्पदे आनन्दम्
मगट्कुत् तायतन् मणाळनोडाडिय
सुगत्तैच् चॊल्लॆन्ऱाऱ् चॊल्लुमाऱॆङ्ङने । मंत्र-संख्या, 2944

मूर्ख हो जो मुख के नेत्र से देखते हो
सच्चा आनंद तभी मिलेगा
जब अंतस् के नयनों से देखोगे
भला पूछने पर भी कोई माँ कैसे करेगी वर्णन
पति के साथ निज रति-सुख का
(उसी भाँति) निज अनुभव का विषय है यह । 2944

807. ஒன்றிநின் றுள்ளே யுணர்ந்தேன் பராபரம்
ஒன்றிநின் றுள்ளே யுணர்ந்தேன் சிவகதி
ஒன்றிநின் றுள்ளே யுணர்ந்தேன் உணர்வினை
ஒன்றிநின் றேபல வூழிகண் டேனே. 2953

ऒन्ऱि निन्ऱुळ्ळे युणर्न्देन् परापरम्
ऒन्ऱि निन्ऱुळ्ळे युणर्न्देन् शिवगति
ऒन्ऱि निनरुळ्ळे युणर्न्देन् उणर्विनै
ऒन्ऱि निन्ऱे पलवूऴि कण्डेने । मंत्र-संख्या, 2953

ध्यान की एकाग्रता में परात्पर का अनुभव हुआ
ध्यान की एकाग्रता में शिवगति का अनुभव हुआ
ध्यान की एकाग्रता में अंतर्ज्ञान का अनुभव हुआ
ध्यान की एकाग्रता में युगांतरों का अनुभव हुआ । 2953

808. உரையற்ற தொன்றை யுரைசெய்யு மூமர்காள்
கரையற்ற தொன்றைக் கரைகாண லாகுமோ
திரையற்ற நீர்போல் சிந்தை தெளிவார்க்குப்
புரையற் றிருந்தான் புரிசடை யோனே. 2955

उरैयट्रदोन्रै युरै चेय्युमूमर्गाळ्
करैयट्रदोन्रैक् करैकाणलागुमो
तिरैयट्रनीर् पोल् चिन्तै तॆळिवार्क्कुप्
पुरैयट्रिरुन्दान् पुरिचडैयोने । मंत्र-संख्या, 2955

मूर्ख हो, धृष्टता करते हो
वाक् से परे को वाक् में बांधने की;
बोलो कभी तुम उसके पार पहुँच सकते हो
जिसका कोई नहीं है आर-पार
समझो जिनका चित्त स्थिर-शांत है
लहरों से रहित जलाशय-सा
उनके लिए प्रकट होता है
निज रूप में जटाजूट परमेश्वर । 2955

809. மலமில்லை மாசில்லை மானாபி மானங்
குலமில்லை கொள்ளுங் குணங்களு மில்லை
நலமில்லை நந்தி ஞானத்தி னாலே
பலமன்னி யன்பிற் பதித்துவைப் போர்க்கே. 2957

मलमिल्लै मासिल्लै मानाबिमानम्
कुलमिल्लै कॊळ्ळुम् गुणङ्गळुमिल्लै
नलमिल्लै नन्दि ज्ञानत्तिनाले
बलमन्नि यन्बिर् पदित्तु वैप्पोर्क्के । मंत्र-संख्या, 2957

मलरहित हैं, विशुद्ध हैं
परे हैं मानाभिमान से
विचार नहीं कुल-गोत्र का
त्रिगुण का, निजपर के बोध का

धन्य हैं ये स्थापित किए हैं
नन्दी को निज हृदय में दृढ़ता से । 2957

810. நாமமோ ராயிரம் ஓதுமின் நாதனை
ஏமமோ ராயிரத் துள்ளே இசைவீர்கள்
ஓமமோ ராயிரம் ஓதவல் லாரவர்
காமமோ ராயிரங் கண்டொழிந் தாரே. 2987

नाममोरायिरम् ओदुमिन् नादनै
एममोरायिरत्तुळ्ळे इशैवीर्गळ्
ओममोरायिरम् ओदवल्लारवर्
काममोरायिरम् कण्डॊळिन्दारे । मंत्र-संख्या, 2987

नाथ की स्तुति करो सहस्र-नामों से
तिरते रहोगे अजस्र आनन्द में
जपते रहो 'ओम्' के महामंत्र को
कटती जाएँगी इच्छा-कामनाएँ सहस्र । 2987

811. வந்துநின் றானடி யார்கட் கரும்பொருள்
இந்திர னாதி இமையவர் வேண்டினுஞ்
சுந்தர மாதர் துழனியொன் றல்லது
அந்தர வானத்தின் அப்புற மாமே. 2990

वन्दु निन्ऱानडियार्गट् करुम्पॊरुळ्
इन्दिरनादि इमेयवर् वेण्डिनुम्
सुन्दर मादर् तुळनि यॊन्ऱल्लदु
अन्तर वानत्तिन् अप्पुऱमामे । मंत्र-संख्या, 2990

प्रकट हुआ भक्तों के लिए
भक्तों का प्रिय सर्वेश्वर,
जोकि सत्य-नित्य वस्तु है
इन्द्रादि देव मांगते रहते हैं
देता है उन्हें सुंदरियाँ-सुखभोग

इधर भक्तों के लिए सुलभ है
नित्यानंद, जो स्वर्ग से भी परे है । *2990*

812. வள்ளற் றலைவனை வானநன் னாடனை
வெள்ளப் புனற்சடை வேத முதல்வனைக்
கள்ளப் பெருமக்கள் காண்பர்கொ லோஎன்று
உள்ளத் தினுள்ளே யொளித்திருந் தாளுமே. *2994*

वळ्ळट्रलैवनै वान नन्नाडनै
वॆळ्ळप् पुनर्चडै वेदमुदल्वनैक्
कळ्ळप् पॆरुमक्कळ् काण्बर्कॊलो ऍन्रु
उळ्ळत्तिनुळ्ळे ऒळिन्दिरुन्दालुमे । *मंत्र-संख्या, 2994*

औढरमहादानी स्वर्गापवर्गपति
वेदवेद्य, जटाजूट, गंगाधर प्रभु
विराजता है छिपकर संत-हृदय में कि
कहीं योग्यता-विहीन अपात्रजन
देख न लें उन्हें । *2994*

813. அந்தங் கடந்தும் அதுவது வாய்நிற்கும்
பந்த வுலகினிற் கீழோர் பெரும்பொருள்
தந்த வுலகெங்குந் தானே பராபரன்
வந்து படைக்கின்ற மாண்பது வாமே. *3003*

अन्दम् कडन्दुम् अदुवदुवाय् निर्कुम्
बन्द उलगिनिर् कीऴोर् पॆरुम्पॊरुळ्
तन्द उलगॆङ्गुम् ताने परापरन्
वन्दु पडैक्किन्र माण्बदुवामे । *मंत्र-संख्या, 3003*

सबसे परे, पर सबमें विद्यमान
अंतर्यामी बनकर वह परब्रह्म
पाशबद्ध सकल जग हेतु
एकमेव लक्ष्य वस्तु वह

सकल भुवन के परापर महेश्वर
ज्ञान देकर परिपक्व बनाता है
सत्यमय ज्ञानलोक देता है जीवों को । 3003

814, போற்றும் பெருந்தெய்வந் தானே பிறரில்லை
ஊற்றமும் ஓசையும் ஓசை யொடுக்கமும்
வேற்றுடல் தானென் றதுபெருந் தெய்வமாங்
காற்றது ஈசன் கலந்துநின் றானே. 3009

पोट्रुम् पॆरुम् दॆय्वम् ताने पिऱरिल्लै
ऊट्रमुम् ओशैयुम् ओशैयॊडुक्कमुम्
वेट्रुडल् तानॆन्ऱदु पॆरुम् दॆय्वमाङ्ङु
आट्रदु ईशन् कलन्दु निन्ऱाने । मंत्र-संख्या, 3009

परमपूज्य एक दैवत वही
सकल चराचर का आधारभूत वही
नाद भी वही, नादांत भी वही,
निज देह नहीं है, सकल देही वही
देहियों में चल रहे प्राण भी वही
जगन्नियंता महामहिम परमेश्वर वही । 3009

815. அகன்றான் அகலிடம் ஏழுமொன் றாகி
இவன்றா னெனநின் றெளியனு மல்லன்
சிவன்றான் பலபல சீவனு மாகி
நவின்றான் உலகுறு நம்பனு மாமே. 3011

अगन्ऱान् अगलिडम् एऴुमॊन्ऱागि
इवन्ऱानॆन निन्ऱॆळियनु मल्लन
शिवन्ऱान् पलपल जीवनुमागि
नविन्ऱान् उलगुरु नम्बनुमामे । मंत्र-संख्या, 3011

सर्वव्यापी वह निजव्याप्ति से
सप्त भुवनों को एक बनाए है

साथ ही इतना सहज भी नहीं
कि यह वही है मानकर प्राप्त करले कोई
एक वही शिव व्याप्त है सकल जीव बन
जो भी हो वही हमारे हित
अपना प्रभु है, अपना नाथ है । 3011

816. நானறிந் தப்பொருள் நாடவிட மில்லை
வானறிந் தங்கே வழியுற விம்மிடும்
ஊனறிந் துள்ளே உயிர்க்கின்ற ஒண்சுடர்
தானறிந் தெங்குந் தலைப்பட லாமே. 3027

नानऱिन्दप्पॊरुळ् नाड विडमिल्लै
वानऱिन्दङ्गे वऴियुऱ विम्मिडुम्
ऊनऱिन्दुळ्ळे उयिर्क्किन्ऱ ऒण्चुडर्
तानऱिन्दॆङ्गुम् तलैप्पडलामे । मंत्र-संख्या, 3027

खोज नहीं पाता मैं किसी एक स्थल पर
वह तो है सर्वव्यापी,
चरण-युगल को स्वर्ग मानकर
अवलंबन करो तपोमार्ग, प्रकट होगा वह,
ध्यान लगाकर निज हृदय में झांको
ज्योति बनकर विराजे मिलेगा
निज को पहचानो, अनुभव होगा
सर्वज्ञ, सर्वव्यापी परमेश्वर का । 3027

817. அதுவறி வானவன் ஆதிப் புராணன்
எதுவறி யாவகை நின்றவன் ஈசன்
பொதுவது வான புவனங்கள் எட்டும்
இதுவறி வான்நந்தி எங்கள் பிரானே. 3044

अदुवऱिवानवन् आदिप् पुराणन्
ऎदुवऱियावगै निन्ऱवन् ईशन्

पाॅदुवदुवान पुवनङ्गळ् ऍट्टुम्
इदुवऱिवान् नन्दि ऍङ्गळ् पिराने । मंत्र-संख्या, 3044

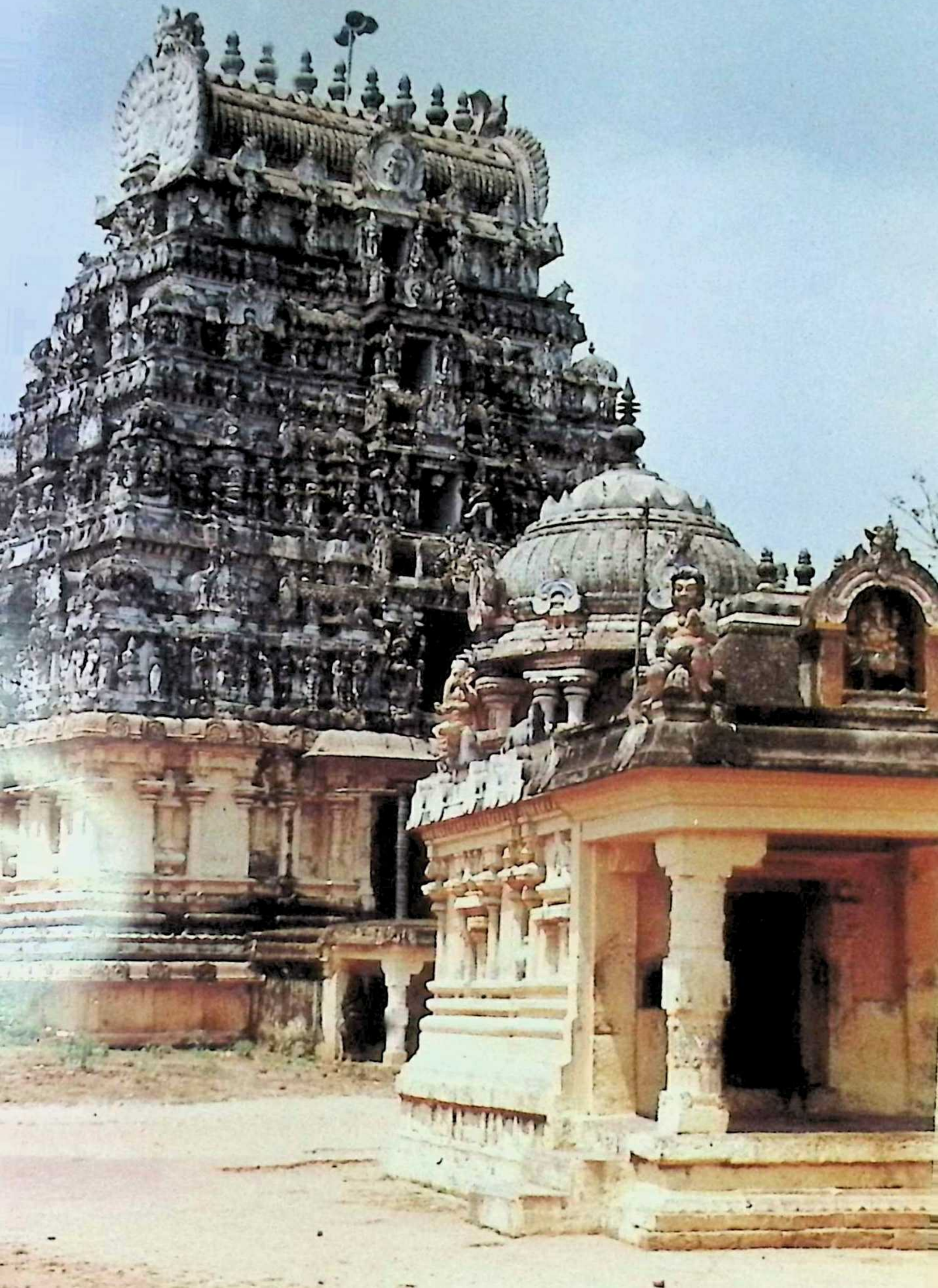
जीव के लिए ज्ञानस्वरूप वह
आदि, अनादि, सनातन है
फिर भी अष्टभुवनों में
कोई न जाने वह कौन है, क्या है !
किंतु सर्वज्ञ, वह सबको जानता है
वही हमारा नन्दी परमेश्वर है । 3044

818. மூல னுரைசெய்த மூவா யிரந்தமிழ்
மூல னுரைசெய்த முந்நூறு மந்திரம்
மூல னுரைசெய்த மூன்பப துபதேசம்
மூல னுரைசெய்த மூன்றும் ஒன்றாமே. 3046

मूलनुरै चॅय्द मूवायिरम् तमिऴ्
मूलनुरै चॅय्द मुन्नूरु मन्तिरम्
मूलनुरै चॅय्द मून्ऱपदुपदेशम्
मूलनुरै चॅय्द मून्ऱुम् ऑन्ऱामे । मंत्र-संख्या, 3046

मूल से रचित तमिलपद तीन सहस्र
मूल से द्रष्ट पुनीत मंत्र त्रिशती
मूल से व्याख्यायित उपदेश त्रिशत्
मूल से प्रदत्त समग्र, तीनों एक हैं । 3046

ॐ ஓ ॐ



திருநாகேசுவரம்

तिरुनागेश्वरम् मंदिर

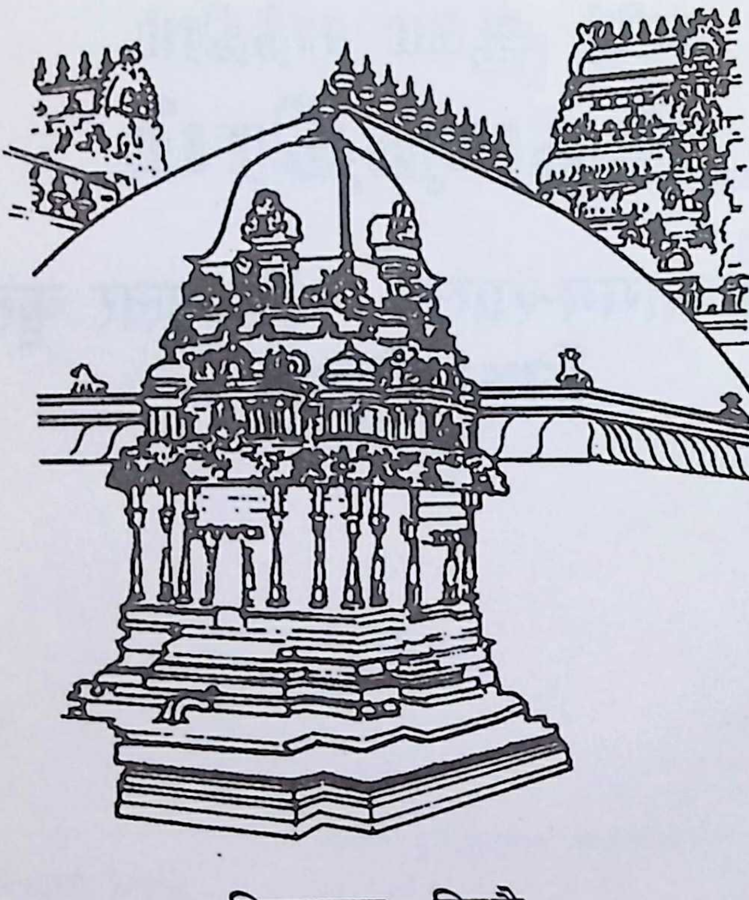
Thirunageswaram Temple

तृतीय खण्ड
3

தமிழ் ஆகம சாத்திரம்
திருமந்திரம்

तमिल आगम-शास्त्र — तिरुमूलर कृत
तिरुमंतिरम्

तिरुमंतिरम् द्वारा वर्णित विविध विषयों पर परिचयमूलक टिप्पणियाँ, विविध मंत्रों, यंत्रों (चक्रों) का परिचय एंव रूपाकार, अनुक्रमणिका, सदंर्भ-ग्रंथ सूची आदि



चिदम्बरम् - तिल्लै

प्रस्तुत ग्रंथ में 800 से अधिक मंत्रों का भावानुवाद किया गया है। अनुवाद की प्रक्रिया में यथासम्भव अर्थ को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है परन्तु मंत्र-शैली होने के कारण अनेक संदर्भ अनुवाद में स्वयमेव स्पष्ट हो पाना सम्भव नहीं; अतः कुछ पदों के विषय में संकेत रूप में टिप्पणी देकर उनका मूल, विशिष्ट अर्थ स्पष्ट करने का प्रयास इस परिशिष्ट में है–

'शिव' – अष्टमूर्ति

एक : परतत्त्व, शिव ।

दो : शिव और शक्ति ।

तीन : त्रिगुण – सत्व, रजस्, तमस *अथवा* ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र *अथवा* इच्छा, ज्ञान, क्रिया।

चार : चार वेद – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद *अथवा* ईश्वर-प्राप्ति के चार मार्ग – चर्या, क्रिया, योग, ज्ञान।

पांच : पंचभूत – पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, *अथवा* पांच कर्मेन्द्रिय – हाथ, पाँव, वाक्, गुदा, और उपस्थ, *अथवा* पांच ज्ञानेन्द्रिय – आँख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा।

छह : षडंग (वेदों के) – शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छंद, व्याकरण, ज्योतिष; *अथवा* षड्चक्र – मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्धि, आज्ञा।

सात : सप्तलोक – भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक, सत्यलोक।

आठ : शिव का अष्टमूर्ति रूप – पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र, ऋत्विक्।

(क्रमांक–1, मंत्र संख्या–1)

शिवगुरु, ज्ञानगुरु

शिव अपने अगुण में निर्विकारी, निर्गुण, सच्चिदानंद स्वरूप हैं। शिव ही सत्य, ज्ञान और अनन्तरूप हैं, वे ही सबका मूल हैं। परमतत्त्व शिव गुरुरूप में जीव के आत्म-चैतन्य को अखण्ड प्रकाश-रूप स्थिति में पहुँचा देता है। द्रष्टा होने पर ब्रह्मभाव अथवा शिवभाव का उदय होता है। तमिल शैवभक्ति साहित्य के अनेक संदर्भ शिव के गुरु रूप का प्रमाण हैं। माणिक्कवाचकर को तिरुप्पेरुन्तुरै नामक स्थल पर 'गुरु' रूप में शिव ने ज्ञान दिया, फलतः वे सांसारिक वैभव त्याग कर भक्ति-मार्ग पर अग्रसर हुए। साधना की लौकिक प्रणाली में मानव गुरु, सिद्ध गुरु अथवा दिव्य गुरु का महत्त्व विविध रूपों में वर्णित है। तिरुमूलर शिव को ज्ञानगुरु मानते हुए उन्हीं को 'मार्ग' और 'लक्ष्य' स्वीकार करते हैं।

(क्रमांक–6, मंत्र संख्या–54)

अठाईस शैव-तन्त्र

शिव ने अपने पांच मुखों से 28 तंत्रों का आविर्भाव किया। ईश्वरीय उद्‌गम के इन ग्रंथों के विषय में अभिनव गुप्त-रचित 'तन्त्रालोक' की टीका करते हुए जयरथ ने इन तंत्रों का उल्लेख किया है। मध्वाचार्य कृत 'सर्वदर्शन संग्रह' के भाष्य के आधार पर इनके नाम इस प्रकार हैं–

सद्योजात मुख से : कामिक, योगज, चिन्त्य, कारण, अजित;
वामदेव मुख से : दीप्त, सूक्ष्म, सहस्र, अंशुमान, सुप्रभेद;
अघोर मुख से : विजय, निःश्वास, स्वायम्भुव, अनल, वीर;
तत्पुरुष मुख से : रौरव, मुकुट, विमल, चन्द्रज्ञान, बिम्ब;
ईशान मुख से : प्रोद्‌गीत, ललित, सिद्ध, संतान, सर्वोत्तर, परमेश्वर, किरण, वातुल।

(क्रमांक–7, मंत्र संख्या–62)

तिरुवावडुतुरै

आठवीं शती के तमिल के शिवभक्त कवि सुन्दरमूर्ति नायनार ने तिरुमूलर का स्मरण इन शब्दों में किया है–"मैं प्रभु मूलन के दास का दास हूँ।" दसवीं शती के महान् चिंतक नम्बि आण्डार नम्बि ने इनके विषय में लिखा है–"सात्तनूर नामक ग्राम में, जहाँ सज्जन लोगों का निवास है,

गायों के चरवाहे की मृत देह में प्रविष्ट होकर पुनर्जीवित योगी के चरणों को अपने शीश पर श्रद्धा सहित रखता हूँ। उस योगी ने चतुर्विध पुरुषार्थों के बोधक गुणों से युक्त मधुर तमिऴ् भाषा में, द्वितीया के चन्द्र को शीश पर धारण करनेवाले शिव की वेद-सम्मत स्तुति की।" इसकी विस्तृत कथा पेरियपुराण में उपलब्ध है। तिरुमूलर ने आधुनिक तंजावूर जिला में स्थित तिरुवावडुतुरै स्थल पर 'शिव' की आराधना करते हुए तिरुमंतिरम् नामक ग्रंथ की रचना की। विख्यात तिरुवावडुतुरै आधीनम् मठ इसी स्थल पर विद्यमान है।

(क्रमांक–13, मंत्र संख्या–79)

चिदाकाश, चिदम्बरम्

चेतना के विस्तार अर्थात् 'चिदाकाश' का नाम 'शिव' है; चिदम्बरम् (चित्तरूपी अम्बर) में वही व्याप्त है; शिव एक हैं, परात्पर हैं; अनुग्रह-निग्रह नामक उनकी दो शक्तियां हैं, सत्व, रजस् और तमस् आदि तीन गुणों में वे ही हैं। यह विश्व 'शक्ति' और 'शिव' की लीलाभूमि है; 'शक्ति' ही शिव है, 'शिव' ही शक्ति है; यहां शिव-शक्ति से इतर कुछ नहीं; शिव साक्षी है और 'शक्ति' चराचर प्रपंचरूप में क्रियाशील होकर प्रकाशमान है। सृष्टि, स्थिति, संहार के लिए शिव स्वयं को ब्रह्मा के रूप में प्रकट करते हैं; विष्णु और महेश बनते हैं; तिरोधान और अनुग्रह द्वारा क्रमशः शिव अदृश्य रहते हैं और भक्तों पर अपनी अनन्तकृपा की वर्षा करते हैं।

शैव-सिद्धान्त में आत्मा 'पशु' है। यहाँ आत्मा 'व्यापक, प्रकाश रूप और अनेक' हैं। आत्मा निसर्गतः अनन्त, विभु और चित् है किन्तु आणव आदि मलों अथवा पाशों के सम्पर्क के कारण आत्मा पाशबद्ध होकर 'सान्त, परिच्छिन्न और अणु' हो जाती है। 'पशु' तीन मलों से आबद्ध है—आणवमल, कर्ममल और मायामल। तिरुमूलर ने पति, पशु और पाश तीनों को पुरातन कहा है। अनादि संसार का निर्माण प्रकृति तथा आत्माओं से मिलकर हुआ है। ये सब नित्य हैं। ईश्वर (पति) सदा प्रकृति के बन्धन से आत्माओं को मुक्त करने में तत्पर रहता है। संसार के निरंतर गतिमान प्रवाह का नियंत्रण कर्मविधान के द्वारा होता है, यह कर्म मानव को उच्चतर जीवन के प्रति आकृष्ट करने के लिए चलता रहता है। अरुळ् अथवा शिव के अनुग्रह अथवा कृपा से ही मलों, पाशों से मुक्ति सम्भव है।

(क्रमांक–23, मंत्र संख्या–111)

भालनेत्र नंदी

भालनेत्र नंदी – शिव का तृतीय नेत्र-भालनेत्र-कृपावृष्टि करता है एवं कर्म और मल का विनाश करता है। त्रिपुरदहन और मन्मथ के भस्मीभूत होने की कथाएँ सर्वज्ञात हैं। शिव अनुग्रह का माध्यम 'शक्ति' है और शिव की शक्तियों का क्रियारूप भी वही है। प्रतीकरूप में शिव का तृतीय नेत्र 'शक्ति' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। 'इस आत्मानुप्राणित स्थूलतत्त्वमय जगत् में ही मानव मोक्ष-प्राप्ति का प्रयास करता है और उसका यह प्रयास कर्म के सिद्धान्त से नियमित होता है।' इस भौतिक सृष्टि के मूल में एक अद्‌भुत, महान्, नैतिक और आध्यात्मिक लक्ष्य है। आत्मा कर्मबन्धन से युक्त होकर जन्म धारण करती है। परमशिव के अनुग्रह के द्वारा, उस अदृश्य शिवगुरु की अनुकम्पा और ज्योति के माध्यम से उसके अंतःज्ञान चक्षु खुल जाते हैं और ज्ञान के द्वारा सकलमल कट जाते हैं। मूल सत्य शिवअनुग्रह और शिवज्योति का अंतःकरण में व्याप्त होना है।

(क्रमांक–25, मंत्र संख्या–121)

शैव सिद्धान्त, अद्वैतवेदान्त और प्रत्यभिज्ञा

शैव सिद्धान्त, अद्वैतवेदान्त और प्रत्यभिज्ञा दर्शन में यत्किंचित् भेद है। अद्वैतवेदान्त के अनुसार ब्रह्म शुद्ध ज्ञानस्वरूप, निष्क्रिय एवं साक्षी मात्र है; कश्मीर-शैवदर्शन सृष्टि-प्रक्रिया में शिव का सक्रिय होना स्वीकार करता है। 'प्रत्यभिज्ञा' में शिव स्वयं को ही जगत् के रूप में आभासित करते हैं। शैव सिद्धान्त में आत्मा (पशु) के कल्याण के लिए शिव जगत् की सृष्टि, स्थिति और संहार करते हैं। अद्वैतवेदान्त ब्रह्म के विश्वोत्तीर्ण होने पर अधिक बल देता है पर विश्वमय पर उतना आग्रह नहीं करता; कश्मीर शैवदर्शन और शैव सिद्धान्त के अंतर्गत शिव के दोनों पक्षों–विश्वोत्तीर्ण और विश्वमय–को प्रायः समान महत्त्व दिया गया है। शैव सिद्धान्त सृष्टि के निमित्त और उपादान कारण का भेद करता है; शिव को निमित्त और माया को उपादान कारण मानता है। इस प्रकार शैव सिद्धान्त में अपेक्षाकृत यथार्थवादी धारणा को आधार बनाया गया है।

शैव सिद्धान्त के अनुसार छत्तीस तत्त्व इस प्रकार हैं–शिव, शक्ति, सदाशिव, महेश्वर, शुद्ध विद्या, कार्यमाया, काल, नियति, कला, विद्या, राग, पुरुष, प्रकृति, मन, अहंकार, बुद्धि, पंच ज्ञानेन्द्रिय, पंच कर्मेन्द्रिय, पंच तन्मात्राएं और पंचमहाभूत।

(क्रमांक–29, मंत्र संख्या–125)

चित्, चित्सभा, चिदम्बरम्

तिरुमूलर के अनुसार चित् (आध्यात्मिक) और अचित् (लौकिक) के अंतर का ज्ञान प्राप्त कर जब साधक-सिद्ध अंतःज्योति से प्रकाशमान हो जाता है तो मिथ्या से परे होकर परमतत्त्व को अनुभव करता हुआ शिवयोग की स्थिति तक पहुँच जाता है। 'चित्' चेतना, ज्ञान, आत्मा, ब्रह्म का पर्याय है, योग और तप के माध्यम से जब चित्-अंतःकरण प्रकाशित हो जाता है तब 'मुक्ति' स्वतःसिद्ध हो जाती है। 'चित्सभा' अथवा 'चिदम्बरम्' (चिदम्बरम् के मंदिर के लिए प्रयुक्त प्राचीन नाम 'तिल्लै') अनन्त ब्रह्माण्ड के लिए है, प्रायः इसे 'आकाश' के अर्थ में भी प्रयुक्त किया गया है। 'नाद' और 'नादान्त' से परे अमरत्व की स्थिति की कल्पना शिवभक्तों ने पुनः पुनः की है। रामलिंग स्वामी ने 'वाचक-वाच्य से परे परमौन' का नृत्य 'नादान्त' में ही अनुभव किया—'नादान्त शिखर में नृत्यरत देव', 'उज्ज्वल ज्योति हैं', उन्हें साधक भक्त 'तत्त्वातीत' आनन्दमय दशा में अनुभूत करता है। 'ध्यान' की चरमावस्था का नाम समाधि है। यह चित्त की स्थिरता की सर्वोत्कृष्ट स्थिति है। इस स्थिति को तिरुमूलर ने 'ज्ञाननिद्रा' में लीन रहकर 'सुषुप्ति में जाग्रत् का आनन्द लेना' कहा है। इसी स्थिति में कनकसभा-चिदम्बरम् में नृत्य में दर्शन का वर्णन मंत्र संख्या 131 में हुआ है।

(क्रमांक–30, मंत्र संख्या–129)

चिति, महाचिति

'चिति' का 'महाचिति' में विलय होकर शून्यमण्डल में ज्योति का ज्योति से मिलन ज्ञान की ऐसी अद्भुत स्थिति है जिसको हिन्दी संत कवियों ने 'गूंगे केरी सरकरा, बैठे मुसकाई' (*कबीर*) कहकर अवर्णनीय माना है। कबीर ने अन्यत्र कहा है—*'सहज समाधें सुख में रहिबो, कोटि कलप बिसराम'*। यह 'घट की ज्योति' से जगत् को प्रकाशित करने की स्थिति है। संत परमदास इसे *'सुन्न महल में अंमृत बरसै, प्रेम अनंद होई साध नहाय'* कहते हैं।

(क्रमांक–32, मंत्र संख्या–135)

जगत् की नश्वरता

संसार की नश्वरता का उल्लेख तिरुमंतिरम् में मंत्र संख्या 143 से 167

तक तथा अन्यत्र भी हुआ है। ज्ञान अथवा भक्ति-मार्ग पर उन्मुख करने के सद्-उद्देश्य से संतों, साधकों, ज्ञानियों ने मानव को प्रायः शरीर की नश्वरता के संकेत दिए हैं। तिरुवल्लुवर ने कहा–'काल आरे के समान जीवन को शनैः शनैः काट रहा है अतः पूर्व इसके कि अंतिम हिचकी आए, वाणी बन्द हो जाए मनुष्य को सत्कर्म में प्रवृत्त होना चाहिए' (*तिरुक्कुरल्*-334)। गोरखनाथ काल की ललकार को इन शब्दों में अभिव्यक्त करते हैं–खड़े, बैठे, जागते, सोते चाहे जिस दशा में रहो उसी दशा में मैं तुम्हें मार सकता हूं .... मैंने तीनों लोकों में योनिरूप जाल फैला रखा है, उससे बचकर कहाँ जाओगे ? (गोरखबानी-99)। कबीर ने शरीर की असारता का पुनः पुनः उल्लेख किया है–'पानी केरा बुदबुदा अस मानुस की जात'; 'जिन जिन देह धरी त्रिभुवन मैं थिर न रहा है कोई'; 'काल अचानक मारिहै ज्यों तीतर कौं बाज'। इसी भाँति समग्र भारतीय भाषाओं में नश्वरता को सत्यकर्म में प्रवृत्त होने के लिए प्रेरित करने का साधन बनाया गया है। 'जीवित शरीर का आलिंगन चुम्बन करते हैं पर मृत शरीर को अग्नि में भस्मीभूत कर देते हैं'; 'गर्व सहित विशाल भवनों का निर्माण करना, कोटि-कोटि के उपहार बाँटना', 'सुन्दरियों के साथ शरीर के भोग का आनन्द लेना' आदि का वर्णन करते हुए तिरुमूलर समाज की स्थिति का भी अवलोकन करते हैं–मृत व्यक्ति को 'शव' कहकर उसका नाम भी न लेना, दाह-संस्कार करने के उपरान्त जलस्नान करके उसे विस्मृत कर देना आदि इसके कतिपय उदाहरण हैं। उनका लक्ष्य है यह संदेश–

नश्वर जग का वैभव नश्वर
करो इससे आसक्ति निःशेष
जब आए काल रहो प्रस्तुत
निःसंग भाव से लम्बी कूद के लिए। (172)

इस दृष्टिकोण का निर्वाह तिरुमूलर ने अन्यत्र भी किया है। दान तथा अन्य सत्कर्म करने की प्रेरणा देते हुए मंत्र-संख्या 255 में 'काल किसका मीत, उसे क्या चिंता ?' कहते हुए नश्वरता का स्मरण करवाया है।

(क्रमांक–35, मंत्र संख्या–145)

शैव-सिद्धान्त में विविध तत्त्व

पांच शिव तत्त्व (शुद्ध तत्त्व)

शिव (नाद) (शिवज्ञान); शक्ति (बिन्दु); सदाख्य (नाद एवम् बिन्दु); ईश्वर

(महेश्वर); शुद्ध विद्या (रुद्र) ।

सात विद्या तत्त्व (शुद्धाशुद्ध तत्त्व)

काल; नियति; कला; विद्या; राग; पुरुष; माया ।

चौबीस प्रकृति तत्त्व (अशुद्ध तत्त्व)

पंचभूत—पृथ्वी; जल; अग्नि; वायु; आकाश;
पांच ज्ञानेन्द्रिय—श्रोत्र; त्वक्; चक्षु; जिह्वा; नासिका;
पांच तन्मात्राएँ—शब्द; स्पर्श; रूप; रस; गंध;
पांच कर्मेन्द्रिय—मुख; पाद; पाणि; पायु; उपस्थ;
चार अंतःकरण—मन; बुद्धि; अहंकार; चित्त;

(पांच शिव तत्त्व; सात विद्या तत्त्व, चौबीस प्रकृति तत्त्व—ये 36 तत्त्व आत्मतत्त्व भी कहे जाते हैं। ये अंतःतत्त्व हैं।)

60 *बाह्य तत्त्व, गौण तत्त्व*

दस नाड़ियां

इडा; पिंगला; सुषुम्ना; पूषा; हस्तिजिह्वा; गांधारी; अलम्बुषा; शंखिनी; वारुणी; कुहू;

दस वायु

प्राण; अपान; उदान; व्यान; समान; नाग; कूर्म; गिरिहर; देवदत्त; धनञ्जय;

तीन कामनाएँ

संपदा; संतति; संसार;

पंच वाक्

भाषण; स्मरण; गायन; रुदन; आह्लाद;

तीन गुण

सत्व; रज; तम;

चार ध्वनियां

सूक्ष्म; पश्यंती; मध्यमा; वैखरी;

शरीरगत पंचभूत कार्य (पंचभूतात्मक देह के पच्चीस गुण)

पृथ्वी : त्वक्, अस्थि, लोम, माँस, नाड़ी;
जल : रक्त, वसा, मस्तिष्क, वीर्य, अस्थिमज्जा;

अग्नि : भोजन, निद्रा, भय, मैथुन, तन्द्रा;
वायु : धावन, चलन, खड़े होना, बैठना, लेटना;
आकाश : क्रोध, कृपणता, तृष्णा, हठ, द्वेष।

(क्रमांक–40, मंत्र संख्या–154)

पंचमहापातक

जीवहत्या, चोरी, मद्यपान, काम वासना और अनृत वचन—इनका कवि तिरुमूलर द्वारा उल्लेख तद्युगीन सामाजिक आवश्यकता का भी संकेतक है।

(क्रमांक–45, मंत्र संख्या–200)

परस्त्रीगमन; आचरण की पवित्रता

परस्त्रीगमन को 'निषिद्ध प्रेम' तथा काम के प्रबल प्रभाव का प्रमाण माना गया है। आचरण की पवित्रता स्वस्थ सामाजिक-जीवन की मूल आवश्यकता है अतः तिरुवल्लुवर ने 'पिरनिल् विऴैयामै'—परस्त्री-विरति के अंतर्गत परनारी भोग करनेवालों को अधर्म पथगामियों में सर्वाधिक मूढ़ माना है; सामाजिक निंदा, शत्रुता और पापमय जीवन इसके प्रत्यक्ष परिणाम हैं। तिरुमूलर ने स्वपत्नी को 'सुमधुर पक्व फल' 'परिपक्व कटहल' और परनारी को गांठदार 'इमली' तथा कंटीली 'खजूर' कहकर समाज में परस्त्रीगमन के अनाचार को रोकने का प्रयास किया है। प्रेम की एकनिष्ठता और आचरण की पवित्रता पर बल देने की यह परम्परा संत कवियों ने भरपूर निभाई है। कबीर की उक्तियां 'परनारी परतखि छुरी', 'परनारी कौ राचनौं जस लहसुन की खांनि', 'परनारी कै रांचणै औगुण है गुण नांहि' इत्यादि उल्लेख्य हैं।

(क्रमांक–46, मंत्र संख्या–202)

दक्षयज्ञ और 'शिव' की मान्यता

वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड (66/9) में दक्ष यज्ञ की कथा का उल्लेख है। शैव धर्म के बढ़ते प्रभाव-क्षेत्र के कारण प्राचीन कर्मकाण्ड के समर्थकों के साथ इसके संघर्ष के संकेत मिलते हैं। 'रुद्र' को देवताओं द्वारा 'यज्ञ-भाग' बांटते समय नकार दिया गया। रामायण-महाभारत काल

से पर्याप्त समय पूर्व शैव धर्म की स्थिति दृढ़ हो गई थी और शिव सर्वमान्य हो गए थे। 'रामायण' में शिव के यज्ञभाग मांगने पर भी देवताओं ने उन्हें यज्ञभाग नहीं दिया। महाभारत में किंचित् अंतर से कथा आती है कि देवताओं ने भगवान् शिव को पूरी तरह से पहचाना नहीं। अपमान से कुपित शिव जब धनुष उठाकर यज्ञस्थल की ओर बढ़े तो सर्वत्र प्रलयंकारी दृश्य को देख यज्ञ 'हरिण' के रूप में भाग निकला, अग्निदेव भी उनके साथ ही चले गए। क्रोध से युक्त शिव ने 'सविता की भुजाएँ तोड़ दीं, भग की आँखें निकाल लीं, और अपने धनुष से पूषा के दाँत तोड़ दिए।' देवताओं के गर्व को विदीर्ण कर उन्होंने अपनी शक्ति और शौर्य का परिचय दिया। शिव-पराक्रम को पहचान कर उन्हें यज्ञ का उचित भाग दिया गया। विविध अंतर्कथाओं से ज्ञात होता है कि ब्राह्मण कर्मकाण्ड के देवता के रूप में शिव को मान्यता नहीं थी। दक्ष-यज्ञ की कथा से प्राचीन और और नवीन धर्मों के संघर्ष की एक झलक मिलती है। रामायण-महाभारत काल तक शिव और उनकी उपासना स्वीकृत हो गई थी। 'अपमानित हुआ दंभी दक्ष, जब हुआ ध्वस्त उसका निकृष्ट यज्ञ' (361)। मंत्र संख्या 340 में भी इसी संदर्भ का संकेत है।

(क्रमांक–82, मंत्र संख्या–361)

अपरा महामाया और परा महामाया

'महामाया' के दो रूप हैं। अपरा महामाया और परा महामाया। यहां कवि का संकेत अपरा महामाया से है। अनंत कृपालु शिव की कृपा का ही स्वरूप है सृष्टि। महामाया ही जीव में व्याप्त है, वही शुद्ध चैतन्य है जिसने इन समग्र ब्रह्माण्डों का सृजन किया है। ब्रह्मा, विष्णु का सर्जनहार भी वही है जो सप्तलोकों को 'स्व' में संयोजन करनेवाला शुद्ध चेतन रूप है। (मंत्र संख्या-390)। महामाया शुद्ध, असीम और परिपूर्ण प्रकाश-रूप शिव की शक्ति है। वह कारणकार्यसंयुक्ता चिति से परे महाचिति है। मूलर उन्हें पूर्णा (पूरणि) कहते हैं। प्रत्यभिज्ञा दर्शन में यह महामाया शुद्धविद्या (अपरा) कही गई है।

(क्रमांक–91, मंत्र संख्या–402)

क्रिया-शक्ति और ज्ञान (शक्ति और शिव)

'क्रिया' विमर्शरूप है अतः 'शक्ति' है; ज्ञान प्रकाशरूप है अतः 'शिव' है।

'ज्ञान और क्रिया-रूप शिव और शक्ति और शक्ति में परस्पर अनुरागवश परस्पर का स्वभाव परस्पर में उपरक्त होता है।' सिद्धों ने स्पष्ट किया है कि ज्ञान और क्रिया की व्याप्ति एक समान होने पर उसका नाम होता है—'इच्छा'। यह कहा जाता है कि ज्ञान क्रिया और इच्छा का मूल है एवं क्रिया ज्ञान और इच्छा का मूल है अतः सिद्धों ने इच्छा को ही एक साथ ज्ञानक्रिया के रूप में स्वीकार किया। अंतर्मुखी गति के द्वारा निवृत्ति के रूप में व्याप्त होने के कारण ज्ञान 'मूल' है। क्रिया की गति बहिर्मुखी है अतः उसे बीज का अंकुर कहते हैं। इच्छा, ज्ञान और क्रिया क्रमशः प्रमाता, प्रमेय और प्रमाण माने जाते हैं।

शिव का स्वरूप सच्चिदानंद है; उनकी शक्ति सच्चिदानंद रूप है। शिव नित्य निष्क्रिय रहकर भी सर्वदा पंचकृत्यों का सम्पादन करते हैं; ऐसा करते हुए भी वे निष्क्रिय, निःस्पन्द, स्वरूपस्थित हैं। 'पशु' को पशुरूप देना तथा उसी भाँति उसे स्वस्वरूप में लीन कर लेना उनकी नित्यलीला है। समग्र रूपों में लीला करते रहने पर भी 'शिव' लीलातीत हैं। तिरुमूलर शरीर में जीवन के स्पंदन का लक्ष्य शिव द्वारा जीव-उद्धार करने की प्रक्रिया मानते हैं; वे जीव को शिवमय बनाने का निरंतर उपक्रम करते रहते हैं।

इससे पूर्व के मंत्रों में तिरुमूलर ने सृष्टि-प्रक्रिया का वर्णन करते हुए परा से नाद की उत्पत्ति, नाद से बिन्दु की, बिन्दु से अमृतमयी त्रिपुरा शक्ति की उत्पत्ति मानी है। वही मनोन्मनी, महामाया कृपालु सदाशिवरूपा है, वही पंचकृत्य सम्पादन करती है।

(क्रमांक–109, मंत्र संख्या–492)

रेचक, पूरक, कुम्भक प्राणायाम

यमनियमासन प्राणायामप्रत्यहारधारणाध्यान समाधयोऽष्टवङ्गानि।
(पातंजलयोगदर्शन 2/9)

प्राणी की श्वास-प्रश्वास क्रिया जीवन अथवा प्राण कहलाती है। स्वभावतः प्रवहणशील इस क्रिया का अभाव मृत्यु है। प्राणायाम का अभ्यास करनेवाला श्वास-प्रश्वास की स्वाभाविक गति को नियंत्रित करता है। यह प्राणायाम तीन प्रकार का है—रेचक, पूरक एवं कुम्भक :

रेचक प्राणायाम : इस प्राणायाम में अत्यंत मंदगति से प्राणवायु को हृदय से बाहर निकालकर श्वास-प्रश्वास की गति को निरुद्ध किया जाता है। स्कन्दपुराण के अनुसार—नासिका के एक संपुट को अंगुलि से दबाएँ,

दूसरे संपुट से पेट की वायु को बाहर निकालें; प्राणवायु को बाहर निकालना और उसे रोकना रेचन है।

पूरक प्राणायाम : पूरक में नासिका-पुट से श्वास को भीतर की ओर खींचकर उसी नासिका पुट से धीरे-धीरे सारी नाड़ियों में फैलाया जाता है।

कुम्भक प्राणायाम : इस प्राणायाम में शरीर को निश्चल किया जाता है; श्वास-प्रश्वास-रहित प्राण की स्थिति को कुम्भक कहते हैं। प्राण अर्थात् वायु जहां है उसे वहीं रोक लेना 'कुम्भक' है। इसके अनेक भेद हैं जिनका विस्तृत विवेचन पातंजल योगसूत्र तथा बाद की टीकाओं में विस्तार से उपलब्ध है।

योग के आठ अंग—यम, नियम, आसन आदि

यम : मुख्य लक्ष्य साधक को हिंसा आदि निषिद्ध कर्मों से रोकना; यम के पांच भेद—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह। तोलकाप्पियम् के टीकाकार नच्चिनारक्किनियर ने भी इनका उल्लेख किया है।

नियम : शौच (बाह्य और आभ्यंतर), संतोष, तपस्, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान।

आसन : यम और नियम का पालन निरंतर सम्भव है। प्राणायाम आदि का अभ्यास करने के लिए 'आसन' का अभ्यास अत्यावश्यक है। शिव संहिता, हठयोग संहिता, हठयोग प्रदीपिका तथा योग-उपनिषदों में आसन का विस्तृत विवेचन उपलब्ध है। तिरुमूलर ने जहाँ-जहाँ आसनों का विवेचन तथा वर्णन किया है वहां तद्विषयक स्पष्टीकरण दिया गया है।

प्राणायाम : रेचक, पूरक, कुम्भक का परिचय देखें।

प्रत्याहार : आसन शरीर-प्रधान है, प्राणायाम वायु-प्रधान है, प्रत्याहार इंद्रिय-प्रधान है। इन्द्रियों की बाह्यवृत्ति को सब ओर से समेटकर मन में विलीन करने का अभ्यास 'प्रत्याहार' है। कठोपनिषद् का 'यच्छेद्वाङ्मनसी प्रज्ञा' (1/3/13) वाक् आदि इन्द्रियों को बाह्य विषयों से हटाकर मन में विलीन करना, मन में विषयों की स्फुरणा न रहना प्रत्याहार का ही प्रतिपादन है। प्रत्याहार की सिद्धि होने पर इन्द्रियों की स्वतंत्रता का सर्वथा अभाव हो जाता है।

धारणा : 'देशबन्धश्चित्तस्य धारणा' (*योगदर्शन 3/1*) के अनुसार नाभिचक्र, हृदयकमल अथवा आकाश, सूर्य, चन्द्र, देवता, विग्रह आदि किसी पर भी चित्त की वृत्ति को लगाना 'धारणा' है। धारणा के अनेकानेक भेदों

का वर्णन योग विषयक ग्रंथों में उपलब्ध है। साधक अभ्यास के द्वारा धारणा के काल को क्रमशः बढ़ाता है और चित्त को 'ध्यान' के योग्य बनाता है।

ध्यान : तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम् (*योगदर्शन 3/2*) जिस ध्येय वस्तु में चित्त को लगाया जाए, उसी में चित्त का एकाग्र हो जाना अर्थात् केवल ध्येय मात्र की एक ही तरह की वृत्ति का प्रवाह चलना, उसके बीच दूसरी किसी वृत्ति का न उठना ध्यान' है। 'भास्वती' में चित्त के इस प्रवाह को तेल की अखण्डधारा के समान व्याख्यायित किया गया है। ध्यान सगुण हो सकता है यथा नीलकमल की पंखुड़ी के समान श्यामवर्ण, दीप्तिमान् अविनाशी विष्णु का ध्यान अथवा निर्मल, ज्ञानदाता, कल्याणकारी देवाधिदेव महेश्वर का ध्यान 'अ'-महादेव; 'उ'-हरि 'म'-ब्रह्म के अर्थ में ऊँकार का जाप करते हुए तीनों में ऐक्यबुद्धि करना आदि सगुण ध्यान है। निर्गुण ध्यान ज्योतिर्मय, शुद्ध, अव्यक्त, निर्मल, आदि-मध्य-अंत रहित ज्ञान स्वरूप आदि की निराकार भावना से किया जाता है। योगसिद्धान्तचन्द्रिका में नारायण तीर्थ ने इसका विशद विवेचन किया है।

समाधि : ध्यान की चरमावस्था का नाम समाधि है। समाधि चित्त की स्थिरता की सर्वोच्च अवस्था है। समाधि-विशिष्ट चित्त ध्येय विषय में इस भाँति लीन हो जाता है कि उसे 'यह जान रहा हूँ' का भी ज्ञान नहीं रहता। जल में घुला हुआ नमक जल के आकार का हो जाने पर उससे पृथक् प्रतीत नहीं होता; 'ध्यान' जब ध्येय के आकार से ही भासित होता है तब वह 'समाधि' कहा जाता है। 'ध्यान' में ध्याता, ध्यान और ध्येय के एक साथ होने पर भी साधक उनकी पृथक् सत्ता से अवगत रहता है। ध्यान का उच्च सोपान आने पर समाधि में ध्याता की पूर्णशक्ति ध्येय पर केंद्रित होकर ध्येय-मात्र के रूप में अनुभव होती है।

'सिद्धसिद्धान्त पद्धति' के अनुसार समाधि में सभी तत्वों की सम अवस्था रहती है, निरूद्यमत्व और अनायास की स्थिति रहती है। इससे मोक्ष की प्राप्ति होती है जिसमें शुभ-अशुभ कार्यों का त्याग हो जाता है, विश्वतोमुख अनंत परमज्योति का साक्षात्कार होता है। जब प्राण सम्यक् प्रकार से क्षीण हो जाते हैं तथा मानस भी लय को प्राप्त हो जाता है, समरसत्व की प्राप्ति हो जाती है तब कहा जाता है कि समाधि की अवस्था प्राप्त हो गयी। 'हठयोग प्रदीपिका' में इसके अनेक नाम बताए गए हैं—राजयोग, समाधि, अमनस्क, मनोन्मनी, अमरत्व, लय, तत्त्व, शून्याशून्य, परमपद, अद्वैत, निरालम्ब, निरंजन, जीव मुक्ति, सहजा, तुर्या आदि। इन सब की विस्तृत व्याख्याएँ मिलती हैं।

तिरुमूलर का घोषित लक्ष्य है कि यम नियम का यह महाउद्यम भव्य समाधि में परिणत हो जाए। कुंडलिनी पराशक्ति उर्ध्वगमन करके सहस्त्रार में पहुँचे (550)। पराशक्ति इष्टमूर्ति मूलाधार में सोई पड़ी है उसे जगाकर धीरे-धीरे सहस्त्रार में ले जाने पर अद्भुत चमत्कार होता है एवं पारस का स्पर्श स्वर्ण-रूप प्रदान करता है; उस मार्ग का संधान करने का संदेश तिरुमूलर दे रहे हैं (590)। नियम की व्याख्या मूलर ने लौकिक रूप में की है— तप, जप, मनःप्रसाद, शिव-व्रत, दान, आस्था, यज्ञ, पूजन, सिद्धान्त, ज्ञान-प्राप्ति, त्याग, शिवपूजा, सद्विचार (557)। इससे पूर्व 'नियम' के अंतर्गत ही तिरुमूलर दस धर्मों का उल्लेख कर चुके हैं — पवित्रता, दया, मिताहार, धैर्य, सरल व्यवहार, सत्य, स्थैर्य, हिंसा न करना, चोरी न करना, वासना से परे रहना (557) आदि श्रेष्ठ सामाजिक जीवन के मूल सिद्धान्तों को उन्होंने 'नियम' में समाविष्ट कर मानव के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के सम्यक् नियमन का मार्ग निर्दिष्ट कर दिया है।

(क्रमांक–121, 122, 123, मंत्र संख्या–549, 551, 552)

पद्मासन

प्राणवायु की सिद्धि के लिए उपयोगी पद्मासन की विधि इस प्रकार है—बाएँ पैर को दक्षिण जंघामूल में तथा दाएँ पैर को वाम जंघामूल में ऐसे लगाएँ कि नाभि के नीचे पेडू के मध्य में दोनों एड़ियां जुड़ जाएँ। दोनों पाद-तल कमलपत्र के समान दोनों जंघाओं पर ठहर जाएँ। अब मेरुदण्ड, ग्रीवा, सिर को सीधा रखकर दक्षिण हाथ को दक्षिण एड़ी पर और वाम हाथ को वाम एड़ी पर 'ज्ञानमुद्रा' अथवा ब्रह्माञ्जलि बनाकर रखें जिससे दोनों जानु समरूप से भूमि में मिले रहें। दृष्टि को नासाग्र पर स्थिर करें, शान्त बैठ जाएँ। तिरुमूलर ने इस परम्परागत विधि को ही वर्णित किया है।

(क्रमांक–128, मंत्र संख्या–559)

भद्रासन

'हठयोग प्रदीपिका' के अनुसार वृषणों (अण्डकोश) के नीचे सीवनी (लिंगमणि से बीचों-बीच गुदा तक जाने वाली रेखा) के दोनों पार्श्व भागों में गुल्फों (टखनों) को इस प्रकार रखे कि बाएँ टखने को सीवनी के बाएँ भाग में और दाएं टखने को सीवनी के दाएँ भाग में लगाकर स्थित करें। सीवनी के पिछले भागों के निकट गए पैरों को भुजाओं से दृढ़तापूर्वक

पकड़कर निश्चल रहे। (*हठयोग प्रदीपिका-1/53,54*)

(क्रमांक–129, मंत्र संख्या–560)

कुक्कुटासन

कुक्कुट अर्थात् मुर्गा—इस आसन में पद्मासन लगाकर घुटने और जंघाओं के मध्य भाग से दोनों हाथ कोहनियों तक बाहर निकालें। इसके बाद दोनों हाथ भूमि पर टिका दें और उनके माध्यम से आकाश में स्थित रहे। (देखें *हठयोग प्रदीपिका-1/23*)

(क्रमांक–130, मंत्र संख्या–561)

सिंहासन

घुटनों के बल भूमि पर खड़े होकर, कमर मोड़कर आगे झुकें। हथेलियों को भूमि पर टिकाकर अंगुलियाँ सिंह के पंजे जैसी आकृति में फैलाकर पीठ सीधी रखें, छाती आगे फैलाएँ। एड़ियाँ नितम्बों के साथ मिला दें। अब मुख और नेत्र पूरे खोलकर सामने देखते हुए जिह्वा को यथाशक्ति बाहर निकालें। (देखें *रुद्रयामल-उत्तर तंत्र 24/15*)

इन आसनों के अतिरिक्त स्वस्तिकासन, वीरासन, गोमुख आसन, सुखासन आदि का उल्लेख तिरुमूलर ने किया है।

(क्रमांक–131, मंत्र संख्या–562)

कुंडलिनी

'योगसिद्धान्त चन्द्रिका' में नारायण तीर्थ के अनुसार चतुर्दलात्मक मूलाधार-चक्र चतुष्कोण तथा पृथ्वी तत्त्व प्रधान है। इस चक्र के मध्य भाग में कुण्डलिनी का वास है। यह निर्मल है, तेजस् प्रभास्वरूप है; यह स्वयंभू लिंग के ऊपरी खण्ड में सर्पाकार से आवेष्टित शिवलिंग के द्वार को अपने मुख से ढके हुए है। प्रत्येक जीव में प्रसुप्त यह परमेश्वर की चिद्रूपा परमाशक्ति है। अपने जागरणकाल में यह सुप्त अवस्था के कुण्डल रूप को त्यागकर सुषम्ना नाड़ी की सहायता से ऊपर को उठती है, षट् चक्र का भेदन करती है और सहस्रार-कमल में स्थित चिद्रूप सदाशिव से जा मिलती है। 'हठयोग प्रदीपिका' के अनुसार 'जब गुरु की कृपा से सुप्त कुण्डली जागती है तब सम्पूर्ण पद्म अर्थात् हृदय के षट्चक्र खिल जाते हैं और ब्रह्मग्रंथि, विष्णुग्रंथि और रुद्रग्रंथि रूप तीनों ग्रंथियां भी खुल जाती हैं। (3/2)

'सिद्धसिद्धान्त पद्धति' के अनुसार कुंडलिनी योग से लययोग, भूतजय, भूतलय, भूतशुद्धि, षट्चक्र भेद आदि सम्बद्ध हैं। यह साधन आध्यात्मिक साधन है। इस कुंडलिनी को षोडशी तथा उसकी साधना को षोडशी साधना कहा गया है। पिंड-ब्रह्माण्ड एकत्व का सिद्धान्त इस साधन का ही सिद्धान्त पक्ष है। तिरुमूलर ने कुंडलिनी का परिचय 'प्राणायाम' के अंतर्गत दिया है। सद्गुरुकृपा से इडा और पिंगला रूपी प्राण-अश्वों को साधकर, रेचक, पूरक और कुंभक के सतत अभ्यास द्वारा मूलाधार स्थित गोलाकार ज्योतित कुंडलिनी को शनैः शनैः सहस्रार में ले जाने में सफलता प्राप्त होती है। मौन साधना द्वारा साधक कुंडलिनी को भ्रूमध्य ले जाते हैं जहाँ ज्ञाननेत्र खुल जाता है (593)।

(क्रमांक–140, मंत्र संख्या–580)

ईश्वर

उपासना को बाह्याचारों में बांधने का निषेध और अंतःसाधना को विशेष महत्त्व देने का विचार शिव-भक्ति परम्परा के साथ कई रूपों में जुड़ा। बौद्धों की वज्रयानी प्रवृत्ति का विरोध उसके विचित्र विधि-विधान और पतनोन्मुखी श्रृंगारी प्रक्रिया के कारण हुआ। गोरखनाथ ने पूर्व परम्परा से प्राप्त हठयोग को घट के भीतर चक्र, नाड़ियां, शून्य देश आदि का अस्तित्व बतलाकर साधना का मार्ग प्रशस्त किया। नाथ सम्प्रदाय में कुण्डलिनी शक्ति की उपासना को विशेष महत्त्व दिया गया। ब्रह्माण्ड-व्यापी महाकुण्डलिनी ही मानव शरीर में कुण्डलिनी रूप में अवस्थित है। 'नाथ योगियों की साधना का चरम उद्देश्य शक्ति के संचालित करने तक ही सीमित नहीं, अपितु उस सहज समाधि की अवस्था प्राप्त करना है, जिसके लिए शिव और शक्ति की समरसता अपेक्षित है।' तिरुमूलर ने पतंजलि के चिंतन के गूढ़ रहस्य को स्पष्ट करते हुए माना है कि अंतःप्रेरणा द्वारा ईश्वर को स्वानुभूति के रूप में जान लेना और ईश्वर से तद्रूप होना ही सत्य का संधान है। 'जीव' में अवस्थित 'शिव', श्रद्धा और आस्था की अनिवार्यता, ज्ञान की ज्योति जगाकर अंतस् में खोज करने पर प्राण में मिले प्राणेश्वर के दर्शन आदि इसी ओर संकेत कर रहे हैं। अगले ही मंत्र में उनका कथन इसका प्रमाण है–

स्वचेतना लुप्त होकर जीव स्वयं बनेगा शिव,
अहम् नहीं रहेगा, शिव ही रहेगा।

(क्रमांक–148, 149 मंत्र संख्या–601, 603)

अनहदनाद

तिरुमूलर ने 'अनहदनाद' के अंतर्गत दस प्रकार के सांद्र स्वरों का अंतस् में श्रवण होने का वर्णन किया है। सागर, मेघ तथा गज का गर्जन; शंख, भेरी का घोष; भ्रमर का गुंजन; घंटा, वंशी और तंत्री का निनाद उन्हें श्रुतिगोचर होता है जिनका चित्त ईश में लय हो चुका है। यह वर्णन 'ध्यान' के अंतर्गत किया गया है। मंत्र 616 में उन्होंने प्रतिपादित किया है कि जब योगी चित्त को मूलाधार से अनाहत चक्र में ले जाता है और पुनः अनाहत से विशुद्धि तक पहुँचाता है तो छत्तीस तत्त्वों की सीमाओं से परे होकर वह शिवरूप हो जाता है। ईश्वरानुग्रह से वह शुद्धज्ञानरूप हो जाता है। (617)

अनहदनाद का विषय योग तथा तन्त्र का प्रमुख परन्तु जटिल विषय है। 'हठयोग प्रदीपिका' (4/73) में कुंभक प्राणायाम से विष्णु-ग्रंथि के खुलने पर होने वाला ब्रह्मानन्द अतिशून्य कण्ठ-आकाश में भेरी का नाद कहा गया है। भृकुटि के मध्यरूप आकाश में मर्दल (ढोल) की ध्वनि (4/74), प्राण के ब्रह्मरन्ध्र में पहुँचने पर वेणु और वीणा का शब्द होता है (4/76)। इस निष्पत्ति अवस्था में चित्त एकीभूत हो जाता है अर्थात् विषय और विषयी (ज्ञान) का अभेद हो जाता है। गोरखनाथ के अनुसार–

उलटे पवन चक्र षट बेधा, मेर-डंड सरपूरा
गगन गरजि मन सुंनि समाँनाँ, बाजे अनहद तूरा। 496।

कबीर-काव्य में अनहदनाद के अनुभव का वर्णन इस भाँति हुआ है–

गगन गुपत मधुकर मधु पीवत, सुगति सेस सिव जौंणों।। (पद 168)
बिनहीं तालाँ ताल बजावै, बिन मंदल षट ताला।
बिनहीं सबद अनाहद बाजै, तहाँ निरतत है गोपाला।।

गोरखनाथ ने 'अनहद मृदंग बाजै' (पृ. 118) तथा डमरू शंख, वेणु मृदंग, आदि के स्वरों का अनाहत नाद के रूप में वर्णन किया है।

(क्रमांक–151, 152, मंत्र संख्या–606, 607)

परमशिव : विश्वोत्तीर्ण विश्वमय

परमशिव की परमेश्वरता एक साथ ही दो रूपों में अभिव्यक्त होती है : एक विश्वोत्तीर्ण और दूसरा विश्वमय। विश्वोत्तीर्णता परमशिव की अचलता और कूटस्थता होती है और विश्वमयता उसकी स्पन्दमानता, ईश्वरता

आदि हैं—ये दोनों मूलतः एक ही हैं। सर्वत्र ही शिव और शक्ति एक ही हैं; इस प्रपंच में अभेद, भेदाभेद और भेद की तीन भूमिकाएँ होती हैं। अपने अनंत रूपों में शिव अनन्त प्रकार की विचित्रताओं के साथ इन तीन भूमिकाओं में आरोहण-अवरोहण करते हैं।

तिरुमूलर ने समाधि की चरमावस्था में अष्ट सिद्धियों की प्राप्ति का उल्लेख किया है। साधक यहां पर देवाधिदेव शिव के चरणों में प्रणत होकर रहस्यमय चिदम्बर के दर्शन प्राप्त करता है (641); मूलाधार के प्राण का सुषुम्ना से उन्नयन गुरुकृपा से संभव होता है (642)। कर्मयोग के बीस हज़ार आठ सौ (अनेकानेक) प्रकारों का संकेत देते हुए कुण्डलिनी योग तथा तन्त्र विद्या को अपेक्षाकृत श्रेष्ठ माना है (644)। परकाय प्रवेश तत्त्वों, कलाओं, काल और माया के बंधनों से परे होकर स्वयंभू, अनंत प्रभुरूपी सत्य का साक्षात्कार होने पर सम्भव है (643)।

(क्रमांक–166, 167, मंत्र संख्या–640, 641)

वायु-प्राण : नववायु और दशम धनञ्जय

प्राण के व्यायाम को प्राणायाम कहते हैं। प्राण उस 'वायु' का नाम है जिससे यह ब्रह्माण्ड व्याप्त है, यही वायु शरीरस्थ होकर प्राण कहलाता है। शरीर में भिन्न-भिन्न स्थानों में इसके भिन्न-भिन्न नाम हैं :–

प्राण वायु : हृदय में रहकर मुख के मार्ग से भीतर जाता है।

अपान वायु : गुदा में स्थित वायु, मलमूत्र बाहर निकालने का कार्य करता है।

समान वायु : इसका स्थान नाभि है, यह जठराग्नि की सहायता से भोजन के रस को मल आदि से अलग करता है।

उदान वायु : यह कण्ठ में निवास करता है, प्राणों को बाहर निकालता है, बोलने, गाने, चिल्लाने आदि का कार्य इससे होता है।

व्यान वायु : समग्र शरीर में रहकर सब रसों को सब स्थानों पर पहुँचाता है, रक्त के परिभ्रमण का नियंत्रण भी व्यान वायु द्वारा होता है।

नाग वायु : डकार लाने, वमन आदि के कार्य नाग वायु के हैं।

कूर्मवायु : पलकों का झपकना, अंगों का सिकुड़ना और फैलना कूर्मवायु द्वारा होता है।

क्रिकल वायु : शरीर में भूख लगाना, छींक आदि का नियंत्रण इसका कार्य है।

देवदत्त वायु : उवासी का नियंत्रण करता है।

धनञ्जय वायु : जीवन-मृत्यु में स्मरण का कार्य, मृत्यु उपरान्त शरीर को फुलाता है।

तिरुमूलर ने 'धनञ्जय' को सुषम्ना में स्थित मानते हुए इसके प्रभाव का विस्तार से विवेचन किया है। यह सकल देह में व्याप्त है, दो सौ चौबीस नाड़ियों के तंत्र में स्थित है (654)। जब धनञ्जय की क्रियाशीलता में व्यवधान आता है तो काया जर्जर होती है; वात, कफ, पित्त का प्रकोप होकर रक्ताल्पता की स्थिति हो जाती है। फोड़ा-फुंसी, खुजली, दाद, कुष्ठ, पक्षाघात, नेत्र रोग, संधिवात आदि इसी के असंतुलन से आते है। मोतियाबिंद और काला मोतिया का कारण तिरुमूलर ने धनञ्जय की दोषपूर्ण स्थिति को माना है, नेत्रों के लिए कूर्मवायु का विशेष महत्त्व है क्योंकि उसके अभाव में नेत्र 'ज्योति' प्राप्त नहीं करते (656)।

(क्रमांक–170, मंत्र संख्या–653)

नवद्वार, नववायु, नवनाड़ियां

नवद्वार : शरीर के नौ छिद्र जो प्राण के निकलने के नौ मार्ग हैं–दो नेत्र, नाक के दोनों छिद्र, मुख, दो कान और दो गुप्तेन्द्रियाँ।

नववायु : प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान, नाग, कूर्म, क्रिकल, देवदत्त। (दशम धनञ्जय वायु को तिरुमूलर ने विशेष महत्त्व दिया है।)

नवनाड़ियाँ : इडा, पिंगला, पूषा, हस्तिजिह्वा, गांधारी, अलम्बुषा, शंखिनी, वारुणी, कुहू। (दशम सुषुम्ना को तिरुमूलर ने विशिष्ट स्थान दिया है।)

(क्रमांक–174, मंत्र संख्या–658)

लिंग–साकार रूप

तमिलनाडु में पांच तत्त्वों के आधार पर पांच लिंगों की कल्पना साकार रूप में भिन्न-भिन्न मंदिरों में विद्यमान है–

कांचीपुरम्	—	पृथ्वी लिंग
तिरुवानैक्का	—	जल लिंग
तिरुअण्णामलै	—	अग्नि लिंग
तिरुकालहस्ती	—	वायु लिंग
चिदम्बरम्	—	आकाश लिंग

(क्रमांक–177, मंत्र संख्या–666)

आनन्दताण्डव

शिव के पंचकृत्यों—सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोभाव और अनुग्रह—का प्रस्तुतिकरण सदैव नृत्यरत आनन्दताण्डव मूर्ति द्वारा होता है। शिव-विषयक अनेक संदर्भों एवं शब्दों में अंतर्निहित प्रतीकात्मकता का स्पष्ट होना अत्यावश्यक है। विश्वनृत्य में निरत महानट ही ज्योति, ज्योति के अंदर ज्योति, परिशुद्ध ज्योति हैं। चिदम्बरम् में वही ज्योति नृत्य कर रही है, जीव के हृदय-आकाश में, चिट्रम्बलम् में भी वही नृत्य हो रहा है। जब योगी षडाधार पारकर सहस्रार में पहुँचता है तो उसे दिव्यविभूति नर्तित नटराज के दर्शन होते हैं (755)। इस विषय पर तिरुमूलर ने तृतीय तंत्र में स्पष्ट किया है कि कनकसभा (तिल्लै, चिदम्बरम्) का अद्‌भुत नृत्य नटराज का अनवरत चलता आनन्दनृत्य प्रलय-नृत्य भी है (887)। भक्तों, साधकों के चिंतन में यह अण्ड-बहिरण्ड सब उस 'श्रेष्ठ' का ही नृत्य है। शिवभक्तों की इस प्रिय स्थली 'चिदम्बरम्' में तिरुनावुक्करसु ने जो पद गाए उनमें से एक का भाव है—'हे परम पुरुष! हे परमयोगी! मैं आपका भक्त होकर भी आपकी कीर्ति का गान नहीं करता ! यह किस भाँति की आपकी भक्ति की मैंनें ? फिर भी आप मुझे दुतकारिये मत ! हे मुक्त ! हे आदि ! हे तिल्लै की कनकसभा—चिट्रम्बलम् में नृत्यशील तात ! मैं आपका दास हूँ आपके नृत्य के दर्शन करने आया हूँ' (*पत्तनायृप्पाडमाट्टेन् परमने परमयोगी ....*)। रामलिंग स्वामी ने पुनः-पुनः तिरुचिट्रम्बलम् अर्थात् श्री चिदम्बरम् अथवा हृदयाकाश की ज्योति की क्रीड़ा का गायन किया है। उनका प्रसिद्ध गीत 'जोदियुट् जोति उट्‌जोति'-का संकेत स्वतः स्पष्ट है—

"यही ज्योति के अंदर ज्योति, ज्योति के अंदर ज्योति,
ज्योति के भी ज्योति
'शिव' ही नित्य तत्त्व हैं;

ऐसा मुझे समझाकर मुझे शिव के प्रकाश तक पहुँचाने वाले शिखर (सहस्रार !) पर चढ़ाकर मुझे शिवमय बना दिया।"

'चित् अम्बर में नृत्य करने वाले आनन्दमय देव'; 'ज्ञानरूप हो अविनाशी बना ! तन प्रसन्न हुआ, प्राण खिल उठे'; 'हृदय आनंदित हुआ, मैं सहजावस्था में आ गया'; 'अम्बर बिम्ब चिदम्बरनाथ'; 'तंत्र, मंत्र, यंत्र रूप पाद' आदि अनेक संदर्भ शिव के नृत्य को हृदय के आकाश मंच, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड रूपी मंच तथा चिदम्बरम् के भीतर आकाश-लिंग रूपी मंच पर देखते हैं। शिव के आनन्द नृत्य आदि (*तिरुक्कूत्तुत् दरिसनम्*) का विस्तृत विवेचन नवम तन्त्र के संदर्भ में देखें।

(क्रमांक–177, मंत्र संख्या–666)

अणिमा, लघिमा आदि अष्ट सिद्धियां

अष्ट सिद्धियां–अणिमादि सित्तिगळ : पातञ्जल योगदर्शन में 'विभूतिपाद' के अंतर्गत कथन है–स्थूल, स्वरूप, सूक्ष्म, अन्वय और अर्थतत्त्व इन पांच प्रकार की अवस्थाओं में संयम करने से योगी को पांचों भूतों–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश–पर विजय प्राप्त हो जाती है। भूतविजय के उपरान्त पतञ्जलिके अनुसार–*ततोऽणिमादिप्रादुर्भाव : कायसम्पत्तद्धर्मानभिघाश्च*। (345) अर्थात् अणिभादि आठ सिद्धियां प्रकट हो जाती हैं, कायसम्पत् की प्राप्ति होती है और उन भूतों के धर्मों से बाधा नहीं होती।

अणिमा के प्रभाव से स्थूलकाय योगी परमाणु की तरह अणु हो जाता है। इस अणुभाव से वह छिद्र रहित पाषाण में भी प्रवेश पा लेता है।

लघिमा द्वारा शरीर हल्का किया जा सकता है। इससे जल, पंक और कण्टकादि से बाधा नहीं आती। वह उच्च, उच्चतर उड़ने की शक्ति प्राप्त कर लेता है।

महिमा इसके प्रभाव से लघु-परिमाण-योगी नाग, नग एवं नगर की भांति महत् परिमाण वाला हो जाता है।

गरिमा शरीर को भारी कर लेने की अपार क्षमता की प्राप्ति।

प्राप्ति इच्छित भौतिक पदार्थ को संकल्पमात्र से प्राप्त कर लेने की सिद्धि का नाम प्राप्ति है।

प्राकाम्य प्राकाम्य का अर्थ है–इच्छा का सदा सर्वत्र सफल होना; योगी इसके द्वारा बिना बाधा के अनायास ही भौतिक पदार्थ सम्बन्धी इच्छा की पूर्ति कर लेता है।

वशित्व पांचों भूतों एवं उनसे उत्पन्न पदार्थों का वश में हो जाना।

ईशित्व भूत और भौतिक पदार्थों को विविध रूपों में उत्पन्न करने की और उन पर शासन करने की सामर्थ्य।

कतिपय अधिकारी विद्वान् कामावसयित्व नामक सिद्धि भी मानते हैं। इसका अर्थ है–सत्य संकल्पता। इसके प्रभाव से योगी पदार्थों के विषय में जैसी इच्छा करता है पदार्थ वैसा ही हो जाता है यथा विष का अमृत के रूप में विपर्याप्त कर देना।

मंत्र संख्या 668 में अणिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्वम् एवं वशित्वम् का उल्लेख है। 'गरिमा' का उपशीर्षक तो है पर वर्णन नहीं है, उस मंत्र विशेष में 'प्राप्ति' का वर्णन है (680)। गरिमा और महिमा को समाविष्ट किया जा सकता है। तिरुमूलर की सिद्धि-विषयक अवधारणा पातञ्जल योगसूत्र के पर्याप्त निकट है। अपने मूल चिंतन के अनुसार यहां भी वे शिवकृपा को आधार स्वीकार करते हैं। 'महिमा' में 'तत्त्वनायकी' के दर्शन के उपरान्त एक वर्ष में दैवी 'प्राप्ति' मिलती है। 'प्राप्ति' में शक्ति की प्रकाशमान् ज्योति के दर्शन के फलस्वरूप साधक ब्रह्माण्ड दर्शन करता है, भूतकाल अनंत में विलीन हो जाता है, भविष्य रुक जाता है (680)। इसके फलस्वरूप ज्ञानवान् सिद्ध पुरुष आवागमन, मृत्यु, जरा आदि से परे हो जाता है (681)। इसी भाँति ईशत्व सिद्धि प्राप्त करने वाला सिद्ध चन्द्रकिरण बनता है, फिर चन्द्रकला और फिर उनमें मिलकर 'वह स्वयं बन जाता है चन्द्र' (685)। ईशत्व सिद्धि सृजन, पालन, संहार की सिद्धि है, साधक ईश से अभिन्न हो जाता है (687)। कामारुतत्त्व (कामावसयित्व) की एक परिभाषा 'सर्वकामना संतुष्टि' है तो अन्यत्र 'सर्वइच्छादमन' की शक्ति के रूप में उसे स्वीकार किया गया है। तिरुमूलर इसे पुष्प में व्याप्त सुगन्ध की भाँति सृष्टि रूपी स्वर्णिम पुष्प में सर्वत्र व्याप्त होने की क्षमता मानते हैं। साधक मायाशक्ति रूप में परिवर्तित होकर सृष्टि की अधिष्ठात्री दैवी माँ के प्रकाश का साक्षात्कार करता है। विविध लोकों में भ्रमण करता हुआ वह परमशिव की ज्योति के दर्शन करता है (689, 690)।

(क्रमांक–178, मंत्र संख्या–668)

कुण्डलिनी, षट्चक्र

कुण्डल अर्थात् घेरा, लपेट। 'जिसकी लपेट के भीतर सारी सृष्टि है उसे कुण्डली का लपेट वाला कहते हैं। परब्रह्म कुण्डली है, जिसकी लपेट में अथवा जिसके अंतर्गत सारी सृष्टि है।' जब यह शब्द पराशक्ति के लिए व्यवहृत होता है तब इसे कुण्डलिनी कहते हैं। 'भारतीय प्रतीक विद्या' में डॉ. जनार्दन मिश्र ने इसका विवेचन इस भाँति किया है—विश्व के रूप में जिस प्रकार ब्रह्म का निष्क्रिय और सक्रिय रूप काम क़रता है, उसी प्रकार उसका सक्रिय और निष्क्रिय रूप पिण्ड में भी काम करता है। इसका चंचल अथवा सक्रिय रूप कुलकुण्डलिनी अथवा कुण्डलिनी शक्ति है जिसकी क्रियाओं का आधार अथवा निवास मूलाधार चक्र है। इसी का दूसरा नाम कुल है। निश्चल शिव की स्थिति सहस्रार में है। इसका दूसरा नाम अकुल है। शक्ति कुल से अकुल की ओर और अकुल से कुल की ओर अर्थात् मूलाधार से सहस्रार की ओर और सहस्रार से मूलाधार की ओर आती जाती रहती है और सारे शरीर में प्राणशक्ति भरकर इसे क्रियाशील बनाती रहती है। 'आनन्द स्तोत्र' (25) के अनुसार—

'अकुल और कुल के बीच आती जाती हुई, चक्रों के बीच स्पन्दन उत्पन्न करती हुई, मधुर मधु को पीती हुई, साधकों को संतुष्ट करती हुई, पाप का अपहरण करती हुई, विघ्नों को चबाती हुई और जयति-जय बोलती हुई कुण्डलिनी (सुन्दरी) क्रीड़ा करती रहती है।'

कुण्डलिनी को जगाने का उपक्रम साधना-मार्ग का विशिष्ट साधन है। जब कुण्डलिनी जाग जाये तो उसे सूर्य (पिंगला), चन्द्र (इडा) नाड़ियों से ऊपर ले जायें। व्यर्थ की श्वास को सुषुम्ना के अग्निपथ पर लगा दें फलतः इस मध्य मार्ग से चलकर साधक उस सहस्रार में पहुँचेगा जहाँ सप्त-लोक ज्योतित हैं। कुण्डलिनी जागरण के फलस्वरूप अनहद नाद होता है, साधक भ्रूमध्य (आज्ञा चक्र) में अमृत का पान करता है। मंत्र संख्या 662 में कवि ने नवकन्याओं का उल्लेख किया है। तद्विषयक टिप्पणी में तिरुमूलर के अंग्रेजी अनुवादक डॉ. बी. नटराजन ने इनके नाम क्रमशः वामा, श्रेष्ठा, रौद्री, काली, कला विकर्णी, पल विकर्णी, पल प्रमदनी, सर्वभूतदमनी और मनोन्मनी दिए हैं। ये शक्तियां आंशिक आनन्द देने में सक्षम हैं। पूर्ण आनन्द प्राप्ति का मार्ग 'आदिशक्ति' (आज्ञा चक्र में स्थित) की साधना है। (उत्तर भारतीय परम्परा में नव कुमारिकाओं के नाम भिन्न हैं—कुमारिका, त्रिमूर्ति, कल्याणी, रोहिणी, काली, चंडिका, शांभवी, दुर्गा

और सुभद्रा)। मंत्र संख्या 719 में इसी विषय पर कविकथन है कि तत्त्वों की अधीश्वरी कुण्डलिनी शक्ति ऊर्ध्वमुखी होकर चलती है तो देह को शिवालय बना देती है। योगमार्ग के साधक की अंतःदृष्टि जब भ्रमरहित होकर स्थित होती है तो कुण्डलिनी के साथ प्राण साधना-पथ पर अग्रसर होते हैं और सद्गुरु प्रदत्त मार्गदर्शन से कुंडलिनी को भी पीछे छोड़कर सायुज्य की स्थिति प्राप्त होती है (721)।

तिरुमूलर ने उसे सदाशिव शक्ति, तत्त्व-नायिका प्राणशक्ति के रूप में वर्णित किया है (698)। अध्ययन की सुविधा के लिए षड्चक्रों को एक चार्ट के रूप में अंतिम पृष्ठों में प्रस्तुत किया जा रहा है। तदुपरान्त उनका संक्षिप्त परिचय और तिरुमूलर-चिंतन का संदर्भ समाविष्ट है।

'सौभाग्य लक्ष्म्युपनिषद्' के द्वितीय खण्ड में योगसम्बन्धी उपदेश देने के उपरान्त 'नवचक्र विवेक' नामक तृतीय खण्ड में मूलाधार से लेकर आकाशचक्र तक का वर्णन किया गया है। तिरुमूलर द्वारा प्रतिपादित षड्चक्र-साधना के संदर्भ में इस उपनिषद् का चिंतन सैद्धान्तिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होने के कारण उसका संक्षिप्त उल्लेख समीचीन रहेगा।

मूलाधार में ब्रह्मचक्र है, वह योनि के आकार में तीन घेरों से युक्त है। वहाँ कर्णिका के मूल में कुण्डलिनी-शक्ति सोये हुए सर्प के आकार में स्थित है। उसका ध्यान तप्त-अग्नि के रूप में तब तक करना चाहिए, जब तक वह जाग्रत् न हो जाए। वहीं भगवती त्रिपुरा का स्थान कामरूप नामक पीठ है जिसकी उपासना से समस्त भोगों की प्राप्ति होती है। दूसरा छह दलों का स्वाधिष्ठान चक्र है। उस षट्दल पद्म के कर्णिका-पीठ में पश्चिम की ओर मुख किए एक शिवलिंग का ध्यान करे। यह शिवलिंग मूंगे के अंकुर के समान लाल वर्ण का है। वहां उड्डयान पीठ है जिसकी उपासना से जगत् को आकृष्ट करने की सिद्धि प्राप्त होती है। तीसरा नाभिचक्र सर्प के समान कुटिल आकार का पांच घेरों से आवृत है। उस चक्र में कोटि-कोटि बाल-सूर्यों की सी प्रभा से युक्त और तडित् के समान क्षीण अंगों वाली कुंडलिनी शक्ति का ध्यान करें। जाग्रत् होकर सामर्थ्यवान् होने पर यह शक्ति सब प्रकार की सिद्धियाँ प्रदान करती है। मणिपूरक चक्र हृदय चक्र है। वह अष्टदल पद्म के आकार का नीचे की ओर मुख किये रहता है। इस चक्र में ज्योतिर्मय लिंग का ध्यान करना चाहिए। हंसकला नाम से विख्यात यह ज्योति-लिंग जाग्रत् होकर समस्त लोकों को वश में करने की शक्ति देता है। कंठ का चक्र चार अंगुल प्रमाण का है; बायीं ओर इडा – चंद्रनाड़ी

और दाहिनी ओर पिंगला – सूर्यनाड़ी है। इन दोनों के बीच में श्वेत वर्ण की सुषुम्ना नाड़ी का ध्यान करें। इसको जानने वाले को अनाहत चक्र सिद्धि प्रदान करता है। इसके आगे तालुचक्र है जहां निरंतर अमृतधारा प्रवहमान् है। सातवां भ्रूचक्र अंगूठे के परिमाण का है। इसका ध्यान शांत दीपशिखा के रूप में करने पर अदृष्ट के कारण भूत कर्मों के विषय का पूर्ण ज्ञान हो जाता है। आठवां आज्ञाचक्र है जिसे ब्रह्मरन्ध्र चक्र भी कहते हैं। यह रंध्र सुई की नोक के समान है। यहां गतिशील धूम्रशिखा के आकार का ध्यान होता है। वहां जालंधर-पीठ है जिसकी उपासना से मुक्तिलाभ होता है। इसे परब्रह्मचक्र भी कहते हैं। नवां आकाशचक्र है। वहां षोडशदल पद्म ऊपर की ओर मुख किये स्थित है। उसके बीच की कर्णिका त्रिगुणों की जननी होने के कारण तीन शिखरों वाले पर्वत के आकार की कही गयी है। उसके बीच में ऊपर की ओर झुकी हुई शक्ति है। वहीं पूर्णगिरि पीठ है जिसकी उपासना समस्त कामनाओं को पूर्ण करती है। (देखें *'षड्चक्र साधना', क्रमांक 390, मंत्र संख्या-1457*)

(क्रमांक–183, मंत्र संख्या–695)

इक्यावन वर्ण

ऊर्ध्वमुखी प्राणशक्ति सुषुम्ना मार्ग से अग्रसर होकर सहस्रार में इक्यावन वर्ण से मिलती है और फिर पांच वर्णों से युक्त होकर चित्कला, आनन्दकलिका महाशक्ति से मिल जाती है। तन्त्रानुसार 'मन्त्र और मातृकाओं का रहस्य' में डॉ. शिव शंकर अवस्थी ने स्पष्ट किया है कि "मातृका के पर रूप में इच्छा, ज्ञान और क्रिया ये शक्तियाँ समुदित रूप में विद्यमान रहती हैं। अतः अभिप्राय विशेष को लक्ष्य करके उसे कभी परा इच्छा शक्ति, कदाचित् परा ज्ञान शक्ति तथा परा क्रिया शक्ति के रूप में भी उल्लेख करते हैं। विकास के क्रम में पर रूप से पृथक् इच्छा, ज्ञान और क्रिया शक्तियां तो देखी ही जाती हैं"। परमेश्वर की परा क्रियाशक्ति 'मातृका' कही जाती है। यह स्वाभास शक्ति है जिससे परमेश्वर के स्वरूप का प्रत्यवमर्श होता है। 'तात्पर्य दीपिका' (मध्वाचार्य), 'सौभाग्य भास्कर' (भास्करराय), हस्तलिखित प्राचीन ग्रंथ 'कामधेनुतंत्र' तथा अनेक अन्य प्रामाणिक ग्रंथों के आधार पर डॉ. शिव शंकर अवस्थी ने वर्णों का जो तात्त्विक विवेचन किया है उसके आधार पर कतिपय संकेत देना उपयुक्त रहेगा–

अ — विन्दुतत्त्वमय, प्रकृतिस्वरूप, शक्तित्रय युक्त।

आ — ब्रह्मा, विष्णु और रुद्रमय, पंच प्राणमय, परमकुण्डली रूप।

इ — ब्रह्मा, विष्णु और रुद्रमय, सदाशक्तिमय, सदाशिवमय, मूर्तिमान कुण्डली।

ई — परमकुण्डली रूप, पंचप्राण तथा चतुर्ज्ञानमय।

उ — अधः कुण्डलिनी, पंचप्राणमय, चतुर्वर्गप्रद।

ऊ — पंचप्राण तथा पंचदेवमय; धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष और सदा सुखप्रद।

ऋ — मूर्तिमान कुण्डली, ब्रह्मा, विष्णु रुद्रमय, सदाशिव युक्त।

ॠ — परमकुण्डली, पंचप्राण युक्त, त्रिशक्ति सहित।

लृ — कुण्डली परदेवता, ब्रह्मादि देवों का निवास, गुणत्रयात्मक, विन्दुत्रयात्मक।

ए — ब्रह्मा-विष्णु-शिवात्मक, पंचदेवमय, पंच प्राणात्मक विन्दु-त्रयात्मक।

ऐ — महाकुण्डलिनी, पंचप्राण, सदाशिवमय, विन्दुत्रय युक्त।

ओ — त्रिगुणात्मा, ईश्वर, पंच प्राणमय, परम कुण्डली।

औ — कुण्डली, पंचप्राण तथा सदाशिवमय, ईश्वर संयुक्त।

अः — पंचदेव, पंचप्राण, सर्वज्ञानमय, विन्दुत्रय समन्वित।

क — चतुर्भुजा, त्रिनेत्रा, रत्न, कंकण, केयूर तथा अंगदों से सुशोभित परमेश्वरी कामिनी रूप।

ख — कुंडलीत्रययुक्त, त्रिकोण तथा विन्दुत्रय-संयुक्त पंचदेव तथा शक्तित्रय विशिष्ट, सामान्यतया सर्वशक्त्यात्मक।

ग — पंचदेवात्मक, पंचप्राणमय, निर्गुण, कुण्डली रूप।

घ — चतुष्कोणात्मक, पंचदेवमय, सर्वगति, सर्वप्रद, शांत।

ङ — परमकुण्डली रूप, त्रिगुण एवं सर्वदेवमय पंचप्राणमय।

च — चतुर्वर्गप्रद, परम कुण्डली रूप, त्रिशक्ति तथा विन्दुत्रययुक्त।

छ — परमकुण्डली रूप, पंचप्राण, त्रिविन्दु एवं ईश्वरयुक्त।

ज — मध्यकुण्डलीरूप, त्रिगुण, त्रिशक्ति, त्रिविन्दुसदृश।

झ — कुण्डली तथा मोक्षरूप, पंचदेव तथा पंच प्राणात्मक, त्रिविन्दु त्रिशक्ति एवं ईश्वर संयुत।

ञ — परमकुण्डलीरूप, पंचप्राणमय, त्रिशक्ति एवं त्रिविन्दु सहित।

ट — परमकुण्डलीरूप, पंचदेव एवं पंचप्राणमय, त्रिशक्ति एवं त्रिविन्दु सहित।

ठ – कुण्डली और मोक्षरूप, पंचप्राणात्मक त्रिविन्दु एवं त्रिशक्ति सहित।

ड – त्रिगुणयुक्त, त्रिविन्दु सहित चतुर्ज्ञानमय एवं आत्मादि तत्त्वों से युक्त।

ढ – पराकुण्डली, पंचदेव, त्रिगुण तथा आत्मादि तत्त्वयुक्त।

ण – परमकुण्डली, पंचदेव तथा पंचप्राणमय, महासौख्य प्रदायक

त – स्वयं परम कुण्डली, त्रिशक्ति एवं आत्मादि तत्त्वयुक्त पंचदेव तथा पंचप्राणमय।

थ – कुण्डली तथा मोक्षरूप, त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दु सहित।

द – चतुर्वर्ग-प्रदाता, पंचदेवमय, त्रिशक्ति सहित, परम-कुण्डली रूप।

ध – आत्मादि तत्व संयुक्त, पंचदेव तथा पंचप्राणमय, त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दु सहित।

न – पंचदेवमय, परमकुण्डली रूप, पंच प्राणात्मक, त्रिविन्दु तथा त्रिशक्ति युक्त।

प – अव्यय मोक्षरूप, चतुर्वर्गप्रद, परमकुण्डली, पंचप्राणमय आत्मादि तत्त्वों से युक्त।

फ – पंचदेवमय, पंचप्राणात्मक, त्रिगुण तथा त्रिविन्दु सहित।

ब – कुण्डलिनी रूप, त्रिविन्दु तथा त्रिशक्ति सहित, निविड़ अमृत के समान निर्मल, पंचदेव तथा पंचप्राणमय।

भ – परमकुण्डली रूप, पंचदेवमय, त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दु सहित

म – परमकुण्डली रूप, आत्मादि तत्त्वों से युक्त, त्रिशुक्ति तथा त्रिविन्दु सहित।

य, र, ल, व, श आदि– कुण्डली रूप, पंचदेव, पंच प्राणमय, त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दुसहित, आत्मादि तत्त्वों से युक्त।

ष – अष्टकोणमय, परमकुण्डली रूप, पंचदेव तथा पंचप्राणमय, सर्वदेवमय, आत्मादि तत्त्वों से युक्त।

स – परात्पर शक्ति-बीज, कुण्डलीत्रययुक्त, पंचदेव तथा पंचप्राणमय, त्रिविन्दु तथा त्रिशक्ति युक्त।

ह – चतुर्वर्ग प्रदाता, कुण्डलीत्रययुक्त, त्रिगुण तथा पंचदेव युक्त, पंचप्राण, त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दु सहित।

क्ष – कुण्डलीमय युक्त, पंचदेव तथा पंचप्राणात्मक, त्रिशक्ति तथा त्रिविन्दु सहित, आत्मादि तत्त्वों से युक्त।

मंत्र और मातृकाओं का विस्तृत विवेचन यथा वर्णरूप, स्वरूप, अभिरूप, महिमा, कला, शक्ति, ऋषि, छन्द, बीज तथा सम्बद्ध विषयों का विवेचन डॉ. शिव शंकर अवस्थी के ग्रंथ में उपलब्ध है।

(क्रमांक–186, मंत्र संख्या–699)

शरीर रूपी शिवालय

शरीर नश्वर है, मलमय है पर सत्यरूप शिव का आवास भी है अतः यह प्रभु का पावन मंदिर है। जीव में ही प्रभु अवस्थित है, प्रभु के अनुग्रह से जब निज अंतस् में यह ज्ञान होता है तो प्रभु-दर्शन होता है और जीव (पशु), शिव (पति) बन जाता है (766)। मंदिर निर्माताओं ने गर्भगृह का निर्माण करते हुए मानव-शरीर में हृदय की स्थिति को स्पष्ट रूप से अपनी चिंतन प्रक्रिया में रखा है। कुण्डलिनी योग से शरीर शिवालय बन जाता है। इस चिंतन का प्रभाव बाद के भक्तों, साधकों पर भी बना रहा। 'पेरियपुराणम्' में चेक्किऴार ने दो ऐसे भक्तों का वर्णन किया है जो हृदय-मंदिर की अवधारणा को जीवन में साकार कर पाए। आधुनिक चेन्नै (मद्रास) के मयिलापुर क्षेत्र के कृषक भक्त वायिलार् ने अपने हृदय में मंदिर की परिकल्पना की और उसमें ईश की प्रतिष्ठा कर दी। कवि चेक्किऴार के अनुसार वायिलार् की :

"भक्ति का रंग निराला था, पूजा का ढंग अनोखा था,
मन मंदिर में जोत जगाकर, किया स्थापित,
स्वमन में ही ईश को, आनन्द से होता अभिषेक
प्रेमामृत का चढ़ाते भोग वे नियमपूर्वक
था उनका प्रत्येक नियम, प्रत्येक विचार
एक सतत अर्चन, एक अनवरत आराधन।"

इसी भाँति शरीर में शिवालय की कल्पना – शिव की मानसिक उपासना – करने वाले भक्त पूसलार थे। तोण्डैमण्डलम् के तिरुनिन्रवूर नगर के इस भक्त ने आगम-वर्णित विधि-विधान से अपने मन के भीतर ही मंदिर निर्माण किया। मंदिर के निर्माण के लिए आवश्यक सामग्री, बढ़ई शिल्पी इन सबकी संकल्पना करली और धीरे-धीरे मंदिर निर्माण कर डाला। जब मन-मंदिर निर्मित हो गया तो मूर्ति-स्थापना और कुंभाभिषेक के लिए श्रेष्ठ दिन और मुहूर्त की भी संकल्पना कर ली। उन्हीं दिनों राजसिंह

पल्लव महाराज ने कांचीपुरम् में विशाल कैलाशनाथ मंदिर बनवाया जिसके लिए मुहूर्त निकालकर कुंभाभिषेक की तैयारी प्रारम्भ हुई। संयोग से पूसलार के मानसिक मंदिर के कुंभाभिषेक का भी वही दिन था। 'शिव' ने राजा को स्वप्न में बताया—'तिरुनिन्रवूर में पूसलार ने अपने दीर्घकाल के संकल्प से जो मंदिर बनाया है उसमें बसने के लिए कल जा रहा हूँ तुम अपने कार्यक्रम की तिथि आगे बढ़ा लो।' जब नरेश को पूसलार से मिलने पर 'सत्य' का ज्ञान हुआ तो भक्त की अपार निष्ठा और शिव के असीम अनुग्रह से भावविभोर होकर वे पूसलार के प्रति नतमस्तक हो गए। इन दोनों भक्त-कथाओं की कल्पना मानसिक रूप से समर्पित भक्त के महत्त्व को दर्शाती है, शरीर को मलमूत्रमय मानकर त्याज्य मानने की भावना को अस्वीकार करने की प्रेरणा देती है तथा योगसाधना आदि के द्वारा पिण्ड में सत्यज्ञान की यात्रा के महत्त्व का प्रतिपादन करती है। 'कायासिद्धि उपायम्' में शरीररक्षा के सिद्धान्त को विवेचित किया गया है। इडा और पिंगला को प्राणायाम से श्वास-प्रश्वास के माध्यम से शुद्ध करना, योग-साधना का सम्यक् अभ्यास आदि कायासिद्धि के मार्ग के रूप में विवेचित है। शरीर की झुर्रियाँ, वृद्धावस्था आदि से शरीर को सुरक्षित रखने के इस विवेचन में प्राणायाम को विशेष साधन माना गया है।

(क्रमांक–195, 200, मंत्र संख्या–722, 766)

परियङ्क योग

परियङ्क योगम् – आगम शास्त्रों की परम्परा में इन्द्रिय-निरोध, प्राण-साधना और मन-साधना पर विशेष बल दिया गया है। वज्रयानी बौद्ध ग्रंथ 'गुह्यसमाज तन्त्र' में योग-प्रसंग के अंतर्गत कुण्डलिनी शक्ति को उद्‌बुद्ध करने का संकेत है। पर्यंक-पलंग के योग का अर्थ प्रायः स्त्री के साथ भोग का लिया गया है। संस्कृत शास्त्रों में खेचरी और वज्रोली को 'मुद्रा' कहा गया है। तिरुमूलर ने इन दोनों के लिये 'योग' शब्द का प्रयोग किया है। 'परि'-कठोर, 'अंग'-पुरुष लिंग के अर्थ में है। वज्रोली मुद्रा भी इस अर्थ में प्रयुक्त होती है। मूलतः यह वामाचार मार्ग है, मूलर ने इससे पूर्व अपने ग्रंथ में वामाचार की निंदा की है अतः 'परियंक योगम्' अंश में उनके कथन सम्भवतः वीर्य-रक्षा और प्राण-साधना करते हुए भी आनन्द प्राप्त करने का मार्ग वर्णित करना है। 'मुद्रा' अर्थात् 'मोद देने वाली' के आधार पर मुद्रा को नारी रूप में कल्पित किया गया। बौद्ध तन्त्रों के

सर्वमान्य ग्रंथों में स्पष्ट उल्लेख मिलते हैं कि मण्डलचक्र और मुद्रा मैथुन में स्त्री-उपभोग एक आवश्यक अनुष्ठान था। डॉ. धर्मवीर भारती ने इस विषय में स्पष्ट किया है कि 'वे प्रज्ञा को परमार्थ रूप में नैरात्म ज्ञान मानते थे और सम्वृत्ति रूप में देहधारी नारी रूप। अतः प्रज्ञा का वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने के लिए पहले नारी रूपिणी सम्वृत्त प्रज्ञा, देहधारिणी प्रज्ञा का उपभोग करना आवश्यक माना गया।' बाद में इन पद्धतियों का इतना विकास हुआ कि वज्रोली, सहजोली आदि पद्धतियों का उल्लेख मिलता है। "इनमें साधक मैथुन के समय मुद्रा-योगिनी को स्खलित करा देता है, किंतु स्वतः क्षरित नहीं होता। इसके अनंतर वह नारी के रज को भी प्राणायाम के द्वारा अपने भीतर ही खींच लेता है और उससे काय, वाक्, चित्त की वज्रता को उपलब्ध कर लेता है।" 'हठयोग प्रदीपिका' के अनुसार पुरुष अथवा स्त्री मेह (बिन्दु झरना) से शनैः शनैः भली प्रकार यत्न से ऊपर को आकुंचन का अभ्यास करे अर्थात् लिंग-इन्द्रिय के आकुंचन से बिन्दु को ऊपर खींचने का अभ्यास करे तो वज्रोली मुद्रा सिद्ध होती है। ....नारी के भग में पड़ते हुए बिन्दु (वीर्य) का अभ्यास से ऊपर को आकर्षण करे अर्थात् पड़ने से पूर्व ही ऊपर को खींच लें, ... इस प्रकार जो योगी बिन्दु की भली प्रकार रक्षा करता है योगज्ञाता वह योगी मृत्यु-विजय करता है क्योंकि बिन्दु के गिरने से मरण और बिन्दु के रक्षण से जीवन होता है अतः बिन्दु की रक्षा करे (*हठयोग प्रदीपिका-3/85, 87, 88*)। तिरुमूलर ने पर्यंक-योग के लिए पुरुष योगी की आयु तीस वर्ष और युवती की आयु बीस वर्ष मानी है। आनन्द के उस चरम शिखर पर पहुँचकर हर्षोल्लास से युवती का तन-मन पूर्णतः थकित हो जाता है परन्तु योगी को तनिक भी थकान नहीं होती और न ही उसका चांदी के वर्ण का वीर्य झरता है (833)। पर्यंक योग को पांच नलिगा (लगभग ढाई घंटे) के आनंदयोग का समय तिरुमूलर ने दिया है तदुपरान्त इस योग में भाग ले रही युवती प्रिय के आलिंगन में ही निद्रामग्न हो जाती है (831)।

पर्यंक योग की साधना द्वारा कुंडलिनी शक्ति को जगाकर सुषुम्ना के मार्ग से ग्रंथि-भेदन द्वारा उसे ब्रह्मरन्ध्र में पहुँचा दिया जाए तो नित्यानंद प्राप्त होता है। डॉ. के. आर. नंजुण्डन का मत है कि नादरूपी शिव और बिन्दु रूपी शक्ति के ऐक्य को योगाभ्यास में अनुभव करना ही पर्यंकी योग का प्रयोजन है। बिन्दु ब्रह्म है, रज शक्ति है, बिन्दु इन्दु है, रज रवि है। दोनों के संगम से परमपद की प्राप्ति होती है। शक्तिचालन से रज और

बिन्दु एक हो जाएँ तो शरीर कांतियुक्त हो जाता है। शुक्र चन्द्र से संयुक्त है और रज सूर्य से। इन दोनों की समरसता को जान लेना योगी की उपलब्धि है। तिरुमूलर ने अन्यत्र स्पष्ट कहा है—पर्यंक योग में योगी बिन्दु को भंग नहीं होने देता, वह उसे ऊर्ध्वमुखी बनाकर भ्रूमध्य में स्थिर करता है, इस क्रिया का सिद्धहस्त निश्चय ही इन्द्रियजयी है (828)। इडा और पिंगला को संकुचित करने में सक्षम योगी चन्द्रमण्डल से झरते हुए अमृत का पान करता है अतः बिन्दु का पतन नहीं होता अतः वह कामवासना रूपी गहन सागर को पारकर सदैव शिव में लीन होकर रहता है (834)। इस मार्ग का सिद्धहस्त योगी भानु के समान तेजोद्दीप्त होता है (835)।

(क्रमांक–215, 216, मंत्र संख्या–828, 835)

अमुरी धारणा

अमुरी धारणा क्रिया की व्याख्या दो प्रकार से की गई है। 'शरीर में व्याप्त जल तत्त्व को साधना-प्रक्रिया के द्वारा आत्मसात् कर लेना' माना जाये तो जल तत्त्व जीवन प्रदान करने वाला, शक्तिशाली द्रव्य उसी भाँति लाभप्रद होता है जैसे विशाल सागर में एक मीठे जल का कुआँ स्थित हो। तिरुमूलर ने इसे शक्तिशाली पेय कहा है अतः इसे मात्र 'मूत्र' के अर्थ में लेना उपयुक्त न होगा। दूसरी व्याख्या 'स्वमूत्र पान' के अर्थ को ग्रहण कर प्रारम्भिक अंश का त्यागकर मध्य के मूत्र के पान को महत्त्व देता है। एक सौ काली मिर्च (सौ बूंद) की मात्रा में इस मूत्र-अमृत का पान सर्वोत्तम औषधि माना गया है। काली मिर्च, आँवला, इमली, और नीम के साथ मिलाकर इसका सेवन शरीर को कोमल बनाता है, बालों को काला करता तथा वृद्धावस्था को दूर रखता है। तिरुवावडुतुरै आधीनम द्वारा प्रकाशित तिरुमंतिरम् की टीका में निम्न संस्कृत उक्ति द्रष्टव्य है—

अमरीं यः पिबेन्नित्यं नस्यं कुर्वन् दिनेदिने।
वज्रोलिमभ्यसेत्सम्यक् अमरोलीति कथ्यते।।

यह विषय पर्याप्त मतभेदों से जुड़ा है; पक्ष-विपक्ष दोनों में अनेक तर्क, प्रमाण, शोध-परिणाम आदि प्रस्तुत किए जाते हैं। हम इसे प्राचीन चिंतक के एक विचार मात्र के रूप में ग्रहण करें और नवीन वैज्ञानिक शोधों को यथोचित् महत्त्व दें, यही उपयुक्त होगा।

(क्रमांक–218, मंत्र संख्या–845)

ॐ, ओंकार, ओ३म्, प्रणव

माडूक्योपनिषद् में *'ओमित्येतदक्षरमिदँ सर्वं तस्योपव्याख्यानं भूतं भवद्मविष्यदिति सर्वमोङ्कार एव। यच्चान्यत् त्रिकालतीतं तदप्योङ्कार एव।'* (1/1) द्वारा इस सम्पूर्ण जगत् को उस ॐकार रूप अविनाशी की निकटतम महिमा का लक्ष्य कराने वाला माना है। भूत, वर्तमान और भविष्यत् सर्वजगत् ओंकार ही है तथा जो इन तीनों कालों से अतीत अन्य तत्त्व है वह भी ओंकार ही है। मूलतः परब्रह्म तत्त्व को साकार, निराकार अथवा सर्वथा निर्विशेष मानने वालों के लिये 'ॐ' कार रूप की यह व्याख्या इस उपनिषद् का मूल विषय है। 'अकार', 'उकार' और 'मकार' के विषय में प्रतिपादित किया गया है कि 'अ' पूर्ण ब्रह्म का पहला पाद है; 'उ' तैजस् नामक दूसरा पाद है और 'म' (जानने वाला, विलीन करने वाला) सृष्टि को स्थूल, सूक्ष्म और कारण रूप से जानने वाला है। कारणजगत् से ही सूक्ष्म और स्थूल जगत् की उत्पत्ति होती है और उसी में उनका लय होता है। 'ओंकार' का ज्ञाता सर्वत्र एक परब्रह्म को ही देखने वाला हो जाता है।

'तैत्तिरीयोपनिषद्' के अष्टम अनुवाक में *'ओमिति ब्रह्म। ओमितीद सर्वम्* ....मंत्र द्वारा प्रतिपादित किया गया है कि 'यह ओ३म् ब्रह्म है', ओ३म् ही प्रत्यक्ष दृष्टिगत समस्त जगत् है, ॐ ही अनुकृति अथवा अनुमोदन का सूचक है। ऊँकार की महिमा का विस्तृत गायन करने वाले इस मंत्र द्वारा 'ॐ' के अति प्राचीन काल में स्वीकृत महत्त्व और गम्भीर, गहन अर्थ का परिचय हो जाता है।

'पातंजल योगसूत्र' के समाधि पाद (सूत्र 23, 24, 25, 27) में ईश्वर-प्रणिधान से शीघ्रतम समाधिलाभ कहा गया है– *'ईश्वरप्रणिधानाद्वा'*। यह ईश्वर क्लेश, कर्म, कर्मों का फल और वासनाओं से असम्बद्ध अन्य पुरुषों से उत्कृष्ट चेतन है। इस ईश्वर में सर्वज्ञता का बीज अतिशय रहित है। वह ईश्वर पूर्व हुए ब्रह्मादिक का भी गुरु है क्योंकि वह काल से परिच्छिन्न नहीं है। इतना विस्तारपूर्वक परिचय देने के उपरान्त पातंजलि का कथन है– *'तस्यवाचकः प्रणवः'*–उस ईश्वर का बोधक शब्द 'ॐ' है। मुण्डक ने इस 'प्रणव' को धनुष, आत्मा को बाण और ब्रह्म को लक्ष्य कहा है। सावधानीपूर्वक उसे बींधना (तन्मय होना) चाहिए (*श्वेताश्वर* 2/4)। इस भाँति भारतीय चिंतन धारा के विविध स्रोतों में 'ॐ' अक्षर का विस्तृत व्याख्यान, विवेचन आदि उपलब्ध है।

डॉ. जनार्दन मिश्र ने 'भारतीय प्रतीक विद्या' में प्रणव अथवा ॐ का

विस्तृत विवेचनात्मक परिचय दिया है (पृ. 29-39)। "पराशक्ति या परमात्मा की निष्क्रियावस्था में उसके स्व-भाव से स्पन्दन होता है जिससे ध्वनि अथवा शब्द उत्पन्न होता है, जो नामरूपात्मक जगत् के रूप में परिणत या परिवर्तित होता है। यह स्पन्दन दो प्रकार का है—सामान्य स्पन्द और विशेष स्पन्द। सामान्य स्पन्द से स्वाभाविक व्यापक ध्वनि उठती रहती है जो सारी सृष्टि का आदि और मूल कारण है। विशेष ध्वनि व्यापक न होकर, सीमित होने के कारण, विशिष्ट नामरूप की सृष्टि करती रहती है।" इस सिद्धान्त को अग्रसर करते हुए प्रतिपादित किया गया है कि सामान्य स्पन्द की आदि और व्यापक ध्वनि 'ॐ' कार है जो शब्द या ध्वनि के रूप में ब्रह्म का प्रत्यक्ष रूप है। विशेष ध्वनि नाना प्रकार के बीजों और वर्णों का रूप ग्रहण कर सूक्ष्म और स्थूल जगत् में काम करती रहती है। यही 'अ' 'आ' इत्यादि वर्णों के नाम से तथा 'श्रीं' 'ऐं' इत्यादि बीजों के नाम से लोक और वेद में प्रचलित है।

'ॐ' कार के दो रूप माने गए हैं—समस्त और व्यस्त। समस्त रूप में यह पराशक्ति, ब्रह्म अथवा शिव का वाचक है और अर्द्धमात्रा सहित ओ३म् इनका वाच्य और वाचक दोनों है। अर्द्धमात्रासहित ओ३म्, शब्दब्रह्म का प्रत्यक्ष रूप है अतः इसमें और परब्रह्म में कोई भेद नहीं। 'अ' 'उ' 'म' के व्यस्त रूप में यह नामरूपात्मक सृष्टि जगत् का वाचक बन जाता है। सौंदर्यलहरी की टीका करते हुए लक्ष्मीकर ने माना है—"नाद से बिन्दु का ऐक्य है, बिन्दु से कला का ऐक्य है और कला से नाद का ऐक्य है।" शक्ति, बिन्दु और नाद में भेद नहीं है। शक्ति के ही बिन्दु और नाद के तीनों बिंदुओं से मिलाकर त्रिकोण बनता है जो ॐ का प्रतिरूप है। तमिल सिद्धों के दर्शन का विवेचन करते हुए डा. श्री टी. एन. गणपति (पृ. 129) ने योगी द्वारा प्राप्त सिद्ध देह' के लिए प्रयुक्त 'प्रणव देह' अथवा 'मंत्रतनु' का उल्लेख किया है। यह 'नाद' शरीर है। तमिल सिद्ध-साहित्य में मानव शरीर को प्रणवदेह मानते हुए 'मन्त्रमेनि चक्करम्'—'मंत्रतनुचक्र' कहा गया है। 'प्रणव' को तमिल में 'अनुच्चरित' कहा गया है अतः शिववाक्कियर ने इस शरीर को 'मूक देह' शब्द दिया है। इडैकाट्टु सिद्धर ने कहा है—मैंने पाया है कि यह शरीर विश्व-नियामक शब्द ऊँकार द्वारा निर्मित है। 'सुषुम्ना' क्योंकि प्रणव देह का आधार है अतः इसे ॐ का स्तम्भ कहा जाता है। पाम्बाट्टि-सिद्धर के इस मत के समकक्ष ही शिववाक्कियर का कथन है कि यह 'प्रणव देह' अथवा 'वेद देह' है।

तिरुमंतिरम् के एक टीकाकार श्री जी. वरदराजन् ने 'ॐ' पर की गई विस्तृत व्याख्या में निम्न विचार व्यक्त किए हैं—

ॐ सभी मंत्रों के पूर्व में संयोजित कर उच्चारणीय मंत्र है। कतिपय ग्रंथ ॐ के अधिकारी परमहंस संन्यासी को ही मानते हैं, कुछ इसे मात्र ब्राह्मणों का अधिकार मानते हैं; कुछ ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य के लिए और कुछ मात्र पुरुषों के लिए मानते हैं स्त्री के लिए नहीं। पातंजल योगसूत्र के अनुसार ईश्वर को जानने के इच्छुक प्राणिमात्र के लिए ओ३म् का विधान है। प्रारम्भ में पातंजल योगसूत्र के *"तस्य वाचकः प्रणवः। तज्जपस्तदर्थभवनम्।"* का उल्लेख किया गया है जिसके अनुसार उस ईश्वर का बोधक शब्द 'ॐ' है। उस प्रणव का जप उस प्रणय के अर्थभूत ईश्वर का पुनः पुनः चिंतन करना है।

श्रीवरदराजन के अनुसार संसार-सागर से तारने वाला, पार उतारने वाला यह मंत्र अनेक अर्थों में व्याख्यायित हुआ है। कुछ अर्थ लें – प्रणव – प्र-अत्यंत, नव-नया अर्थात् अत्यंतनूतन, अक्षयरूप से नवीन, नित्य नवीन। इसी भाँति – प्र-अत्यन्त, नव-प्रसिद्ध अथवा प्र-प्रपंच, न-नहीं व-तुम्हारे लिए अर्थात् इसका जाप करने वाले आपके लिए भव-बंधन नहीं है। प्र-प्रकर्ष से नव-नवीनता, चमत्कार करनेवाला मंत्र है। 'काशी माहात्म्य' के अनुसार ब्रह्मदेव ने केवल मात्र 'ॐ' के जाप से ब्रह्मपद प्राप्त किया। जब वे प्रणव का जाप कर रहे थे तो उनके कंठ से वह (प्रणव) स्वतः बहिर्गत हुआ। स्कंद पुराण के अनुसार इस ओंकार की व्याख्या में असमर्थ होने के कारण श्री सुब्रह्मण्य ने ब्रह्मा को मुष्टि द्वारा शीश में दण्डित किया था। इसी ॐ मंत्र के तात्पर्य का उपदेश शिव के नाथ (गुरु या स्वामी भी और नाथ भी) श्री सुब्रह्मण्य ने शिव को दिया। विश्वसृजन के निमित्त शिवहस्त का डमरू और विष्णु हस्त का पाञ्चजन्य सदैव प्रणव का निनाद करते हैं। प्रणवमंत्र को शैव 'सूक्ष्म पंचाक्षरी' कहते हैं, वैष्णव इसे 'सूक्ष्म अष्टाक्षरी' कहते हैं ऐसे महिमामय प्रणव का ज्ञान प्राप्त करना सर्वशास्त्रसार है।

श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः – ॐ तत् सत् यह तीन प्रकार का सच्चिदानन्द ब्रह्म का नाम है (17/23)। अतः यज्ञ, दान और तपरूपी क्रियाएँ सदा 'ॐ' इस परमात्मा के नाम को उच्चारण करके ही आरम्भ होती हैं (17/24)। श्रीकृष्ण भगवद्गीता में स्पष्ट कहते हैं कि जो पुरुष 'ॐ' ऐसे एक अक्षर रूप ब्रह्म को उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थस्वरूप मेरा चिंतन करता हुआ शरीर को

त्यागकर जाता है वह पुरुष परमगति को प्राप्त होता है (8/13)। 'ॐ' पर-ब्रह्म अर्थात् 'शिव', 'शक्ति' का नाम माना गया है। त्रिकाल 'ॐ' में समाहित है यह तीनों कालों से ऊपर है—माण्डूक्य उपनिषद् के मंत्र का उल्लेख करते हुए टीकाकार का मत है कि ब्रह्म से ही ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, महेश, सदाशिव हुए अतः यह मंत्र पांचों के लिए है, इनसे सृष्ट सकल जगत् का मूल मंत्र है।

भाषाओं की ध्वनियां मूलाधार से निकल कर कण्ठ में आकर तालु से होते हुए ओष्ठ के मिलन के साथ अभिव्यक्त होती हैं। इसी कारण सभी वर्णों से बने मंत्र इस ॐ में समाहित हैं। सभी अक्षर प्रणव से उठकर प्रणव में लीन होते हैं। विवाह-वेदी की ध्वनि, वेद घोष, भीड़ की ध्वनि, सब समष्टि रूप में प्रणव घोष है। उच्छ्वास, निःश्वास में यह ध्वनि सूक्ष्म रूप में रहती है। वाद्ययंत्रों, समुद्र-गर्जन, वन में पक्षियों का कलरव, पशुओं के विविध स्वर, कलकलनाद करते झरनों का स्वर, वायु चलने का रव ये सभी प्रणव का ही तो रूप हैं। श्री वरदराजन के अनुसार ॐ – सर्वम् – समष्टि का प्रतीक है; गणेश की सूंड ॐकार रूप है अतः विनायक भी ॐ ही है। ॐ ही सुब्रह्मण्य है; मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्धि और आज्ञा—इन षड् आधारों को मुखरूप (षण्मुख) में अपनाकर सुषुम्ना में भासित रहता है कार्त्तिकेय। तिरुमूलर ने मंत्र संख्या 523 में प्रतिपादित किया है कि शिव जीवमात्र के रक्षण की परम कृपा और अनुग्रह के साथ उठते हैं; मध्य में प्रकाशित शक्ति रूपा अरुणिम ज्योति के साथ स्थित होकर सदाशिव नामक शिव सादाख्य बनते हैं। फिर इस विश्व-प्रपंच में ईश रूप में, ब्रह्मरूप में, ईश्वर तथा ईशानरूप में प्रकाशित होते हैं। यही ईश्वर का अधोमुख होना है। (जीवोद्धार की परमकृपा के लिए अपने उन्नत स्थल से नीचे उतरकर पंचकृत्य करना-कराना अधोमुख रूप है।) 'ओ३म्' ही सरस्वती है जो वाग्देवता ब्रह्म की जिह्वा में विराजती है। ओ३म् तीन भागों में है अ, उ, म अतः शिव, जीव, जगत् – पति, पशु पाश – का द्योतक है। यह प्रणव मंत्र अरूप, रूप और रूपारूप का प्रतीक है। यह भू, भुवः और स्वः – इन तीनों लोकों में और उनसे परे भी है। इनमें संचार करनेवाला 'पुरुष' है अतः वह जागत्, स्वप्न और सुषुप्ति तीनों अवस्थाओं से युक्त है—तब वह विश्व, तैजस् और प्राज्ञ नामों से जाना जाता है। अमात्रा नामक नाद का ज्ञान हो जाने पर वह तुरीय भूमि को प्राप्त होता है।

तिरुमंतिरम् के चतुर्थ तन्त्र में 'अजपा' शीर्षक के अंतर्गत ॐ कार का विशद विवेचन किया गया है। मंत्र और तन्त्र के रहस्यों के उद्घाटन की

प्रक्रिया में उन्होंने ॐ को सर्वोपरि स्थान दिया है। 'अ' 'उ' और 'म'–ऊँ कार मंत्र अद्वितीय है। इसी से सकल सृष्टि विस्तृत हुई है 'अ'कार शिव है और 'उ' कार शक्ति है, 'अ' और 'उ' के साथ मकार का योग 'माया' का प्रतीक है (885)। जब चेक्किळार 'पेरियपुराणम्' में मंगलाचरण का प्रथम पद गाते हुए आदि, मध्य, अंत और अनन्त, ज्योतिरूप, ज्ञान, निराकार, स्त्री-पुरुष रूप शिव के चिदम्बरम् में हो रहे नृत्य का वर्णन करते हैं तो तिरुमूलर का यह पद साक्षात् रूप धारण कर लेता है–

विशिष्ट अक्षर ॐ कार से
जनित है ताण्डव
यही ताण्डव प्रभु की अनुग्रह लीला है
कनक सभा में
नाच रहे हैं जो ताण्डव नृत्य
वे स्वयंभू हैं, अनादि, अजन्मा हैं। (888)

कनकसभा के अद्‌भुत, आनन्द, अनवरत, प्रलय और संहार नृत्य (887) के संदर्भ में तिरुमूलर कहते हैं कि ताण्डव विशिष्ट अक्षर ऊँकार से जनित है।' अ-जीव, उ-पर, म-मल तथा शि-शिव, व-शक्ति, य-जीव इस भाँति भी अर्थ निकाले गए हैं (975) 'अ' को 'शिव' और 'उ' को शक्ति रूप मान कर तिरुमूलर का कथन है–शिव शक्ति अकार उकार हैं बुद्धि और विचार से परे पराकाश में व्याप्त मानवमन के लिए अग्राह्य चिदाकाश में होने वाला शिवशक्ति का यह अद्‌भुत नृत्य है (891)। 'शि', 'वा' और 'य' को आनन्द का स्रोत, 'शि' और 'य' को ज्ञान मानकर 'शिवाय' को आनन्द नृत्य का प्रतीक मानते हुए पहले 'शिव' और 'व' हुए साधक-चिंतक ने ऊँ के अर्थ का विस्तार कर दिया है। ऊँ कार का 'अ' और 'उ' फिर पांच में परिणत होकर 'शिवायनम' बने। 'शि' और 'व' सदाशिव हैं, ये आगमिक मंत्र हैं। तिरुमूलर का यह चिंतन ग्रंथ के सातवें तंत्र में भी विकास प्राप्त करता है–'मुक्तिदायक ज्ञानस्वरूप नाद ब्रह्म' के रूप में ऊँ को वर्णित करते हुए वे कहते हैं–'नाद जो ऊँ कार है उसमें मधुर तमिल का शाखात्रय – काव्य, संगीत, नाटक – समाया हुआ है।' (2115)

(क्रमांक–226, 228, मंत्र संख्या–885, 888)

नमः शिवाय

तिरुमूलर ने परात्पर प्रभु का निराकार मंत्ररूप 'नमः शिवाय' माना है।

मूलाधार में वह 'नम शिवाय' है, वह्निमण्डल में 'नमवाशिय' है, सूर्य मण्डल में वह 'वाशिय' तथा चन्द्र मण्डल में 'वाशि' के रूप में शोभित होता है। इस कथन की पुष्टि मंत्र संख्या 919 में होती है जहाँ पंचाक्षर में निवसित और व्यक्त होनेवाले परमेश्वर स्थूल से सूक्ष्म और सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होते हैं। 'नम शिवाय' स्थूल है। जिससे लोकलीला होती है, 'शिवाय नम' सूक्ष्म है, जिससे मुक्ति लीला होती है। 'न'—चरण, 'म'—नाभि, 'शि'—स्कन्धद्वय, 'व'—मुख मण्डल 'य'—कपाल इस रूप में परमेश्वर 'नम शिवाय' है। मंत्र 969 में कवि-साधक ने पंचाक्षर की महिमा का गुणगान करते हुए उसमें ब्रह्माण्ड को समाहित माना है, परमेश्वर का अनुग्रह भी इसी में निहित है। हृदय में प्रणव मंत्र के साथ 'नम शिवाय' को निष्ठापूर्वक धारण करना प्रभु-अनुग्रह प्राप्त करने का मार्ग है। 'नम शिवाय' को हृदय में धारण करना सकल कर्म सिद्ध करने और संचित कर्म नष्ट करने का मार्ग है जबकि शिवायनम की धारणा सदाशिव से मिलन का साधन है (983)। 'न' और 'म' जीव तत्त्व है, 'शिव' परतत्त्व है केवल 'शिव' नाम उच्चारण मात्र से प्रभुकृपा की वर्षा होती है। न—तिरोधान शक्ति, म—मल, शि—शिव, वा—कृपा शक्ति, य—आत्मा। तिरोधान एवं मल तथा कृपा शक्ति और आत्मा के मध्य 'शिव' स्थित है। यही मंत्र जब 'शिवाय नम' बनता है तो कृपा शक्ति एक ओर तथा तिरोधान और मल दूसरी ओर हैं आत्मा दोनों के मध्य में है। इसी का अन्य रूप 'कारण पंचाक्षर' है — 'शिवयशि' — यह शक्ति-निपात-युक्त विकसित आत्माओं के लिए है। तिरोधान और मल का लोप होकर 'य' - आत्मा के एक ओर शिव और दूसरी ओर शक्ति हैं इसे 'तलैक्कोल्लि' दोनों ओर अग्नि से युक्त मंत्र कहते हैं।

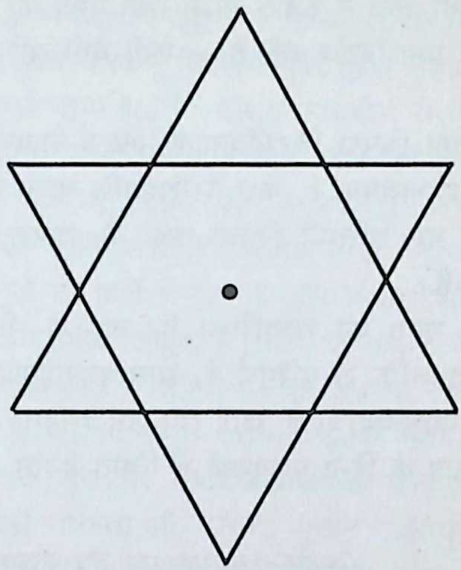
तिरुमूलर ने षड्चक्र को एक यज्ञकुंड के रूप में परिकल्पित कर (1032) उसमें शिवशक्ति युगल की शोभित छवि का वर्णन किया है। उन्होंने शिव-शिवा दोनों के दस मुखों की कल्पना की है। नृत्यरत होने के कारण धरती पर दो ही चरण पड़ते हैं (1033)। यह यज्ञकुंड शिव की पंचकला, पंचभूत और दस दिशाओं के रूप में है; जो साधक निरंतर जाग्रत् रहकर साधना करते हैं वे कुंडलिनी की ऊष्मा में शिव से शाश्वत संयोग प्राप्त करते हैं।

(क्रमांक–229, मंत्र संख्या–890)

त्रिपुरेश्वरी

अंतरी, व्योमरूपिणी, सिन्दूरारुणं विग्रहा, परिपूर्णा, नारायणी, विश्व का

पालन करने वाली, नारायण की शक्ति, श्यामल वर्ण में ईश की शक्ति है। वह महाशक्ति, मनोन्मनी, नानावर्ण, आकार और प्रकृति के साथ विलसित है। दो त्रिकोण एक ऊर्ध्वमुखी और दूसरा अधोमुखी स्त्री और पुरुष तत्त्व के प्रतीक रूप में तथा मध्य में बिन्दु तत्त्व इस देवी त्रिपुरा का चक्ररूप है।



मंत्र 1045 में देवी त्रिपुरा (तिरिपुरै) को अंतःज्योति कहा गया है। प्रकाश का यह कथन परमचैतन्यरूपा परमेश्वरी जगदम्बा के लिए है। वे एक हैं, अद्वितीय हैं। 'अखण्ड चिदेकरस स्वरूप' में स्वातन्त्र्य वश वैचित्र्यमय विश्व प्रतिभासमान होता है। यह देवी ही मामाया, माया, बैन्दव, वैखरी, प्रणव तथा ज्योति (अजपा) छह मंत्र-समूहों में निवसित है (1045)। त्रिपुरा, सुन्दरी, अन्दरी, कुमकुमी, परापरा, नारायणी, ईशी, मनोन्मनी आदि उसी के रूप हैं। परा, अभिरामी, अगोचरी अंतरी, चण्डिका, तपोधनी और पुरातनी, मोहिनी आदि उसी के विविध नाम हैं।

(क्रमांक–272, मंत्र संख्या–1046)

नारायणी, महाशक्ति महेश्वरी.......

विश्वपालन करने वाली नारायणी नारायण की शक्ति है, श्यामलवर्ण में वह ईश की शक्ति है, महाशक्ति महेश्वरी त्रिपुरा-सुन्दरी का मोहक रूपलावण्य है। चरणों में चारु नूपुर, अरुणिम वसन, सुगठित वक्ष प्रदेश,

ललित कर में इक्षु धनुष के संग सुमन शोभित हैं। शक्तियुक्त पाश-अंकुश, शोभित केशराशि पर रत्नजटित किरीट कर्णों में माणिक्य कुंडल – ऐसा अपूर्व रूप सर्वकारणी शंकरी का है। मां चण्डिका का भव्य वेश भी सुमनोहर है, कर्णों में डोल रहे कुंडल, धनुष-सम भ्रूमंगिमा, अंग-अंग से छटकती आरक्त आभा, कंठ में रुद्राक्ष माला तथा पुष्पहार, रत्नजटित मुकुट पर चंद्रकला अपनी प्रभा बिखेर रही है – ऐसी देवी चण्डिका चतुर्दिशाओं की रक्षा करती हैं।

चिरंतना, पुरातना त्रिपुरा चिरयौवना है, अक्षय लावण्यमयी है उसकी केशराशि पर गंगा शोभायमान है, कंठ में शिवमणि माला धारण की हुई है, मां का प्रिय वाहन मत्त हस्तिनी निकट खड़ी है, कमल सम पवित्र देवी त्रिपुरा कमलासना है।

देवी पराशक्ति माया की संचालिका हैं, अणु से भी अणु हैं अर्थात् प्रत्येक प्रमाण अनंत शक्ति से परिपूर्ण है, ज्ञान स्वरूपिणी हैं, समग्र सुखों का मूल कारण है, आनन्ददात्री है, कोई तप उनके बिना अनुष्ठित नहीं हो सकता, उनके अनुग्रह के बिना पंचकृत्यों में नियत देवता अपना कर्म करने में असमर्थ हैं।

(क्रमांक–274, 275, 276, मंत्र संख्या–1050, 1051, 1052)

भैरवी

भैरवी' का परम्परागत स्वीकृत रूप इस प्रकार वर्णित है–"सहस्रों बालसूर्य के समान अरुण कांतिवाली, अरुण अस्त्रवाली, मुण्डमाला युक्त, रक्त से लिप्त स्तनों वाली, जपमाला, पुस्तक (विद्या), अभय और वरद युक्त हाथों वाली, त्रिनेत्र से सुशोभित मुखकमल वाली 'रत्न' की तरह मुकुट में लगे हुए चन्द्रवाली, मुस्कुराती हुई देवी की मैं वन्दना करता हूँ।"

यहाँ देवी का अरुण वर्ण उसका साकार रूप विमर्श है, मुण्डमाला वाक् अर्थात् वर्ण माला है, रक्तलिप्त पयोधर सृष्टि और स्थिति हैं। रक्त, रजोगुण अर्थात् सृष्टि क्रिया है और स्तन, पालन-पोषण करने वाली सत्व गुणात्मक स्थिति है। जपवटिका वाक् का मोक्ष-दायक दूसरा रूप है। विद्या ब्रह्मज्ञान का प्रतीक और त्रिशक्ति–ज्ञान, इच्छा, क्रिया और त्रिज्योति–त्रिनेत्र हैं। मुकुट का चन्द्र, वेदों का सोम आनन्द और अमृतत्त्व है। शिव चिंतकों के अनुसार मन्द-स्मित इच्छा-क्रिया है, वेदान्त का आनन्द और बौद्धों के अनुसार करुणा है। (विस्तार के लिए देखें–भारतीय प्रतीक विद्या)

तिरुमूलर ने 'औं', 'ऐं' मंत्र से अभिलक्षित देवी भैरवी को प्राप्त करने का मार्ग कुण्डलिनी योग द्वारा माना है। (इस संदर्भ में बीजमंत्र विषयक टिप्पणी देखें।) मां भैरवी 'औं' से 'ऐं' तक चौदह कलाओं में व्याप्त है। वह चंद्र की षोडश कलाओं में विराजती है (1075)। भैरवी चौदहवीं कला के अंत में स्थित है; आदि, मध्य और अंत रूप में महाशक्ति चिति के कमल पर सबका आदि और अंत बनकर स्थित है (1076)। महाशक्ति भैरवी में शिव, ब्रह्मा और विष्णु भी समाहित हैं। साधक मनोयोग से ध्यान द्वारा इस त्रिपुरा की कृपा से ज्ञान-ज्योति प्राप्त करते हैं और ज्योतिर्मय रूप प्राप्त करते हैं (1077)। वह भैरवी, ही शांकरी और महेश्वरी है जो शिव की शक्ति है (1078)। हस्तिनी सम गति वाली वह शिवरूपा ही त्रिपुरा है (1079)। भैरवी चतुर्भुजा है, उसके दो करों में त्रिशूल और कपाल शोभित हैं, अन्य दो हाथों में नागपाश और हस्ति अंकुश हैं। शिव के ज्योति स्वरूप पर वह ताम्रवर्ण में शिव का अंग बनकर सुशोभित है। वह शुक के समान हरितवर्णा है, वह सत्यज्ञान रूपा है, उसका मुकुट सहस्र चन्द्र की प्रभा सम प्रकाशित है, सूर्य और चन्द्र उसके नेत्र हैं। अष्टदलकमल के मध्य वह परमशक्ति अवस्थित है, अष्ट-कुमारी शक्तियां और चौंसठ सुन्दर युवतियां उसके चारों ओर विराजमान हैं (1084)। वह सर्वेश्वरी, पराशक्ति नूपुर, कंगण, शंख और चक्रधारी है, वह योगिनी अंडबहिरंड को संरक्षण देती है, सकलदिशाओं में व्याप्त है। वह साधक के हृदयकमल पर अनुग्रह शक्ति के रूप में स्थित है (1085)। विविध सुगंधित पदार्थों सम पुष्पों से शोभित भैरवी मूक मणिमंत्र-योग से प्रसन्न होती है (1086)। शिव, ब्रह्मा और विष्णु द्वारा समादृत वह सृष्टि का आदिकारण है (1087)। यह सृष्टिकारण रूपा देवी जप, मंत्रोच्चार योग, प्राण साधनेवालों के हृदय कमल में स्थित नारायणी है (1088)। तिरुमूलर के अनुसार भैरवी मूलाधार स्थित कुमारी है, आदि मातृशक्ति है; तीन नाड़ियों इडा, पिंगला, सुषुम्ना में से मध्यनाड़ी (सुषुम्ना) में स्थित वह (तन्वंगी) कुण्डलिनी रूपा सर्वसुकृत का आधार है। उसीके द्वारा ईश्वरीय प्रेम का उदय होता है, भय का विनाश होता है (1106)। पूर्ण चंद्र के प्रकाश में स्नात वह सुषुम्ना में कामना-नियंत्रण करती है (1108)। सफल ब्रह्माण्ड की जीवराशि प्रलय काल में उसी में लय होते हैं, देखने में भयंकरी साधक के हृदय में रमी रहती है (1110)। देवी भैरवी आदि है, अनादि भी है, कारण भी है कारण विहीन भी; ज्योति भी है ज्योति रहित भी; सुख-शांति, आनन्द प्रदान करने वाली वह

मनोन्मनी सर्वमंगला मंत्रोपदेश देकर भक्त के हृदय में रमी रहती है (1114)। इसी प्रकार विस्तृत विवेचन करता हुआ साधक कवि तिरुमूलर देवी के अनेक रूपों, गुणों आदि का परिचय देने का प्रयास करता है।

(क्रमांक–282, 283, मंत्र संख्या–1075, 1076)

शिव द्वारा हलाहल पीना

साधनापथ के पथिक के लिए अमरत्व का लक्ष्य निर्दिष्ट है। कुंडलिनी शक्ति के द्वारा मूलाधार से सहस्रार तक पहुँचकर जिस असीम, अनिर्वचनीय आनन्द की प्राप्ति होती है उसका संकेत देकर तिरुमूलर ने शिव द्वारा देवों को अमृत प्रदान कर स्वयं हलाहल पीने की परम्परागत कथा का उल्लेख किया है। इसकी प्रतीकात्मक व्याख्या का प्रयास करें तो क्षीर-उदधि का मंथन अर्थात सत्वगुणी और तमोगुणी शक्तियों के मंथन द्वारा अमृत-प्राप्ति के लिए प्रयास। मंथन से उत्पन्न विष को कौन धारण करे ? विनाश के बिना निर्माण कैसे सम्भव है ? "विष एक स्थूल तत्त्व है, तामसिक शक्ति का परिणाम है, अमृत सूक्ष्म तत्त्व है, सतोगुणी शक्ति का रूप है।" सृष्टि के कल्मष, पीड़ा, यंत्रणा, सब विष ही तो हैं। आर्त प्राणिमात्र को इससे सुरक्षित करने के लिए समस्त विष को धारण कर लेना 'शिव' की कृपा का ही एक विशद् रूप माना जा सकता है।

(क्रमांक–321, मंत्र संख्या–1211)

'अ' कार

तिरुमूलर ने 'अ' कार को प्रभु का रूप माना है, अपितु 'अ' कार स्वयं वही हैं, जब-जब ब्रह्माण्ड अस्तित्व में आता है तो शक्ति इक्यावन अक्षरों में बसती है, उन अक्षरों की आत्मा और प्राण बनकर स्वयं परमतत्त्व निज प्रिया के संग खड़े हो जाते हैं। इक्यावन अक्षरों के चक्र को ज्ञानप्राप्ति का स्थल सहस्रार भी कहा गया है। देवी शक्ति षड् आधारों में अवस्थित होती है, प्राण श्वास द्वारा क्रमशः एक-एक चक्र पार कर उसको अंतस् में देख पाना सम्भव है। सात केन्द्र प्राणवन्त होकर दस वायु एक प्राणरूप धारण करते हैं। इससे पूर्व के मंत्रों में तिरुमूलर ने शक्ति, कुमारी के सर्वव्यापकत्व को स्पष्ट रूप से विवेचित किया है। वह नियंता है; वह विद्या, कला, ज्ञान सर्वत्र अंतरंग है, युग-युग से समान, घुंघराले केशपाश वाली शक्ति जीव में

व्याप्त है (1214)। वही अपूर्व सौंदर्य देवी हंसिनी (सोऽहम्) है, ऊँ में भी वही स्थित है, जो 'नम शिवाय' का जप करते हैं उनको आनन्द प्रदान करने वाली भी वही है (1213)। वह पराशक्ति स्वर्णिम उस जटाधारी परम ईश का अर्द्धभाग है (1217)। तिरुवल्लुवर ने वर्णमाला के प्रथम अक्षर 'अ' के समान विश्व का प्रारम्भ ईश्वर से माना है–

अहर मुदल एऴुत्तेलाम् आदि भगवन्
मुदट्रे उलगु।

श्रीमद्भगवद्गीता में कृष्ण उद्घोष करते हैं–*'अक्षराणामकारोऽस्मि'* (10/33) और मुण्डक उपनिषद् का ऋषि कहता है–*अक्षरात्सम्भवतीह विश्वम्* (1/1/7)। इस विशद चिंतन परम्परा को तिरुमूलर ने नवीन दृष्टि प्रदान की।

(क्रमांक–323, मंत्र संख्या–1219)

भैरवपूजन

भैरवपूजन के लिए सहस्रनाम उच्चार, सहस्र सुमन का सादर अर्पण, मधु और मत्तनर्तन का मार्ग है। चंदन-सुगंध मिश्रण चढ़ाना, विविध सुगंधित द्रव्यों के लेपन का विधान है। कस्तूरी और मार्जार-गंध (मार्जार कस्तूरी, मुश्क बिलाव नाम से विख्यात) के साथ पूजन-आराधन की विधि तांत्रिक प्रक्रिया के अनुकूल है। भैरव अनुग्रह मूर्ति है; त्रिशूल, कपाल, डमरू, पाश, खंडित मस्तक और करवालधारी भैरव जीव को मनोवांछित वरदान प्रदान करता है और सद्यः फलदायक है। (1293, 1295)

(क्रमांक–343, मंत्र संख्या–1295)

नवाक्षरी

श्रीं, ह्रीं, ऐं, गौं, क्रीं, हौं, औं, सौं, क्लीं–नव अक्षरों की माला को तिरुमूलर ने शुभप्रदायिनी विद्या मानते हुए इसकी उपासना कल्याणप्रद मानी है (1321)। 'श्रीं' से लेकर 'क्लीं' तक नवाक्षरी के जाप से श्री शक्ति प्रसन्न होती है जो धर्म की अधिष्ठात्री आदिशक्ति है। देवी का ध्यान नीलोत्पल वर्ण में करने पर मानस में धारण किये सर्व मनोरथ पूर्ण होते हैं, आचरण की पवित्रता द्वारा मां के अनुग्रह की वर्षा प्राप्त होती है। (1325) मंत्र-पारायण विधि का संकेत तिरुमंतिरम् में उपलब्ध है। 'क्लीं' को आदि

मानकर श्रीं, ह्रीं, ऐं, गौं, क्रीं, हौं, औं, सौं, क्लीं के साथ प्रत्येक उच्चार में 'शिवायनम' का पारायण नवाक्षरी मंत्र को सिद्ध करता है (1320)।

नवाक्षरी चक्र के बीज मंत्रों का अर्थ

जिस साधन से मानव ऊर्ध्वगमन की स्थिति प्राप्त करता है, उसके मूल में किसी 'शक्ति' की कल्पना सहज है। उस शक्ति का व्यक्त रूप बीज कहलाता है। 'परा प्रवेशिका' में क्षेमराज का कथन है–

यथा न्यग्रोधबीजस्थ शक्ति रूपो महाद्रुमः
तथा हृदय बीजस्थं विश्वमेतच्चरा चरम्।

जिस भाँति वट-बीज में फल, फूल आदि यहां तक कि समस्त वृक्ष ही समाया हुआ है उसी प्रकार समस्त जगत्-प्रपंच उस परम-तत्त्व में बीज रूप में विद्यमान है। इस अर्थ का विकास करें तो बीज-अक्षर में शक्ति अपने सूक्ष्मरूप में अवस्थित होती है। मंत्रसिद्धि का लक्ष्य बीजमंत्र का विस्फोट अथवा विकास है। बीजाक्षर अथवा उनके समान स्पन्दन सत्य-ज्ञान का साक्षात्कार करवाते हैं। 'मनन' के कारण ही 'मंत्र' का महत्त्व है। बन्धनमुक्ति, अलौकिक आनन्द, मोक्ष अथवा चतुर्वर्ग की प्राप्ति के साधन के रूप में मन्त्र को एक माध्यम माना जाता है। मन्त्रों की संरचना वर्णों द्वारा होती है, वर्ण और उसकी सन्निधि से ब्रह्मस्वरूप शब्दों का प्रकाशन होता है। मुख द्वारा उच्चरित, कर्णेन्द्रिय द्वारा सुने जाकर मेधा द्वारा ग्रहण किए जाने वाले ये शब्द सृष्टि की आदिशक्ति के स्वरूप हैं। मंत्रों का प्रयोग साधना अथवा उपासना में होता है। कतिपय विशेष वर्णों अथवा ध्वनियों को बीजरूप देकर उनका प्रतीकात्मक प्रयोग होता है। सगुण-निर्गुण शक्ति एक ही है। यह साधक पर निर्भर करता है कि वह स्थूल रूप का चिंतन करता है अथवा सूक्ष्म रूप में शक्ति, ईश-परमतत्त्व तथा अन्य रूपों का ध्यान करता है। डॉ. रमाशंकर मिश्र ने 'रूद्रयामल उत्तरतन्त्र-धर्म और दर्शन' नामक ग्रंथ में मंत्र की वाच्य और वाचक शक्ति का उल्लेख किया है। प्रतिपाद्य देवता वाच्य शक्ति है और मंत्रमय देवता, जो मंत्र के स्वरूप का है वाचक शक्ति है। 'साधना के द्वारा जब मंत्र के रूप में शक्ति का जागरण होता है, तब वह शक्ति अद्वैत सत्य का द्वार खोलती है और ब्रह्माण्ड के तत्त्व या सार की अभिव्यक्ति करती है। ...... साधनाशक्ति और मंत्रशक्ति के सामञ्जस्य से ही मंत्र-साधना का फल प्राप्त होता है।'

चिद्शक्ति ही मंत्र के रूप में आभासित होती है। साधक की साधना-शक्ति के द्वारा मंत्र चैतन्य के माध्यम से जागृत होता है। भक्ति के निर्मल प्रकाश और दैवी अनुग्रह के द्वारा ही मंत्र के अर्थस्वरूप तत्व का दर्शन सम्भव होता है। तिरुमूलर द्वारा वर्णित 'क्लीं' से 'सौं' तक के बीज मंत्रों का सांकेतिक परिचय प्रस्तुत है–

1. ***'क्लीं'***–कृष्ण बीज, काम बीज; क–कृष्ण अथवा काम, ल–इन्द्र ई–तुष्टि, बिन्दु–सुख-शांति प्रदान करना। इस मंत्र से प्रारम्भ कर नवाक्षरी का जाप तिरुमूलर के अनुसार अत्यन्त कल्याणप्रद है। अनंत-ज्ञान की प्राप्ति, कष्टकर कर्मों से मुक्ति, वर्ज्य कर्मों से अनासक्ति, सभी कामनाओं की पूर्ति तथा दैवी ज्योति के दर्शन की प्राप्ति। इस चक्र को रजत, स्वर्ण अथवा ताम्र पर अंकित करें, साधना जितनी गहन होगी परिणाम उतने ही श्रेष्ठ होंगे (1324)।

2. ***'श्रीं'***–श्रीं से प्रारम्भ क्लीं तक नवाक्षरी का निरंतर पारायण, चक्र पर ध्यान, हल्दी युक्त चावल और कुशा घास को अर्चनारूप में अर्पित करने से वह धूम्र वर्ण की स्वर्णिम पुष्प सदृश 'श्रीं' देवी सर्व मनोकामना पूर्ण करती है, अपारं अनुग्रह करती है। 'श्रीं' देवी आराधना से काल से रक्षा, साधक को मान-सम्मान की प्राप्ति और प्रकाश-किरण सम यश का विस्तार प्रदान करती है (1326)। स्वर्ण, रजत तथा मूल्यवान रत्नों तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति, ईश्वरीय अनुकम्पा और देवतुल्य जीवन (1327) मिलता है। 'श्रीं' शक्ति की उपासना से गंगाधर शिव के दर्शनों का मार्ग प्रशस्त होता है, मनुष्य अनश्वर मार्ग पर अग्रसर होता है और देवाधिदेव की अनुकम्पा प्राप्त होती है (1328)।

'श्रीं'–श-महालक्ष्मी, र-धनसम्पदा, ई-पुष्टि, नाद-विश्वमातृशक्ति, बिन्दु-दुःखनाश। साधारणतयः तन्त्र में यह मंत्र देवी लक्ष्मी अथवा श्री बीज है। तिरुमूलर ने मौलिक उद्भावना द्वारा उसके अर्थ का पर्याप्त विस्तार किया है।

3. ***'ह्रीं'***–ह-शिव, र-प्रकृति, ई-महामाया, नाद-विश्वमाता, बिन्दु-दुःखनाश। यह शक्ति अथवा मायाबीज के नाम से जाना जाता है। तिरुमूलर के अनुसार ह्रीं से प्रारम्भ कर श्रीं तक नवाक्षरी का जाप और अष्ट दिशा स्वामिनी, तनिनायकी शक्ति का ध्यान करने से मुख ज्योतिर्मय हो जाता है तथा शत्रुनाश, राजशक्ति का सहयोग, देवतुल्य जीवन उपलब्ध होता है। लौकिक आकर्षणों का त्याग कर ईश का अर्द्ध भाग, लोक

विख्यात, दिव्य पुष्पमालाओं से सज्जित 'ह्रीं' शक्ति का ध्यान करो जो नीर भरे नीले मेघों से आवृत कदम्ब वन में शोभायमान है (1329, 1330, 1331, 1332)। मौन जप, चरणों में पुष्प अर्पित कर जो साधक इस शक्ति की उपासना करते हैं वे उसके चरणों को प्राप्त करते हैं।

4. ***'ऐं'***—ऐ-सरस्वती, बिन्दु-दुःखनाश। प्रचलित तंत्र दृष्टि से सरस्वती का बीज मंत्र है। तिरुमूलर के मतानुसार 'ऐं' से प्रारम्भ कर 'ह्रीं' तक नवाक्षरी मंत्र के पारायण से (ऐं, गौं, क्रीं, हौं, औं, सौं, क्लीं, श्रीं, ह्रीं) देवी वागीश्वरी प्रकट होती है। वेद और आगमों द्वारा वंदित, जिह्वा में स्थित, देवी सरस्वती साक्षात् दर्शन देती है। इस चक्र के माध्यम से साधक के लिए मंत्र नटराजराज का रूप प्रत्यक्ष कर देता है। 'ऐं' शक्ति दैवी सत्यरूपा है, शब्द और अर्थ से परे का ज्ञान भी वागीश्वरी के अनुग्रह के फलस्वरूप आत्मसात् हो जाता है (तिरुमूलर 1335, 1336, 1337, 1338)।

5. ***'गौं'***—तिरुमूलर के मतानुसार 'गौं' से लेकर 'ऐं' तक के नवाक्षरी जाप से 'गौं' शक्ति प्रकट होती है। यह देवी छत्तीस तत्त्वों की अधिष्ठात्री 'तत्त्वनायकी' है और सब को वश करने में सक्षम है। इसकी आराधना से समस्त, पाप, काम, क्रोध, अज्ञान आदि दूर होते हैं तथा शील और सत्कर्म प्रशस्त होते हैं। शिव के नृत्य की दर्शक 'गौं' शक्ति का ध्यान जग में सम्मान प्रदायक है और साधक को परोपकारी बनाता है। जीवन प्रदायिनी मातृशक्ति के रूप में यह शक्ति सृष्टि नियामिका है (1339, 1340, 1341)।

6. ***'क्रीं'***—क-काली, र-ब्रह्मा, ई-महामाया, नाद-विश्वमाता, बिन्दु-दुःखनाश। 'क्रीं' से 'गौं' तक नवाक्षरी चक्र का जप और साधना करने वाले साधक को पराशक्ति सिद्ध होती है। तिरुमूलर का कथन है—मैं स्वयं जानता हूँ अर्थात् यह कथन अनुभवसिद्ध है कि जो ध्यानावस्थित होकर 'क्रीं' शक्ति की उपासना करते हैं वे सत्यज्ञानमयी सर्वशक्ति सम्पन्न पराशक्ति बाला त्रिपुर सुन्दरी की कृपा से अहं का परित्याग कर भेदज्ञान से मुक्त होकर अंतःज्ञान से अभिभूत हो जाते हैं। देवी पराशक्ति की शरण प्राप्त कर वे यश के चरम शिखर प्राप्त कर लेते हैं। क्रीं शक्ति के साधक का तो राज्यशक्ति भी सम्मान करती है।

7. ***'हौं'***—'हौं' से लेकर 'क्रीं' तक नवाक्षरी मंत्र का जाप करने से 'हौं' शक्ति प्रसन्न होती है। तन्त्र में प्रायः 'हौं' – ह-शिव, औ-सदाशिव, बिन्दु-दुःखनाश के अर्थ में आता है। तिरुमूलर ने 'हौं' शक्ति के रूप में शिव का अधोमुख ज्योतित करने वाली सदाशिव नायकी का वर्णन किया है। शब्द-

स्पर्श-रस-रूप-गंध की यह अधिष्ठात्री शक्ति है जो जीवमात्र में स्थित होकर पंचेन्द्रिय का संचालन करती है (1350)। 'हौं' शक्ति पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश की विधायिका शक्ति है। वह देवी सर्वत्र प्राणिमात्र के हृदयों में अवस्थित है, वह दैवी सत्यरूपा है, सप्त लोकों में व्याप्त वह शक्ति हृदय-गुहा में दर्शन देती है।

8. *'औं'*—'औं' से लेकर 'हौं' तक नवाक्षरी मंत्र के चक्र की साधना का तत्त्वार्थ है—ॐ। इसके मध्य में स्वयंभू अमृतेश्वरी विलसित है। यह देवी ऋद्धि, सिद्धि और समृद्धि की अधीश्वरी है। साधक जब प्राणायाम द्वारा कुण्डलिनी जागृत कर लेता है तो नित्य नवीन दृश्यों का अंतस् में दर्शन करता है। चक्र में ऊर्ध्वगमन करती ज्योति का साक्षात्कार होता है, उसकी कृपा प्राप्त होने पर शून्यावस्था का अनुभव होता है। पूर्णतः आकाश में व्याप्ति की भावना से साधक देशकाल की सीमा से अनाबद्ध हो जाता है। साधक सप्त सागरों और सप्त लोकों में यश प्राप्त करता है; हृदय पूर्ण रूपेण स्थिर होकर वह देदीप्यमान ज्योति के रूप में उसका ज्ञान प्राप्त कर ल़ेता है (1355, 1356, 1357, 1358)। ('ॐ' का विवेचन अन्यत्र देखें)। 'रुद्रयामल' उत्तरतंत्र में 'उमा' नामक शक्ति को ॐ से अभिन्न कहा गया है। वास्तव में उमा, ओंकार और कुण्डलिनी भी एक ही तत्त्व है।

9. *सौं'*—'सौं' से लेकर 'औं' तक नवाक्षरी मंत्र के यंत्र की साधना से 'सौं' शक्ति तत्त्वार्थमयी ज्ञानज्योति के रूप में प्रकट होती है। विद्युत् लता के समान भासित यह शक्ति शिव तत्त्व की व्याख्या प्रदान करती है। इसका ध्यान करने पर साधक स्वयं ज्योतिर्मय हो जाता है (1359)। इस प्रकाश को प्राप्त करने का उपक्रम अनन्त प्रकाश से परिपूर्ण कर देता है। अनादि सत्य का ज्ञान इस सत्य ज्ञानरूपिणी द्वारा साधक को स्वतः आत्मसात् हो जाता है (1360)। सृष्टि और स्थिति का कारण यह 'सौं' शक्ति ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्याप्त है।

मंत्र के दो धर्म हैं—मनन और त्राण। परनाद और परस्फुरणा का परामर्श मनन है। इस संकोचमय भेदात्मक संसार की रक्षा 'त्राण' है। विविध शक्तियों के पुंजरूप वर्णों से निर्मित तिरुमूलर द्वारा प्रतिपादित मंत्र निश्चय ही शक्तियुक्त हैं। चित्त में इन मंत्रों की विधिवत् धारणा और मनन मंत्र सिद्धि का मार्ग है।

(क्रमांक—350, मंत्र संख्या—1319 से 1360 तक)

चर्या

विविध तीर्थ-स्थलों में स्थित शिवमंदिरों में भक्तिभाव से पूजन, अर्चन चर्या का मार्ग है। प्रभु-चरणों में नत होकर आनन्दर्पूक उनका गुणानुगान हृदय को पवित्र करेगा जिसके फलस्वरूप प्रभु हृदय-मंदिर में निवास करेंगे (1445)। स्निग्ध हृदय से ईश की आराधना चर्या का शील है (1448)। 'शिवज्ञान सिद्धियार' के अनुसार चर्या अर्थात् दास मार्ग में परमेश्वर के मंदिर को धोना, विग्रह की सज्जा के लिए पुष्पचयन और माला पिरोना, पुष्प-वाटिकाओं का निर्माण करना, मंदिर में दीप ज्योतित करना, ईश की आरती, ईश-भक्तों की आज्ञा का पालन, प्रणाम करके उनसे आदेश ग्रहण करना आदि चर्या में कर्त्तव्य हैं। इस चिंतन के मूल में मंदिर संस्कृति के साथ सम्यक् रूप से मानव के सम्बन्धों का विकास है। 'पेरियपुराणम्' में वर्णित मुरुगर, तिरुकुरिप्पु तोण्डर, कलियर आदि भक्तों की गाथाएँ चर्या भक्ति का प्रमाण हैं। शिव की वंदना से पूर्व शिवभक्तों की वंदना का भी विधान है। जब सुंदरमूर्ति नायनार—नम्बि आरूरर—तिरुवारूर के वल्मीकनाथ – शिव मंदिर में प्रविष्ट हुए और द्वार से कुछ दूर बने देवाचार्य मंडप में रहने वाले भक्तों की वंदना किए बिना भीतर जा रहे थे तो विरन्मिण्डर नामक भक्त ने उनकी आलोचना की और आवेश में उनका तथा उनको ग्रहण करने वाले शिव का भी बहिष्कार कर दिया। यह वचन सुनकर सुंदरमूर्ति ने भगवान् के भक्तों की मण्डली—तिरुतोण्डतोगै—का स्तुतिगान किया जिसकी पहली पंक्ति है—*तिल्लैवाऴ् अंदणर्तम् अडियार्क्कुम् अडियेन्*—मैं तिल्लै (चिदम्बरम्) के निवासी भक्तों के दास का भी दास हूँ। इस घटना से चर्या के मूल आधार सेवा, आदर भावना की विशद् भूमिका का ज्ञान हो जाता है। चर्या मार्ग में समर्पण अथवा प्रपत्ति को 'समय दीक्षा' कहा गया है (1450)। 'शिवज्ञान सिद्धियार' में अरुळनन्दी द्वारा वर्णित दास मार्ग तिरुमूलर के मंत्र संख्या 1502 के ही अनुसार है। यहां यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि तिरुमूलर चर्या, क्रिया, योग अथवा ज्ञान सभी मार्गों में 'मन की पवित्रता' को विशेष महत्त्व देते हैं। वेद आगम के पठनपाठन में, शास्त्रचर्चा में मति हो, पुष्प संचय कर पूजन-अर्चन भी होता हो तो भी यदि मन काई से आवृत सरोवर में डूबी शिला के समान हो तो अंतस् में विराज रहे नीलकण्ठ का स्मरण कैसे सूझेगा (1506)?

(क्रमांक–382, 385, मंत्र संख्या–1445, 1448)

क्रिया

क्रिया अर्थात् साकार की पूजा वृषभारूढ़ प्रभु शिव की अनुग्रह-नैया के आश्रय को ग्रहण करने का मार्ग है (1453)। जब भक्त साधना के मार्ग पर अग्रसर होता है तो चर्या और क्रिया के अभ्यास से, ईश्वरानुग्रह से योग का विशुद्ध मार्ग प्रशस्त होता है। वह षडाधार का अनुभव प्राप्त कर परमगुरुकृपा से ज्ञानमार्ग में पहुंचकर ज्योतिर्मय शिव ही बन जाता है (1455)। साधना के इस मार्ग पर भक्त-साधक षट्चक्र साधना करता है, भ्रूमध्य में, निष्कम्प स्थिर होता है; चित्त की पूर्ण एकाग्रता को प्राप्त होता है (1457)। शिव की अर्द्धांगिनी शक्ति ने अष्टदिशा के इस जगत् का सृजन किया। जीव (पशु) का दायित्व है कि वह उस परम की उपासना करे। चर्या से क्रिया और क्रिया से वह विशुद्ध योग से होता हुआ ज्ञान क्षेत्र में पहुंचता है। यहां गुरु प्रदत्त मार्ग से उसका शिव को साथ सायुज्य होता है (1455)। शिव मंत्र के उच्चार की विधि के संस्कार को 'विशेष दीक्षा' कहा गया है (1450)। क्रिया का मार्ग सत्पुत्र मार्ग है। प्रभु पिता है, साधक पुत्र जो प्रतिदिन पूजन, जप, तप, गुण-संकीर्तन, ईर्ष्या मुक्त होकर सत्य आचरण आदि द्वारा प्रभु को स्नेह समर्पित करता है (1496)।

(क्रमांक–387, 389, मंत्र संख्या–1453, 1455)

योग

कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया षट्चक्रों में सम्पन्न करने पर योगी को परमेश्वर अपनी अनुकम्पा प्रदान करता है। ऐसे योगी दण्डसम अचंचल होकर, पूर्ण संज्ञाहीन, उत्तेजना से मुक्त, निज लक्ष्य पर एकाग्र हो जाते हैं (1457)। जब वह कालातीत, नित्य शाश्वत प्रभु अनुग्रह करता है तब ही 'अनुभव' होता है। तिरुमूलर के मत में युगों तक साधनारत रहने पर भी क्षीरसागरशायी और कमलासन उस शिखर तक नहीं पहुँच पाये (1458)। अनुग्रह के परिणामस्वरूप जीव में शिवबोध उसी प्रकार सुगन्ध विकीर्ण करता है जिस भाँति पुष्प की सुगन्ध विस्तार प्राप्त करती है। चित्रलिखित सम यह योगी यष्टि सम निष्चेष्ट हो जाता है जिस पर सुगंध-मार्जार आश्लिष्ट होता है (1459)। योग मार्ग के पथिक को क्रिया और चर्या मार्ग सुलभ है, चर्या से कर्मयोग फलता है, तदुपरान्त 'इच्छा' से मुक्ति मिलती है। योग में आकर मन एकाग्र होकर आदित्य में केन्द्रित होता है और

अंतःज्योति की अनुभूति होती है। कलाओं की शुद्धि 'निर्वाण दीक्षा' द्वारा इस सहमार्ग अथवा योगमार्ग में होती है।

योग समाधि लगने पर भीतर का अनन्त विस्तार दृश्यमान हो जाता है। अंतर्ज्योति में परम ज्योति विलसित होती है। महाशक्ति अंतर् में क्रीड़ा करती है (1490)। नाड़ियां विशुद्ध होकर मेधादि षोडश कलाएँ कलान्त में मिलती हैं। शून्यमंडल में करण, बुद्धि और इंद्रिय का विलय परज्ञान में, परज्योति में होता है (1492)।

(क्रमांक–390, मंत्र संख्या–1457)

कदुम् शुद्ध शैव

पंचम तन्त्र में 'कदुम् शुद्ध शैवम्' शीर्षक से पांच मंत्रों (1438-1442) में तिरुमूलर ने सन्मार्ग के पथिक ज्ञानी शैवभक्त की विवेचना की है। कट्टर शुद्ध-शैव के लिए बाह्य वेश-भूषा, परिधान, आडम्बर सब वृथा हो जाते हैं। आशा-आकांक्षा का बंधन काट कर वह तो निर्मल निरामय में, परमतत्त्व में मनसा-वाचा-कर्मणा लीन हो जाता है। उसके कर्मपाश, वासना, अहंकार आदि स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। जीवबोध का अंत हो जाता है शिव को प्राप्त कर वह शिवज्ञानी बन जाता है (1438)। छत्तीस तत्त्वों से पार होकर वह साधक आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर उसमें स्थित हो जाता है। तिरुमूलर ने इसे 'सिद्धान्त मार्ग' कहा है (1439)। शिव-सायुज्य प्राप्त करने तक ऐसे ज्ञानी साधनारत रहते हैं और फिर शिव में एकाकार होकर शुद्ध शैव कहलाते हैं। शिव, 'मैं' और 'तुम' से परे है; जब स्नेह-भाव से उपदेश मिला कि 'मैं तुझ में, तुम मुझ में' तो फिर 'मैं' और 'तुम' का भेद विनष्ट हो गया, तत्त्वमसि का रहस्य उजागर हो गया (1441)। जब शब्दातीत तत्त्वबोध अनुभवगम्य हो जाता है तो पंचेन्द्रिय शमित हो जाती हैं, शिवज्ञान का मणिमय दीप चित्सभा में देदीप्यमान हो उठता है; प्रभु-तादात्म्य, शिव-सायुज्य का मार्ग प्रशस्त हो जाता है (1442)।

सन्मार्ग में सिद्धि मिलने पर 'अहं' का 'तत्' में विलय हुआ और साधना पथ के पथिक के सकल मल दूर हो गए। इस मुक्त ज्ञानी की भाषा 'मौन' हो जाती है, परज्ञान का यह आनन्द वाणी के लिए अगोचर है (1481)। जीव जब शिव हो जाता है तब ज्ञानी को तत्त्वदर्शन होता है। वह पाश, पाश-मुक्ति का साधन, कर्मफल, पाश से बांधने वाली चेतना आदि सबके भेद जान जाता है (1485)। स्वरूप ज्ञान से युक्त नित्य निरामय आनन्द

स्वरूप में सन्मार्ग ज्ञानी अविचल, अचंचल उल्लसित रहता है (1486)।

(क्रमांक–376, मंत्र संख्या–1438)

तिरुमूल द्वारा प्रतिपादित शैव-पद्धति के मार्ग तंत्र पांच के संदर्भ में

शुद्ध शैव	चर्या	सालोक्य	दासमार्ग	स्वामी-सेवक भाव	शिव का अर्चन, आराधन
अशुद्ध शैव	क्रिया	सामीप्य	सत्पुत्रमार्ग	पिता-पुत्र भाव	इष्ट-देव का आवाहन, बाह्य पूजन
मार्ग शैव	योग	सारूप्य	सहमार्ग	मित्र-भाव	प्राण मध्य ज्योति को योग द्वारा महाज्योति में लीन करना
कटुम् शैव (कट्टर)	ज्ञान	सायुज्य	सन्मार्ग	नायक-नायकी भाव	ज्ञान द्वारा शिव में तन्मय होना

सृष्टिसृजन – शक्ति द्वारा

तिरुमूलर ने सृष्टि का सृजन शक्ति द्वारा माना है। ईश इंगित जानकर समस्त दिशाओं में व्याप्त निखिल भुवन, सचराचर ब्रह्माण्ड की सृष्टि देवी ने की। पंचकृत्य—सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोधान और अनुग्रह—का निर्वाह भी देवी शक्ति करती है। मानव के लिए महिमामय ईश की पूर्णभक्ति से सेवा वरेण्य कार्य मानते हुए तिरुमूलर क्रिया, चर्या, आदि का विवेचन करते हैं।

(क्रमांक–388, मंत्र संख्या–1454)

षट्चक्र

मूलाधार चक्र

'मूलाधार चक्र में स्वयंभूलिंग का बिन्दु, त्रिकोण, वृत्त, शूलाष्टक और

भूतत्त्व का चतुष्कोण है जो दिग्गजों पर है।' चतुरस्त्र और दिग्गज भार का संकेत हैं अतः भूतत्त्व की स्थिरता के द्योतक हैं। मूल आधार स्थिर न हो तो सारी सृष्टि अस्थिर रहेगी। 'गुदा से दो अंगुल ऊपर तथा लिङ्ग से दो अंगुल नीचे' चार अंगुल विस्तृत कंद स्थान के ऊपर त्रिकोणाकार, तप्त स्वर्ण की भाँति कांति युक्त स्थान है। कुण्डलिनी सर्प का सा आकार लेकर अपनी प्रभा से देदीप्यमान जहां निद्रा ले रही है उसी स्थान को मूलाधार कहते हैं। इस कंद के बीच में रक्तवर्ण कामबीज है। इस स्थान पर द्विरण्ड नामक सिद्धलिंग का वास है। इस स्वयंभू लिंग का चिंतन पाप राशि को ध्वंस करता है, प्रत्येक कामना पूर्ण होती है और निरंतर साधना से ज्ञानमार्ग प्रशस्त हो जाता है।

स्वाधिष्ठान चक्र

मूलाधार चक्र से दो अंगुल ऊपर पेडू के पास स्थित यह चक्र सिंदूरी रंग से प्रकाशित छह पंखुड़ी वाले कमल के समान है। इसके मध्य श्वेत अर्द्धचन्द्र स्थित है। इसका तत्त्व बीज 'वं' है। सर्व शरीर में व्यापक होकर गति करने वाले व्यानवायु का यह मुख्य स्थान है। जल तत्त्व से उत्पन्न मूत्र-त्याग शक्ति उपस्थ का स्थान है। तन्त्र-ग्रंथों के अनुसार इस चक्र में ध्यान का फल सृजन, पालन आदि में सामर्थ्य और जिह्वा पर सरस्वती होना वर्णित है।

मणिपूरक चक्र

मणिपूरक चक्र का स्थान नाभिमूल है तथा नील वर्ण के प्रकाश में आलोकित दश-दलकमल के समान इसकी आकृति है। इस चक्र का बीज 'वं' या 'रं' है। यह खानपान के रस को सारे शरीर में उपयुक्त स्थान पर समान रूप से पहुंचाने वाले समान वायु का मुख्य स्थान है।

अग्नि तत्त्व से उत्पन्न चलने की शक्ति पैर का स्थान है। रूप तन्मात्रा से उत्पन्न देखने की शक्ति नेत्र का स्थान है। इसका संकेत रक्त वर्ण का त्रिकोण है। इस चक्र पर ध्यान करने से शरीर व्यूह का ज्ञान होता है; शंकर की प्रीति और तेजस् तत्त्व की विजय होती है।

अनाहत चक्र

मणिपूरक चक्र से ऊपर हृदय में चतुर्थ अनाहत चक्र की अभिव्यक्ति होती है। इसका तत्त्व स्थान धूम्र रंग षट्कोणाकार वायु तत्त्व का मुख्य

स्थान है। यह सिंदूरी रंग के प्रकाश से प्रकाशित बारह दलों वाले कमल के समान है। इस चक्र का बीज 'यं' यंत्र षट्कोण और तत्त्व वायु है। शिवसारतन्त्र के अनुसार इस स्थान में उत्पन्न होने वाली अनाहत ध्वनि ही सदाशिव है और त्रिगुणमय ओंकार इसी स्थान में व्यक्त होता है। यह चक्र प्रकृति सहित ईश्वर से अधिष्ठित है। ध्यान द्वारा अनाहत चक्र का साक्षात्कार होने पर चक्र के अधिष्ठातृ-देवता साधक को आनन्द प्रदान करते हैं तथा चक्र का तत्त्व वायु योगी की इच्छानुसार प्रवाहित होता है।

विशुद्ध चक्र

शक्ति केन्द्र विशुद्ध चक्र कण्ठ में स्थित है। श्वेत वर्णात्मक षोडश दलात्मक विशुद्ध चक्र के प्रत्येक दल में एक एक स्वर-वर्ण अंकित है। 'यह विविध रंगों के पूर्णचन्द्र सदृश गोलाकार आकाश तत्त्व का मुख्य स्थान है। इसका तत्त्व बीज 'हं' है। यह शब्द-तन्मात्रा से उत्पन्न श्रवण-शक्ति और आकाश तत्त्व से उत्पन्न वाक्शक्ति का स्थान है। इस स्थान पर मन की स्थिति होने के कारण मन आकाश के समान विशुद्ध हो जाता है। यंत्र के देव अर्द्धनारीश्वर रूप सदाशिव हैं।

आज्ञा चक्र

आज्ञा चक्र शरीर के भ्रूमध्य में अभिव्यक्त होता है। 'योगसिद्धान्त चन्द्रिका' के अनुसार यह मुक्ताकार 'ऊँ' बीज से अन्वित, अविद्यावान जीव से अधिष्ठित, चतुष्कोण, 'हं' तथा 'लं' वर्ण से मुद्रित द्विदलात्मक है। यह भैरवानन्द नाम के शिवलिंग से युक्त है। एक अन्य विचारानुसार ज्ञानदाता शिव अपनी चतुर्हस्ता, षडानना हाकिनी शक्ति के साथ इसके अधिपति देवता हैं। इसका यंत्र लिंगाकार है। 'ज्ञानसंकलिनी तन्त्र' के अनुसार इस स्थान पर प्राण तथा मन के स्थिर हो जाने पर सम्प्रज्ञात समाधि की स्थिति आ जाती है। मूलाधार से इडा (गंगा), पिंगला (यमुना) और सुषुम्ना (सरस्वती) पृथक्-पृथक् प्रवाहित होकर इस स्थल पर मिलती हैं अतः इसे त्रिवेणी भी कहते हैं। "आज्ञाचक्र ही सर्वशास्त्र सम्मत हृदय है, स्थूल बुद्धिवाले अन्य स्थूल स्थान को हृदय कहते हैं।"

षट्चक्रों के विषय में स्वामी विष्णुतीर्थ के 'देवात्मशक्ति' नामक ग्रंथ में यह कथन आधुनिक ढंग से इस विषय को प्रस्तुत करता है—षट्चक्र यद्यपि मेरुदण्ड में स्थित होते हैं किन्तु वे सम्पूर्ण स्वचालित, संवेगी, प्रेरक और ज्ञानेन्द्रिय तन्त्र को नियंत्रित करते हैं। स्वैच्छिक संस्थान के विभिन्न केन्द्र

व वे संवेगी शिराएँ जो मनुष्य के संकल्प से कार्य करती हैं, परस्पर सम्बद्ध होने के कारण एक दूसरे को प्रभावित करती हैं। मेरुदण्ड में एक ओर जहां इसके प्रत्येक कशेरुक के माध्यम से शरीर के दोनों ओर से दो नाड़ियां पहुँचती हैं, वहीं दूसरी ओर से उससे कपाल की ओर मस्तिष्क के विभिन्न केन्द्रों के लिए जालक – जो वस्तुतः संवेगी शिराएँ है – पहुँचाये जाते हैं।

(क्रमांक–390, मंत्र संख्या–1457)

चर्या, क्रिया, योग, ज्ञान

अरुळ्नंदी शिवाचार्य के अनुसार योगी योग द्वारा ईश की प्राप्ति कर सकता है, उसके लिए चर्या और क्रिया मार्ग भी सुलभ है। तिरुमूलर स्पष्ट कहते हैं कि योगी के लिए तीनों मार्ग सुलभ हैं। योग सहित क्रिया और चर्या के मार्ग पर अग्रसर योगी का कर्मफल छूटता है, इच्छाओं से छूटकर उसका मन 'योग' में एकाग्र होकर अंतःज्योति, आदित्य में पूर्णतः केन्द्रित हो जाता है। संशयातीत विशुद्ध ज्ञान से युक्त साधक के लिए निज आवास ही ब्रह्मस्थान है, सकल चराचर उसके बंधुबांधव हैं; उसे शील, सदाचार स्वतः सिद्ध होते हैं (1470)। ये साधक ज्ञानी आगम-वर्णित शिवतत्त्व को हृदयंगम कर लेते हैं, परात्पर की अनुग्रह ज्योति को निज अंतर् में अनुभूत कर लेते हैं, शिवयोग में सिद्ध होकर वे सन्मार्ग के पथिक कहलाते हैं (1477)। सन्मार्ग का प्रारम्भिक सोपान श्रद्धायुक्त दर्शन, पूजन, मनन, स्पर्शन, कीर्तन और पादसेवन है। इससे गुरुभक्ति प्राप्त होकर, सन्मार्ग का मार्ग प्रशस्त होता है (1479)।

(क्रमांक–395, मंत्र संख्या–1465)

षड्चक्र-साधना–विकास-क्रम

'शिवज्ञान सिद्धियार् सुपक्कम्' के अनुसार चतुर्विध मार्ग का आचरण अर्थात् ज्ञान, क्रिया, योग और चर्या ये सब ईश्वर की ही इच्छा है। ज्ञानी पुरुष को चारों ही मार्गों का अनुसरण करना चाहिए। तिरुमूलर मानते हैं कि जब भक्त साधना के मार्ग पर अग्रसर होता है तो क्रिया और चर्या के अभ्यास से और प्रभु-अनुग्रह से योग का मार्ग प्रशस्त होता है तब वह षडाधार का अनुभव प्राप्त कर ज्ञान-मार्ग में विचरण करता है और परमगुरु

की असीम कृपा से ज्योतिर्मय शिव बन जाता है। तदुपरान्त साधना-प्रक्रिया का वर्णन करते हुए तिरुमूलर कहते हैं कि षट्चक्र-साधना के बल से योगी भ्रूमध्य, अनाहत में पहुँचता है, पूर्ण शान्त होकर निज लक्ष्य पर चित्त की एकाग्रता द्वारा ईश-अनुग्रह से सिद्धि प्राप्त करता है (1447)। जीव के अंदर शिवबोध पुष्प में व्याप्त गंध के समान महक उठता है (1459)। वह परमेश्वर अज्ञान के मिट जाने पर तथा चित्त शुद्ध हो जाने पर अंतस् में ही मिल जाता है (1460)।

(क्रमांक–399, मंत्र संख्या–1455)

शिव एक ही हैं

सृजन में अरुणिम, पालन में श्यामल वर्ण, संहार और तिरोधान में हरित वर्ण, अहंकार के कृष्णवर्ण हाथी को विनष्ट करने वाला 'शिव' एक ही है, जिसके हाथ में अग्नि-ज्वाला है। यहां मूलतः ब्रह्मा, विष्णु आदि को शिव से उद्भूत मानने के पूर्व-चिंतन की पुष्टि ही है।

(क्रमांक–422, मंत्र संख्या–1520)

ज्योतिसंधान – शिवमय होना

तमिल प्रदेश में ईसा पूर्व से धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना के नित्य नवीन चिंतन-आयाम विकसित हुए। मुरुगन, शिव, विष्णु आदि की परम्परा के साथ ही जैन और बौद्ध चिंतन धाराएँ तमिलनाडु में विकसित हुईं। जहां विविध धर्म, सम्प्रदाय और दार्शनिक चिंतन हों वहां धर्म और सम्प्रदाय के आधार पर मतभेद होना स्वाभाविक है। तिरुमूलर जैसे साधक को उचित प्रतीत हुआ कि शैव सिद्धान्त की श्रेष्ठता प्रतिपादित करने का उपक्रम करें। धर्म और सम्प्रदाय के विविध रूपों में खण्डन-मण्डन के स्थान पर उनका स्पष्ट उद्घोष है – 'छल प्रवंचना के मोहक वचनों द्वारा किसी धर्म की उत्कृष्टता सारयुक्त नहीं। संशय की समग्र सीमाओं से परे, तत्त्वातीत, परमतत्त्व की शरण ग्रहण करना ही उस आनन्दस्वरूप को प्राप्त करने का प्रथम सोपान है (1545)।' तुम्हारे अंतर् में भासित ज्योति लक्ष्य-संधान का मार्ग स्पष्ट करेगी; अग्नीश्वर महादेव तो तुम्हारे भीतर है, जो विलीन होना जानते हैं उन्हें उनका अनुग्रह मिलेगा (1547)। उसी आदिदेव ने स्वर्ग और मर्त्यलोक की सृष्टि की, देव और मनुष्य बनाए; छह आंतरिक मार्ग

अपनी नगरी तक पहुंचने के लिए निर्मित किए (1557)। विभिन्न धर्ममार्गी वितंडा में उलझे हैं; मतवाद के आधार पर संघर्ष करने वाले उस श्वान के सदृश हैं जो पहाड़ी के निकट अपने ही स्वर की प्रतिध्वनि सुनकर वृथा भौंकता है (1558)। अगणित जीवराशि, सप्तलोक तथा सभी सागरों में व्याप्त परमेश्वर की यह सृष्टि मां पराशक्ति के साथ अद्भुत संयोग का परिणाम है, शिव शक्ति से अभिन्न है सबका आदि और अंत हैं (1570)।

योगसमाधि की स्थिति आ जाने पर आचरण-अनुष्ठान का कोई अर्थ नहीं, अनासक्त हो जाने पर ध्यान की आवश्यकता निःशेष हो जाती है इस भाँति तपस्वी के मार्ग का विवेचन करते हुए समाधि के महत्त्व का प्रतिपादन भी हो गया है।

इस संदर्भ में तिरुमूलर के चिंतन के एक पक्ष को विवेचित करना उपयुक्त होगा। पत्र-पुष्प संचय करके इष्टदेव की पूजा; पुष्पों की माला को प्रभु-अर्पित करना; शास्त्रों, धर्मग्रंथों का अध्ययन आदि सब करने पर भी यदि हृदय द्रवित नहीं हुआ, प्रभु-प्रेम में गद्गद् होकर अश्रुकण नहीं बहे तो सब वृथा है। परन्तु तपश्चर्या द्वारा साधना के मार्ग पर अग्रसर होकर यदि सहस्रार में ज्योतिरूप प्रभु के दर्शन कर लिए तो जीवन का लक्ष्य पूर्ण हुआ (1640)। तपस्या का अर्थ इन्द्रियनिग्रह कर ईशमय हो जाना है (1643)। भूख की व्याकुलता से यदि तपस्या-मार्ग का पथिक मार्गभ्रष्ट हो जाए तो उसकी स्थिति उस व्यक्ति की है जो नदी के मगर से बचने के लिए तट पर जाए और भालू के पंजे में बंध जाए (1642)। गहन तप द्वारा ही मन की समग्र शक्तियां शिवमय होंगी; शिवानन्द मिल जाने पर, शिव-सायुज्य हो जाने पर तपस्या की आवश्यकता सदा के लिए समाप्त हो जाएगी। यह शिवमय होना ही सिद्धि और मुक्ति है (1644)।

(क्रमांक–426, मंत्र संख्या–1545)

शाम्भवी, भैरवी, खेचरी आदि

शाम्भवी मुद्रा

मूल और उड्डीयान-बन्ध के साथ सिद्धआसन अथवा पद्मासन से बैठकर नासिका के अग्र भाग अथवा भ्रूमध्य में दृष्टि को स्थिर करके ध्यान जमाना शाम्भवी मुद्रा कहलाती है।

'हठयोग प्रदीपिका' के अनुसार जिसके चित्त, पवन भीतर के लक्ष्य में

लय हैं और जिसके नेत्रों के तारा निश्चल हैं जो बाहर के विषयों को देखता हुआ भी न देखने के समान हो, ऐसे योगी को शाम्भवी मुद्रा होती है। यदि यह गुरुप्रसाद से प्राप्त हो जाये तो योगी को शून्य, अशून्य से विलक्षण शिव का पदरूप परमतत्त्व प्रतीत होता है (4/37)। शांभवी मुद्रा में बाहर दृष्टि से बाहर की स्थिति है और हृदय भावना का स्थान है–

अंतर्लक्ष्यं बहिर्दृष्टिनिमेषोन्मेषवर्जिता।
एषा सा शांभवी मुद्रा वेदशास्त्रेषु गोपिता। (4/36)

चित्त को लय करने के लिए प्राणलय का साधन शांभवी मुद्रा में भीतर के जो आधार आदि चक्र हैं उनके मध्य अभीष्ट चक्र में अंतःकरण की वृत्ति हो और बाहर के विषयों में दृष्टि निमेष और उन्मेष से वर्जित हो (पलकें नहीं झपकें), वेद और शास्त्रों से गुप्त यह मुद्रा शांभवी कहलाती है।

खेचरी मुद्रा

'पातञ्जलयोग प्रदीप' के अनुसार 'जीभ को ऊपर की ओर उलटी ले जाकर तालु-कुहर (जीभ के ऊपर तालु के बीच का गढ़ा) में लगाए रखने का नाम खेचरी मुद्रा है।' इसके निमित्त जिह्वा को बढ़ाने के लिए छेदन, चालन और दोहन नामक तीन साधन किए जाते हैं। इस मुद्रा के विषय में सक्षम गुरु द्वारा मार्ग-प्रदर्शन अनिवार्य माना जाता है। अनुभवहीन साधक इस मुद्रा के करने के प्रयास में शरीर को हानि पहुँचा सकता है। हठयोग-प्रदीपिका में खेचरी मुद्रा का परिचय इस भाँति है–-

'इडा और पिंगला नाम की जो सव्य दक्षिण नाड़ी हैं उनमें स्थित प्राणवायु जिस मध्य-क्षेत्र में विचरण करता है वहां खेचरी मुद्रा स्थित होती है। इडा और पिंगला के मध्य में शून्य (आकाश) है; वह शून्य प्राणवायु को ग्रहण करे और शून्य में प्राण की स्थिरता हो, उस शून्य में खेचरी मुद्रा स्थिर होती है। भृकुटी के मध्य में सब आकाशों का समन्वय है; भ्रू का मध्य पांच स्रोतों से युक्त है उस आकाश में भली प्रकार स्थित मुद्रा खेचरी है। इस खेचरी मुद्रा से चंद्रमा से अमृत की धारा उत्पन्न होती है, अनुपमेय सुषुम्ना को पश्चिम तथा पूर्व मुख से जिह्वा से पूर्ण करे। इस मुद्रा से देह से बाहर का पवन भीतर नहीं जाता, देह के मध्य का वायु भी बाहर न जाकर लीन हो जाता है किंतु मन सहित पवनप्राण की स्थिरता के स्थान ब्रह्मरंध्र में निश्चल हो जाता है। इसके निरंतर अभ्यास से वायु के लय स्थान में मन भी लीन हो जाता है। योगी पादतल से मस्तक तक देह को

चन्द्र से निकले अमृत का सेवन कराता है, जिससे योगी अमृत-स्नान करता है।

(क्रमांक–443, मंत्र संख्या–1612)

तपस्वी

'तवम्' और 'तव निन्दै' शीर्षकों से तिरुमूलर ने तपश्चर्या में संलग्न तपस्वियों का गुणानुगान किया है। पवित्र संयमी तपस्वी का हृदय विचलित नहीं होता; वह यमभय से मुक्त, अनासक्त, कर्मबंधन से मुक्त होकर जीवन-यापन करता है। कोई कर्म नहीं, कर्म का फल भी नहीं, वह तो ऐसी अवस्था में हैं जहां न दिन का बोध है और न रात्रि का (1624)। श्रेष्ठ तपस्वी अन्तर्मुखी हो जाता है, शास्त्र-चर्चाओं से ऊपर उठकर आसन पर साधनालीन होता है। स्वर्ण-वर्ण प्रभु, दीर्घ जटाधारी शिव को लौकिक नेत्रों से देख पाना सम्भव नहीं। कठोर तपस्या में लीन साधक की अंतः ज्ञानदृष्टि से वह चन्द्रमौलि दृष्टिपथ में आता है। वह परमतत्त्व, परात्पर शिव समग्र जीवन को सदा के लिए आनन्दमय कर देता है। इस नश्वर जगत् में तपस्या ही एकमात्र अनश्वर सम्पदा है। इससे अमरत्व की प्राप्ति होती है (1629)। तिरुमूलर के मतानुसार ज्ञानप्राप्ति के लिए तप-अनुष्ठान आवश्यक है पर ज्ञानसमाधि के उपरान्त तपश्चर्या की आवश्यकता नहीं रहती। 'स्व' को 'पर' में रूपान्तरित करने के लिए तप की अनिवार्यता नहीं है।

(क्रमांक–446, मंत्र संख्या–1624)

गुरु, शिवगुरु दर्शन, गुरुचरणकृपा

तिरुमूलर ने 'गुरु' के महत्त्व का प्रतिपादन विस्तार से किया है। 'शिव' स्वयं 'गुरु' हैं, शिवज्ञानी शिव ही है, अतः जो लोग नहीं जानते कि गुरु ही शिव हैं, वे अज्ञानी हैं। 'गुरु स्वयं शिव है, हमारा मार्ग दर्शक है' (1581)। गुरु सत्, असत् और सद्सत् का ज्ञान प्रदान करता है। शरीर के बन्धन से मुक्त होने का उपाय स्पष्ट करता है; गुरुकृपा हो जाने पर अष्ट सिद्धियों की शक्ति, अष्ट शक्तियों की पवित्रता, जीव के शिव रूप में पहुंचने की प्रक्रिया, योग की रहस्यपूर्ण शक्तियां, मंत्र, भक्ति, ज्ञान सब सुलभ हो जाता है (1575)। मनःशुद्धि द्वारा गुरु दैवत्व प्रदान करता है, अज्ञ व्यक्ति इसका

अनुभव नहीं कर पाता जबकि पवित्र हृदय कृतज्ञतापूर्वक उस ज्ञान को ग्रहण करते हैं। मिथ्या के सत्य में लीन होने, सत्य की सर्वव्यापकता और शिवानुग्रह प्राप्त करने का अद्वितीय अनुभव ऐसे शुद्ध हृदय जीव को प्राप्त होता है (1580)।

तिरुमंतिरम् के तन्त्र छह के प्रारम्भ ही में दो खण्ड 'शिवगुरु दर्शन' और 'गुरुचरण कृपा' में समग्रतः बीस मंत्रों में गुरु, गुरु और शिव का ऐक्य, गुरुचरण महिमा, गुरु द्वारा शिव प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करना, जीव को शिव ही बना देना आदि विषयों का विवेचन है। गुरु शिवज्ञान प्रदाता है। शिवज्ञान से प्रज्ञा ज्ञानयुक्त हो जाती है, अपूर्व सिद्धियाँ हस्तगत हो जाती हैं, मुक्तिमार्ग स्वतः स्पष्ट हो जाता है, शिवज्ञान से शिव-सामीप्य मिलता है जो अवर्णनीय शिवानन्द है। गुरुकृपा हो जाने पर साधक निर्मल, निष्पाप, निष्कलंक होकर शिवरूप ही हो जाता है। उस शब्दातीत स्थिति में वह स्नेहपूर्ण 'ज्योति' साधक को अहं और आत्म-श्लाघा आदि दोषों से मुक्तकर अपने चरणकमल में स्थान देती है (1595)। गुरुनाथ नंदी की निस्सीम कृपा से साधक ऐसे दृश्य देख पाता है जो नेत्रों से देखना सम्भव नहीं, ऐसा आनन्द प्राप्त करता है जिससे मन कभी अघाता नहीं है; सदैव आनन्दमय रहता है, वह नाद सुन पाता है जिसका अंत नहीं; वह बोध प्राप्त करता है जो नादान्त है (1610)। अरुळ्नंदी शिवाचार्य ने गुरु के महत्त्व को यथोचित मान दिया है—उनके मत में मनुष्य तन्त्रशास्त्रों में उल्लिखित मंत्र, औषधि, योग, धातु, रसायन आदि का ज्ञान अर्जित कर सकता है। वेद, शास्त्र, भूत, भविष्य और वर्तमान तथा अनन्त अद्भुत सिद्धियों का ज्ञान तथा उनकी प्राप्ति भी सम्भव है किन्तु 'परमात्मा का ज्ञान केवल गुरु की असीम कृपा से ही प्राप्त हो सकता है और किसी उपाय से प्राप्त नहीं हो सकता।' उपर्युक्त शक्तियां भी गुरुकृपा से मिल सकती हैं। (4/6)

(तन्त्र–6 प्रारम्भ–1576 से)

'लिंग', पिंडलिंग, सदाशिव, आत्मलिंग, ज्ञानलिंग आदि

"'लिंग' शब्द का व्यवहार 'बोधक चिह्न' के अर्थ में होता है और जब यह ब्रह्मबोधक चिह्न माना गया है तब शिवलिंग, विष्णुलिंग, ज्योतिलिंग, गगनलिंग आदि नामों में प्रयोग किया गया है।" 'भारतीय प्रतीक विद्या' में डॉ. जनार्दन मिश्र का यह कथन शिवलिंग के मूल अर्थ को ध्वनित करने में हमारा मार्ग-दर्शन करता है। ऋग्वेद, वाल्मीकि रामायण, महाभारत

आदि में किसी न किसी संदर्भ में 'लिंग' का उल्लेख हुआ है।

कूर्म पुराण, शिव पुराण, वायु पुराण, लिंग पुराण, मत्स्य पुराण और सौर पुराण आदि में एक कथा आती है जिसमें अपने महत्त्व को लेकर ब्रह्मा और विष्णु में विवाद हुआ। उसी क्षण उनके मध्य एक भयंकर ज्वालायुक्त अग्निस्तम्भ प्रकट हुआ। उसमें प्रकट होकर शिव ने कहा कि जो मेरे आदि अथवा अंत का पता लगा लेगा, वही श्रेष्ठ माना जाएगा। विष्णु पाताल की ओर गए और ब्रह्मा आकाश की ओर। परन्तु दोनों में से कोई भी उस स्तम्भ के आदि-अंत का पता न लगा सका। इससे शिव के स्तम्भ, संकेत चिह्न लिंग का प्रतीक रूप होना स्वतः स्पष्ट है। यह ब्रह्मबोधक चिह्न, शिवलिंग, ज्योतिलिंग, ज्ञानलिंग, गगनलिंग आदि नामों से अभिहित हुआ है। लिंग पुराण का 'सर्वं लिंगमय लोकं सर्वं लिंगे प्रतिष्ठितम्' (96/13)—यह समस्त लोक लिंगमय है और सभी कुछ लिंग में ही प्रतिष्ठित है तथा 'लिंगवेदी उमादेवी हैं, लिंग साक्षात् महेश्वर हैं', तथा इसी भाँति के अनेकानेक उदाहरण पौराणिक चिंतन में लिंग के प्रतीकरूप को, बोधक चिह्न को प्रकट करते हैं। तन्त्रालोक (4/131) के अनुसार 'विद्वज्जनों के विचार में लिंग शब्द से सृष्टि और संहार के कारण का ज्ञान होता है। 'ल' से लय और 'ग' से आगमन का बोध होने के कारण अव्यय पद का बोधक है। पूजा में स्थिर होकर जब लिंग मन में स्थिर होता है तब एक ही स्पंदन के तीनों भेद इसमें स्थिर हैं। मिट्टी, पत्थर, धातु, रत्न आदि के लिंग की पूजा न करें, आत्मिक लिंग का पूजन करें। आत्मिक लिंग के आधार पर बाहर के लिंग बने हुए हैं। पुराण ग्रंथों के अतिरिक्त तंत्रों में शिवोपासना और लिंगार्चन का विशद प्रामाणिक विवेचन हुआ है।

डॉ. द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल ने 'शैव-प्रतिमा-लक्षणम्' में लिंग व्युत्पत्ति के विषय में उल्लेख किया है—'प्रलयकाल में समग्र सृष्टि जिसमें लीन हो जाती है और पुनः सृष्टिकाल में जिससे सृष्टि होती है, उसे लिंग कहते हैं (पृ. 110)।' श्री रामदास गौड़ के मतानुसार 'आकाश की अनन्तता तो इस लिंग की अपेक्षा अत्यधिक होगी और वह भी 'लिंग' है। यह महान् ज्योतिर्लिंग तो प्रकृति का, आग्नेय वस्तुमात्र का एक विशाल समूह है जिसका आकाश की अपेक्षा आद्यन्त होने पर भी जो ब्रह्मा और विष्णु समान ईश्वरों को भी अनादि-अनन्त है। निदान अनन्तकोटि विश्व लिंगमय है और विश्वों से परे सगुण परात्पर ब्रह्म का आकार भी लिंग हैं ......" (कल्याण, शिवाङ्क)।

इस शरीर में हृदय रूपी गर्भगृह में दयामय शिव का पावन मंदिर है,मुख उनका गोपुरद्वार है। विवेकयुक्त जन जानते हैं कि जीव ही है शिवलिंग और मायामय पंचेन्द्रिय ही जाज्वल्यमान दीप हैं (1823)। तिरुमूलर ने प्रभु के प्रति भक्तिपूर्ण गीतों को 'बलि' माना है। परमशक्ति परापरा के संग शिव हैं, उनमें ही सदाशिव हैं। उनके ऊर्ध्वमुख ईशान की वंदना करने वाले स्वयं 'शिव' हो जाएँगे (1825)। इससे पूर्व 'अण्ड लिंगम्' शीर्षक से तिरुमूलर प्रतिपादित कर चुके हैं कि अष्ट दिशाएं लिंग हैं, चौंसठ कलाएँ लिंग हैं, सृष्टि का सृजन लिंग से है (1712)। मंदिर के ऊपर निर्मित 'विमान' स्थूल लिंग है, गर्भगृह में प्रतिष्ठित सदाशिव सूक्ष्म लिंग है और बलिपीठ स्थल भद्रलिंग (वीरभद्र-शिव) (1718)। लिंग स्थापना के लिए मुक्ता, मणि, चंदन काष्ठ, शिला आदि की स्थापना के विषय में वर्णन करने के उपरान्त मूलर ने दही, घृत, दुग्ध, मोम, ताम्र, पारा, ईंट, बिल्व, और कोन्ऱै (दालचीनी) के स्वर्णवर्ण पुष्पों द्वारा भी शिवलिंग बनाने की पद्धति बताई है। धरती उसकी शक्तिपीठ है, आकाश पवित्र लिंग है, उद्वेलित सागर उसकी स्नान स्थली है....... आदि में भी लिंग का सूक्ष्म अर्थ संकेतित है (1725)। पिण्डलिंग शीर्षक के अंतर्गत कथन है कि मानवकाया पवित्र चिदम्बर है और स्वयं शिवलिंग है। इस रंगमंच पर नटराजराज आनन्दनृत्य कर रहा है (1726)। प्रभु ने जब जीवालय को शिवालय बनाने का संकल्प किया तो उन्होंने पंचेन्द्रिय और दसों नाड़ियों को द्वारसम बनाकर देहरूपी मंदिर में पधारने का अनुग्रह किया (1729)। तिरुमूलर का यह कथन रामलिंग स्वामी के काव्य में एक 'अनुभव' बना और 'तिरुअरुट्पा' में उन्होंने कहा–

हे प्रियतम ! तेरी महिमा अपरम्पार है !
स्वर्गलोक के लिए दुर्लभ मेरे प्रियतम
चित्सभा में नृत्यरत हुए
फिर जब बांध लिया मुझे आलिंगन में
निज स्वर्णिम स्वरूप
अंकित हुआ मेरे तन पर
आंतरिक मिलन के आनन्द का
कैसे करूँ वर्णन ! वर्णनातीत है। (तिरुअरुट्पा–5807)

'लिंग' के संदर्भ में ही तिरुमूलर के 'सदाशिव लिंगम्' का एक अंश उल्लेखनीय है। पंचमुख प्रभु सदाशिव के चरण धरती पर हैं, दश भुजाएँ

दसों दिशाओं में व्याप्त हैं; पंचदश अरुण नेत्रों से पांचों मुख शोभायमान हैं (1730)। परमतत्त्व, जड़ और चेतन के आदि, सर्वव्यापक तत्त्व, परमसत्य (1738) का एक मुख उत्तर की ओर है जिसे वामदेव कहते हैं। पश्चिम में सद्योजात और पूर्व में तत्पुरुष शोभित है। अघोर दक्षिण की ओर तथा ईशान ऊर्ध्व की ओर अभिमुख है। शक्ति अभिन्न रूप से सदाशिव के साथ व्याप्त है। हृदय ज्ञानशक्ति, शीश पराशक्ति, केश पाश आदिशक्ति, आयुध इच्छाशक्ति और नेत्र क्रियाशक्ति रूप हैं (1745)। तिरुमूलर ने लिंग विषयक विस्तृत विवेचन 'आत्मलिंग', 'ज्ञानलिंग' तथा 'शिवलिंग' शीर्षकों से किया है।

सिद्धान्तसारोपनिषद् के अनुसार 'नमः शिवाय' में 'न' कार ही 'म' कार है, सद्योजात है; 'म' कार ही 'उ' कार है, वामदेव है; 'शि' कार ही 'म' कार है, अघोर है; 'व' कार ही नाद है, तत्पुरुष है। जो 'य' कार है वह समस्त 'ॐ' है। वह निर्विशेष प्रण है। उसे सर्वोत्तम ईशान, आगम, आकाश और लिंग कहते हैं। इस तत्त्व का ज्ञानी अविनाशी, शुद्धज्ञानी परमानन्द और परमशिव स्वरूप है। 'लिंगाष्टक' में भी ब्रह्मा, विष्णु और देवगण द्वारा अर्चित, निर्मल ज्योति से सुशोभित और जन्म-दुःखों के विनाशक जिस 'लिंग' अथवा 'सदाशिवलिंगम्' का वर्णन है वह शिव के अविकारी, निराकार रूप का ही तो चित्रण है।

(क्रमांक–463, मंत्र संख्या–1712)

षडध्वा

तिरुमूलर ने छह अध्वा मार्गों का उल्लेख करते हुए उन्हें सदाशिव रूप माना है। अरुळ्नन्दी ने 'शिवज्ञान बोधम्' के आठवें सूत्र की व्याख्या में आत्माओं को तीन वर्गों में विभक्त किया है–विज्ञानकल, प्रलयकल, सकलकल। सकलकल आत्मा आणव और माया से लिप्त हैं, प्रलयकल आत्माएँ आणव और कर्ममल से संयुक्त हैं। विज्ञानकल आत्माएँ केवल आणवमल से युक्त हैं। प्रलयकल और विज्ञानकल को परमात्मा अपनी असीम कृपा से निराधार अवस्था में अपने दर्शन देता है और तीव्र तथा तीव्रतर शक्ति निपात के द्वारा उनके मलों को दूर करता है। सकलावस्था वाले मनुष्यों के लिए वह स्वयं को गुरुरूप में प्रकट करता है और जब उनके मल समतुल्य हो जाते हैं तो वह विविध प्रकार के शक्ति निपातों द्वारा उनके पापों को दूर करता है। इस संदर्भ में विविध दीक्षाओं का

उल्लेख कर शुद्ध अध्वाओं का परिचय दिया गया है। ये अध्वा हैं—मंत्र, पद, वर्ण, भुवन, तत्त्व और कला। मन, वचन और कर्म द्वारा किए गए कर्मों को आत्मा उनके कारणों द्वारा कर्मों के फल को इन छह अध्वाओं के द्वारा भोग कर नष्ट कर सकता है। फल भोगने के उपरान्त आणव का मल परिपक्व हो जाता है। आत्मा उन्नति की विशिष्ट स्थिति तक पहुँच जाती है। तब परमात्मा गुरु रूप में प्रकट होकर अकाम्य कर्मों को नष्ट कर देता है जिससे पुनर्जन्म न हो और आणवमल भी संयुक्त न हो सकें। प्रारब्ध-कर्म अध्वाओं को शुद्धिपूर्वक शरीर में अनुभव के द्वारा नष्ट किया जा सकता है।

(क्रमांक–464, मंत्र संख्या–1714)

पति-पशु ऐक्य

वह और वह उसे नहीं जानें
वह उसे जान ले यदि
नहीं रहता ज्ञाता वहां
वह उसे जान ले यदि
ज्ञाता और ज्ञेय एक बन जाएँ।

वह (अवनुम) का श्लेषपूर्ण प्रयोग है। कर्मकांडी, और भक्तिमार्गी उसे नहीं जानते। उस परमात्मा को जो जान लेता है तो वह परमात्मरूप (शिवरूप) ही हो जाता है। इसका दूसरा सम्भव अर्थ है कि जब तक साधक जीव और शिव को दो पृथक् सत्ता मानता है जीव उसे नहीं जान सकता। जब जीव 'तत्त्वमसि' के सिद्धान्त के अनुसार पति और पशु के ऐक्य को जान लेता है तो ज्ञाता जीव और ज्ञेय शिव एक ही हो जाते हैं। शिव परमसत्ता है पर जीव से अभिन्न है। वह जीव को पूर्णता के मार्ग पर अग्रसर करके अनुग्रहपूर्वक अपनी ओर ले जाता है (1791)। इस कथन की पुष्टि मंत्र संख्या 2017 में है जहां स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जीव और शिव पृथक् नहीं हैं पर जीव शिव को नहीं जानता। जैसे ही जीव शिव का ज्ञान प्राप्त कर लेता है जीव स्वयं शिव हो जाता है। वह ज्ञान स्वरूप शिव स्वयं जीव भी है, वही ज्ञान और ज्ञाता बनकर जीव-जगत् में परिव्याप्त है (2019)।

(क्रमांक–477, मंत्र संख्या–1789)

मिलन – शिव का अंतस् में पधारना

प्रभु को प्राप्त करने के लिए साधक कभी नृत्य करता है, कभी गायन

करता है और कभी रुदन। जब मिलन हो जाता है तो वह कृपालु शिव साधक के हृदय में प्रविष्ट होता है, वह अपना अवर्णनीय रूप भक्त को प्रदान कर अंतस् में पधार जाता है (1816)। जब सब धूमिल था सकलमल से लिप्त था, तब प्रभु ने निज चरण यह कह कर धरे–'छूट गए इन सबसे वत्स (1817)। जब ज्योतिसाधना से चिदम्बर ज्योतित हो उठता है तो ज्योति के सान्निध्य में दुःख संताप नहीं टिकते। जिनके पास ज्योति जगाने का (ज्ञानरूपी) दीप रहता है वे स्वयं ज्योति में रमते हैं (1818)। जिनका हृदय ज्ञान की इस दिव्य ज्योति से भासमान होता है उनका अज्ञान-तम तिरोधान हो जाता है, तब जीव और शिव का ऐक्य होता है। आधुनिक युग के महान् संत रामलिंग स्वामी–'वल्ललार' की कविताओं में इस अनुभव का साक्षात् प्रमाण उपलब्ध है–

हे महान् अनुग्रह परम ज्योति ....
दूरकर मरणशीलता
यहीं इस जीवन में
अमरत्व का उपाय सुझाया
अनुग्रह परम ज्योति !
शिवशक्ति का सत्य प्रदान कर
सब भांति बनाया समर्थ ! (अगवल्)

इसी प्रकार के अनेक अनुभवों में से रामलिंग स्वामी का एक 'अनुभव' तिरुमूलर के कथन के व्यावहारिक पक्ष को पुष्ट करता है–

हे ज्ञान सद्गुरु !
स्फुरित किया मुझे शिव-रहस्य पूर्ण निःशेष
और दिखा दिए मुझे नव-नव स्तर करुणा ज्योति के
जो भी है ज्ञेय जताया मुझे अशेष
स्वयं विराजे हो मेरे अंतर् में अभिन्न होकर
जो भी है श्रव्य सुनाया मुझे प्रेम से
और विराजे हो विमल गुरु तुम मोद से
मेरे हृदय में
तुम ज्योतिरूप में
जो भी है दर्शनीय दिखाया मुझे निःशेष
प्रदान किया प्रतिष्ठित पद



அர்த்த நாரீசுவரர்
श्री अर्धनारीश्वर
Sri. Arthanareeswarar

विराजे हो मम अंतर् में हे सद्गुरु। (*अगवल् 4615, 1051, 1060*)

(*क्रमांक–492, मंत्र संख्या–1816*)

बीज और अंकुर की अभिन्नता

बीज में अंकुर का अस्तित्व है। अंकुर निकलने के बाद भी अंकुर बीज से अभिन्न है। यही शिव और बिन्दु के विषय में सत्य है (1932)। इस संदर्भ में पं. गोपीनाथ कविराज के कुछ वाक्य स्वतः स्पष्टीकरण देते हैं। जगत् की सृष्टि ईश्वर से होती है। "ईश्वर से सृष्टि होने के बाद वह चीज बीज बनती है। बिना ईश्वर के बीज नहीं होता। वही है काम। बीज उन्मेष है। उन्मेष अद्भुत चीज है। इच्छा से उन्मेष होता है और उन्मेष से ऊर्मि। उन्मेष क्या है ? जो चीज जगत् में नहीं है ? इच्छा जब है तब बीज रूप में है, जब इच्छा नहीं है तो बीजरूप भी नहीं है। केवल सम्भावना मात्र है आनन्द के रूप में। इसके बाद जब आनन्द में अभाव आ जाता है तब इच्छा का उदय हुआ और इच्छा के उदय होने पर ही बीज तैयार होगा। आनन्द है—मातृ शक्ति, विश्व माता और जगन्माता और प्रकाश है शिव रूपी उसके ऊपर वाली चीज।" (*शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी पृ. 160*)। अंकुर बीज में व्याप्त है, वह बीज से ही निकलता है।

(*क्रमांक–521, मंत्र संख्या–1932*)

बिन्दु

नाद और बिन्दु के विस्तृत अर्थ के साथ ही तिरुमूलर ने शरीर में 'वीर्य' के लिए भी बिन्दु शब्द को प्रयुक्त किया है। पुरुष शरीर में रसादि सप्त धातुओं में से रस, रुधिर और शुक्र तीनों सशक्त होकर 'बिन्दु' का रूप धारण करते हैं और काया में ही इक्कीस दिन तक संवर्धित होकर ओसकण के समान यह बिन्दु पूर्णता प्राप्त करता है (1934)। बिन्दुरक्षण को प्राण-रक्षण मानते हुए इसे काया में ही बचाए रखने से जीवन का ह्रास नहीं होता; शक्ति और तेजोबल का संचार होता है; तप, ध्यान और मौन में सिद्धिलाभ होता है। यह बिन्दु मूलाधार की अग्नि में शुष्क होकर काया से एकीकृत हो जाता है (1948)। शिवयोगी मूलाधार की अग्नि में बिन्दु को सुखा लेता है तदुपरान्त सुषुम्ना मार्ग से उसे भ्रूमध्य तक ले जाता है और वहां सोममण्डल से निःसृत होने वाले अमृत का निरंतर अखंड रूप से पान

करता है (1949)। बिन्दुनाश को कालपूर्व मृत्यु का कारण मानते हुए तिरुमूलर बिन्दुजयी को कालजयी मानते हैं (1954)। बिन्दुजय का साधन कुंडलिनी योग को माना गया है। बिन्दु और नाद के चंद्रमंडल में संयोग से कायिक बिन्दु दिव्य बिन्दु में परिणत हो जाता है (1962)। बिन्दु और नाद का चंद्रमंडल में यह संयोग सहस्रार से अमृत वर्षा करता है और उस पावन वेला में 'प्रणव' का महामंत्र आहुति बनता है (1971)।

कुण्डलिनी जागरण के संदर्भ में प्रायः माना गया है कि सुषुम्ना निरंतर ऊर्ध्वगति से चलती है। विविध चक्रों का भेद होता है और बिन्दु में परिणत होता है। आज्ञाचक्र में एकमात्र बिन्दु रहता है। वर्णभाव और नादभाव से ऊपर बिन्दु की स्थिति है।

श्री गोपीनाथ कविराज के अनुसार समग्र सृष्टि का जो मध्य बिन्दु है वही सर्वोच्च बिन्दु है। इसी बिन्दु से सर्वप्रथम त्रिकोण का आविर्भाव होता है। महायोगी से इतर कोई अन्य इस त्रिकोण के रहस्य को उद्‌घाटित नहीं कर सकता। सृष्टि के मूल में जो बिन्दु है वही महाबिन्दु के नाम से जाना जाता है। "प्रकाश या शिवांश एवं विमर्श या शक्ति अंश साम्य भाव में अगर रहे तो उसे बिन्दु रूप में ग्रहण किया जा सकता है। स्मरण रखना होगा कि स्थूल सृष्टि के पूर्व चित् शक्ति की लीला है।" सृष्टि के मध्य जो एक बिन्दु है वह त्रिधा विभक्त होकर बिन्दुत्रय के रूप में आविर्भूत होता है। इस भाँति समष्टि में जो एक बिन्दु है व्यष्टि में वह तीन बिन्दु हो जाता है।

इस चिंतन के समकक्ष ही एक अन्य विचार डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'सहजसाधना' में व्यक्त किया है—जो निर्गुण या गुणातीत ब्रह्म है वह सृष्टि-क्रिया की ओर उन्मुख होने पर सगुण ब्रह्म का रूप धारण करता है। इसी को 'पर-बिन्दु' कहते हैं। यह अव्यक्तावस्था में रहता है और इसमें शिव और शक्ति तत्त्व पृथक्-पृथक् प्रतिभास नहीं होते किन्तु दोनों व्यक्त रूप में वर्तमान रहते हैं। लेकिन वे अब मूल के अव्यक्तावस्था से व्यक्त होने की ओर प्रवृत्त हुए रहते हैं। इसी अवस्था का नाम परा-पाक् है। बिन्दु में उसका स्थान मूलाधार चक्र में है।

'बिन्दु' के महत्त्व का प्रतिपादन विविध चिंतन-पद्धतियों में उपलब्ध है। बौद्ध-चिंतन में जीवन के स्रोत वीर्य को बोधिचित्त कहा गया है। परावृत्ति अर्थात् विपरीत मार्ग द्वारा अमरत्व सम्भव है अर्थात् वीर्य जो साधारणतः नीचे की ओर जाता है यदि उसे योग द्वारा ऊर्ध्व गति प्रदान की जाये तो

शक्ति का यह स्रोत शरीर को बलयुक्त बनाता है। तमिल सिद्ध-परम्परा में उलट साधना द्वारा इसको वज्र में परिवर्तित करने आदि के संदर्भ हैं। नाथ परम्परा में गोरखनाथ ने बिन्दु साधना का कई स्थलों पर उल्लेख किया है–

नाद बिंद है फीकिसिला। जिहिं साध्या ते सिधैंमिला। (*गोरखबानी 181*) नाद बिंदु (सामान्यतः) तो शुष्क पत्थर के समान हैं किन्तु जिसने इन्हें साध लिया वह सिद्धावस्था में पूर्णता में लीन हो ज़ाता है। इसी भाँति 'नाद बिंद बजाइले दोऊ' में नाद बिंदु की साधना का संकेत है।

'नीचे की ओर गति वाले रेतस् (शुक्र) को ऊपर की ओर प्रेरित करे, ऐसा उर्ध्वरेता होकर जो काम को भस्म कर देता है'.......(*गोरखबानी 17*)। हिंदी के सिद्ध साहित्य में वामाचार की नारी-मैथुन साधना पद्धति स्वीकृत थी। "नाथ योगियों ने नारी-मैथुन-साधना का बहिष्कार किया किन्तु वज्रोली, अमरोली, सहजोली आदि कुछ मुद्राएँ उनमें भी प्रचलित थीं जिनमें वीर्य के क्षरण के बजाय उलटे नारीरज को भी साधक लिंगद्वार से अपनी काया में खींच लेता था।" (*सिद्ध साहित्य-डॉ. धर्मवीर भारती, पृ. 414*) संतों के चिंतन में मैथुन साधना को अस्वीकार कर दिया गया और हठयोग की पद्धति शेष रह गई।

(क्रमांक–524, मंत्र संख्या–1949)

ईश्वर, जीव–दो पक्षी

जीवन की नदी के तटपर बैठे दो हंसों में से यदि एक अपना पृथक् अस्तित्व मान ले तो तिरुमूलर के अनुसार वह मूर्ख है, मुक्ति का अनधिकारी है। जीव और ब्रह्म, पशु और शिव के संदर्भ में इसे विवेचित करें तो मुण्डक (3/1) उपनिषद् का मंत्र स्वतः चिंतन का आधार बनता है। ऋग्वेद (1/164/20) और अथर्ववेद (9/14/20) में भी यह मंत्र यथावत् आया है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया
समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयो रन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्य-
न श्नन्नन्यो अभिचाकशीति।।

शरीर रूपी वृक्ष में ईश्वर और जीव सदा साथ रहने वाले दो मित्र पक्षी

हैं। शरीर-वृक्ष में एक साथ ही हृदय रूपी घोंसले में निवास करते हैं। एक जीवात्मा तो उस वृक्ष के फलरूप अपने कर्मफलों अथवा प्रारब्धानुसार प्राप्त हुए सुख-दुःखों को आसक्ति एवं द्वेषपूर्वक भोगता है और दूसरा ईश्वर उन कर्मफलों से किसी प्रकार का तनिक भी सम्बन्ध न जोड़ केवल देखता है।

(क्रमांक–544, मंत्र संख्या–2006)

असद्गुरु, ढोंगी गुरु

'गुरु' को शिव का रूप मानते हुए सामाजिक जीवन में व्याप्त असद् आचरण करने वालों को तिरुमूलर ने विस्मृत नहीं किया। 'अचऱ्गुरु नॆऱि'— 'ढोंगी गुरु' शीर्षक से पांच मंत्रों में उन व्यक्तियों की निंदा की गई है जो गुरु होने का दम्भ तो भरते हैं, आडम्बर रचते हैं पर 'ज्ञान' से उनका सम्बन्ध नहीं; 'सत्य' उन्होंने जाना नहीं, वेद और आगम का अध्ययन नहीं, त्याग-समर्पण की भावना नहीं, केवल जीवन के भोगों की ओर आकर्षण है (2044)। ऐसे 'गुरु' जो मंत्र-तंत्र, योग-ध्यान, बंध-मोक्ष को न तो जानते हैं न हृदय में जानने की प्रवृत्ति और तत्परता है वे असद्गुरु हैं। चिंतन का अभाव फलतः शिष्य के संशय का निवारण करने की असमर्थता, केवल विविध प्रकार के भोजन में रुचि और उदरपूर्ति एकमात्र लक्ष्य हो तो उसे गुरु किस भाँति स्वीकार किया जाए (2045)? जो काम आदि से संयुक्त है, सदसत् का जिसे विवेक नहीं, संसार से उद्धार के मार्ग से अपरिचित है, शिष्यों के समक्ष 'मिथ्या' को सत्यरूप में प्रस्तुत करता है ऐसा असद्गुरु कदर्य है, अनादरणीय है, महामूर्ख है अतः त्याज्य है (2046)। इसी क्रम में उपनिषद् के कथन की प्रतिध्वनि मिलती है। मूर्ख और अज्ञ शिष्यों को मार्ग दिखाने का उपक्रम करने वाला असद् गुरु उसी भांति है जिस भांति अंधा अंधे को राह दिखाए और गुरु तथा शिष्य दोनों गहरे गर्त में गिर पड़ें (2048)। मुण्डक (1/2/8) और कठ (1/2/5) में वर्णित है—

अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः
स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः।
द्रन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढा
अन्धेनैव नीयमाना यथान्धा।।

अज्ञानी होते हुए भी स्वयं को बुद्धिमान और विद्वान् मानने वाले मूढ़ लोग भटकते हुए उसी भांति ठोकरें खाते हैं जैसे अंधे मनुष्य द्वारा चलाए जाने वाले अंधे कष्ट भोगते हैं। संत कबीर ने इसी भाव को इन शब्दों में अभिव्यक्त किया है–

जाका गुर भी अंधला, चेला खरा निरंध।
अंधा अंधा ठेलिया, दून्यूँ कूप पड़ंत।। (गुरुदेव को अंग-15)

तिरुमूलर-काव्य में गुरु, सद्‌गुरु, शिवगुरु अद्वितीय ज्ञान-युक्त है जो सत्य का साक्षात्कार कर चुका है। उन्होंने इस शरीरधारी को **'शिव रूप'** माना है अतः स्वाभाविक है कि मिथ्या आचरण करने वाले ढोंगी व्यक्तियों से समाज की रक्षा करना इस अंश का लक्ष्य है।

(क्रमांक–568, मंत्र संख्या–2048)

सृष्टि विकास-क्रम

तिरुमूलर एक सिद्ध ज्ञानी थे। उनकी रचना के मूल में गहन चिन्तन, गम्भीर विश्लेषण और आत्मानुभव विद्यमान है। उनके विषय में गीता (6/29) का यह कथन सत्य है–

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः।।

'सर्वव्यापी अनन्तचेतन में एकीभाव से स्थितिरूप योग से युक्त आत्मावाला तथा सबमें समभाव से देखने वाला योगी आत्मा को सम्पूर्ण भूतों में स्थित और सम्पूर्ण भूतों को आत्मा में देखता है।' फलतः अनूठी आस्था और एकाग्रता की चरमावस्था को प्राप्त इस साधक ने जब विश्लेषणात्मक दृष्टि का आश्रय ग्रहण किया तो भेद, उपभेद आदि क्रमशः स्पष्ट रूप से शब्दबद्ध होते चले गए। तिरुमंतिरम् का अष्टम् तन्त्र इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

सृष्टि-विकास-क्रम में शिव तत्त्वों का वर्णन करते हुए तिरुमूलर आद्यन्तविहीन परतत्त्व से प्रारम्भ कर शिव, शक्ति, सदाशिव, महेश्वर, विद्यातत्त्व – बोध, कला, नियति, काल और महामाया का उल्लेख करते हैं (2190)। तदुपरान्त अगले मंत्र में वे स्पष्ट करते हैं कि तेजोद्दीप्त पांच शिव-तत्त्व है– शिव, शक्ति, सदाशिव, महेश्वर और शुद्ध विद्या।

शुद्धमाया (कुटिला, महामाया, कुण्डला, बिन्दु)
|
माया (क्रियाशक्ति)
|
बिन्दु (ज्ञान तथा क्रियाशक्ति)
|
सदाख्य (क्रिया का आधिक्य)
|
माहेश्वरी (ज्ञान का आधिक्य)
|
शुद्ध विद्या

इससे निचले स्तर पर सात विद्यातत्त्व हैं (मायाजनित, जिसे शुद्ध/अशुद्ध माया जनित मानकर 'मिश्र' भी कहा जाता है)– राग, कला, काल, ज्ञान, नियति, पुरुष और महामाया। इस भाँति शिवतत्त्व और विद्यातत्त्व समग्रतः बारह हो जाते हैं (2191)। तुरीय से तुरीयातीत का स्वतः प्रादुर्भाव होता है। विविध प्रकार से विषय को स्पष्ट करने का जागरूक प्रयास करता हुआ कवि विषय की जटिलता और सूक्ष्मता से भलीभाँति परिचित है। यहां पुनरुक्ति दोष नहीं गुण है। विषय का अंतरंग और सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवरण देने का प्रयास यहां शब्द-चयन और विषय प्रस्तुतीकरण में झलकता है। उदाहरण के लिए जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय अवस्थाओं के परिचय को लेते हैं तो स्पष्ट बिम्ब हमारे समक्ष उभर कर आते हैं।

जीव की तुरीय अवस्था में जिन भेदों का वर्णन हुआ है वह हैं—तुरीय – यहां कामनाओं का पूर्णलोप नहीं, जाग्रत् और सुषुप्ति की स्थिति में 'अनुभव' शेष रहता है और आत्मबोध शेष है (2195)। इस तुरीय के तुरीय, तुरीय जाग्रत, तुरीय स्वप्न, तुरीय सुषुप्ति और विकास के उपरान्त तुरीयातीत की स्थिति है (2284)। इस तुरीयातीत में आत्मबोध का लोप हो जाता है; आत्मा ज्ञाता होकर ज्योतिपूर्ण तुरीय अथवा शिवतुरीय के सोपान को प्राप्त होता है (2199)। तुरीय से अग्रसर होकर जब साधक सर्वव्याप्त, अमल-विमल के स्थान तक पहुंचता है तो तुरीयातीत स्थिति आती है (2279)। तुरीयातीत में पहुंचकर परातुरीय, परातुरीय जाग्रत्, परातुरीय स्वप्न, परातुरीय सुषुप्ति को लांघकर साधक परातुरीयातीत स्थिति को प्राप्त करता है। तदनन्तर जीव शिव हो जाता है जिसे 'शिव तुरीय' कहा

गया है (2285)। यह क्रम आगे बढ़ता है— परशिव — परम (ब्रह्म), परापरम — पराशिव जाग्रत — पराशिव स्वप्न — पराशिव सुषुप्ति — पराशिव — परमसत्य — परानन्दी आदि का विवेचन तिरुमूलर करते हैं। इसी संदर्भ में शि — शिव, वा — शक्ति और य — मुक्ति का गहन अर्थ स्पष्ट कर वे कहते हैं— छत्तीस तत्त्वों से परे 'न' और 'म' को ज्ञानरूप में अनुभूत कर जीव मुक्त होकर 'य' (मुक्ति) और 'व' (शक्ति) में अंतर्भुक्त होकर 'शि' (शिव) — शिवाय हो जाता है (2291)। यह विषय अत्यन्त जटिल और दुरूह होने पर भी तिरुमूलर के तिरुमंतिरम् में अपेक्षाकृत सहज और बोधगम्य होने की सीमा में आ जाता है।

(मंत्र संख्या–2190, 2195, 2199, 2284 आदि)

सकल, प्रलयकल, विज्ञानकल

पांचवें तन्त्र के अंतर्गत क्रिया, योग, ज्ञान आदि शीर्षकों के अंतर्गत चर्या का मूल आधार शिव के प्रति प्रेमभावना माना गया है। क्रिया का बाह्य रूप विग्रह अथवा प्रतीक को प्राणवंत कर देना है। प्राण के भीतर ज्योति की खोज योगमार्ग है और प्राण के भीतर प्राण का संधान ज्ञान का ज्योतिर्मय मार्ग है (1444)। क्रिया में ज्ञान सालोक्य, चर्या में ज्ञान सामीप्य, योग में ज्ञान सारूप्य और ज्ञान में ज्ञान सायुज्य का मार्ग है।

इस संदर्भ में शैव-सिद्धान्त के इस मूल आगम ग्रंथ में आत्माओं का विकासक्रम की दृष्टि से किया गया वर्गीकरण बाद के प्रायः सभी शास्त्र रचनाकारों और काव्यसृष्टि करने वाले साधक भक्तों ने ग्रहण किया। इस विषय का संक्षिप्त परिचय तिरुमंतिरम् के आधार पर प्रस्तुत है—

सकल : आणव, कर्म और माया तीनों पाशों से आबद्ध जीव 'सकल' हैं। यह इन्द्रियानुभव की स्थिति है। विविध पाशों से युक्त इस कोटि के जीवों में देवगण, समस्त मानव, पशु कीटादि समग्र जीवगण हैं (2230)। मूलमाया के वशवर्ती ये जीव जग-जीवन में आकण्ठ निमग्न हैं। ब्रह्मसृष्टि के सभी जीव सकल कहलाते हैं। 'शिवज्ञान सिद्धियार' में अरुळ्नन्दि के अनुसार सकलावस्था वाले जीवों के लिए शिव स्वयं को गुरु रूप में प्रकट करते हैं। जब उनके मल समतुल्य हो जाते हैं तब चार प्रकार के शक्ति निपात — मंदतर, मंद, तीव्र, तीव्रतर — द्वारा उनके मलों को दूर कर देते हैं (8/1)। जब इन 'सकल' जीवों को सद्सत् से, इच्छापाश से मुक्ति मिलती है तो शिवसूर्य की ज्योति पाकर ये 'शुद्ध' हो जाते हैं (2245)।

शक्ति-निपात के फलस्वरूप सद्गुरु के उपदेश से 'शक्ति' का सान्निध्य प्राप्त करने पर ऐसा होता है (2262)। इस कोटि के उप विभाजन हैं – सकल-केवल (जाग्रतातीत); सकल-सकल (जाग्रत्-जाग्रत्); सकल शुद्ध (तत्पर-स्वप्रकाशित)।

प्रलयकल

जिन जीवों में 'अशुद्धमाया' और आणव शेष रहते हैं और जो 'कर्म' से मुक्त हो जाते हैं वे 'प्रलयकल' हैं। अरुळ्नन्दि के अनुसार प्रलयकल में आणव और कर्म शेष रहते हैं। तिरुमूलर के अनुसार इनमें माया और अहंकार शेष रहता है पर माया, उन्हें मोहित नहीं करती (2231)। शुद्ध माया से परे पहुँचे प्रलयकल जीव बिन्दु, माया और क्रिया के माध्यम से दैवी ज्ञान प्राप्त कर शुद्धावस्था की ओर अग्रसर होते हैं (2248)। इन्हें भी विज्ञानकल जीवों की भाँति 'परमात्मा अपनी असीम कृपा से निराधार अवस्था में दर्शन देता है और तीव्र तथा तीव्रतर शक्तिनिपात द्वारा इनके मलों को दूर करता है (*शिवज्ञान सिद्धियार* (8/1))। श्रीकण्ठ और एक सौ आठ रुद्र इस अवस्था में हैं।

विज्ञानकल

केवण 'आणव' से युक्त ये आत्मा माया तथा कर्म से मुक्त हैं। विज्ञानकल 'शुद्ध माया' में रहते हैं। वे जो भी काम्यकर्म करते हैं सब ईश-सेवा ही होती है (2243)। उनके समस्त कर्म दग्ध हो गए हैं तथा वे बंधन-मुक्त है। विज्ञानकल आत्मा पुनः लौटकर संसार में नहीं आते। शिवानुग्रह प्राप्तकर विज्ञानकल जीवों का आणव-मल भी निवृत्त हो जाता है। यह जीव की शुद्धावस्था अथवा सत् की स्थिति है।

केवलावस्था

ये जीव शिव के परम अनुग्रह के कारण अहंकार से भी मुक्त होकर नाद और बिन्दु से परे पहुँचे हुए हैं। ये ॐकार में समा जाते हैं और निवृत्ति में सानन्द रमण करते हैं (2233)।

(क्रमांक 650, 657 मंत्र संख्या–2230, 2233, 2243, 2262)

तत्वज्ञान – तिरुमूलर और केनोपनिषद् – एक साम्य

तत्त्वज्ञान प्राप्त करने के उपरान्त शिवज्ञान और तदुपरान्त शिव और आत्मा के ऐक्य (2330) का मार्ग स्पष्ट करने तथा सत् असद्, मनसावाणी

अगोचर (2335) परमतत्त्व का रहस्य स्पष्ट करते हुए तिरुमूलर ने स्पष्ट किया है कि जो अज्ञान में निमग्न है उसे जताना वृथा है, जो ज्ञान से परिपूर्ण हैं उन्हें जताने की आवश्यकता नहीं पर जो जानते हैं कि वे अज्ञान में हैं, तमस् से प्रकाश की ओर, अंधकार से ज्योति की ओर जाने की कामना से युक्त हैं उन्हें मार्ग बताओ, वे जान लेंगे, 'स्व' को खोज लेंगे। यह चिंतनधारा केनोपनिषद् के ऋषि की वाणी के अत्यन्त निकट है–

यस्मामतं तस्य मतं यस्य न वेद सः।।
अविज्ञातं विजानतां विज्ञातमविजानताम्।।2/3।।

जो यह मानता है कि ब्रह्म जानने में नहीं आता उसका तो वह जाना हुआ है और जिसका यह मानना है कि ब्रह्म मेरा जाना हुआ है वह नहीं जानता। जानने के अभिमान से युक्त के लिए वह जाना हुआ नहीं है, जिसमें ज्ञातापन का अभिमान नहीं वह ब्रह्म उनका जाना हुआ है।

(क्रमांक 680 मंत्र संख्या–2330, 2335)

तत्त्वमसि

'तत्त्वमसि' में है–'तत्' अर्थात् 'वह' परवाचक शब्द है, त्वम् (तू) यह स्वबोधार्थक है, 'असि' – हो – यह शब्द तत् और त्वम् दोनों की एकता का प्रतिपादक है। मुण्डक उपनिषद् के अनुसार 'जिस प्रकार बहती हुई नदियाँ अपना नामरूप छोड़कर समुद्र में विलीन हो जाती हैं वैसे ही ज्ञानी नामरूप से रहित होकर सर्वतोभाव से परात्पर पुरुष में विलीन हो जाता है' (2/8)। जो भी उस (तत्) परमब्रह्म को जान लेता है वह ब्रह्म ही हो जाता है। वह शोक से पार हो जाता है, पापों से तर जाता है, हृदय की गांठों से सर्वथा छूटकर अमर हो जाता है (2/9)।

'शुकरहस्योपनिषद्' के अनुसार 'तत्त्वमसि' वाक्य में–'सृष्टि के पूर्व एकमात्र द्वैत की सत्ता से रहित, नामरूपहीन सत्ता थी और अब भी वह सत्ता वैसी ही है।' उपदेश सुनने वाले शिष्य का जो देह और इन्द्रियों से अतीत स्वरूप है वही यहाँ महावाक्य के 'त्वं' पद से वर्णित है। महावाक्य के 'असि' पद के द्वारा उन 'तत्' एवं 'त्वम्' पदों के बोध्य ब्रह्म और जीव की एकता का ग्रहण कराया गया है। उस एकत्व का अनुभव करो (3/5-6)। इस व्याख्या में वर्णित ब्रह्म और जीव की एकता शिवानुग्रह द्वारा ही सम्भव है ऐसा शैव सिद्धान्त का मत है। श्री जयदयाल गोयन्दका के

एक लेख में (*कल्याण-उपनिषद् अंक*) अभेद उपासना के चार भेद गिनाए गए हैं। पहले दो भेद 'तत्' पद को और फिर दो भेद 'त्वम्' पद को लक्ष्य करके हैं–

(क) इस चराचर जगत् में जो कुछ प्रतीत होता है सब ब्रह्म ही है; कोई भी वस्तु एक सच्चिदानंदघन परमात्मा से भिन्न नहीं है।

(ख) वह निर्गुण, निराकार, निष्क्रिय, निर्विकार परमात्मा इस क्षणभंगुर नाशवान् जड़ दृश्यवर्ग माया से सर्वथा अतीत है।

(ग) जड़-चेतन, स्थावर-जंगम सम्पूर्ण चराचर जगत् एक ब्रह्म है और वह ब्रह्म मैं हूँ। अतः यह सब मेरा ही स्वरूप है।

(घ) जो नाशवान् क्षणभंगुर मायामय दृश्य वर्ग से अतीत निराकार, निर्विकार, नित्य विज्ञानानन्दघन निर्विशेष परब्रह्म परमात्मा है वह मेरा ही आत्मा है, मेरा ही स्वरूप है।

इन चार प्रकार की उपासना विधियों में से तिरुमूलर का चिंतन प्रथम दो के अधिक निकट है। वेदान्त की तुलना में सिद्धान्त में जो परिवर्तन आया, उसका आधार यदि तिरुमूलर-कथन को बनाएँ तो स्थिति स्पष्ट हो जाती है। तैत्तिरीयोपनिषद् के *'ब्रह्मविदाप्नोति परम्।......सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म'* (2/1/1) के द्वारा यह कथन है कि 'ब्रह्मज्ञानी परब्रह्म को प्राप्त कर लेता है . . . . . ब्रह्म सत्यज्ञानस्वरूप और अनन्त है'। छान्दोग्य के अंतर्गत अनेक उदाहरणों के अतिरिक्त बीज में व्याप्त वटवृक्ष का उदाहरण देकर कहा गया है – यह जो सूक्ष्मतत्त्व आत्मा है वह सत् है और यही आत्मा है। हे श्वेतकेतु ! वह सत् तू ही है–तत्त्वमसि (6/12/3)।

शिवज्ञान सिद्धियार में अरुळ्नन्दि 'तत्त्वमसि' की व्याख्या इस प्रकार करते हैं–दृश्य जगत् से तथा अदृष्ट परमात्मा से स्वयं को भिन्न समझते हुए तथा पूर्ण विनय से उसकी भक्ति करते हुए और अपने साथ उसका अभिन्न सम्बन्ध जानकर यदि हम 'तत्त्वमसि' पर ध्यान लगाएँ तो वह हमसे अभिन्न रूप में प्रकट होगा। जिस प्रकार गरुड़ मंत्र के ध्यान से साँप के काटे हुए विष को गारुड़ी दूर करते हैं उसी प्रकार 'तत्त्वमसि' के ध्यान से हमारे समस्त पाप नष्ट हो जाएँगे और पवित्रता प्राप्त होगी। यही कारण है कि प्राचीन वेद-शास्त्र हमें 'तत्त्वमसि' मंत्र की आराधना की शिक्षा देते हैं (6/3)।

मंत्र संख्या 2348 में तिरुमूलर स्पष्ट करते हैं कि–तत्त्वबोध से रहित कहते हैं कि 'मैं' और 'वह' दो हैं (द्वैत); तत्त्वबोध होने पर 'मैं' और 'वह'

का भेद नहीं रहता; शुद्ध केवल स्थिति में पहुँचकर 'तत्' में 'अहम्' का बोध तजकर वे तत्पर में विलीन होते हैं। समग्र तत्त्व साधन हैं साध्य नहीं, इनके भेदों से भी आगे, नादान्त से आगे जब ऊपर पहुँचें तो वही 'त्वम् पद' है जिसे 'तत्-त्वम्-असि' का पद कहते हैं। यहां पर वेदों में घोषित सत्य का साक्षात्कार होता है (2438)। जब आत्मबोध समाप्त होता है, दिव्य ज्योति प्रकट होकर 'स्वयं' को साधक को प्रदान करती है तब साधक 'तत्पर' हो जाता है (2457)।

त्वम्पद, तत्पद और असिपद का अर्थ है जीव, पर और शिव। इनसे परे स्वरूप महावाक्य है—त्वम् तत् असि—यह सत्यज्ञान देकर नंदी ने मुझ पर अनुग्रह किया (2441)। ईश्वर-विचार से भी परे अतीतावस्था है, जहां इंद्रियों को शब्द तथा अन्य किसी प्रकार की चेतना नहीं रहती। जीव कर्म, मल तथा साधना की अवस्थाओं से ऊपर उठ जाता है तत्पश्चात् वह तुरीयातीत जाग्रत् अवस्था में पहुँचता है (2443)। परातुरीयातीत में स्वप्न, सुषुप्ति तथा परातुरीयातीत में तुरीयावस्था में शिव-प्राप्ति होने पर 'असि' पद की स्थिति आती है (2444)।

तत्त्वमसि पद के प्रथम पद 'तत्' में शिव को न्यस्त करके स्वरूपानन्द का ध्यान किया जाये, तदुपरान्त प्रणव मंत्र को हृदय में धारण कर योग साधना करने पर सत्य का साक्षात्कार होता है (2491)। मंत्र-संख्या 2577 में तत्त्वमसि की व्याख्या इस प्रकार की गई है—तत् त्वमसि; तुम वही हो, वही हो तुम, यह प्रशस्त महावाक्य है। अतः 'मैं' 'वही' बना। नंदी की कृपा से मैं शिव बना और शिवानन्द में मग्न हुआ। अन्यत्र उनका कथन है जिस दिन तुम कह सकते हो कि मैं वह ज्ञान हूँ जो सर्वस्व के ज्ञान से युक्त है तब तुम यह भी कह सकते हो कि 'मैं' ही सर्वोत्तम हूँ, परमेश्वर हूँ' (2596)।

(मंत्र संख्या—2348, 2438, 2443, 2444, 2491 आदि)

शिव की कृपा, अनुग्रह

बहिर्जगत्, अंतर्जगत् और तद्अंतर्गत जो कुछ भी है उसको विविध रूपों में वर्णित कर छान्दोग्य का ऋषि कहता है—*स य एषोऽणिमा ऐतदात्म्यमिदं सर्वम्। तत् सत्यं स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो* — वह जो अणिमा है, एतद्रूप ही यह सब है। यह सत्य है, आत्मा है और श्वेतकेतु ! वही तू है। तैत्तिरीय उपनिषद् में इस चिंतन से यत्किंचित् परिवर्धित रूप है—आत्मवित् निर्गुण,

निर्विकार निर्विकल्प आत्मा हो जाता है। परब्रह्म के साथ मिलकर समस्त कामनाओं के काम्य के उपभोग का उल्लेख हुआ है। उस अमृत आनन्दस्वरूप अविनाशी, सर्वत्र प्रकाशित परब्रह्म को ज्ञानी विज्ञान के द्वारा भलीभाँति प्रत्यक्ष कर लेते हैं–

. . . . तद्विज्ञानेन परिपश्यन्ति धीरा
आनन्द रूपममृतं यद् विभाति।

मुण्डक (3/2/3) के उस मंत्र को कठोपनिषद् में भी ग्रहण किया गया है जिसमें ऋषि-वचन है – वे तो उसी को प्राप्त होते हैं जिसे वे स्वयं स्वीकार कर लेते हैं, स्वीकार उसी को करते हैं जिनमें उनके लिए उत्कट इच्छा होती है। जो मात्र अपनी बुद्धि तथा साधना पर निर्भर न करके उसकी कृपा की प्रतीक्षा करता है उसके लिए वह अपने यथार्थ रूप को प्रकट कर देता है–

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो
न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमैवेष वृणुते तेन लम्य-
स्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूँ स्वाम्। 1/2/23

इस संदर्भ से तिरुमूलर का कथन स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि जब ज्योति ज्ञानगोचर हो जाती है तो निज रूप ज्योतिर्मय हो जाता है। अंतर् में व्याप्त आत्मन् का रूप जान लो और स्वयं ज्योतिरूप बन जाओ (2681)। उस ज्ञान में जो ज्ञानातीत है जब मैंने स्वयं को एकाग्रचित्त से निमग्न किया तो परानन्द की असीम कृपा से व्याप्ति से भी अतीत व्याप्ति में मुझे परमेश्वर प्राप्त हुए (2638)। वेद वेदान्त का सार वह परम दयालु प्रभु मेरी गोवत्स सम व्याकुल पुकार को सुनकर द्युलोक से परे होते हुए भी मेरे निकट आया और मेरी इस मांसल देह में प्रवेश किया। (2627)

'शिव' को परिभाषाओं की सीमाओं में बांधना असाध्य है। फिर भी विषय का परिचय देने के उद्देश्य से उमापति शिवाचार्य ने 'शिवप्रकाश' में उसे रूप, अरूप से परे, तत्त्वों, प्रतीकों के दायरे से परे कह कर कठोपनिषद् के *'अणोरणीयान्महतो महीयानात्मस्य जन्तोर्निहितो गुणयाम्'* (इस जीवात्मा के हृदय रूप गुफा में रहनेवाला परमात्मा सूक्ष्म से अतिसूक्ष्म और महान् से भी महान् है।) का उल्लेख किया है। इस मंत्र में भी स्पष्टोक्ति है कि उस परमात्मा की महिमा को कोई कामना रहित, चिन्तारहित, विरला ही उस परमेश्वर की कृपा से ही देख पाता है। अतः

शैव सिद्धान्त और शैवभक्तों ने जिस कृपा, अनुग्रह का पुनः पुनः उल्लेख किया है उसके स्पष्ट प्रमाण उपनिषद् में उपलब्ध हैं।

(क्रमांक–746, 748, 755, मंत्र संख्या–2627, 2638, 2680 आदि)

शिवनृत्य-अध्यात्म चिंतन और अनुभूति का अद्‌भुत समन्वय

अनन्य-अद्वितीय प्रभु 'शिव' दक्षिण चिदम्बरम् के भव्य मंदिर में विराजमान हैं। नृत्यराज देवों के साथ, ब्रह्मा, विष्णु, महेश के साथ, मुनियों के समुदायों में, पराशक्ति में, जीवमात्र में नृत्य करता है (2757, 2758)। उनके नृत्यरत चरणों के नूपुर का क्वणन और अद्‌भुत संगीत का रणन द्रुतगति और लय से परिवर्तित होता है जो ज्ञानियों द्वारा प्रशंसित, भवबंधन से मुक्त करने में सक्षम है (2760)। माया के आवरण से आवृत अगणित जीवों के उद्धार हेतु शक्ति संग शिव के इस नृत्य का मर्म उनकी परमकृपा से ही जाना जाता है (2768)।

ईश एक ओर भक्तों, साधकों, ज्ञानियों के हृदय में विराजमान है तो दूसरी ओर निखिल चराचर उनका रंगमंच है जहाँ नटराजराज के दिव्य चरण थिरक रहे हैं। अग्नि-मण्डल के साथ जलमण्डल उनका रंगमंच है, पंचाक्षर का महामंत्र भी नृत्य का रंगमंच है (2775)। इस विषय पर तिरुमंतिरम् में पर्याप्त विस्तार से वर्णन हुआ है। तिरुमूलर की स्थिति उस ऋषि की है जिसका चित्त ब्रह्म-ज्ञान का निरंतर अनुशीलन करता हुआ इतना स्वच्छ और पारदर्शी हो जाता है कि 'विशुद्धं केवलं ज्ञानम्' की स्थिति से भी आगे बढ़ जाता है। ज्ञान की शुभ्र वाष्प पर सूर्य की रश्मियों के प्रभाव से इन्द्रधनुषी छटा दृश्यमान् हो जाती है। अपूर्व, अज्ञेय होने पर भी 'शिव' यहां हृदय को दिव्य-आनन्द से ओतप्रोत कर देता है। नटराजराज का यह नृत्य विश्वचेतना का ब्रह्माण्ड-नृत्य है; कभी रूप युक्त कभी अरूप, कभी रूपारूप। यह महानृत्य निज अनुग्रह-शक्ति की व्याप्ति में होता है (2790)। जो इस परमानन्दमय दिव्य आनन्द-नर्तन के दर्शन कर लेता है उसका भेद समाप्त होकर उसी क्षण जीव शिव से एकाकार होता है (2796)।

'सर्वत्र व्याप्त है चिदम्बर', 'सर्वत्र हो रहा आनन्द नृत्य', 'सर्वत्र व्याप्त शिव का अनुग्रह' (2722) तथा 'अंतहीन सदानन्द शक्ति के संग नृत्यरत हैं नटराज' (2724) एवं 'नृत्यरत हुए जब नटराजराज, संग उनके नाच उठे

वेद और आगम', 'नादगीत के संग सप्तलोक' इत्यादि अनेकानेक कथनों में तिरुमूलर ने शिव के जिस नृत्य का वर्णन किया है वह एक ओर गहन-गम्भीर तात्त्विक अर्थ से युक्त है तो दूसरी ओर भावनामूलक चिंतन की अभिव्यक्ति है। जब सतत अभ्यास से राग-द्वेष, आग्रह-अहंकार, आदि अज्ञानजन्य दोष निवृत्त हो जाते हैं तो सृष्टि में व्याप्त वास्तविकता की झलक मिलने लगती है। सर्वत्र व्याप्त एक ही तत्त्व के अनुभव की स्थिति आती है।

तिरुमूलर के अनुसार *'परमाण्डत्तूडे परासत्ति पादम्'*—परब्रह्माण्ड के शिखर पर पराशक्ति के दिव्य चरण हैं; परब्रह्माण्ड के शिखर पर परमेश्वर की दिव्य ज्योति शोभायमान है; नाद अंतराय बिना सकल ब्रह्माण्डों के पार व्याप्त है; वहां आकाशगंगा के पार नटराजराज का महानृत्य हो रहा है (2734)। यही प्रभु माणिक्य-ज्योति बनकर अंतर् में नाच रहे हैं; दिव्य चिदम्बर के मंदिर में नाच रहे हैं; दिव्य-ज्योति में भी शिवानन्द नृत्य हो रहा है और यह अद्भुत नृत्य जीवमात्र के उद्धार हेतु है (2743)। निखिल भुवन में, जल, अनिल, अनल, आकाश सर्वत्र प्रभु शक्ति के संग नृत्य कर रहे हैं वह नित्य ही चित्-अम्बर में स्नेह से नृत्यरत हैं (2746)। जब आदिदेव प्रभु आनन्द से उन्मत्त होकर नृत्य करते हैं तो चन्द्रकला नाच उठती है, उनके हाथ की वह्नि नाच उठती है, ब्रह्माण्ड, चराचर नृत्य कर उठते हैं, यह नाद के संग हो रहा नादान्त का नृत्य है (2751)। तिरुमूलर ने नाद की चार स्थितियों में ईश के नृत्य का वर्णन किया है। यह चार स्थितियां हैं — नाद, नादान्त, नटन, नटनान्त। जिस वह्नि की ज्योति में निर्मल, निरामय देवाधिदेव नृत्य करते हैं वह 'कुण्डलिनी' है और 'बोध' शुद्ध पराज्ञान की स्थिति है (2756)।

नटराज के नृत्य को डॉ. आनन्द कुमारस्वामी ने 'संगीतमयी आदिशक्ति का विकास' माना है। चिदम्बरम् अथवा तिल्लै में शिव का नृत्य दक्षिण भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना का अद्भुत रूप है। यह नृत्य ईश की पंचक्रियाओं — सृष्टि, स्थिति, संहार, तिरोभाव और अनुग्रह का द्योतक है। अलग-अलग ये क्रियाएँ ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, महेश्वर और सदाशिव की हैं। मनवाचकम् कडन्दार की कृति उन्मैविळक्कम् के अनुसार 'डमरू सृष्टि का कारक है, अभय हस्त रक्षा प्रदान करता है, अग्नि संहार करती है और ऊर्ध्वपद मुक्ति-प्रदाता है।' डॉ. जनार्दन मिश्र ने 'चिदम्बरम् मुम्मणि कोवई' के संदर्भ से शिव-नृत्य की यह विवेचना की है—

"प्रभो ! दिव्य डमरू वाले आपके हाथ ने द्यावा-पृथिवी, अनन्त लोकों और असंख्य जीवात्माओं की सृष्टि की है। आपका ऊर्ध्व हस्त चेतन और अचेतन-रूप प्रपंच की सृष्टि की रक्षा करता है। आपके अग्निवाले हस्त से इन लोकों में परिवर्तन उत्पन्न होता है। भूमि पर आरोपित आपका पवित्र चरण कर्मबन्धन में छटपटाते हुए आत्मा को शरण देता है। जो आपकी शरण में जाते हैं, उन्हें आपका ऊर्ध्वचरण निर्वाण प्रदान करता है। ये पांचों क्रियाएँ आपके ही हाथों के कर्म हैं।"

इस नृत्य, पंचाक्षर और ॐकार में कोई भेद नहीं है। ॐकार के लिखित रूप की बाहरी वृत्तरेखा ही प्रभामण्डल है, नटराज के ऊपर प्रभामण्डल ॐकार है, इसकी प्रभा ही अक्षर है जो ॐकार से कभी विलग नहीं रहता। यही चिदम्बर के स्वामी का नृत्य है। 'नमः शिवाय' की परिभाषा भी इस प्रकार की गई है– 'चरणों में 'न', नाभि में 'म', स्कन्ध देश में 'शि', मुख में 'व' और मस्तक में 'य' है।' अथवा 'डमरुवाला हस्त 'श'; फैला हुआ हस्त 'व'; अभयहस्त 'य'; अग्नि वाला हस्त 'न' और मुयलक को दबाने वाला चरण 'म' है' जो क्रमशः ईश्वर, शक्ति, आत्मा, तिरोभाव और मल के प्रतीक हैं।'

(क्रमांक–765, 766, 768, 778, मंत्र संख्या–2724, 2729, 2743, 2758 आदि)

मन्त्र एवं यन्त्र (चक्र)

अध्यात्म की प्रत्येक धारणा नादरूप अथवा आकाररूप में अभिव्यक्त की जाती है। अवधारणा का सत्य देवता, नादप्रतीक मंत्र और रूपप्रतीक यन्त्र कहा जाता है। देवता जीवनाधार है, मंत्र व्याप्तिक्षम रहस्यात्मक शरीर है और यंत्र उसका स्थूल आकार है। यंत्र को हम शरीर कहें, तो मंत्र 'देवता' की आत्मा है। जिस भाँति आत्मा जीव के अणु-अणु में, उसके रक्त, मांस, मज्जा में सर्वत्र व्याप्त है उसी भाँति मंत्र और यंत्र में 'देवता' सर्वत्र विद्यमान रहता है। मंत्र-शास्त्र के ज्ञाताओं ने मंत्र शब्द की व्युत्पत्ति विविध रूपों में की है–

मन्तारं त्रायत इति मन्त्रः – मन् धातु से चिंतन अथवा आवृत्ति का अर्थ और 'त्रा' से रक्षा या मुक्ति का अर्थ लेकर माना गया कि जिसकी पुनः-पुनः आवृत्ति करने अथवा जिसका ध्यान करने से मानव इस दृश्यमान जगत् के भव-बंधन से मुक्त होता है वह मंत्र है। इसी भाँति *'त्रायते सर्वभयात् तस्मात् मन्त्र इतीरितः'* का अर्थ है–जो सर्वभय से मुक्ति प्रदान करता है। जिसके

मनन से सुरक्षा प्राप्त होती है—'मननात् त्रायत इति मन्त्रः भी मंत्र का एक अर्थ है।

'यन्त्र' शब्द 'यम्' धातु से गृहीत है। यम् अर्थात् नियंत्रण करना। यम् धातु का अर्थ 'गृह' भी है अतः 'यन्त्र' का अर्थ घर, स्थान, सुरक्षित शरणस्थली होता है। यंत्र एक आकार, निश्चित् मापदण्ड की व्यवस्था है जो मंत्र की शक्ति का साकार रूप होता है। अतः यंत्र किसी भी मंत्र की शक्ति का केन्द्रभूत घर, स्थल अथवा आकार है। यह जगत् नश्वर है, इस अनित्य जगत् के नाम और रूप में विग्रह अथवा प्रतिमा रूपप्रधान होती है। विग्रह से आराध्य का केवल बाह्य शारीरिक पक्ष ही अभिव्यक्त होता है। इससे मात्र यह ज्ञात होता है कि अमुक इष्ट का बाह्य आकार अथवा रूप क्या है। 'मन्त्र' आराध्य के मूल तत्त्व को प्रतीकात्मक रूप से अभिव्यक्त करता है। यह अभिव्यक्ति ज्यामितीय विधि से रेखाओं, वृत्तों, तन्त्री अथवा रज्जु, त्रिकोण, चतुर्भुज, कमलदल आदि द्वारा होती है। यंत्र के माध्यम से इष्ट की पूजा-आराधना मूर्ति, विग्रह अथवा प्रतिमा की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक शक्तियुक्त, श्रेष्ठ तथा अधिक प्रभावी मानी जाती है।

इसका मुख्य कारण है कि चक्र अथवा यन्त्र अमूर्त और प्रतीकात्मक है तथा इसके द्वारा आराध्य की अवधारणा एवं अनुभूति अथवा मानसदर्शन सहज एवं प्रत्यक्ष होता है। परम्परागत मान्यता है कि किसी भी विग्रह को शक्ति-सम्पन्न करने, अधिक प्रभावशाली बनाने आदि के लिए मूर्ति अथवा प्रतिमा प्रतिष्ठित करने से पूर्व उसके नीचे यंत्र स्थापित किया जाता है।

तिरुमूलर ने यंत्रों के लिए 'चक्र' शब्द का प्रयोग किया है। ऋग्वेद के अनुसार 'एक चक्र है, उसकी बारह परिधि (मास) हैं, तीन नाभि (ऋतु—ग्रीष्म, वर्षा, हेमन्त) हैं। उसमें 360 शंकु (दिन) जुड़े हुए हैं।' क्रमण जिसका स्वभाव हो, उसे 'चक्र' कहते हैं। यह विवर्तना, परिणाम और उपरतिवाला कालचक्र है। चक्र एक विश्वव्यापी तत्त्व का प्रतीक है। 'त्रिशूल' त्रिशक्ति अथवा त्रिगुण आदि का प्रतीक माना गया है। डॉ. जनार्दन मिश्र ने 'भारतीय प्रतीक विद्या' में विविध स्रोतों से प्राप्त सामग्री का विश्लेषण करते हुए प्रतिपादित किया है कि यंत्र, मूर्ति, मंदिर, स्तम्भ, शिवलिंग आदि का मूल सिद्धान्त एक है। यंत्र के निर्माण में बिन्दु, त्रिकोण, वृत्त और चतुष्कोण का प्रयोग होता है। यत्र-तत्र त्रिकोण के स्थान पर पद्मदल का प्रयोग किया जाता है।

"यंत्र का आरम्भ 'बिन्दु' से होता है। यह बीज नाद-बिन्दु का प्रतीक है।" यह सृष्टि का आरम्भ है और साकार ब्रह्म का आदिरूप है। यह शिवलिंग का लिंगस्थान; विष्णु की नाभि—जहाँ से सृष्टि-पद्म निकलता है—का संकेतक है। शिव की नाभि—जिसके कमल पर शक्ति का विलास होता है—भी यही है। नटराज की मूर्ति में माया चक्र के भीतर यही नटराज ब्रह्म-तत्त्व है। यंत्रों में अंकित त्रिकोण त्रिशक्ति (इच्छा, ज्ञान, क्रिया) के रूप में चेतना का आत्मप्रसार है। बिन्दु के विस्तार में जब शक्तिमान्-शक्ति (शिव-शक्ति) की अवधारणा की जाती है तब बिन्दु के बाहर दो त्रिकोण रहते हैं। ऊर्ध्व शीर्ष त्रिकोण शिव है और अधः शीर्ष शक्ति है। शिव-शक्ति रूप बिन्दु व्याप्त होकर वृत्त का रूप ग्रहण करता है। यह त्रिगुणात्मक प्रकृति है। इसका स्वभाव आत्मप्रसार का है अतः इसका लगातार विस्तार होता रहता है। "बिन्दु का विस्तार चतुष्कोण के रूप में स्थिर होता है। चतुष्कोण स्थिरता का प्रतीक है। इसलिए इसको मूलाधार भी कहा जाता है। यह चतुष्कोण पीतवर्ण और पृथ्वी-तत्त्व का प्रतीक है इसलिए इसे भूपुर कहते हैं।" चतुष्कोण का निर्माण वृत्त के अस्तित्व की कल्पना पर टिका है। वृत्त एक गतिशील रूप है। इसमें सदैव तनाव और गति रहती है क्योंकि इसका संचालन केन्द्रबिन्दु से होता है। अपने मूलरूप में यह बिन्दु से विकास प्राप्त करता है। इसी भाँति के विविध प्रतीकों के माध्यम से देव मंदिर की रेखाकृति चतुष्कोण पर ध्यान दें तो शिव अथवा ब्रह्म के नामरूपात्मक जगत् में आत्मविस्तार की पूर्ण भावना इस में अभिव्यक्त है।

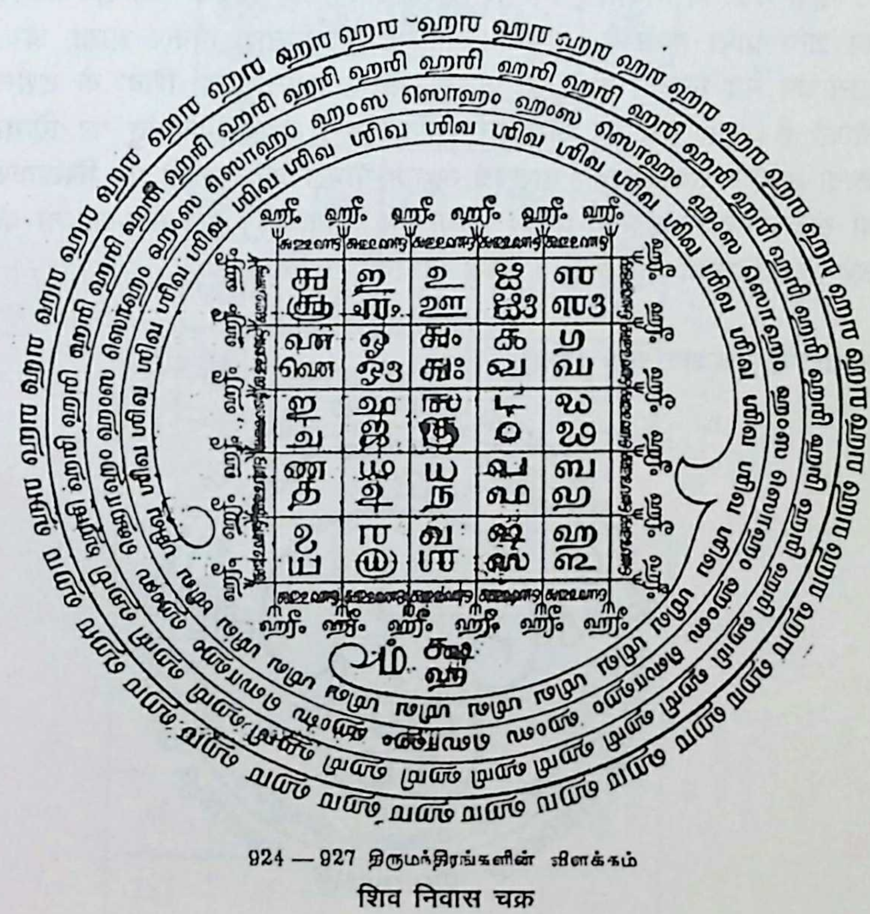
चतुर्भुज में चार द्वार होते हैं जिसके द्वारा साधना में रत साधक मंदिर (यहाँ चतुष्कोण अथवा चौकोर यंत्र) में प्रवेश प्राप्त करता है। इस चतुर्भुज के भीतर अनेक आवरण हो सकते हैं जो क्रमशः साधना के विकास क्रम को दर्शाते हैं। मध्यभाग के केन्द्र में स्थित 'शिव' के चारों ओर विविध शक्ति स्रोतों का, देवी-देवताओं का आवास रहता है। शिवलिंग के निर्माण का आधारभूत सिद्धान्त यही है। "शिवलिंग का ऊर्ध्व वर्तुल भाग बिन्दु स्थान है और रुद्रांश है; मध्य भाग में वेदी के रूप में वृत्त विष्णुवंश है और मूलभाग चतुष्कोण ब्रह्मांश है। यह गति और स्थित्यात्मक सक्रिय और निष्क्रिय ब्रह्म के साकार और निराकार का प्रतीक है।' (*विस्तृत अध्ययन के लिए देखें—भारतीय प्रतीक विद्या—डॉ. जनार्दन मिश्र*) इसी भाँति प्रत्येक 'अक्षर' को एक प्रतीकरूप में धारण किया जाता है। त्रिपुरा महिमस्तोत्रम् पर नित्यानन्द की टीका में इन विविध प्रतीकों के संकेत उपलब्ध हैं। उदाहरण

रूप में ऐं, ह्रीं, क्लीं के तीन बिन्दुओं को क्रमशः ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र रूप माना गया है। शब्द-ध्वनि एवं नाम और अर्थ—विषय एवं रूप ॐ है। ज्ञानार्नव के अनुसार 'ल'कार से परारूप पृथ्वी उत्पन्न हुई, 'स'कार से चन्द्र, तारा, ग्रह आदि हुए। 'ह'कार से शिव के संकीर्णरूप व्योममंड़ल के रूप में शक्ति विद्यमान है। 'ई'कार से विश्वकर्त्री तुरीयामाया और 'ए'कार से विश्वपालन करनेवाली वैष्णवी शक्ति है। ज्ञानार्नव के एक अन्य संदर्भ में 'ल'कार पृथ्वीबीज होने के कारण भूबिम्ब—भूपुर अथवा चतुष्कोण है। 'स'कार षोडश कलात्मक चन्द्र है अतः षोडशपत्र को 'ह'कार शिव कहते हैं। इसी भाँति अष्टमूर्ति शिव के प्रतीक सदा अष्टदल होते हैं, शक्ति एकादश स्थानों पर निवासकर तीन लोक की सृष्टि करती है इसलिये वह विष्णुयोनि है। दशकलाओं वाला अग्नि दशकोण का प्रवर्तक है। जब आकाश के समान सर्वव्यापी शिव से प्रारम्भ कर घनीभूत बिन्दुरूप समस्त विश्वप्रपंच की क्रियाओं की कल्पना की जाती है तब उसको हादिमत कहते हैं और जब बिन्दु रूप शक्ति से सारे विश्व की रचना और विकास का क्रम माना जाता है तब इसे कादिमत कहा जाता है। प्रसिद्ध श्रीचक्र भी "विश्वरचना का प्रतीक है जिसमें शिव अथवा शक्ति के रूप में विश्वप्रपंच का उद्‌भव और विकास दिखाया जाता है। इस प्रकार श्रीचक्र सृष्टि-क्रिया में काम करती हुई सभी शक्तियों का प्रतीक है।" लिंग, शिवलिंग आदि विषयों पर विचार करते हुए इसके प्रतीक को स्पष्ट किया गया है। यंत्रों में विद्यमान लिंग उसी अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं। 'लिंग' से सृष्टि और संहार के कारण का ज्ञान होता है। *ल — लय, ग — आगमन* अर्थात् विकास का बोध होने के कारण यह सृष्टि के अव्यय पद का अर्थ देता है। पूजा, साधना में जब साधक का मन लिंग पर स्थिर होता है तो उसे ज्ञान होता है कि एक ही स्पन्दन के तीनों भेद इसमें स्थिर हैं। इसी भाँति आत्मलिंग शब्द का प्रयोग आत्म-साधना, अंतःसाधना, ब्रह्म-साधना के लिए होता है। पुराणों की प्रसिद्ध कथा है जिसमें भयंकर ज्वालाओं से युक्त अग्नि-स्तम्भ की खोज में ब्रह्मा और विष्णु क्रमशः ऊपर और नीचे गए पर उसका आदि-अंत न जान पाए। यह कथा शिव के संकेत चिह्न 'लिंग' के विषय में लिंग पुराण के इस कथन को प्रमाणित करती है कि 'जिसमें समग्र सृष्टि प्रलयकाल में लीन हो जाती है और जिससे सृष्टिकाल में पुनः सृष्टि होती है उसे लिंग कहते हैं' (99/8)।

तिरुमंतिरम् में दिए गए वर्णनों के आधार पर विविध ग्रंथों में उपलब्ध यंत्र यहां संक्षिप्त विवरण सहित दिए जा रहे हैं। हिन्दी में रूपान्तरित कुछ यंत्र भी प्रस्तुत हैं—

शिव निवास चक्र

इस चक्र को रूपायित करने के लिए तीन वृत्तों से वलयित ॐकार के मध्य 25 कोष्ठक का एक भूपुर स्थापित किया जाता है। कोष्ठक बनाने वाली प्रत्येक रेखा के अंत में त्रिशूल और उनके आगे शक्तिरूप 'ह्रीं' बीजमंत्र होता है। त्रिशूलों के मध्य 'अ, इ, उ, ए, ओ' अंकित है। अकारान्त से क्षकारान्त तक 50 वर्ण, प्रत्येक में दो वर्ण के अनुसार, स्थापित हैं। स्पष्ट है कि तिरुमूलर के समक्ष लिपि संस्कृत ही है। इक्यावन संख्या अजपा 'ॐ' अक्षर से पूर्ण होती है। भीतर से बाहर की ओर चलें तो पहले



924 — 927 திருமந்திரங்களின் விளக்கம்

शिव निवास चक्र

ॐ के वृत्त के बाहर 'शिव', 'शिव' अठाईस बार अंकित है; उससे बाहर के वृत्त पर 'हंस सोऽहम्' मंत्र दस बार आरेखित है; तदुपरान्त तीसरे वृत्त के बाहर 'हरि', 'हरि' तैंतीस बार आया है। सबसे बाहर के वृत्त के बाहरी भाग में 36 बार 'हर', 'हर' मंत्र है। इस यंत्र को तिरुअम्बल चक्र भी कहा जाता है।

त्रिशूलों के मध्य 'अ इ उ ए ओ'– 'शि व य न म' का प्रतीक रूप है। ॐकार और इक्यावन वर्णों की स्थापना समग्र नाद और बिन्दु का प्रतीक है। इस यंत्र में 'हंस सोऽहम्' तथा 'हरि' और 'हर' का होना सृष्टि में सर्वत्र व्याप्त अनादि सत्ता शिव को यंत्र में प्रतिष्ठित करता है। मानो शिव कह रहे हों–यही हमारा स्थान है, यही हमारा धाम है, नाम है। यं, रं, लं, वं, हं बीजमंत्रों को तिरुमूलर ने पंचाक्षर रूप में ही स्वीकार किया है, यहीं पंचतत्त्व रूप भी हैं (देखें मंत्र संख्या 924-927)।

इस यंत्र की नियमित, निरंतर आराधना से सर्व ऐश्वर्य तथा सर्व प्रकार का ज्ञान प्राप्त होता है। समस्त व्याधियों का विनाश होकर ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञान का भेद विलीन होता है; फलतः अनन्तः आनन्दप्रद 'शिव' के दर्शन मिलते हैं। इस मंत्र का आरेखन रजत, स्वर्ण अथवा पंचधातु पर किया जाना अधिक उपादेय है। ताड़पत्र अथवा पीपल की लकड़ी पर लिखकर या खुदवाकर भी इसका प्रयोग किया जा सकता है। इस मंत्र-साधना के अद्भुत परिणामों का अनुभव सिद्ध साधकों ने किया है।

अम्बरस्थ पंचाक्षर चक्र (यंत्र)



अम्बलत्तुळ् ऐन्दॅळ्ुत्तु चक्रम् अर्थात् अम्बरस्थ पंचाक्षर चक्र का उल्लेख श्री मी. प. सोमसुन्दरम् ने अण्णामलै विश्वविद्यालय से प्रकाशित कृति सिद्दर इलक्कियम् (सिद्ध साहित्य) के खण्ड तीन के पृष्ठ 357 पर किया है। यह परम्परा-परिपुष्ट यंत्र है जिसमें भीतर 'ॐ नम' और 'य' हैं तथा बाहर बायीं ओर 'शि', और ऊपर 'व' स्थापित हैं। आंतरिक वृत्त में 'नमशिवय' की दश पुनरावृत्तियां हैं और बाह्य वृत्त में शिवयनम को दस बार अंकित किया गया है। यह यंत्र ॐ और शिव की अवधारणा की एकता का परिचायक है और सर्वसिद्धि प्रदाता यंत्र माना जाता है।

स्तम्भन यंत्र

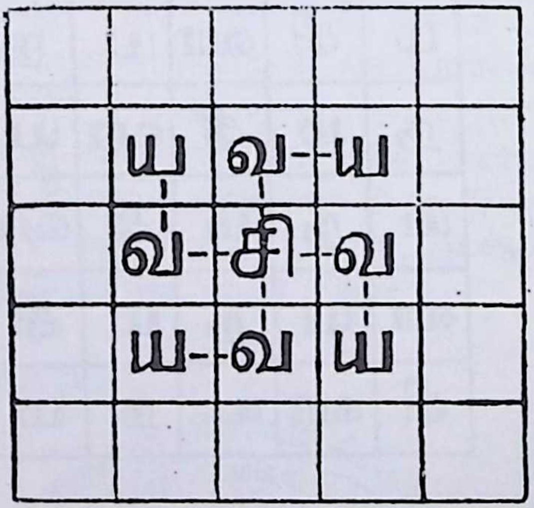
ம	சி	வா	ய	ந
ந	ம	சி	வா	ய
ய	ந	ம	சி	வா
வா	ய	ந	ம	சி
சி	வா	ய	ந	ம

स्तम्भन यंत्र

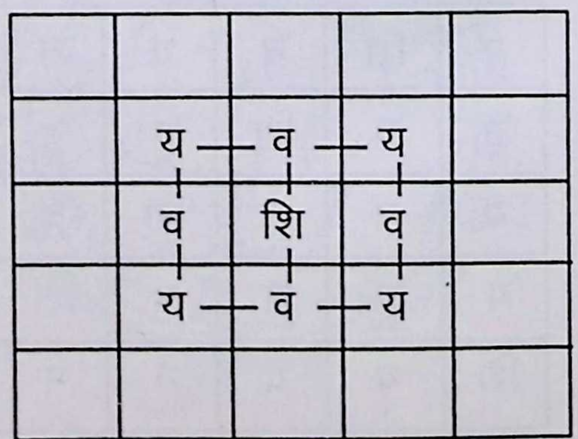
म	शि	व	य	न
न	म	शि	व	य
य	न	म	शि	व
व	य	न	म	शि
शि	व	य	न	म

स्तम्भन यन्त्र

यह स्तम्भन यन्त्र है जो 'म'कार से प्रारम्भ होकर 'म'कार में पूर्ण होता है। जीवित पीपल वृक्ष की छाल या लकड़ी के चौकोर टुकड़े अथवा ताड़ पत्र पर इस यंत्र को आरेखित किया जाता है। तदुपरान्त उस पर मोम लगाकर दीपक की ज्योति से गर्म करके अंकित वर्णों को ढक दिया जाता है। इस मंत्र के पुनः पुनः उच्चारण द्वारा साधक अपने शत्रु की क्रियाओं को निष्क्रिय कर पाने में सफल होता है। तिरुमूलर ने स्तम्भन, मोहन, उच्चाटन, मारन, वशीकरण, और आकर्षण यंत्रों की यंत्र-निर्माण विधि का वर्णन किया है। ज्ञातव्य है कि उनका मूल लक्ष्य साधना की प्रक्रिया का प्रतिपादन है। ॐ, शिव-शक्ति आदि का साधक लौकिक जीवन में स्तम्भन,



उमापति चक्र



उमापति चक्र

मोहन आदि को विशेष महत्त्व नहीं देता पर साधना-मार्ग में आनेवाली विविध बाधाओं को निष्क्रिय करने हेतु ये वर्णन किए गए हैं। कालान्तर में इनका प्रयोग लौकिक संदर्भों में भी हुआ अतः परिचयात्मक दृष्टि से इनका उल्लेख किया जा रहा है।

उमापति चक्र

इस यंत्र में 'शि' शिव मध्य में स्थित होता है। इसकी साधना से साधक के ब्रह्मरन्ध्र में शिवज्योति आभासित होती है। 'न' से प्रारम्भ कर 'य' तक ॐ सहित 'नमशिवय' मंत्र का उच्चारण करते हुए यंत्र के मध्य भाग में 'शिव' पर दृष्टि केन्द्रित करके मन की शक्तियों को संयोजित करें। इससे सांसारिक कष्टों से मुक्ति, मनः संतुष्टि होकर शिव-अनुग्रह का मार्ग प्रशस्त होता है।

आकर्षण चक्र (यन्त्र)

विविध यंत्रों की साधना ईश्वरीय शक्ति के विषय में मानव के संवेदन-शील और सक्रिय भागों, हृदय, संकल्प और जीवन शक्ति को प्रभावित करती है। आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर साधक इनका प्रयोग आनन्ददायक स्थितियां उत्पन्न और उपलब्ध करने के लिए करते हैं।

इस यंत्र का मूल मंत्र 'नमशिवय' ही है। इस यंत्र का प्रारम्भ 'य' से होकर अंत भी 'य' से ही होता है। वृहस्पतिवार के दिन रजतभस्म द्वारा ताड़पत्र पर आरेखित कर श्वेत जामुन की लकड़ी पर रखकर पश्चिम

ய	ந	ம	சி	வ
வ	சி	ய	ந	ம
சி	வ	ய	ந	ம
ம	சி	வ	ய	ந
ந	ம	சி	வ	ய

य	न	म	शि	व
व	शि	य	न	म
शि	व	य	न	म
म	शि	व	य	न
न	म	शि	व	य

दिशा की ओर उन्मुख होकर प्रणवमंत्र के साथ आठ सहस्र बार आवृत्ति करें। अदृश्य अथवा दूर स्थित व्यक्ति अथवा आत्मा को समक्ष अनुभव करने में यह यंत्र साधक है। आराधना के लिए मन एवं शरीर का निर्मल होना अनिवार्यतः आवश्यक है।

मोहनम् यन्त्र

मोहनम् का अर्थ है 'विश्व को स्व तक ले आना'। जगत् के प्राणिमात्र स्त्री, शत्रु, पशु सबको वश में कर पाने की अपार शक्ति प्रदान करने वाले इस यंत्र को कोनरै वृक्ष की छाल अथवा लकड़ी को आधार बनाकर ताड़पत्र पर आरेखित किया जाता है। पच्चीस कोष्ठकों में क्रमशः शि व य म न, व य म न शि, य म न शि व, म न शि व य, न शि व य म अंकित किए जाते हैं। 'न शि व य म' यंत्र की दक्षिण दिशा अर्थात् नीचे की ओर लिखा जाएगा। सोंठ, काली मिर्च, राई, लहसुन एवं हींग का लेप बनाकर

வடக்கு

	சி	வ	ய	ந	ம	
	வ	ய	ம	ந	சி	
மேற்கு	ய	ம	ந	சி	வ	கிழக்கு
	ம	ந	சி	வ	ய	
	ந	சி	வ	ய	ம	

தெற்கு

उत्तर

पूर्व | पश्चिम

शि	व	य	न	म
व	य	म	न	शि
य	म	न	शि	व
म	न	शि	व	य
न	शि	व	य	म

दक्षिण

इस यंत्र पर लेपित करें। तदुपरान्त इसे हल्की आँच में गाड़ दें। इस मंत्र पर दृष्टि केन्द्रित कर 'शिव' तथा 'ॐ' की निरंतर आराधना करने पर साधक को मोहन शक्ति प्राप्त होती है।

शिवयनम चक्र (यंत्र)

12 खड़ी रेखाएँ और 12 आड़ी रेखाओं द्वारा 121 कोष्ठकों का यंत्र (चक्र) शिवयनम चक्र है। तिरुमूलर ने अजपा मंत्र के रहस्य का प्रतिपादन

சி	வ	ய	ந	ம	சி	வ	ய	ந	ம	சி
ம	ம	ம	ம	ம	ம்	ம	ம	ம	ம	வ்
ந்	ம	ந	ந	ந	ந்	ந	ந	ந	ம	ய்
ய்	ம	ந	ய	ய	ய்	ய	ய	ந	ம	ந்
வ்	ம	ந	ய	வ	வ்	வ	ய	ந	ம	ம்
சி	ம	ந	ய	வ	சி	வ	ய	ந	ம	சி
ம	ம	ந	ய	வ	வ்	வ	ய	ந	ம	வ்
ந்	ம	ந	ய	ய	ய்	ய	ய	ந	ம	ய்
ய்	ம	ந	ந	ந	ந்	ந	ந	ந	ம	ந்
வ்	ம	ம	ம	ம	ம்	ம	ம	ம	ம	ம்
சி	ம	ந	ய	வ	சி	ம	ந	ய	வ	சி

शि	वा	य	न	म	शि	वा	य	न	म	शि
म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	वा
न	म	म	न	न	न	न	न	न	म	य
य	म	न	य	य	य	य	य	न	म	न
वा	म	न	य	वा	वा	वा	य	न	न	म
शि	म	न	य	चा	शि	च	य	न	म	शि
म	म	न	य	वा	वा	वा	य	न	म	वा
न	म	न	य	य	य	य	य	न	म	य
य	म	न	न	न	न	न	न	म	म	न
वा	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म
शि	म	न	य	चा	शि	म	न	य	वा	शि

करने के उपरान्त सोऽहम् का अर्थ स्पष्ट करके उसे ॐ का रूप माना जो अ उ बना और पुनः 'शिव', 'व' हुआ। 'शि', 'व' पंचाक्षर शिवय नम रूप हुआ। तदुपरान्त संस्कृत वर्णमाला के 51 अक्षर-रूप में व्यक्त हुआ। शिवनृत्य क्षेत्र को अभिव्यक्त रूप देने वाला यह चक्र 11 का वर्गफल है। रुद्र ग्यारह हैं। यह यंत्र 'शि' से प्रारम्भ होकर 'शि' में समाप्त होता है। इसके चारों कोनों में 'शि' तथा चार मध्य भागों में भी 'शि' है। समग्र अष्ट दिशाओं में तथा मध्य में 'शि' का अर्थ है – सर्वत्र, सभी स्थलों, सभी दिशाओं में शिव की व्याप्ति। वह सर्वव्यापक है, सर्वत्र है; इस भावना की पुष्टि इस यंत्र द्वारा होती है। नव दिशाओं में, दिग् दिगन्त व्यापी सत्ता ही शिव है। इस यंत्र को विश्लेषित करें तो 121 कोष्ठकों में स्थित विविध प्रतीक अक्षर इस भाँति हैं–

'शि' – शिव – 9

'व' – तादात्म्य शक्ति – 16

'य' – आत्मा – 24

'न' – तिरोधान शक्ति – 32

'म' – मलम् – 40

शिवानुभूति, ज्योतिदर्शन, सत्यज्ञान, कर्ममुक्ति के लिए अनुग्रह-प्रार्थना हेतु इस यंत्र का विशिष्ट महत्त्व है। लौकिक पीड़ाओं और कष्टों से सुरक्षा तथा अलौकिक शक्ति के साथ नैकट्य का अनुभव प्रदान करने वाला यह यंत्र अद्भुत शक्ति-सम्पन्न है। इसे ताम्रपत्र, ताड़पत्र, रजतपत्र अथवा स्वर्णपत्र पर आरेखित कियां जाता है।

शिव चक्र (यंत्र)

इस यंत्र के क्रम संख्या 1 से 24 तक अष्ट दिक्पाल, अष्ट भैरव तथा अष्ट शिवगण स्थित हैं। अकारादि को भी विविध कोष्ठकों में स्थापित किया गया है। केन्द्र में 'शि' शिव तथा 'नमशिवय' मंत्र पांच प्रकार से अंकित है।

अष्ट दिक्पालक : निऋृति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, इन्द्र, अग्नि, यम;



18	19	20	21	22	23	24
17	शि	व	य	न	म	1
16	म	शि	व	य	न	2
15	न	म	**शि**	व	य	3
14	य	न	म	शि	व	4
13	व	शि	य	न	म	5
12	11	10	9	8	7	6

शं	अं	रं	हौं	लं	णं	रं
चं	शि अ	व आ	य इ	न ई	म उ	चं
सं	म अः	शि हुं	व सः	य हुं	नं ऊ	ढं
ह्रीं	न अं	म सः	**शि**	व सः	य ऋ	गं
फं	य औ	न हुं	म सः	शि हुं	व ॠ	क्रों
भीं	व ओ	य ऐ	न ए	म ॡ	शि ऌ	ळं
धं	टं	वं	सौं	कं	उं	षं

अष्ट भैरव : असितांग, रुरु, चण्ड, क्रोध, उन्मत्त, कपाल, भीषण, संहार;

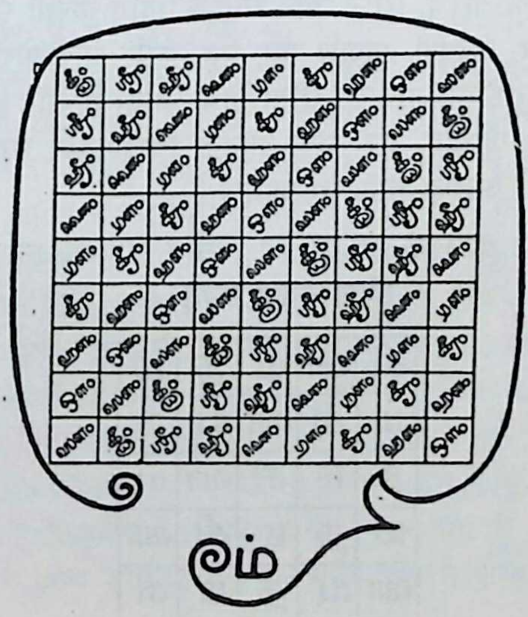
अष्ट शिवगण : नंदी, महाकाल, भृंगी, विनायक, वृषभ, स्कन्द, देवी, चण्डिकेश्वर;

स्वर : अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः तथा न म शि व य मंत्र विविध रूपों में अंकित है।

इस चक्र का एक अन्य रूप भी यहां प्रस्तुत है। इस में 16 अकारादि तथा कतिपय बीज मंत्र रहते हैं। शि व य न म को विविध रूपों में 25 कोष्ठकों में पूर्व यंत्र की ही भाँति अंकित किया जाता है। दोनों प्रकार के यंत्रों का स्रोत एक ही है (तिरुमंतिरम् 987-988) परन्तु चित्रण भिन्न-भिन्न किए गए हैं। दोनों यंत्रों का प्रभाव, पूजा विधि आदि समान है। इस यंत्र की साधना का परिणाम है – प्रचुर सम्पदा विशेषतः भूमिलक्ष्मी की प्राप्ति। ब्रह्मरन्ध्र में शिव-ज्योति के दर्शन साधना की चरण परिणति है।

नवाक्षरी चक्र

एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण यंत्र अथवा चक्र 81 कोष्ठक का नवाक्षरी चक्र है। ये कोष्ठक दस खड़ी और दस आड़ी रेखाओं के द्वारा निर्मित हैं। बाह्य गोलाकार वृत्त (ॐ) स्वर्णिम वर्ण, समग्र कोष्ठक लाल वर्ण में और उनमें अंकित मंत्र हरित वर्ण में हों। इसमें 'क्लीं' से प्रारम्भ होकर श्रीं, ह्रीं, ऐं, गौं, क्रीं, हौं, सौं नवाक्षर मंत्र स्थापित किए जाते हैं। तिरुमूलर ने कहा है–



जिसकी साधना मैं स्वयं करता हूँ
शुभदायिनी विद्या है
नवाक्षरी का उच्चारण
जिह्वा पर सांद्र-मंद स्वर में होता है
नवाक्षरी की ऐसी उपासना
सकल कल्याणकारी है। (1321)

इस मंत्र का जाप तथा आराधना के लिए चक्र निर्माण हेतु 'श्रीं' से 'क्लीं' तक, 'हीं' से 'श्रीं' तक, 'ऐं' से 'हीं' तक, 'गौं' से 'ऐं' तक, 'क्रौं' से 'गौं' तक, 'हौं' से 'क्रीं' तक, 'औं' से 'हौं' तक, 'सौं' से 'औं' तक नवाक्षरी का आरेखन होता हैं (देखें तिरुमंतिरम् मंत्र संख्या 1319, 1320, 1324, 1329, 1334, 1339, 1344, 1349, 1354, 1359, 1364) 'क्लीं' के जाप से ममता में मातृसम, रक्षण में पितृसम ज्योतिरूपिणी देवी प्रकट होती हैं। उसके दिव्य छह करों में परशु, तोमर, शूल, पाश एवं धनुषबाण शोभित हैं। इस नवाक्षरी यंत्र की उपासना द्वारा वेदागम स्वरूपिणी वागीश्वरी देवी सिद्ध होती है; समस्त पाप नष्ट होकर काम, क्रोध और अज्ञान समाप्त हो जाता है; शील और सत्कर्म में प्रवृत्ति होती है। बाला त्रिपुरसुन्दरी की कृपा से साधक को समाज और साधना-मार्ग दोनों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त होता है। ऋद्धि, सिद्धि की अधीश्वरी स्वयंभू अमृतेश्वरी साधक के भीतर-बाहर स्फुरित होकर उसे ऋद्धि, सिद्धि और समृद्धि प्रदान करती है। साधना के लिए चंदन, केसर, कस्तूरी, मार्जार गंध, घृत, कर्पूर और गोरोचन का लेप किया जाता है, सुगंधित जल का छींटा दिया जाता है और हृदय को इस नवाक्षरी यंत्र पर केन्द्रित कर भक्त, साधक निष्ठापूर्वक साधना करे तो जीवन में कुछ भी अलभ्य नहीं रह जाता।

मंत्र-संख्या 923 के आधार पर निर्मित शिव-साधना चक्र
(तिरुअम्बल चक्र)

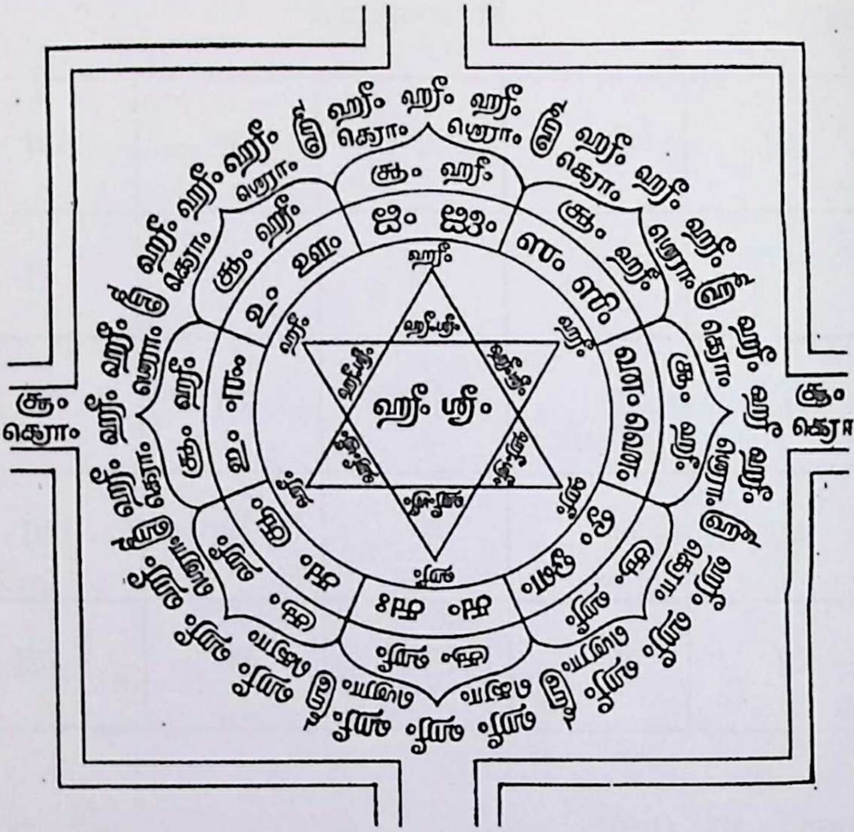
சி	வா	ய	ந	ம
ம	சி	வா	ய	ந
ந	ம	சி	வா	ய
ய	ந	ம	சி	வா
வா	ய	ந	ம	சி

तिरुअम्बल चक्र

शि	वा	य	न	म
म	शि	वा	य	न
न	म	**शि**	वा	य
य	न	म	शि	वा
वा	य	न	म	शि

भुवनपति चक्र (यंत्र)

तिरुमूलर द्वारा किए गए वर्णन के आधार पर साधक-भक्तों ने भुवनपति यंत्र को आरेखित किया है। इसका प्राचीन ग्रंथों एवं टीकाओं में उपलब्ध रूप यंत्र संख्या – के अनुसार है। तिरुमंतिरम् में वर्णित (मंत्र संख्या 1311-1314) के अनुसार षट्कोण के मध्य में 'ह्रीं' एवं 'श्रीं' शक्ति स्थापित की जाती हैं। तदुपरान्त प्रत्येक त्रिकोण के ऊपर 'ह्रीं' तथा बाहर के वृत्त पर क्रमशः अं, आं, इं, ईं, उं, ऊं, ऋं, ॠं, लृं, लॄं, एं, ऐं, ओं, औं, अं, अः चित्रित किए जाते हैं। षट्कोण के ठीक नीचे अं अः नियोजित है। अष्टदल में प्रत्येक दल के भीतर आं ह्रीं बीजमंत्र हैं; प्रत्येक दल के दोनों पार्श्वों में क्रों श्रों स्थापित हैं; प्रत्येक कमलदल की मिलन स्थली में 'हुं' बीजमंत्र है। तदुपरान्त सम्पूर्ण यंत्र के बाह्य भाग को वलयित करते हुए तीन बार शक्ति बीजमंत्र 'ह्रीं' स्थित है। बाहरी वर्ग में पूर्व और पश्चिम द्वार पर 'आं', 'क्रों' बीजमंत्र हैं। अष्ट शक्तियां अष्टयोग से सम्बद्ध हैं; नादान्त की स्थिति में अष्ट शक्तियां एक पराशक्ति रूप में समाविष्ट हो जाती हैं।

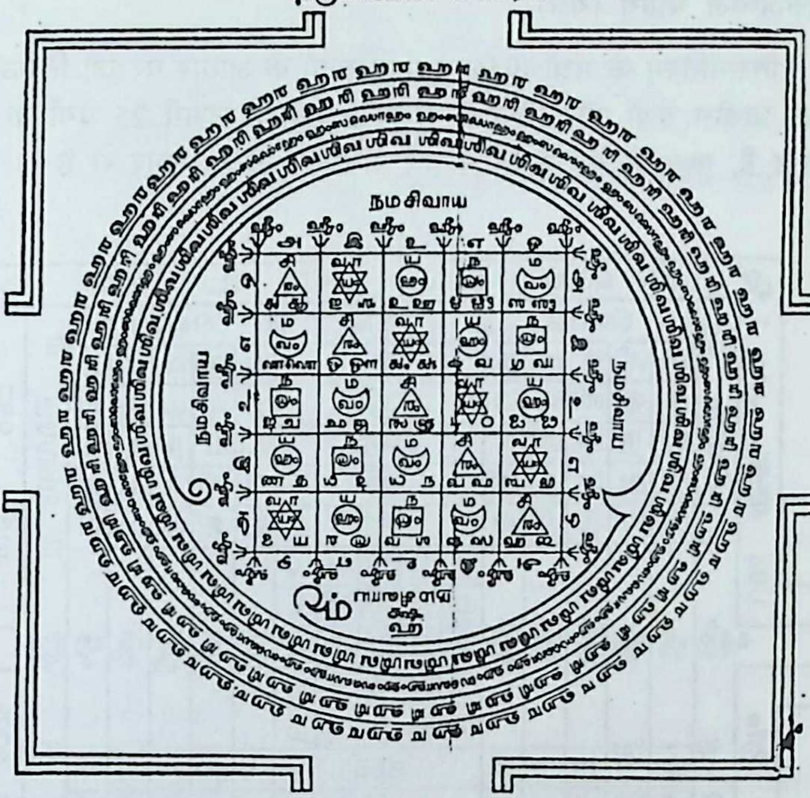


बिन्दु का अलग अस्तित्व निःशेष हो जाता है। इस भुवनपति यंत्र के समक्ष पवित्र हृदय से समर्पण कर आराधना करो। अंगवस्त्र उतार कर दूध और चावल चारों दिशाओं में अर्पित करो; तदुपरान्त उसे नैवेद्य के रूप में वितरण करो तथा स्वयं प्रसाद ग्रहण करो। मन की शांति, विविध कष्टों एवं क्लेशों से मुक्ति, शत्रु से रक्षा, रोगमुक्ति के अतिरिक्त सर्वत्र यश का विस्तार, कामनाओं की पूर्ति आदि के लिए इस यंत्र की उपासना तत्काल प्रभावकारी है। भुवनेश्वरी का वर्ण शुद्ध लाल है, देवी के वस्त्र रेशमी हैं, वह सुरक्षा प्रदान करनेवाली है; विविध रत्न आभूषण उसके मुकुट पर शोभायमान हैं। वह सर्वेश्वरी सिद्धिदात्री है।

तिरुअम्बल चक्र : एक भिन्न रूप

एक प्राचीन ग्रंथ के आधार पर तिरुमंतिरम् के एक टीकाकार जी. वरदाराजन् ने इस यंत्र को यत्किंचित भिन्न आकार में उद्धृत किया है। यहां ॐ के भीतर चारों दिशाओं में 'नम शिवाय' उत्कीर्ण है तथा प्रथम

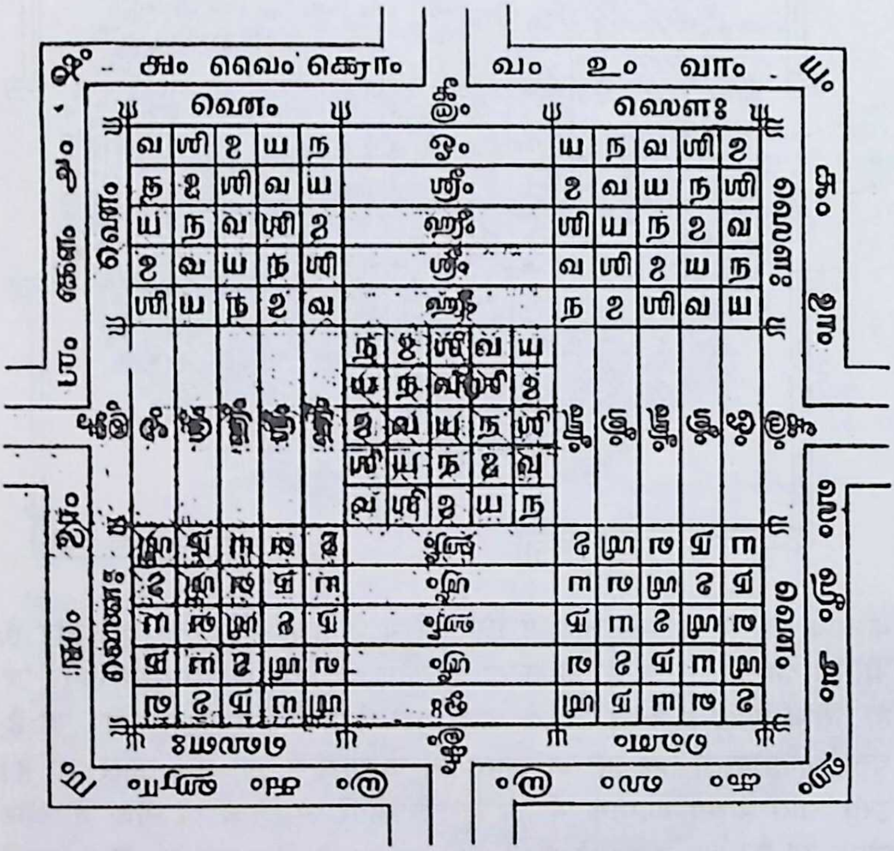
திருவம்பலச் சக்கரம்



कोष्ठक में 'अ आ' के साथ रं त्रिकोण में है तथा 'शि' शीर्ष की ओर है; द्वितीय कोष्ठक में 'इ ई' के ऊपर षट्कोण के मध्य में 'यं' तथा ऊपर 'व' है; तृतीय कोष्ठक में 'उ ऊ' के ऊपर वृत्त के मध्य में है तथा ऊपर 'य' है; चतुर्थ कोष्ठक में 'ऋ ॠ' के ऊपर वर्ग के मध्य में 'लं' और ऊपर 'न' है। इसी भांति पांचवें कोष्ठक में 'लृ ॡ' के ऊपर अर्द्धचन्द्र के बीच 'वं' और ऊपर 'म' है। शेष कोष्ठकों में भी इसी भांति परिवर्तित रूप है। बीज अक्षरों का प्रयोग है तथा नमशिवय को क्रमशः तनिक बदल कर अंकित किया गया है। यह यंत्र भी तिरुअम्बल चक्र कहा जाता है। परात्पर शिव की आराधना, ज्ञान की साधना और लौकिक, पारलौकिक जीवन में पूर्णता की प्राप्ति हेतु इसकी आराधना का विधान है। इसे यदि साधक अपने निकट रखता है तो भी उसे शिवकृपा की प्राप्ति होती है। घर में, पूजास्थल पर अथवा कर्मस्थल पर इसका नैकट्य ही शिव-शक्ति अनुग्रह का मार्ग प्रशस्त करता है। शरीर के कष्टों से मुक्ति, स्वास्थ्य लाभ, मानसिक क्लेशों से सुरक्षा आदि अनेक रूपों में इस यंत्र की महिमा अनुभूत है।

तिरुअम्बल चक्रम् (यंत्र)

तिरुमंतिरम् के मंत्रों (946 से 950 तक) के आधार पर जो तिरुअम्बल चक्र प्राचीन ग्रंथों और टीकाओं में दिया गया है उसमें 25 वर्गों के पांच समूह हैं, मध्य के वर्ग समूह में वर्ण संयोजन निम्न प्रकार से है–



न म शि व य
य न व शि म
म व य न शि
शि य न म व
व शि म य न

बाईं ओर ऊपर की ओर के 25 वर्गों के समूह में यह वर्ण संयोजन इस रूप में है–

व शि म य न
न म शि व य
य न व शि म
म व य न शि
शि य न म व

ऊपर दाईं ओर के 25 वर्ण समूह के 25 वर्गों की स्थिति निम्न रूप में है–

य न व शि म
म व य न शि
शि य न म व
व शि म य न
न म शि व य

नीचे बाईं ओर के 25 वर्ण निम्न क्रम से पच्चीस कोष्ठकों में हैं–

शि य न म व
व शि म य न
न म शि व य
य न व शि म

इसी भाँति दाईं ओर के पच्चीस वर्गों में 25 वर्ण इस प्रकार संयोजित हैं–

म व य न शि
शि य न म व
व शि म य न
न म शि व य
य न व शि म

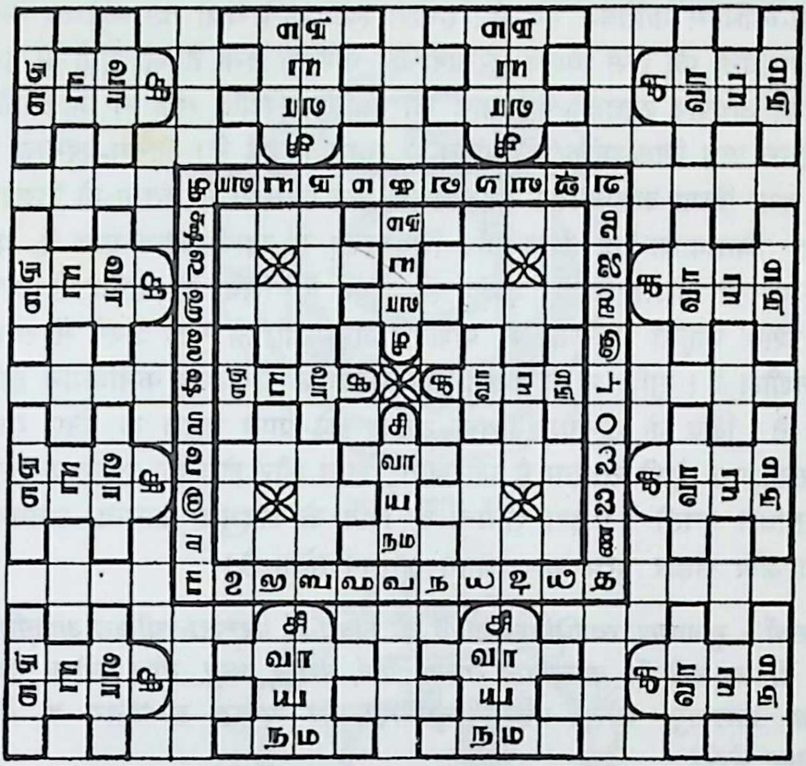
बाहरी वर्ग में शं, कौं, चं (भीतरी में ऐं); बाईं ओर अं, वं, क्रौं तथा शीर्ष की ओर (भीतरी में ऐं); दाईं ओर कं, मां, तथा वं, उं, वां, शीर्ष की ओर (भीतर सौः); बाईं ओर ही नीचे झं, मां तथा सौं और बाहरी वर्ग में लं, अं, हां स्थित हैं। दाईं ओर नीचे कं, सं, लं तथा सं, भीं, चं स्थापित हैं। अंदर के कोष्ठक में 'ऐं' विद्यमान है।

यंत्र के चार द्वार हैं जिनसे जानेवाले चारों मार्गों के समक्ष क्रमशः प्रत्येक कोष्ठक में क्लीं, ऊँ, श्रीं, हीं, श्रीं, हीं को स्थापित किया गया है।

सर्वमंगलकारी यह प्रासाद (प्रा – शिव, सा – शक्ति, द – शिवशक्ति रूप) शिवशक्ति, परात्पर सत्ता का आवास है। इसमें अनेकानेक बीजमंत्रों द्वारा विविध देवी-देवताओं को सादर प्रतिष्ठित किया गया है। पंचाक्षर के रूप में स्थित वर्ण सृष्टि के पंचतत्त्वों को संचालित करते हैं। 'नं'कार – पृथ्वी, 'म'कार – जल, 'शि'कार – अग्नि, 'व'कार – वायु और 'य'कार – आकाश को संचालित करता है। चिदाकाश में भासित नादमय चक्र में सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त होने की क्षमता है। अभक्तों के लिए अदृश्य लोकनायक 'शिव' इस चक्र में सर्वत्र व्याप्त हैं। चित्त जहां प्रकाशित है ऐसे तिरुअम्बलम् में दुग्ध में घृत की भांति तिरोभूत रूप में शिव-शक्ति स्थित रहते हैं। जिस भाँति गोवत्स थन के पास जाता है तो गाय दूध देती है उसी भांति गुरुमण्डल में रहनेवाले नन्दी शीर्ष (सहस्त्रार) में स्थिर होकर शिवामृतरूपी दुग्ध प्रदान करते हैं। समग्र लौकिक, आध्यात्मिक कामनाओं की पूर्ति हेतु इस यंत्र की आराधना साधक को तत्काल फल प्रदान करती है। इस यंत्र को वृक्ष की छाल, लकड़ी, ताम्रपत्र, रजतपत्र अथवा स्वर्णपत्र पर अंकित किया जा सकता है। इसकी साधना का मूल मंत्र 'नमशिवय' ही है। मन-वचन कर्म की पवित्रता, साधना के लिए मानसिक तत्परता और एकाग्रता अनिवार्य है। शिव-शक्ति को हृदय में धारण कर, यंत्र को आधार बनाकर आराधना करने से अद्‌भुत आनन्ददायी अनुभव होते हैं और चेतना का विस्तार होता है। ॐ के अधिष्ठातृदेवता आदिदेव शिव के पंचाक्षर को तीन प्रकार से उच्चरित किया जाता है – ऊँ नम शिवाय, ऊँ वाशिय नम, तथा ऊँ शिवाय नम।

शाम्भवी मण्डल चक्र

20 सीधी रेखाएँ और 20 खड़ी समानान्तर रेखाओं द्वारा निर्मित 361 कोष्ठकों के इस चक्र में दो भूपुर भीतर एवं दो बाहर होते हैं। सबसे अंदर के भूपुर में चार लिंग निर्मित किए जाते हैं। प्रत्येक दिशा में भी चार लिंग स्थापित किए जाते हैं जो समग्रतः बारह हो जाते हैं। मध्य के भूपुर में चार पुष्प स्थापित किए जाते हैं। पूरे यंत्र में सोलह शिवलिंग हैं। इन शिवलिंगों में शिवशक्ति दोनों का समावेश है। 51 अक्षरों के लिए शिवयनम का निरंतर पाठ करें। मध्यवीथि में 'क' कार से लेकर 'क्ष' कार तक 35 व्यंजनों को लिख लें। प्रत्येक शिवलिंग में 'शिवयनम' को योजित करें। पैंतीस अक्षरों के समक्ष जब पंचाक्षर का जाप किया जाता है तो साधक को

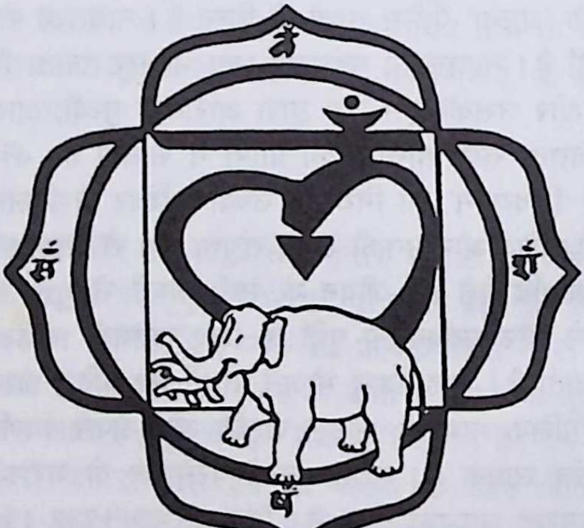


ज्ञान होता है कि 'आत्मा' पैंतीस तत्त्वों से भिन्न है। नादतत्त्व से रहित 35 तत्त्व आत्मा नहीं है। नादान्त में पहुंचकर नाद भी छूट जाता है। शाम्भवी आनन्दरूपा है और उसकी इस यंत्र द्वारा आराधना पृथ्वी, आकाश, चन्द्र एवं सर्वव्याप्त चेतना रूपी शाम्भवी की प्राप्ति में साधक है। ॐ ज्ञान रूप है, उसके साथ 'शिवयनम' का नियमित उच्चार ईश्वर से मिलन का मार्ग प्रशस्त करता है। शिव और उनकी शक्ति संयुक्त रूप से शिव-कामी रूप में साधक को आशीर्वाद देते हैं। जीवन के सभी कष्टों से मुक्त होने, अक्षय कोष प्राप्त करने और सर्वकामना पूर्ति के लिए शाम्भवी मण्डल चक्र की आराधना की जाती है। श्रेष्ठ स्वादु भोजन, तीर्थों का पवित्र जल, समुचित गहरी निद्रा, मांगलिक भावनाएँ, सकल समृद्धि और अपार स्वर्ण आदि की प्राप्ति में यह मंत्र साधक है। अंततः इससे परमेश्वर के चरण-कमल की प्राप्ति होकर अमरत्व उपलब्ध होता है। (मंत्र संख्या–1298-1300)

तिरुमंतिरम् के आधार पर आरेखित एवं शताब्दियों से साधना का आधार बने यंत्रों के नामों में यत्किंचित् भेद विद्यमान है। एक ही यंत्र भिन्न रूपों में चित्रित हुआ है। 'तिरुअम्बल चक्र' नामक अनेक चक्र हैं, प्रत्येक की

साधना-विधि में कतिपय भेद है। हमारा लक्ष्य इन यंत्रों का परिचय मात्र देकर साधना की उस विशद परम्परा का परिचय देना है जो युगों से इस मार्ग पर अग्रसर साधकों को ज्ञान की सर्वोच्च स्थिति तक ले जाने और सत्यज्ञान रूप शिव-शक्ति की प्राप्ति में सहायक हुई है। आगम-परम्परा में ज्ञान तथा क्रिया का निरंतर सहभाव है। शैव परम्परा में चेतना के विस्तार अर्थात् 'चिदाकाश' ही 'शिव' हैं। चिदम्बरम् में व्याप्त शिव एक हैं, यह विश्व उनकी लीलाभूमि है, 'शक्ति' ही 'शिव' है, 'शिव' ही 'शक्ति' है। ऐसे पति 'शिव' प्रकृति के बंधन से, पाश से आत्माओं को मुक्त करने में सतत प्रयत्नशील हैं। सृष्टि में विद्यमान जीवनधारा का नियमन कर्मविधान द्वारा होता है। शिव के अनुग्रह अथवा अरुळ् को प्राप्त करने के लिए यंत्र-उपासना एक ऐसी साधना है जो ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय को एकरूप करने का साधन बनती है। इस साधना से शिव के अद्‌भुत, आनन्द, अनवरत प्रलय और संहार नृत्य का साक्षात् अनुभव होता है।

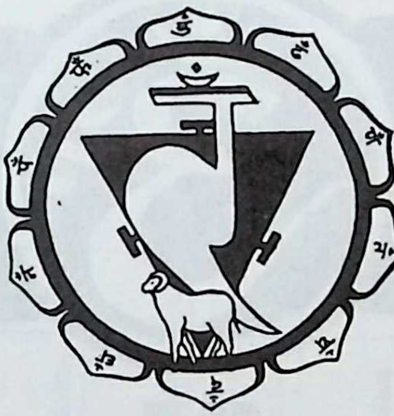
षड्‌चक्रों - मूलाधार स्वाधिष्ठान आदि के विषय में परम्परा-स्वीकृत आकृतियां यहां दी जा रही हैं। कमलदल संख्या, वर्ण, स्थान, धातु, बीज, लोक, देवी, देवता, प्राणवायु, कोश, तत्त्व, तन्मात्राऐं और सम्बद्ध ज्ञानेन्द्रिय के लिए तालिका देखें।



मूलाधार चक्र



स्वाधिष्ठान चक्र



मणिपूरक चक्र



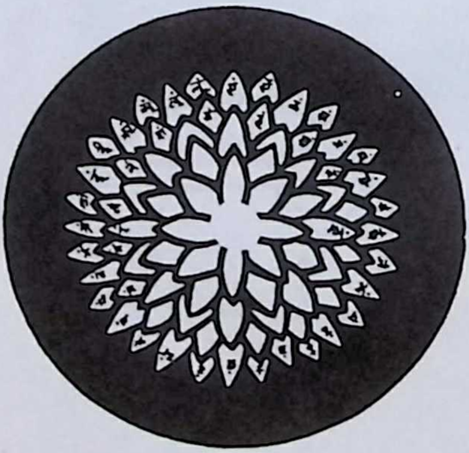
अनाहत चक्र



विशुद्धि चक्र



आज्ञा चक्र



सहस्रार चक्र

षड्चक्र, कुण्डलिनी जागरण : मूलाधार आदि चक्रों का रूपाकार एवं परिचय

चक्रनाम	कमल-दलसंख्या	वर्ण	स्थान	धातु	बीज	लोक	देवी	देवता	प्राणवायु	कोश	तत्व	तन्मात्रा	ज्ञानेन्द्रिय कर्मेन्द्रिय
मूलाधार SACRO COCCYGEAL PLEXUS	चार	रक्त	कदप्रदेश/ गुह्यस्थल	अस्थि	लं	भू	सावित्री/ डाकिनी	गणेश	अपान	अन्नमय	पृथ्वी	गंध	नासिका
स्वाधिष्ठान PELVIC PLEXUS	छह	सिंदूरी, प्रवाल–आमा	लिंगमूल	वसा	वं	भुवः	सरस्वती/ राकिनी	विष्णु	व्यान	प्राणमय	जल	रस	जिह्वा
मणिपूरक SOLAR PLEXUS	दस	स्वर्णिम	नाभि	मांस	रं	स्वः	लक्ष्मी/ लाकिनी	रुद्र	संमान	प्राणमय	तेजस्	दृष्टि	चक्षु
अनाहत CARDIAC PLEXUS	बारह	नील	हृदय	रक्त	यं	महा	काली/ काकिनी	ईशान	प्राण	मनोमय	वायु	स्पर्श	त्वक्
विशुद्धि PHARYNGEAL & LARYNGEAL PLEXUS	सोलह	धूम्र	कण्ठ	त्वचा	हं	जनः	शाकिनी	सदाशिव	उदान	विज्ञानमय	आकाश	—	श्रोत्र
आज्ञा CAVERNOUS PLEXUS	दो	श्वेत	भ्रमूध्य	—	ॐ	तपः	हाकिनी	परमशिव	समग्र पांच	विज्ञानमय	—	—	बुद्धि
सहस्रार HYPOTHALAMIC PITUITARY AXIS	एक सहस्त्र अनंत	शुभ्र	मस्तक	वीर्य	अं से क्षं, ॐ	सत्यम्	शक्ति	शिव	—	आनन्दमय	—	—	

शब्दानुक्रमणिका

(खण्ड तीन के लिए)

तमिल आगम-शास्त्र : तिरुमूलर कृत तिरुमंतिरम्

संदर्भ ग्रंथ : संस्कृत एवं हिन्दी

पुस्तक का नाम		लेखक	प्रकाशन वर्ष
अमनस्क योग *(महायोगी गोरक्षनाथ विरचित)*	:	श्री योगानन्द स्वामी	(1967)
ईशादि नौ उपनिषद्	:	हरिकृष्ण दास गोयन्दका	(2053 वि.)
ईशावास्योपनिषद् (अध्ययन एवं व्याख्या)	:	डॉ. शशि तिवारी	(1986)
कबीर ग्रंथावली	:	बाबू श्यामसुंदर दास	(2027 वि.)
कल्याण उपनिषद् अंक	:	गीता प्रेस, गोरखपुर	
कल्याण साधनांक	:	गीता प्रेस गोरखपुर	(1940)
कल्याण भक्ति अंक	:	गीता प्रेस गोरखपुर	(1958)
कल्याण वेदान्तांक	:	गीता प्रेस गोरखपुर	(1936)
गोरखनाथ और उनका युग	:	रांगेय राघव	(1963)
गोरख बानी	:	डॉ. पीताम्बरदत्त बडथ्वाल	(1979)
तमिल साहित्य एक झांकी	:	डॉ. एम. शेषन्	(1989)
तमिल शैव भक्ति साहित्य	:	डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ	(1993)
तंत्र सिद्धान्त और साधना	:	पं. देवदत्त शास्त्री	(1976)
तांत्रिक साधना और सिद्धान्त	:	म. म. गोपीनाथ कविराय	(1994)
तांत्रिक वाङ्मय में	:	महामहोपाध्याय	
शाक्त दृष्टि	:	डॉ. श्री गोपीनाथ कविराज	(1963)
शाक्ततंत्र	:	मुनीशचन्द्र जोशी	(1989)
तिरुमंतिरम्	:	शिशिर कुमार सिंह	(1997)
तुकाराम एवं कबीर : एक तुलनात्मक अध्ययन	:	डॉ. रमेश सेठ	(1992)
दक्षिण के शैव संत	:	डॉ. एम. शेषन	(1972)
दीक्षा	:	म. म. पं. गोपीनाथ कविराज	(1993)

पातञ्जल योगदर्शनम्	:	स्वामी श्री ब्रह्मलीन मुनि	(1958)
पातञ्जल योगदर्शनम्	:	स्वामी हरिहरानन्द अरण्य	(1974)
पुराण-विमर्श	:	बलदेव उपाध्याय	(2021 वि.)
पेरियपुराणम्	:	डॉ. ना. महालिंगम (सम्पा.) लेखक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ	(1994)
भारतीय प्रतीकविद्या	:	डॉ. जनार्दन मिश्र	(1959)
मध्यकालीन संत साहित्य	:	डॉ. राम खेलावन पाण्डेय	(1965)
महायोगी गोरक्षनाथ	:	डॉ. के. आर. नंजुण्डन	(1992)
मुण्डक उपनिषद्	:	डॉ. शशि तिवारी	(1981)
रामलिंग स्वामी : वल्ललार की ज्योतिसाधना	:	डॉ. ना. महालिंगम् (सम्पा.) डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ (लेखक)	(1996)
लिंग पुराण (दो खण्ड)	:	श्रीराम शर्मा आचार्य	(1978)
व्याख्याकारों की दृष्टि से पातंजल-योगसूत्र का समीक्षात्मक अध्ययन	:	डॉ. (कु) विमला कर्णाटक	(1974)
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी	:	म. म. पं. गोपीनाथ कविराज	(1990)
शिव-चरित	:	सुदर्शन सिंह 'चक्र'	(1976)
शिव रहस्य (द्वितीय खंड)	:	डॉ. चमनलाल गौतम	(1975)
शैवमत	:	डॉ. यदुवंशी	(1955)
श्वेताश्वतर उपनिषद् : दार्शनिक अध्ययन	:	डॉ. वेदवती वैदिक	(1984)
संक्षिप्त शिवपुराण	:	गीता प्रेस, गोरखपुर	(2049 वि.)
संत काव्य (संग्रह)	:	आचार्य परशुराम चतुर्वेदी	(1967)
संत काव्यधारा	:	आचार्य परशुराम चतुर्वेदी	(1981)
सर्वदर्शन संग्रह	:	प्रो. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'	(2021 वि.)
सहज-साधना	:	डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी	(2020 वि.)
सिद्ध साहित्य	:	डॉ. धर्मवीर भारती	(1968)
सूर्य देवता	:	डॉ. शशि तिवारी	(1994)

सौन्दर्य लहरी : श्रीमती डॉ. विनोद अग्रवाल (1958)
(शंकराचार्य प्रणीत)

हठयोग प्रदीपिका : स्वात्मारामयोगीन्द्र (1977)

संदर्भ ग्रंथ : तमिऴ्

आन्मीकमुम् अऱिवियलुम् : तिरुवारूर पंचनद त्यागसुन्दरम् (1994)

ऑन्ऱे कुलम् ऑरुवने देवन् : ई. राम वीरप्पन (1991)

कुण्डलिनी शक्ति : डॉ. नजन (1973)

तायुमानवर पाडल् (मूलमुम् उरैयुम्) : कोक्कलै जेराजन (1994)

तिरुअरुट्पा (तिरु अरुट्प्रकाश वळ्ळलार) : ऊरन् अडिगळ् (1972)

तिरुमंतिरम् (5 भाग) : तिरुवावडुतुरै आधीनम् (1993)

तिरुमंतिरम् (मूल, व्याख्या) : जी. वरदराजन (1972)

तिरुमूलर अरुळुरै : तेर्मोऴियार स्वामिगळ् (1994)

तिरुमूलरिन् तिरुमंतिर विरुन्दु : सम्बन्धम् (1995)

तिरुवाचकम् (माणिक्कवाचकर) : स्वामी चिद्भवानन्द (1983)

मंतिर शक्तियुम् यन्त्र पूजैकळुम् : राजमोहन (1987)

मंतिरङ्कळ् ऍन्राल् ऍन्न : अ. च. ज्ञानसंबंधन (1994)

यामिरुक्क पयमेन् : एन. पद्मनाभन् (1968)

शिवज्ञान सिद्धियार सुपक्कम् : अनु. के. शिवरामन (अंग्रेजी) (1988)
: बी. डी. जैन (हिन्दी)

शिवनॅरियुम् शिवत्ताण्डरुम् : डॉ. राधा त्यागराजन (1986)

श्री नटराज तत्तुवम् . : डॉ. वाई. दक्षिणामूर्ति (1996)

संकटङ्गळ् अगट्रि मनशांति अळिक्कुम् मन्तिरङ्गळ् : के. एस. पतंजलि अय्यर (1995)

सित्तर इलक्कियम् (आयुवु नूल) (3 भाग) : मी. प. सोमु (1988)

REFERENCE BOOKS

Name of the book		Author	Year of Publication
Ananda - An Experience	:	M. Sivaram	(1976)
Arutperungothi Agaval	:	Dr. N. Mahalingam (Ed.) Swami Sarvanananda	(1989)
Explorations in Art and Archaeology of South Asia	:	Debala Mitra	(1996)
History of Tamil Literature	:	Mu. Varadarajan	(1988)
Treatise on Srichakra	:	Swami Pranavananda	(1987)
Collected Lectures on Saiva Siddhanta	:	Annamalai University	(1978)
Chamatkar Chintamani	:	Bhatta Narayana (Tr. S. S. Sareen)	(1991)
Early History of Saivism in South India	:	C.V. Narayana Ayyar	(1939)
Glimpses of Saiva Sidhanta	:	C. N. Singaravelu	(1992)
Heritage of the Tamils	:	Dr. S. V. Subramanian : Dr. G. Rajendran	(1985)
Hindu Gods and Goddesses		Swami Harshananda	(1981)
Hymns of Tamil Saivite Saints	:	Philips. G. E.	(1921)
Hymns to the Dancing Siva		Glenn E. Yocum	(`1982)
Introduction to Tantra Sastra	:	Sir John Woodroffe	(1913)
Jnanamrtam	:	S. Gangadharan	(1981)
Kundalini Tantra	:	Swami Satyananda Saraswati	(1984)
Karaikkal Ammaiyar	:	S. Sasivalli	(1984)
Kundalini - Aghora II	:	Robert E. Svoboda	(1993)
Kundalini - An Occult Experience	:	G. S. Arundale	(1938)

Kaivalya Navanitam : Charles Graul (1995)

Lord Siva and His worship Swami Sivananda (1980)

Literary Genres in Tamil : A. V. Subramanian (1993)

Mysticism of Love in Saiva Tirumurais : Dr. V. C. Sasivalli (1995)

Nyaasa Tilakam of Vedanta Desika : D. Ramaswami Aiyangar (1980)

Our Guide Sekkizhaar Adi-p-Podi T. N. R and his works : Pb. Kala Samrakshana Sangham, Thanjavur (1997)

Philosophy of Hindu Sadhana : Nalini Kanta Brahme (1932)

Patanjali Yoga Sutras : Swami Prabhavananda (1997)

Rg Vedic Studies : M. Sundarraj (1997)

Studies in Tamil Literature and History V. R. Ramachandra Dikshitar (1958)

South Indian Devotional Legends on Lord Siva : S. Swaminathan (1989)

Siva - Bhakti : R. Nagaswami (1989)

Saiva Sidhanta : V. Paranjoti (1954)

Saiva Siddhantam (Vol I) : T. N. Ramachandran (1984)

Saiva Siddhantam : Prof. K. Subramania Pillai (1986)

Sakti and Sakta : Sir John Woodroffe (1965)

Siva gnana Deepam : St. Revanarthira Desikar (1994)

Studies in Saiva Siddhanta J. M. Nallaswami Pillai (1984)

Sri Kasmira Saiva Darsana B. N. Pandit, Shastri (1973)

Soundarya Lahani : Pt. S. Subrahmanya Sastri & T. R. Srinivasa Ayyangar

The Art of Tantra : Philip Rawson (1971)

The Eternal Triangle : Dr. N. Mahalingam (Ed.) Q. Allison L. Bayles

The Gheranda Samhita	:	Rao Bahadur Srisa Chandra Vasu	(1996)
Temples of South India	:	N. S. Ramaswami	(1984)
Tamil Literature	:	K. V. Zvelebil	(1975)
The Tamils	:	Dr. N. Subrahmanian	(1996)
The Garland of Guru's Sayings *(Guru Vichara Kovai)*	:	Sri Muruganar	(1990)
The Song of the Soul	:	Pb. Sri Ramakrishna Mutt, Trichur, Kerala	(1993)
The Philosophy of the Tamil Siddhas	:	T. N. Ganapathy	(1993)
The Saiva School of Hinduism	:	K. Shivapadasundaram	(1996)
The Chakras - A Monograph	:	C. W. Leadbeater	(1996)
The Mystery of the Mahabharata *(The Story and Its Essence)*	:	N. V. Thedani	(1934)
Tiruvacagam	:	Rev. G. U. Pope	(1970)
The Smile of Murugan	:	Kamil Zvelebil	(1973)
Tantric Yoga and the Wisdom Goddesses	:	David Frawley	(1996)
Tirumantiram	:	Ed. Dr. N. Mahalingam, Tr. Dr. B. Natarajan	(1991)
Vastu Sastra (Vol I) Hindu Science of Architecture	:	Dr. D. N. Shukla	(1960)
Vastu - Sastra (Vol II) Hindu Canons of Iconography and Painting	:	Dr. D. N. Shukla	(1958)
Viveka - Cudamani of Sri Sankaracharya	:	Swami Madhavananda	(1982)
Yoga Exercises	:	Swami Jyotirmayananda	(1973)

* * *

SAHITYA SHODH SANSTHAN
साहित्य शोध संस्थान
8 ए / 141, पश्चिमी विस्तार क्षेत्र
करोलबाग, नई दिल्ली – 110 005
दूरभाष: 5726216
8-A/141. W.E.A. KAROL BAGH
NEW DELHI - 110005.
PHONE: 5726216

साहित्य शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित

तमिल साहित्य एवं संस्कृति विषयक प्रामाणिक सामग्री हिन्दी में प्रथम बार उपलब्ध। राष्ट्रीय भावात्मक ऐक्य को सुदृढ़ करनेवाली संग्रहणीय महत्त्वपूर्ण कृतियां, डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ की तीन दशकों की अनवरत साधना का प्रतिफल। मूल तमिल स्रोतों से सामग्री प्रस्तुत कर हिन्दी को समृद्ध करने का महत् कार्य।

1. तमिल आगमशास्त्र तिरुमंतिरम्

प्रधान सम्पादक : डॉ. एन् महालिंगम्
लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिल के प्राचीन आगमशास्त्र तिरुमूलर कृत तिरुमंतिरम् का विस्तृत अध्ययन। मूल तमिल, देवनागरी लिप्यंतर एवं हिन्दी काव्यानुवाद सहित 800 से अधिक पदों का चयन। ज्ञान और साधना का प्रामाणिक स्रोत-ग्रंथ; तंत्र, मंत्र, यंत्र तथा आध्यात्मिक दृष्टि से नवीन, मौलिक सामग्री। रु. 450/- पृ. 680; 1998 ई.। डिमाई; आर्टपेपर पर मुद्रित 12 रंगीन चित्रों सहित पक्की, कपड़े की जिल्द।

2. रामलिंगस्वामी—वल्ललार की ज्योति-साधना

प्रधान सम्पादक : डॉ. एन्. महालिंगम्
लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिलनाडु के भक्त-चिंतक वल्ललार—रामलिंग स्वामी के 250 से अधिक मूल तमिल पद, देवनागरी लिप्यंतर एवं भावानुवाद सहित। कवि-साधक रामलिंग स्वामी के भक्ति, साधना, रहस्यवाद, दर्शन, समाज, पर्यावरण आदि विषयों पर विवेचन सहित एक हृदयग्राही संकलन। रु 360/-; पृष्ठ-480, 12 रंगीन चित्रों सहित, संस्करण : 1997 ई.।

3. रामलिंगस्वामी और उनका काव्य

प्रधान सम्पादक : डॉ. एन्. महालिंगम्
लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिलनाडु के आधुनिक काल के महान् चिंतक, संत, समाज-सुधारक रामलिंगस्वामी के काव्य का विविध पक्षों से परिचय एवं विश्लेषण तथा मूल तमिल से एक सौ कविताओं का हिन्दी अनुवाद। रु. 150/- पृष्ठ-168, संस्करण : 1998 ई.।

4. सचित्र पेरियपुराणम्

प्रधान सम्पादक : डॉ. एन्. महालिंगम्
लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

ग्यारहवीं शती के तमिल भाषा के 'तिरुत्तोण्डर पुराणम्'—जो पेरिय पुराणम् के नाम से

प्रसिद्ध है—को आधार बनाकर संक्षिप्त कथा-रूप तथा 300 से अधिक चयनित पदों का भाषांतर। 63 रंगीन चित्रों एवं इतने ही रेखाचित्रों से युक्त यह कृति भक्ति-साहित्य का अद्भुत ग्रंथ है। भारतीय भक्ति-साहित्य, विशेषतः शैव-भक्ति की परम्परा का यह ग्रंथ पहली बार हिन्दी में प्रस्तुत किया गया है। 63 भक्तों की अभूतपूर्व गाथाएँ। रु. 200/- पृष्ठ 250, जिसमें आर्टपेपर पर 63 रंगीन एवं 63 रेखाचित्र हैं। 9" × 7" आकार में उपलब्ध। संस्करण 1994 ई.।

5. तमिल शैव-भक्ति साहित्यः

लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

सातवीं शती से उन्नीसवीं शती तक के आठ प्रमुख तमिल शैव-भक्तों के काव्य के मूल तमिल से चयनित पद, देवनागरी लिप्यंतरण, संदर्भ, भावानुवाद; तिरुज्ञानसम्बन्धर, अप्पर, सुन्दरमूर्ति, माणिक्कवाचकर, तिरुमूलर, अरुणगिरिनादर, रामलिंग स्वामी तथा मेय्कण्डार के साहित्य एवं भक्ति-भावना का परिचय सहित। आर्ट पेपर पर ग्यारह रंगीन चित्र : 428 पृष्ठ, पक्की कपड़े की जिल्द। रु. 450/- प्रथम संस्करण : 1993 ई.।

6. तमिल शैव-भक्ति कविः नायन्मार्

लेखक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिल के आठ प्रमुख शिव-भक्त कवियों के जीवन, साहित्य, चिंतन, भक्ति-भावना, सामाजिक योगदान आदि का प्रामाणिक परिचय; संस्कृत एवं तमिल में 'शिव' की अवधारणा का क्रमबद्ध विकास, 'शैव-सिद्धान्त' का विवेचन। रु. 150/- पृष्ठ 192, 1993 ई.।

7. तमिल महाकवि : तिरुवल्लुवर

लेखक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिलनाडु की चिंतन-प्रक्रिया एवं सांस्कृतिक चेतना के परिचायक आधारभूत ग्रंथ 'तिरुक्कुरल' का सम्पूर्ण अध्ययन। धर्म (अरम्), अर्थ (पोरुल्), काम (इनबम्) का विस्तृत विवेचन। रु. 60/- पृष्ठ 120, संस्करण—1992 ई.।

8. तमिल का प्राचीन साहित्य

लेखक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

ईसा से कई शती पूर्व का तमिल व्याकरण तोलकाप्पियम्, पांचवीं शती से पूर्व की अद्भुत काव्यकृतियां-एट्टुतोगै (अष्टकाव्य संग्रह); पत्तुप्पाट्टु (दस दीर्घ कविताएँ); तिरुक्कुरल आदि के विषय में असाधारण सामग्री। रु. 100/- पृष्ठ 208, संस्करणः 1991 ई.। (हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा 'श्रेष्ठकृति पुरस्कार' प्राप्त)।

9. तमिल वैष्णवभक्त कवि : आळ्वार

लेखक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

भारतीय वैष्णव भक्ति-परम्परा के स्रोतों का आकलन, पांचवीं से नवीं शती के बारह आळ्वार वैष्णव-भक्त कवियों का समग्र, प्रामाणिक परिचय। नम्माळ्वार, पेरियाळ्वार, आण्डाळ्, तोण्डरअडिपोडि आळ्वार, कुलशेखर आळ्वार आदि का मूल तमिल स्रोतों से विवेचन।

(हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा 'श्रेष्ठकृति पुरस्कार' से सम्मानित) रु. 100/- पृष्ठ 180, संस्करण : 1991 ई.।

10. सुब्रह्मण्य भारती

लेखक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिल के राष्ट्रीय महाकवि सुब्रह्मण्य भारती के क्रांतिकारी जीवन और साहित्य का अध्ययन। राष्ट्रीय कविताएँ (देसिय गीतंगळ्), कृष्ण-गीत (कण्णन् पाट्टु), कोयलगीत (कुयिल् पाट्टु), दार्शनिक तथा प्रकृति विषयक कविताओं आदि का परिचय, चार चित्रों सहित। रु. 100/-, पृष्ठ 202, संस्करण : 1991 ई.।

(राजभाषा विभाग, बिहार सरकार द्वारा 'अखिल भारतीय श्रेष्ठग्रथ पुरस्कार' प्राप्त कृति)

11. भक्ति की प्रारम्भिक कृति : मुकुन्दमाला

लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

संस्कृत में तमिल वैष्णव कवि कुलशेखर आळ्वार की नवीं शती की प्रसिद्ध कृति, आळ्वार वैष्णव-साहित्य का संक्षिप्त परिचय, मूल संस्कृत, हिन्दी अनुवाद, विशेष टिप्पणियों सहित। रु. 50/- पृष्ठ 112, संस्करण—1991 ई.।

कतिपय अन्य प्रेरणादायक ग्रंथ

डॉ. (श्रीमती) रमेश सेठ द्वारा मूल मराठी से प्रस्तुत एक प्रामाणिक, शोधपरक अध्ययन

12. तुकाराम एवं कबीर का तुलनात्मक अध्ययन

लेखिका : डॉ. (श्रीमती) रमेश सेठ

महाराष्ट्र के वारकरी सम्प्रदाय और वैष्णव-भक्ति परम्परा के संदर्भ में संत तुकाराम और कबीर का शोधपरक तुलनात्मक अध्ययन। दोनों कवियों के भक्ति, ज्ञान, चिंतन, सामाजिक-जीवन, दर्शन और काव्य का विस्तृत विवेचन, विश्लेषण। रु. 260/- पृष्ठ 326, संस्करण : 1992 ई.।

13. महात्मा गांधी : चिंतन का व्यावहारिक पक्ष

लेखक : डॉ. एन्. महालिंगम्
अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

डॉ. एन्. महालिंगम् कृत महात्मा गांधी विषयक 19 लेखों का तमिल से हिन्दी अनुवाद। भारतीय संदर्भों और समस्याओं का प्रामाणिक विवेचन, विश्लेषण। पंचायतराज, अहिंसातत्त्व, अर्थशास्त्रीय चिंतन, धर्मांधता का प्रभावी विकल्प आदि अनेक विषयों पर गांधीवादी चिंतक डॉ. एन्. महालिंगम् की सशक्त, स्पष्ट चिंतन शैली के लेख। गांधीजी के 12 चित्र आर्टपेपर पर; रु. 100/- पृष्ठ 144, संस्करण : 1997।

प्रकाशनाधीन कृतियां

तमिल साहित्य और संस्कृति माला

14. तमिल के विष्णु भक्त कवि :

प्रधान सम्पादक : डॉ. एन्. महालिंगम्
लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिल साहित्य के विष्णु भक्तों का अनूठा विवेचन और परिचय। प्रत्येक कवि की चयनित कविताएँ मूल तमिल, देवनागरी, लिप्यंतरण एवं हिन्दी अनुवाद सहित। तमिल के वैष्णव-भक्ति साहित्य के लिए नवीन, मौलिक सामग्री।

15. तमिल के शिव भक्त :

प्रधान सम्पादक : डॉ. एन्. महालिंगम्
लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिल की विशाल भक्ति-परम्परा के शिवभक्त कवियों का साहित्य, चिंतन, भक्ति-भावना, समाज-चेतना आदि पर नवीन, मौलिक सामग्री। प्रत्येक कवि की चयनित कविताओं का मूल तमिल, देवनागरी, लिप्यंतरण एवं हिन्दी अनुवाद सहित।

16. तमिलनाडु के मंदिर (खण्ड 1)

प्रधान सम्पादक : डॉ. एन्. महालिंगम्
लेखक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तमिलनाडु की धार्मिक, सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक विविध मंदिरों का विशद परिचय, काव्य और जीवन के साथ इन मंदिरों का सम्बन्ध। राष्ट्रीय भावात्मक एवं सांस्कृतिक एकता के आधारस्तम्भ इन मंदिरों का अध्ययन निश्चय ही महत्त्वपूर्ण है।

17. पेरियपुराणम् के शिवभक्त

प्रधान सम्पादक : डॉ. एन्. महालिंगम्
लेखक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

पेरियपुराणम् में वर्णित शिव-भक्तों की अनूठी कहानियां। त्याग, तपस्या, ज्ञान, भक्ति की भावनाओं को पोषित करनेवाली इन गाथाओं से भक्ति-मार्ग का विस्तृत एवं गहन-गम्भीर परिचय प्राप्त होता है।

18. तमिल का गौरव ग्रंथ—तिरुक्कुरल

प्रधान सम्पादक : डॉ. एन्. महालिंगम्
लेखक, अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ
डॉ. एच. बालसुब्रह्मण्यम्

तिरुवल्लुवर कृत 'तिरुक्कुरल' तमिल का अद्वितीय ग्रंथ है। धर्म, अर्थ, काम, तीनों विषयों पर इसकी सामग्री विश्वविख्यात है। इस कृति का मूल तमिल, देवनागरी लिप्यंतर और प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद एवं विस्तृत परिचय। तिरुक्कुरल के अधिकारी विद्वान् डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ और तमिलभाषी हिन्दी विद्वान् डॉ. एच. बालसुब्रह्मण्यम् का एक नवीन प्रयास।

19. नीति—कुसुमाञ्जलि

मानव-कल्याण और लोकमंगल का लक्ष्य लेकर वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, स्मृति-ग्रंथ, प्रमुख महाकाव्य, नाटक तथा कथा-साहित्य से संकलित नीति-वचनों का अद्भुत संग्रह; मूल संस्कृत, हिन्दी अनुवाद सहित :

अनुवादक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ
डॉ. देवकन्या आर्य

20. तिरुवल्लुवर एवं कबीर का तुलनात्मक अध्ययन

दिल्ली विश्वविद्यालय का तमिल-हिन्दी तुलनात्मक अध्ययन विषयक प्रथम प्रकाशित महत्त्वपूर्ण शोध-प्रबन्ध; शोधकार्य अथवा शिक्षा संस्थानों के लिए उपलब्ध सीमित संख्या में प्रतियां उपलब्ध हैं।

लेखक : डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

डॉ. एन. महालिंगम्

तमिलनाडु के विख्यात उद्योगपति, भारतीय धर्म और संस्कृति के प्रसार और राष्ट्रीय भावात्मक ऐक्य के लिए सतत प्रयत्नशील 'अरुट् चंलवर'—'कृपा सम्पन्न' डॉ. एन. महालिंगम् जन्म से कृषक हैं। अपने नवीन चिंतन और मौलिक विचारों के लिए प्रसिद्ध डॉ. महालिंगम् प्रदेश, भाषा, जाति, धर्म आदि की सीमाओं से ऊपर उठकर जीव-कारुण्य और गांधीवादी विचारों के संवाहक हैं। 'शक्ति-समूह' कम्पनियों के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत डॉ. महालिंगम् ने ऐनक कम्पनियों की स्थापना और कुशल संचालन द्वारा एक विशाल औद्योगिक ढांचे का निर्माण किया है। दर्जनों शिक्षण-संस्थाओं की स्थापना द्वारा तकनीकी उच्च-शिक्षा को जन-सुलभ बनाने के साथ-साथ उनके सफल संचालन द्वारा आपने एक शैक्षिक क्रांति को साकार किया है। आपने प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति विषयक शोध के लिए 1978 में स्थापित एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था (ISIAC) द्वारा अद्यतन 28 महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन करवाया है।

कृषि एवं जल-संसाधन विषयक अपने मौलिक चिंतन एवं अभियांत्रिकी के ज्ञान के समन्वय से आपने गरीबी दूर करने की कई योजनाओं को साकार किया है। सिंचाई व्यवस्था के आधुनिकीकरण और नगर-जीवन विषयक मूल समस्याओं के समाधान के अनेक व्यावहारिक मार्ग सुझाए हैं। तमिल एवं अंग्रेजी में विविध विषयों पर तीस से अधिक पुस्तकों के लेखक के रूप में आपने वैचारिक धरातल पर अपना अमिट प्रभाव डाला है। आप 'किसान वर्ल्ड'; 'ओम्शक्ति' आदि पत्रिकाओं के मानद सम्पादक हैं।

'अरुट् चंलवर' नामक आपका जीवन-चरित राजनीति, धर्म, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, पुरातत्त्व आदि के क्षेत्र में किए गए अद्वितीय योगदान का एक प्रामाणिक रूप प्रस्तुत करता है। खगोल-विज्ञान, इतिहास, दर्शन, साहित्य एवम् संस्कृति विषयक चालीस से अधिक पुस्तकों के प्रमुख सम्पादक के रूप में आपका सराहनीय योगदान है। विश्व के विविध देशों में अनेक बार भ्रमण कर ज्ञान के क्षेत्र को विस्तृत करने वाले डॉ. एन. महालिंगम् भारत में 1989 से मॉरिशस के मानद परामर्शदाता हैं। रामलिंगर मिशन द्वारा आप विश्वजनीन प्रेम और भ्रातृभावना का संदेश-प्रेषण करने के लिए सतत प्रयत्नशील हैं। आप संगीत-विषयक शोध तथा विविध संगीत-कार्यक्रमों के आयोजन द्वारा संगीत की प्राचीन परम्परा का संरक्षण कर रहे हैं तथा मंदिरों की स्थापत्य-कला के संरक्षण हेतु उनके नवीकरण एवं प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा के लिए योगदान कर रहे हैं तथा नवीन मंदिरों के निर्माण की योजना भी कार्यरूप ले रही है। 1989 में 'इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार' से भी आपको सम्मानित किया गया। डॉ. एन. महालिंगम् को भारतीयार विश्वविद्यालय ने 'डॉक्टर ऑफ लॉ' (1984) तथा अन्ना विश्वविद्यालय ने 'डॉक्टर ऑफ साइंस' (1988) की मानद उपाधियों से विभूषित किया है। मद्रास विश्वविद्यालय की सीनेट के आजीवन सदस्य और अन्ना विश्वविद्यालय सिण्डिकेट के सदस्य के रूप में शिक्षा क्षेत्र में आप निरंतर विशिष्ट योगदान कर रहे हैं। तमिल-हिन्दी सम्बन्धों को मधुर बनाने के लिए आप सतत कार्यरत हैं।

डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तीन दशक से साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय भावात्मक एकता के लिए निष्ठापूर्वक साधनारत डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ हिन्दी, तमिल, संस्कृत एवं पंजाबी के प्रतिष्ठित विद्वान् हैं। आपने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठियों एवं सम्मेलनों में सक्रिय भाग लेकर ख्याति अर्जित की है। हिन्दी अकादमी, दिल्ली (1986, 1989); बिहार राजभाषा विभाग (1986) द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित; 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान' द्वारा सौहार्द सम्मान और तमिलनाडु की 'अमुद सुरभि' द्वारा 'तिरुवल्लुवर-भारती सम्मान'; अन्तर्राष्ट्रीय कला एवं संस्कृति परिषद् नजीबाबाद (उ.प्र.) द्वारा 1995 का 'अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी साधक सम्मान—समग्र लेखन' तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की हिन्दी अकादमी द्वारा साहित्यकार सम्मान द्वारा अलंकृत डॉ. रवीन्द्र सेठ तमिल-साहित्य को कोटि-कोटि हिन्दी भाषियों के लिए निरंतर प्रसारित करने वाले एकमात्र उत्तरभारतीय विद्वान् हैं। 'रामलिंग स्वामी-वल्ललार की ज्योति साधना'; 'पेरियपुराणम्' 'तमिल शैव-भक्ति साहिय'; 'तमिल शैव-भक्ति कवि : नायन्मार्'; 'तमिल का प्राचीन साहित्य'; 'तमिल महाकवि : तिरुवल्लुवर' ; 'तमिल वैष्णव-भक्त कवि : आळ्वार; 'भक्ति की प्रारम्भिक कृति : मुकुन्दमाला'; 'सुब्रह्मण्य भारती'; नीति मुक्तावली; 'तिरुवल्लुवर एवं कबीर का तुलनात्मक अध्ययन' (शोध-ग्रंथ) इत्यादि ग्रंथों द्वारा आपने भारतीय साहित्य में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। इसके अतिरिक्त रेडियो और दूरदर्शन के माध्यम से अनेकानेक वार्त्ताओं तथा नौ भारतीय भाषाओं के साहित्य के मूलभूत वैचारिक ऐक्य का संदेश देने वाले 'चयन' शीर्षक दूरदर्शन धारावाहिक कार्यक्रम द्वारा आपने अपनी अलग पहचान बनाई है। विविध समाचार पत्रों-पत्रिकाओं में आपके साहित्यिक योगदान पर अग्रलेख प्रकाशित होने तथा अकाशवाणी के साक्षात्कारों द्वारा आपके कार्य के राष्ट्रीय महत्त्व की स्वीकृति हुई है।

डॉ. रवीन्द्र सेठ द्वारा आस्थापूर्ण साहित्य-साधना के माध्यम से तमिल और हिन्दी के बीच एक सशक्त सेतु प्रस्तुत हुआ है इस सेतु का आधार है: प्रेम, सद्भाव तथा पारस्परिक विश्वास और लक्ष्य है: राष्ट्र के समस्त साहित्य और संस्कृति के सम्यक् ज्ञान द्वारा भावात्मक एकता को सुदृढ़ करना। आप 'तमिल हिन्दी संगम' के संस्थापक अध्यक्ष एवं 'आथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया (दिल्ली) के संयोजक तथा राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य और इंस्टीच्यूट ऑफ एशियन स्टडीज़ के परामर्शदाता के रूप में साहित्यिक गतिविधियों में सक्रिय योगदान कर रहे हैं। सम्प्रति दिल्ली विश्वविद्यालय के पी. जी. डी. ए. वी. (सांध्य) कॉलेज में हिन्दी विभाग में रीडर के पद पर कार्यरत हैं।



डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ

तीन दशक से साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय भावात्मक एकता के लिए निष्ठापूर्वक साधनारत डॉ. रवीन्द्रकुमार सेठ हिन्दी, तमिल, संस्कृत एवं पंजाबी के प्रतिष्ठित विद्वान् हैं। आपने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठियों एवं सम्मेलनों में सक्रिय भाग लेकर ख्याति अर्जित की है। हिन्दी अकादमी, दिल्ली (1986, 1989); बिहार राजभाषा विभाग (1986) द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित; 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान' द्वारा सौहार्द सम्मान और तमिलनाडु की 'अमुद सुरभि' द्वारा 'तिरुवल्लुवर-भारती सम्मान'; अन्तर्राष्ट्रीय कला एवं संस्कृति परिषद् नजीबाबाद (उ.प्र.) द्वारा 1995 का 'अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी साधक सम्मान—समग्र लेखन' तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की हिन्दी अकादमी द्वारा अलंकृत डॉ. रवीन्द्र सेठ तमिल-साहित्य को कोटि-कोटि हिन्दी भाषियों के लिए निरंतर प्रसारित करने वाले एकमात्र उत्तरभारतीय विद्वान् हैं। 'रामलिंग स्वामी-वल्ललार की ज्योति साधना'; 'पेरियपुराणम्' 'तमिल शैव-भक्ति साहिय'; 'तमिल शैव-भक्ति कवि : नायन्मार्'; 'तमिल का प्राचीन साहित्य'; 'तमिल महाकवि : तिरुवल्लुवर' ; 'तमिल वैष्णव-भक्त कवि : आऴ्वार; 'भक्ति की प्रारम्भिक कृति : मुकुन्दमाला'; 'सुब्रह्मण्य भारती'; नीति मुक्तावली; 'तिरुवल्लुवर एवं कबीर का तुलनात्मक अध्ययन' (शोध-ग्रंथ) इत्यादि ग्रंथों द्वारा आपने भारतीय साहित्य में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। इसके अतिरिक्त रेडियो और दूरदर्शन के माध्यम से अनेकानेक वार्त्ताओं तथा नौ भारतीय भाषाओं के साहित्य के मूलभूत वैचारिक ऐक्य का संदेश देने वाले 'चयन' शीर्षक दूरदर्शन धारावाहिक कार्यक्रम द्वारा आपने अपनी अलग पहचान बनाई है। विविध समाचार पत्रों-पत्रिकाओं में आपके साहित्यिक योगदान पर अग्रलेख प्रकाशित होने तथा अकाशवाणी के साक्षात्कारों द्वारा आपके कार्य के राष्ट्रीय महत्त्व की स्वीकृति हुई है।

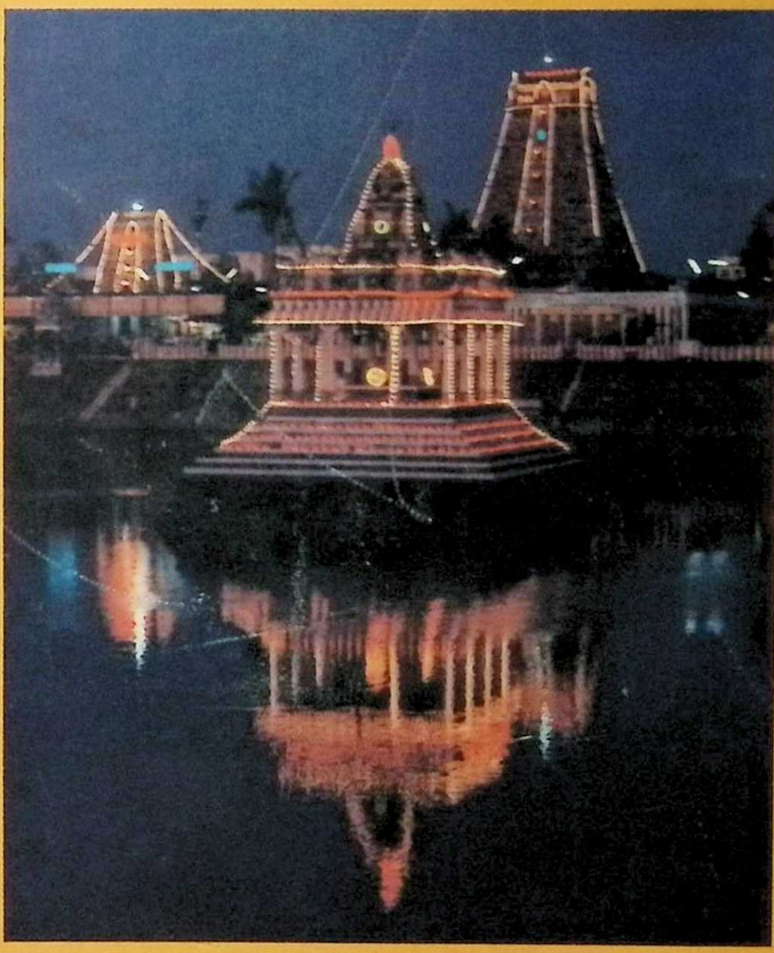
डॉ. रवीन्द्र सेठ द्वारा आस्थापूर्ण साहित्य-साधना के माध्यम से तमिल और हिन्दी के बीच एक सशक्त सेतु प्रस्तुत हुआ है इस सेतु का आधार है: प्रेम, सद्भाव तथा पारस्परिक विश्वास और लक्ष्य है: राष्ट्र के समस्त साहित्य और संस्कृति के सम्यक् ज्ञान द्वारा भावात्मक एकता को सुदृढ़ करना। आप 'तमिल हिन्दी संगम' के संस्थापक अध्यक्ष एवं 'आथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया (दिल्ली) के संयोजक तथा राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य और इंस्टीच्यूट ऑफ एशियन स्टडीज़ के परामर्शदाता के रूप में साहित्यिक गतिविधियों में सक्रिय योगदान कर रहे हैं। सम्प्रति दिल्ली विश्वविद्यालय के पी. जी. डी. ए. वी. (सांध्य) कॉलेज में हिन्दी विभाग में रीडर के पद पर कार्यरत हैं।

தமிழ் ஆகம சாத்திரம்

திருமந்திரம்

तमिल आगमशास्त्र - तिरुमूलर कृत

तिरुमंतिरम्



முதன்மை ஆசிரியர்
அருட்செல்வர் டாக்டர். நா. மகாலிங்கம்
ஆசிரியர், மொழிபெயர்ப்பாளர்
டாக்டர். ரவீந்திரகுமார் சேத்